

# ক্রিয়াকাণ্ড-বারিধি

পঞ্চ-উপাসক, গুরু-শিশু, পুরোহিত যজমানের জ্ঞান-রত্মাকর



সাম, ঋক্, যজু: ত্রিবেদ, উপনিষদ,
স্মৃতি, পুরাণ ও সর্ববিজ্ঞ হইতে
সঙ্কলিত

দেশপৃদ্ধা পণ্ডিতমণ্ডলীর আমুক্ল্যে ও পরিদর্শনে প্রচারিত

বংশনিষ্ঠ হিন্দুর গৃহে গৃহে প্রতিষ্ঠাকরে মুল্য ২॥০ টাকা মাত্র সং-সাহিত্য-প্রচার ব্রত শব্দুনাথ্ মুডোশাপ্র্যাস্থ্র সঙ্গনিত

সংবদ্ধিত, সংশোধিত, স্থসংস্কৃত, শুদ্ধিপত্রযুক্ত নিভূ*ৰ* দিতীয় সংস্করণ

উপেক্তনাথ মুখোপাথ্যায় প্রতিষ্ঠিত বস্ত্রমভী-সাহিত্য-মন্দির শ্রীসভীশচন্দ্র মুখোপাধ্যায় প্রকাশিত ভট্ট প ল্লী নি বা দী অশে ঘ-শা জ্রা ধ্যা প ক পণ্ডিত শ্রীনৃত্যগোপাল পঞ্চতীর্থ সংস্কৃত পণ্ডিতবর কালীপ্রসন্ধ বিছারত্ব সংশোধিত

S 294:5926 K 92 U V3 Pt.1

> ১৩১৭ সালে প্রথম সংস্করণ—১০,০০০ দশ সহস্র ১৩৩৩ সালে দ্বিতীয় সংস্করণ—৫,০০০ পঞ্চ সহস্র ১৩৩৮ সালে তৃতীয় খণ্ড—৫,০০০ পঞ্চ সহস্র

SL NO. 075831

THE 1SE FIR SDCIETS

CALCULTA 700016

Acc. No. B 1668

Date 15/11/85

কলিকাতা, ১৬৬ নং বহুবান্ধার খ্রীট, বস্থমতা বৈদ্যাতিক-রোটারী মেসিনে শ্রীপূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায় মুদ্রিত।

## স্চিপত্ৰ

| বিষয়                            |                | পৃষ্ঠা                       | বিষয়                        |            | পৃষ্ঠা      |
|----------------------------------|----------------|------------------------------|------------------------------|------------|-------------|
| সংস্ক†র-প্রকরণ                   |                | বিবাহব্যবস্থা ( পারস্করীয় ) |                              | هږ         |             |
|                                  |                |                              | কন্তা-সম্প্রদান              |            | ঐ           |
| সামবেদীয় দশবিধ সংস্কার, গুণবিষ্ |                |                              | বিবাহ কুশণ্ডিকা (পাণিগ্ৰহণ   | पिषि )     | >09         |
| ভাষ্যসহ ভবদেবপদ্ধতি              | <del></del>    |                              | গৰ্ভাধান                     | •••        | <b>১</b> २० |
| সর্বসাধারণ কুশণ্ডিকা             | •••            | >                            | পুংদবন                       | ••••       | ১২৩         |
| জাতিকৰ্ম                         | •••            | २२                           | সীষস্তোন্নয়ন                | •••        | <b>১</b> ২৪ |
| কন্তা-সম্প্রদান                  | . •••          | ₹8                           | <b>সো</b> ষ্যন্তীকর্ম্ম      | •••        | <b>১</b> २७ |
| বিবাহ কুশণ্ডিকা (পাণিগ্ৰঃ        | श्नामि )       | (c)                          | জাতকৰ্ম                      | •••        | '১২৭        |
| গৰ্ভাধান                         | •••            | ٤s                           | নামকরণ                       | •••        | >७¢         |
| <b>পুः</b>                       | •••            | ৫৩                           | নিক্ৰমণ                      | •••        | ১৩৬         |
| <b>শী</b> শস্তোরয়ন              | •••            | <b>@</b> @                   | পুত্ৰমুৰ্দ্ধাভিছাণ           | •••        | ১৩৭ '       |
| সোষ্যন্তী হোম                    | •••            | <b>(</b> ৮                   | অন্নপ্রার্শন                 | •••        | ঐ           |
| জাতকৰ্ম                          | •••            | <b>6</b> 0                   | চুড়াকরণ                     | •••        | ১৩৯         |
| নামকরণ                           | •••            | ৬১                           | উপনয়ন                       | •••        | <b>১</b> 8२ |
| নিক্ৰমণ                          | •••            | ৬৪                           | বেদারম্ভ                     | •••        | >6>         |
| পৌষ্টিক কৰ্ম                     | •••            | ৬৬                           | সমাবৰ্ত্তন 🖁                 | •••        | >৫२         |
| অন্নপ্রাশন                       | •••            | ঐ                            | নানামতসম্লিত ঋগ্বেদীয়       | দশবি       | ধ           |
| পুত্ৰমূৰ্দ্ধাভিঘাণ               | •••            | . Ub                         | সংস্কারপদ্ধতি (সটীক)–        | ~          |             |
| চ্ড়াকরণ                         | •••            | ৬৯                           | কালেশিক্বতা সর্ব্বসাধারণী কু | শণ্ডিক     | 1264        |
| উপনয়ন                           | •••            | ৭৩                           | বিবা <b>হণদ্বতি</b>          | •••        | ১৬१         |
| সাবিত্ৰ চক <u>ু</u> হোম          | •••            | ৮৩                           | বিবাহ কুশণ্ডিকা              | <b>:··</b> | >9>         |
| স্মাবর্গুন                       | •••            | <b>৮</b> ৫                   | গৰ্ভাধান                     | •••        | >99         |
| পরিশিষ্ট                         | •••            | 20                           | পুংসবন                       | •••        | 727         |
| যজুর্বেদীয় সভাষ্য দশবিধ         | সংস্থার        | <b>-</b>                     | অনবলোভন                      | •••        | १४०         |
| পদ্ধতি                           |                |                              | <b>শীমস্তোর</b> য়ন          | •••        | <b>248</b>  |
| পশুপতিকৃত ও ব্রহ্ম-সংস্কার       | <b>ন</b> ঞ্জরী | <u>-</u>                     | জাতকৰ্ম                      | •••        | 746         |
| ধৃত সামান্ত কুশণ্ডিকা            | •••            | 86                           | <b>্পো</b> ষিতাগত কৰ্ম       | •••        | <b>343</b>  |
| জ্ঞাতিকর্ম                       | •••,           | 94                           | নামকরণ                       | •••        | ঐ           |

| বিষয়                                  |         | পৃষ্ঠা       | বিষয়                        |               | পৃষ্ঠা          |
|--|---------|--------------|------------------------------|---------------|-----------------|
| নিজ্ঞৰণ                                |         | 749          | চণ্ডীপাঠফল                   | •••           | 830             |
| অন্নপ্রাশন                             | •••     | <b>५</b> ७२  | এ <b>কা</b> বৃত্ত্যাদিপাঠফল  | •••           | ক্র             |
| চূড়াকরণ                               | •••     | 220          | দেবীস্ক্ত (প্রকারান্তর)      | •••           | 872             |
| উপনয়ন                                 | •••     | 3 <i>6</i> ¢ | দেবীমাহাত্ম্যের ষট্সংবাদ     |               |                 |
| স্মাবর্ত্তন                            | •••     | २०५          | ( চণ্ড্যাঃ ষ্ট্সংবাদঃ )      | •••           | 8 <b>&gt;</b> २ |
|  |         |              | <u> এত্রীকৃত্ত চণ্ডী —</u>   |               |                 |
|  |         |              | কুত্ৰচণ্ডীসঙ্কল্পাদি         | •••           | 870             |
| প\চ্য <b>প্র</b> করণ                   |         |              | রুদ্রচণ্ডীশাপবি <b>মো</b> চন | •••           | ঐ               |
| বিবাটপর্ব্ব                            | •••     | २०৫          | ৰুদ্ৰচ <b>ী ক</b> বচ—        | •••           | 8\$8            |
| শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা                       |         |              | রুদ্রচণ্ডী (দেবীশাহান্ম্য)   | •••           | 82¢             |
| গীতাপাঠ <b>ক্রম</b>                    | •••     | ৩২ ৪         | রুজাধ্যায় ( কাথশাখীয় )     | •••           | 828             |
| গণেশাদি প্রণাম                         | •••     | ৩২৫          |                              |               |                 |
| <b>এএ</b> ী                            | •••     | ৩২৬          | তান্ত্রিকাচার-প্রব           | করণ           |                 |
| <b>শ্রীশ্রী</b> গীতা <b>শাংশি</b> য়্য | •••     | ৩৬২          |                              | C 1C          |                 |
| শ্রীশ্রীচণ্ডী                          |         |              | দিব্য, পশু, বীর ভাবের অ      | <b>ধিকারি</b> |                 |
| চণ্ডীপাঠসঙ্কল্পাদি                     | •••     | ৩ <b>৬৬</b>  | <b>নির্দেশ</b>               | ,•••          | ر<br>8مک        |
| চণ্ডীপঠিক্ <u></u> ৰ                   | •••     | ক্র          | পশুভাবের প্রাধান্ত           | \$ ***        | ক্র             |
| চণ্ডীপাঠনি য়ুম                        | •••     | ৩৬৭          | কৌলিকের দিব্যভাবাশ্রয়       | •••           | 8 <b>७</b> १    |
| <b>চণ্ডী</b> ধ্যান                     | •••     | ৩৬৮          | পশুভাবে সংক্ষিপ্ত কর্ত্তব্য  | •••           | ঐ               |
| <b>অ</b> ৰ্গলাস্ <del>ডো</del> ত্ৰ     | •••     | ক্র          | বৈদিকাচার                    | •••           | ৪৩৩             |
| কীলকন্তবরা <del>জ</del>                | •••     | ৩৭০          | বৈষ্ণবা <b>চার</b>           | •••           | ঐ               |
| <b>চণ্ডীক</b> বচ                       | •••     | ৩৭১          |                              | •••           | 8 <b>9</b> 8    |
| দেবীস্থক্ত                             | •••     | ৩৭৩          | দক্ষিণাচার                   | •••           | ঐ               |
| ঋষিচ্ছন্দোদেবতানিৰ্দেশ                 | •••     | ৩৭৪          | ,বীরভাব                      | •••           | 808             |
| ঞ্জীঞ্জীদেবীমাধাষ্ম্য (শ্ৰীশ্ৰীচং      | ··· (fe | ৩৭৬          | বীরভাবের গৃঢ়রহস্ত           | •••           | 8৩৫             |
| চণ্ডীপাঠাপরাধক্ষমাপণস্ডো               |         |              | বামাচারের গৃঢ়রহস্ত          | •••           | 8୬୩             |
| স্প্তশতীরহস্ত ( প্রাধানিক              | রহস্ত   | ) ঐ          | ভান্ত্রিকের ত্রিবিধ আশ্রম    | •••           | 8 <b>्रा</b>    |
| " ( বৈক্বতিকরহস্ত )                    | ••      |              | কৌলাচার                      | •••           | <b>৫</b> ৩৪     |
| " (মূর্ত্তিরহস্ত )                     | ••      | . 8•8        | পঞ্চত <del>ৰ্</del> ববিচার   | •••           | <b>688</b>      |

## ক্রিয়াকাণ্ড-বারিখিঃ

তৃতীয়ঃ খণ্ডঃ

### প্রথমঃ প্রবাহঃ

## সংস্কার-প্রকরণম্

া এ শ্রীভবদেবকুতা সামগানাং সংস্থারপদ্ধতিঃ

#### সামান্য<del>-কুপ</del>ণ্ডিকা

চতুর্বদনসন্মস্ক-চতুর্বেদকুট্খিনে।
বিজাহঠেরসংকর্ম-সান্দিণে ব্রন্ধণে নমঃ॥
গৃহত্যতার্থমালোচ্য ছেলোগানামিরং জ্বাং।
কৃতা প্রতিবদেবেন কর্মাছঠানপদ্ধতিঃ॥

তত্ত্ব সর্বেবামাছতিযুক্তকর্মণাং কুশশুকাসংস্কৃতারিসাধ্যত্তাৎ কুশশুকিকর প্রথমমন্তিধীরতে। তত্ত্ব উভরতশতভূর্বন্তপ্রমাণং ভূপ্রেদেশং শর্করাদারান্থি-কেশভূবাদিরহিতং পূর্ব্বোদ্তরপ্রবং সমং বা (১) ছারামগুণসহিতং

व्यार्गित व्यवक्रिक्षम्बर्गितः वर्णाख्यम्। शिवार प्रक्रिपरण नीहरः व्यक्तिशिक्षकः जवन् ॥ व्याख्यस्थातनः रहनः जवर वा श्रीक्रम्स्यानिना देखि श्रीक्रियः।

## ক্রিয়াকাও-বারিধিঃ

গোষরেনোপলিপা • (২) ছাতঃ শুচিরাচান্তঃ (৩) প্রান্থং কুশসহিতাসনোপবিটঃ
কর্তা উত্তরক্রাং নিশি অভ্যান্ধার্থ কুশ-কুম্ম-সহিতং জনপান্তং ক্রিয়ার দক্ষিণং
লাছ ভূমো আত্রনিদা উত্তরাগ্র-কুশোপরি স্বাহত-প্রাহেশন উত্তান্ত্র ক্রিয়াপনপর্যান্তং ভূমো নিবার (৪) দক্ষিণহন্তানামিকার্ডান্ডাং গৃহীত-কুশদ্লেন (২) খালুচ-পরিমিতাকুলেন ছঞ্জিল-দক্ষিণপ্রান্তে † খাদশার্লপ্রমাণাং
প্রাতিম্থীং রেথাম্লিখ্য—ওঁ রেথেরং পৃথীদেবতাকা পীতবর্ণ। ইতি
খ্যারেৎ। ততত্বমূলতঃ প্রভৃতি একবিংশত্যকুলপ্রমাণাম্ উত্তরাভিম্থীং
রেথাম্লিখ্য—ওঁ রেথেরমন্তিদেবতাকা লোহিতবর্ণ। ইতি খ্যারেৎ। ততঃ

ভূষে: সম্ধনং ক্লভা পোমরেনোপলিপ্য চ। জব্যাগুভেরতঃ স্থাপ্য বৃৰীং কুর্যাত্রতঃ মুখীম্ ॥ বৃৰীম্ ব্তিনামাসনমিত্যর্থঃ।

(৩) আচান্তঃ বিরাচান্তঃ ইতি অবধেষম্। ্তি তথা হি স্বতিঃ—

হোমে ভোজনকালে চ সন্ধ্যনোক্তরোরপি। আচাভঃ পুনরাচানেদ-ক্তরাপি সকুৎ সকুৎ॥

(৪) তথা চ গৃহাদংগ্ৰহ:—

সব্যং ভূমৌ প্রতিষ্ঠাপ্য প্রোলিখেদকিশেন তু। তাবলোখাপরেৎ পাণিং বাবদল্লিং নিধাপরেৎ ॥

(e) কুশম্লাভাবে কুশেন পুলোণ ফলেন পজেণ বা রেখাং কুর্যাৎ। তথা চ গৃহাসংগ্রহঃ—

তত্মাৎ ফলেন পূম্পেণ পর্ণেনাথ কুলেন বা। প্রোলিখেলকণং বিপ্রঃ সিদ্ধিকামন্ত কর্মসু ॥

অনুষ্ঠনাকা কুজানং তাজা থকিনতঃ হবীঃ। তত্ত্বে বাসুৱাং ভাজা পক্তিকোশাস্থক-মান্

<sup>(</sup>২) তথা চ গৃহাসংগ্ৰহ:-

<sup>🔹</sup> গোৰয়াভদা ইতি বভৰাৰ্।

<sup>ो</sup> चेन्नियोगः रक्ष्यानदेशन, रक्ष्यानाजित्यो रक्ष्यमार्थेरत्तकान्नियागम् अयः पारमान्न-यागः आस्त् । एक्षिणेशः अकान्नम् छेडत्रशः पान्नाः शन्तिरवश्यूनपतः छान्। त्रत्योद्ययः कर्षयाः । छेषा व विष्ठिः—

প্রথমবেশারা উত্তরতঃ সপ্তাঙ্গলাভবিতাং প্রাদেশপ্রমাণাং প্র্রাভির্থীং রেখাব্রিখ্য—ওঁ রেধেরং প্রজাপতিবেবতাকা কৃষ্ণবর্ণ। ইতি ধ্যারেৎ। ততঃ
সপ্তাঙ্গলাভবিতাং প্রাদেশপ্রমাণাং প্র্রাভির্থীং রেখার্রিখ্য—ওঁ রেধেরমিল্রদেবতাকা নীলবর্ণ। ইতি ধ্যারেৎ। ততোহিল সপ্তাঙ্গলাভবিতাং
প্রাদেশপ্রমাণাং প্র্রাভির্থীং রেখার্রিখ্য—ওঁ রেধেরং সোমদেবতাকা
ওরবর্ণ। ইতি ধ্যারেৎ। ততো দক্ষিণহতানামিকার্চাত্যাং ক্রমেণ রেখাস্থ
উৎকরং (৬) গৃহীত্বা—প্রজাপতিশ্বির্যিদেবতা উৎকর-নির্সনে বিনিরোগঃ। ওঁ নিরতঃ পরাবম্বঃ। (৭) ইত্যানেন ঐশাক্তাং দিলি অরত্নিমাত্রাভরতে দেশে ক্রিপেং। ততঃ প্র্রন্থাপিত-জলেন রেখাত্যক্রণং ক্রত্বা,
সরিধাপিতাগ্রেজ্বলিদ্ধনং (৮) গৃহীত্বা—প্রজাপতিশ্বিত্রিষ্ট্রপ্ ছলোহগ্রিদেবতা অগ্নিসংস্কারে বিনিরোগঃ। ওঁ ক্রব্যাদমগ্রিং প্রহিণোমি দ্রং, বম্বাজ্যং গচ্ছত্ রিপ্রবাহঃ। (১) ইত্যানেন দক্ষিণতাং দিলি প্রক্রিপেং। ততঃ
অপরম্যিং গৃহীত্বা—প্রজাপতিশ্বির্হ্ ভটিচ্ছলঃ প্রজাপতিদেবিতা অগ্নি-

কপালৈভিন্নপাত্তির। ন ছামের্গোমরেন বা। ছারিপ্রশাসনং কার্য্যং যজমানভাষাবহন্।—ইভি গৃহাসংগ্রহ:।

তথা — তভং পাত্রন্ধ কাংভং স্যাত্তেনায়িং প্রণয়েদ্ব্ধঃ। তভাভাবে শরাবেণ নবেনাভিম্থঞ্চ তম্॥

কপালৈব টথতৈঃ চক্রাঘটিতমুৎপাতের্বা আনৈঃ অপকপাতেঃ শরাবা-.

দিভিঃ, গোমরেন গোপুরীবেণ করীবাদিনা চ উন্ধৃত্নেন চ অগ্নিপ্রণরনং
ন কার্যমিত্যর্থঃ। বস্তু—শরাবে ভিন্নপাতে বা কপালে বোল্লুকেছিণ বা।
নামিপ্রণরনং কুর্যাদ্ব্যাধিহানিভয়াবহন্॥ ইতি শরাবনিবেধঃ স পুরাভনশরাববিষরঃ। কাংভাদিসভাববিষয়ত ।

( > ) আরিং দূরং লোকান্তরং প্রহিণোনি প্রস্থাপরানি। কিন্তুত্ম । ক্রব্যান্য আর্বাংসাদ্য, অসে বাংস্য অভ্যতিলবতীতি, অবদ্যাত্মং

<sup>(</sup>७) द्रारथारकीर्वमृष्टिकाम् हेर्छार्यः।

<sup>&#</sup>x27;(१) পরাবস্থ: রকোহধিষ্ঠানভূত: অপকৃষ্টভূভাগঃ, নিরন্ত: দ্রীকৃত: ইভার্থ:।

<sup>(</sup>৮) অরণিসন্তবাৎ শ্রোত্রিরগেহজাৎ পূর্ব্বসংস্কৃতাৎ লৌকিকাদ্বা অগ্নেরিতি বাবৎ।

### ু তিন্<del>যাকার বারি</del>খিঃ

হাপনে বিনিরোগঃ। ওঁ ভূজু বংখা। ইত্যাদের করিন্ কান্মাভিন্থং রেখোল পরি হাপরেং। ততাে বানহতমৃত্যাল্য অঞ্চলিং বহা পঠেং। প্রকাপতিকরিছিই প্ ছলোহরিদে বতা অরিহাপনে বিনিরোগঃ। ওঁ ইহৈবারনিভরা আভবেদা দেবেভাো হবাং বহতু প্রজানন। (১০)ওঁ সর্বভঃ পাণিপাদাভঃ সর্বতােহকিশিরোন্থঃ। বিষরপাে মহানরিঃ প্রণীতঃ সর্বকর্মন্ত ॥ (১১)
ততঃ। ওঁ অরে বন্ অনুকনামানি। । ইতি বত্র বত্র বরামাভিহিতং, তত্র
তত্র তরাম করা।—(১২) ওঁ পিত্রস্কার্লকেশাক্ষঃ পীনাক্সঠরােহরণঃ। ছাপত্তঃসাক্ষত্রাহারিঃ সপ্তার্জিঃ শক্তিধারকঃ॥ ইত্যাদিত্যপুরাণীরং ধাারা আবাহ্

ৰমরাব্যস্ বনস্তাধিকারং গছতু। কিন্তৃতঃ ? রিপ্রবাহঃ রিপ্রং পাপং বছতি স্থানান্তরং প্রাপয়তীতি।

- (১০) অরম্ ইতর: ক্রব্যাদাদক্ত:, জাতবেদা: জাতং বেদ: জ্ঞানং বক্ত সং জাতজ্ঞান: অগ্নি: ইহ এব অস্মিন্ গৃহে এব স্থিতঃ সন্ দেবেড্য: হ্ব্যং হবিঃ বহতু প্রাপরতু। কিং কুর্মন্ গুপ্রজানন্ তীয়মধিকারং প্রকর্মেণ জানন্।
- (১১) নারং গৃহাসংগ্রহকারেণ পঠনীরমন্ত্রদেন ধৃতঃ ; কিন্তু অগ্নিস্থরপ-পরিচারক্ষেন। রঘুনন্দনন্ত—বিশেষতো নামাজ্ঞানে সর্ক্তি বিশ্বরপ-নামাগ্লিউবভি ইতি ক্রিভবান্। তথা অগ্নিপ্রণয়নানন্তরং পঠনীরোহরং মন্ত্র-ইভাবাচ।
- (১২:) একস্মিন্ দিবসে বছকর্মান্তহোমের প্রধানীভূতপ্রথমকর্তব্য-কর্মোক্তান্নিনাম গ্রহীতব্যম্ ইতি স্থীতির্জাব্যম্।

<sup>\* &</sup>quot;নৌকিনঃ পাৰ্কো হয়িঃ প্ৰথমঃ পরিকীর্তিতঃ। অগ্নিন্ত নার সর্ভাগান্ধে বিধীরতে। পুংসবলে চন্দ্রনামা ওলাকর্পনি পোতনঃ। সীমতে বলনো নাম প্রসন্ত্রে লাভ-কর্পনি। নামি ভাও পার্থিনো হয়িঃ প্রান্ধেন চ ওচিতথা। সত্যনামা চ চ্ছারাং বাতাদেশে সভ্তরঃ। গোলানে ইউনামা চ কেলাতে হার্মিন্তাতে। বৈধানরো বিসর্বে ভূ বিধানে বোলকঃ স্বতঃ। চতুর্গান্ত শিশী নাম মৃতিরগ্নিভ্যাগারে। লক্ষ্যানে ভূ বাহুং ভাও কোটিহোকে হভাপনঃ। প্রান্তিতে বিশ্বকৈন পাক্ষতে ভূ সাহুনঃ। প্রান্ত্রাং মৃত্যে নাম শান্তিকে বর্মানরো। পোটকেই ব্লান্টেকেই বলদকৈন কোবোহগ্রিক্টাভিটারিকে। কোটে ভূ বেইরাগ্রিক ক্রয়ারো বৃত্তকেশে।

শশ্ব্য (১৩), মৃতাজাং প্রাদেশপ্রমাণাং সমিবং (১৪) ভূকীন্ অয়ে হবা (১৫), গশ্চাৎ ব্রম্মার্গমং কুর্যাৎ। তার সমাগ্র-পঞ্চাশং-ভূশপারহিতং সাইছিক্ষিণাবর্ত্তম্ উর্ভ্রুম্বং নর্তবৃষ্ট্র্ম্ (১৬) অধীতবেদং ব্রাহ্মণ, ছত্রম্, উত্তরাসকং, কমগুল্ং বা ব্রহ্মদেন পরিকর্য়, ধারাসহিত্য্ উদক্পাত্তং গৃহীদ্বা, অয়েক্তরতঃ প্রভূতি দক্ষিণাবর্ত্তম দক্ষিণদেশং গদ্ধা, অরম্বিমাতাভরিতে দেশে পূর্বাভিম্বীং বারিধারাং দন্ধা, তত্বপরি প্রাগগ্রান্ কুশান্ আন্তীর্য (১৭), পশ্চিমাভিম্বাং অন্তপবিষ্টঃ দক্ষিণজাহ্বনা বামজান্থ আক্রম্য, বামহন্তানামিকাকুর্চাভ্যান্ আন্তীর্কুশানাং কুশপত্রমেকং গৃহীদ্বা—প্রজ্ঞাত্তির বির্মিদ্ধে বতা ভূণনিরসমে
বিনিরোগং। ও নিরন্তঃ পরাবস্থং। ইত্যনেন দক্ষিণপশ্চিমকোণে প্রক্ষিপেৎ।
ততঃ অপ উপস্পৃত্ত, দক্ষিণপাদেন সব্যপাদম্ অবইভ্যা, উত্তরাভিম্বীভূর.

ন বজেণ ধমেদয়িং ন স্পেণ ন পাণিনা। মুথেনোপধমেদয়িং মুথাজ্যে।-২ংগ্লায়ত। গৌকিকাগ্নে তু মুণেন জালনং নিধিদ্ধতি কর্মপ্রদীপ আহ।

- (১৪) সমিধে লক্ষণমাহ ছলোগপরিশিট্য—নাসুচাদধিকা গ্রাহা সমিৎ সুলতরা কচিং। ন বিষ্কুল ছচা চৈব ন সকীটা ন পাটিতা। প্রাদেশারাধিকা নোনা ন তথা তাদ্ধিশাথিকা। ন সপর্ণা ন নিক্রীর্যা হোমের চ বিজ্ঞানতা। অকুশা চৈব ন সুলা অশাথা চাপলাশিনী। সকীরা নাধিকা নোনা সৰিধঃ সর্বাকামলাঃ॥
- ( > ৫ ) লেখনাভ্যক্ষণে ক্বছা নিহিভেৎরৌ সমিদদং । ততো ভ্রিগ্রহং ক্বছা কুর্য্যাৎ পরিসমূহনম্ । বন্ধাণমূপসভায় চক্তপণমারভেৎ । ইতি গৃহাসংগ্রহকার-বচনৈর ক্বছাপনাৎ প্রাক্ ভ্রিজপপরিসমূহনে অবগ্রেয়তে । ভবদেবোজ্যা চ পরভাদিতি ভদত্ত ব্যবহারঃ প্রমাণম্ ।
- (১৬) বজবান্ধনি মৃট্যাঞ্চ তবে দর্ভবটো তথা। দর্ভসংখ্যা ন বিহিতা বিষ্ট-রাতরণেবর্গি। ইতি কাত্যায়নবচনেন বছণি দর্ভসংখ্যা নিবিদ্ধা ইত্যবসময়তে, -রম্নন্দনেনাণি শাখ্যভারীরা দর্ভসংখ্যা—ইত্যুক্তম্। তথাণি গৃহ্যসংগ্রহকার-বচনপ্রামাণ্যাৎ অনুবেশ্যটোজিঃ লক্ষতে।

<sup>(</sup>১৩) বজেণ স্পেণ পাণিনা ব্যব্দনাদিনা চ অগ্নিজালনং ন কর্ত্তব্যম্। তথা চ গৃহাসংগ্রহ:—

<sup>(</sup>১৭) বনাসনাত্তরণং হোতৃকর্ত্বং তৃণনিরসনত বন্ধবেন করিতেন বার্থনের কর্তব্যনিতি, কুশনরবন্ধপক্ষে তু উভরমের হোতৃব্যন্দকর্তব্যনিতি পার্তসক্ষর ১

#### ক্রিক্লাকাও-বারিধিঃ

সাত্তকুশান্ অন্তিরভাক্তা ব্রহ্মাণং গৃহীয়া প্রস্থাপতির্থ বির্মিনে বিজ্ঞাপবেশনে বিনিরোগঃ। ও আ বংসাং সদনে সীদ। ইত্যনেন পূর্বাগ্রং কুশোপরি কুশাদিরচিতং ব্রহ্মাণং স্থাপরেং। ব্রাহ্মণব্রহ্মপক্ষে তু ব্রাহ্মণ এব "ও সীদামি" ইত্যুক্ত্যা উত্তরাভিম্থীভূর উপবিশেং। (১৮) ততত্তত্পরি কুশান্ দক্ষা,, অন্তিরভ্যুক্ত্যা, ও ব্রহ্মণে নম ইতি কুমুমেরর্চ্চরেং। ততো হোতা তেনের পথা পরার্ত্য, আসনে পূর্বাভিম্থ উপবিষ্টো ভূমিঞ্গাদিকং কুর্যাং। বদি ভূবহ্মবেন আরোপিতো ব্রাহ্মণঃ অইজ্ঞিরবাচং ব্রহাং, তদা (স) ইমং মন্তং অপেং— প্রস্থাপতিশ্ব বির্মান্তিলে বিষ্ণুদে বতা অবজ্ঞিরবাস্ব্তন-নিমিত্ত-কণে বিনিরোগঃ। ও ইদং বিষ্ণুবিচক্রনে ব্রেধা নিদ্ধে পদ্ম। সম্ভূমত্য পাংওলে। কুশাদিবহ্মপক্ষে তু কর্মকর্ভ্রের কৃতাক্তাবেক্ষণাদি-ব্রহ্মকার্য্য-কর্ত্যাং অবজ্ঞির-বাগ্রচননিমিত্ত-কণং (১৯) স এব কুর্যাং। অথ বদি প্রকৃতে কর্মণি চক্র-হোমোহতি,তদা অন্ধিরের সমরে চকং প্রপরিদ্বা (২০) \* তত্বপরি স্বতক্রবং দ্বা,

<sup>(</sup>১৮) অত্তেশং চিন্ত্যম্—অপ উপস্থাও ব্রদাসন উপবিশত্যাবসোঃ সদনে সীদামীতি গোভিলবচনেন ও আ বসোঃ সদনে সীদ ইতি বন্ধনানঃ ব্রহাৎ, সীদামীতি বৃত্তো ব্রদ্ধা উপবিশেৎ ইতি ভবদেবভট্টোক্তিরসম্বতেব প্রতিভাতি, স্মার্ভোহিপি এবমেব প্রভ্যুবাচ। ততক ব্রদ্ধকর্ত্তক আ বসোঃ সদনে সীদামীত্যস্তমব্রপাঠঃ স্মার্ভসম্বতঃ গোভিলসম্বতক। ভবদেবভট্টমতাম্ন্দ্রমিভিরস্কথিবাচর্য্যতে। তথা চ মন্ত্রব্যাধ্যা—হে ব্রদ্ধন্ আ বসোঃ বস্থাদক্ষিপার্পং ধনং বাবৎ দীরতে তাবৎকালং সদনে কুশন্তরপন্থানে সীদ তির্ভ।

<sup>(</sup>১৯) বছৰজিরাং বাচং বদেৎ, বৈষ্ণবীষ্টাং বজুর্ব। জপেৎ জাপি বা নমো বিষ্ণবে ইতি জ্বরাৎ। ইতি পোভিলবচনেন ইদং বিষ্ণুরিত্যাদি বিষ্ণো-বিরাটমসি ইত্যাদি বজুং ও নমো বিষ্ণবে ইতি প্রকার ত্রিতরাক্তমপ্রকারং-প্রারন্ডিত্তং কুর্ব্যাৎ ইত্যবগম্যতে।

<sup>্</sup>ৰ (২০) চরশ্রপণপ্রকারো বথা গোভিলোক্ত:—অবোল্থনমূবলে প্রকান্য

<sup>\*</sup> চরত্বানীএনাণক—ভিষ্যপূর্বসনিদ্যাত্রা বৃচ্চ নাতিবৃহষ্ণী। বৃদ্ধবানুষ্ণারী বাণি চলতানী-প্রান্ত্রের ভ্রমান্তক্ত সংস্কৃতে বক্তে গোকীবেণ চলং পচেও। ক্রেণ কালিতে পাত্রে নবে ভারন্যাণিকে। তার পারস্চরাবণি ভার্ন্যী হালী দ নিবিহা, প্রোইত্ত্ তুসার্ক-ভার্ন্যাত্রেশ মুখ্যতি ইতি নালাও।

रुशंक भक्तांप्रदेशः প্রাণগ্রান্ पর্জানান্তীর্য্যোপসাদর্যতি, অথ হবিনির্ব্বপতি वीरीन् वा रवान् वा कांश्यान वा हक्काना। वा। अमृश्य वा ब्हेश निर्वागीिक दिवजानावादान्यः मङ्गः, विष्कुकीम् । अथं भक्ताः धाचुद्धार्यस्वस्यम् अक्रमर्छः, দক্ষিণোডরাড্যাং পাণিড্যাং ত্রিংফণীকুডাংততুলান ত্রিদে বেড্যঃ প্রকালরে-দিত্যাহর্ষিন মুব্যেত্যঃ সত্ত্বং পিতৃত্য ইতি পবিত্রান্ত হিতাংতণ্ডুলানাবপেৎ। क्मनमृजीयत ज्ञानीभाकः अभारतः अनिकानमृनायूवन् । मृजयिकचारवानिकाच প্রভাতিবাররেৎ ইতি। বস্তার্থ:—ব্যায় পশ্চিমভঃ বজিষকাঠনিশিতে সূর্বঞ্চ বৈণবং প্রকান্য স্থাপরতি। অনন্তরং ডমিরানাদিতে উদুধলে হবিভূজান্ বীহীন্ যবান্ বা প্রক্ষিপতি দেবভানামোচ্চারণপূর্ককং **चारत पा क्**हेर निर्स्तशांविः हेजाविकारतन महर विष्कृकीः कारजनारतन চকুমাল্যা বা উলুখলে প্রক্ষিপেৎ। ভভন্নিবারং মূবলীঘাতেন অবহাতে সম্পাদিতে নিম্বীকৃতান্ ততুলানু তিঃ প্ৰফাল্য পৰিত্ৰব্যৰহিভান কম চক্রখাল্যাং নিক্ষিপেৎ। তত্ত্ব ছ্বং নিক্ষিণ্য পাকনিপুণেন তথা পচনীরং বর্ণান দশ্বং নাতিক্লিরংন মন্দপকং নানিম্পন্নং মণ্ডগালনরহিতং অক্তক্লের ठ खटवर । टमक्मटनम ( প্রাদেশপ্রমাণং ধরিরপলাশোডুয়রাণাময়ভয়য়् কাঠনির্বিতম্ উভরতঃ সার্কাল্ঠপ্রমাণচতুকোণপুররং বেক্ষীং ভবতি) निक्तावर्र्डन व्यवस्थाः ( केंद्रीयन् विधायन्) शक्य् व्याकाट्यद्याधारः আন্নেক্তরতান উভার্য পুনর তেনাবাররেৎ ইভার্ব:।

<sup>(</sup>২১) দক্ষিণহতনবোম্থং তথাবিধবাৰহতত পূঠোপরিভাবেন বিপর্যত-বাক্ষাভিদ্যং ভূমিকপে কুর্যাদিভার্থঃ।

<sup>ं (</sup>२२) देर जित्त ! नतावद कृत्यः भवित द्वार करकी जवितिकम् देवर वहर जनाबद्द मिनासद्द, भृष्टीय देखि वीवद । विक्कम् १ देवर करार क्लानिकप्रम्

ত্ণাদিকন্ অনেন নজজরেণ শোধরেং। জরাণাং নজাণান্ খব্যাদরং নাধারগাঃ।
কুংসথবিজ্গতীচ্চন্দঃ (২৩) অরিদে রভা পৃষ্ঠাত বড়হত বঠেহন্যায়িনাক্ছে
শত্তে পরিসমূহনে বিনিরোগঃ। ও ইম্প্ জোন্দরু তে, জাতবেদ্দে, র্থনিব
সক্ষহেনা ননীবরা। ভজা ছি নং প্রমতিরত স্পুদ্র, ভরে সংখ্যে না রিরামা
বরং তব। (২৪) ও ভরামেগ্রং রুণবানা হ্বীপুষি তে, চিতরভঃ পর্বাণা পর্বাণা
বরুন্। জীবাতবে প্রভরাপ সাধরা ধিরো, হয়ে সংখ্য না রিষামা বরং তব। (২৫)
ও শক্ষেম ভা সমিধপ্রসাধরা ধির, তে দেবা হবিরদভ্যাহতন্। ত্নাদিত্যা আ
বহু তান্ হ্যাপ, তারে সংখ্য না রিষামা বরং তব। (২৬) তত ঐশাক্তাং দিশি

স্মদলন্ প্রশন্ততরং। কিঞ্, হে অংগ! সপদ্মান্ আমাকং শত্রন্ পরাবা-ধৰ সুষ্ঠ পীড়র। কিঞ্ বোহপ্যনেন মত্রেণ বিবাহাদিবজ্ঞকর্মণি ভবদ্ধিটিত-ভূমেরবরবং গৃহাভি, সোহপি অন্যেষাম্ ঈশ্বরাণাং ধনিনাং সম্বন্ধি ধনং বিশ্বতে লভতে।

- (২৩) সামবেদসংহিতায়াং কুৎসঞ্চিবিরত্যেব লিখিডম্ ন তু কৌৎস ইভি ।
- (২৪) ইষং জোমং তবং বরং সন্মহেম পূজোপকরণং কুর্যাম। কলৈ ? ভাতবেদনে ভাতপ্রজার জাতধনার বা। অগ্নরে কিন্তুতার ? অর্থ তে ছতি-বোগ্যার। করা ? মনীবরা বৃদ্যা। রথমিব সার্থবিধা রখং হি বন্দাৎ নঃ অন্যাকম্ অন্ত অর্থেঃ সকাশাৎ প্রসাদাদ্বা ভল্লা কল্যাণী প্রমতিঃ প্রকৃষ্টা বৃদ্ধিঃ সংসদি অনসমাজে ভারতে, বরা বরং ভোতৃং জানীমঃ, ভন্মাৎ হে অর্থে তব সংখ্য বিল্পতে স্থিতা বরং কেন্টিৎ তৃরাত্মনা মা রিবাম বা হিংসিম্লিই।
- (২৫) হে আরে ! স্বদর্থন্—ইশ্বং বজ্ঞদাক ভরাম ক্রমাহরাম। হবীংবি
  চক্ষপ্রভৃতীনি পর্মণা পর্মণা পর্মণি পর্মণি চিতরভঃ স্বাং প্রজাপরভঃ
  কুণবাম সম্পাদরাম নির্মাপামেতি বাবং। কিমর্থন্ ! প্রভরাং অভিশরেন
  জীবাতবে জীবনার, কিঞ্চ বিরঃ বীরিতি কর্মণো নাম অস্বাভিঃ ক্রিরনাগানি
  কর্মণি সাধ্য সম্পানি কুক। অধ্যে সংখ্য ইত্যাকেঃ পূর্মবন্ধের্যার্থঃ।
- (২৬) হে জুরো জন্ জনাকংথিয়া কর্মাণি বৃদ্ধীর্মা নাধর আনালন্দেলায়াঃ কুলান্তর। বুধা বরং ছা ছাং লাম্বিধং পরিচরিভুং খতের শকুরান। ক্ষেত্র ছবি আহতং হবিঃ দেবাঃ ইস্রাদরঃ জনজি ভদবন্ধি ক্ষমুধকাৎ ক্রেমণ্ড।

নারসম্কান্ কিলেং ক্রিভান করে স্থাত উত্যাতাৎ কবিশাতং বাবং উন্মৃত্নান্ প্রকাশন করিছাল করালান্ত করিছাল করিছা

অতক্ত তান্ আদিত্যান্ অদিতে: প্রান্দেবান্ আবহ আবাহর, হি বিআৎ তান্ আদিত্যান বৈষম্ উত্মনি কামরামহে উদ্ভেখেন ইচ্ছানঃ, অভৎ প্রবিধা

The control of the property of the control of the c

(২৭) অগুত্রালহোমাদিভো বিংশতিকান্তিকাহোমঃ। তথা চ কর্মপ্রদীপঃ—
অলহোমসমিত্রসোবাল্টাহোর কর্মন্ত। বেবাকৈডছপর্যক্তং তের তৎসদৃশেষ্
চ। অকভলাদিবিশদি অলহোমাদিকর্মণি। সোমাছতির সর্কাস্থ লৈতেবিয়ো
বিধীরতে ॥ অলহোমাঃ সীমন্তোররনচ্ডাকরণাদো বিহিতাঃ। তেন কেবলচূড়াকরণসীমন্তোররনাডলহোমে কর্ডব্যে কুল্ডিকারামিশ্বহোমো নিবিদ্ধঃ।
এবমেব ক্সিপ্রহোমের নিউচং সারং প্রাতঃ কর্তব্যের্ অরহোমের পরিকন্তনপরিতরণাদ্যক্ষিভারস্ভের্ ভল বে স্বিশ্ববিদ্যান্তরহোমাঃ বর্গ অথপ্রসার্থিং

<sup>\*</sup> ग्रामाएकान् देकि वावर

<sup>ি</sup>**ক লক্ষৰ জাতৃত্বপুৰ্বাঞ্জেন। কেন্দ্ৰ**ি ১৯৯৮ কেন্দ্ৰ প্ৰতিষ্ঠান কৰি নিৰ্ভিত্ত কৰে আৰু

<sup>्</sup>री प्रशिव श्रम्भावात क्रिकेश निवस्त श्रीविष्णकारः श्रवकात्मक्षित्व विकासका स्थापिति स्थापिति । स्थापितिकारित अस्ति ।

प रेकात पर्राकृष्ठि नाउष्टिक्ष्य वृत्तिर्गात्रकारम् सेव पर्य न्यार्थः

প্রজাগতিথ বি: পবিত্রে বেবতে পবিত্রজ্বেদ্ধে বিবিরোগঃ । ত পবিত্রে বেল বৈক্ষরো । (২৮) ইত্যনেল প্রাদেশপ্রবাণং কুণার্ডরেণ বেটিড়ং কুণা নথ-ব্যভিরেকেন ছিন্তা-প্রজাগতিথ বি: পবিত্রে দেবতে পথিজ্ঞার্জনে বিনি-রোগঃ । ও বিক্ষোর্থনিলা প্রতে হঃ (২০) ইত্যনেনাত্যকা, ভারানিগাত্রে (৩০) উত্তরাগ্রং নিবার, তত্র হোনার্থং যুতং নিক্ষিপেৎ। ততত্তৎ কুণপ্রবয়ন্ত্র অধ্যে দক্ষিণহত্তানানিকান্ত্রগভ্যাং, মূলে চ বামহত্তানানিকান্ত্রগভ্যাং গৃহীদা, দক্ষিণহত্তাপরিভাবেন অবোম্থব্যত্তপাণিঃ—প্রজাগতিথ বির্গারশ্রীদ্ধন্দ আধ্যাং দেবতা আজ্যোৎপবনে বিনিয়োগঃ । ও দেবদা সবিতোৎপুনাত্ত-ছিন্তেণ পবিজেণ। বলোঃ ক্র্যুক্ত রণ্ডিভি: স্বাহা। (৩১) জনেন কুণপ্রব্যন্ত্রন্থন স্বত্য স্থাত র্থিভি: স্বাহা। (৩১) জনেন কুণপ্রব্যন্ত্রন্থন স্বত্য স্থাত র্থিভি: স্থাহা। ৩০ততৎকুণপ্রব্যন্ত্রন্থন

লোব্যন্তীহোম: তের্ তৎসদৃশের্ কিপ্রহোমের চ, বিবাহোডরগোভিলোজ-বানকালীনাকভদাদিলোবোপশমনার্থহোমের, জলহোমাদির, বৈশদেবহোমের ইশ্নহোমো ন কার্যা ইত্যবধেষদ্।

- (२৮) एक भविष्य ! यूनाः विकारतो विक्रूप्तवकारक, विक्रूर्वि वक्र हैकि क्रांटि वा पः जनशः।
- ( २> ) তে পৰিজে ! যুবাং বিকোঃ মদনা স্বরণমান্ত্রণ পূতে পৰিজে স্থঃ ভববঃ। সব্যেম স্বপ্রদেশে গৃহীয়া দক্ষিপেনাছমূল্যাৎ বিকোরিভিনরেণ ইতি সার্জঃ।
  - (৩০) আজ্যহানীপ্রমাণম্—

আক্সন্থানী চাকুৰ্যা তৈলসন্তব্যসন্তবা। মহীমনী বা কুৰ্ব্যা স্থানাল্য-হতিবুচ। আল্যন্থান্য: প্ৰমাণত ব্যাকামত কাৰ্যুৰ্থ। জুন্চুম্ব্ৰণাং ভল্ল-মাল্যন্থানীং প্ৰচলতে ॥

(৩১) হে লালা! যা খাং দেবং দেবনাদিওপর্কঃ সবিভা অছিত্রেণ অছিলাভান্ অব্যবহিনাভাাং পবিত্রেণ আভাাং পবিত্রাভাাং উৎপ্নাত্ অজ্ঞাতকেশকীটানিসংস্কলোবং অপনরতু। কিঞ্চ, বহু জ্ঞেন্ড তথ্যধানখাৎ লৈছিদি হুৱাউবোচাতে, তত বলোঃ ভেল্বিনঃ হুৱাত রাম্বিভিঃ কির্পেঃ আৰু উৎপ্নাক্ত ব্যক্তি বর্ষাঃ। খাহানীতি ব্যক্তেব্য

चडितकाका चरती थकिरनर। (०२) छउउछ चावानावङ छेररकताह्याक्तन्। অপ্নেদপরি নিধানম্, 🗯 ভরতাং দিওবভারণঞ-ইখনেব বার্ত্তরং কুর্ব্যাৎ। ইতি আজাসংস্থার:। ততঃ ধনিরপলাশোডুম্রাণাম্ অন্তবস্ত ক্রম্ অরত্বি-প্রমাণং ভ্রমিভাসুর্ত্রপর্কবিলম্ ইখমেব বারত্রবং সংস্কৃত্যাৎ । (৩৩) ইভি ক্রব-সংস্থার:। ততো দক্ষিণ জাতু ভূমৌ পাতরিশ্বা উদকাঞ্চলিং গৃহীশ্বা— প্রকাপতির বিরণিতিদে বতা উদকাঞ্চলিসেকে বিনিরোগ:। ও অদিতেংক ষক্তব। অনেন অগ্নেদ্দক্ষিণত: পশ্চিমান্তাৎ পূৰ্ব্বান্তং বাবৎ উদকাঞ্চলিনা সিঞ্চেৎ। ভত:—প্রজাপতির বিরম্বনতির্দ্দেবতা উনকাঞ্চলিদেকে विनिद्योगः। **ष्ट्रमाञ्च । जातम जात्यः পশ্চিमाञा प्रक्रिमाञा উত্তরাভং गाव** উদকাঞ্চলিনা সিঞ্চেং। ততঃ-প্রজাপতিশ্ব বিঃ সরস্বতী দেবতা উদকাঞ্চল-সেকে বিনিয়োগ:। ওঁ সরস্বত্যকুষ্তম। অনেন অগ্নেক্তর্ত: পশ্চিমান্তাৎ পূৰ্বান্তং বাবৎ উদকাঞ্লিনা সিঞ্চে। তত: – প্ৰজাপতি ধ বিশ্বিষ্ট্ প্ ছলঃ সবিতা ।দেবতা অগ্নিপর্ কেনে বিনিরোগ:। ওঁ দেব সবিতঃ প্রস্নুব বঞ্জঃ প্রস্থব ৰজপতিং ভগার। দিব্যো গর্ম্ম: কেতপৃ: কেতর: পুনাতৃ, বাচস্পতি-র্বাচর: খদতু। (৩৪) অনেন উদকাঞ্জলিনা দক্ষিণাবর্ত্তেন অগ্নিং বেষ্টরেং।

<sup>(</sup>৩২) অত্ত গোভিন:-

অবৈভদাভাষধিশ্রিভ্যোদগুদ্বাসরেং। এতদনন্তরং ভদ্বতপাত্রং অরেক্স-পরিক্বতা ভত্তরত উত্তাররেং ইত্যর্থঃ। এবমাত্রান্ত সংস্করণকরো ভবতি।
বত্র বত্রাভ্যসংক্ষারো বিহিতভট্তরবারং কর ইত্যর্থঃ। অত্র গর্ভপাত্রসংক্ষারবংঃ
সক্তব্যংক্ষভাজ্যপাত্রে বানি নিঃক্ষিপ্যস্তে তেবাং সংক্ষান্তরে। নাতীতিঃ
স্বহ্যাসংগ্রহকার আহ।

<sup>(</sup>७०) क्रवाषिनक्रमः वर्षा ছत्मानन्तिनिष्ठि—थापिता वार्ष नानाना विविष्ठिष्ठः क्रवः वृष्ठः। क्रन् वाष्ट्रमाजा विरक्षत्रा वृष्ठश्च क्षश्चरखरताः॥ धित-ननानानाणत्रकार्धनिर्मिष्ठः वर्ष्ट्रनम्थः क्षारम्बद्गनित्रवानः क्रवः, बार्माजा ना कर्

<sup>(</sup>७४) द्र त्वर त्वनातिश्वन्तः। निवाः। पः क्षः खन्नपः कर्मः खन्नपः । छत्। व्यक्षः खन्नपः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः । छत्। व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः । व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः । व्यक्षः व्यक्षः । व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः । व्य

ততো দক্ষিপং আছ উথাপ্য, উপর্যাধাহিত-দক্ষিণবামষ্ট তাং কলপুলকুশান্
সৃহীত্বা: বিরূপাকজপং ক্র্যাথ। (৩৫) পরবেলী আন ক্রেরপোধরিদে বিভা
বিরূপাকজপে বিনিরোগং। ও ভূত্বংশরো নহান্তমাঝানং প্রপতে;
বিরূপাকজপে বিনিরোগং। ও ভূত্বংশরো নহান্তমাঝানং প্রপতে;
বিরূপাকজপে বিনিরোগং। ও ভূত্বংশরো নহান্তমাঝানং প্রপতে;
বিরূপাকজপে বিনিরোগং ক্রেইজঃ স্বিহিতানি তানি। বলভ্চ্চ বলসাচ্চ
রক্ষতোহপ্রমণী অনিনিরতং সত্যন্। যতে ঘাদশ প্রাত্তে বা সংবংসরে
সংবংসরে কামপ্রেণ বজেন বাজরিছা, পুনর্র লচ্যামুপরিছি। বং বেবের্
রাল্পোহত্বং মহুযোর্। রাল্পো বৈ রাল্পমুপধাবত্যুপ ছা ধাবানি,
কপজং মা মা প্রতিজ্ঞাপীত্বিজ্ঞং মা মা প্রতিহোবীঃ, কুর্বজং মা মা প্রক্রি
কার্যাছাং প্রপতে। বরা প্রস্ত ইবং কর্ম করিয়ানি; তত্মে রায়তাং,
তত্মে সমুধ্যতাং, তন্ম উপপত্তাং। সমুজো মা বিশ্ববাচা ব্রলাক্সনাত্,
ভূবো মা বিশ্ববেদা বল্পণ পুরোহস্কানাত্, খারো মা প্রচেতা মৈত্রাবন্ধণোহল্পানাত্। তব্ম বিরূপাকার দন্তামরে, সমুজার বিশ্ববাচনে, ভূথার
বিশ্ববেদনে, খাত্রার প্রচেতনে, সহ্রাক্ষার বন্ধণং পুরার নমঃ। (৩৬) ইতি
জপ্তা, গৃহীতকুশান প্রাঞ্জীচাাং দিশি ক্ষিপেৎ, কলপুলং ব্রহণে নিবেদরেং।

কৃষ্ট্রাতোংস্টিতকর্মকণভাক্ ভবতীতি ভাব:। সবিতা কিভ্ত: ? দিব্য: দিবিভব:। পুন: কিভ্ত: ? গন্ধর্ম: গোঃ পৃথিবী তাং তৎস্থান্ রসান্ ইতি যাবৎ
রশিভিধ রতি পিবতীতি নিপাতিত:। পুন: কিভ্ত: ? কেডপ্র: কেতং
প্রভাং পুনাতীতি স ন: অসাকং কেতং চিডং পুনাতু বিমনীকরোতৃ
কর্মসাধনবোগ্য: করোভিত্যর্থ:। কিঞ্চ বাচন্দাতি: প্রাণ: স্বরগুরুর্বা স
ন: অসাকং বাচং বাদীং স্বদ্ভু অমৃতনিব সাদর্ভু ভোতব্যস্ত দেবভাবিশেষস্ভ প্রীতিকরীং করোভিত্যর্থ:।

<sup>(</sup>৩৫) অত ছনোগপরিশিষ্টং কেব্টিৎ কর্মস্থ পর্যদাসমাহ বথা—

ন ক্র্যাৎ কিপ্রহোমের্ ছিলঃ পরিসম্বন্ধ। বিরপাক্ষণ ন জপেৎ প্রপদ্ধ বির্ক্তিরেং । বিরপাক্ষণ: বিরপাক্ষ্ত্মরলগঃ, প্রপদঃ তপত তেজত ইত্যাবিকঃ, তং কিপ্রহোমের্ অন্তন্তব্ব সারং প্রাতর্হোমের্ সোর্জ্যাধ্য-ইংযাবির্ব পরিত্যকেং।

<sup>ি (</sup>৩৬) ক্রিপ্রিবী ত্রা অভয়ীক বঃ ব্যোগত আবা এতে ব্যালাক শতি সহাতং কলানিকাং আবাদং প্রবৃত্ত প্রসংসাহিতি,

অধ বনি কাৰ্যকৰ্ষিং কুণ্ডিকা ক্ৰিয়তে, তথা প্ৰথমন্ অঞ্চীং বন্ধী—ও তপক তেজক প্ৰদা চ ব্ৰীক সত্যঞ্চাক্ৰোধক ত্যাগক বৃতিক ধৰ্মক সমুক্ষ বাক

**८ एका । यः विक्रशांक्काश्या नानाक्रश्यक्ताश्या, मखांकः मखान जनकिः** ব্যশ্বয়তীতি দস্তাশ্বিঃ ব্যক্তদন্তঃ, তত্ত এবভূতত তে তব শব্যা শব্বনস্থানং नर्त भरव উপলেপনাভাকণাদিভিঃ সংস্কৃতে दक्षित्न ভূমी दाननमत्यः ইতি শ্রুতেঃ, গৃহাঃ গৃহং অন্তরিক্ষে ভূবর্ণোকে বিমিতং বিশেষেণ মিতং ক্তম্ অর্থাৎ হিরণ্যগর্ভপ্রভৃতিভি:। কীদৃশং গৃহম্ ? হিরণ্যরং স্থবর্ণমরং। তথা চ ঐতি:—অণিতময়িং প্রবিশস্তমন্তরিকমিতি, তৎ তলিন্ গৃহে দেবানাং ইক্রাদীনাং ব্দরানি ভিঠন্তীতি শেষঃ,ভৈঃ দেবলদরৈঃ দহ হিতোৎগ্নিঃ প্রার্থ্যতে, टर चटता कता श्रवसमाकः विदानिसामीि चित्रभ्याः प्रतानाम्। किमितिर ? अतमात लोहमत कूछ हैव असः मत्या मितिरुनि একীভূতানি তানি দেবহুদয়ানি বলভূচ্চ বলসাচ্চ অগ্নেরেতে ধারপানো রক্ষতঃ অগ্নিমিতি শেষঃ, বলমুপচয়ং বিভর্তীতি বলভূৎ, আত্মভক্তানাং বলং সাদরতি কোটরতি ইতি বলসাৎ বিপক্ষাণাম্। কিন্তৃতাবেতৌ ? অপ্রমণী অপ্রমাদিনো গৃঢ়মনস্করাও। পুনঃ কীদৃশো ? অনিমিবতঃ অনিমীলিতাকো। ৰৎ এতো বন্দত্ত তৎ সত্যং, তাভ্যাং বন্দিতে অগ্নে বন্দমানঃ পুরোডাশাদি জুহোতি, বং বে তে তব সমংসরাধ্যক্ত বজ্ঞক षशाधाः-- ८७ मण्यत्व मण्यत्व धारायः প্রেণ কাষপুরকেণ যজেন জ্যোতিষ্টোমাদিনা বজমানং বাজিমিতা পুনঃ ত্বাং ব্ৰন্দৰ্ব্যং ব্ৰন্নভূতং উপৰক্তি প্ৰবিশক্তি। হে অংগ্ৰ! বং দেবেযু দেবলোকেরু বাহ্নণঃ অসি, অহং মহুষ্যেরু মহুষ্যলোকেরু বাহ্নণো-২ন্মীতি শেষঃ, বৈ পূরণে, বভো ব্রাহ্মণঃ ব্রাহ্মণম্ উপধাবতি ব্রাহ্মণ-**ट्याबान्यत्वराज, जाकः जा जार जैनवावानि नित्रकानि। जैनवावनक** काजनमार-क्रमंडर मा मा প্रिकाशीः क्राइन्डर मा मा প্रक्रिकारीः क्राइन्डर मा मा প্রতিকার্বী:। এতহুক্তং ভবতি—লপহোমকর্মস্থ মম দং প্রাতিকৃল্যং মা অতঃ ত্বাং প্রপত্তে শরণং বামীত্যর্থ:। ত্বা প্রস্তুতঃ অহজাতঃ কর্ম করিব্যামি, বত এবম্ অতঃ তৎ মে মম কর্ম রাধ্যতাং সংসিধ্যতু, ভৎ মে সম্বধ্যতাং সংবৰ্দ্ধভাং, ভৎ মে উপপদ্মতাং-

ক মনকাস্থা চ, ডানি প্রণয়ে, তানি মানবছ। ে(৩৭) ত ইতি লগু। পশ্চান্-বিশ্বপাক্ষপং কুর্যাৎ।

#### ইতি বিরপাক্ষপান্তা কুশণ্ডিকা।

ফলদানসমর্থং জায়তাম্। যৎ তে ঘাদশ পুদ্রা অয়্যাখ্যা ইত্যুক্তং তান্ নামপ্ররোগেণ কভিচিৎ দশিরিত্যাহ সম্ত ইব সম্ত্রো সম্ত্রনামা অয়ি:। কীদৃশঃ ?
বিশ্ববাচাঃ বিশ্বং ব্যঞ্চি বিবিধং গছেতি, তথা ত্রন্ধা ত্রন্ধাররে মা মাম্
অফুজানাত্ অত্র কর্মণি প্রবৃত্তমিত্যর্থঃ, তথা তৃথং তৃথনামায়ি:। কীদৃশঃ ?
বিশ্ববেদাঃ সর্কবেজা, তথা ত্রন্ধাঃ মা মাম্ অফুজানাত্, তথা
শাত্রঃ খাত্রনামায়ি:। কীদৃশঃ ? প্রচেতাঃ প্রকৃষ্টমনাঃ, তথা মৈত্রাবরুণঃ
মিত্রাবরুণপুত্রঃ মা মাম্ অফুজানাত্। হে অয়ে, যহমনেকপ্রকারঃ
প্রাক্তরুণ তব্দি তে তৃভ্যং বিরুপাক্ষার দস্তাপ্তরে সম্তার বিশ্ববাচনে
তৃথার বিশ্ববেদনে শাত্রার প্রচেতনে সহস্রাক্ষার ত্রন্ধাঃ প্রার। 'নরঃ'
ইতি সর্কত্র সম্বন্ধানীরম্।

(৩৭) তপঃ উপবাসাদিঃ, তেজঃ প্রকাশাস্ত্রকং, শ্রদ্ধা চিত্তত কানুয্যাপনয়নং কর্মা, চিত্তবৈসকাত্রগমো ধর্মো বা, ব্রীঃ লজ্জা, সত্যং বধার্থবাদিবন্, অজ্ঞোধঃ প্রতিক্লবিষয়েংপি মনসঃ প্রসাদঃ, ত্যাগঃ ভারাত্রগতত্ত ধনত্ত বিধিনা বিসর্গঃ, শ্রতিঃ সৌমনত্তং, ধর্মঃ যজ্ঞকর্ম, সন্তম্ আত্মপ্রভাশকো গুণঃ, বাক্ বচনং, মনঃ ইন্দ্রিয়বিশেষঃ, আত্মা ক্লেজ্জঃ, ব্রহ্ম পরং তন্তং, চকারাঃ পরস্পরা-পেক্রা সমুচ্চয়ার্ধাঃ, তানি তপঃপ্রভৃতীনি প্রপত্তে শরণং গচ্ছামি, অতঃ তানি স্কাণি ইমং যজ্ঞঃ কুর্কাণং মাম্ অবন্ধ রক্ষন্ত।

<sup>\*</sup> কাষ্যের চ প্রণদঃ ইতি গোভিনক্তাৎ কাষ্যকর্মের তপক তেলকেতাদি প্রণদাধ্য-ন্দ্রঃ পাঠাঃ, বাক্তব ।

ইতি বিরপাক্ষপান্তা কুমুণ্ডিকা।

#### 

कृषिकित्वसः श्रव्यक्ति क्यां, महावाशिष्टिश्वाः क्यां । श्रव्यक्ति । श्रव्यक्ति क्यां, महावाशिष्टिश्वाः क्यां । श्रव्यक्ति क्यां महावाशिष्टिश्वाः क्यां । श्रव्यक्ति व्यक्ति व

#### উলীভ্যং কর্ম

বিষ্ণুরে । তৎসদভোত্যাদি রুতেৎ নিন্ হোমকর্মণি বদ্বৈশুণাং জাতং, তদোষপ্রশাননার শাট্যারনহোমরূপ-প্রার্থিতহোমনহং কুর্মীর। ইতি সঙ্গল্প তার ঘং বিধুনামানি" ইতি নাম কমা, আবাহ্য, সম্পূল্য, প্রাদেশপ্রাণাণাং
ঘুতাক্তাং সমিবং ভুকীন্ আরৌ হয়, মহাব্যাহ্যতিহোমক পূর্ববং কথা,
প্রার্থিতহোমং কুর্যাং। প্রকাপতিশ্বিরিন্নদে বতা প্রার্থিতহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ পাহি নো অগ্ন এননে মাহা। (১) সর্ব্বে আজ্যেন ভুত্রাং।
প্রজাপতিশ্বিবিধানেরা দেবতাং প্রার্থিতহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ পাহি
নো বিশ্ব বেদনে মাহা। (২) প্রজাপতিশ্বিবিভাবস্থদে বতা প্রার্থিতহোমে
বিনিরোগঃ। ওঁ বজং পাহি বিভাবসো মাহা। (৩) প্রজাপতিশ্বিঃ
প্রজাত্তব্বেতা প্রায়ণিতহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ সব্যং পাহি শতক্রতো

<sup>(</sup>১) হে অগ্নে! এনসে এনসং অসাক্ষক্তাৎ পাপাৎ নং অস্থান্ পাহি রক্ষ।

<sup>(</sup>२) হে বিশ, হে বিশ্বদেবাঃ! বেদনে বেদনারাঃ অসাক্ষতনিত-সাপসভূতারাঃ স্কাশাৎ নঃ পাহি।

<sup>(</sup>७) द विकारता चार्ता। महा कित्रमांगर रक्कम् चतावस्ति शाहि।

<sup>(8) (</sup>ह में जिल्लाका ! हैन्स ! मराः मर्देश वागः छव छवः मराः वक्र-व्यक्तिकः समितिक वावः शाहि विश्वत्यः शि वरकः वर्षाक्तमन्त्राता छव ।

<sup>(</sup>৫) হে অগ্নে ! হে উজ্জাৎ পতে বলবতাং প্রেষ্ঠ ! হে বসো ! ত্রিতর-মণ্যেতৎ বহিনবোধনদ্। একরা গিরা সানীর্বাদরপরানঃ স্বান্ পাহি উক্ত প্রকারভেনঃ, বিতীররা গিরা নঃ স্বান্ পাহি, তথা তিহুতিঃ, তথা চত্রুতিঃ প্রতিঃ ।

<sup>(</sup>৬) হে অরে ! উর্জা বলেন নাং প্রতিদেরস্থাভিনতেন প্নঃ নির্বাহন নহং নাহং নির্বাহনে তাৎপর্যস্থা। প্নঃ ইবার্বা ইছতীতি ইবং পুরুস্ক ভ্রতার্থ তেন একপুরুষার্বেশ বেরস্থাভিনতেন নাং প্রতি পুনঃ
নির্বাহ মহানিজ্বে আর্শাত্থ নির্বাহ্বিভ ভাৎপর্যস্থা তথা অসাজবিজ্বভাও অংহসঃ পাপাধ-নঃ স্বাধান পুরুষ পাহি।

<sup>(</sup>१) হে অথে। বিশ্বতঃ পরি বিশ্বঃ পরিচ্যকা নহা ররিনা ধনেন নেম্বাভিনতেন সহ যাং প্রক্তি নিবর্ত্তবা নহাং ধনা আতুং নিবর্তকোতি তাং-পর্যান্। তথা বিশ্বস্থা অগ্নিসহন্দিলা ধাররা স্বতধাররেত্যর্থা, পির্দ্ধ সিঞ্চ অর্থাৎ আত্মাননের।

<sup>(</sup>৮) क्षेत्रा रव वर निवृद्धः उर वाक्षांठः, उर्लारक्षर वनाक्षांठम्, वक्षेत्र रक्षक नवित वर कर्ष वनाकांठः रक्ष वीक्षांठम् वनि निधु निधाः किराप्त, रह वर्षाः। वक्ष रक्षक नवित उर नविर केष वर कर्मा नवित. हि वक्षार वर विवाधिः वर्षावर स्वावर स्वावर स्वावनित ।

## Asiatic Society, Calcutta সংক্রিপ্রার্থকান্ চ 1668 Date ১৭/5/গ্

প্রকাপতিথাবিং পঙ্কিশ্ছনং প্রকাপতিদেবিতা প্রায়শ্চিত্তহোমে বিনিয়োগং। ওঁ প্রকাপতে ন দদেতাক্তকো বিষা জাতানি পরি তা বভ্ব। যংকামান্তে ভূহ্মন্তরো জ্বন্ত বরং স্থাম পতরো রয়ীণাং স্থাহা। (৯) ততঃ পূর্ববং মহাব্যাহতিহোমং সমিংপ্রকেশঞ্চ ক্র্যাং। ততো নবগ্রহহোমং কর্তব্যং, প্রত্যেকং সমিংপ্রকেশণং গ্রহহোমে কর্তব্যম্, ভদ্যথা—ওঁ আ ক্রফেন রজসাবর্তমানো নিবেশয়য়য়ৢতং মর্ত্যঞ্চ। হিরণায়েন স্বিতা রথেনা দেবো যাতি ভ্বনানি পশ্রন্ স্থাহা। (১০) ওঁ আপ্যায়ন্ত্র সমেত্র তে বির্বতঃ সোম বৃষ্যম্। ভবা বাজস্থ সন্থে স্থাহা। (১১) ওঁ অগ্রিম্রিটা দিবং করুৎ পতিঃ পৃথিব্যা

<sup>(</sup>৯) হে প্রজাপতে! জ্বগৎপ্রজা! বানি এতানি বিখা বিখানি বং ঘতঃ সকাশাং জাতানি জ্বায়্জোগ্রজানিজ্ঞানি তা তানি বং অন্তঃ ক্তিং ন পরিবভূব ন পরিগৃহাতি। বত এবভূতো ভবান্ অতঃ বংকামাঃ বিদ্ধির বয়ং তে ঘদর্থং জুত্মং ঘামৃদ্ধি আত্তিং দাস্থামা, তং তম্ম ফলং ছংপ্রসাদেন নঃ অস্থাকম্ অস্তঃ। কিঞ্চ বয়ং রয়ীণাং ধনানাং প্রসঃ স্থাম ভবেম।

<sup>(</sup>১০) দৈবিতা আদিত্যঃ আয়াতি আগছতি, কিস্তৃতঃ ? দেবঃ দেবনাদিভণ্যুক্তঃ । কেন ? রথেন । কিস্তৃতেন ? হিরণ্যরেন স্বর্গরেন । কিং কুর্বন্
আয়াতি ? ভ্বনানি প্রশুন্ ভ্বনবর্তিনো মহুব্যান্ প্রকাশপ্রকাশ-প্ণাপাপকর্ত্ন্ নাক্ষিবং নিরীক্ষাণঃ ,তথা নিবেশয়ন্ স্বের্ সেষ্ ব্যাপারের্ সমাবেশয়ন্ ।
কম্ ? • অমৃতং মত্রিঞ্চ দেবান্ মহুব্যাংশ্চ । স্বর্গ্যাদরে মহুব্যাঃ স্বের্ কর্মান্
বর্ত্তমানাঃ দেবান্ গ্রীণন্তি, প্রীতাশ্চ দেবা বৃত্ত্যাদিনা মহুব্যান্ আপ্যায়য়ন্তি
তেন দেবমহুব্যাণাং পরস্পরোপল্লেয়ঃ । প্রঃ কিস্তৃতঃ সবিতা ? ক্ষেন্
স্বিনেন রক্ষসা রাত্তিকালেন সহ আবর্ত্তমানঃ অহুদিনং পরাবর্ত্তমানঃ ।

<sup>(</sup>১১) হে সোম! বৃষ্ণাং বৃষ্ণি বর্ষকে মেয়ে ভবং জলং তে তব সমেতু সক্ষতান্ বংসামিধ্যং যাতু, অতবং বিখান্ আপ্যায়স্থ বর্ষা, অতএব বাজস্ত অনুস্ত সক্ষে সক্ষম ভব।

এতাণাং স্থাাদীনাং বথাক্রবং সমিধো বথা—অর্কঃ পলালঃ থদিরো হুপামার্গেছিব
 পিয়লঃ। উত্বরং শনী দুর্বা কুলাক সমিধং ক্রমার।

ASIBITIC DOCLETY, CAICUTTA

আরম্। অপাং রেতাংসি জিয়ভি আহা। (১২) ও আরে বিবস্থ্যসন্তিরং রাথো অমর্ত্য। আলাওবে জাতবেলো বহা অমন্তা দেবা উমর্জ্যং আহা। (১৩) ও বৃহস্পতে পরিদীরা রথেন রকোহামিত্রা অপবাধমানঃ। প্রভএন্ৎ সেনাঃ প্রেম্ণো ম্থা জয়য়আকমেধ্যবিতা রথানাং আহা। (১৪) ও ও করেও অন্তল্ বিস্করে অহনী ভৌরিবাসি। বিশা হি
মারা অবসি অধাবন্ ভলা তে প্রমিহ রাতিরপ্ত আহা। (১৫) ও শরো

<sup>(</sup>১২) অন্নং ভৌমং অন্নি: অন্নে: মৃদ্ধা অত্যন্ততেলোরপতরা নিতান্ত-লোহিতবাদ্ অন্নে: প্রধানভূত এব। তথা দিবং আকাশশু কর্ৎ চিহ্নং ভূষণমিত্যর্থ:। বৃষ্টিকর্ত্ত্বাৎ অপাং জলানাং পতিং, অতএব পৃথিব্যাঃ রেতাংসি বীজানি জিন্বতি প্রীণাতি সফলীকরোতি।

<sup>(</sup>১৩) হে অয়ে হে জাতবেদঃ! (শ্রৌতনার্ত্তায়িদয়োধনম্ এতং) স্থম্ উষর্ধুয়ঃ অসি উষসি ব্ধানে প্রাতরাহতিগ্রহণার্থং জাগরি, অতএব স্থার্মরপোহসি, সোহপি উষসি ব্ধাতে আদিত্যায়গতত্বাৎ তত্ত। অতঃ দেবান্ অপ্রধানকর্মভ্তান্ অতাঃ অতান্ প্রাতরাহতে প্রযুক্তামানান্ ভক্ষ্যান্ আবহ প্রাপয়। কিভ্তন্ম রাধঃ আরাধনীয়ঃ। হে অমত্য দুদেবস্বরূপ! কথমাবহ ইত্যাহ—বিবস্বৎ বিবস্বতে স্থ্যার্থং বহিনা স্থ্যার্থম্চাম্ আহতিং দেবা অদস্তি। কিভ্তায় বিবস্বতে প্রত্তায় উষসি চিত্রং রূপং আদাত্তবে উপাত্রতে।

<sup>(</sup>১৪) হে বৃহস্পতে ! জং রথেন পরিদীয়াঃ পর্যাট। কিং কুর্বান্ ? 
অমিতান্ শক্রন্ অপবাধমানঃ পীড়য়ন্। জং কিন্তৃতঃ ? রক্ষোহা রাক্ষসহস্তা,
তথা দেনাঃ দৈত্যানাং দৈল্লানি প্রভঙ্গন্ বিমৃদন্ প্রমৃণঃ প্রকর্ষেণ হিংসন্।
কেন হিংসন্ ? মৃধা মুজেন তথা জয়ন্ সন্ অস্মাকং রথানাম্ অবিতা
অধিপালকঃ এধি ভব ইতি দেবৈঃ ভুয়তে।

<sup>(</sup>১৫) হে অহনী ! যুবাং শুক্রং যক্তওং শুক্রার্চনং প্রতি অধিকরণভাব-মুপগছতেন । তরোরক্রোর্ম থো হে অধাবন্তে তব অহঃ—অক্তও ঘদ-র্চ্চনপ্রযুক্তভাও হে পূবন্তে তব অহঃ অক্তও ভবদারাধনপ্রযুক্তভাও অন্তভাবঃ—বিশিন্নহনি অধাবা অর্চ্চতে, ন তত্ত্ব পূবা, বত্ত চ পূবা, ন তত্ত্ব অধাবা শুক্রঃ পুনক্রভন্নচিচ্চতে, একস্মিন্নহনি অধাবা সহ, অপরস্থিনহনি পূকা সহ।

দেবীরভিটরে শরো ভবৰ পীতরে। শংবোরভিত্রবন্ধ না খাহা। (১৬) ও করা নশ্চিত্র আভ্বদ্তী সদা বৃধা সধা। করা শচিষ্ঠরা বৃতা খাহা। (১৭) ওঁ কেতৃং রুগরকেতবে পেশো মর্ব্যা অপেশসে। সমুব্ডিরজারধাঃ খাহা। (১৮)

অতএব তে বে অহনী বিষ্ক্রপে নানাক্রপধারিণী তেন দিনবরসাধ্যে বাধে আছোঃ সংঘাধনপূর্বক আদেশেহিরন্। তথা হে অধাবন্। অধরা প্রাক্তক্ষি উপলক্ষ্যতে সা বত্রান্তি স সংঘাধ্যতে হে অধাবন্ হে প্রাক্তদেব সুর্ব্যেতি বাবং ছং ছোরিবাসি আকাশ ইব ব্যাপকোহসি। তথা ছং হি বত্রাৎ বিষাঃ মারাঃ অবসি অবিভাগ্যক্ষাৎ সংসারক্ত মারাক্রপত্বং জগত্রপমারাং গোপরনি। তথা হে প্যন্! ইহ বজ্ঞে তে তব ভদ্রা শুভপ্রদা রাতিঃ আশীর্বাদক্রপং দানম্ অস্তু।

- (১৬) প্রক্রান্তা: আপ: ন: অস্নাকং শং.কন্যাণ্য: ভবন্ধ। কিন্ত্তা:?
  দেবী: দেব্য: দেবনাদিগুণযুক্তা:। কিমর্থন্? অভিষ্টরে উপচয়ার্থন্
  পীতয়ে পানার চ। কিঞ্চ ন: অস্মান্ অভিস্রবন্ধ শুদ্ধার্থং উপরি করন্ধ।
  কিমর্থন্? শংযো: কন্যাণ্স যোগায়।
- (১৭) চিত্রে চরনকর্মণি অগ্নিস্থাপনকর্মণীতি ধাবৎ, প্রবোজক ইব্রঃ
  করা উতী উত্যা কেন তর্পণেন নঃ অত্মাকং সদার্ধঃ নর্মদা বৃদ্ধিকারী
  আভ্বৎ ভ্রাৎ ? করা চ বৃতা ক্রিররা বা চিত্রে নঃ অত্মাকং সধা মিত্রম্
  আভ্বৎ। কিন্তুতরা বৃতা ? শচিষ্ঠরা শচীতি কর্মণো নাম অতিশরকর্মবত্যা। কেন তর্পণেন করা ক্রিরাপরিপাট্যা চ ইক্রোংআকং বৃদ্ধিকারী সধা
  চ ভ্রাৎ ইতি বাক্যার্থঃ। হে ইক্র! ত্রা ক্থিতে সতি বরং তদম্ভিষ্ঠামঃ।
  ইতি ভাবঃ।
- (১৮) হে কেতো! ধ্বজরপ! তং সমজারথা: সংজাতো ভব। কৈজ জমান: ? উবন্তি: বসন্তির্গৃহহৈরি তার্থ:। কিং কুর্বন্? মর্ব্যা: মতে গুড়াঃ
  কেতৃং জ্ঞানং ক্যন্ কুর্বন্। ন কেবলং জ্ঞানন্ জাপি তৃ পেশঃ
  কুর্বন্ পেশঃশব্দেন স্বর্ণং সৌন্দর্যাং চাভিবীয়তে। কিন্তুতে ভারা
  মর্ব্যেভা: ? অকেডবে জ্ঞানেভাঃ তথা অপেশনে নির্ধনেভাঃ
  কুর্পেভারা বা।

ভূভো গ্রহাধিদেবভাপ্রভাধিদেবভাহোমং সমাপ্য ইন্দ্রাদিদশদিক্পালহোমং কুৰ্ব্যাৎ। যথা—ওঁইক্রায় ভাহা। ওঁআয়েরে ভাহা। ওঁবমায় ভাহা। ওঁ 'নৈঋতার স্বাহা। ওঁ বরুণার স্বাহা। ওঁ বারবে স্বাহা। ওঁ কুবেরার খাহা। ওঁঈশানার খাহা। ওঁত্রলণে খাহা। ওঁ জনস্তার খাহা। ততঃ প্রত্যক্ষণেবতাহোমং কৃষা প্রাদেশপ্রমাণাং ভুকীন্ আয়ৌ হ্বা, পাতিতদকিণজান্থ: উদকাঞ্চলিং গৃহীয়া, অগ্নিপয়ু কণং কুর্ব্যাৎ —প্রজাপতিশ বিশ্লিষ্টৃপ্ছন্দঃ সবিতা দেবতা ভায়িপর্যুক্তণে বিনি-,রোগঃ। ওঁদেব সবিভঃ প্রস্থ ৰজঃ প্রস্থুব যজ্ঞপতিং ভগার। দিবো গদ্ধৰ্ক: কেতপু: কেতন্ন: পুনাতু বাচস্পতিৰ চিন্ন: স্বদত্। জনেন উদকাঞ্চ-নিনা দক্ষিণাবর্ত্তেন অগ্নিং বেষ্টগ্রেৎ। প্রজাপতিশ্ব বিরদিভিদে বভা উদকাঞ্চলি-সেকে বিনিয়োগঃ। ওঁ অদিতেহয়মংস্থাঃ। অনেন অগ্নেদ ক্লিণতঃ পশ্চি-মাস্তাৎ পূর্ব্বাস্তং যাবৎ উদকাঞ্জনিনা সিঞ্চেৎ। প্রজাপতিশ্ববিরম্মতিদে বিতা উদকাঞ্চলিসেকে বিনিয়োগ:। ও অনুমতে হয় মংস্থা:। অনেন অগ্নে: পশ্চি-मट्डा मिक्न गुरु े উखत्रासः यावः উদকাঞ্জ निना नित्यः । প্রকাপতি संविः **मत्रचछी (एवछा जेएकां अनिरास्क विभिन्दां ११ । ७ मत्रचछा वसः छ। অনেন অ**গ্নেক্তরতঃ পশ্চিমাস্তাৎ পূর্বাস্তং যাবৎ উদকাঞ্চলিনা সিঞ্চেৎ। তত উত্তানহত্তব্বেন ক্তিপয়াভৃতকুশান্ গৃহীতা-প্রজাপতির্থবির্বব্বো দেবতা দর্ভতৃণাভ্যঞ্জনে বিনিয়োগ:। ও অক্তং রিহাণা ব্যন্ত বয়:। (১৯) অনেন অগ্রম্যুস্নানি শ্বতেনাভ্যমক্তি, মন্ত্রু বারব্রঃ পঠিতব্যঃ। ততন্তান্ দর্ভান্ **অভিরভ্যক্ষ্য—প্রজাপতিঝ বিরম্ন্ট**ুপ ছন্দো রুল্রো দেবতা দর্ভ**জ্**টিকাহোমে বিনিরোগ:। ওঁ ব: পশ্নামধিপতী ক্রতন্তভিচরো ব্যা। পশ্নস্থাকং মা হিংগীরেতদন্ত হতং তব খাহা । (২০.) খনেন অগ্রে প্রক্রিপেৎ। ততঃ

<sup>(</sup>১৯) বর: পক্ষিণঃ ইনং দর্ভত্ণম্ অক্তং দ্বতেন অভ্যক্তং রিহাণাঃ আখাদরন্তঃ ব্যব্ধ থাদত্ত।

<sup>(</sup>২০) যা করা পশ্নাং গবাদীনাম্ অধিপতিঃ স্বামী তবিচরঃ অন্ধ্রীকরঃ ব্যা ববিতা পর্ক্তরপা অধুনা স এব প্রত্যকীরতা উচাতে। হে করা । স্বামন্ পশ্ন গবাদীন্ মা হিংসীঃ:। এতৎ হতং তব অন্ধ। প্রত্যে ইতি শেষঃ।

ওঁ অয়ে বং মুড়নামাসি ইতি নাম কৰা আবাহ, গন্ধ-নাল্য-বন্ধ-তাৰুলা-দিভি: অগ্নিমভার্চ্চা, ফলপুন্পাবিত-মৃতেন (ব্রমানস্থিত:) উথার-প্রজাপতিথ বিধিরাভ্গারপ্রীচ্ছল ইল্রো দেবতা বলফামত বজনীরপ্ররোগে विनिर्द्यागः। ७ পूर्वरहामः रमरन क्रहामि सार्थन क्रहाछि वन्नमरेन দদাতি। বরং বুণে যশসা ভামি লোকে স্বাহা। (২১) মনেন পূর্ণাছতিং দভাৎ। ততো বন্ধণে পূৰ্ণপাত্ৰং তদস্করভোজ্যং বা দক্ষিণাং দল্পা— पं अक्षन् क्रमच हेिछ विस्वा, अक्ष श्रीहर मूक्षा, चरश्रेत्रभाकार मिनि एक्षर मज़ा, ভতঃ ক্ৰবেণ ভশ্ব আহত্য, তেন ক্ৰবেণগ্ৰহ্মনা—ওঁ কশ্বপশ্ৰ জ্যায়ুব্ম। ইভি ननाटि । अमनत्राञ्चायुरम् । ইতি कर्छ । यत्मरानाः ब्यायुरम् । ইতি एकिनवाह-মূলরো:। তামে আন্ত ল্যায়্বং। ইতি হুদি তিলকং দ্ভাৎ। ততঃ। ওঁ আগ্নে খং সমূদ্রং গছ । ইতি অগ্নিং বিস্কা, আচারাৎ—ও পৃথি খং শীতনা ভব। ইতি দল্লা পরিষিচ্য, কুশকুসুম-সহিত-জলপাত্তে হন্তং দল্লা, নশ্চিত্র ইতি ঋক্ত্রমস্ত বামদেবঋবিগামিল্রীছেন্দ ইল্রো দেবতা শান্তিকর্মণ জপে বিনিয়োগ:। ওঁ কয়া নশ্চিত্র আভূবদৃতী সদা বৃধ: স্থা। শিচিষ্টরা বুতা। 

প্রতিষ্ঠার বুতা। 
প্রতিষ্ঠান বুতা। 
প্রতিষ্ঠান বুতা। 
প্রতিষ্ঠান বুতা। मृहा-চিদারুজে বস্থ। (২২) ও অভীবুণ: স্থীনাম্বিতা করিছুণাং।

<sup>(</sup>২১) পূর্ণহোমং পূর্ণক্ষবেণ অগ্নে হব্যত্যাগং আহং জুহেনুমি নিম্পাদরামি। কিমর্থন্? বশসে কীর্ত্যর্থন্। মত্রেণেব অর্থন্ন ভাতিমাহ। বং কনিং অন্মে বশসে জুহোতি বরন্ অভিমতকলন্ অন্মে হোতে বলং (কর্ত্ব) বলাতে, বন্মাদেবন্ অতোহহন্ বরং বুণে হে বলং ! হরা বশসা অহং লোকে ভাষি তেজবী ভবামীভার্থঃ।

<sup>(</sup>২২)। হে ইন্দ্র! ক: কো রস: আ আং মৎসৎ মতং করোতি।
কন্ত রস: । অন্ধ্র: অরন্ত সোমতেতি বাবং। কিন্তুতো রস: । সতা: সোমবাগে ক্রিমাণে অবশুভাবী। পুন: কিন্তুতঃ । মদানাং সুরাণাং মধ্যে
মংহিচ: অতিশরেন মদজনকঃ, বেন মদেন মন্তবং দুঢ়াচিৎ দুঢ়ান্তপি] বস্
বস্তিন শক্রসম্থনীনি ধনানীতি বাবং আক্রমে ভঞ্জরসি। ত্রা ক্থিতে স্তি
বয়ং তন্তুতিচাম: ইতি ভাংঃ।

**<sup>+</sup> पूर्वर गांगारकाश्वर वदा ।** १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८

ভবাস্তেরে। (২৩) ওঁ খণ্ডি ন ইকো বৃদ্ধবাঃ খণ্ডি নঃ প্রা বিশ্ববেদাঃ।
খণ্ডি নভাক্ষ্যো অরিইনেমিঃ খণ্ডি নো বৃহস্পতিদ র্যাড়। (২৪) এতা
খচো গীতা, শাভিং কুর্যাৎ। গানাশকো ত্রিধা পঠেৎ। ততো দক্ষিণাং দত্বা
অদ্দিদ্রাবধারণং কুর্যাৎ।

देखि नर्कदर्भनाधात्रभम् छेनीहाः कर्भ नमाश्चम्।

#### জ্ঞাতিকর্ম

অথ বিবাহকর্মাভিধীয়তে। তত্রাদৌ জ্ঞাতিকর্ম। তত্র প্রথমং বিবাহদিবসে
পিতৃসপিণ্ড: স্কুষা মন্থরবক্ষাবাণাং স্কুছ্র্গমেকীকৃত্য কন্তায়াঃ শরীরং ম্রক্ষিষ্ঠা
—প্রজাপতিশ্বনি: প্রস্তারপঙ্জিশ্ছন্মং কামো দেবতা জ্ঞাতিকর্মণি কন্তায়াঃ
পানীরপ্লাবনে বিনিয়োগঃ। ও কাম বেদুতে নাম মদোনামাসি সমানয়ামুং যুবা
তে অভবং পরমত্র জ্ল্মাত্রে তপসো নির্মিতোহসি ছাহা। (১) অনেনাম্-

<sup>(</sup>২০) হে ইন্দ্র । দং স্থানাং মিত্রাণাং তথা জরিত্বাং স্তোত্বাং নং অসাকং অভি আভিমুখ্যেন, তথা স্থ সূচ্ যথা স্থাৎ তথা অবিতা পালরিতা ভ্রাসি ভব। কিন্তুতঃ সন্ ? শতং স্বয়ং শতধা ভূষেতার্থঃ, কিমর্থ-মবিতা ভ্রসি ? উতরে বহুপ্রকারার রক্ষণার।

<sup>(</sup>২৪) নঃ অন্যভ্যন্ ইক্সঃ স্বন্তি শান্তিং দধাতৃ দদাতৃ। কিন্ত্তঃ ?
বৃদ্ধবাঃ বৃদ্ধান্ শৃণোতি ইতি বৃদ্ধবাক্যশ্রবণকারী, তথা পূষা স্থাঃ নঃ
বৃদ্ধি দধাতৃ। কিন্তৃতঃ ? বিশ্ববেদাঃ সর্বজ্ঞঃ, তথা তাক্ষ্যঃ গরুড়ঃ নঃ স্বন্তি
দধাতৃ, কিন্তৃতঃ ? অরিষ্টনেমিঃ অব্যাহতগতিপ্রসরঃ, তথা বৃহস্পতিঃ নঃ
স্বন্তি দধাতৃ।

<sup>(</sup>১) হে কাম কলপ । তে তব নাম সংজাং বেদ জানাম্যহম্। কিছুতম্ । বনোনামানি বদহেতৃত্বাৎ মদাতিধানতং, অতঃ কভারাঃ পরিনেভারমমুকনামধেরং সমানর সম্যক্ প্রাপর, কিঞ্চ হে কভে । অরং
তে তব সুবা অতবং ভূতবান, তেন সহ ত্বা হি ব্লাং কাম উপপ্যতে,

মিতি সর্কানমন্থানে অমুকশর্মাণমিতি পতিনাম নিক্ষিপ্য উদকপ্র্কলসেন শিরঃ প্রভৃতি কল্পাং স্থাপরেং। ততঃ প্রকাপতিথ বিম্প্যেক্যোতির্ব্ধ পতীক্ষ্ম উপন্থরপকামো দেবতা জ্ঞাতিকর্মনি কল্পারা উপন্থরাবনে বিনিয়োগঃ। ওঁ ইমস্ত উপন্থং মধুনা সংস্কামি প্রকাপতের্ম্ ধমেতদ্বিতীরং তেন পুংসোহভিত্বানি ববশান্ বশিক্তনি রাজ্ঞী স্বাহা। (২) অনেন কিঞ্চিছিরসি দত্তা ক্রোড়াদেশে বহুতরং জলং দত্তাং, যথা উপন্থদেশঃ প্লাবিতো ভবতি। ততঃ প্রকাপতিথ বিকপরিষ্টাজ্যোতিরিষ্ট্রপ্ত্ন উপন্থরপকামো দেবতা জ্ঞাতিকর্মনি কল্পারা উপন্থপাবনে বিনিয়োগঃ। ওঁ অগ্লিং ক্রব্যাদমক্রথন্ গুহানাঃ স্ত্রীণাম্পর্ময়য়ঃ পুরাণান্তেনাজ্যমক্রথংক্রৈশ্লং ছাইং ছয়ি তদ্বগত্ স্বাহা। (৩) অনেন প্র্বিবদেব শিরসি কিঞ্চিত্দকং দত্তা ক্রোড়দেশে বহুতরং জলং দত্তাং বথোপন্থঃ প্লাবিতো ভবতি।

#### ইতি ভাতিকৰ্ম।

কিঞ্চ পরমত্রেতি হে কাম ! অত্র অস্তাং কন্তারাং পরং তব জন্ম, কন্তারামিপ কামস্ত জন্ম স্যাত্ৎকৃষ্টম্। কিঞ্চ অত্রে তপসা নির্দ্ধিতোৎসি ত্বং ক্রীসকাশাৎ তপসঃ স্থাপুরুষাত্মসাধনার্থং প্রজাপতিনা নির্দ্ধিতঃ ইত্যর্থঃ। বিত এবস্তুতত্বং তব্যৈ তুভ্যং স্বাহা। এবমন্তেছপি স্বাহাকারপদং বোজ্যম্।

- (২) হে কলে। ইমং তে তব উপস্থং মধুনা সুরয়া সংস্ঞামি সংবোজয়ামি, বতঃ প্রজাপতেমু ধমেতং বিতীয়ং বিমুখো হি প্রজাপতিঃ একং মুখং রক্ষগ্রহণার্থং বিতীয়ং প্রজোৎপাদনার্থম্ ইতি বিমুখন্বং, মুখতো হি প্রজা অস্জাদিতি শ্রুতঃ, অভন্তেন উপস্থেন প্রজাপতিমুখরপেণ সর্জান্ প্রসাল বামজান্ অভিত্যাসি বশীকয়োবীত্যর্থঃ। (ছন্দিন বছলমিতি দীর্ঘঃ) কিন্তুতা দং । বিশিল্পসি কান্তিমতী ভবসি। (বশ কান্তো) রাজী বামিনী সর্ক্ষামানাং প্রধানভ্তা অতলং পুরুষানভিত্বসীত্যর্থঃ।
- (০) অয়িং বক্তভাজারং ক্রান্স্ নাগোলিন্স্ অবনেধানে বক্ত অক্বন্ কৃতবন্ধ:। কে ? ব্যরঃ বলিচাছা ইত্যর্থ:। কিছ্ডাঃ ইপহং তক্ষং গুলানা উপস্থনালাঃ আছোল্যক্তঃ। পুন: কীনৃশাঃ পুরাণাঃ আদি-ভ্তাঃ। কার্যাস্থিতং বিশাং তেনোগছেক্তিরেণ আলাং ওকং অক্বন্

#### সম্প্রদানম্।

ভত্ৰ কৃতবৃদ্ধিলাক: সম্প্ৰদাতা ওভলগ্নসময়ে সম্প্ৰদানশালাগাম উভৰতঃ স্ত্রীগবীং বন্ধা, বিষ্টরাদিকং সঞ্জাক্তা, পশ্চিমাভিমূৰ ● উপবিষ্টন্তিষ্ঠেৎ ভতঃ সন্মুখোপস্থিতে বরে সম্প্রদাতা কুশহন্ত উত্তরাভিমুধ আচম্য. --ও তদ্বিকো: পরমং পদং সদা পশুন্তি স্বর:। দিবীর চক্রাভতম। ইভ্যনেন বিঞুং স্বৰা, নারায়ণাদীন অর্চন্নিৰা, অক্ষতানি গৃহীৰা স্বভিবাচনং কুৰ্ব্যাৎ।—ওঁ কৰ্ত্তব্যেহস্মিন শুভকন্তাসম্প্ৰদানকৰ্মণি ওঁ পুণ্যাহং ভবস্তো ক্ৰবন্ত ওঁ পুণ্যাহং ভবস্তো ব্ৰুবন্ধ ওঁ পুণ্যাহং ভবস্তো ব্ৰুবন্ধ। ইতি বদেৎ। ওঁ পুণাহ-মিতি ব্রাহ্মণৈশ্রিকজে—ও কর্তব্যেংশিন ওভকন্তাসম্প্রদানকর্মণি ও স্বস্তি ভবন্তো ক্ৰবন্ত ওঁ শব্তি ভবন্তো ক্ৰবন্ত ওঁ শব্তি ভবন্তো ক্ৰবন্ত । ইতি বদেৎ। ওঁ স্বস্তীতি তৈপ্ৰিক্জে—ওঁ কৰ্ত্তব্যেখনিন্ শুভকন্তাসপ্ৰদানকৰ্মণি ওঁ ঋদিং ভবস্তো ক্রবন্ধ ওঁ ঋদিং ভবস্তো ক্রবন্ধ ওঁ ঋদিং ভবস্তো ক্রবন্ধ। ইতি বদেৎ। **উ** ঋগাতামিতি তৈন্তিকজে—ওঁ সোমং রাজানং বরুণমগ্নিমন্তাৎভামহে। স্বাদিত্যং বিষ্ণুং সূর্য্যং ব্রহ্মাণঞ্চ বৃহস্পতিম্ । ইতি । ওঁ স্বন্তি ন ইন্দ্রো বৃদ্ধ-ল্রবা: স্বস্তি নঃ পুষা বিশ্ববেদাঃ। স্বস্তি নন্তাক্ষ্যো অরিষ্টনেমিঃ স্বস্তি নো বুহম্পতিদ্ধাত। ইতি বা স্বন্ধিস্কং পঠিমা, অক্ষতানি বিকীৰ্য্য, কৃতা-ঞ্জি:। ওঁ স্থা: সোমো যম: কাল: সদ্যে ভূতান্তহ: কপা। প্ৰনো দিক্-পতিভূমিরাকাশং খচরামরা:। ত্রাক্ষং শাসনমাস্থায় কর্মধনিহ সরিধিম্।

কৃতবন্তঃ. ত্রৈশৃক্ষং ছাট্রং ত্রিশৃক্ষেত্রদং ত্রৈশৃক্ষং ছাট্র্রের্নং ছাট্রং ছার ক্রারাং তৎ রেতো দধাতু স্থাপরত। ত্রিশৃক্ষো বৃষ্ঠে মন্ত্রবাধি ছার চ রেতঃ সিক্ষং করোছিতি তৎ কর্মণি যোগাদাক্যং রেতঃ গর্ভব্যক্তেরিতি। এতহক্তম্বতি ছাট্রং বীর্য্যং ত্রেশৃক্ষবর্ষ্যিং ছার ক্রারাং গর্ভধারণভূতং ভব্দিতি।

<sup>\*</sup> সর্বার প্রার্থ্যে দাতা গ্রহীতা চ উদযুধ:। এব এব বিবিদানে বিবাহে তু বাতিক্রম: ১
ইতি দানধর্ষোত্ররচনেন বিবাহে গ্রহীতুঃ প্রাতিম্বাদ্য সম্প্রদাত্ত উত্তরাতিম্পদং প্রাপ্ত ।
পর্বত প্রাপ্তারাতিরপার বরার ওচিসরিবে। দভাব প্রত্যঙ্গুবং করাং করে লক্ষণসংবৃত্তে ইতি শ্রবাচনে ওচিপদ্ভরণাৎ সারিকানাং সম্প্রদাত্ত্বাং পশ্চিনাতিম্বদ্যুপ্রভাতত ৮
তথা চ সাহ্বতে নির্মিসম্প্রদাত্ত্য উদযুবদ্য সারিক্ত তু প্রভাত্ত্বপ্রথ বোধার ইত্যবিরোধঃ।

অরমারস্তঃ শুভার ভবতু। ইতি পঠিছা, সম্প্রদাতা ক্বভাঞ্জলিব রং পঞ্চন্ বদেং। ও নাধ্ ভবানান্তাং। জামাতা "ও নাধ্ৰহমানে" ইতি বদেং। সম্প্রদাতা— ও অর্চরিষ্যামো ভবস্তং। জামাতা— "ও অর্চরে" ইতি বদেং। ভতঃ সম্প্রদাতা গন্ধ-মাল্য ব্যাশক্তাসূরীরবজ্ঞাপবীত-বানোযুগানি \* দন্ধ জামাত্রমর্চরেং। ।

ততো জামাতৃদ কিণং জামু বিধৃত্য বরণং কুর্য্যাৎ।—বিষ্ণুরে । তৎসদত্ত অমৃকে মাসি অমৃকরাশিন্তে ভাস্করে অমৃকে পকে অমৃকতিথো অমৃকগোত্র: শ্ৰীষম্কদেবশৰ্মা অমুকগোত্ৰন্ত অমুকপ্ৰবরত্ত অমুকদেবশৰ্মণ: প্ৰপৌত্ৰং, অমুকগোত্রত অমুকপ্রবরত অমুকদেবশর্মণঃ পৌত্র: অমুকগোত্রত অমুক-প্ৰবরস্ত অমৃকদেবশৰ্ষণঃ পুত্ৰং অমৃকগোত্ৰং অমৃকপ্ৰবরং গ্ৰীঅমৃকদেবশৰ্ষাণং— অমুকগোত্রত অমুকপ্রবরত অমুকদেবশর্মণ: প্রপৌত্রীং, অমুকগোত্রত অমুক-প্রবর্জ অমুকদেবশর্মণ: পৌত্রীং, অমুকপোত্রত্ত অমুকপ্রবর্জ অমুকদেবশর্মণ: পুত্রীং অমুকগোত্রাং অমুকপ্রবরাং জীমমুকদেবীং ওভরান্ধবিবাহেন দাতুম্ এভির্গনাদিভিরভ্যর্চ্চ্য বরত্বেন ভবস্তমহং বুণে। জামাতা "ওঁ বুতোহস্মি" ইতি বদেৎ। সম্প্রদাতা ক্লতাঞ্জলিঃ।—ওঁ বথাবিহিতং বরকর্ম কুক। জামাতা "ওঁ ৰথা**ক্র**ানং করবাণি" ইতি বদেৎ। ততো বরম্ অন্তঃপুরং নীত্বা ৰোবিভি--ম কলাচারতঃ অক্টোক্তমুখচন্দ্রিকারামবলোকিতারাং, বরঃ প্রত্যাপত্য পূর্বাভি-মুখন্তিষ্ঠেৎ। ততঃ অগ্রোপস্থিতে বরে সম্প্রদাতা কুডাঞ্চলিঃ। প্রকাপতি-শ ষিরমুষ্ট প ছলোখহ নীয়া গোদে বিভা গবোপস্থাপনে বিনিয়োগ:। অহ'ণা পুদ্ৰবাসদা ধেহরভবদ্বমে। সা নঃ পরস্বতী তৃহামৃত্রামৃত্রাং সমাম্। (১) ইতি পঠেও। ততো জামাতা।—প্রজাপতিঃ বিবিরাড়্

<sup>(</sup>১) বেরন্ অর্হণা পূজাসম্পাদিনী পুত্রবাসসা পুত্রাহুগামিনী পরস্বতী ছগ্ধবতীনে মম ধেলু: যমে বন্ধনে অভবং। সা নঃ অস্মাকং সহদ্ধে

<sup>\*</sup> আছান্ত চার্চরিকা চ শ্রুতশীলবতে বরস্থা আছুর দানং কজারা ব্রাক্ষো ধর্মঃ প্রকীর্তিতঃ। ইতি মনুত্বচনত ব্যাখ্যানে স্মার্ডঃ--আছান্ত রক্তবাসোভ্যাং কজাং গুরুবাসোভ্যাং বরং: পরিবাপা তচ্চ বরণক্তবন্ধাভ্যানের নিপার্মিতি ন পুনর্দীরতে ইড়াবাচ। তথা চ গুরুকৌন-বন্ধবুগাং বরার দাতবামিতি ভদভিপ্রারঃ।

<sup>†</sup> এতাৰি গৰপুপাৰস্বৰ্জস্তাৰুৱীরকানি বান্ধণার নমঃ ইতি মধ্রেণ সম্প্রদাতা বরার দ্ভাং,.
বরঃ ৰতীভূচ্জেণ প্রতিগৃতীয়াং।

'रमवला উপবিশদর वीत्रक्राल विभित्रांगः। ଓ ইদমহমিয়াং প্রাং বিরাজ-বিদাখারাধিতিষ্ঠামি। (২) ইমং মন্ত্রং জ্বপন্ আসনে প্রাধার্থ উপবিশতি। ভতঃ সম্প্রদাতা সাগ্রপঞ্চবিংশতিকুলপত্রৈঃ \* সাদ্ধবিধামাবর্তগ্রন্থিরচিতম্ चार्याम्यः विहेत्रम्खवाशम् উভानरखाङाः शृरीषा।— ও विहेदता विहेदता "বিষ্টর: প্রতিগৃহতাম্। ইত্যভিদধানো জামাত্রে বিষ্টরমর্পরতি। জামাতা "ওঁ বিষ্টরং প্রতিপৃহামি" ইতি গৃহীত্বা।—প্রকাপতিঋষিরমূষ্ট্রপ ছন্দ ওযধ্যো रमवर्ण विष्ठेत्रज्ञाननमात्न विनित्तार्थः। ७ य ७वरीः त्रामदाखीर्वस्वीः শভবিচক্ষণাঃ। তা মহুমন্মিল্লাসনে২চ্ছিদ্রাঃ শর্ম বচ্ছত। (৩) ইতি আসনে বিষ্টরমূত্রাগ্রং নিধার উপবিশতি। ততঃ সম্প্রদাতা তাদৃশ্যের অপরং বিষ্টরং ্ৰগৃহীত্বা ।—ওঁ বিষ্টরো বিষ্টরো বিষ্টরঃ প্রতিগৃহতাম্। ইতি তথৈব জামাত্রে অপ্রতি। জামাতাপি "ওঁ বিষ্টরং প্রতিগৃহামি" ইতি গৃহীত্বা।—প্রজাপতিশ্ববি-बस्हे श्रह्म अवस्था त्मवका विहेदच शामरवाद्रश्कामात्म विभिरवाशः। **७**ववीः সোমরাজ্ঞীবিষ্ঠিতাঃ পৃথিবীমন্ত। তা भागरतात्रक्तिकाः भन्न यक्छ। (४) हेलाटनन উखताताः विष्टेतः भागरतात्रयः স্থাপরেং। ততঃ সম্প্রদাতা উদকপাত্তং গৃহীত্বা—ও পাছাঃ পাছাঃ পাছাঃ

উভরাম্ভরাং সমাম্ উভরোভরমকং মনোরণান্ ছহাম্ ছঞ্চাম্ প্রয়তু ইভার্থঃ । লোপভ আভানেপদেখিতি তকারলোপঃ।

<sup>(</sup>২) ইন্ম্ আসনম্ ইমাং প্তাং পাদবদ্ধীং পাদবদ্ধীনীম্ পাছকামিতি বাবং বিরাজম্ বিরাজমানাম্ অল্লাভার অল্লাভবং অহম্ অধিতিষ্ঠামি আক্রামামি।

<sup>(</sup>৩) হে ওষধী: ওষধ্য: ! যা: যুবং সোমরাজ্ঞী: নোমণচক্রমা রাজা বাসাং তা: সোমরাজ্ঞা: বহুলী: বছুপ্রকারা:. শতবিচক্রণা: শতম্থ্য: তা: ব্যুবং মহুম্ অস্মিলাসনে শর্ম স্থাং যদ্ভত দত্ত। কিন্তৃতা: ? অদ্দিদ্রা: নিরস্তরা:। ওবধীরিত্যাদির স্থাংস্কুক্ ইতি পুর্বস্বর্ণ:।

<sup>(</sup>৪) হে ওবণীঃ ওবধ্য: বা: যুধং সোমরাজ্ঞীঃ সোমরাজ্ঞাঃ পৃথিবীম্ অন্ত পৃথিব্যাম্ বিষ্ঠিতাঃ বিশেষেণ স্থিতাঃ তাঃ যুম্ম্ অস্মিন্ দিতীয়বিষ্টরে পাদ-রোরধভারিহিতে মঞ্চ শর্ম বচ্ছত।

<sup>🚁</sup> সার্ভত পত দর্ভদংখ্যা ন গ্রাহা ইতি সিভাতিতবান্।

প্রতিগৃহতান্ । ইত্যুক্তা ভাষাতে পর্ণরতি। ভাষাতা "ওঁ পাছাঃ প্রতি-"গৃহামি" ইতি গৃহীয়া, ভূমো তৎ পাত্রং হাপরিছা-প্রজাপতিশ্ববিরাড্-शावकीकम चार्ला (एवजा: शामक्रकाननार्शाएक-वीकर्व विनिद्यांश:। ওঁ বতো দেবী: প্রতি পঞ্চাম্যাপন্ততো মা ঋদিরাগচ্চতু। (৫) অনেন উদকং বীক্ষেত। ততো জামাতা তত্মাদেব পাত্রাৎ উদকাঞ্চলিং গৃহীত্বা— প্রজাপতির বিবিরাড় গায়ন্ত্রীছন: শ্রীছেবতা সব্যপারপ্রকালনে রোগ:। ওঁ সব্যং পাদমবনেনিজেংশ্মিন রাষ্ট্রে প্রিয়ং দধে। (৬) ইত্যানেন বামপাদে উদকাঞ্চলিং দছাং। ততঃ অপরমঞ্জলিং গৃহীত্বা---প্রজাপতিঋষি-বিরাড় গারত্রীক্তলঃ এ দিবতা দক্ষিণপাদপ্রকালনে বিনিয়োগ:। मिक्निं शामभरत्नित्वश्यिन् ब्रार्डे विद्यमाद्यभगिन। (१) हेज्यत्म मिन्निनारित जैनकाञ्चनिः त्रचार । उठः भूमकृतकाञ्चनिः गृशैष।—প্रजानित-ঋ বিবিরাড় গারতীচ্ছন: এ দ্বৈতা উভরপাদপ্রকালনে বিনিরোগ:। ও পূর্বমক্তমপরমক্তমূভে পাদাববনেমিকে। রাষ্ট্রক্তর্মা অভয়ক্তাবরুদ্ধা । + (৮) रेजात्नन भागवत्त्र जेनकाञ्चलिः मचार । जजः मध्यमाजा माक्रजपूर्वाभवतान् শশাদিপতে নিধায়। ওঁ অধ্যম্য্যম্ব্যং প্রতিগৃহতাম্। ইত্যুক্তা জামাত্রে অর্থামর্পরতি। ৰামাতা "ওঁ অৰ্ঘ্যং প্ৰতিগ্ৰামি" ইত্যৰ্ঘ্যং গৃহীয়া— প্রজাপতির্ম বিরর্ঘাং দেবতা অর্ব্যপ্রতিগ্রহণজ্পে বিনিয়োগ:।

<sup>(</sup>৫) হে আপঃ বৃষ্টরঃ! বতঃ স্ব্যাদারাতা যুমান্ দেবীঃ দেবনাদিযুক্তা ইত্যহং প্রতিপশ্রামি আদিছ্যাজ্ঞারতে বৃষ্টিরিতি মুডে:। ৬তঃ স্ব্যাৎ মা মান্ ঋষিঃ সংপত্তিঃ আগচ্ছতু।

<sup>(</sup>৬) অহম্ সরাং পাদং বামং পাদম্ অবনেনিজে প্রকালরামি অস্মিন্ লাষ্ট্রে বিবরে প্রিরং দৰে অর্পরামি।

<sup>(</sup>१) चारवनतामि श्रारमशामि चरनिष्टेम्कार्यम्।

<sup>(</sup>৮) পূর্ব্যক্তং স্বাং অপর্যক্তং দক্ষিণং তাব্তৌ পাদৌ অবনেনিকে আকাল্যামি লাইভ কলৈ স্মূর্কো বৃদ্ধার্থং—অভয়ত ভয়াভাবত অবক্রিয় পরিপ্রহায়।

<sup>\*</sup> সাঠন পান্তং পান্তং প্রতিগৃহতাবিত্যবাচ। ভটভাব্যাবরোহণি তথা।

<sup>+</sup> वर्जुबनः वज्हे क्रिक्शना नाचि। देखि क्रिरे।

বাষ্ট্রিরসি রাষ্ট্রন্তে ভ্রাসং \*। (৯) ইত্যনেনার্য্যং অপিরসি দভাং।
ততঃ সম্প্রনাতা উদকপাত্রং গৃহীত্বা— উ আচমনীরমাচমনীরমাচমনীরং
প্রতিগৃহতান্। ইত্যুক্ত; জামাত্রে উদকপাত্রমর্পরিত। জামাতা "উ
আচমনীরং প্রতিগৃহামি" ইত্যাচমনীরং গৃহীত্বা—প্রজাপতিশ্বিরাচমনীরং
দেবতা আচমনীরাচমনে বিনিরোগঃ। ও যশোহসি, বশো মরি
ধেহি †। (১০) ইত্যনেন উত্তরাভিমুখীভূর আচামেং। ততঃ সম্প্রদাতা
ঘতদধিমধুর্ক্তং কাংজ্পাত্রং কাংজ্পাত্রাস্থাভূর আচামেং। ততঃ সম্প্রদাতা
ঘতদধিমধুর্ক্তং কাংজ্পাত্রং কাংজ্পাত্রাস্থাভূর আচামেং। ততঃ সম্প্রদাতা
ঘতদধিমধুর্ক্তং কাংজ্পাত্রং কাংজ্পাত্রাস্থাভূর আচামেং। ততঃ সম্প্রদাতা
ঘতদধিমধুর্কাং কাংজ্পাত্রং কাংজ্পাত্রাস্থাভূর্য জামাত্রে মধুপর্কমধুপর্কো মধুপর্কা প্রতিগৃহতান্। ইত্যুক্ত্বা জামাত্রে মধুপর্কমর্পর্কো দেবতা অহ'ণীর-মধুপর্কগ্রহণে বিনিরোগঃ। উ বশসো ঘশোহসি। (১১)
ইত্যনেন মধুপর্কং ভূমৌ সংস্থাপ্য—প্রজাপতিশ্ববিম্পুণর্কো দেবতা
আহণীর-মধুপর্কপ্রাদনে বিনিরোগঃ। ও বশসো ভক্যোহসি মহসো
ভক্যোহসি প্রস্তিক্যোহসি প্রিরং মরি ধেহি। (১২) জনেন মন্ত্রেণ বারত্ররং

<sup>( &</sup>gt; ) তে অর্য ! অরস্ত রাষ্ট্রিখং দীখিঃ অদি অহমণি তে তব প্রসাদাৎ রাষ্ট্রিঃ দীখিঃ ভ্রাসম্। রাষ্ট্রিরতি রাজতেরোণাদিকল্লিমক্প্রত্যরঃ, বাহল্যাৎ মলোগঃ।

<sup>( &</sup>gt; • ) হে আচমনীয়! বতত্তং বশোংসি কীর্ত্তিরপমসি অতো ন্রি বশো ধেহি মাং বশবিনং কুক।

<sup>( &</sup>gt;> ) হে মধুপর্ক ! বতত্ত্বং বশোহসি কীর্তিরিব মধুরোহসি তথা ছদ্-বোগাৎ অহমপি বশসঃ কীর্তিমান্ সঞ্জাতঃ । বশস ইতি মত্বর্থে অহাদিছাৎ ।

<sup>(</sup>১২) হে মধুপর্ক! বতকং মনসো ভক্ষোৎনি বনবিনাং বলঃ অতবং বনসং বলসে ভক্ষোৎনি, তথা মহবিনাং মহঃ অতঃ মহসঃ মহসে ভেজসে ভক্ষোৎনি, তথা বতকং প্রীমতাং প্রীঃ অতবং প্রীঃ ভিন্নৈ ভক্ষোৎনি, তেন বন্তকণাৎ কীর্তিভেলোলনীক ভবতি অতঃ প্রিরং মরি ধেহি। বনসঃ মহসঃ ইতি চতুর্থ্যর্থে বহুলং ছন্দনি ইতি বঙ্গ। প্রীরিতি স্থশাংস্থরিতি চতুর্ব্যে ক্রচনত স্থঃ।

वक्षात्रमः वक्षेत्राः क्ष्मा नास्ति ।
 तक्षात्रम् क्ष्मा नास्ति ।

ভক্ষিত্বা, সৃত্বৎ তৃঞীং ভক্ষেৎ। ততো জামাতা আচাত্তঃ, মনলোষধিনিপ্তেন তাদৃশ্যের কন্তারা দক্ষিণহত্তঃ গৃহীতা স্বহন্তোপরি নিষ্ধাাং। ভতঃ সৌভাগ্যপতিপুত্ৰবতী নারী মক্লপুর্বকং মাল্যযুক্তন হন্তবন্ধ ব্লীয়াও। ততঃ সম্প্রদাতা ফল-তিল-কুশ-কুসুম সহিতম্ উদকপাত্রং দক্ষিণহন্তেন গৃহীত্বা, বামহন্তেন কস্তারা দক্ষিণস্করং ধৃত্বা অর্চন্তেৎ। যথা—ও এতকৈ স্বস্থাচ্ছাদনায়ৈ সালম্বারায়ৈ কন্তার্যে নমঃ ইতি তিঃ সংপ্রোক্ষ্য, এতে গদ্ধপুষ্পে ও এতক্তি সবক্তাচ্ছাদনারৈ সালভারারৈ ক্সারৈ নম:। এতে গদ্ধপুষ্পে এতদ্ধিপত্তর ও প্রজাপত্তর নম:। এতে গদ্ধপুষ্পে এতৎসম্প্রদানার ও বরার নম:। ইত্যর্চরিদ্বা—বিষ্ণুরে । তৎসদম্ম অমৃকে মাসি অমুকরাশিত্তে ভাস্করে অমুকে পক্ষে অমুক্তিথে অমুক্গোত্রঃ শীষমুকদেবশর্মা শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিকাম: "অমৃকগোত্রস্ত অমৃকপ্রবরস্ত • অমৃক-দেবশর্মণঃ প্রপৌত্রায়, অমুকগোত্রস্ত অমুক্রবরস্ত অমুকদেবশর্মণঃ পৌপ্রায়, অমূকগোত্রভ অমূকপ্রবর্ভ অমূকদেবশর্মণ: পুক্রায়, অমুকগোত্রায় অমুকপ্রবরায় অমুকদেবশর্মণে বরায় (ব্রাহ্মণায়) অর্চিতায়— অমৃকগোত্রভ অমৃকপ্রবর্ভ অমৃকদেবশর্মণ: প্রপৌত্রীম্ অমৃকগোত্রভ অমুকপ্রবরত্ত অমুকদেবশর্মণঃ পৌদ্রীম্, অমুকগোত্তত অমুকপ্রবরত অমৃকদেবশর্মণঃ পুত্রীমৃ, অমৃকগোত্রাম্ অমৃকপ্রবরাম্ এঅমৃকীদেবীম্ ভাজিতান্

ইতি ত্রিকজ্যা

এনাং কল্পাং সালকারাং বাবেশার্গাচ্ছাদিতান্

কলিতান্

কল অরোগিণীং প্রজাপতিদেবতাকাং তুভামহং সম্প্রদদে । † ইভি হত্তদরোপরি ভিৰ্মান্ অৰ্ণাভ। ততো জামাতা "ওঁ বৃত্তি" ইত্যুক্তা পায়নীং জপেং। ততঃ "ওঁ কল্পেরং প্রজাপতিদেবতাকা" ইত্যুক্ত্যু—ওঁ ক ইদং

<sup>\*</sup> তুলাপুরবদানে চ তথৈব হাটকাচলে। কল্পাদানে তথোৎসর্গে কীর্ত্তরেও প্রবরাদিকন্॥ ইতি ভবিব্যপুরাণবচনাৎ কল্পাদানে প্রবরোদ্ধেখো বিহিতঃ।

প্রবরা বথা সাধিল্যগোত্রে—সাধিল্যাসিডদেবলা:। ভর্বাজ্ঞাত্রে—ভর্বাজালিরস-বহিশ্যত্যা:। বাৎশুসাবশ্যোদাল্যানাং—উর্ক্চ্যবন-ভার্গবজ্ঞানদগ্মাপ্সবস্তঃ। কাশুপগোত্রে কাশুপাপসারনৈঞ্জনা:।

<sup>া</sup> দানাধিকারিশা বধা—পিতা পিতানহো আতা সকুল্যো জননী তথা। কল্পাঞ্চদ পূর্বনাশে প্রকৃতিয় পরঃ পরঃ। তথা—পিতা দভাং দরং কলাং আতা বাসুষতঃ পিতৃঃ। বাতাবহো মাতৃলক সকুল্যো বজবতথা। বাতা দভাংৰ সংক্ষোং প্রকৃতৌ বলি বর্তত। ইভোতবর্তিক পিতাদিলাছ পিতামহাদীনামবিকারঃ প্রতিপাদিতঃ পিতাদিসছেংগি পিত্রসুবভানাং আতাদীনাং প্রতিনিবিদ্ধেন শীকারাং তত্ত্ব ক্রিয়াক্লত পরগতদেন বাক্যে দদানীতি প্রয়োগঃ কার্যঃ। সংক্ষোমভাবে বাতা দ্রম্বিকার্মিট্ট তেৎ বাকীআছং বিনৈব কলাং দভাং ইতি সার্হঃ।

ক্ষা অদাৎ কাম কামারাদাৎ কামো দাতা কামঃ প্রতিগ্রহীতা কামঃ. সমূর্ত্তমাবিশং। কাষেন ডা প্রভিগহামি কামৈততে। ইতি ন্তভিং পঠেং। ভতঃ সম্প্রদাতা দক্ষিণাং কাঞ্চনং তদভাবে তন্মৃদ্যং রকতাদিকং বা অভ্যৰ্ক্য—বিষ্ণুরোঁ তৎসদত্যেত্যাদি শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিকামনরা কুতৈতৎ কন্তাসপ্রদানকর্মণ: সালতার্থং দক্ষিণামিদং কাঞ্চনং বহিদৈবতং (কাঞ্চনমূল্যং শ্রীবিষ্ণুদৈবতং বা) অমুকপোত্রার অমুকপ্রবরার শ্রীঅমুকদেবশর্ষণে: বরার তুভামহং সম্প্রদদে। ইভি দক্ষিণাং দছাৎ। জামাতা পুন: ও স্বভীতি ক্ররাৎ। অন্মিরের সময়ে সম্প্রদাতা বৌতুকং ভূম্যাদিকং দভাৎ। ততো নাগিতেন "গোগোগো:" ইত্যুক্তে, জামাভা গঠতি—প্ৰজাগতিখ বি-বুহতীচ্চন্দো গৌদেবিতা পূর্ববন্ধগবীমোক্ষণে বিনিয়োগ:। ও মৃঞ গাং বরুণপাশাদ্বিষন্তং মেহভিধেছি। তং অভ্যুক্ত চোভরোরুৎক্ত গামত্তু তৃণানি পিবতৃদকম্। (১৩) ভভো নাপিভেন ম্ক্রায়াং গবি কামাতা ইমং মন্ত্রং পঠতি--প্রকাপতিৠ বিশ্বিষ্টু প্ ছন্দো গৌদে বভা গবাস্থমরণে বিনিয়োগ:। ওঁ নাতা কল্ৰাণাং ছুহিতা বস্থনাং স্বসাদিত্যানামমৃতক্ত নাভিঃ। প্র ব্বোচং চিকিতুবে জনায় মাগামনাগামদিতিং বধিষ্ট। (১৪). ইত্যনেন গাং বিদর্জ্জেরে । ততো বরস্রোত্তরীয়বন্ত্রেণ কম্বায়া: পরিহিত-বন্ধাঞ্চলেন চ মঙ্গলপূর্ব্বকং বিজ্ঞো গায়ন্দ্র্যা গ্রন্থিং বগ্নীয়াও। 💥 ততঃ কুশগ্রন্থিং

<sup>(</sup>১৩) এতাং গাং বরুণপাশাৎ বরুণবন্ধনাৎ মুঞ্চ। মোচরিত্বা উৎস্কুর্বিসর্জর। সাইরং তৃণানি অভু, উদকং পিবতু। এবং মোকিতা তং হে অর্থনীরে অম্বা অর্চরিতৃশ্চ উভরোধিবতঃ বেটারং অভি-ধেহি বধান তথা জহি নাশর।

<sup>(</sup>১৪) বেলং মমার্থীরস্থাল্ভার্থং অর্থীরা গৌরানীতা সা এবা রুদ্রাণাং

<sup>\*</sup> আচারাৎ সন্তা বথা—ওঁ সাবিত্রা সত্যভাষা হিমণিব্লিত-বাহককাতী জহু কন্তা, লোপানুত্রা হভ্তমাহদিতি-বহিত-কমলা ক্রমিলী রেবতী চ। রস্তা মেনা বলোদা হ্বংপতিবনিতা কৈউভী বাণপুত্রী, গৌভাগ্যং পুত্রলাভং সকলগুভকরং মঙ্গলং বো দিশান্ত । ওঁ দুর্ব্বা পুন্দাং কলকৈব বন্ধং ভাষু লমেব চ। এভিঃ কল্পা মরা দক্তা রক্ষণং পোষণং কুরু ॥ ওঁ বংশ্রেলী মহেক্রস্তু আহা চৈব বিভাবসোঃ। রোহিনী চ বথা চক্রে দমন্বন্তী বঁথা নলে ॥ যথা বৈশ্রবণে ভদ্রা বশিষ্ঠে চাপারকাতী। সীভা চ রামচক্রে চ গৌরী শক্ষর এব চ। যথা নারারণে লক্ষীত্তথা তং ভব ভর্তবি ॥ ততঃ ওঁ করোন্তা হিঃ পততি । ইতি পুচ্ছেৎ। অস্তো বাক্ষণং ওঁ লক্ষীনারারণ্ডাঃইতি ববদেং। এবং করোন্তা হিঃ পততি । সীতারামরোঃ। করোন্তা হিং পততি । নল-দমরন্ত্যাঃ। করোন্তা হিং পততি । জ্বিশ্বক্রমন্ত্রাঃ। করোন্তা হিং পততি । জ্বিশ্বক্রমন্ত্রাঃ। এতে কালনিকা, মন্ত্রান পাঠাত্বেন বিহিতাঃ।

মুকা, দক্ষিণং করম্ আরাপ্য, অক্টোক্তং মুখচন্দ্রিকামবলোক্য ভর্ত্তু কিপপার্থেং আসনে কল্টাম্পবেশরেং। ততঃ সম্প্রদাতা কতাঞ্চলিং—ওঁ কতৈতং কল্টা-সম্প্রদানকর্মাচ্চিত্রমন্ত্র। ইতি বদেং। ওঁ মন্ত ইতি প্রতিবচনম্। ইতি মচ্ছিত্রং বাচয়িত্রা,—বিষ্ণুরে তৎসদভোত্যাদি (আর ম্থ্যচান্দ্রমানোরেখং কার্যঃ) অমুকগোত্রঃ শ্রীমমুকদেবশর্মা ক্তেৎমিন্ ওভকল্টাসম্প্রদানকর্মণি বদ্বৈগুণ্যং জাতং তদ্যোবপ্রশমনার শ্রীবিষ্ণুমরণমহং করিব্যে। ইতি সহল্য, ওঁ তির্ফোরিত্যাদি পঠিবা শ্রীবিষ্ণুং মুত্বা, রুঞ্চার কর্মফলং সমর্প্যাৎ। ততন্ত্রী গৃহং নরেং। ইতি সম্প্রদানং সমাপ্তম্ন।

#### অথ পাপিগ্রহণম্

\* ততো জামাতা আচারাৎ প্রথমতঃ প্র্যাপিতঘটে যতীং মার্কণ্ডেরঞ্চ সম্পূল্য প্রধানগৃহাগতঃ কুশণ্ডিকোজবিধানেন বোজক-নামানমগ্নিং সংস্থাপ্য, বিরূপাক্ষজপাস্তাং কুশণ্ডিকাং সমাপরেৎ। ততো জামাতৃঃ কশ্চিদেকো বরস্তঃ অশোষ-জলাশরোজ,তজলপূর্ণ-কলসহস্তো বপ্রাচ্ছাদিত-কারো বাগ্যতঃ পূর্বেণাগ্নিং পরিক্রম্য, অরোদ ক্ষিণস্তাং দিশি উত্তরাভিমুথ উদ্ধন্তিঠেৎ। ততোহপরোহপি কশ্চিদ্বরস্তঃ পর্চনিকাহস্তত্তথৈব † গহা, জলকলসধারিণঃ পৃষ্ঠদেশে তথৈব তিষ্ঠেৎ। ততঃ অরোঃ পশ্চিমতঃ শ্মীপত্র-মিশ্রিতান্ লাজান্ চতুরঞ্জলিপরিমিতান্ শূর্পে নিধার, তৎসমীপে সপ্তরাং শিলাং সংস্থাপ্য, তৎপশ্চিমতো বীরণপত্ররচিতং পটত্বন্তিতং কটঞ্চ সংস্থাপ্য ‡ জামাতা গৃহং প্রবিশ্ত, অহতবাদোযুগ্য অধশ্চোপরি

মাতা, বস্নাং ছহিতা, আদিত্যানাং স্বদা, অমৃতস্ত দধিছ্ঞাদে: নাভি: কারণম্, অভ: এতাং গাং অনাগাং অনপরাধাং অদিভিং অদীনাং গাং হে বজমান-পরিচারকাঃ! যুরং মা বধিষ্ট মা প্রাণৈর্বিষেক্ষরত। অহমেবং মু ভোঃ জনার অবৈ বজমানার প্রবোচং প্রোক্তবানিম গোবধং মা কুরুধ্বমিতি। কিন্তৃতার ? চিকিত্বে জ্ঞানসম্পন্নার। প্র গু বোচমিতি ব্যবহিতোপসর্গসম্ভা বছলং ছলসি মাবোগে অভভাবঃ।

অধাত্র গোভিল:—অধ বস্তাঃ পাণিং গ্রহীব্যন্ ভবতি স্পিরকা সাপ্তা ভবতীতি।
 বধ্বা অবিধ্বোপনীত্রকলোদকৈঃ স্নানমুপ্দিদেশ।

<sup>🕇</sup> পাঁচনীতি ভাষা।

<sup>🛊</sup> বীরণং বেণা ইভি ভাষা। 🗢 টম্, মাতুর ইভি ভাষা তব্জাভীরমন্তদ্বা ইভি ব্যেরস্ 🕨

মন্ত্রবরেন বথাক্রমং পরিধাপরেৎ। প্রজাপতি-व्य विकंशजीक्तः शतिवाशतिरत्वा त्ववण व्यवायव्यविवाशत्व विनित्राशः। ওঁ বা অকুস্তরবয়ন বা অভয়ত বাশ্চ দেবো। অস্তানভিতত্তত হ। ্দেব্যো অবসা সংব্যরভাযুদ্মতীদং পরিধৎত্ব বাসঃ। (১) অনেন মদ্রেণ বধুমধোবলং পরিধাপরেং। প্রজাপতিশ্বিলিট্প্ ছলঃ পরিধাপরিজ্যো **(ए**वका উভরীয়বল্পপরিধাপনে বিনিয়োগ:। ও পরিধন্ত ধন্ত বাসসৈনাং -শতায়ুষীং কুণুত দীর্ঘমায়ু:। শতঞ্চ জীব শরদ: সূবর্চা বস্থানি চার্য্যে েবিভূজাসি জীবন্॥ (২) অনেন যজোপবীতরূপমূত্রীয়বন্ধং পরিধাপয়েৎ। ততো বধৃষ্ অগ্নাভিষ্ধং নয়ন্ জামাতা পঠতি-প্ৰজাপতিঋষিরহট্প इनः त्नारमा ( त्वका भक्तः कम्रानवनक्तभ विनित्वां १३ । उ त्नारमा १ किन्

<sup>(</sup> ১) বাঃ দ্রিয়ঃ ইদং বাসঃ বন্ত্রং পরিধীয়মানং অক্তন্ত্রনু কর্তিতবত্যঃ স্ফুলানীত্যগ্যাহার্য্যস্। তথা বাঃ স্থিয়ে। অবয়ন্ তদ্ধসন্তানং কুতবত্যং যাশ্চ **শতরত বিন্তারিতবত্য:, চকারো২ফুক্তসমূচ্চরার্থ:, দেব্য: দেবনাদিগুণযুক্তা:** অস্তান পটবণ্ডান্ অভিতঃ উভরপার্যরোরপি ততন্থ গ্রবিতবত্যঃ। তিঙাং जिट्डा ভवस्तीि निष्टे. श्रथमशुक्रववह्रवहनार्थि मधामशुक्रदेवकवहनम्। **दि क्यारक । या याः क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा अप्राप्तः** भाविभागम् । एव আযুদ্ধতি হে কল্যাণবৃত্তি ৷ ইনং বাসঃ পরিধংম মালল্যং বন্ধমিনং অকাবরণং কুরু।

<sup>(</sup>২) হে উপাধ্যারাদয়: ৷ যুরম্ এনাং কন্তাং পরিধন্ত পরিধাপয়ত তথা যুরং -বাসসা বল্পে এনাং কন্তাং ধন্ত ধারন্ত, বস্তাবৃতাং কুরুত, কিঞ্চ কন্তামেনাং अधार्यीः विवलीविनीः कृतृत कूकल, नीर्यमाष्ट्रः व्हकानः यावर जानीर्वामा-मिणिः मःरवाका, भूनखारमवाह रह कम्रतकः ! भेजक कीव भन्नमः भेजः वर्वावि নীব। বিঞ্চ স্থৰ্কো: অসি ভবসি, অভিশয়কান্তিমতী ছং ভবসি। হে আৰ্য্যে! লেঠে ! বস্নি ধনানি বিভূত্ব বিভত্তনি ভত্তভালসং ক্লগং অকারত ঝকার: । ৰীবন্ भीবতী বাবজীবং প্রাণান্ ধারমভীত্যর্ক। ব্যতারো বহুগমিতি जीनिए प्रनिक्छ।

5 ...

সন্ধার গন্ধকেহিদদগনে। রবিশ প্রাফোদাদারির হ্বথা হ্রান্। (৩)
ভতঃ ভারেঃ পশ্চিমতো গলা, বীরণপত্ররচিতঃ পটবেটিতঃ কটং বহিত্বপ্রকেপ্রান্তঃ দক্ষিণপাদেন প্রেরন্তীঃ বধ্ন ইমং নরং জানাতা
বাচরেং—প্রজাপতিশ বির্দিপাজ্ঞগতীছেন্দঃ পতিদে বতা • কটপাদপ্রবর্তনে
বিনিরোগঃ। ও প্র বে পতির্বা নঃ + পহাঃ করতাং শিবা জারটা পতিলোকং
সমেরন্। (৪) বদি তু লজ্ঞাবশাদ্বধঃ স্বরং ন পঠতি, তদা জানাতা ইমং মরং
পঠেং। প্রজাপতিশ বির্দিপাজ্ঞগতীছেন্দঃ পতিদে বতা কটপাদপ্রবর্তনে
বিনিরোগঃ। ও প্রান্তঃ পতির্বা নঃ পহাঃ করতাং শিবা জরিটা পতিলোকং
সম্যাঃ । (৫) ততঃ কটক্ত প্র্রান্তে বধুদ্দিণত উপবিশতি, জানাতা
চ বধ্বা উত্তরতঃ। ততঃ প্রকৃতহোমার্থং তৃষ্টীং প্রাদেশপ্রশ্বাণং স্থতাজ্ঞাং
সমিধময়ো প্রক্ষিপা মহাব্যাহ্বতিহোমে ব্নিরোগঃ। ও ভঃ স্বাহা।
প্রজাপতিশ বিক্ষিক্ ছন্দো বায়্দেবিতা মহাব্যাহ্বতিহোমে বিনিরোগঃ।

<sup>(</sup>৩) পরম্পরাদানং কথাতে। সোম ওবধীনামধিপতিরিমাং কস্তাং ভাতমাত্রামেব গন্ধবার অদদৎ দত্তবান্ আদিত্যার ইত্যর্থঃ। গন্ধবােহপি আদিত্যোহপি অররে দত্তবান্, অরিরপি ধনপুত্রসহিতামিমাং মৃহং পত্ত্যে দত্তবান্। অথো ইত্যপ্যর্থঃশ অদুদ্ধ ইতি দদ দানে পরস্বৈপদং ছাক্সম্।

<sup>(</sup>৪) কলা পতিং বোঢ়ারং প্রার্থরে—মে বন পতিং পছাং পছানং করতান্ উপকররত, নং অন্ত্যং বা বেন পথা অহং পতিলোকং প্রগররেন্ প্রকর্বেণ গছামি। কিছ্তা সতী ? শিবা প্রধাবহা অরিটা অহিংসিতা, ব্যবহিত-মণি প্রশ্বং গছভি। পছা ইতি হিতীয়ারাং প্রথমা বিভক্তির্বাত্তারেন, বা ইতি বছলত ভৃতীরৈকবচনে বেন ইত্যর্থং। ছাল্সবাং টাছানে ইনা-দেশবাধঃ।

<sup>(</sup>৫) জন্তাঃ ক্রারাঃ পড়িঃ বা বেন জনেন পথা বাভি তং প্রানং নঃ ক্ষ্মভাং ক্রভাং করোতু তেন পথা ইয়নপি ক্রা প্রগন্যাঃ সমিব্যতি। প্রথম পুরুষে মধ্যমন্থাক্ষমভাব।

<sup>্</sup>ৰ পদ্ধ হেবজা ইতি পাঠাছৰৰ। গতিবাৰ: ইতি পাঠাছৰৰ।

উ ত্বং বাহা। প্রজাপতিশ্ব বিরম্প্টুপ্ ছলঃ ক্র্য্যো দেবতা মহাব্যাহ্বতিহেমে বিনিরোগঃ। উ অঃ আহা। ততো বর্দ্দিলণহন্তেন পত্যুদ্দিলণছবং ক্র্ট্রা তিঠতি জামাতা চ বড়াজ্যাহতীক্র্হেণ্ডি। ষধা—প্রজাপতিশ্বিরতিজগতীক্রন্যোহর্দ্রেবতা আজ্যহোমে বিনিরোগঃ। উ অগ্নিরেতৃপ্রথমো দেবতাভ্যঃ সোহক্তৈ প্রজাং ম্কাতৃ মৃত্যুগালাং। তদরং রাজা
বরুণোহম্মস্ততাং বথেরং শ্রী পোদ্রমঘং ন রোদাং আহা। (৬) প্রজাপতিশ্বিরতিজগতীক্রন্যোহরির্দ্রেবতা আজ্যহোমে বিনিরোগঃ। উ ইমামন্ত্রিপ্রায়তাং গার্হপত্যঃ প্রজামনন্মভিবির্ধ্যতামিরং আহা। (৭) প্রজাপতিশ্বিঃ লক্ত্রীক্রন্যো বিশ্বেদেবা দেবতা আজ্যহোমে বিনিরোগঃ। উ
ভৌতত্ব পৃষ্ঠং রক্ষতু বায়ুরের অখিনো চ ভালম্বত্তে প্রান্ সবিতাভিরক্ষ্যাবাসসং পরিধানাদ্রহক্পতির্বিশ্বেদেবা অভিরক্ষন্ত পশ্চাৎ আহা। (৮)
প্রজাপতিশ্ব বিরভিজগতীক্রন্যোহ্যাদ্রো দেবতা আজ্যহোমে বিনিরোগঃ।

<sup>(</sup>৬) অনিন্ বিবাহে কর্মণি অগ্নিরেতু আগচ্ছতু, স কীদৃশঃ ? প্রথমঃ প্রধান ভ্তঃ, দেবতাভাঃ ইন্সাদিভাঃ সোমঃ অগ্নিরেব অস্তৈ অভাঃ কভারাঃ প্রজাং ভাবিনীং সম্ভতিং মৃত্যুপাশাৎ বমপাশবন্ধনাৎ মৃঞ্চাতু মোচয়তু তৎ এতন্মৃত্যুপাশাদ বিমোচনমগ্নিকৃতং বকণোহিপি বাজা অন্তমন্ততাং স্বহন্তয়তু অসীকারং করোতু, তথা করোতু যথা ইয়ঃ স্ত্রী পৌশ্রমহং প্রতিবনাশজং ব্যসনং প্রাপ্ত ন রোদাৎ ন রোদিয়্তি। অস্তৈ ইতি ব্চার্থে চতুর্থী, মৃঞ্চাতু ইতি ব্যত্যরেন দীর্মন্থ রোদাদিতি লুটোহর্থে লেট্।

<sup>(</sup>१) ইমাং কন্তাং গার্হপত্যাং গার্হপত্যাখ্যঃ অন্নি: ত্রান্নতাং পালরত্ অন্নিহোত্রমন্তাং ভবন্ধিতি আলংসা। কিঞ্চ অন্তৈ অন্তাঃ কন্তান্নাঃ প্রজাং সম্ভতিং জন্মন্তিং জনাপর্যস্তং চিরান্ন্নীং স এবান্নিঃ কণোতৃ করোতৃ। কিঞ্চ ইন্নং কলা অনুজ্ঞোপতা ভর্গকতা সদা ভবন্ধিত্যর্থং। কিঞ্চ ইন্নং কলা জীবতাং আনুমতাং প্রাণাং মাতা অন্ত ভবতু, জল্ভাং জাভান্তপত্যানি অকালে মা ত্রিন্নতান্ ইত্যর্থং। ক্রিঞ্চ পোলং পুলস্বন্ধ জানলং প্রথং কল্পেন্ন্ অভি-বিব্যাতাং আভিস্থোন বিবিধ্নমূভবতু ইত্যর্থং।

<sup>-- (</sup>৮) -- হে কছকে ৷ তে তব পৃঠং দেহত পশ্চাদ্ভাগং দ্যো: বৰ্গাখ্যো লোক: রক্ষতু, বারু: প্রনঃ তব উদ্ধ উদ্ধাদ্ধী রক্ষুতু, তথা স্বাধিরৌ নাসভ্যো

ত বা তে গৃহত্ত বিশি ছোন ক্রিনাল্য ব্যাহ্য নংকিছে।

যা যা ক্ষত্ত্ব সান্ধির ক্রিন্ত্রী পজিলোকে বিশ্বাহ্য প্রজা প্রজা
প্রমান্তরা বাব্র বালা। (১) প্রজাপতিয়নিকপরিরান্ত্রতীক্ষ্ণো
ইয়ান্তরা বেবভা স্থালাহেন্তে বিনিরোগ:। উ সপ্রমান্ত প্রামান্তরা স্থালা
শাহা। (১০) প্রজাপতির বিক্ষিক্ ছলো বৈবস্তা দেবভা স্থালা
হোমে বিনিরোগ:। উ পরিক্ মৃত্যুরম্ভ: ম আগাদ বৈবস্তা নো ম্বভরং
রূপোত্র পরঃ মৃত্যো সম্বপর্যেই পরা: (প্রা: বভে স্বত্ত ইভি পারস্কঃ)
নার নো মান্ত ইভরো দেববানাং। ক্রেক্স্মতে শ্বতে তে ববীমি, মা নঃ প্রজা
নীরিবো নোভ বীরান্ স্থান। বথা প্রভাপতিপ্র বিগারশীক্ষ্ণোহিন্তির বভা

ন্তনদ্ধঃ গুনাহারান্ ভাবিনঃ পুত্রান্ সবিতা আদিতাঃ অভি আভিম্থ্যেন রক্ষত্। আঙ্মধ্যাদারাম্, আবাসসঃ পরিধানাৎ বন্তপরিধানবোগ্যা বাবৎ সম্পরাঃ ইত্যথঃ, তাবংকালং বৃহম্পতিঃ তান্ পুত্রান্ অভিরক্ষ্ঠ, তনাদণি চ কালাৎ পশ্চাৎ বিধেনেবাঃ অভিরক্ষ তানেব ইত্যথঃ। গুনদ্ধর ইতি শসঃ সংঃ।

- (৯) হে কন্তকে । তে তব গৃহেষ্ নিবাসেব্ নিশি রাজৌ বোৰ আক্রেনরপো ধনিঃ মা উথাৎ মা উত্তিঠতু মা তবজিতার্থঃ। অদন্তজ্ঞ আর্ক্রিছা রুদ্ভাঃ রোদনবতাঃ প্রিয়ঃ ঘদীরেবু শক্রগৃহেষ্ সংবিশন্ত শরনং কুর্মন্ত গক্তে ইতার্থঃ। কিঞ্চ অং ছংখার্ডা রুদতী সতী উরুং হদরং মা আবধিঠা উরোঘাতং মা রোদিবাসি, কিঞ্চ জীবপদ্দী জীবপতিকা সতী পতিলোকে পতিগৃহে বিরাজ শোভব বিবিধভোগান্ প্রাপ্তি। কিং কুর্মাণা । প্রজাং স্থমনত্রমানাং কুইছিতাং সন্ততিং গভানী বীক্ষমাণা।
- (১০) তে কল্পকে। অপ্রকল্প দ্বীয়ং বন্যাদং পৌত্রমর্জ্যং পুত্রমরণং পাপানাং দ্ববীরমের মৃত্যুং পাপানাং উত বা অথবা আবং অক্সদপি দ্বনিটন্ এতং সর্কাং দ্বভোংপক্ষা শীক্ষা মন্তকাং অক্সমিব মালানিব উন্বৃচ্য ক্ষবতার্য্য দ্বিদ্বভ্যা: শক্ষর প্রতিম্কানি, পাশং সুত্যুপাশনিত্যর্কা। দিবভ্য ইতি স্থেমার্কে পঞ্নী।
- (১১) क्रमका आनारक। मकः नकानार मुखाः नमः शरेतक् शता-चुरवा ताक महित्र बिटत हेकार्यः। क्रिक चुत्रकः चनत्रवार्यवः स्व मन चांगार

(बाक) महावाशिक्टरात्व विनित्तानः। ६ कः चारी। अनाशिक्यवि-क्रीकिक्ह्राका वाश्रुंक विका ( वाच ) महाबो। इंकिटहार्स विमिरवाशः । ७ जूनः খাবা। প্রবাণতি বিরহটুপ্ ছক: কর্ব্যা দেবতা (বান্ত) মহাব্যাহতি-हात्म विनित्तांगः, **७ पः पाहा । अवांगिष्टिन वित्र रेजीक्**यः अवांगिष्टिर्द वर्णा ( नमक ) महावामिकिरहारम विनिर्माताः। 🧐 कुर्वायः पाहा । किरिका कामांचा वित कुंबरभारता कार्भवक्षवद्भा वी, करा करवर्ग भक्षा भृशीक्रमांबाः ভূষোং নিধার, ও অগ্নরে খাহা ইতি পূর্বাভিমুধীং শ্বতবালাম উত্তরতঃ चार्यक्रभित रहार, छरेवर छ मामात्र चारा हैछि भूनक्ष्मिनछो प्रशास । जब অন্তগোত্তঃ অন্তগ্রবদ্ধো বা, তথা চতুপূ হীত্যাল্যং জুহ্বাং নিধার পূর্ব্বোজনত্ত-बरबन चुरुवात्राचरः', छरेवेद प्रचार । छरका वशुमहिकः পछिक्रधात्र, दशुभूकेरहरमन मिन्तिनात्मः श्रेषा, উত্তরাভিমুখো দকিণ্যভেন বধৃহত্তব্যমঞ্জীরপং গৃহীতা তিষ্ঠতি। অধ বধ্বা মাতা ভ্রাতা অভো ভ্রান্থণো বা পূর্ব্ব-স্থাপিত শমীপত্র-विक्षिणान नाकान जानाव, जञ्जकः मभूजाः निनाः निशाव, वशुः पिकनभाना-ব্রেণ শিলামাক্রময়তি, জামাতা চ পঠতি। প্রজাপতির বিরহট,প্ ছলো-**२**चा (एवछा अन्नाक्तमा विनित्नांशः। **७** हेमभ्यानमात्ताहात्मव सः স্থিরা ভব। বিষয়েশপবাধন্দ না চ বং বিষতামধঃ। (১২) ততো বহি

আগচ্ছত্, কিঞ্চ বৈবন্ধতো বমঃ নঃ অন্যাকং অভরং রুণোতু করোতু। ইদানীং প্রভাজীরতা প্রার্থতে মৃত্যুরেব। হে মৃত্যো বম! পরম্ অস্তং অমূপরেহি অমূপচ্ছ পদ্বাঃ পহানং পরাঅ্থো গচ্ছেত্যর্থঃ। কিঞ্চ বত্র নো অন্যংপথাদশ্বঃ ব্যতিরিক্তঃ পদ্বাঃ, ইতরো দেববানাৎ দেবপথাদশ্বঃ পিতৃপথ ইত্যর্থঃ। কিঞ্চ চকুন্মতে পশ্বতঃ পৃথতঃ প্রভঃ প্রভাজনৈয়ব তে তব তবৈব তদহং ব্রবীমি প্রার্থরে স চ অংপ্রার্থিতঃ সন্ মা নঃ প্রজাং রীরিমঃ নোহন্মাকং প্রজাং প্র-পোত্রাদিকাং মা হিংসীঃ। কব রীরিম হিংসারাং মোত বীরান্ উত অপ্যর্থে অন্যান্ বীরান্ বিক্রান্তানপি পুরুষান্ মা হিংসীরিত্যর্থঃ।—পদ্বা ইতি বিতী-রার্থে প্রথমা পূর্ববং।

<sup>(&</sup>gt;२) दर क्छरक ! देवम् जन्तावम् প्राज्ञकाः वृदयः प्रम् जादबार जाक-वद्र । किक देव छेनमार्थ जन्न। देव नावान देव पः दिवा छन् वृत्विकेन। छव । किक दर क्षरक ! विश्वविद्या जनवायच नी कृत्र वा श्रीकितराय ह जनवायत्म, जन्म पर विश्वाः नेकामस्याजात्म में कृत्र वा विद्या देखार्थः।

कार्याका कृष्टरभारता कार्ग्यक्षत्रद्वा वा क्या वस्त्रवरन) शक्तिय-इष्टक्क वस्त्रवा-পরি বধনা মাতা ভাতা অভ্যে রামধ্যে বা পঞ্চাবতানু লাজানু দলাতি, পতিঃ পুনল্ড ভত্পরি ব্রভক্তব্দরং দদাতি। অব অন্তপোত্তঃ অন্তপ্রবরো বা ভদা वक्षक्राणी शिवरख-युक्कद्विरकाशिक हकूत्रवस्थान् गांकान् एसा, उद्दशक्त युक्कद-বরং দাতবাম্। ততো বরেণান্দিন্ মত্ত্রে পঠিতে বধুরঞ্জলিতে দম্ অনুর্ব্বতী প্রজাপতির বিরুপরিষ্টাজ্জোতিমতীচ্ছলোংগ্লিদে বতা লাবান বুহোতি। नाबरहात्म विनिरमानः। ७ हेदः नाप्रान्यक्रारको नाबानावनछो। भी धी बुबल्ड तम পতि: भेटः वर्षानि **भी** विषयिक्षाः काष्ट्रवा सम चाहा । (১৩) ভতঃ পতিরপ্রতো বধুং কৃষা, ইমং মন্ত্রং পঠনু অগ্নিং প্রদক্ষিণং করোতি। প্রজাপতি শবিশ্বিষ্ট্প ছল: ক্সা দেবতা ক্সা-পরিণয়নে বিনিরোগ:। ও কল্পলা পিতৃভাঃ পতিলোকং ষতীয়মপদীক্ষামষষ্ট। কল্পা উত হয়া বয়ং ধারা উদস্যা ইবাতিগাহেমহি বিষঃ। (১৪) ততঃ পুনরপি তথৈব বধ্বঞ্জলিং গৃহীয়া উত্তরাভিম্থ: পতিরহণবিটোংবতিঠেত, পূর্ববিদ্যাতা ভ্রাতা অক্টো ভাদবো वा नाकान जानाव, वशुः निक्निनानाटशन ननुवाः निनाम जाक्यवि, जामाज চ পূর্ববন্মন্তং পঠতি। প্রজাপতিখ বিরহষ্ট,প্ছলোহখা দেবতা অখাক্রমণে विनिद्यां १: । উ देममधान्याद्यां हात्या व कः वित्रा ७व । विवस्त्रभवावच मा

<sup>(</sup>১৩) ইয়ং নারী দ্রী উপজতে অয়েং সমীপে বক্তি। কিং কুর্বাণা? অয়ৌ নাজানাবপত্তী প্রক্রিপত্তী। কিম্পজতে ? দীর্বায়ুরন্ত মে পতিং। এতদেব বিবৃণোতি—শতং বর্বাণি জীবতু বর্বাণাং শতং মম পতির্জীবতু শতায়ুরের পুরুষ ইতি শ্রুতেঃ। কিঞ্চ মম জাতরো বান্ধবা এবতাং বর্ধভাদ।

<sup>(</sup>১৪) ইউপ্রার্থনপরা করৈব কল্পনা ইরং পিতৃত্যঃ পিতৃগৃহাৎ পভিলোকং পভিগৃহং বভী বালী, অপেতি বর্জনার্থঃ, দীকাবর্জনার্থঃ অপদীকাশন্য:—
দীকাবর্জনম্ অবট ইউবজী, দীকাশন্মেন বৈবাহিক্ত্রতম্চাতে, বিত্রাব্রমকার লবগাশিনো দুশতী অনেভাষিত্যাদিরপং তর্জনং কুত্রবতী। কিঞ্ কল্পা.
কল্পতা উত অপি বরা সহ বরং বিবং শত্রন্ অভিগাহেমহি অভিক্রবেম।
বলা অভিগাহেমহি অভিক্রানেমহি ইন্তর্জা। ধারা উক্লা ইব উন্নক্ষারাঃ (কর্তৃতাঃ) অলতৃকাং কর্মভূতাং বধা অভিভবতি তথা শত্রন্ ইতার্থঃ।
কল্পতাঃ চাক্সবাৎ সম্বাবেশ্য লাগে।

ह पर विवेखीयेथः। भूनचर्षेवयं रशाखद्यवत्राष्ट्रमारद्वयं नकावखान् हेष्ट्रव्रवेखान् वा লালান্ বধুর্ হোভি, লামাতা চ পঠতি। প্রলাপতির বিরুপরিষ্টান্ত্রভী-क्टलार्शिमा त्ववं नांकटराटम विनित्त्रांभः। उ वर्गमनः स त्ववः । क्का चनिमक्क । न हमार तिर्दा चरीमा त्याका मुकाकू मान्कः चीरा । (३६) ততঃ পূর্ববদেব পতিরপ্রতি। বধুং কৃষা ইমং মন্তং পঠন অগ্নিং প্রদক্ষিণং করোতি। প্রকাপতিশ্বিভিটুপ্ ছন্দঃ কল্পা কেবতা কল্পাপরিণরনে বিনি-রোগ:। ওঁ কম্মলা পিতৃভ্যঃ পতিলোকং বতীর্ষপদীকামবট। কন্তা উভ ত্ত্বা বন্ধ ধারা উদ্ভা ইবাতিপাছেমহি হিনঃ। পুনতথেব বধ্বঞ্জলিং গৃহীতা উত্তরাভিমুখ: পতিরহুপবিষ্টোহ্বভিষ্ঠেত, প্রবিন্মাতা ভ্রাতা অস্তো ভ্রান্মণো বা লাজান্ আদায় বধুং দক্ষিণপাদাগ্রেণ শিলামাক্রময়ভি, জামাতা চ প্র্বর-শ্বরং পঠতি। প্রজাপতিঝ বিরস্টুপ্ ছন্দোহশ্মা দেবতা অশ্মাক্রমণে বিনিরোগ:। ও ইমনখানমারোহাখেব বং হিরা ভব। দিবভ্রমপ্রাধ্য মা চ খং বিষভামধঃ। পুনন্তবৈধ গোত্রপ্রবাহসারেণ পঞ্চাবভান্ চত্রবভান্ বা লাজানু বধ্রু হোতি, জামাতা চ মন্তং পঠতি। প্রজাপতি অবিকপরিটাল্-वृह्शीक्तमः भूवा स्ववं नाजरहात्म विनित्तानः। उ भूवनः च स्वतः কলা অগ্নিষক্ত। স ইমাং দেবঃ পুষা প্রেডো মুকার্ডু মামুতঃ বাহা। (১৬) ভভঃ পতিরগ্রতো বধ্ং কৃতা পুনরপি পূর্ববন্মলং পঠন্ অলিং প্রদক্ষিণং করোতি। প্রজাপতির বিস্তিইপ ছল: কন্তা দেবতা কন্তাপরিণয়নে বিনি-রোগঃ। ও কল্পনা পিতৃভাঃ পতিলোকং যতীয়নপদীক্ষামন্ত। কল্পা উত বন্না বন্ধ ধারা উদ্ভা ইবাতিগাহেমহি বিব:। 🕂

<sup>( &</sup>gt; ८ ) क्याः भूक्षेर्यग्रम् (त्रवाधिक व्यक्क देवेविकाः, वर्गम्भविकाधि-चन्नभग, स्कार्य चनारम् । भूनीर्द्धन भागास्त्रांभकनः, উत्तर्शार्द्धन वितन-वार्थमश्हीतः, म हारीयां चित्रः हेष्ठेः मन् हेयार क्ष्कारं शतिषेत्रमानारं हेछः निष्-कुनार व्यम्भाषु हामाना नीराः। अमृतः अधिकृतीर मे न व्यम्भाषु रेखाराः। गर गरकः। म निरंबेर्ध। निष्कृतीर छई-কুলাদালয়ত ইতার্থ:।

<sup>(36) (</sup>गोकोर्डम्) चनार्चः नृ**र्वेदर** ।

<sup>&#</sup>x27;बर्गुक्तर स्वत्र' रेडि शांत्रकत चार।

<sup>।</sup> অভিনাহেমহি ইতি পাঠান্তরৰ।

ততः मृर्गरकाखदारक चुठक्केवच्याः मचा, তত्পति नाक्यानेवः नियात्र, भून-च्छ्पति चुठकरदमः नद्यो। ७ व्यास्त्र चिडेक्ट चारो। ইতি मूर्लिटन ख्र्-त्राৎ, -यिन ज्ञारणात्वा जार्गवश्चरता जामाजा जत्वर । यिन जेजारणावः जज-প্রবরো বা, তদা প্রথমং শূর্পে এক এব ম্বতক্ষবো দাতব্যঃ, পশ্চাৎ লাফোপরি ত্মতক্রবদ্বং দাতব্যম। ততো জামাতা প্রাগুদীচ্যাং দিশি বধুং সপ্তভিশক্তিঃ नश्च मछनिकास नश्च भन्नानि नरत्र, तश्क मछनिकात्राम् खर्छ निक्नभानः নীতা. পশ্চাৎ বামপাদং নয়েৎ। জামাতা বধুং চ ত্রয়াৎ—বামপাদেন দক্ষপাদং মাক্রাম ইতি। সপ্তানাং মন্ত্রাণাম্ ঋষ্যাদয়ঃ সাধারণাঃ। প্রজাপতিঋ বিরেক-भावविद्यां है इत्ना विकूर्ण वेज भावाक्रमत् विनित्यां शः । **७** वक्षित्य विक्षा-ওঁ ছে উর্জে বিফুখানয়তু। ওঁ ত্রীণি ব্রতায় বিফুখানয়তু। ওঁ চত্বারি মাধ্যোভবার বিঞ্জানরতু। ওঁ পঞ্চ পশুভো বিঞ্জানরতু। রায়স্পোষায় বিষ্ণুখানয়তু। ওঁ সপ্ত সপ্তভ্যো হোত্রাভ্যো বিষ্ণুখানয়তু। (১৭) ততং সপ্তপদীগতাং কল্ঠাং পতিরাশান্তে। প্রজাপতিঋষিঃ সামিকীপঙ্জি-•हनः क्या (नवर्षा भागक्रियणानस्वत्रयामामत्म विनित्यातः। े **उ** मथा मश्रभनी ভব স্থ্যন্তে গ্ৰেষ্ট্ৰন্। স্থ্যন্তে মা বোষাঃ, স্থ্যন্তে মারোষ্ট্রাঃ। (১৮) ততো জামাতা তত্ত্বৈব স্থিত। জনেন মন্ত্ৰেণ বিবাহং দ্ৰষ্ট্যাগতান্ জনান্ আমন্তবেৎ।

<sup>(</sup>১৭) হে কন্তকে । একং পাদং বিফুখাং নয়তু আক্রময়তু ইবে অর্থলাভায় অয়লাভায় বা, তথা বে পদে উর্জ্জে বললাভায়, ত্রীণি পদানি ব্রতায় বজ্ঞ-কর্মণে, চন্দারি পদানি মায়োভবায় সৌধ্যপ্রাপ্তরে, পঞ্চপদানি পশুভাঃ পশু-প্রাপ্তরে, বট্পদানি রায়স্পোধায় ধনপুইয়ে, সপ্তপ্রানি সপ্তভাঃ হোত্রাভাঃ সপ্তশ্বিক্প্রাপ্তয়ে বিকুন্থানয়তু ইতি বোজনীয়ন্।

<sup>(</sup>১৮) পাদাক্রমণানন্তরং পতিঃ প্রার্থরতে ক্যামেব। হে ক্সকে! দং
মম সথা সথী দণীসমানা সহচরী ভব; তথা সপ্তপদী সপ্তপদীর সপ্তপদাক্রান্তাভিথেরের অর্থের সহচারিণী ভবেত্যর্থ:। কিঞ্চ সখ্যং মৈত্রীং তে তব গমেরম্
অহং গছামি, সথা ভবেরমিত্যাশাস্যতে। কিঞ্চ সখ্যং তে তব সধ্যং মরা
সহ বোবাঃ অক্সন্তিয়ঃ মা বিজ্ঞিক ইভার্থ:। কিঞ্চ সখ্যং তে তব সধ্যং মরঃ
স্থং তক্তোখানং মরোঠং তক্ত ভবাঃ মারোঠাঃ স্থকারিণাঃ ভবার্থে বন্।
সর্মর্থ:—ন্ত্রিয়ো বাভাগ্রা সহ মম সধ্যং কুর্মন্ত্র।

প্রজ্ঞাপতিশ বিরম্ভ পূছন আশাভ্যানা দেবতা বিবাহপ্রেক্ক-জনামন্ত্রণে বিনিরোগ:। ওঁ ক্ষলগীরিরং বধ্রিমাং সমেত পৃশ্রত। সৌভাগ্যমকৈ দ্বারা-থাতং বিপরেতন । (১৯) তত উদক্কলস্থারী জামাত্র্বরন্তঃ অগ্নেঃ পশ্চিমদেশেন সপ্তপদীস্থানমাগত্য সহকারপলবোদকেন মূর্দ্ধি বরমতি-বিঞ্চেৎ, জামাতা চ মন্তং পঠেৎ—প্রজ্ঞাপতিশ বিরম্ভ পু ছন্দো বিশ্বদেবাদয়ো দেবতা মূর্দ্ধাভিবেচনে বিনিরোগ:। ওঁ সমজন্ত বিশ্বদেবাঃ সমাপো ক্লন্মানি নৌ। সম্মাতরিখা সংধাতা সম্দেষ্ট্রী দথাতু নৌ। (২০) পশ্চাৎ অনেনৈব মন্ত্রেণ বধ্মভিবিঞ্চেৎ। ততো জামাতা অধোনিহিত-বামহন্তেন বধ্মজিবিং, দক্ষিণহন্তেন চ সাকুষ্টমূল্ডানং বধ্দক্ষিণহন্তঃ গৃহীতা সপ্তপদীস্থান এব বক্ষজ্ঞান্ জ্পতি। প্রজ্ঞাপতিশ বিস্তিষ্ট প্ ছন্দো ভগাদয়ো দেবতা গৃহীত-কল্পাপাণেঃ পত্যুক্ত পে বিনিরোগঃ। ওঁ গৃভ্ণামি তে সৌভগত্যার হন্তং ময়াঃ পত্যা জ্বদ্ধির্বিধাসঃ। ভগো অর্থামা সবিতা প্রক্রিম্তং তাত্রগাণণেঃ পত্যুক্ত পি বিনিরোগঃ। ওঁ অন্যোরচক্রপতিন্ত্যেধি শিবা পশ্ভয়ঃ ক্ষনাঃ শত্যুক্ত পি বিনিরোগঃ। ওঁ অন্যোরচক্রপতিন্ত্যেধি শিবা পশ্ভয়ঃ ক্ষনাঃ ক্রাক্ত পি বিনিরোগঃ। ওঁ অন্যোরচক্রপতিন্ত্যেধি শিবা পশ্ভয়ঃ ক্ষনাঃ ক্রাক্ত পি বিনিরোগঃ। ওঁ অন্যোরচক্রপতিন্ত্যেধি শিবা পশ্ভয়ঃ ক্ষনাঃ ক্রাক্ত পি বিনিরোগঃ। ওঁ অন্যোরচক্রপতিন্ত্যেধি শিবা পশ্ভয়ঃ ক্ষনাঃ

<sup>(</sup>১৯) হে বিবাহন্ত্রীর: জনা: ! ইরং বধ্ং সুমন্দলী: প্রাণন্তমন্দলা ইরং পরিণীতা বতন্ততঃ এনাং সমেত সন্দ্রত বৃষ্ম, পশুত আলোকরত, কিঞ্চিত্র কল্পারৈ সৌভাগ্যং দন্তার দন্ধা অথ অনস্তরং অন্তং গৃহং বিপরেতন গছত। বিপরাপ্র্ব ইন্ গতৌ লোট্ মধ্যমপ্রুষবহুবচনে ত, তপ্তনপ্তনপ্তনথনাক্ষ্মতি তশক্ত তনপাদেশ: । দন্তারেতিচ্নুদ্দি বগাগম: । সুমন্দলীরিতি সেলেপাভাবশ্লাক্সতাং ।

<sup>(</sup>২٠) হে কন্তকে! বিখেদেবাঃ নৌ আবরোঃ, হৃদয়ানি বিখেদেবাঃ আপশ্চ সমগ্রন্থ সংশোধয়ন্ত অকল্যীকুর্বন্ধ, কিঞ্মাতরিখা বায়ঃ সংশোধয়তু, ধাতা প্রজাপতিঃ স চ সংশোধয়তু। কিঞ্চ দেখ্রী উপদেশদাত্রী দেবতা নৌ আবরোহ্র দয়ং সন্দর্ধাতু একীভাবং করোতু। সমঃহয়ং পাদপ্রপার্থং, উস্পোধনে।

<sup>(</sup>২১) হে কন্সকে। তে তব হতঃ গৃত্যামি গৃহামি। কিমর্থম্ ? সৌভগন্ধার সৌভাগ্যার, কিঞ্চ নরা পত্যা সহ অবদন্ধি: অবাতঃ বাবং, বথা ত্বাসঃ ভবসি ভিঠুমীতি বাবং তত্মাৎ ভগো অর্থানা সবিতা পুরদ্ধিরগ্রশীঃ তদেতে দেবা মহং

<sup>\* &#</sup>x27;ব**ণাত্তং বি**পরেতন' ইতি পারকর আহ।

স্বর্চা:। বীরস্কারিস্পেরিকামা সোনা দরো তব ছিপদে শং চতুপাদে। (২২) প্রকাপতিথ বিকাপতীক্ষন: প্রকাপতিদে বিভা গৃহীতকভাপাণে: পত্যক্ষ পে বিনিরোগ:। ও আ ন: প্রকাং জনরত প্রকাপতিরাজরনার স্মনকর্ব্যমা। ছাত্র্মকলী: পতিলোকমাবিশ শরো তব ছিপদে শং চতুপদে। (২৩) প্রকাপতিথ বিরহছই প্রুল ইক্রো দেবতা গৃহীতকভাপাণে: পত্যক্ষপে বিনিরোগ:। ও ইমাং ছমিজ মীচ্;, স্প্রাং স্বভগাং রুধি। দশাস্থাং প্রানাথেহি পতিমেকাদশং কুরু। (২৪) প্রকাপতিথ বিরহছই প্রকাং কল্লা

গার্হপত্যার গার্হপত্যারিকরণার স্বা স্বাং অতঃ দত্তবস্তঃ। গৃত্যামীতি হ্রগ্র-হোর্ভস্কনীতি গ্রহের্হকারন্ত ভকারঃ। আস ইতি অসেন্ডি সিপি বছলং ছন্দনীতি শপোন নুক্।

- (২২) হে কশ্বকে! অবোরচক্: অবজনৃষ্টি: এবি ভব। কিঞ্চ অপভিন্নী অপতিবাতিনী চ ভব। কিঞ্চ শিবা পশুভা: পশ্নাং গোমহিবাদীনাং চ
  অধাবহা ভব। চতুৰ্মী আনিধি বছাৰ্যে। অননাঃ স্থপ্ৰসন্তচ্ছা ভব,ভধা অবর্চাঃ
  ভেকবিনী, বীরত্য: সংপ্রপ্রস্তার, জীবদপত্যা ভবেতি সর্বলোবেতি।
  দেবকামা পঞ্চবজাভিরতা, জোনা স্থপকরী ভব, শং. অধং নঃ অত্যাকং সম্বন্ধি
  বিপদে চতুত্বদে শং অধাবহা ভব ইদ্যাশাভতে। বিপদে চতুত্বদে ইতি
  ভাদর্থো চতুর্থী।
- (২০) প্রজাপতিঃ প্রটানঃ অসাকং প্রজাং প্রপৌক্রাদিকাং আজনরত্ উৎপাদরত্ । ব্যবহিতমধি আঙ্জনিনা সহ সমধ্যতে ছলসি ব্যবহিতাশেতি পাণিনিমরণাং। আজরসার জরাস্তং বাবং। কিঞ্চ তাং প্রজাং সমনজ্ ব্যক্তরত্ প্রক্তীকরোত্ প্রকটগুণাং করোত্, অর্থানা দেবং, কিঞ্চ হে কন্তকে। খা খাং মহলীঃ নহল্যো দেবভাঃ মহন্ অতঃ দত্তবভাঃ বভোহতঃ পতিলোকম্ আবিশ প্রবিশ, মহলীরিতি জসি ছলসীতি প্রথমাবহুবচনে বিতীয়াবহুবচনম্। কিঞ্চ হে কন্তকে। নঃ অস্থাকং বিপদ্ধে গাস্দাসীজনাদে চতুপাদে প্রো-বহিরাদে খাং মুধ্রপা ভব।
- ( २० ) বে ইব্র । বীদ্যুঃ উদক্রকেগ্রন্থিনা আগ্যাননকারকঃ সৃন্ ইনাং কর্তাং অপুরাং সংগ্রপ্রস্বাং অভগাং পতিপ্রিরাং দং কৃষ্টি কুরু। কিক্সিডাং ক্সারাং দশসংখ্যকান্ পুরান্ আবেহি পর্চে কুক্ত প্রক্রন্থ। পতিক ভর্তারং

সমাজী বর্ণাং তব। ননান্দরি সমাজী তব, সমাজী অধিদের্বু। (২৫)
প্রজাপতিথা বিশ্লিই প্ ছনাং প্রার্থামানা (ক্লাচিডর্হস্পতরো) দেবতা গৃহীতক্লাপাণে: পত্যুক্ত পে বিনিরোগ:। উ মম ব্রতে তে হাদরং দ্বাতু \* মম চিডমহচিডং তে অন্ত। মম বাচমেকমনা জ্বস্ব, † বৃহস্পতিতা নিয়্নক্ত্রু মহম্। (২৬)
ততঃ অগ্নিসমীপমাগত্য, বামতো বধৃং ক্লবা! বধৃসহিত উপবিটো জামাতা
পাণিগ্রহণকর্মান্তে (ব্যন্তসমন্ত) মহাব্যাহতিহোমং কুর্যাৎ। বধা—প্রজাপতিঅবিগান্ধরীচ্ছন্দোহগ্রিদে বতা (ব্যন্ত) মহাব্যাহতিহোমে বিনিরোগ:।
উ ভ্: স্বাহা। প্রজাপতিথা বিক্ষিক্ ছন্দো বায়ুদে বতা (ব্যন্ত) মহাব্যাহতিহোমে বিনিরোগ:। উ ভ্ব: স্বাহা। প্রজাপতিথা বিরহুই পুছন্দঃ স্র্গো দেবতা
ব্যন্ত) মহাব্যাহতিহোমে বিনিরোগ:। উ স্থ: স্বাহা। প্রজাপতিথা বি
র্হতীচ্ছন্দঃ প্রজাপতিদে বতা (সমন্ত) মহাব্যাহতিহোমে বিনিরোগ:। উ
ভূত্ব:স্ব: স্বাহা। ততঃ প্রাদেশপ্রমাণা: স্বতাক্রাং সমিধং তৃকীমগ্রে জুহ্রাং।
ইতি পাণিগ্রহণকর্ম সমাপ্তম্।

আতাং একাদশং একাদশপ্রণং কুরুইভি প্রার্থাতে। মীঁচ্ব ইভি দাখান্ সাথান্ মীছাংক্তেভি মিহ সেচনে ইভাসা কসৌ নিপাভাতে মতুবসোরঃ সমূজি ছক্ষমীতি কুবং। কৃথি কুঞোবিকরণত বছলং ছক্ষমীতি সূত্।

- (২৫) হে কছকে। বং বছরে পড়াঃ পিতরি সমাজী প্রধানা বাসিনী ভব গৃহকর্মণি পণ্ডিতা ইতার্থঃ। তথা বজাং পত্যুমাতরি তথা সনাকরি ভর্তিসিলাং তথা অধি উপরি দেবুর্ পত্যুলাত্র দেবরের সমাজী ভব ইতি সর্বাব সমন্দ্রীয়ন্। পুনঃ প্রঃ সমাজীতাহণং পৌরবার্থন্।
- (২৬) হে কছকে ! তে তব হাৰঃং মনঃ মম ব্ৰতে পাতিব্ৰত্যাভিধানে দথাতু হাগনত অৱান্তকৰ্ত্বপদত অৱত্যাং কন্যৈব কৰ্ত্তী সৈব অকীন্তদনং পতিব্ৰতে অৰ্গনিষ্টিত প্ৰাৰ্থতে ৷ কিন্দু মম চিন্তম্ অহলকীন্তত্য তব চিন্তম্ অন্ত, অৰ্গ চিন্তমনসোভেলেনোপাদানমবগম্যতে তেন চিন্তং আনগলকণমিতি ভাবেনোপাততে ৷ তেনৈতহ্তং তবতি, আনব্যাবেকচিন্তব্যং তব্যবিত্যবাং ৷ কিন্দু মম বাচং বাণীম্ একমনাঃ অনভচেতাঃ ভ্ৰহ সেবৰ প্ৰীতিৰ্তাং বাচং ক্ৰিটাৰ্বা, কিন্দু বৃহস্পতিঃ দৈৰ্ঘক্তঃ বাহাং মহাং মহাই নিন্দু কিন্তু নিৰোভন্ত ৷

<sup>+</sup> क्विनि रेडि भोतकतः।

**<sup>†</sup> अम्मानिको हैंकि नात्रका ।** जुलू स्थान प्रतिकार कर व

<sup>🙏</sup> देशांनीः बदान निन्तूतः शानप्रति देखि भारपतः ।

# नरकात्र-धकत्रनम्

## डांच उंज्यानियांट्य र

তল প্নর্দি বোলকনামানমনিং লংছাপ্য বির্ণাক্ষণাভাং কুল্ডিকাং
সমাপ্য বদি দিবাভাগে বিবাহতদা নকলোদরং বাবৎ ভির্তেই, অথোদিতে
নকলে আরেঃ পশ্চিমারাং দিশি লোহিতব্যক্ত ভক্চর্ম প্রাণ্, প্রীবমান্তীব্য, লোমপৃঠে বধং বাগ্বভাম্পবেশ্য, উপবিটো জামাতা প্রর্দি সমিংপ্রক্ষেপানস্তরং
ব্যক্তসমন্তমহাব্যান্তিহোমং কর্জা, ষড়াল্ডাছ্ডীভূহরাৎ, প্রভ্যান্তিশেক্ষ
ক্রবলয়মাল্জাং বধ্শিরসি নিদধ্যাৎ। বরাং মন্ত্রাণাম্ ঝয়াদয়ঃ সাধারণাঃ।
প্রজাপতির্ধান্তরমূপ ছলঃ কল্পা দেবতা উত্তরবিবাহে পাণিগ্রহণক্তাল্ডাহোমে
বিনিয়োগঃ। ও লেখাসন্তির্ পল্মাবর্ডেয়্ চ বানি তে। তানি তে
পূর্ণাহত্যা সর্কাণি শময়ামাহং আহা। (২৭) ও কেশের্ বচ্চ পাপকমীক্রিতে
ক্রিতে চ বং। তানি তে প্র্ণাহত্যা সর্কাণি শময়ামাহং আহা। (২৮) ও
শীলে চ \* বচ্চ পাপকং ভাবিতে ছসিতে চ বং। তানি তে প্রণাহত্যা
সর্কাণি শময়ামাহং আহা। (২৯) ও আরোকের চ দল্ভের্ হন্তরোঃ
পাদরোশ্চ বং। তানি তে প্রণাহত্যা সর্কাণি শময়ামাহং আহা। (৩০)
ও উর্ব্বোক্ষপত্তে জ্লব্রোঃ সন্ধানের চ বানি তে। তানি তে প্র্ণাহত্যা

<sup>(</sup>২৭) হে কছকে। তে তব লেখাসন্ধির্ দেহসন্ধিদেশের্ পক্ষর নেত্রাস্তরের্ আবর্তের্ কুর্নরদেশেরু ছিত্ররপস্থানবিশেষের্ ইত্যর্থঃ। চকারোহস্ক্রসমূচ্যে, তেন যানি বাজেবংভ্তানি তে তব আলকণানি তাজহং পতিঃ প্রভিত্যা পাণিগ্রহণস্যাজ্যহোমেন স্কাণি শমরামি।

<sup>(</sup>২৮) অসাঃ কন্সারাঃ কেশের বং পাপকর্ম অনক্ষণং তথা ঈকিতে দর্শনে, ক্ষতিত অল্ল-বিয়োচনে, চকারাৎ অন্সানি বানি গাপকর্মকন্দ্রণানি তান্ত্রং শ্রমানীতার্থঃ।

<sup>(</sup>২৯) শীলে চরিতে চেষ্টারামিতি বাবৎ, তথা ভাষিতে কথনে হসিতে নিতে চকারাৎ ক্রমণে চ বানি বানি পাপকানি অলকণানি স্কাণি তানি শ্যাব্যহয়।

<sup>(</sup>৩০) আরোকের দন্তান্তর্কের্ দশতের্ দশতের চকারালোঠরোশ্চ তথা হতরোঃ পাদরোশ্চ চ শবাদিস্থীয়ি চ যথ পালকং অলক্ষণং তৎসর্কং শবর্তিন

<sup>+</sup> শীলেবু-ইভি পাঠান্তরন্।

गर्सानि भगनामारः चारा। (१३) भै द्वाति काति व त्यांनानि गर्सात्वर् उवाञ्यत्। প्रविद्धिकाकाञ्च गर्सानि छात्रनेभारः चारा। (१३) छ छ। कामाजा वश्निरू छेथात, विश्तिक्या, वश्निमः मतः शार्धा। (१३) छ छ। व्यवाशिष्ठ विश्व के अर्थात विश्व क्षित्रम् अर्थात विश्व क्षित्र क्ष्या कर्मात अर्थारः शिक्य क्ष्या कर्मात अर्थारः शिक्य क्ष्या कर्मात क्ष्या कर्मात क्ष्या । छ क्ष्या । छ क्ष्या । ए छ। क्ष्या । प्रविद्ध क्ष्या । ए क्ष्या क्ष्या । छ क्ष्या । व्यवाशिक विश्व विश्व व्यव्य क्ष्या । विश्व क्ष्या क्ष्या । विश्व क्ष्या व्यव्य विश्व व्यव्य विश्व वि

<sup>(</sup>৩১) উর্বোঃ উরুদ্ধরে উপস্থে ভগদেশে জুজ্মরোঃ জুজ্মান্বস্কানে লেখাসন্ধির্শকাৎ অজের চ স্থানের মূখের চ বানি অলকণানি ভানি প্র্ণাহভ্যা শ্মরাম্যহম্।

<sup>(</sup>৩২) হে বধু! তবাদের শির:প্রভৃতিপাদপর্যন্তের বানি বানি প্রকৃতানি বোরানি পাপানি অলকণানি চন্দাৎ অপ্রকৃতানি তানি আজ্ঞাস্ত প্রাহতিভিঃ সর্কাণি অশীশমং শমিতবান্ ইত্যর্বঃ। স্বাহেতি হোমাদ্বেন।

<sup>(</sup>৩০) হে এব ! দং এবমদি স্থিরো ভবদি বতোহতক্ষর্শনাদ্হমণি পতিকূলে স্থিরা ভ্রাসম। এবমিতি লিখব্যত্যয়েন নপুংসক্ষম্।

<sup>(</sup>৩৪) হে অক্ষতি! অহং কারবাঙ্মনোভিঃ দলিক্দাশি স্মিবেডি ভাৎপর্যক্ষন্তীদর্শনে।

<sup>(</sup>৩৫) ববেতাত্রাধ্যাহার্য্যন্। বধা ধ্রুবা নিশ্চনা দ্যো: ছ্যুনোকো বধা ধ্রুবা পৃথিবী বধা ধ্রুবং বিশ্বং সর্ক্ষমিদং জগৎ চরাচরং প্রভ্যক্ষা ইমে বধা পর্ক্তা ধ্রুবাস: বধা হিমবদাদরো গিরমন্তবেদ্ধং বধ্ং পতিকূলে ভর্গুহে হিরা ভবভূ ইত্যর্থ:। ধ্রুবাস ইতি আজ্জনেরস্থক্।

<sup>\*</sup> वष्ट्रिक्ट हर्टलांश्व नान्छ।

<sup>🛊</sup> भाजरीयः পजिताबाब्द्धतः वश्नाय वश्ना अही छतान्।

<sup>🕽</sup> वकुत्रिष्ट् ।

প অভিবাহনৰ নাম হস্তাভাং পাধ্যহণৰ। গোৱেণ পড়িগোৱেণ—বনোৱাদ অভিভে নামী বিবাহাৎ সম্ভবে পথে ইভি বচনাধিত যা হ মুকুকুকুঃ।

নবঃ অবৃত্রোক্তা প্রীঅমুক্দেব্যহং তো অভিবাদনে। ইত্যভিবাদনবাক্যম্।
ততো ভাষাতা, ও আয়ুমতী তব সোম্যে। ইতি বদেং। ততভ্যক্তমৌনর।
বধা সহিতং ভাষাত্রম্ আচারতো বেদীমুখাপ্য, অনপূর্ণক্রসমাদার অবিধবা
নাব্যঃ সহকারপদ্ধবোদকেন সানাদিমকলং কুর্যঃ। ততো ভাষাতা অগ্নিমীপমাগত্য পূর্ববং ব্যক্তসমন্তমহাব্যাহতিহোমং (৪২ পৃঃ) সমিংপ্রক্রেপঞ্চ কুর্যাং।
ইতি উত্তরবিবাহকর্ম।

### অথ ভোজনাদিগুভিছোমান্তং কর্ম্ম

তত্র কাষাতা এডিম হৈরভিমন্তিং হবিশ্বারমক্ষারশবণং ভূজীত।
মত্রা বধা।—প্রকাপতিথ বিরম্ন ইপু ছন্দোহরং দেবতা অরভোজনে
বিনিরোগং। ও অরপাশেন মনিনা প্রাণস্ত্রেণ পৃরিনা। বর্গানি
সত্যগ্রহিনা মনক্ষ হুদরঞ্চ তে॥ (৩৬) প্রজাপতিথ বিরম্ন ইপু ছলং
প্রাধ্যমানা দেবতা দল্পত্যোহ দিরক্যপ্রার্থনে বিনিরোগং। ও ব্যাক্ত হুদরং
তব তদত্ত হুদরং মম। বিদিশ হুদরং মম তদত্ত হুদরং তব॥ (৩৭) প্রজাপতিভূবিদি পাজ্জগতীজ্ঞনাহরং দেবতা অরম্ভতে বিনিরোগং। ও অরং
প্রাণস্থ বড়বিংশ ও তেন বর্গামি ছাসো। (৩৮) + ইদানীং বদি ন ভূক্যতে

<sup>(</sup>৩৬) হে বধু! তে তব মনঃ চিন্তং চশকাৎ বৃদ্ধিক হাদয়ং অন্তঃকরণম্ আহং পরিপেতা বগামি। কেন বগামীত্যাকাজ্জারাম্ আহ—অরপাশেন বন্ধনরপেণ, আরেনৈব বতঃ শরীরবন্ধঃ, মণিনা ইত্যুপমা আত্মনা সহ মহন্দিতেন মণিনা বা, কিঞ্জেন ? প্রাণস্ত্রেণ প্রাণাঃ স্ক্রাণি মন্ত তেন আরং বৈ দেবাঃ পৃত্রি ইতি বদন্তি তেন বগামি বশীকরোমি, তদেব বিশিব্যতে—সভ্যগ্রনিনা সভাং গ্রন্থিক্ত তেন বগামীতার্থঃ।

<sup>(</sup>৩৭) আব্যোহ দিয়ৈক্যং ভবত ইতার্থ:।

<sup>(</sup>৩০) হে বধু! ত্বা ত্বাং অহং পরিণেতা বয়ামি বলীকরোমি, কেন ইত্যাকাজ্ঞানামাহ অনমিতি। অন্ধঃ অননীরং বং প্রাণত প্রাণাভিধানবায়-রাজত পড়িংশঃ বন্ধনং তেন ইত্যর্থ:। কেচিড়ু বড়্বিংশ ইতি পঠন্তি তরতে পঞ্চবিংশতিতত্বাতিরিক্তঃ বন্ধঃ ইত্যর্থ:। পড়িংশ ইতি পচে বিশেষ্ঠ ক্ছন্দ্রনীতি ভ্রাপন্ধ:। পড়িংশো বন্ধনে প্রোক্তঃ ভ্রুগোন্ধন্ত ব্যারিত্যতিবানকাওম্।

পতি পে ইতি পাঠাভবন্।

<sup>†</sup> অৰ অসাৰিতি সৰ্বনামছাৰে বধুনাৰ প্ৰবোজনান। ইতি অভিৱিভঃ পাঠঃ।

ভদা কদলকাদিকসভিষয়ঃ ভোজনার্থং হাগনীরম্। ভুক্লোজিইং নকৈ প্রদাভবাম্। ততো দিনাভরে অনেন মন্তেশ বৃধুং রথারছাং রহা বরঃ বরঃং নরেং। প্রজাপতিশ্ব বিস্তিই প্ হলঃ করা দেবতা বানারোহণে বিনিরোগং। ও প্রকাজকং শালালিং বিশ্বরূপং অবর্ণবর্ণং স্কৃতং অচক্রং আরোহ সর্ব্যো অযুভত্ত নাভিং, ত্যোনং পত্যে বহং বং কৃর্থ । (৩৯) ভতো বধ্সহিতঃ পতির্গছর্মনি চতুপ্রধাদীনামন্তরেং। প্রজাপতিশ্ব বিরম্প্রত্বপূর্ণ ছলং পর্যানো দেবতাশ্চতুপ্রধালামন্ত্রণে বিনিরোগং। ও মা বিদন্ পরিপ্রিনা ব আসীদন্তি দম্পতী। সুগেভিত্ গ্রহীতামপ্রাভরঃ। (৪০) ভতো বানাদবতার্যা, বামদেবাং গীছা পতির্বৃধ্ং গৃহং প্রবেশরেং। ভতঃ প্রাগ্ প্রীবাভ্তলোহিতবৃষ্ণকচর্মাণ ক্রমকলাচারা অবিধ্বাঃ প্রস্বত্যো বামণ্যা বধ্মপ্রবেশরেয়্যা, পতিশ্ব মরং পঠিত। প্রজাপতিশ্ব বিরম্প্রেপ্ ছলো গ্রাদ্যো দেবতা অনভ্চের্শ্বোপ্রেশনে বিনিরোগঃ। ও ইছ গারঃ

<sup>(</sup>৩৯) স্থ্যপদ্মী স্থ্যা স্থ্যেব স্থ্যা উপচারাৎ প্রকৃষ্টা বধৃক্তা, হে স্থ্যে। হে বধৃ। ছং বহং রধং বানমারোহ আক্রাম আদিত্যসেব। কিছ্তম্ ? শাল্লিং শাল্লিপুপমিব। পুনং কীদৃশম্ ? স্বকিংশুকং প্লাশপুপমিব রক্তং। পুনরপি তমেব বিশিন্তি, বিশ্বরূপং নানার্ল্যং স্বব্ধবর্ণং কাঞ্চনকান্তং স্বকৃত্যং শোভনং কল্লিতং স্বচ্জং সমপাদম্। কিছ্তম্ ? অমৃতশু নাভিম্ উৎপত্তিন্তানং, বানমিদং স্থানং কিঞ্জোনং স্থং পত্যে পরিপত্তে কৃথ্য কুক্তাই ত্যাইং। এতেনৈত্তকং ভবতি তবাপি পুলপোক্রাদিসকলবিত্তানামুৎপত্তি-স্থানং বানমিদং ভবত্।

<sup>(</sup>৪০) হে পছান: ! ইমৌ দৃষ্ণতী বধ্বরো অগৃহং বাজো পরিপছিন:
চৌরা: পাছমুবং মা বিদন্ মা জানত্ত। কিন্তৃতান্টোরা: ? বে আসীদন্তি
অবক্ষন্তি তে মা বিদন্ মা জানত, দৃষ্ণতী ইতি দেখা। কিন্তু ইমৌ দৃষ্ণতী
অবেজন্তি: স্থামনৈমার্গি: ছুৰ্গং ছুৰ্গমন্ অতীতাং অভিশবেন গছতান, কিঞাভেপারাতর: শত্রবং বিশ্বকারিণ: গছতোবনরোরপদ্রাভ্ত অপগছতে দ্রীভবত ইত্যর্থ:। স্থাপতিরিতি ছালসন্থাৎ ভিদ্ উস্ন ভবতি।

<sup>\*</sup> वर्ष्ट्रन्-रेष्टि गार्वास्त्रव्।

ইতি ভোজনাদিধতিহোমান্তং কর্ম সমাপ্তম্।

## অথ চতুথীহোমঃ

তত্র পতিঃ শিধিনামানমগ্নিং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষজপাস্তাং কুশণ্ডিকাং সমাপ্য তৃষ্ণীং সমিৎপ্রক্ষেপং ব্যস্তসমন্ত-মহাব্যাহৃতিহোমঞ্চ কৃত্বা (৪২ পৃঃ) দক্ষিণতো

<sup>(</sup>१) देह विश्वन् गृट्ट भावः প्रवाह्मस्यः भूज्ञः भावािष्ठिकः (१० व्याप्ताः । व्याप्ताः व्यापताः । व्या

<sup>(82)</sup> जात करेनात श्रार्थाएउ। रह तथु । देर जातिन शरर एव धृष्टिः
मनमः श्रमारमा , जवजू, जनस जावादहनः, चन्नः चनी वदकूवर्गण हेर धृष्टिः
मनमः श्रमारमार्च, ज्ञार्था देर शरर एव वश्विः वमनः जो जनसङ, क्रिक देर मन मर वस्य क्रीएवः क्रुक, 'सन्ना' देखि वाकारमार्थार्थ्वाः ऐकिछार ।
किक मनि छर्डति एव वृष्टिवच, एवा चन्न पही वरकूवर्गमा मनि श्री दिवा हु । अथा मनि

বধ্মুপ্তব্য কুৰকুত্মসহিতমুদকপাঞ্চ দক্ষিণে নিধার, বক্ষামাণ্যবৈত্ববিংশত্যা-कारिके इशेर, अनाहिन्तिक क्रवनधर्माकामूनक्रात्व मःशानत्व । প্রজাপতিৰ বিরামন্ত্রামাণে। বিরেদ বিতা চতুর্বীহোঁমে বিনিরোগঃ। ও অরে **धावित्रस्य पः (मरानाः धावित्रस्य । वाक्ष्मस्य । नाथकाव छेन**शांतावि । বাস্তাঃ পাপী দল্লীভাষতা অপলহি ঘাহা। • (৪০) প্ৰলাপতিৰ বিরামন্ত্রমাণে। বায়ুদে বভা চতুৰীহোমে বিনিয়োগঃ। ও বারো প্রায়ন্চিতে ঘং দেবানাং প্রার্থিকরির। বান্ধণভা নাথকাম উপধাবামি। যান্ডা: পাপী লন্ধী-স্তামক্তা অপলহি বাহা। প্ৰলাপতিৰ বিরামন্ত্রামাণ-চল্রো দেবতা চতুথী-ওঁ চক্র প্রায়ন্চিত্তে ঘং দেবানাং প্রায়ন্চিত্তির্নি। रहार्य विनिद्योगः। ব্ৰাহ্মণন্তা নাথকাম উপধাবামি। যাস্তাঃ পাপী লন্ধীন্তামস্তা অপজহি चाहा। প্রজাপতির বিরামন্ত্রমাণঃ কর্যো দেবতা চতুর্থীহোমে বিনিরোগ:। ওঁ সূর্য্য প্রায়শ্চিতে হং দেবানাং প্রায়শ্চিতিরসি। ব্রাহ্মণহা নাথকাম উপধাৰামি। ৰাস্তা: পাপী লন্ধীন্তামস্তা অপকৃতি বাহা। প্ৰজাপতিৰ বি-বাষন্ত্রামাণা অগ্নি-বায়ু-চক্র-পূর্ব্যাশ্চতলো দেবতাশ্চতুর্বীহোমে বিনিয়োগ:। 'ওঁ षश्चित्रागृहस्तर्यगाः श्वात्रनिखरत्रा यूत्रः त्वतानाः श्वात्रनिखतः ए । जान्नत्वा বো নাথকাৰ উপধাৰামি। ৰাখ্যা: পাপী লন্ধীভাষ্যা অপহত খাহা। প্রজাপতির বিরামন্ত্রামাণোখগ্নিদে বিতা চতুর্থীহোবে বিনিরোগ:। ও অথে প্রায়ন্চিত্তে বং দেবানাং প্রায়ন্চিত্তিরসি। ত্রাহ্মণতা নাথকাম উপধাবামি। ৰাভা: পতিয়ী তনুৱামভা অপকৃহি খাহা। প্ৰজাপতিশ্ব বিৱামন্ত্ৰামাণে বায়ুদে বভা চতুৰ্থীহোমে বিনিয়োগঃ। ও বায়ো প্রারভিত্তে ছং দেবানাং প্রায়কিত্তিরসি। ব্রাহ্মণম্বা নাথকাম উপধাবামি। বাস্তাঃ পডিয়ী তন্-স্তামস্তা অপজহি স্বাহা। প্রজাপতিখ বিরামন্ত্রামাণকল্রো চতুর্থীহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ চক্র প্রায়শ্চিত্তে তং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি।

<sup>(</sup>৪০) হে অয়ে! প্রার্থিতে! দোবনিষ্ঠাং! দেবানামিন্তানীনাং প্রায়শ্চিতিঃ নিম্নতিদেশিবাপহতা অসি ওবসি বৃতঃ অওকা দ্বাং আদ-পোহহং উপধাবামি উপস্থামি। কিছ্তঃ । নাথকামঃ বাচমানঃ অস্যাং পদ্মাং বা পাপী নত্ত্বীঃ অভতস্বদ্ধিনী শোভা ভাষ্ অপকৃষ্টি অপহর ফোটর। অপরে চ্ছারো মন্ত্রা অনেনৈব ব্যাধ্যাভাঃ।

<sup>\*</sup> बक्द शक्किवरः छ्वाळ हत्ना नाछ ।

ব্ৰাহ্মণত্বা নাথকাৰ উপধাবাৰি। ৰাজাঃ পতিয়ী তন্তাৰ্জা অপল্ছি খাহা। প্রজাপতির বিরামন্ত্রমাণ: ক্রেগা দেবতা চতুর্বীহোমে বিনি-রোগ:। ওঁ সূর্য্য প্রারশ্চিত্তে খং? দেবানাং প্রারশ্চিত্তিরসি। বান্ধণখা নাথকাৰ উপধাবামি। যাক্তাঃ প্ৰিয়ী তন্তামকা অপকৃহি সাহা। প্রজাপতিশ্ববিরামন্ত্রামাণা অগ্নি-বায়ু-চক্র-সূর্য্যাশ্চতব্রো দেবভাশ্চতৃথীহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ অগ্নি-বায়-চন্দ্র-সূর্য্যাঃ প্রায়শ্চিত্তরো বুরং দেবানাং প্রার-**শ্চিত্তয়: স্থ। ত্রাক্ষণো বো নাথকাম উপধাবামি। যাস্তা: পভিন্নী তন্-**: স্তামতা অপহত খাহা। (৪৪) প্রজাপতির বিরামন্ত্রামাণোংগ্লিদে বিতা চতুর্থী-হোমে বিনিরোপ:। ওঁ অয়ে প্রায়ন্চিত্তে ছং দেবানাং প্রায়ন্চিত্তিরসি। ব্ৰাহ্মণন্থা নাথকাম উপধাবামি। যান্তা অপুত্ৰ্যা তনুন্তামন্তা অপশ্ৰহি স্বাহা। প্রজাপতিশ্ববিরামন্ত্রামাণো বায়ুদেবিতা চতুর্থীহোমে বিনিয়োগ:। ও' বায়ো প্রায়ন্চিত্তে তং দেবানাং প্রায়ন্চিত্তিরদি। ব্রাহ্মণতা নাথকাম উপ-ধাবামি। বাভা অপুত্র্যা তন্তামভা অপক্ষহি স্বাহা। প্রজাপতিশ্ববি-রামন্ত্রামাণশ্চন্তো দেবতা চতুর্থীহোমে বিনিরোগঃ। ও চক্র প্রায়শ্চিত্তে ছং দেবানাং প্রায়ন্চিত্তিরসি। বান্ধণন্থা নাথকাম উপধাবামি। বাল্লা অপুদ্রা ভনুন্তামতা অপজ্ঞহি স্বাহা। প্রজাপতিশ্ববিরামন্ত্রামাণঃ সুর্য্যো দেবতা চতুর্থীহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ স্থ্য প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তি-রসি। ব্রাহ্মণন্থা নাধকাম উপধাবামি। যাতা অপুদ্রা ত্ন্তামতা অপ-ছহি স্বাহা। প্রজাপতির বিরামন্ত্রামাণা ছার্র-বায়-চত্ত্র-সূর্য্যাশ্চতল্রো দেবতাশ্চতুর্বীহোমে বিনিয়োগঃ। ও অগ্নি-বায়ু-চক্র-স্র্যাঃ প্রায়শ্চিত্তরো যুরং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তয়ঃ স্থ। ত্রান্ধণো বো নাথকাম উপধাবামি। যাস্তা অপুদ্র্যা

<sup>(</sup>৪৪) পূর্ববিদ্যাখ্যানন, কিছ পতিনীতি পতিং হন্তি নারন্নতীতি পতিনীষ্দোবং বৈধব্যজনকং দোৰন্ অস্তাঃ ক্যান্নাঃ হে বানো! স্বমপ্তাহি অপনন্ন। পতিনী তন্বিতি সম্পান্নবচন এব তন্ধ্বস্তেনাস্তান্তনৌ দেহমধ্যে বা
পতিনী পাণিরেখা সন্তাব্যক্তে তাব্গন্তে বাক্যার্গ্নঃ। তদ্সা দোব্রপ্নীর
চির্জীবিদ্ধং গুণং পত্যুঃ কুরু।

ওন্তাৰতা অপহত খাহা। (৪৫) প্ৰকাণভিশ্ববিদ্যানৱামাণোংগ্লিকে বিভা চভুর্বীতোবে বিনিরোগ:। ওঁ অয়ে প্রায়শ্চিতে দ: দেবানাং প্রায়শ্চিতিরসি। প্ৰাৰণতা নাথকাম উপধাবামি। ভালা অপশব্যা তন্তামলা অপজহি খাছা। প্রজাপতির বিরামন্ত্রাধাণে। বাযুদে বিভা চতুর্থীহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ বারো প্রায়ন্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়ন্চিত্তির্দী। ব্রান্নণছা নাথকাম উপ-ধাবামি। ধাসা অপশব্যা তন্তামসা অপলহি সাহা। প্রজাপতিখবি রামন্ত্রানাণ্ডকো দেবতা চতুর্বীহোমে বিনিরোগ:। ওঁচন্দ্র প্রায়ডিতে খং দেবানাং প্রারন্ডিরিসি। ত্রান্ধণতা নাথকাম উপধাবামি। বাতা অপশব্যা তনুভাষতা অপজ্ঞহি ভাহা। প্রজাপতির বিরামন্ত্রমাণঃ সূর্ব্যো দেবতা চতুর্বীহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ সূর্য্য প্রায়ন্চিত্তে তং দেবানাং প্রায়ন্চিতিরসি। নাথকাম উপধাবামি। যাস্তা অপশব্যা তন্তামস্তা অপস্থহি খাহা। প্রজাপতিশ্ববিরামল্যমাণা অপ্লি-বায়্-চক্র-স্ব্যাশ্ভলো শ্চভূর্বীহোমে বিনিরোগ:। ওঁ অগ্নি-বায়্-চন্দ্র-স্ব্যা: প্রায়শ্চিভরো বৃষং দেবানাং ঁপ্রায়শ্চিন্তয়ঃ হ। বান্নণো বো নাথকাম উপধাবামি। বাক্তা অপশব্যা তন্-ন্তামস্তা অপহত স্বাহা। (৪৬) ততো বধুসহিত: পতিরুখার, অয়েরুব্রদেশং গত্বা, ক্রবলগ্নাজ্যমিশ্রোদকেন বধুং স্নাপরেও। তত আচারতো বধনা শিরসি সিশ্বভিলকং বস্ত্রঞ্চ দছাং। ততো ব্যস্তসমন্তমহাব্যবিভিহোমং (৪২ পৃঃ) কুখা, लारमन्यमागाः चुलाकाः निवरः कृषीमात्री एषा, नर्सनाधात्रगः भाष्णात्रन-हासानि-वामातवाशानास्त्र উनीछाः कर्य मयाशा कर्यकार्वविष्ठ्वास्त्राम मिक्नाः म्हार।

### ইতি ৰিবাহকৰ্ম সমাপ্তম্।

<sup>(:</sup>৪৫) অপুত্রা তন্রিতি পুত্রাদ্বং ইতি-বংপ্রতার:। ন পুত্রা অপুত্রা পুত্রত নিবিত্তং বা তন্ ন ভবতি তাং তন্মস্যা অপনর অসকণং তনোঃ অপ সারর।

<sup>(</sup> ৪৯) অপশব্যা ভদ্রিভি পর্মাং গ্রাথমহিধাদীমাং বা ভন্নিমিত্তং ন ভবভি, তেভায়ে বা হিচা বা ন ভবতি ভাষপুনাং ইতি।

## ভাথ গভাথানম্ \*

তত্র পত্ন্যা ঋতুস্পানাদূর্দ্ধং নিষেকদিবসে স্থগদ্ধি: স্থাতি-রাচান্ত আচারাৎ পূর্বাহে অভিবাচনাদিপূর্বকং বলীমার্কণ্ডেরপূজাং কুর্ব্যাৎ। তত্র সহল্ল: – বিষ্ণুরে । তৎসদভ অমৃকে মাসি অমৃকরাশিত্বে ভারুরে অমৃকে পকে অমুক্তিথো অমুক্গোত্রঃ শ্রী অমুক্দেবশর্ম। অমুক্গোত্রারাঃ মৎপত্নাঃ শ্ৰীষমুকদেব্যা: শুভগৰ্ভাধানকৰ্মণি ষটীমাৰ্কণ্ডের প্ৰীতিকাম: বিশিষ্টপুক্রোৎপত্তি-সহল্য, স্কং পঠিবা, প্রাত্ম্প উপবিশ্ব, জ্বলভদ্ধিমাসনভদ্ধিপ্রভৃতীনি চ কুরা, এব গল্প: ও গণেশায় নম:, এতৎ পুষ্পা: ও গণেশায় নম:, এব ধুপা: ও গণেশায় নম:, এষ দীপ: ওঁ গণেশায় নম:, এতলৈবেছা: ওঁ গণেশায় নম: —ইতি পঞ্চোপচারৈ: পুঞ্জিয়িছা, ওঁ গণেশায় নমঃ ইতি প্রণমেৎ। এবং ওঁ স্ব্রায় নমঃ, ওঁ বিষ্ণবে নম: ওঁ শিবায় নম:, ওঁ তুর্গারৈ নম:, ওঁ সর্বদেবতাভ্যো নম: ইভি প্রত্যেক: পুজ্বিত্ব প্রণমেৎ। ততঃ ষ্টাং ধ্যাত্ব। সংপূজ্য মার্কণ্ডেরমপিতবৈধন পূজ্বেৎ ততঃ স্থ্যাধ্যং দভাৎ-তত্র সংকল্প: বিষ্ণুরে । তৎসদত্ত অমুকেমাসি অমুকরাশিস্থে ভান্তরে অমুকপক্ষে অমুকতিথো অমুকগোত্র: এঅমুকদেবশর্মা অমুকগোত্রারাঃ শ্ৰীষ্মুকীদেব্যাঃ শুভগর্ভাধানকর্মণি শ্রীসূর্য্যপ্রীতিকামঃ সূর্য্যার্ঘাদানমহং করি-ৰ্যামি ততঃ স্থক্তং পঠিখা স্থ্যাং ধ্যায়েৎ'। 🤏 ব্ৰক্তামূকাসনমশেষগুণৈকসিদ্ধং ভাসুং সমস্ত জগতামধিপং ভঞ্জামি ৷ পল্বদ্বাভয়বরানু দধ্ড়ং করাজৈম পিক্য-মৌলিমরুণাঙ্গরুচিং ত্রিনেত্রম। ইতি ধ্যাত্বা এতৎ পান্তঃ ওঁ শ্রীসূর্য্যাত্র नयः, टेनमर्पाः ଓ औरुर्यात्र नयः, टेनमाठमनीतः ଓ औरुर्यात्र नयः, हेनः ञ्चानीयकनः 🤞 और्र्शाव नमः, रेनमाठमनीयः ও और्र्शाव नमः, এव ান্ধঃ ওঁ শ্রীস্থ্যায় নমঃ, এতৎ পুষ্পং ওঁ শ্রীস্থ্যায় নমঃ, এষ ধৃপঃ ওঁ <sup>্</sup>শ্রীস্র্য্যায় নম:, এব দীপ: ওঁ শ্রীস্র্য্যায় নম:, এতব্লৈবেছং **ওঁ শ্রী**স্র্য্যায় নম: —ইত্যাদি ক্রমেণ দশোপচারে: সংপূজ্য, বক্ষ্যমাণমল্লৈ: পদ্মীদহিত উত্থান্ন व्यर्गः मछा । ७ विश्वना विश्वत्यक्षी वित्यत्यानित्रत्यानिकः । नवशूरलार-সবে চার্ঘাং গৃহাণ দং দিবাকর॥ ওঁ সম্পদাকৃতিরাকাশে-হকোভরূপী **লগংপ্রভো। সাক্ষী দং সর্বভূ**তানাং গৃহাণার্ঘ্যং দিবাকর ॥ ওঁ ময়া চ **বং** 

সামগানাং গভাগানে নালীমুধ্আছং ন বিভিত্ন। নাগি গৌর্যাদিমাতৃকাপুলা
 কুশারাদয়ঃ।

कुछः कर्च সাম্প্रভः ফলহেতবে। ভিমিরছ মহাতেকো গৃহাণার্ঘ্য: দিবাকর 🗈 ওঁ নবপুন্দোৎসবে চার্ঘ্য: দদামি ভক্তিতৎপর:॥ সম্পদাং হেডু: কর্তা চ গৃহাণার্ঘ্য: দিবাকর॥ ওঁ নমন্তে তগবন্ স্ব্যা লোকসান্দিন্ বিভাবসো। পুত্রার্থী চ প্রপদ্মোহহং গৃহাণার্ঘ্যং দিবাকর ॥ 🗳 কমলাকান্ত দেবেশ সাক্ষী দ্বঞ্চ জগৎপতে। ভক্তত্তব প্রপদ্মোহহং গৃহাণার্ঘ্যং দিবাকর॥ ওঁ বর্গদীপ नमरछ र ज नमरछ विषेठां भन । नवभूरणां प्राप्त हार्चाः शृहां पर निवां कर ॥ ওঁ নমন্তে পদ্মিনীকান্ত সুখ-মোক-প্রদায়ক। ছায়াপতে জগংখামিন স্বৰ্গনীপ नत्मारस्य एक ॥ उँ विश्वाचा विश्ववसून्त वित्यतमा विश्ववमातनः । नवशूरमार-সবে চার্ঘ্যং গৃহাণ অং দিবাকর॥ ততঃ প্রণমেৎ। ও জবাকুমুম-সঙ্কাশং কাশ্রপেরং মহাত্যতিম। ধ্বাস্তারিং দর্মপাপন্নং প্রণতোহস্মি দিবাকরম্। ততো দক্ষিণাং দ্বা অচ্চিত্রাবধারণং কুর্যাৎ। সায়ংসন্ধ্যায়ামতীতায়াং পূর্ব্বাভিমুখোপবিষ্টায়া বধ্বাঃ পশ্চাৎ স্থিতা, স্করোপরিভাবেনাবতীর্ণেন দক্ষিণ-হত্তেন উপত্থ স্পুশন জপতি। প্রজাপতিঋষি সুষ্টুপ্ছনেদা বিষ্ণু-স্বষ্টু-প্রজাপতি-ধাতারো দেবতা গর্ভাধানে বিনিয়োগ:। ওঁ বিষ্ণুর্বোনিং কল্পমতু, ছাটা রূপাণি পিংষতু। আসিঞ্চু প্রজাপতিধাতা গর্ভং দধাতু তে ॥ (১) ততঃ পুনরণি উপত্থ স্পূণন্ জপতি। প্রজাপতিঋষিরছাই,প্ছনঃ সিনীবালী-সরস্বত্যশ্বিনো দেবতা গর্ভাধানে বিনিয়োগঃ। ও গর্ভং ধেহি সিনীবালি গর্জং ধেহি সরস্বতি। গর্জং তে অবিনৌ দেবাবাধত্তাং পুদরপ্রক্রে। (২) [ তত আচারাৎ উথিতায়া বধনান্তথৈর নাভিদেশে স্থবর্ণং ধুত্বা জপতি। ওঁ জীব-ৰৎসা ভব ত্বং হি স্থপুত্রোৎপত্তিহেতবে। তথা ত্বং ভব কল্যাণি অবিদ্বং

<sup>(</sup>১) হে বধু! তে তব বোনিং গর্ভবারণস্থানং বিষ্ণুব্যস্থাদেবঃ কল্পমতু প্রসবসম্পন্নাং করোত্। বটা দেবতাবিশেষঃ ক্ষপাণি পিংষতু প্রকাশমত্ব ধাতৃনামনেকার্থবাৎ পিষঃ প্রকাশনেহপি দৃশ্যতে, কিঞ্চ তামেব বোনিং প্রজাপতিঃ আদিঞ্চতু জীববৎসকাং করোতু, এতহক্তং ভবতি বাবস্থাত্তেণ বীজেন গর্ভোভবতি, ভাবমাত্রং বীজং প্রক্ষেপমতু, কিঞ্চ ধাতা স্থ্যঃ তে তব গর্ভং প্রার্থং দধাত্ব ধারমত্ব।

<sup>(</sup> २) অত্ত দৃষ্টেব্রমাবদ্যা দিনীবালী দা প্রার্থতে, হে দিনীবালি ! স্বন্ অদ্যাং বংলাং গর্ডং ধেহি ধারম, বন্ধাস্থদ্ অদ্যা অপনম। তথা হে দরস্থতি !

গর্ভধারিণী। ওঁ দীর্ঘায়বং বংশধরং পুদ্রং কারর স্মৃত্রতে। পুমাংসৌ বিজ্ঞান বক্লণৌ পুমাংসাবস্থিনাবৃজ্ঞো। পুমানগ্লিক বায়ক পুমান গর্ভন্তবোদরে। ইতি কুজ্রাপি অভিরিক্তঃ পাঠো দৃষ্ঠতে। ততঃ স্ম্বর্ণং পাতরেৎ বদি দক্ষিণে পততি তদা পুদ্রং, বদি বামে তদা কস্তাং জানীরাৎ ততোংচ্ছিদ্রাবধারণং কুত্বা পঞ্চগব্যং শোধরিত্বা বধৃং পাররেৎ। ততো ভার্যামৃপেরাং।

## ইতি গ<del>ৰ্ডা</del>ধানম্।

#### অথ পুংদবনম্

তৃতীয়ক্ত গর্ভমানক্রোপক্রমে ( দশমদিনাভ্যন্তরে ) জ্যোতিঃশান্ত্রোক্তকালে পুংসবনং ক্যর্য্ম। তিন্দ্রি প্রতিঃ কৃতস্থানঃ কৃতবৃদ্ধিশ্রাদ্ধঃ পতিকক্রনামান-মায়িং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষজপান্তাং কৃশগুকাং সমাপ্য কৃতস্থানাং বধ্ময়েঃ পশ্চিমায়ান্দিশি আত্মদক্ষিণে উদগগ্রেষ্ কুশেব্ প্রায়্থীম্পবেশ্য প্রকৃতকর্মানরন্তে প্রাদেশপ্রমাণাং স্বতাক্রাং সমিধং তৃষ্ণীময়ৌ হুবা মহাব্যাদ্ধতি-হোমং কুর্যাং। প্রজাপতিশ্বিগায়্ত্রীচ্ছনোহয়িদে বতা মহাব্যাদ্ধতিহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ ভৃং স্থাহা॥ প্রজাপতিশ্বিক্ষক্রন্তুণ বায়দে বতা মহাব্যাহ্বতিহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ ভ্রং স্থাহা। প্রজাপতিশ্বিরক্ষ্ট্রপ্র্লঃ স্র্ব্যা দেবতা মহাব্যাহ্বতিহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ স্থং স্থাহা। ততঃ পতিক্রপার বর্ণপূর্চদেশে স্থিতঃ বর্দ্কিণক্ষরং স্পৃষ্টা, অবতীর্ণেন দক্ষিণহন্তেনাব্যবহিতং নাভিদেশং স্প্রন্ জপতি। প্রজাপতিশ্বিরক্ষ্ট্রপ্রন্দেশ মিত্রাবক্রণাখ্যন্থিবার্বে দেবতাঃ প্ংস্বনে বিনিয়োগঃ। ওঁ প্রাংসৌ মিত্রাবর্ণা প্রমাংসাবিনাব্রেট। প্র্যানিয়িক বায়্ন্ত প্রাম্ গর্ভন্তবোদরে। (১)

শ্বঞ্চ অস্যাং বধ্বাং গর্ভং ধেহি ইতি প্রার্থ্যতে। কিঞ্চ অবিনৌ নাসত্যৌ গর্ভং পুত্রম্
অস্তাং আধন্তাং কুরুতাম্। কিন্তৃতো অবিনৌ ? পুদরপ্রকৌ পদ্মালালক্কতো
পুদরপ্রজাবিতিবিশেষণেন দেবানাং মাল্যধারণং নির্মেন প্রতিপাদিতম্।

<sup>( &</sup>gt; ) গর্ভদম্ভতৌ সত্যাং কণাচিৎ স্ত্রানপুংসকাবপি স্থাতাং অভস্তরিরাসার্থ
মাহ। অত্র যথাতথা অন্তীতি ক্রিরাপদমধ্যাহার্য্য। তেনারমর্থ: সম্পদ্যতে

— যথা পুমাংসৌ মিত্রাবর্জণৌ আদিত্যপ্রচেতসৌ, যথা পুমাংসৌ অমিনৌ
দেববৈছ্যৌ উভাবপি ষথা পুমানগ্রি: যথা পুমান্ বায়ু: তথা অরং গর্ভ: পুংজননহেতু: তবোদরে ভবন্ধিত্যর্থ:।

ইভ্যেকপুংস্বন্ম। অধাপরপুংস্ব্নার্থ: বটবুক্ত পূর্কোত্তরশাখায়াং ফল--ৰ্গণশালিনীং কৃষিভিরত্পহতাং বটওলাং ববানাং মাধাণাং বা ত্রিভিশ্বিভি ভ ড়িকৈ: সপ্তবারান সপ্তভিম হৈ: ক্রীণীরাৎ। সপ্তানাং মন্ত্রাণামব্যাদর: সাধা প্রজাপতিব বি: সোম-বরুণ-বমু-কুদ্রাদিত্য-মুক্তবিশ্বদেবা দেবতা স্ত্রোধন্ত কাক্রবণে বিনিয়োগ:। ওঁ বছাদি দৌমী দোমার তা রাজে পরি-ক্রীণামি। ইতি গুড়কত্রেরণ একং ক্রম্বন্য ও যগুসি বারুণী বরুণার তা রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুড়কত্তরেণ বিতীয়ং ক্রেরণম। এবং ওঁ ষ্মাস বস্থভাগ বস্থভাস্থা পরিক্রীণামি। ওঁ ষম্মদি ক্রেভো পরিক্রীণামি। ওঁ যগুন্তাদিত্যেভ্য আদিত্যেভার। পরি-ক্ৰীণামি। ওঁ ৰদ্যসি মক্দভো মক্তান্ত। পরিক্রীণামি। ওঁ ষম্ভসি বিশেভ্যো দেবেভ্যো দেবেভান্তা পরিক্রীণামি। (২) ইতি প্রত্যেকং গুড়ক-ত্তবেগ ক্রমণং কার্যায়। ততঃ ক্রীতাং বটগুলামনেন মন্ত্রেণ বুলাদাহরেও। श्रिकां शिक्षां विद्यावश्रद्धा (मवं का क्रार्ट्धाश्रक्त विनिद्धार्थः । ७ अवश्रद्धाः স্থানদো ভূমা অস্তাং বীর্ঘ্যং সমাধন্ত ইরং ( বটওলা ) কর্ম করিয়তি। (৩) ততত্তাং তৃণবেষ্টিতামন্তরীক্ষেণানীয়ান্তরীক্ষে স্থাপয়েং। ততঃ কৃতশোভন নামেংথকতরতঃ প্রকানিত্রনিলায়াং ব্রমচারী কুমারী গর্ভবতী শ্রতশাধ্যায়-শীলো বান্ধণো বা আচারতো নীহারজলেনাবৃত্তলোষ্ট্রে পুন: পুন: বটওলাং পেবরেও। ততোহয়ে: পশ্চিমত উত্তরাগ্রের পশ্চিমাভিমুখীং বৃধুং পূর্ব্বাদিদিগবনতমন্তকাং কৃত্বা পৃঠদেশে স্থিতঃ পতিদ কিণপাণেরস্থুটোপ ক্ৰিষ্ঠাভ্যাং বস্ত্ৰবদ্ধাং পেষিত্ৰটশুক্ষাং গৃহীত্ব৷ গৰ্ভৰত্যা দক্ষিণনাসাবিৰৱে

<sup>(</sup>২) হে ভগোধতকে । বং যদি সৌনী সোমদেবতাকা অসি ভবসি, তদা সোমার রাজে বা বাং পরিক্রাণামি, তথা ষছসি বারুণীত্যাদি তথা বদি বং বহুভ্যো বহুঃ বহুদেবতাকা অসি ভদা বহুভ্যঃ বদবে বাং পরিক্রীণামি। বহুভ্য ইতি ছাল্পবাং একরে বহুবৃদ্। ভিঙাংতিভো ভবস্তীতি প্রথমৈকবচনং চতুর্থীবহুবচনে।

<sup>(</sup>৩) হে ওবধয়: ! ধ্বং ক্সমনস: অপ্রসরচেতস: ভূতা জন্তা: ক্রীতারাং বট শুলারাং বীর্বাং সামর্থাং সমাধত্ত অপ্রস্ত । বতঃ ইয়ং বটগুলা পুংসবনং কর্ম করিবাতি ।

বটওলারদং নিক্ষিপেদনেন মন্ত্রো—প্রকাপতিখাবিরন্তর প্ ছব্দোংশীজন বৃহস্পতরো দেবতা সত্যোধ-ওলারসদানে বিনিরোগ:। ও পুমানছি: পুমানিজঃ পুমান দেবো বৃহস্পতি:। পুমাংসং পূতং বিকাশ তং পুমানছ জারতাম্। (৪) ততো ব্যক্তসমন্তরভারতিহোমং (৪২ পৃঃ) করা প্রাদেশপ্রমাণাং স্বতাকাং সমিধং তৃকীমন্ত্রী হর্বা শাট্যারনহোমাদিবামদেবাপানাল্কং কর্ম সমাণ্য কর্মনার্যিভ্রাহ্মণার দক্ষিণাং দ্যাদিতি। ইত্যপরপুংস্বনং কর্ম সমাধ্য।

## অৰ সীমস্ভোলয়নম্

পুংসবনোক্তবারতিথিনক্ষত্রেষু প্রথমগর্ভক্ত চতুর্বে বঠে মন্টমে বা মাসি নীমক্তোময়নং কর্ত্তব্যম্। তত্ত্র গর্ভাধানপুংসবনসীমক্তোময়নকর্মণাং পৌর্ব্বাপর্য্য नित्रमां रिवार वंशाकारण गंधांभानशुः नवनकर्यं ने करण जा नीमरखा-वत्रमिन এर उৎकार्गाङ्किमनिभिन्न भौगात्रमरश्यक्रभः श्राविकः कृषा পশ্চাৎ গর্ভাধানপুংসবনকর্মণী সমাপ্য সীমস্তোল্লয়নং কর্ত্তব্যমিতি। ( এবমস্ত-জাপি বোধ্যম্)। তত্ত্ব প্রথমং প্রাতঃক্বতন্দানঃ ক্বতবৃদ্ধিশ্রাদ্ধঃ পতিম দল-নামানমগ্নিং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষরপান্তাং কুণ্ডিকাং সমাপ্য ওমভেত্যাদি এতমাদীয়পদ্মা গর্ভাধানপুংসবনকর্মণো র্বধাকালমকরণজ্বনিতদোরপ্রশ্বনার भागात्रनत्हानम्हः कृत्वीत्र। हेन्छि महन्नः कृषा भागात्रनत्हामः कृष्णा । ৰথোক্তগৰ্ডধানপুংসবনকৰ্মণী সমাপ্য প্ৰাত: কৃতস্নানাং পশ্চিমায়ান্দিশি স্বদক্ষিণত উদগগ্রেষ্ কুশেষ্ প্রাধ্বধীমূপবেষ্ঠ প্রকৃতকর্মারস্কে श्रादिम श्रमां । प्रशासन क्षीय क्षीय क्षा महावाक जिल्हा विकास कर्षा । ষথা প্ৰজাপতিশ্ববিগায়শ্ৰীচ্ছলোহগ্নিদেবিতা মহাব্যান্ততিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ভৃ: স্বাহা। প্রজাপতি খবিকৃষ্টিকৃছ্নোবায়ুদেবিতা মহাব্যাহ্রতিহোমে] বিনিয়োগ:। ওঁ ভূব: স্বাহা। প্রজাপতিশ্বিরস্টু প্ছন্দ: স্র্ব্যো দেবতা মহা-ব্যাহ্বতিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ স্ব: স্বাহা। ততো বধুপুঠনেশে স্থিত: পূর্বাভিষ্

<sup>(</sup>৪) জ্ঞাপি বথা তথেত্যধ্যাহার্যন্। বরদোনিত্যসম্বর্ধাং। হে বধু ! বথা পুমান্থিঃ, পুমানিজঃ, বথা পুমান্দেরঃ বৃহস্পতিঃ তথা তজ্ঞপপ্রভাববিত্তব বৃদ্দিনদৃশং পুত্রং বিকাশ প্রাপৃতি, কিঞ্চ তমন্ত ভাতত পুত্রভা পশ্চান্দ্রো২পি দ্বান্থকঃ পুত্রভাব কায়তান্ উৎপ্রভামিতি। তত্ত বঠার্থে বিতীয়া,
অন্তঃ পশ্চান্থিঃ।

পতিবেকবৃত্তলগ্নহিতং পকোভূহরফলবুগলং পট্ট-হজাদিগ্রথিতম্ আচারপ্রাপ্ত-স্থ্যণাদিঘটিভবাস্থদেবপাদযুগলং যবপ্রভিক্তভিচক্রসহিতং রক্ষার্থো পরুপ্রনিষ-সর্বপভল্লাভকবচাদ্যাপেতং গৃহীত্বা—প্রজাপতিশ্বিরস্টুপ্ছন্দঃ জ্রীদেবতা উড়ুম্বকলবুগলবন্ধনে বিনিয়োগ:। ও অৱমুজ্জাবতো বৃক্ষ উৰ্জ্জীব ফলিনী ভব। পৰ্বং বনস্পতেন্স্ বা হুবা চ স্মতাং রমি:।(১) অনেন মন্ত্রেণ বধ্কঠে দভাৎ। ততো দৰ্ভপিল্লণীত্ৰয়ং \* গৃহীত্বা—প্ৰজাপতিশ্ববিৰ্গায়শ্ৰীচ্ছন্দো২গ্নিদে বিতা দর্ভপিঞ্গলীভিঃ সীমন্তোন্নয়নে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূ:। ইতি দর্ভপিঞ্গলীডিঃ বধু-কেশাস্তাদারভ্য সীমন্তমুরীয় তান্তবৈব স্থাপরেৎ ৷ ততোহপরদর্ভপিঞ্গীতারং গৃহীত্বা প্ৰজাপতিশ্ব বিক্ষিক্ছন্দো বায়ুদে বতা দৰ্ভপিল্পলীভি: সীমস্তোলমনে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূব:। ইতি সীমস্তমুমীয় তত্তপৈব স্থাপয়েৎ। পুনন্তবৈব দর্ভপিঞ্লনীত্রয়ং গৃহীত্বা প্রজাপতিশ্বিরস্টুপ্ছন্দঃ সংগোদেবতা দর্ভ-পিঞ্চলীভি: সীমস্তোনন্তনে বিনিয়োগ:। ওঁ খ:। ইতি সীমন্তমুনীর তত্ত-ेखिर ञ्चानरत्रः। **मर्जनिश्रमीनरामन आर्मनश्रमानः क्**मनखदत्रः क्मांखरत्रन বেষ্টিভমুচ্যতে। ততঃ শরং গৃহীবা প্রজাপতিশ্বিরিষ্টুপ্ ছলঃ স্বী দেবতা শরেণ नीमत्सानवत्न विनिद्धांगः। ७ त्वनाहित्सः नीमानः नवि श्रवांशिवर्षे इत्य সৌভগার তেনাংহমকৈ সীমানং নরামি প্রজামকৈ জরদটিং রুণোনি ! (২) ইতি তথৈব কেশাস্তাদারভ্য শরেণ সীমন্তমুরীয় শরস্তবৈত্ব স্থাপয়েৎ। ততঃ

<sup>(</sup>১) হে কল্যাণি! অরং বৃক্ষঃ উড়ুম্বরাণ্যঃ উক্ষবিতঃ উর্জ্বনান্ প্রভ্ত-ফলস্কল প্রশন্ততরোঃ উর্জ্বাবতঃ তৎসকাশাদিপি দং উর্জ্কাবি উড়্ম্বরীব ফলিনী ভব ইত্যর্থং। উড়্ম্বরী যাবৎ ফলশালিনী তাবৎ পুদ্রিণী ভবেত্যর্থং। কিঞ্চ হে বনস্পতে! উড়্ম্বর! অল্যাং প্রিরাং ম্বরা রিয়ঃ পুদ্রধনং ভূরতাং উৎপাল্ততাং, কিমিব ? পর্ণমিব। কিং কৃষা ? মুলা মুলা মুল্ প্রেরণার্থঃ প্রেরণং কৃষা কৃষা ইত্যর্থঃ। এতহক্তং ভবতি—মুণা উড়্ম্বরো বৃক্ষো বহুফ্লপর্ণো ভবতি তথা বধুরপি বহুপুদ্রবতী ভবতু ইতি প্রার্থনা। চকারঃ প্রণার্থঃ।

<sup>(</sup>২) যেন বীরতরেণ শরশ্রেচেন প্রজাপতিঃ ধাতা জগৎশ্রষ্টা আহিছেঃ দেবযাতুঃ সীমানং সীমন্তং নরতি নীতবান্। কিমর্থং—মহতে মহস্বার, সৌভগার স্থভগত্বার তেন শরেণাহং ভর্তা অস্ত্রৈ অস্ত্রাঃ বধ্বাঃ

<sup>\*</sup> शिश्रुणी देखि वा किंदर शार्थः।

সীমানং সীমন্তং নরামি করোমি, কিঞ্চাল্যৈ অন্যাং প্রিরাং প্রকাং পুত্র-পৌত্রাদিকাং জরদষ্টিং জরাপর্য্যন্তং চিরকালজীবিনীং কুণোমি করোমি। আহং ভর্ত্তেতি সম্বন্ধঃ। সৌভগারেতিবণ্, স্মৃভগারেতি বা পাঠঃ, অসৈ্য অন্যা ইত্যর্থে সন্ত্র্থাবিভক্তি ব্যত্যয়াৎ।

- (৩) রাকা পৌর্ণমাসী তাং রাকামহং ভর্তা হবে আহ্বয়ামি। কিন্তৃতাং তাং ? স্কহবাং ক্থেনাহ্তাং শোভানাকাং বা। কয়। ? স্বইতী স্তবেন, স্ইতীশব্দাৎ তৃতীয়ৈকবচনত স্থপাংস্বর্ ক্ ইতি বিভক্তিলুক্। আহ্বানে প্রয়োজনমাহ
  শ্ণোতৃ ইতি। সা রাকা কিন্তৃতা ? স্থভগা মনোহরা নোহস্মাকং বচঃ শৃণোতৃ,
  ন কেবলং শৃণোতৃ বোধতৃ অবধারয়তৃ। কেন ? আনা আআনা আআদের্বা লুক্
  ইত্যাকারলোপঃ স্বয়মেব ইত্যর্থঃ। সা এব ভূয়ঃ প্রার্থতে, অয়ঃস্চ্যা সংঘট্টনশীলয়া, প্না কিংবিশিইয়া ? অফ্ছিলমানয়া সা রাকেতি সম্বয়ঃ। কিঞ্
  সৈব বীয়ং প্রাং দদাতৃ। কীদৃশং পুরাং ? শতদায়ম্থ্যং শতদায়াঃ বহুদানাঃ
  প্রভ্তদাতারঃ তেষাং প্রধানম্, ঝ্রেদে তু শতদায়ম্থ্যং ইতি পাঠঃ। দদাতি
  দায়ুঃ ওণাদিক উঃ। অয় ইতি আদ্বো ক্রারত ব্যত্রেন ব্কারঃ।
- (৪) হে রাকে! বান্তব স্থমতয়: শোভনা বৃদ্ধয়:। কিন্তৃতাঃ ? স্থপেশসঃ
  স্থানা নির্মানঃ, কিঞ্চ বাভিঃ মতিভিদিখান্ বজ্ঞানঃ সততং বজাত বজান্
  ভব্মে বান্তবে বজ্ঞানায় বস্থনি ধনানি দদাসি প্রযক্ষ্যি ভাভিঃ স্থমতিভিকপলক্ষিতানাং নো অস্থাকম্ উপ স্থীপে অভ বর্ত্তমানে অহনি আগহি আগছে।
  কিন্তৃতা স্তী ? স্থমনাঃ প্রসন্ধিতা। হে স্ভব্গ! স্থাতি কর্মণান্ তথাবিধাং

কেশান্তাদারত্য শলন্যা সামন্তম্নীর শলনীং তত্যৈব স্থাপরেও। তত্তবিশত্ত্বমাবলাধিতং রসররপং স্থালীপাক্ম্পরিদন্তম্বতক্রবং পতির ধ্নশান্তন্ পৃদ্ধি।
প্রজ্ঞাপতিথাবিঃ স্থা দেবতা বধ্প্রাপ্ল বিনিয়োগঃ। ওঁ কিং পশ্চিন ? ততঃ পতিঃ
স্থালীপাকং পশ্চন্তীং বধ্ং পাঠয়তি। প্রজাপতিথাবিঃ স্থা দেবতা স্থালীপাকবীক্ষণে বিনিরোগঃ। ওঁ প্রজাং পশ্ন্ সৌভাগ্যং মহং দীর্ঘান্তং পত্যঃ। (৫)
ততো মহাব্যাহ্তিহোমং (৪২ পঃ) রুদ্ধা সমিৎপ্রক্ষেপান্তং কর্ম সমাপ্য
উদীচাং শাট্যায়নহোমাদিবামদেব্যগানান্তং কর্ম নির্মন্ত্য কর্মকারমিত্বাক্ষণার দক্ষিণাং দন্তাং। ততেগংবিধবাঃ পুত্রবত্যো নার্য্যে বেল্ডাম্থাপ্য
বধ্ং কলসোদকাভূক্ষণাদিকং মঙ্গলয়ত্যং ক্র্য্যঃ। ততত্তং রুদরং গর্ভবতী
ভূজীত। ইতি সীমন্তোলয়নম্।

#### অথ সোষ্যস্তী-ছোমঃ

অথাসমপ্রবায়া বংবাঃ স্থপ্রস্বার্থং দোব্যস্তীহোমঃ কর্ত্ব্যঃ। তত্র ক্বতআনঃ পতিঃ ওঁ অভেত্যানি অমৃকগোত্রায়া অমৃকাভিধানায়া মনীয়পদ্মাঃ স্থপ্রস্বক্ষঃ কেরা পূর্ববিম্নস্থানামানমিয়িং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষরপাস্তাং কুণপ্রিকাং সমাপ্য প্রকৃতকর্মারক্তে প্রাদেশপ্রমাণাং মৃত্যকাং সমিধং তৃষ্ণীময়ৌ হ্ব। মহাব্যাহ্তিহোমং কুর্যাৎ। প্রজাপতিশ্বির্গায়লীক্ষন্দোহয়ির্দেবতা মহাব্যাহ্তিহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ ভ্ঃ
আহা। প্রজাপতিশ্বিক্ষিক্ছন্দো বায়্র্দেবতা মহাব্যাহ্তিহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ ভ্বঃ আহা। প্রশাপতিশ্বির্ম্ইপুণ্ ছনঃ স্বর্যা দেবতা

ধনধান্তসমৃদ্ধিং দদানা রালা দানে ইত্যন্ত্রাৎ পরস্ত শপোবছলং ছন্দসীতি লুখাবিতি দিবঁচনং ব্যত্যয়েনাত্মনেপদম্শান চ। দাওৱে ইতি দাশৃ দানে দাখান্ সাত্মান্ ইত্যাদি নিপাতনাৎ চতুর্থ্যেকবচনে, আগহীতি ছান্দসন্থাৎ শপো লুক্ অনুনাসিকলোপশ্চ হেলোপো ন ভবতীতি।

<sup>(</sup>৫) হে কল্যাণকারিণি ! অন্ধিন স্থানীপাকে অক্সমন্ধিতেন প্রকাং প্রপোত্রসন্থানলকণাং পশ্ন গোহস্তামন্থিয়াদিকান্ মহাং মম পড়াঃ দীর্ঘায়ৃষ্টাং বহুকালজীবিদ্ধা সৌভাগ্যমাদ্ধনঃ। কিং পশ্রসি দ্বিতি প্রশান্তরং অভিহিতা দতী ভর্তারম্ভরনাহ ভবত্তকং স্কাং পশ্রামি। নহ্নিতি ম্যার্মে চতুর্বী বক্তব্যেতি চতুর্বী।

ষহাব্যান্থতিহোমে বিনিরোগ: । ওঁ খা খাছা। ওতঃ প্রজাপতিশ্বিঃ
পঙ্কিশ্ছলাঃ সংরাধনী দেবতা সোধান্তীহোমে বিনিরোগ:। ওঁ বা তিরালী
নিশ্বভাতে আহং বিধরণীতি তাং ডাং ঘুততা ধাররা ঘলে সংরাধনীমহং
সংরাধতৈ দেব্যৈ দেব্রৈ খাহা। (১) প্রজাপতিশ্ববির্মন্তুপ্ ছলো বিপশ্চিক্ষেত্রতা গোবান্তীহোমে বিনিরোগ:। ওঁ বিপশ্চিৎ প্রভ্রমতরৎ তদ্ধাতা
প্নরাবহৎ পরেহি ডং বিপশ্চিৎ প্রানরং জনিষ্যতেহসৌ নাম খাহা। (১)
আত্রাদাবিতি সর্বনামস্থানে ভবিষাৎপ্রতা হৃদর্বনিহিতং নাম কর্ত্তবাম্।
তেনামুকশর্মানাম খাহা ইতি হোমং কুর্যাৎ। তত্রো মহাব্যাহ্বতিহোমং
ক্ষা (০২ পৃঃ) প্রাদেশপ্রমাণাং ঘুতাক্রদমিবং তৃঞ্জীমগ্রৌ ছ্বা প্রকৃতকর্মান্তে
উদীচ্যং শাট্যারনহোমাদিবামদেব্যগানান্তং কর্ম্ম সমাপ্য কর্মকার্রিভ্রান্ধণারু
দক্ষিণাং দক্ষাৎ। ইতি।

#### অথ জাতকর্ম

পুত্রে জাতে পিতা নাডীং মা কৃত্তত গুন্যঞ্চ মা দত্তেতাভিধার কৃত-ম্বানঃ কৃতবৃদ্ধিশ্রাদ্ধঃ প্রাকালিতশিলায়াং ব্রহ্মচারিণ৷ কুমার্য্যা গর্ভবত্যা বা

<sup>(</sup>১) যা দেবতা শুতে কর্মণি ক্রিয়মাণে বিধরণী শুভফলবিঘাতকারিণী ইত্যেবং মক্সমানা ভিরশ্চী বাঞ্চিতফলবিঘাতকর্ত্রী নিপগুত্তে প্রভবতি তাং দাং দেবতামহং ভ্রত্তা যজে প্রস্থামি। কীদৃশীং দাং ? সংরাধনীং তব ইটফলস্তা সম্যক্সাধনীং দাগ্রীং। করা যজে ? মৃতস্ত ধার্মা আর্জাহত্যা তত্তৈ দেব্যৈ সংরাধকৈ দেট্রো, দিশ্ অতিসর্জনে অতিসর্জনঞ্চ দানম্ ইটফলদাত্রৈ ইত্যর্থং। সংরাধকৈ ইত্যাদিয়ু পূজার্থে চতুর্থী।

<sup>(</sup>২) বিপশ্চিৎ দেবতাবিশেষঃ শিশ্নাং পূচ্ছং শিশ্পমত্বৎ হতবান্ হগ্রহোর্ডশ্বন্দির ইতি হকারস্থ তকারঃ কিন্তু পূচ্চ্যেতদ্ বিপশ্চিদেরতাবিশেরেণ হতং
তৎপূচ্ছং থাতা প্রস্থাপতিঃ প্নরাহরৎ আনীতবান্, বতোহতঃ হে বিপশ্চিৎ !
তং পরঃ শ্রেষ্ঠঃ তদেহি আগচ্ছ অস্মিন্ কর্মণি সরিহিতো তব। বেন স্বদ্ধিঠানেন অরং প্যান্ জনিষ্যতে উৎপংস্ততে অসৌ নামেতি দেবদন্তাভিধানঃ,
পূচ্ছশন্দেন শিশ্পভিধীয়তে শিশ্পনাক্লয়োঃ পূচ্ছ্যিত্যাভিধানিকাঃ। পরে হীতি
পরা শক্ষাকারলোগঃ ছাল্পসভাৎ। সোব্যন্তীহোমো গর্ভাক্তভাক্ষ

अंख्यांशा बरीतन बाक्तरान वा अनाव खाना हुन शिर्छ। बोहिरती पिकंगश्छानामिकात्रृष्ठां छा: शृशोष।-- প্रजाপতি अवित्रवः एवछ। बौहिबवहूर्यन **জিহ্বামার্জ**নে विनिद्यांशः। • ĕ हेश्या (खल्यक-মিনমায়্রিদমমৃতম্। (১) ইতি মজেণ কুমারত জিহ্নাং পরিমাষ্টি'। তত-खरेंथर ऋरार्पन चुङः गृशीषा-- श्रकांशिक्यि वि-त्रब्रहे भ् इत्का मिळां दक्ष्णां ग्रा-ৰিনো দেবতাঃ কুমারক্ত সর্পি:প্রাশনে বিনিয়োগ:। ওঁ মেধাত্তে মিত্রাব-कर्णी स्थामित्रिर्मशंकु एक। स्थारिक अविर्त्तो स्वावाधकाः भूकत्रवास्को चारा। † (२) हेि मदद्यग क्यांत्रच मृत्य चुडः मनाजि। भूनत्रिन जरेश्व হ্ববর্ণেন স্বতং গৃহীত্ব।—প্রজাপতিশ্ববির্গায়ত্রীচ্ছন্দ ইল্রে। দেবতা কুমারক্ত সর্পিঃপ্রাশনে বিনিয়োগঃ। ওঁ স্বস্পতিমভূতং প্রিয়মিক্সন্ত কাষ্যং। মেধা-मन्नानियः चाहा। (७) हेि महत्त्वन कुमात्रच मृह्य चुछः ननािछ। নাভিং ক্সত ন্তনঞ্প্রতিধন্তেতি পিতাক্রয়াৎ। স্নানঞ্চ পুন: পিতান কুর্যাৎ। ইতি জাতকৰ্ম সমাপ্তম।

<sup>(</sup>১) হে বালক ! ইনং প্রত্যক্ষমন্ন ইন্নাজ্ঞা প্রজ্ঞা আ সমস্তাৎকারেণ জ্ঞানহেতৃত্বাৎ তথা ইন্নায়ং প্রাণকারণন্ ইন্নমৃতং অনেন বিধিনোপ-ভূজ্যমানন্ অমরণধর্মি তবান্ধিতি বাক্যশেষ:।

<sup>(</sup>২) হে বালক! মিত্রাবর্রণৌ দেবতাবিশেষৌ তে তব মেধাং জ্ঞান-বিষরাং শক্তিম্ আগত্তাং, তথা অখিনৌ দেবৌ, কিন্তৃতৌ ? পুদর্জ্রজৌ পদ্দ-মালালয়তৌ তে তব মেধামাধত্তাং স্থাপরতাং, তথা তে তব মেধামগ্লিঃ দধাতু কারস্তৃ।

<sup>(</sup>০) সদসং সভারাং পতিং মুধ্যম্ অভ্তং আশ্র্যারূপং প্রিরম্ ইক্সন্ত বল্লভং কাষ্যং অভীষ্টসম্পাদকং মেধাং ধীধারণাবতী মেধা তল্লাঃ সনিং দাতারং অরাচার্যামহম্ অ্যাসিবং শরণত্বেন অনেনাসে কুমারার মেধাং দভাদিত্যা-শংসাবাক্যার্থঃ। সনিমিতি ছন্দি বনসনরক্ষিমধামিতীন্। অ্যাসিবং যাতেলুঙি সিপ্।

বজুই চছলো নান্তি।
 কুত্রচিৎ বাহাপাঠো নান্তি।

#### জ্বাথ নামকরণম্

 বছপি "জননাদশরাত্রে বাুটেই শতরাত্রে সংবৎসরে বা নামধেয়-क्रवर्ग्य देखि गृश्यहत्मन धकान्याद्य नामक्रवरः श्रीशः छथान्याहात्राद बानगार्ट, এकाधिकगठतार्व, बनानिरन वा नामकत्रणः कर्खवाम्। छव প্রথমং কৃতস্থানঃ কৃতবৃদ্ধিখাদ্ধঃ পিতা † উদগত্রেবু দর্ভেৰু প্রায়ুথ উপবিখ্য, পার্থিবনামানমন্ত্রিং সংস্থাপ্য, বিরূপাক্ষপান্তাং কুশণ্ডিকাং সমাপ্য প্রকৃত-कचीत्रत्व थारामथमानाः चुकाकाः मिषः कृकोमत्त्री हवा, महावाजितहामः কুৰ্য্যাৎ। যথা—প্ৰজ্ঞাপতিশ্ববিগান্ধতীচ্ছন্দোহগ্নিদেবতা মহাব্যাহ্নতিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূ: স্বাহা। প্রকাপতি (বিক্ঞিক্ছন্দো বায়্দেবতা মহা-ব্যাহ্তিহোবে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূব: বাহা। প্রকাপতিখ বিরম্প্র ক্ স্ব্যো দেবতা মহাব্যাহ্রতিহোমে বিনিয়োগ:। ও ব: খাহা। ততো মাতা ভচিনা বল্পেণ কুমারমাচ্ছাদ্য, ভর্ত্ত্র্দক্ষিণে স্থিত্বা, কুমার-মুত্তরশিরসং ভর্ত্তে সমর্পরতি। ততো ভর্তঃ পৃষ্ঠদেশেন উত্তরস্থাং দিশি গড়া, ভর্জ্বামপার্খে উত্তরাগ্রেষ্ কুশেষু প্রাল্ম্থী উপবিশতি। ত তঃ পিতা "ওঁ প্রজাপতয়ে স্বাহা" ইতি সক্লাজ্যাছতিং ছত্বা, কুমারস্ত জন্মতিথি-জন্মতিথিদেবতাহোমং 🛊 জন্ম-নক্ষত্ৰক্মনক্ষত্ৰদেবতাহোমঞ্চ কুৰ্য্যাৎ। যদি প্ৰতিপদি জাতন্তদা—ওঁ প্ৰতিপদে স্বাহা, ওঁ ব্ৰহ্মণে স্বাহা। যদি দিতীয়ায়াং তদা—ওঁ দিতীয়ায়ৈ স্বাহা, ওঁ অড্রে স্বাহা। যদি তৃতীয়ারাং তদা—ওঁ তৃতীয়ারৈ স্বাহা, ওঁ বিষ্ণবে

<sup>সংকারা অভিপত্যেরন্ স্কালাচেৎ কথকন। হবৈতদেব কুর্বীত বেতুপনরনাদধঃ।
এতদিতি সহাব্যাহাতিহোমাদিপ্রার্শিত্রন্ ইতার্থঃ। ইতি সার্ত্রবানেন সংসারকর্মণাং মুধ্যকাণাভিক্রমে গৌণকালে প্ররোগকালে আদৌ সহাব্যাহাতিহোমস্ত প্রারশিত্রপক্ত কর্ত্রবাতা
প্রতীয়তো তথা চ প্রারশিতরহোমার্থ সক্ষ্যা অবে ঘং বিধুনামানীতি নাম কুছা আবাহ্য
সম্পূলা তত্র সনিধং প্রক্রিপা তিত্তির্মহাবাহাতিভিহু থা ব্যস্তসমস্তাভিঃ প্রারশিতরস্বাশতক্র
আহতীহু ঘা পুন্তিত্তিম হাব্যাহাতিভিহু থা স্বিৎপ্রক্রেপেণ প্রারশিতরং কুর্যাৎ। ইতি
ক্রোরত্বস্থা</sup> 

<sup>া</sup> অধ বন্তৎ করিবান পশ্চাদয়েরদগগ্রের দভেব্ প্রাঙ্পবিশতি ইতি গোভিলস্ত্রন্। অত ব ইতানেন কল্চিৎ পিতৃরস্তোহণি সংস্কৃতভাতাদিঃ বোধ্যঃ অবেতি জাতগৃহনিয়মঃ, তথাচ বক্ষাঃ তর্মধ্যে জুহরাৎ, যামিন জাতঃ স্থাৎ।

<sup>‡</sup> जवाहि हत्मान्नशिविष्ठम्—नामत्यत्य मूनिवस्निनात्। वहवर मन्। वक्नान्त निज्ञा स्वर्ध वहेवाजिबिस्तवज्ञाः। जवा—कात्म्वताद्धश्य मनीत्वः विनावाद्धः जरेववतः। कावाजाद्धः विनिष्ठाद्धः कविष्ठाद्धः करेववतः। क्वात्म्वताद्धः विवर्षक्षः विवर्षक्षयनिष्ठीक्वात्म्वत्यः हेज्योज्य त्रेतेनः कि जिबिस्तवज्ञानाः नक्ष्वस्वज्ञानाः विरुव वहस्य ह अस्ति।
क्रात्मक्षयाः।

चाहा। यनि हर्जुाः जना— ଓ हर्जुर्जा चाहा, अ वसाम चाहा। वनि शक्ष्माः তদা—উ পঞ্চীয় স্বাহা, ও সোমার স্বাহা। । যদি বট্ট্যাং তদা—ও বট্ট্য স্বাহা, ও কুষারার ভাহা। বদি সপ্তম্যাং তদা—ও সপ্তম্যে ভাহা, ও মুনিভ্যঃ थांहा । यति ष्यष्टेम्हाः छता—७ ष्यष्टेम्ह याहा, ७ तक्ष्याः याहा । यति नत्याः তদ।— ও নবলৈয় चाहा, ও পিশাচেভ্যঃ चाहा। विक नगशाः छना— ও क्यटेमा স্বাহা, ওঁ ধর্মায় স্বাহা। বদি একাদখাং ভদা—ওঁ একাদলৈ স্বাহা, ওঁ কল্লেডাঃ স্থাহা। যদি ঘাদক্ষাং তদা—ওঁ বাদকৈ স্থাহা, ওঁ বায়বে স্থাহা। যদি অয়োদক্ষাং তদ।—ওঁ এমোদৰৈ স্বাহা, ওঁ কামায় স্বাহা। বলি চতুৰ্দ্মপ্ৰাং তদ।—ওঁ চতুৰ্দক্তৈ খাহা, ও বংকভাঃ খাহা। যদি অমাবভারাং তদা—ও অমাবভারে খাহা, ও পিতৃত্য: স্বাহা। বদি পৌৰ্থমান্যাং তদা—ও পৌৰ্থমালৈ স্বাহা, ও বিবেজ্যো দেবেভ্যঃ স্বাহা। বদি ক্তিকারাং জাতস্তদা—ওঁ কৃত্তিকাভ্যঃ স্বাহা, ওঁ আগ্নরে স্বাহা। যদি রোহিণ্যাং তদা—ওঁ রোহিণীভ্যঃ স্বাহা, ওঁ প্রকাপতয়ে খাহা। যদি মুগশিরসি তদা—ওঁ মুগশিরসে খাহা, ওঁ সোমার খাহা। वित আর্ক্রারাং তদা—ওঁ আর্ক্রাইর স্বাহা, ওঁ রুদ্রার স্বাহা। বিন পুনর্কনৌ তদা—ও পুনর্বসবে স্বাহা, ওঁ অদিতনে স্বাহা। বদি প্যারাং তদা—ওঁ প্রারৈ খাহা, ওঁ বৃহস্পতরে খাহা। বদি অপ্লেষাগ্নাং তদা—ওঁ অপ্লেষাভ্যঃ খাহা ওঁ সর্পেভ্যঃ স্বাহা। বদি মুবারাং তদা—ও মুবাভ্যঃ স্বাহা, ওঁ পিতৃভ্যঃ স্বাহা। ৰদি পূৰ্বকৰকাং তদা—ওঁ পূৰ্বকৰনীভ্যাং স্বাহা, ওঁভগার স্বাহা। উত্তরফরতাং তদা—ওঁ উত্তরফরনীভ্যাং সাহা, ওঁ অর্ব্যয়ে সাহা ৷ বনি रुखात्राः छना—७ रुखादेत चारा, ७ मनिटल चारा। यनि ठिलाताः छना—७ চিত্ৰাহৈ স্বাহা, ওঁৰট্ৰে স্বাহা। বদি স্বাত্যাং তদা—ওঁ স্বাইন্ত্য স্বাহা, ওঁ বাৰবে चारा। यनि विभाषात्राः छना— उँ विभाषा छाः चारा, उँ देखात्रिक्णाः चारा। যদি অমুরাধারাং তদা—ওঁ; অমুরাধাত্যঃ স্বাহা, ওঁ মিতার স্বাহা। বদি (জাষ্ঠারাং তদা—ওঁজোষ্ঠারৈ বাহা, ওঁ ইক্রায় খাহা। यদি ব্লারাং তদা—ওঁ মুলারৈ স্বাহা, ওঁ নিঅভিনে স্বাহা। বলি পূর্কাবাঢ়ারাং তলা-ওঁ পূর্কাবা-্ঢ়াভ্যঃ স্বাহা, ওঁ অন্ত্যঃ স্বাহা। বদি উত্তরাবাঢ়ারাং তলা—ওঁ উত্তরাবাঢ়াভ্যঃ খাহা, ওঁবিখেভো দেবেডাঃ খাহা। যদি প্রবণারাং ভদা—ওঁ ক্রাবণারৈ খাহা ওঁ বিষ্ণবে খাহা। বদি ধনিচায়াং তদা—উধনিচাত্য: খাহা ওঁ বন্ধত্য: খাহা। ৰণি শতভিষারাং ভৰা—ওঁ শতভিষাতাঃ খাহা, ওঁ বরণার খাহা। বদি পূৰ্বভাত্ৰপদারাং তদা—ও পূৰ্বভাত্ৰপদাত্যাং খাহা, ও অলৈকপাদার খাহা।

বিদি উত্তরভাক্রপদারাং ভদা—ওঁ উত্তরভাত্রপদাভ্যাং বাহা, ওঁ অহিব্রয়াভ্যাং বাহা। বদি বেবত্যাং ভদা—ওঁ বেবত্যৈ বাহা, ওঁ অবিনীকুমারাভ্যাং বাহা। বদি অবিভাং ভদা—ওঁ অবিনাভ্যঃ বাহা, ওঁ অবিনীকুমারাভ্যাং বাহা। বদি ভরণ্যাং ভদা—ওঁ ভর্মীভ্যঃ বাহা, ওঁ বমার বাহা। \* তভঃ পিতা কুমারশু মুখনাসিকানেত্রভোত্রাণি দক্ষিণপাণিনা স্পূন্ অপিভ। হয়োর্মন্তরোধ ব্যাদরঃ সাধারণাঃ। প্রজাপতিধ বিরাদিভ্যো দেবতা নামকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁ কোহসি কতমোহসি। এবোহশুমৃত্যোহসি। আহস্পত্যং মাসং প্রবিশাসো (১) অসাবিতিপদং সম্বোধনাত্তং কুমারনাম গৃহাতি। প্রীমমৃকদেবশর্মানত। ওঁ স বাহে পরিদদাত্বর্ধা রাত্রৈ পরিদদাত্ব রাত্রিবাহোরাত্রাভ্যাং পরিদদাত্ব হোরাত্রে বার্মনাসেভ্যঃ পরিদদাত্ব সাবিত্র বার্মানেভ্যঃ পরিদদাত্ব নাম্বর্ত্তর সংবৎসরার পরিদদাত্ব, সংবৎসরভার্বে জরাইর পরিদদাত্ব

(১) হে দেবদত্ত! কোংসি কল্বং ভবসি শ্বরপপ্রন্নং, কতমোংসি শতমন্থং ভবসি জাতিপরিপ্রন্নঃ, এবোংসি প্রত্যক্ষনির্দ্দেশঃ, জমৃতোংসি অমৃতনামা অবিনাশী ভবসি। যতন্ততঃ আহম্পত্যং অহম্পতেরাদিত্যক্ষারং মাসঃ ইত্যর্থঃ সংক্রান্তিচিহ্নিতং মাসং প্রবিশ প্রাপ্ত হি অহম্পতেরিদমিত্যর্থঃ, তত্ত প্রবিশ্ব বংফলং তৎ ক্রমেণ দর্শরন্নাহ ওঁ স্থাকে ইতি।

<sup>\*</sup> রাজস্বাবেশ মারামাজকরাণি বধা—

ক্ষানো বেৰে, উ বৌ বৃধে, ক ছৌ মিগুনে, ভ হৌ কর্কটে, ব টৌ সিংহে, প ঠৌ ক্জারাং,
ব জৌ তুলারাং, ন বৌ স্থুন্চিকে, ধ জৌ ধর্মুদি, ধ জৌ সকরে, গ শৌ কুভে, দ চৌ মীনে।

ক্ষানক্ষ্যানায়নারেশ নামানাক্ষরাণি বধা—

চু চে চো ল অধিনা, লি লু লে লোভরণী, আই উ এ কৃত্তিকা, ও ব বি বু রোহিণী, বে বোক কি বুগলিরা, কু বঙ ছ আর্ত্রা, কে কো হ হি পুন্ধবন্তন, হ হে হো ত পুনা, ভি তৃ তে ভো অরেবা, ন নি বু নে বখা, নো ট টি টু পূর্ববন্তনী, টে টো প গি উত্তরক্ত্রনী পুৰ ব ঠ হলা, পে পো র রি চিন্তা, র রে রো ত ঘাতী, ভি তু তে ভো বিশাখা, ন নি হু নে অনুয়াবা, নো ব বি বু আেছা, বে খো ভাঁটি বুনা, ভূ ম ক চ পূর্বাবাঢ়া, তে ভো ল'লি উত্তরাঘাঢ়া, বি বু খে খো অবলা, গ নি ভ গে ধনিটা, লো ল'লি ও পভাটিবা, লে লো দ দি পূর্বাভারণাৰ, ভূ ম ম ক উত্তরভারণাৰ, বে বো চ'টি রেবাড়ী। ক্রমেন বীবোঁ জেলা প্রসাদ্ধে স্কারে বি মার্বাভালি ক্রারাভানি নামানি ভবিভিঃ

অসো। (২) অসাবিতি কুমারনাম গ্রহীতব্যন্। ততঃ পিতা কুমারত মাতৃবামকর্ণে "ওঁ প্রীঅমুকদেবশর্মায়ং তে পুত্রঃ" ইতি নাম কথরতি। ততো মাত্রে
কুমারং দল্লা, পূর্ববং মহাব্যাহ্যতিহোমং ক্রবা, (৪২ পৃঃ) প্রাদেশপ্রমাণাং
ঘৃতাক্তাং সমিধং তৃঞ্চীমগ্রো হুডা সর্বাকর্শ্বসাধারণং শাট্যায়নহোমাদি-বামদেব্যগানান্তম্দীচ্যং কর্ম সমাপ্য কর্মকার্য়িত্রাহ্মণার দক্ষিণাং দত্যাৎ।

ইতি নামকরণম্।

## অথ নিজ্ঞমণম্ •

তত্ত্ব জাতে কুমারে বস্তৃতীয়ঃ জ্যোৎসন্তস্ত তৃতীয়ায়াস্তিথোঁ প্রাতঃ
কুমারং স্নাপয়িত্বা সারংসয়্যায়ামতীতায়াং চক্রাভিম্থঃ কৃতাঞ্জলিঃ পিতাবিভিচ্নেত মাতা শুচিনা বল্লেণ কুমারমাচ্ছাত্ত, দক্ষিণস্তাং দিশি স্থিতা
উত্তরশিরসং কুমারং পিত্রে সমর্পয়তি। ততো ভর্তঃ পৃষ্ঠদেশেন উত্তরস্তাং

<sup>(</sup>২) অসাবিত্যামন্ত্রণপদম্। হেদেবদত্ত। সোহহস্পতিঃ স্থাস্থা আং আহে দিবদায় পরিদদাতু সমর্পরতু সম্বর্জনার ইতি বাবং। শতায়ুস্থম্। বিশেষ্যস্থ মাসক্ষ বিশেষণভূতোহিপি অহস্পতিঃ অত্র প্রাথাস্থাং স ইত্যানেন প্রত্যাব-মৃষ্যতে, শেষং স্থামম্।

<sup>\*</sup> অত্রেবং বোধান্—জননাদশরাত্রে বৃত্তি শতরাত্রে সম্বংসরে বা নামধেরকরণবিতি গোভিলস্ত্রাৎ একাদশে বাদশে বাহহনি পিতা নাম কুর্বাৎ ইতি শ্রুতেশ্চ বস্তুপি জননাদেকালদিবসত্ত নামধেরে মুধাতমনিমিন্তবাৎ বাদশদিনাদিপুর্বপূর্বকালক্ত পরপরকালাপেকরা প্রশান্তব্যবস্থাতি, তথাপি দৈবামামুবাছা অন্তরায়াৎ একাদশেহনি নামকরণবাধে মুধাকালে নিজ্ঞবণত্ত চাদরে জাতকর্মানন্তবং নিজ্ঞনণ কুছা নামধেরে কর্ত্তবাধিতি। অত্রেব গোভিলেন অবদেবভটেন গুণবিকুনা চ জাতকর্মানন্তবং নিজ্ঞনণ তেজ্ক নামকরণ লিখিত্র। মার্কের তু নামধেরে একাদশাহ্যাত্রত মুধাকালত্বংসংক্ষারকর্মণাঞ্চ নিরতক্রমত্বর্ম্বর জাতকর্মানন্তবং নামকরণ লিখিত্র। আতকর্মানকরণনিজ্ঞনানাং মুধাকালেহকরণে অর্প্রাশনকালে কর্ত্তবাদ্ধ তত্ত সৌণকালহাৎ, তত্র আতকর্মানন্তবং নামকরণ কর্ত্বাছন্ তত্ত সৌণকালহাৎ, তত্র আতক্র্মানন্তবং নামকরণ কর্ত্বাছন তত্ত সৌণকালহাৎ, তত্র আতক্র্মানন্তবং নামকরণ কর্ত্বাতা। ইতি। অত্র গুণবিকুং—নামকরণস্যানিরতকালহাৎ ক্রমতান্বিক্ষত্থাক্ত প্রত্তিত্বান্ আত্র মাতৃপ্রাভ্রনন্তরং বৃদ্ধিমান্তে কর্ত্বাহ্ কর্ত্বাহা বিক্ষেত্রাক্ত প্রাশ্বাহার বিভিন্ন বিশ্বাহার বিভিন্ন বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার প্রত্তিত্বান্ বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার বিশ্বাহার প্রতিত্বাহা।

দিশি গৰা উঠা তিঠেৎ—ততঃ পিতা অমৃন্ মন্ত্রান্তপতি।—প্রজাপতির্ধবিরন্ত্রপুণ্ ছন্দান্তরো দেবতা কুমারশ্ত চন্ত্রদানিন বিনিরোগঃ। ওঁ বতে সুনীনে
ক্রন্তরং প্রজাপতে)। বেলাহং মত্তে তদ্রন্ধ মাহং পৌর্মঘং নি
গাং॥ (১) প্রজাপতির্ধবিরন্ত্রপুণ্ ছন্দান্তরো দেবতা কুমারশ্ত চন্ত্রদানিন বিনিরোগঃ। ওঁ যৎ পৃথিব্যামনামৃতং দিবি চন্ত্রমসি প্রিতম্। বেলামৃতস্তাহং নাম,
মাহং পৌত্রমঘং রিষং। (২) প্রজাপতির্ধবিরন্ত্রপুণ্ ছন্দ ইন্দ্রাগ্রী দেবতে
কুমারশ্ত চন্তর্বানি বিনিরোগঃ। ওঁ ইন্দ্রাগ্রী দর্ম বছতেং প্রজারৈ মে প্রজাপতী
বথায়ং ন প্রমীরেত পুল্রো জনিত্রা। অধি। (৩) ইতি জপ্তা কুমারং চন্ত্রং
দর্শরতি। ততঃ পিতা তথাভূত্যেব কুমারম্ উত্তরনিরসং মাত্রে দন্তা, চন্দ্রার
অর্যাং দন্তাৎ। যথা—ওঁ ক্রীরোদার্থবস্তৃত অত্রিনেত্রসমূত্রব। গৃহাণার্য্যঃ
শশাক্ষেণং রোহিণ্যা সহিত্যে মম॥ ইন্মর্যাং ওঁ চন্দ্রান্ত্রনমঃ। নমন্তে রোহিণীকান্তর

<sup>(</sup>১) হে চন্দ্ৰ! যৎ তে তব অস্তঃ মধ্যে, কিন্তুতে ? সুসীমে অতিশীতলে।
পুনন্তদেব বিশিনষ্টি—প্ৰজাপতো প্ৰজানাম্ আনন্দজনকজেন পত্যো হিতং
নিহিতং হৃদয়ম্ অৰ্পিতং ব্ৰহ্মহানং তদ্বন্ধ আত্মা তংস্থানতাং অহং বেদ
লানামি, তন্মধ্যে এবমেবেতি অহং মত্মে যন্মাৎ তন্মাৎ পৌত্ৰমঘং পুত্ৰসম্বদ্ধি
পাপম্ অৱিষ্ঠং ব্যাধিবিনাশাদিরপং মা গাং ন গচ্ছেয়মাপুষুমমিতি যাবং।
এতত্ত্তং তবতি—যদহং ব্ৰন্ধবিং তন্মান্মমানিষ্টসম্বন্ধো নাত্মীয়ং প্ৰাৰ্থনা
সপ্তম্যৰ্থে পঞ্চমী সৰ্ববিভক্তীনামপ্ৰাদন্মবৃণাং।

<sup>(</sup>২) যং পৃথিব্যাম্ অনামৃতং অমৃতসদৃশং দিবি ছালোকে চক্রমিদ প্রিতং আপ্রিতং তদহং অমৃতস্থানাম বেদ জানামি, যতঃ অতোহহং পৌরমঘং পূক্র-সম্বন্ধি পাপং শোকং মা ঋষং ন গছোমি ইতি, ঋষী গতৌ। অনামৃতমিতি অমৃতসদৃশমিত্যবং। সাদৃশ্যে নঞ্ছাল্পবাদীর্ঘং। অঘং ঋষমিতি ঋষী গতৌছাল্পবাৎ মিপোহলি মিকারোহমুখারং।

<sup>(</sup>৩) হে ইন্দ্রাগ্নী ! যুবাং মে মম প্রকাদ্র পুত্রার শর্ম স্থাং যদ্ধতং দত্তং বথা বেন প্রকাদ্রেণারং বালক: জনিত্রা জনস্তা অধি তৎসংলন ন প্রমীয়েত ন হিংক্তেত। কিছুতাবিদ্রাগ্নী ? প্রকাপতী লোকপালে), মীঙ্ হিংসারাং প্রমীয়েতেতি।

মুধাবাস নমোহস্ত তে। নভোমগুলদীপার শিরোরত্বার ধৃজ্জটে:। কলাজি-র্বর্জমানার নমক্রনার চারবে) ॥ ইতি। ততঃ পিতা জলাঞ্জলিং গৃহীতা— প্রজাপতিশ্ব বিরম্বন্টুপ্ ছন্দক্রেলা দেবতা চন্দ্রোপস্থানে বিনিরোগঃ। উ বদদক্রমাসি কৃষ্ণং পৃথিব্যা হৃদরং শ্রিতম্। তদহং বিঘাংস্তৎ পশুন্ মাহং পৌত্রমবং কৃদং।(৪) ইতি পঠিতা জলাঞ্জলিং ত্যজেৎ তৃষ্টীং বার্বর্ষ্ম। ততো বামদেব্যং গীত্বাহচ্ছিত্রমবধার্য্য গৃহং প্রবিশেদিতি। এতচ্চ নিজ্রমণকর্মাক ভৃতমুদীচ্যং পত্নীপুর্লোপাদানবির্হাৎ প্রবাসিনাহপি কর্ত্ব্যম্। ইতি নিক্রমণং কর্ম্ম সমাপ্রম্।

### অথ কুমারস্ত পৌষ্টিকং কর্ম্ম

পিতা—বিষ্ণুরোন্ তৎসৎ অভ অনুক্ষাণি অনুক্রাশিত্বে ভাষরে অনুক্পেশকে অনুক্তিথো অনুক্গোত্রঃ প্রীঅনুক্দেবশর্মা অনুক্গোত্রন্ত মংপুত্রন্ত প্রীঅনুক্দেবশর্মণঃ পৃষ্টিকামঃ পোষ্টিকং কর্মাহং কুর্বীয়—ইতি সঙ্কল্ল বলদনামানমগ্রিং সংস্থাপ্য, প্রাদেশপ্রমাণাং ঘুতাক্তাং সমিধং তৃষ্ণীমগ্রে ছন্তা, মহান্যাহতিহোমং কুর্যাৎ। (৪২ পৃঃ) ততঃ ও ইন্দ্রাগ্রিভ্যাং স্বাহা, ও ভাষা-পৃথিবীভ্যাং স্বাহা, ও বিখেভ্যে। দেবেভ্যঃ স্বাহা,ইত্যাহতিত্রেয়ং দভাৎ। ততো নামকরণোক্তক্রমেণ জন্মতিথি-তত্তদ্বেতা-জন্মনক্ষত্র-তত্তদ্বেতাহোমং (৬১ পৃঃ ১৫ পুং) কুর্যাৎ। ততো মহাব্যাহ্রতিহোমং কৃত্য প্রাদেশপ্রমাণাং ঘুতাক্তাং সমিধং তৃষ্ণীমগ্রে জুন্থাং। ইতি কুমারশ্র পৌষ্টিকং কর্ম সমাপ্তম্।

#### অথ অল্লপ্রাশনম্

তত্ত্ব ষঠে অষ্টমে বা মাদি পুংসং, স্ত্রিয়াস্ত পঞ্চমে সপ্তমে বা মাদি শুভে দিনে
পিতা ক্তব্দিশ্রাদ্ধঃ শুচিনামানমগ্নিং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষজপাস্তাং কুশঞ্জিকাং
সমাপ্য প্রকৃতকর্মারন্তে প্রাদেশপ্রমাণাং দ্বতাক্তাং সমিধং তৃষ্ণীমগ্নৌ হস্বা,
মহাব্যান্থতিহোমং (৪২ পৃঃ)কুর্যাৎ। ততঃ—প্রজাপতিশ্ব বির্গায়শ্রীচ্ছন স্বাদিত্যো

<sup>(</sup>৪) আদ এতৎ চক্রমসি কৃষ্ণং লাঞ্চনং পৃথিব্যা হাদরং শ্রিতং আশ্রিতং কৃষ্ণনীলিমরূপং তদহং বিদান্ তদেব পশ্রন্ ঈক্ষমাণঃ দৃষ্টবানিতার্থঃ, ষত এবমতোহহং পৌত্রমযং পুত্রসম্বন্ধি শোকং প্রাণ্য মা কৃদং মা রোদিমীতার্থঃ।

দেবতা প্রধাণিপত্যকাষত্ত চতুলাথেৎয়াবাদিত্যাভিম্থত আজাহোরে বিনিরোগ:। ওঁ জন্ধ বা একছনত্মনাং কেকং ভ্তেত্যভন্দরিভ আহা। (১) প্রজাপতিশ্বিরাদিত্যো দেবতা প্রধাণিপত্যকামস্য চতুলাথেৎয়াবাদিত্যা-ভিম্থস্য আজাহোমে বিনিরোগ:। • ওঁ শ্রীবা এবা বং সন্ধানো বিরোচনেন মিরি সন্ধ্যবদ্ধাতু আহা। (২) প্রজাপতিশ্বির্হতীছন্দ আদিত্যো দেবতা প্রধাণিপত্যকামস্য চতুলাথেৎয়াবাদিত্যাভিম্থস্য আজাহোমে বিনিরোগ:। ওঁ জন্মস্য স্তমেব রসন্তেজঃসম্পৎকামো ছ্হোমি আহা। (৩) প্রজাপতিশ্বিঃ ক্দেবতা বৃত্তাবিছিভিকামস্য সান্ধংপ্রাতঃ ক্দোমে বিনিরোগ:। ওঁ ক্ষে আহা। প্রজাপতিশ্বিঃ ক্পেপিপাসে দেবতে বৃত্তাবিছিভিকামস্য সান্ধংপ্রাতঃ ক্ত্ডাবে বিনিরোগ:। ওঁ ক্পেপিপাসাভ্যাং আহা। ওঁ প্রানান্ধ আহা। ওঁ জানান্ধ আহা। ওঁ জানান্ধ আহা। ওঁ জানান্ধ আহা। ওঁ জানান্ধ আহা। ওঁ সমানান্ধ আহা। ওঁ উদানান্ধ আহা। ওঁ ব্যানান্ধ আহা। উত্যাল্যান্ততীভ্রেরাৎ। ততো মহাব্যান্থতিহোমং ক্রম্বা (৪২ পৃঃ) প্রাদেশ-প্রমাণাং স্বতালাং সমিধং ভূফীমগ্রে হ্বা, সর্কাক্সাধারণং শাট্যান্নকোমাদিবামদেব্যগানান্তেম্ উদীচ্যং কর্ম্বা (১৫ পৃঃ ১২ পং) সমাপ্য, জনেন মন্ত্রেণ কুমান্বত্য মুখে জন্ম দত্যাৎ। প্রজাপতিশ্ব বির্হতীছ্যানা্হ্রপতিদেবিতা কুমান্বত্যান্ধে

<sup>(</sup>১) অরং বৈ কিল একছন্দক্তং একং প্রধানং ছন্দঃ ত্রয়াত্মকছেনামোদাদিত্যর্থঃ একছন্দক্তভেবমেকছন্দক্তং কিন্তৎ অরং হি যত্মাৎ এবম্
ভূতেভাঃ ভূতানাং ভ্রপ্তার্থং ছন্দরতি বর্ত্তরতে। অরমর্থঃ—বর্থা আদিতাদ্য
রশিক্ষালং বৃষ্টান্তমা লোকে ছন্দরতি আবুণোতি তথা অরমণি মমাদিতাপ্রসাদাৎ বছতরং ভবতু যেনাহং পুরুষেষু অধিপতির্ভবামি। একছন্দক্তমিতিভবে ছন্দুনীতি ষৎ।

২। শ্রী: বৈ কিল এবা প্রত্যক্ষা, কিং বং সন্থানঃ ঈশ্বরাঃ তেরু মধ্যে বিরোচনঃ আদিত্যঃ মরি সন্ত্বং আধিপত্যং অবদধাতু, অর্পরতু সন্থান ইন্ডি সচ্ছন্দান্ত্বর্থে ছন্দ্দী বনিপৌ চ বক্তব্যৌ ইতি বনিপ্।

৩। আরস্ত স্বতমের রসঃ সারঃ তথা চ যদস্বতং তদভোজনমিতি জ্বন-প্রবাদঃ। তেজঃ সম্পদাধিপত্যং তৎ কামরমানোহহং স্বতং জুহোমি স্বাহা।

<sup>\*</sup> रक्तिपन् इत्ला नाणि।

<sup>†</sup> বজুষ্ট্রাদত্র পরত্র চ ছন্দো নান্তি।

বিনিরোগঃ। ও অরণতেৎরত নো দেহন্দীবত গুলিণঃ। এ প্রপ্রদাতারং তারিষ্ উর্জ্ঞং নো ধেহি বিপদে চতুস্পদে বাহা। (৪) ডডঃ কর্মকাররিছ্-আন্ধার দকিশাং দছাং। ইতি অরপ্রাশনম্ সমাপ্তম্।

## অথ পুত্ৰসূৰ্জাভিন্তাণম

তত্ত্ব পিতা পূর্বাভিমুখো হত্তাত্যাং পুদ্রত্ত মূর্জানম্ উপসংগৃহ মন্ত্রন্থং জপতি—প্রস্তপতিব বিরহুই পূর্ ছবং প্রজাপতিদে বতা পুদ্রত্ত মূর্জানমূপসংগৃহ জপে বিনিরোগং। ও অকাদকাং সংস্থানি ক্রারাধিকারনে। প্রাণ্ডে প্রাণ্ডেন সংল্থানি জীব মে বাবলার্বং॥ (১) ও অকাদকাং সংভবসি, হৃদরাধিকারনে। বেদো বৈ পুদ্রনামাসি, স জীব শরদং শতং॥ (২) ও অকা তব পরতর্ত্তব হিরণামমৃতং ভব। আত্মাসি পুদ্র মা মুখাং স জীব

২। হে পুত্র ! শরদঃ শতংবর্ষাণি জীব, বভদং বেদোৎসি বেদভাব্যেতা ভবসি গৌর্বাহিক ইভিবৎ গৌণপ্রয়োগঃ। অভএব উপনীতত্ত এব কার্য্য-বেতৎ শেষং পূর্ববিদ্ব্যাধ্যেয়স্।

৪। হে অরপতে! স্বা! "মাদিতা।জ্জারতে বৃষ্টবৃষ্টেরয়ং ততঃ
প্রজা" ইতি স্তেঃ, অরস্ত অদনীরস্ত অনমীবস্ত আরোগ্যকরস্ত ওমিণঃ অগ্নিবৃদ্ধিকরস্ত উর্জ্ঞং বলং নো অস্বভাং দেহি অর্পর, কিঞ্চ অরস্ত প্রদাতারং প্রভারিষ
ভারর তথা নো অস্বাকং দিগদে মহুষ্যাদৌ চতুলাদে গথাদৌ (শং কল্যাণং)
ধেহি, অমীব ইতি রোগ উচ্যতে, তারিষ ইতি তুপ্পবনতর্ণরোঃ অন্তর্ভূত্ণার্থাৎ
প্রার্থনারাং লিঙর্বে লেট্ সিপ্ 'লেটোংডাটো' ইতি অট্ 'সিব্ বহলং
লেটি' ইতি সিপ্ ইট্ ইতক্ষ লোপঃ পর্বৈশদেষিতি ইকারলোপঃ স্কারস্ক

১। হে পুত্রক! ত্বং মে মম জন্ধাৎ অকাৎ শিরোগ্রীবাদিভ্যঃ সংশ্রবসি সংশ্রতা ভবসি প্রবাহধাতৃরপভয়া বিনিঃস্ভোহসীত্যর্থঃ। তথা ব্রদমান দিবলারসে ইতি হৃদয়াৎ সর্ব্বগাত্রপ্রেছাৎ অধিকারসে উৎপরোহসি ছাল-সন্থাৎ অতীভবিবরেহপ্যেতৎ পদবয়ং বর্তমানে নিদিশুতে। তদিখংজ্তোহসি অভততে তব প্রাণং প্রাণবায়্যং ম্থনাসিকাভ্যাং নিঃসরপরপং প্রাণেশ্বর সন্থধামি ধারয়ামি সন্ততং অনবজ্ঞিয়ং করোমি তৎসদ্ধানাৎ বাবদায়য়ং বর্বশতং বাবত্বং জীব, শতায়্বৈ পুরুষ ইতি শ্রুতেঃ। বাবদায়ুবমিত্যব্যরীজ্ঞাবে শরৎ প্রস্তৃতিভয় ইত্যচ্।

প্রদাতারবিতি পাঠান্তরবৃ। পরিতি সংহিতারাং দ বৃত্ব।

नत्रप्तः मेठम्॥ (৩) ততঃ অনেন মত্ত্রেণ পুদ্রত নিরঃ পিতা জিছতি— প্রজাপতির বিঃ প্রজাপতিদে বতা পুদ্রত মৃহ্যাভিছাণে বিনিয়োগঃ। ● ওঁ পদ্নাং বা হিহারেণাভিজিছানি ঞীকস্কদেবশর্ন। (৪)

# ইতি পুত্ৰসূদ্ধাভিত্ৰাণং সমাপ্তম্।

#### ভাথ চূড়াকরণম্

কুলাচারবশাৎ প্রথমে তৃতীরে বা বর্ষে চূড়াকরণং কর্মবাষ্। ভত্র প্রথমং প্রাতঃকৃতস্থানঃ কৃতবৃদ্ধিপ্রাদ্ধঃ পিতা স্তানাধানমগ্লিং সংস্থাপ্য, বিরূপাক্ষ-জপান্তাং কুৰণ্ডিকাং সমাপ্য, অয়েদ কিণতঃ একবিংশভিদর্ভনিঞ্বলী: সপ্তমপ্তভিরেকীকৃত্য কুশান্তরেণ বেইরিমা, উন্ফোদক-সহিতং কাংস্যপাত্রং, ভাত্রনির্মিতং কুরং ভদভাবে দর্পবং বা, লৌহকুরপানিং নাপিতঞ্চ; অপ্লেক্ড-রতো ব্রপোময়ং, তিল-ভঙুল-মাবদিদ্ধঞ কুদরম্, অগ্নে: পূর্ব্বত: মিপ্রিত-ত্রীহিষবপুরিত-পাত্ত্রয়ং, ভিলমাষপুরিত-পাত্ত্রেয়ঞ্চ স্থাপয়েৎ। ভভো মাতা শুচিনা বল্লেণ কুমারমাচ্ছাদ্য, ক্লোড়ে নিধার. পরেঃ পশ্চিমতো ভর্ত্ত ব্যিমপার্থে উত্তরাগ্রেষ্ কুশের প্রাত্ম্বী উপবিশতি। ততঃ পিতা প্রকৃতকর্মারম্ভে প্রাদেশ-প্রমাণাং দ্বতাক্তাং সমিধং তৃকীময়ৌ হবা, ব্যস্তসমন্ত-মহাব্যাক্তিহোমং ৰথা—প্ৰজাপতিৰ বিৰ্গায়দ্ৰীছন্দোংগ্নিদে বভা কুৰ্য্যাৎ। হোমে বিনিরোগ:। ওঁ ভৃ: বাহা। প্রকাপতিশ্ববিক্ষিক ছন্দো বার্দে বতা মহাব্যান্তিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূবঃ খাহা া্প্রজাপতিশ্বিরমুট্প্ ছন্দঃ স্বৰ্য্যে দেবতা মহাব্যাহ্বতিহোমে বিনিয়োগ:। ও স্থঃ স্বাহা। প্ৰজাপতিশ্ববি-বুহতীছন: প্রজাপতিদেবিতা (সমন্ত) মহাব্যান্ততিহোমে বিনিরোগ:। &

৩। হে পুত্র! স তং অশ্বা তব পানাণো তব পানাণবং দৃঢ়ো নির্ম্যাধিতবি, পরতঃ কুঠার ইব ছেদকো তব তীক্ষো তব ন তু ছেডঃ তথা হিরণ্যং তব
স্বর্ণং তব, অক্তৈরানাদিভিরপদ্রব্যৈরাচ্চাদিতং যর তবতি, অমৃতং তব অবিনাশী নাকালে মরিয়নি। আত্মানীতি আত্মা নিত্য ইব তং মা মৃথাঃ রা
মরিয়াসি ততঃ শরদঃ শতং জীব।

৪। হে পুত্র! দা দাং দহং পিতা দভিকিলামি মৃদ্ধি চুদামি, পণ্নাং গবাং হিন্ধারেণ হুংক্তেন। এতহ্জং ভবতি যথা গাবোহরণ্যাদৌ গভা বংশারাভিমুখ্যেন শিল্পন্ধি, তথা দহমপি দামিত্যধঃ।

<sup>+</sup> स्कूरे।क्रका नावि।

ভূত্বিংশঃ বাহা। তভঃ পিতা উখার, প্রান্ত্র্য কুমারত মাতৃঃ পশ্চাদবন্ধিতঃ, ক্রপাণিং নাপিতং প্রনৃ, ভমেব সবিভ্রূপং ধ্যায়ন্ ৰূপতি—প্রকাপতির্ববিঃ সবিতা চ্ছাকরণে বিনিয়োগ:। • ওঁ আর্মগাৎ স্বিতা কুরেণ। (১) ভভ উক্ষোদ্ধকসহিতং কাংস্যপাত্রং পশুন, বাযুং মনসা ধ্যায়ন্ ৰূপতি-প্ৰজাপতিঋ বিকায়্দে বিতা চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ উষ্ণেন বার উদকেনৈধি। (২) ততঃ কাংস্যপাত্রস্থিতোঞোদকেন দক্ষিণ-হস্তগৃহীতেন কুমারস্ত দক্ষিণ-কপৃঞ্চিকাদেশমনেন মল্লেণ ক্লেদয়তি। কপৃঞ্চিকা-শব্দেন দক্ষিণোত্তরতঃ শিখাস্থানাদ্ধঃ শিরুস উভয়পার্যস্থঃ কর্ণাভিমুখোচ্চদেশ উচ্যতে। প্রজাপতিঋষিরাপো দেবতাশ্চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ আপ উন্দন্ত জীবসে।(৩) ততঃ তাম্রক্রং তদভাবে দর্পণংবা পশুনু ৰূপতি— প্রজ্বাপতিঝ বিবিষ্ণুদে বিতা চ্ডাকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ বিষ্ণোদ ংষ্ট্রোৎসি। (৪) ততঃ কুশবদ্ধ-সপ্তদৰ্ভপিঞ্চলীগৃহীত্বা † ক্লিমদক্ষিণ-কপুঞ্চিকাদেশে অনেন মত্ত্রেণ উর্জ্মূলা নিদধ্যাৎ—প্রজাপতিশ্ববিরোষধিদে বতা চূড়াকরণে বিনিয়োগঃ। 🤟 ওষধে আরুস্থৈনং। (৫) ততো বামহন্তগৃহীত-দর্ভপিঞ্জলীসহিত-দক্ষিণ-ৰপুষ্টিকাদেশে দক্ষিণহন্তগৃহীতং তামকুরং তদভাবে দর্পণং বা অনেন মন্ত্রেণ

১। হে কুমার । আরুং নাপিতঃ সবিতা ক্রেণ গৃহীতেন আ অগাৎ তব চ্ড়াকরণায় আগতবানিতার্থঃ। ব্যবহিতেনাঙাসম্বন্ধঃ।

২। হে বায়ে! ছমপি উফেন উদকেন গৃহীতেন কুমারশিরঃপ্লাব-নার এধি আগচ্ছ ইত্যর্থ:। এধি ইতি ছান্দসত্তাৎ হকারশু ধকার:।

ত। হে কুমার ! যা বায়্না আনীতা আগন্তাস্বাম্নন্ত ক্লেদয়ত্ত। কিমর্থং ? জীবদে জীবনায়, চিরকালপ্রাণধারণায়। জীবদ ইতি ছান্দসত্তাং তুমর্থে অস্থিত্যয়:।

৪। হে কুর! দং বিফো: দংট্রোহসি দস্তো ভবসি ছেদনাত্মকত্বাৎ।

<sup>🜓</sup> হে ওৰধে ! দর্ভ ! এনং কুমারং ত্রায়স্ব পালয়।

<sup>•</sup> रब्हे।ष्ट्या नाष्ट्र।

<sup>†</sup> দর্ভণিপ্রলীপদেন কুশান্তরবেটিজং প্রাদেশপ্রমাণং কুশপত্রবরমূচাতে, অস্তা নামান্তরং পৰিত্রব্ । তথা চ—অনন্তর্গতি পং সাগ্রং কৌশং বিদলমের চ । প্রাদেশমান্তং বিজ্ঞেরং পরিত্রং বল-কুলচিং । এতদেব পিপ্রল্যা লক্ষণং সমুদাহত্ব । ইতি ছলোগপরিশিষ্ট্র ।

নিদ্ধ্যাৎ—প্রজাপতিশ্ব বি: স্থধিতিদে বতা চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। ও স্থধিতে মৈনং হিংসী:। • (৬) ততঃ কেশচ্ছেদো যথা ন ভবতি, তথা তাঁত্ৰ-কুরং দর্পনং বা তত্ত্রৈব দক্ষিণ-কপুঞ্চিকাদেশে অনেন মন্ত্রেণ পূর্ব্বাভিম্বং প্রের-য়েৎ—প্রজাপতি খবিঃ পূষা দেবতা চূড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁবেন পূষা বুহস্পতের্বায়োরিক্সস্য চাবপৎ। তেন তে বপামি ব্রহ্মণা জীবাতবে জীবনায় দীর্ঘায়ুষ্টায় বলায় বর্চনে। (৭) ততো বার্দ্বয়ং তৃষ্টীং প্রেরয়েৎ। ততো লোহস্বেণ দক্ষিণ-কপুঞ্চিকাদেশে স্থিতান্ কেশান্ ছিত্তা, দর্ভপিঞ্চলীভিঃ সহ আচারতো বালক-মিত্রধুত-পাত্রস্থ-বুষগোময়োপরি নিক্ষিপে**।**—ততঃ কাংস্তপাত্রস্থিতোক্ষোদকেন দক্ষিণহস্তগৃহীতেন কপুচ্ছলদেশমনেন মন্ত্রেণ ক্লেদ-য়েৎ। কপুচ্ছলশব্দেন পশ্চিমতঃ শিথাস্থানাদধঃ শিরসঃ মাতৃক্রোড়াভিমুখো-চ্চদেশ + উচ্যতে। প্রজাপতিঋষিরাপো দেবতাশ্চূ ড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁ আপ উলন্ত জীবদে। ততঃ তাম্রকুরং দর্পণং বা পশুন্ জপতি—প্রজাপতি-श्रविंक्ष्रुत्म वर्षा कृषांकत्रत्व विनित्त्रांभः। ७ वित्यांम रहे। रहे। কুশবদ্ধ-সপ্তদৰ্ভপিঞ্জলীগৃঁহীখা ক্লিন্ত্ৰ-কপুচ্ছলদেশে অনেন মন্ত্ৰেণ উৰ্দ্ধমূলা নিদ-ধ্যাৎ-প্রজাপতিশ্ব যিরোষধিদে বত। চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। ও ওবধে আয়বৈশ্বন্। ততো বামহন্তগৃহীত-দর্ভপিঞ্জলীসহিতকপুচ্ছলদেশে হস্তগৃহীতং তাম্রক্ষরং দর্পণং বা অনেন মন্ত্রেণ নিদধ্যাৎ—প্রকাপতিঝ বিঃ স্থধিতিদে বতা চূড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ও স্থধিতে মৈনং ইহিংসীঃ। ততঃ কেশচ্ছেদো যথা ন ভবতি,তথা তামক্ষুরং দর্পণং বা কপুচ্ছলদেশে অনেন মন্ত্রেণ

৬। স্থবিতিরৌড়,শ্রক্সরন্তভাষত্রণং হে স্থবিতে। এনং কুমারং মা হিংদীঃ ন হিংস্তদি ইত্যর্থ:, মা ছঃখাপরিষ্যদীতি যাবং।

१। বেন স্থিতিনা ঔড়্ম্বস্ক্রেণ প্যা দেবো বৃহস্পতের্বায়োরিক্স চ আবপং উপ্তবান্ মৃগুনং কতবান্ বপিরত্র চ্ছেদনার্থ:—তেন স্থিতিনা ব্রহ্মণা ব্রহ্মভূতেন তে তব আবপামি মৃগুয়মি ইত্যর্থ:। কিমর্থং ? জীবাতবে এতদেব স্বয়ং ব্যাকরোতি অস্তাপ্যর্থ:—দীর্ঘায়্ট্রায় বলায় তথা বর্চনে তেজনে ইত্যর্থ:।

শ্বধিতিরিতি পাঠান্তরন্।

<sup>†</sup> নাপিতকোড়াভিমুখোচ্চদেশ ইতি মতান্তর্যু

প্ৰাভিম্থং প্ৰেৰৰেৎ, ভৃষ্ণীং বাৰদ্বম্। প্ৰজাপতিৰ দিঃ পূবা দেবভা চূড়াক্রণে বিনিয়োগ:। ওঁ বেন প্ৰা বৃহস্পতেব বিবারিক্রস্য চাবপং। তেন তে বপামি বন্ধণা জীবাতবে জীবনায় দীৰ্ঘায়ুট্বায় বলায় বৰ্চ্চদে। ততো লোহকুৱেণ क्पृष्क्वरम्बद्ध-दक्षान् हिद्या, मर्च विश्वनीचिः मर वानक-मिव्ययुज-वावन्य-वृष-গোময়োপরি স্থাপয়েং। ততন্তবৈধ কাংস্থপাত্রস্থিতোঞোদকেন দক্ষিণহন্ত-গৃহীতেন বাম-কপৃষ্ণিকাদেশমনেন মন্ত্রেণ ক্লেদয়েও। প্রজাপতিশ্ববিদ্বাপো দেবতাশ্চ্ডাকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ আপ উলম্ভ জীবসে। ততঃ তাদ্রকুরং দর্পণং বা পশ্তন্ জপেৎ—প্রজাপতিশ্ববিক্রিদেবিতা চূড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁ বিক্ষোর'ংট্রোৎসি। ততঃ কুশবদ্ধসপ্তদর্ভপিঞ্জলীগৃহীত্বা ক্লিন্ন-বাম-কপু-किकारमा व्यापन भरत्रन छर्कभूमा निम्धार-श्रक्षानिक विद्वाविदानिक राज्य চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ ওরণে ত্রার্যেবনং। ততো বামহস্তগৃহীত-দর্ভ-পিঞ্চলীদহিত-বাম-কপুঞ্চিকাদেশে দক্ষিণহস্তগৃহীতং ডাদ্রকুরং দর্পণং বা অনেন बरञ्जन निम्पार-প্রজাপতি अधि: স্থাতিদে বতা চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। উ স্থবিতে মৈনং হিংসী:। ততঃ কেশক্ষেদে। যথা ন ভবতি, তথা তাব্ৰকুরং वर्णनः वा छटेखव वाय-कश्किकारमरण चरनन यरखन शृक्षां छिम्बः त्थावरहर. ভূফীং বারদ্বয়। প্রজাপতিশ্বিঃ পৃষা দেবতা চূড়াকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ বেন পূবা বৃহম্পতের্বারোরিক্স চাবপং। তেন তে বপামি ব্রহ্মণা জীবাতবে बीवनाव मीर्घावृष्ट्राव वलाव वर्कटम । \* जटजा ट्लोश्क्टद्रव वामकश्किकाटम्टन স্থিতান্ কেশান্ ছিত্বা,দর্ভপিঞ্চণীভিঃ সহ বালক্ষিত্রধৃত-পাত্রস্থ-বৃষ্পোষয়োপরি নিক্ষিপেং। ততঃ কুমারস্ত নিরঃ পাণিভ্যামূপদংগৃহ জপেং-প্রজাপতি-ৰ'বিকৃষ্ণিক্ ছল্লো জমদগ্নি-কশ্মপাগন্ত্যাদয়ো দেবতাশ্চৃড়াকরণে বিনি-(बानः। ও जावूवः कमन्द्रः, कश्चनश्च ब्यावूरमन्छात्र ब्यावूवः राष्ट्रवानाः জ্যায়ুষং, তত্তে অন্ত ত্যায়ুষং। (৮) ততঃ অগ্নেকতরদেশং নীমা, পুস্পাম্বনদ্ধ তো

৮। জ্বদথেম হর্ষেণ্ ব্রায়্বং—ত্রীণি আর্ংবি বালত্ব-বৌবন-স্থবিরছানি তথা কপ্রপন্ত অগত্যক্ত দেবানাঞ্চ ইন্তাদীনাং বং ত্রায়্বং তানি তানিআর্থবি হে পুত্র! তে তব সম্ভবন্ত। বর্ষশতং বাবৎ তং জীবেত্যর্ব:।
ত্র্যায়্বমিতি বহুত্বে একবচনং ছাল্দম্বাৎ অচত্রাদি স্ত্তে পাঠাৎ
স্বাসান্ত:।

नोवाबुह्वात्र वर्कत्म देखि गाठाखनन्।

नाशिष्ठः शृर्वपृथम् উखत्रम्थः वा कृषातः मृथति गर्वस्य दिनः वृत्रतशामस्त्राशिति निधातः खत्रदश वः निर्वादे व स्वादः व्यादः वर्षायस्य वर्यस्य वर्यस्

# रेिं ह्फाक्त्रमः नमाश्चम् ।

#### অথোপনয়নম্

ভত্ত গর্ভাষ্টমেংশ্যম বাবে ত্রাহ্মণজ্যোপনয়নং কর্ত্তব্যম্। তদসম্ভবে (बाष्ट्रमवर्षभर्याखम्भनम्नाधिकातः। অত: পরং সাবিত্তী-পতিতো ব্রাহ্মণো নোপনেতব্যঃ ইতি। + তত্ত্ব প্রথমং প্রাতঃরুতস্নানঃ রুডবুদ্ধি-শ্রাদ্ধ: পিতা পিত্রা বুতোহকো মাণবকবৃতে৷ বা আচার্য্য: সমুদ্রবনামানমগ্নিং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষপাস্তাং কুশগুকাং সমাপ্য মাণবক্ষ অপ্লেক্তরতো নীছা, শিখরা সহ মৃত্তিতং স্নাপিতং কুওলাগুলফুতং কৌমবাসদাবৃতং তদসম্ভবে ভ্রহাহতকার্পাদৈকবন্ত্রাবৃত্তং সদক্ষিণে পূর্বাভিমূবং নিধায়, প্রকৃতকর্মারন্তে প্রাদেশপ্রমাণাং দ্বতাক্তাং সমিধং ভূঞীমগ্নে হব। ব্যব্তসমন্তমহাব্যাক্তিহোমং কুর্ব্যাৎ-প্রজাপতিশ্ব বিগায়ত্রীচ্ছলোহ হির্দেবতা মহাব্যাহাতিহোমে বিনি-ৰোগ:। ওঁ ভৃঃ খাহা। প্ৰজাপতিশ্ব বিৰুঞ্চিক্ ছন্দো বায়ুৰ্দবতা মহাব্যাদ্ধতি-হোনে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূব: স্বাহা। প্রজাপতিশ্বিরস্টু প্ছন্দ: স্র্ব্যো দেবতা महावााञ्चित्राय विनित्तानः। ७ यः याश। अञ्चार्णाज्यं विवृ र्छोक्ष्यः প্রজাপতির্দেবতা (সমন্ত) মহাব্যাত্ততিহোমে বিনিয়োগ:। ও ভূভূ বংখ: খাহা। ( जिम्रान न्यावर्खनकर्यनि कर्खर्या यानवरकन প्राजर्खाकनः न कात्रविज्वाम् ।) তত আচাৰ্য্য: পঞ্চতিম দ্ৰৈ: পঞ্চাল্যাহতীকু হিরাৎ, বধা-প্রজাপতির বির্ব্ধি-द्धवेजा जैनवन्तरहास विनिरम्नानः। ওঁ অগ্নে ব্রতপতে ব্রতঞ্চ-প্ৰব্ৰবীমি ভেন্দ্যাসমিদমহমনুতাৎ वियामि ভচ্চকেয়ং

কিন্ত কুতরাভাপার্যান্ডর উপনেতবা ইতি।

<sup>&</sup>lt;del>় । বলুই,।ছেলে।</del> ৰাতি। অয়ে এডপতে ইড্যাধিম**এগণ**ক ভূডুৰ্ বংৰৰোং স্থান স্থানে ব্যাতি । সম্ভৱ্য চ বজুৰিগদঃ তেনাত্ৰ ছলো নাতি।

শত্যমূপৈমি স্বাহা। (১) প্রজাপতির বিব বিরুদ্ধিবতা উপনয়নহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ বায়ো ব্রতপতে ব্রতঞ্চিয়ামি তত্তে প্রবীমি তছকেরং তেনর্ক্যাসমিদমহমনৃতাৎ সভ্যমুগৈমি স্বাহা। প্রজাপতিঋ যি: সুর্য্যো দেবতা উপনয়নহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ স্থ্য ব্রতপতে ব্রতঞ্জিয়্যামি ভত্তে প্রব্রবীনি ডচ্ছকেয়ং তেনদ্ধ্যাসমিদমহমনৃতাৎ সত্যমূপৈমি স্বাহা। প্রজাপতিঋষি-শ্চন্দ্রো দেবতা উপনয়নহোমে বিনিয়োগ:। ওঁচন্দ্র ব্রতপতে ব্রতঞ্চরিয়ামি তত্তে প্রবর্ণীমি তচ্ছকেয়ং তেনর্দ্যাসমিদমহমনৃতাৎ সত্যমুপৈমি স্বাহা। প্রজাপতিখবিরিজ্রো দেবতা উপনয়নহোমে বিনিয়োগ:। ও ব্রতানাং ব্রতপতে ব্রতঞ্জিয়ামি তত্তে প্রবর্ণীমি তচ্ছকেরং তেন্দ্যাসমিদমহ-মন্তাৎ সত্যমূপৈমি স্বাহা। এবমাল্যাহভীহ'বা অগ্নে: পশ্চিমত আচাৰ্য্য উদগগ্রেষ্ কুলেষ্ প্রাত্মুথঃ কভাঞ্জিলঃ উদ্বন্তিষ্ঠেৎ। অগ্নাচার্য্যোর্মধ্যে মাণবকোহপি কৃতাঞ্চলিরাচার্য্যাভিম্থ উদগগ্রের্ কুশেরু উদ্ধন্তিঠেৎ। ততো মাণবকস্ত দক্ষিণতঃ স্থিতো মন্ত্রাক্ষণো মাণবকস্যাঞ্জিমুদকেন পুরুত্তি, भक्तामां विद्यापारि । ততো গৃহীতোদকাঞ্জলিরাচার্য্যো গৃহীতোদকাঞ্জলিং মাণবকং পশুন্ জপত্তি-প্ৰজাপতিঋষিরমূষ্টুপ্ছন্দোংগ্নি-বায়ৃ-স্ব্যু-চক্তে-खानत्त्रा त्विरु छेननत्रत्न चाहार्याच मानरकः त्यक्रमानच क्रान विनित्तानः। ওঁ আগন্তা সমগন্মহি, প্রস্মর্ক্তাং যুষোতন। অরিষ্টাঃ সঞ্চরেমহি স্বস্তি

১। অত্র উপনীয়মানো মাণবকোহয়িং প্রার্থয়তে—হে অয়ে! কিন্তৃত ?
ব্রত্পতে! ব্রত্ত শাস্ত্রীয়ত সাবিজ্ঞ নিয়মত্ত পালয়িতঃ। বদিদং ব্রতং চরিয়ামি
অফ্টাভামি,তদ্বতং তে তুভাং প্রবীমি নিবেদয়ামি,তেন অংপ্রসাদাৎ ব্রত্মহং
শক্ষেং প্রথনাচরিত্ং শক্ষোমি। ব্রত্চরণত্ত ফলমাহ তেন উপনয়নব্রতেন
করণভূতেনাহং ঋিকিং সমৃদ্ধিং বৃদ্ধিমধ্যয়নলক্ষণাং প্রাপ্রুয়াম্, ইদং ব্রতং সম্পৈমি
সমাক্ উপৈমি। কিন্তৃতং ? সত্যং সত্যবচনয়পম্ অনৃতাৎ অলীকবচনাৎ
পৃথগ্ভ্রা, এতত্তকং ভবতি—যোহহম্পনয়নাৎ প্রাক্ কামচারবৎ আসং
সোহহমধুনা পরিত্যক্তান্তবাদঃ সত্যভূত্যিদং ব্রত্করিয়ামীত্যর্থঃ।
শক্ষেমিতি লিগুণিবাঙ্, ঋদ্যা ইতি দিতীয়ার্থে ভৃতীয়া। সম্প্রীতি
ব্যবহিতোপসর্গদ্ধকঃ। এবমুজয়ত্র চন্ধারো মন্ত্রা অনেনৈব ব্যাধ্যাতাঃ।

সঞ্চরতাদয়ম্। (২) তত (গৃহীতোদকাঞ্জলিয়েব) আচার্য্যো (গৃহীতোদকাঞ্জলিমেব) মাণবকং পাঠয়তি। \* প্রজ্ঞাপতিশ্ধ বিরাচার্য্যো দেবতা উপনম্বনে (আচার্য্যস্তু) মাণবকপাঠনে বিনিয়োগঃ। ওঁ ব্রহ্মচর্য্যমাগাম্পমানয়য়। (৩) তত আচার্য্যা মাণবকং প্রাগাত্মকল্পিতং নামধেয়ং পৃচ্ছতি। প্রজাপতিশ্ধ বিমাণবকো দেবতা উপনয়নে (আচার্য্যস্তু) + মাণবকনাম-প্রম্মে বিনিয়োগঃ। ওঁ কো নামাসি। ততো মাণবকো দেবতাশ্রমং গোত্রাশ্রমং মক্ষত্রাশ্রমং প্রাগাচার্য্যকল্পিতনামধেয়ং কথয়তি অনেন মত্ত্রেন—প্রজাপতিশ্ধ বিদ্যাণয়ে। ওঁ অম্ক-দেবশর্মা নামান্মি। ততো আচার্য্যমাণবকো প্র্গৃহীতোদকাঞ্জলী ত্যজ্ঞোম্। ও অম্ক-দেবশর্মা নামান্মি। ততো আচার্য্যমাণবকো প্র্গৃহীতোদকাঞ্জলী ত্যজ্ঞোম্। ওত ই আচার্য্যা দক্ষিণেন পাণিনা মাণবকত্ম সাল্লুইং দক্ষিণং পাণিমনেন মন্ত্রেণ গৃহাতি—প্রজাপতিশ্ব বিঃ সবিত্রশ্বিপ্রণে। দেবতা উপনয়নে আচার্য্যস্থাণবক্ত্যগ্রহণে বিনিয়োগঃ। ওঁ দেবত্য তে সবিতৃঃ প্রস্বেবহ্ থিনোর্মাহত্যাং

২। হে অগ্নাদয়: ! যুয়ম্ এনং উপনীয়মানং স্মর্জ্যং শোভনমস্ব্যং প্রযুবোতন প্রকর্ষেণ মিশ্রয়ত জন্মাভিঃ সার্জম্। এতৎ প্রার্থ্যতে বেনানেন বন্ধচারিণা আগল্পা আগমনশীলেন সমগন্মহি সাক্ষত্যমন্থতবেম, কিঞ্চ অরিষ্টাঃ অহিংসিতাঃ সঞ্চরেমহি গচ্ছামঃ। অরিষ্টাঃ ইতি রিষ হিংসাখাং, ন বিশ্বতে রিষ্টাঃ হিংসাত্মকং যেষামিতি বিগ্রহঃ, মন্ত্রপ্রাদেনাত্রাহিংসিতা অগ্নয়ঃ ! যুমৎপ্রসাদেন রিষ্টরহিতাঃ সঞ্চরাম ইতি ভাবঃ ৷ রিষ্টমশুভমিত্যর্থঃ ৷ কিঞ্চায়ঃ বন্ধচারী স্বন্ধি চরতাৎ অবিনাশীভূর পর্যাটভাম্ ৷ যুযোতন ইতি যু মিশ্রণে লোট্ শপঃলঃ তন্তানে তনপ্ আদেশঃ ৷

৩। হে গুরো! অহং ব্রদ্ধারির বিষ্ঠানির ক্র্মাণাম্ আগতবানিঝি, বিতঃ অতঃ মা মাম্ উপনর্য আগ্রসমীপং প্রাপ্র।

<sup>\*</sup> বন্ধনীমধ্যস্থপাঠঃ সর্বতে নান্তি।

<sup>🕆</sup> वर्षनीयशृष्ट्रशाठीः मर्ख्य वास्ति।

<sup>🕽</sup> ভাচার্যন্ত ইতি পাঠান্তরৰ।

প্কো হন্তাল্যাং হন্তং গৃভ্বামি অসৌ। (৪) অত্র অসাবিতি দর্মনাম্থানে নাশবকক অমুকদেবশর্মনিতি সংখাধনান্তং নাম প্রবাজকান্। ততো গৃহীতনাশবকহন্ত আচার্ব্যা জগতি—প্রজাপতিশ্ব বিরয়্যাদরো দেবতা উপনরনে গৃহীতমাণবকহন্তাচার্যাজনে বিনিরোগঃ। ওঁ অগ্নিন্তে হন্তমগ্রহীৎ সবিতা হন্তমগ্রহীদ্মিত্রশ্বসি কর্মণা অগ্নিরাচার্যাল্ডব। (৫) তত আচার্ব্যো মাণবকম্ অনেন মন্ত্রেণ প্রদক্ষিণং ভামপ্নিন্তা প্রায়ুণং কর্মোতি। প্রজাপতিশ্ব বিঃ প্র্যো দেবতা উপনরনে মাণবকক্তাবর্তনে বিনিরোগঃ। ওঁ প্রজাপতিশ্ব বিঃ প্র্যো দেবতা উপনরনে মাণবকক্তাবর্তনে বিনিরোগঃ। ওঁ প্রজাপতিশ্ব ক্রিনামন্তানে অমুকদেবশর্মপ্রতি সন্থোলান্তং মাণবকক্ত নাম প্রবোক্তব্যম্। ততো মাণবকক্ত দক্ষিণম্বত্বং ক্রিটেশশ্বনিরোগঃ। ওঁ প্রাণানাং গ্রন্থিরসি, মাবিজ্বসোহন্তক। ইন্নন্তে পরিদ্যাম্যমুম্। (৭) অত্রাম্মিতি সর্বনামন্থানে অমুকদেবশর্মাণ-বিতি দিতীয়ান্তং মাণবকনাম প্রযোক্তব্যম্। ততো মাণবকক্ত নাতেক্তন্পরিদেশম্ অনেন মন্ত্রেণ আচার্য্যঃ ক্র্মণতিশ্ব বির্বাহ্রেক্রাম্। ততো মাণবকক্ত নাতেক্তন্পরিদেশম্ অনেন মন্ত্রেণ আচার্য্যঃ ক্র্মণতিশ্ব বির্বাহ্রেক্রেল

ও। অসৌ হে দেবদওশর্থন্। তে তব হন্তং স্বিতৃঃ দেবল্প প্রস্বে অভাছভাবে সতি অখিনোঃ দেববৈভ্রোঃ বাহ্ভাং পৃষ্ণত দেবল্প হল্তাভাম্
অহ্যাচার্য্যঃ পাশিনা গৃহামি।

ধ। হে বন্ধচারিন্! সরা আচার্বোণ বোহরং তব হত্তো গৃহীতঃ পূর্ববরিঃ সবিতা অর্থান চ তং হত্তমগ্রহীৎ গৃহীতবান্ বতোহতোহনেন কর্মণা
গুরুগুলাদিলকণেন মন দং মিজোহদি ভবদি মিত্রং প্রিরকারি ছান্দসন্ত্রারিক্রান্তারঃ কিঞারির্ভগবান তব আচার্যাঃ গুরুরর।

৬। অসাবিতি সংঘাধনং হে বিষ্ণুশৰ্মন্। স্থ্যস্যাবৰ্তনামা আবৃত্ সম্পদাদিবাং কিপ্তাং অধাবৰ্ত্ত্ব, এতত্তস্ত্ৰবৃতি। বাবং ভগবতঃ স্থ্যস্ত অবস্থিতিতাৰ্ত্তমণি তিঠ ইতাৰ্থ:।

<sup>(</sup>१) হে নাভে! অন্ত ব্ৰহারিণ বং মা আবিজ্ঞসং ন বিজ্ঞানির স্থানাৎ মা চরিব্যসি। বতত্তং প্রাণানাং দেহধরিণাং গ্রন্থি: প্রতিবন্ধোহসি, কিঞ্চ হে অন্তক। বম! ইনমত ব্ৰহারিণঃ শরীরমমূক ব্রহারিণং ভে ভূডাং

উপনম্বনে ব্রম্কারিনাভাপরিদেশ-শর্শনে বিনিরোগ:। ও অভুর ইদত্তে পরি-मनाबायम्। (৮) जाला मानवकच क्रमत्राममम् व्यानन माखन व्यानिकाः শৃণতি—প্রস্লাপতির বি: কুশহর্দেবতা উপনয়নে ব্রহ্মচারি-ক্রমরদেশ-ম্পর্শনে বিনিরোপ:। ওঁ কুশন ইদন্তে পরিদদান্যমূন্। ( > ) তত আচার্ব্যো দক্ষিণেন পাৰিনা বাৰ্বকন্ত দকিব্ৰহ্মং শূৰ্ন অপতি-প্ৰভাপতিৰ যিং প্ৰভাপতি-র্ষেবতা উপনয়নে একচারিদক্ষিণয়দ্ধস্পর্শনে বিনিয়োগঃ। ওঁ প্রকাপতয়ে ভা পরিদলাম্যসৌ : (>•) অত্রাসাবিতি সর্বনামস্থানে অমুকদেবশর্মলিতি সংখাধনান্তং মাণ্যকনাম প্রবোক্তব্যম। তত আচার্য্যো বামেন পাণিনা মাণ্যকন্ত বামক্ষরং স্পূৰ্ন ক্ষতি—প্ৰজাপতিৰ বি: সবিভা দেবতা উপনয়নে বন্ধচারি-বা**ষ**ত্ধ-म्भर्नेत्व विविद्योतः। उँ त्मराय या मनित्व भतिममाम्यत्मे । उठ चाठार्त्या মাণবক্ষ অনেন মন্ত্রেণ সংখাধয়তি—প্রজাপতি অবির স্কারী দেবতা উপ-नग्रत्न ব্রশ্বচারিসম্বোধনে বিনিয়োগ:। ওঁ ব্রশ্বচার্য্যস্তর্গে। অত্রাগাবিতি সংখাধনান্তঃ অমুকদেবশর্মান্তি মাণবকনাম প্রবোক্তব্যম্। ভতঃ সংখাধিতং মাণ্বক্ম আচাৰ্য্য: প্ৰেষয়তি—প্ৰজাপতিশ্ববিত্ৰ শ্বচারী দেবতা উপনয়নে ব্ৰন্ধচারিপ্রৈষ্যে বিনিরোগ:। 🛊 ওঁ সমিধমাধেহি। ব্রন্ধচারী—ওঁ বাচুষ। 👶 অপোহশান। ত্রন্ধচারী—ওঁ বাচং। ওঁ কর্ম কুফ় † ভ্রন্ধচারী—ওঁ

পরিদলমি সমর্পরামি দলতিরত সমর্পণে বাতৃনামনেকার্ধবাং।—এতছক্ত-স্থবতি। দ্বরি সমর্পণে এব রোগজরামরণাদিকং নাম্প্রাপুরাদিতি তৎসম-র্পণেনারং জ্বামরণরোগাদিত্থেন ভিভ্রতে ইতি ভাবং। বিশ্রস ইতি স্রংসের্ভ্পুরাদিদ্বাদন্ভ্ স্পণ্ডাদম্বদ্লোগং।

- (৮) অভ্রিবায়: তে অভ্রে! বায়ো! ইদম্ অভ শরীরং অমুক্ষ ক্রম-চারিণতে পরিদ্বামি সমর্পরামি ইতি যাবং পূর্ববিদ্যাথ্যা।
- (১) কুশন ইতি কুশামুর বিস্তত্তামন্ত্রণে হে কুশনো! হে অংগ! ছান্দ্রস্থাৎ হুম্বন্। অবাদেশেংরাদিলোপে রূপন্। হে কুশন! অংগ! ইদ্যক্ত শরীরং অমুঞ্চ ব্রন্ধারিণত্তে দ্বামি সমর্পরামি। অঞ্চৎ পূর্ববিৎ।
- ( > ) খনৌ হে বন্ধচারিন্! তা তামহং প্রজাপভরে অট্টে পরিষদানি সমর্পরামি।

<sup>+</sup> বঞুবৌবানি অভন্দো নাভি।

<sup>†</sup> আপোহশানং কর্ম কুল ইভি কেবুচিৎ পুত্তকেষু পাঠং।

বাঢ়ং। ওঁ মা দিবা স্বান্ধাঃ। (১১) ব্রন্ধচারী—ওঁ বাঢ়ং। এবং ব্রন্ধচারী দর্মক্ত "ওঁ বাঢ়ং" ইতি ব্রন্ধাং। (তত স্বাচারাং মাণবকং কৌপীনং পরিধাপরেং।) \* ততঃ অগ্নেরুত্তরতো গল্পা স্বাচার্য্য উদগগ্রের কুশের প্রাল্প উপবিশতি। মাণবকোংপি পাতিতদক্ষিণজাহঃ উদগগ্রের কুশের স্বাচার্য্যাভিম্থ উপবিশতি। অথপনং মাণবকম্ স্বাচার্য্যা ব্রিপ্রেশ ক্ষণাং ত্রির্তাং মৌল্পমেথলাং পরিধাপন্ন মন্ত্রন্ত্যং বাচরতি। তত্ত্র ব্রন্ধচারিণঃ প্রবর্সংখ্যরা পঞ্চ বা ত্রন্নো বা মেথলাগ্রন্থাঃ কর্ত্বব্যাঃ। প্রজ্বাপতিশ্ব বিদ্যান্থাঃ। দেবতা উপনন্ধনে ব্রন্ধচারি-মেথলাগরিধাপনে বিনির্নান্যঃ। দুওঁ ইরং ত্রুক্তাং পরিবাধমানা, বর্ণং পবিত্রং প্রতী ম (ন) স্বাগাং। প্রাণাল্যাং বলমাবহন্তী স্বদা দেবী স্বভ্যা মেথলেরং॥ (১২) ওঁ শ্বতন্ত্র গোপ ত্রী

<sup>(</sup>১১) হে ব্রহ্মচারিন্! সমিধমগ্রে আধেহি প্রদক্ষিণে অগ্নিকার্য্যং কুরু।
তথা অপোশান পানীরক্ত ভক্ষণং কুরু। তদাহ বাজ্ঞবন্ধ্য:—আপোশানক্রিয়াপূর্ব্বমন্নাত্যন্নকুৎদরন্। তথা কর্ম কুরু শুক্রমাদিলক্ষণং কুরু। মা দিবা স্বাক্ষীঃ
'দিবানিজাং তাজ। তথা গৌতমোহপি ব্রন্ধচারিণমধিকৃত্য—বর্জ্জরেমধ্মাংসাদি
গন্ধ-মান্য-দিবাস্বপনিখমাচার্ব্যেণ উক্তো মাণ্বকঃ সর্ব্বে ওঁ বাঢ়মিতি ক্রয়াৎ।

<sup>(</sup>১২) हेन्नः প্রত্যক্ষীভূতা মেথলা মৌঞ্জী বশনা নো অস্মান্ প্রত্যাগাৎ আগতৰতী। কিং কুর্বাণা ? ছক্রকাৎ অসম্বদ্ধপ্রলাপাদিতঃ পরিবাধমানা অপসাররন্ধী নিবারমন্ত্রী বাধতিরত্র অপসারণে বর্ত্ততে। পুনঃ কিং কুর্বাণা ? ইন্নং মেখলা
বর্ণং ব্রাহ্মণাঞ্জাং পবিত্রমপি পুনতী পাবমন্তী। তথা চোক্তং—মাতুরক্ষেৎধিজননং
দ্বিতীন্ধং মৌঞ্জীবন্ধনাৎ। পুনঃ কিং কুর্বাণা ? প্রাণাপানাভ্যাং বলমাবহন্তী
বলং বীর্য্যং প্রাণে। নাতের্দ্ধমুখনাসিকাগতির্বান্ত্রং অপানো নাতেরধোগতিবান্ত্রঃ তন্মোরধোহপানং তাভ্যাং বান্ত্র্যাং তন্মোর্বলমাবহন্তী উৎপাদমন্তী
আনমন্ত্রীতি যাবৎ, তথা স্বসা ভগিনীব পরার্থে মৃজ্যমানাঃ শব্দা ইবশব্দেন
বিনাপি ইবার্থং গমন্ত্রি। দেবী দেবনাদিগুণ্যুক্তা স্বভ্র্যা সকললোকাভিল্মণীয়া। ছক্রকাদিতি দ্বিতীয়ার্থে পঞ্চমীবিভক্তিঃ ব্যত্যয়াৎ ছক্তকং
পরিবাধমানেত্যর্থঃ।

বন্ধনীষণ্যন্থপাঠঃ সর্ব্বত নান্তি।

<sup>†</sup> ৰাণবৰুৰাচনে ইভি কল্মিংশ্চিৎ পুস্তকে পাঠঃ।

তপসং পরখী, মতী রক্ষং সহমানা অরাতীং। সা মা সমস্তমভিপর্ব্যেহি ভব্দে, ধর্ত্তারন্তে মেখলে মা রিষাম॥ (১৩) তত আচার্ব্যো বজ্ঞোপনীতমেকং \* মাণবকম্ অমুং মন্ত্রং পাঠয়ন্ পরিধাপয়তি—প্রজাপতিশ্বির্যজ্ঞোপনীতং দেবতা উপনয়নে ব্রন্ধচারি-বজ্ঞোপনীতপরিধাপনে বিনিয়োগং। ওঁ বজ্ঞোপনীতমি বজ্ঞাপ বজ্ঞাপনীতেনোপনহামি। (১৪) ততঃ প্রজাপতিশ্বিষিত্রিপ্ ছন্দোহজিনং দেবতা উপনয়নে ব্রন্ধচার্যজিনপরিধাপনে বিনিয়োগং। ওঁ মিত্রস্তা চক্র্ব্রণং বলীয়ন্তেজোমশ্বী স্থবিরং সমিদ্ধং। অনাহনস্তাং বসনং জরিষ্কু, পরীদং বাজ্যজিনং দ্বেহহং॥ † (১৫) ইত্যনেন

<sup>(</sup>১৩) হে ভদ্রে কল্যাণবৃতি ! হে মেখলে ! যা ছং ব্রহ্মচারিসম্বনিনঃ ঝতক্ত সভ্যক্ত গোপ্ত্রী পালরিত্রী তথা তপসঃ ব্রহ্মচর্যাক্ত পরস্বী সর্বস্বভূতা। পুনঃ কীদৃশী ? দ্বতী রক্ষঃ বক্ষাংসি হিংসম্ভী অভোহরাতীঃ শত্রন্ সহমানা অভিভ্রম্ভী অরাতীরিভিব্যন্ত্যমেন ক্রাছম্। সা এবস্কৃতা মা মাং সমস্তং সমস্তাৎ অভিপর্যোহি, আভিমুখ্যেন সর্বত আগচ্ছ বেষ্টয় ইত্যর্থঃ। বেন তে তব বয়ং ধর্তারঃ তেন মা রিষাম মা হিংসিক্ষহি, এতছ্কুস্তবৃতি—বক্ষাত্তব ধারকা বয়ং তক্ষাদক্ষাম্ম হিংসাবৃদ্ধিন ভব্তু ইত্যর্থঃ।

<sup>(</sup>১৪) হে স্ত্র! তং যজ্ঞোপবীতম্ যজ্ঞেন ষজ্ঞকর্মণা উপ অধিকং বেতি শোভতে ইতি যজ্ঞোপবীতং অসি ভবসি। তা তাং ষজ্ঞস্ত ষজ্ঞপুরু-ষস্ত সম্বন্ধিনা যজ্ঞোপবীতেন উপনহামি অধিকং বগ্গমি একীভূতং করোমী-ত্যর্থ:।

<sup>(&</sup>gt;६) षशः अक्षानित्री তেজোনশন্তী অক্ষতেজ্যা থ্যাতিমান্ ভবিতৃং
हेमम् ष्यक्षिनम् ष्यक्षिनक्षम् त्रमनम् উত্তরীয়ः বাদः পরিদধে ধারয়ামি।
কিন্তুতম্ অঞ্চিনন্? মিত্রশু চকুঃ স্থ্যশু দর্শকম্ বরুণশু আবরকম্ বলীয়ঃ
দৃঢ়তরম্ স্থবিরং স্থলম্ সমিদ্ধং উজ্জ্ঞলম্ অনাহনশুং মলাপকর্ষণার্থং পাষাণাদে।
ন আহস্তব্যং জরিষ্ণু জরণশীলং দীর্ঘকালস্থায়ীত্যর্থঃ, তথা বাজি যজ্ঞার্হন্।
অনাহনশুমিতি আঙ্পূর্বাৎ হন্ধাতোর্জাবে অস্ত্রন্ আহনঃ আঘাতম্ অর্থভীতি আহনস্যং ন তথা ইতি। পরিদধে ইতি ব্যবহিতোপসর্গেণ সম্বনঃ।

<sup>\*</sup> তথা চ স্থতিঃ—ব্ৰহ্মচারিণ একং স্থাৎ লাভস্ত বে বহুনি চ। তৃতীয়সূত্রীয়ং বা ৰগ্নান্ধাবে তদিবাতে।

<sup>†</sup> এতন্ত্ৰবন্ধ গোভিলেৰ নোজং গুণবিফুলা চল ব্যাখ্যাতম্। স্নার্ভেন ধৃতম্।

কৃষ্ণসারাজিনং পরিধাপয়তি। ততো মাণবক জাচার্যান্ত উপসরো \* ভবতি। প্রজাপতিয় বিরাচার্ব্যো দেবতা জাচার্য্যায়য়্রণে বিনিয়োগং। ও জাবী ভিলঃ সাবিত্রীং মে ভবানমুরবীতু। † (১৬)—ইতি ক্রবাণং। ততন্তম্ উপসয়ং মাণবকম্ জাচার্য্য: প্রথমং পাদং পাদং, ততঃ জর্জমর্জং, ততঃ ক্রংসাং সাবিত্রীম্ জাধাপয়েরং। বথা—বিশামিত্রশ্বির্গায়লীছেলং সবিতা দেবতা জপোপনয়নে বিনিয়োগং। "তৎ সবিত্র্ব্রেরগাং" –ইতি প্রথমং পাদম্। "ভর্মো দেবত্র ধীমহি" ইতি বিতীয়ং পাদম্। "ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ"—ইতি তৃতীয়ং পাদম্; ও তৎ সবিত্র্ব্রেবাণ্ড, ভর্মো দেবত্র ধীমহি—ইতি প্রার্জন্ব, বিরো মা নঃ প্রচোদয়াৎ ইতি উত্তরার্জম্। ও তৎসবিত্র্ব্রেরণ্ডং, ভর্মো দেবত্র ধীমহি। ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ। (১৭)—ইতি কৃৎমাং সাবিত্রীং বারত্রয়ম্ জায়াপয়েরং। ততো মাণবকম্ জাচার্য্যো মহাব্যাহাতীঃ পৃথক্ পৃথক্ কৃত্যা উকারপ্রিকা জায়াপয়েরং। বানিয়োগঃ। ও ভঃ।

<sup>(</sup>১৬) আচাৰ্য্য: প্ৰথমমূপদিশতি ভো মাণ্বক ! অধীহি অধীয়। তদফুল্লাং প্ৰাপ্য মাণ্বক আহ—ভবান্ সাবিত্ৰীং মে মহুং অমূত্ৰবীতৃ
উপদিশতু। অত্ৰ ভাষ্যম্—অধীহি অধ্যাপয়।

<sup>(</sup>১৭) সাবিত্রীয়ম্। ভগবতঃ সবিতঃ আদিত্যক্ত দেবক্ত দেবলাদিগুণযুক্তক্ত বরেণাং বরণীয়ং ভর্গঃ তেজঃ তদ্ ভলনীয়ং সেবনীয়ং বং তং ধীমহি
চিন্তরামঃ। ধীমহীতি গৈ চিন্তায়াম্ (য়ঃ) সবিতা নো অসাকং থিয়ঃ
বৃদ্ধীঃ স্থানাধ্যয়নদানহোমাদিম্ কর্মস্থ প্রচোদমাৎ প্রেরয়েং। প্রবর্তরেদিতার্থঃ। উদিতে হি ভগবতি মরীচিমাদিনি সকলকর্মাণি প্রবর্তন্তে,
অন্তমিতে তুনিবর্তন্তে। ভৃঃ পৃথিবী ভূবঃ অন্তরীক্ষং সম্প্রেণঃ ওঁ আ্লা
এতত্তক্তং বৈলোক্যাছানঃ প্রতিপ্রতে।

কুতাপ্লনিপ্ট আচার্যাপতচক্রপদর ইতার্থ:।

শুলাপতিঋ বিরক্ষিক্ ছন্দো বায়্দে বিভা মহাব্যাহতিপাঠে বিনিরোগঃ।
ভ তুবঃ। প্রজাপতিঋ বিরক্ষই প্ছন্দঃ স্থা্যো দেবতা মহাব্যাহতিপাঠে বিনিরোগঃ। ভ স্বঃ। ততঃ সপ্রণবব্যাহতিকাং প্রণবান্তাং গায়ন্ত্রীমধ্যাগারে। বথা—ভ ভূর্ত্বংস্বঃ। তৎ সবিত্বর্বেগ্যঃ, ভর্গো দেবক্স বীমহি। বিয়ো য়ো নঃ প্রচোদরাৎ ভ। ততো বৈষং পালাশং বা মাণবকপরিমাণং দণ্ডং \* মাণবকায় প্রবছ্মাচার্য্যো মাণবকং বাচরত্তিপ্রজাপতিঋ বিঃ পঙ্কিশ্ছন্দো দণ্ডায়ী দেবতে উপনয়নে মাণবকদণ্ডার্পনে বিনিয়োগঃ। ভ স্থাবঃ স্থাবাং মাত্রাহা বথা অমগ্রে স্থাবঃ স্থাবা দেবেবেবমহং স্থাবঃ স্থাবা বাদ্মণের ভ্রাসম্। (১৮) অথ গৃহীতদণ্ডো † ব্রদ্ধারী ভৈক্যং প্রাথিয়েৎ, তত্র প্রথমং মাতরং ‡ ভ ভবতি ভিক্ষাং দেহি

ইতি। ততো লক্ষভিক্ষো মাণবকঃ ও স্বন্ধি ইতি ক্রয়াৎ; এবং সর্ব্রত্ব। ততো মাত্রক্ষপ্রিয়ঃ। ততঃ পিতরং—ও ভবন্ ভিক্ষাং দেহি—ইতি

<sup>(</sup>১৮) দণ্ডং গৃহুন্ ব্রদ্ধারী তমগ্রিক প্রার্থরতে। হে স্থাবঃ ! শোভনযালঃ ! ক্রাতে ইতি প্রান্থ যালে হিতিধীয়তে শোভনং যালে যাল স স্থাবাঃ
তক্ত সংখাধনং শোভনকীর্ত্তে দণ্ড! এতত্তজ্ঞবতি—যথা তং বেদস্বীকরণ-ধারণ-তত্তক্ত্র্চানেন লোকে খ্যাত্রশাঃ তথা মামপি স্থাবসং
যালোভাজনং কুরু। যালপি অচেতনত্বাৎ দণ্ডল্ড বেদস্বীকরণাদ্যত্যস্তাসন্তবতথাপি তদ্বিচ্চাত্দেবতাভিপ্রায়েণ বোদ্ধব্যম্। এবমগ্নিং প্রার্থরতে—
হে অগ্নে! স্থাবঃ! স্থাব ইতি পুনঃ পুনরামন্ত্রণ দণ্ডাদগ্রেরাদ্রাতিশয়মাহ,
যথা তথা বিধান ক্রাদির্ মধ্যে স্থাবাঃ এবমহং ব্রান্ত্রণম্বা ভ্রাসং ভবামি।

<sup>†</sup> কেশান্তিকো ব্রহ্মণক্ত দণ্ডঃ কার্য্যঃ প্রমাণতঃ। ললাইসন্থিতো রাজ্ঞঃ স্তান্ত্র নাসা-ভিকো বিশঃ। ঋষবন্তে তু সর্কে স্থারব্রণাঃ সৌমাদর্শনাঃ। অমুদেগকরা নুণাং সভ্চো নাগ্নিভ্রিতাঃ।

<sup>া</sup> অত গোভিল:—মাতরমেবাত্মে ছে চাজে হছদো যাবতো বা সন্নিহিতা: হ্যারিতি। তথা মহ্ম—মাতরং বা বসারং বা মাতুর্বা ভগিনীং নিজান্। ভিক্ষেত ভিক্ষাং প্রথমং বা চৈনং ন বিমানরেং।

প্রতিবেং। ততঃ অক্তাংক। স্বর্ধং লবং ভৈক্যম্ আচার্যার নিবেদরেং। क्ष् আচার্ব্যাথপি উপযুক্তাতামিতি অকুলাং দভাং। ততঃ পূর্ববিদার্ব্যাণ ব্যস্তসমন্তমহাব্যাহাতিহোমং (१৫পৃঃ ৪পং) রুষা, প্রাদেশপ্রমাণাং মৃতাক্তাং সমিধং তৃষ্ণীমগ্রে ছবা শাট্যারনহোমাদি-বামদেব্যগানান্তং কর্ম সমাপরেং। † (১৫ পৃঃ ১২ পং) ব্রন্ধারী তৃ দক্ষিণং জাহু ভূমো পাতরিবা সম্ভবনামানম্ আরিং সংস্থাপ্য, সমিজামং কুর্যাং। তত্র প্রথমং প্রাদেশপ্রমাণ-মৃত্যাক্ত-সমিত্ররম্ আদার, আভন্তরোল্যভূষীং, মধ্যে অনেন মন্ত্রেণ জুল্রাং—প্রজাপতি-শ্বির্গিদে বতা ‡ অগ্রে সমিদাধানে বিনিরোগঃ। ও অগ্রন্থে সমিধ্যাহার্যং শ বৃহতে জাতবেদসে। যথা অমগ্রে সমিধা সমিধ্যক্তেব্যহ্মায়্যা মেধ্যা বর্জসা প্রজ্যা পশুভির্ম ন্মর্ক্তসেন ধনেনারাতেন সমেধিষীয় স্থাহা। (১৯) ততঃ। ও অমুকগোত্তঃ প্রাহং বিস্কা § অতীতায়াং সন্ধ্যায়াং ভিক্ষালক্ষরম্

<sup>(</sup>১৯) ব্রন্ধচারী ত্রতে—শ্বহমগ্নরে সমিধমাহার্যং আহতবান্। কিন্ত্তার ?
বৃহতে মহতে জাতবেদদে জাতপ্রজ্ঞানার। হে অগ্নে! বথা অমনরা
সমিধা বজ্ঞকাঠেন সমিধ্যদি দীপ্যদে এবমনেন প্রকারেণাহমিপি
বন্ধচারী আয়ুবা জীবিতেন মেধরা বেদগ্রহণধারণ-রূপরা বৃদ্ধ্যা বর্চ্চদা দীপ্ত্যা
প্রজ্রের উত্তরকালভাবি-প্রপোত্রনস্ততিরূপরা পশুভিঃ গ্রাদিভিঃ বন্ধবর্তিরূপর
বাস্ম্যেন তেজ্পা ধনেন বিত্তেন অরাভেন বীহিধবাদিনা সমেধিবীর
বৃদ্ধিমাপুরাম্।

<sup>\*</sup> গৃহান্তরে—ভৈক্যাং ভোরিত্যাচার্যায় ভৈক্যাং নিবেঞ্জ দত্তং প্রতিগৃহীরাৎ ইতি উক্তং প্রতি-পালনীয়ন। তথা চ—ঘরামাতং ক্শাধারাং পরোক্তমবিরোধি চ। বিষ্ঠিতদমুঠেরমগ্রিহোত্তাদি-স্থর্মবং ইতি বচনাং।

<sup>†</sup> ব্ৰহ্মচারী তু প্রাপ্তারাং সন্ধ্যারাং তামুপান্ত ততঃ কুশণ্ডিকোজবিধিনা শিথিনামানমগ্নিং সংস্থাপ্য ও ইহৈবায়মিতর ইতি জগু। ইতি পাঠান্তরন্।

<sup>‡</sup> यङ्त्रिनः ছल्मा नास्ति।

পা অহার্ধমিতি বহুর পুস্তকের দৃশুতে।

জ কমিংশিং পুতকেংতিরিক্তঃ পাঠো বর্ততে যথা—চক্রাদীল্রিয়োপচাবে বন্ধচারিশা

 জনেন মন্ত্রেণ প্রারশ্চিত্তার্থং বে আছতী আজালিগুসমিত্তাং হ্রেরতে, যথা—ও পুনর্বামেছিল্রিয়ং
পুনরায়্রং পুনর্জাঃ। পুনর্জ বিগমেত্ মাং পুনর্জা প্রমানঃ। পুনরায়া ম আগাৎ পুনশুক্রং পুনঃ

 জোত্রং ম আগাৎ বৈধানরোছদধ্যতমুপোহতত্ত্বের মনোহমৃতত্ত কেতৃঃ বাহা।

चकात्रगर्थः ◆ मद्मुख्य खेनर्कनाज्यः † ७ चमुर्डाभ्यत्रभ्यति चाल् देखि चार्थामानः कृषा, मध्यमानामिकाकृष्ठं-खिश्वर्त-गृहीर्डनार्यन ७ श्रामान्न चाहा, ७ चशानात्र चाहा, ७ ममानात्र चाहा, ७ खेनानात्र चाहा, ७ ब्रामान्न चाहा देखि श्रक्षाह्यज्ञीत्रख्यद्युज्ञ, मर्व्य श्रीमाह्यित्मयः ज्ञाने निक्तिश्र, वामहर्ष्ठ-विश्वरु-खाक्रनशाखा वाग् स्टा ज्ञांछ। खाङ्गनायमात्म ह ७ चमुङ्गिधानम्मि चाहा देखि श्रूनतार्थामानः कृषा चाहारमः। खङ्गिकार्याः ममार्य्वन्यं स्मार्थ्यः स्वाद्यक्ष्म चर्मन करम् याव्यक्षीरः कर्वराम्। देखि खेश्वरम् चर्माश्यम्।

#### অথ সাবিত্রচরুহোমঃ

অথ চতুর্থেহ্নি সাবিত্রচক্রহোম:। তত্র প্রথম: পিতা পিতৃরতো ব্রহ্মচারিরতো বা অক্ত এবাচার্য্য: সমুদ্তবনামানমগ্রিং সংস্থাপ্য প্রাত্মধ উপবিষ্ট: তন্মিরেব অংগ্রী চরুং শ্রপয়েৎ। তস্তামুষ্ঠানং যথা—অংগ্ন: পশ্চি-মারাং দিশি প্রাগগ্রান্ কুশান্ আন্তীর্যা, তত্পরি প্রকালিতানীতং বারুণ-मृत्थल-मृत्रलः, देवनवक मूर्नः तांक्रन-ठममञ्चलन-८थाक्विजः मःशांभा, बीहीन यवान वा मूटर्न निधाय, उ मविटल वा जुरे: निर्वाशायि देखि काः अशास्त्रव চরুস্থাল্যা বা উদ্থলে স্থাপরেৎ, **दिखृक्षीम्। ততো দক্ষিণহস্তম্পরি রুত্বা** মুষলেন অব্হত্য শূর্পেণ প্রক্ষোটয়েং। ইখমেব বারত্রয়ং কৃত্বা, তিঃ প্রকাল্য, চকুম্বাল্যাম্ অমন্ত্রকুডোতরাগ্রং পবিত্রং নিক্ষিপ্য, তত্ত্পরি প্রকালিত-**उ**ण्डुनान निधान, इक्षः निक्निश ट्यांकः ट्यांकम् डेनकः एखा, उन्नद्धा अहित्र-পলালোডুম্বাণাম অক্তমশু প্রাদেশপ্রমাণম্ উভয়তঃ সাদ্ধাকুষ্ঠপ্রমাণ-চতুকোণ-পুষ্করং ‡ মেক্ষণং দক্ষিণাবর্ত্তেন ভ্রামশ্বিত। তথা পচেৎ, যথা অস্তক্ষণা সম্যক্ পাকো ভবতি, মণ্ডগালনং দাহত ন ভবতি। সম্যক্-পাকে ভূতে মধ্যে ঘুতক্রবং দত্তা জলদগ্নিনা ঈশানকোণাদারভ্য চরুং প্রদক্ষিণীক্বত্য ভমগ্নিং তত্ত্বৈবাগ্নো ক্ষিপেৎ। ততশ্চক্রমধ্যে ঘতক্রবং দল্পা প্রাগাদি-দিক্চিহ্নিতং চরুম অবতার্যা অগ্নেরুত্তরতঃ কুশোপরি স্থাপরিখা, পুনর্মধ্যে

<sup>\*</sup> তথা চ শ্বতিঃ—গোক্ষীরং গোয়তঞ্চৈব ৰাজ্য মূল্যান্তিলা বৰাঃ। অক্ষারলৰণা হেছে । কারান্চান্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ। হবিব্যে গোয়তং মূৰ্য্য তদভাবে তু মাহিবম্। ইতি চ।

<sup>া</sup> প্রথমং ভূমে পঞ্চ অনুভাগান্ ও নাগার নমঃ ও কুর্মার নমঃ ও কুক্রার নমঃ ও ক্রেরার নমঃ ও দেবদভার নমঃ ও ধনপ্রবার নমঃ ইতি বাহুপ্রাণেভ্যঃ নিবেদরেৎ ইভি গও ব্পক্রিঃ।

<sup>‡</sup> পুৰুৰং মুখমিতাৰ্থঃ।

শ্বতজ্বং দছাং। ততঃ ভূমিৰপাদি-জ্বসংস্কার-পর্যন্তং কর্ম কৃতা অগ্নেঃ পশ্চিমতঃ তরণকুশোপরি পূর্বমাজ্ঞাং পশ্চাচ্চক্রং নিধার উদকাঞ্জলিসেকং ক্ষতা বিরূপাক্ষপান্তাং কুশণ্ডিকাং সমাপ্য প্রকৃতকর্মারন্তে প্রাদেশ-প্রমাণাং দ্বতাক্তাং সমিধং ভৃষ্ণীমগ্নৌ প্রক্ষিপেৎ। স্বাজ্যতন্ত্রোপক্রমবিহিতস্ত মহা-ব্যাহতিহোমঃ চক্রহোমত্বাৎ অশু প্রথমং ন কর্ত্তব্যঃ, অল্পে তু কর্ত্তব্য এব বিহিতত্বাৎ। যদি সংক্ষেপ: অপেক্ষিত:, জুহুর্বা ন প্রাপ্যতে, তদা চরুষধ্যে মৃতক্রবং দম্বা, তত্ত্রৈব মেক্ষণেন সক্রদন্ধং গৃহীত্বা, অগ্নিমধ্যে ওঁ সবিত্তে স্বাহা ইতি জুহুরাৎ। ততো মেক্ষণমশ্লে তৃঞ্চীং হ্রা, মহাব্যাহ্নতিহোমং (৪২ পৃঃ) কুত্বা, প্রাদেশপ্রমাণাং দ্বতাক্তাং সমিধং তৃষ্ণামগ্রে হব প্রকৃতং সমাপ্য উদীচ্যং শাট্যা-बनट्यांमि-नामटमनाशीनासः (১৫ शः ১২ शः) निर्वरकार्गाम प्रक्रिन। द्वा। অর্থ পিতৈবা চার্য্যন্তদা কর্ম্মকারয়িত্তান্ধণায় দক্ষিণা দেয়া। অথ ফলভুয়ন্ত্মপে-কিতং, জুহুক \* প্রাপ্যতে, তদা ভার্গবাদিপ্রবরাণাং জুহ্বাং পঞ্চ ম্বতক্রবান্ मचा, रेजब्रश्ववंगांगः चुठ्यक्रवहजूरेबः मचा, व्यव्यक्रखब्रजारम श्राम्बीम् আব্যধারাং "ওঁ অগ্নমে স্বাহা" ইতি জুত্যাৎ। † তথৈব অগ্নের ক্লিণভাগে "ওঁ শোমায় স্বাহা" ইতি জুহুয়াৎ।—স্বৰ্থ যদি ভূগুগোত্তো ভাৰ্গবপ্ৰববো বা বন্ধ-চারী, তদা জুহ্বাং দ্বতক্রবমেকং, চরোম ধ্যে চ দ্বতক্রবমেকং দত্তা তত্তিব মেকণেন অন্নম্ অবদার ‡ জুহ্বাং স্থাপরেৎ; অবদানস্থানে চ চরে ঘুত-ব্দবং দভাৎ। ততশ্চরো: পূর্বভাগে মু চক্রবং দত্তা, তত্তৈব মেক্ষণেন অন্নম্ **অবদার পুনরপি জুহ্বাং স্থাপরেৎ ; অবদানস্থানে** চ চরৌ মৃতক্রবং দ্র্যাৎ। ততকরো: পণ্ডিমভাগে ঘৃতক্রং দ্রা, তত্তির মেক্ষণেন অনুম্ অবদায় পুন-্রপি জুহ্বাং স্থাপয়েৎ; অবদানস্থানে চ চরৌ স্বতক্ষবং দছাৎ। ততো জুহ্বাং সর্কোপরি দ্বতক্রবং দর্বা, অগ্নিমধ্যে "ওঁ সবিত্রে স্বাহা" ইতি জুত্বরাৎ।— **অও অন্ত**গোত্তঃ অন্তপ্রবরো বা ব্রন্ধরারী, তদা চরোঃ পশ্চিমভাগে স্বৰুজ্জবং मचा व्यवनानः न कर्ववाः, किन्द बूट्याः घुठक्रवः मञ्जा उक्रमत्या श्रीकावर्त्त-ৰমেব, চরোরূপরি চ ম্বতক্ষবং দত্তা হোতব্যম্।—ততো ভার্গবাদিপ্রবরো বদি বন্ধারী, তদা জুহ্বাং ম্বতক্ষবদ্ধং দ্বা, চরোঃ পূর্ব্বোত্তরভাগে দম্বা. ডব্ৰৈব মেক্ষণেন চরোব্তত্রময়ং গহীত্বা

পলাশকাচনির্দ্মিতাদ্ধিচন্দ্রাকৃতি বজ্ঞপাত্রব্ জুরুরিভামর: ।

<sup>, †</sup> अञ्परिक अर्थाविष्टा मृष्टिश्रहन्मिन कर्त्रवाम्।

<sup>🗜</sup> অবদার থওশ: আদার ইত্যর্ব:।

স্থাপরেং; অবদানস্থানে চরৌ মৃতক্রবং ন দছাং। ততো জুহুত্ব-চরৌরুপরি মৃতক্রবন্ধরং দল্লা, অশ্নে: পূর্ব্বোতরভাগে "ওঁ অগ্নরে মিইকুতে মাহা" ইতি জুহুরাং।—অথ অন্তগোত্তঃ অন্তপ্রবরো বা ব্রহ্মচারী, তদা প্রথমম্ এক এব মৃতক্রবো জুহুবাং দাতব্যঃ।

ইতি সাবিত্রচক্রহোম:।

#### অথ সমাবর্ত্তনম্

কৃতবেদাধ্যয়নন্ • আচার্য্যাত্মতং মাণ্বকং সমাবর্ত্তরেও। তত্র প্রাত:-কৃতস্মানঃ কৃতবুদ্ধিশ্রাদ্ধঃ পিতা কৃতবুদ্ধিশ্রাদ্ধেণ পিত্রা বুতো ব্রন্মচারিবুতো বা এবাচার্যা: তেজোনামানমগ্রিং সংস্থাপ্য বিরূপাক্ষরপান্তাং কুশ-গুকাং সমাণ্য মাণ্যকং দক্ষিণে নিধায়, প্রকৃতকর্মারন্তে প্রাদেশপ্রমাণাং ম্বতাক্তাং সমিধং ভূঞীমগ্নে। ছত্মা মহাব্যান্ততিহোমং কুর্যাাৎ। প্রজাপতিশ্ব বির্ণায়ত্রাছন্দোহগ্নিদে বতা মহাব্যান্ততিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূঃ প্রজাপতিশ্ববিকৃষ্ণিক্ ছন্দো বায়ুদেবিতা মহাব্যাহাতিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূব: স্বাহা। প্রজাপতিশ্ববিরুষ্ট্রপ্ ছন্দ: স্র্যোদেবতা মহাব্যান্থতিহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ খঃ স্বাহা। তত আচাৰ্য্য: পঞ্চাহতী-জুভিয়াও। যথা-প্রজাপতিশ্ব বির্গ্নিদে বিভা সমাবর্তনহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ অরে ব্রতপতে ব্রতমচারিষং 🕆 তত্তে প্রবর্ণীমি তদশকং তেনারাৎ সমিদমহ-মনুভাৎ সত্যমুপাগাং স্বাহা। (১) প্রজাপতিখবিবায়দে বিঠা সমাবর্জনহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ বায়ো ব্রতপতে ব্রতমচারিষং তত্ত্বে প্রবরীমি তদশকং তেনারাৎ সমিদমহমনৃতাৎ সত্যমূপাগাং স্বাহা। প্রজাপতিশ্ববিং স্বর্ব্যো দেবতা সমাবর্ত্তনহোমে বিনিয়োগ:। ও সূর্য্য ব্রত্তপতে ব্রতমচারিবং তত্তে প্রবীমি তদৰকং তেনারাৎ সমিদমহমনূতাৎ সত্যমূপাগাং স্বাহা। প্রজা-পতিৰ বিক্তম্ৰো দেবতা সমাবৰ্ত্তনহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ চন্দ্ৰ ব্ৰতগতে ব্ৰভ-মচারিষং তত্তে প্রবরীমি তদশকং তেনারাৎ সমিদমহমনুতাৎ সত্যমূপাগাং প্রজাপতিথ বিরিজ্ঞো দেবতা সমাবর্ত্তনহোমে বিনিরোগ:। ও খাহা।

<sup>(&</sup>gt;) অশ্বে ব্ৰতণতে ইত্যাদিমন্ত্ৰণঞ্চক্যা ব্যাখ্যা উপনয়নে দ্ৰষ্টব্যা। পরস্ক ৰত্ৰ ৰত্ৰ ভবিশ্বতি প্ৰয়োগঃ তত্ৰ তত্ৰ অভীতে লুঙি প্ৰয়োগঃ কৰ্তব্যঃ।

कुछत्वमावात्रनञ्चला त्किम्ब देत्वरचार्व्यस्थलामि वक्रक्टेवर शांत्रविष्ट ।

<sup>†</sup> অচার্যং ইভি কচিৎ পাঠ:।

বভামাং ব্ৰতপতে ব্ৰভমচারিবং তত্তে প্রব্রবীমি ভদশকং তেনারাৎ সমিদমহমনৃতাৎ সত্যমুপাগাং খাহা। তত আচার্য্য উদগগ্রের কুশের্ উত্ত-রাভিমুখ উপবিশতি, ব্রহ্মচারী তু আচার্য্যক্ত পশ্চিমোত্তরকোণে উদগগ্রের কুশেবু প্রাঘ্যুথ উপবিশতি। ততঃ শীতোঞ-মিপ্রিভাভিরভঃ ত্রীহি-বব-মাব-মুদ্গাভোষধি-যুক্তাভি: চন্দনাদি-গদ্ধবাসিডাভি: পাঁত্ৰাস্তরন্থিতাভি: স্বাঞ্চলিং পুরশ্বিষা ব্রহ্মচারী আচার্য্যপ্রেরিতঃ অনেন ময়েণ ভূমৌ উদকাঞ্জলিং ত্যবেৎ-প্রজাপতিশ্ব ষিরগ্নরো দেবতাঃ \* সমাবর্ত্তনে ব্রহ্মচার্ দকাঞ্চলি-ত্যাগে বিনিয়োগ:। ওঁ যে অপ্সুস্তরগ্নয়: প্রবিষ্টা গোহু উপগোহো ষক্রকো মনোহা:। থলো বিরুজন্তনূদ্ধিরিক্রিয়হা অতি তান্ৎ স্ঞামি।(২) ততঃ অপরমঞ্জলিং পূরমিলা, অনেন মন্ত্রেণ ভূমৌ ত্যক্তেৎ-প্রকাপতি-ৰ বিবৃহতীচ্ছন: † অপাং ঘোরকুরাশাস্তরপাণি দেবতাঃ সমাবর্ত্তনে बन्नाठाय्राहकाञ्चलिकारा विनित्राधः। उ यहभाः रशातः यहभाः कृतः ৰদপামশান্তমভি ( অভি ) তৎ স্থলামি। (৩) ততঃ পুনরপি আচার্য্যপ্রেষিতো বন্ধচারী তাভিরত্তি: স্বাঞ্চলিং পূর্বার্থা, অনেন মন্ত্রেণ আত্মানমভিষিঞ্চেৎ— প্রকাপতির্ধাধী রোচনোহয়িদে বতা সমাবর্তনে ত্রন্মচার্যুদকাঞ্জলিদেকে বিনি-রোগ:। ওঁ যো রোচনন্তমিহ গৃহ্লামি। তেনাহং মামভিষিঞ্চামি। (৪)

<sup>(</sup>२) যে অধায় বক্ষ্যাপাঃ অপ্লু অন্তঃ মধ্যে প্রবিষ্টাঃ, কে পুনন্তে ? গোহঃ উপগোহঃ মরকঃ মনোহাঃ থলঃ বিরুজঃ তমুদ্ধিঃ ইন্দ্রিয়হাঃ তান্ এতান্ অষ্টো অথান্ কুলদ্যণান্ অতিস্ঞামি ত্যজামি। যেনেদং জলং মম স্নানবোগাং ভবন্বিত্যর্থঃ। মনোহা ইন্দ্রিয়হাঃ ইতি জহাতেঃ কিপ্।

<sup>(</sup>৩) অপাং সম্বন্ধি বং খোরং ভীমং বং চ ক্রুরং নির্চুরং বচ্চ অশাস্তং ক্রজাকরং তৎ সর্ক্ষাভিস্থলামি অভি সর্ক্রতোভাবেন ত্যজামি, এতংত্যাগে প্রয়োজনং প্রাপ্তক্ষ্।

<sup>(</sup>৪) গোহাদিভ্যোংগ্লিভ্যো যো রোচনাখ্যোংগ্লিঃ দীপ্তিকরঃ তম্ ইহ সমাবর্ত্তনকর্মণি অহং ব্রহ্মচারী গৃহামি। গ্রহণভা ফলমাহ, তেন রোচনেন জলাভ্যাহিতেন মাং আত্মানমহন্ অভিষিঞ্চামি আভিমুখ্যেন ভাপরামীত্যর্থঃ। কিমর্থং ? বশ্বে ইত্যাদি।

<sup>\*</sup> वस्तिनः स्टना माखि ।

<sup>🕂</sup> বনুরিদং তেন ছন্দো নান্ডীতি বহপুত্তকসন্মতন্।

ততঃ প্নরপি প্র্বিদেব স্বাঞ্চলিং প্রন্থিব।, অনেন মন্ত্রেণ আত্মানমতিবিক্লেৎ—প্রকাপতিথাবী রোচনোহিন্নিদেবতা সমাবর্ত্তনে ব্রন্ধচার্ গিলাঞ্জনিসেকে বিনিরোগঃ। ওঁ বশসে তেজসে ব্রন্ধবর্তসার বলারেজিয়ার বীর্যায়ায়াল্
ভার রায়পোষার বিষ্ট্যা অপচিতৈয়। (৫) ততঃ পুনরপি উদকাঞ্জলিং গৃহীয়া
অনেন মঞ্জেণ আত্মানম্ অভিবিঞ্চেৎ—প্রজাপতিশ্ববিঃ ষড়ইকা মহাপঙ্জিস্থানোহিনি দেবতে সমাবর্ত্তনে ব্রন্ধচার্ দেকাঞ্জলিসেকে বিনিয়োগঃ। ওঁ
যেন ক্রিয়মকুণ্তং বেনাপাম্বতং স্বরাং বেনাক্ষানভাবিঞ্চতং, বেনেমাং
পৃথিবীং মহীম্। যদ্বাং তদখিনা যশন্তেন মামভিবিঞ্চতং। (৬)
ততঃ পুনরপি তাদ্দেনাঞ্জলিনা ব্রন্ধচারী তৃথ্যীমাত্মানমভিবিঞ্চেং। ততঃ
অভিবেকানস্তরম্ আদিত্যাভিম্থে। ব্রন্ধচারী উথায় চতুর্জির্মন্তৈঃ আদিত্যমুপতির্ফেত —প্রজাপতিশ্বিরাদিত্যো দেবতা আদিত্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ।
ওঁ উপ্তন্ ভ্রাজভৃষ্টিভিরিক্রো মক্তরেস্থাৎ প্রাত্র্বাবিভিরস্থাং। দশসনির্বিন,

<sup>(</sup>৫) যশসে কীর্ত্তরে তেজসে গুণপ্রকাশনার্থং ব্রহ্মবর্চসায় বেদবিহিত-তপংপ্রাপ্ত্যর্থং বলায় শরীরোপচ্যার্থন্ ইন্দ্রিয়ায় চক্ষুরানিদার্চ্যার্থং বীর্য্যায় অন্তঃসারার্থন্ অরাতায় ব্রীহ্যাত্তর্থং রায়ন্দোযায় ধনসমূদ্যৈ পোষণার্থং বিষ্ট্যৈ দ্বিষ্টিঃ দীপ্তিঃ কান্তিস্তদর্থং অপচিতিঃ অপচিতিঃ পূজা তৎপ্রাপ্ত্যর্থন্ অনেন যথেইফলপ্রদুদ্ধং রোচনস্যোচ্যতে।

<sup>(</sup>৬) অবিনৌ দেবভিষজৌ সর্বেবাং কর্মণামধিষ্ঠাতারে, অনেন স্বতিপ্র্বকং সমাবর্ত্তমানেন ব্রন্ধচারিণা প্রার্থ্যতে—হে অবিনা! অবিনো! স্থপাং সুন্পিত্যাদিনা প্রথমাধিবচনক্তআআাদেশঃ। যেন কর্মণা স্থরাম্ অপুণ্যলাখ্যাং স্থিয়ং ব্রাম্ অন্ধত্তং হিংসিতবস্তৌ, ষেন চ য্বাং স্থরাং গৈষ্টীং মদিরাং অপাম্যতম্ পণ্ডিতবস্তৌ, ষেন চ অক্ষান্ পাশকান্ অপাম্যতামিতিসম্বন্ধঃ যেন ইমাং পৃথিবীং, কিন্তৃতাং । মহীং মহতীং অভ্যাধিশতং অভিষিক্তবন্তৌ শক্তপ্রাহণদারেণ সম্বর্দ্ধিতবন্তৌ। ইদানীং তৌ পরোক্ষোসন্তৌ প্রত্যক্ষীকৃত্য উচ্যতে। পরোক্ষরতাশ্চ মন্ত্রা ভ্রিষ্ঠাঃ। হে অবিনো! যতাক্ষীকৃত্য উচ্যতে। পরোক্ষরতাশ্চ মন্ত্রা ভ্রিষ্ঠাঃ। হে অবিনো! যতাক্ষিত্তম্ তাক্ষীকৃত্য উচ্যতে। পরোক্ষরতাশ্চ মন্ত্রা ভ্রিষ্ঠাঃ। হে অবিনো! যতাক্ষিত্তম্ তাক্ষীকৃত্য উচ্যতে। পরোক্ষরতাশ্চ মন্ত্রা ভ্রিষ্ঠাঃ। ফ্ অবিনো! তাক্ষীকৃত্য উচ্যতে। পরোক্ষরতাশ্চ মন্ত্রা ভ্রিষ্ঠাঃ । হে অবিনো! অব্যাতিম্বান স্থাপর প্রার্থনে লোট্। বেন যুবাভ্যামহং অভিষ্কিঃ কৃতকৃত্যো ভ্রামীতি।

দশসনিং মা কুর্বা তা বিশাম্যা মা বিশ। (१) প্রজাপতি অবিরাদিত্যোক্রেরা আদিত্যোপস্থানে বিনিরোক্ষঃ। ওঁ উত্তন্ আজভৃষ্টিভিরিক্রো মক্তরিক্রাৎ সান্তপনেভিরস্থাৎ। শতসনিরসি, শতসনিং মা কুর্বা তা বিশম্যা মা বিশ। (৮) প্রজাপতি অবিরাদিত্যো দেবতা আদিত্যোপস্থানে বিনিরোক্ষঃ। ওঁ উত্তন্ আজভৃষ্টিভিরিক্রো মক্তিরস্থাৎ সার্যোবভিরস্থাৎ। সহস্রসনিরসি সহস্রসনিং মা কুর্বা তা বিশাম্যা মা বিশ। (১) প্রজাপতি অবিরন্ধ পুণ্ছক আদিত্যো দেবতা আদিত্যোপস্থানে বিনিরোক্ষঃ। ওঁ চক্ত্রসি চক্ত্রমত্তর মে পাপ্যানং জহি। দোমতা রাজা অবতু, নমন্তেহন্ত মা মা হিংসীঃ। (১০)

<sup>(</sup>१) অভিবেকানন্তরমানিত্যমূপভিঠেত, ইনি পরমৈখর্য্যে ইতি পরমৈখর্য্য-বোগানিক্ত আনিত্যোহপি উন্থন্ উনীয়মানঃ, মক্তিঃ দেবৈঃ সহ অস্থাৎ স্থিতবান্। কিন্তৃতিঃ পুলাজভৃষ্টিভিঃ লাজা দীপ্তা লাজনং ভৃষ্টিঃ দীপ্তিঃ লাজা ভৃষ্টির্যেষাং তে লাজভৃষ্ট্রইন্তঃ সাতিশ্যনীপ্তিযুকৈরিত্যর্থঃ। ন কেবলং মক্তিঃ অস্থাৎ প্রাতর্ঘাবানো দেববিশেষাঃ তৈঃ সহাস্থাৎ স্থিতবান্, কিঞ্চ ত্বং দশসনিঃ অসি। দশানাং অভিনয়ণীয়ানাং পদার্থানাং সনিদ্যিী অসি ভবসি। বণ্ দানে সণোতের ছিন্দিসি বণসন রক্ষিমথামিতি ইন্ প্রত্যয়ঃ, দশানামিষ্টানাং বতত্বং দাতা অতত্ত্বমপি দশসনিং কুক, তা তাং অহমাবিশামি অর্থিত্বনোপধারামি উপগচ্ছামীত্যর্থঃ। অতত্ত্বমপি মা মাম্ আবিশ অভিসত্কলাত্ত্বনাভিমুখো ভবেত্যর্থঃ।

<sup>(</sup>৮) সাস্তপনাঃ দেববিশেষাঃ তৈঃ সহাস্থাদিতি সম্বন্ধঃ। সাস্তপনেতি-বিতি বছলং ছন্দসীতি ভিদ্ ঐদ্ ন ভবতি, অকারশ্র একারঃ। ব্যবহিতোপ-সর্গঃ—(আ) ব্যবহিতাক্তেতি বচনাৎ বিশামীত্যনেন সহ সম্বন্ধঃ আবিশাম্যেব, মা বিশ মা মাং আবিশেত্যধঃ। শতসনিঃ শতদায়ী। শেষং পূর্ববিৎ।

<sup>(</sup>৯) সারংবাবানো দেববিশেষাইন্তঃ সহাস্থাদিতি সম্বন্ধঃ। শেষং পূর্ববং।

<sup>(</sup>১০) অনেন স্থা: প্রাথাতে—হে স্থা। প্রাণ্ডক্তেন প্রকারেণাভিম্থোনাভিদুথীভ্তত্তঃ মে মম পাপানং পাপমপজহি ফোটয় ইতি বাবং।
কিন্তৃতঃ তিত্রলোকাভাপি চক্তঃ নেত্রদর্শনশক্তিঃ অমসি ভবসি, কিঞ্চ অস্তুর্গ
লোকভাপি চক্ত্তঃ দশসনিশক্তিরসি ভবসি, কিঞ্চ হে স্থা। ভগবন্!

ভতো ব্রহ্মচারী মেখলাম্ অনেন মত্ত্রেণ অধন্তান্মোচয়েৎ—শুনঃশেপ(ফ)শ্বিদ্বিষ্ট পুছলো বরুণো দেবতা মেথলামোচনে বিনিরোগ:। ওঁ উত্তর্মং
বরুণপাশমন্মদবাধমং বিমধ্যমং শ্রথার। অথাদিত্যব্রতে বয়ং তবানাগদো
অদিতরে স্থাম। (১১) তত আচার্য্যো বৈবং পালাশং বা দণ্ডম্ অগ্নো
কিপ্তা, মহাব্যান্ততিহোমং কথা, (৮৫ পৃঃ ১ পং) প্রাদেশপ্রমাণাং ঘৃতাজাং
মমিধং তৃফীমগ্নে) হথা প্রকৃতং কর্ম সমাপ্তা, সর্বকর্মসাধারণং শাট্যারনহোমাদি-বামদেব্যগানাস্তম্ উদীচ্যং কর্ম (১৫ পৃঃ ১২ পং) সমাপ্রেৎ। ততঃ
স্থাতকো \* বান্ধণান্ ভোজয়িথা, স্বর্ফ ভৃক্তা, শিথাবর্জং কেশ-শ্রশ্রনন
নথানাং ক্রোটনং কারয়িথা † স্থাথা অহতে ই বাসসী পরিধার কুওলাছস্কতঃ

নোম: ব্রাহ্মণানামোবধীনাঞ্চ রাজা পতিঃ তা তাং অবতু আপ্যায়তাং দেবানামনং চন্দ্র ইতি কৃত্বা তদ্ধি দেবা ভক্ষয়ন্তি উপজীবয়ন্তি, ওষধিরপাছতিভারা আছত্যা হি আপ্যায্যতে, হে স্থ্য! উক্তবিশেষণসম্পন্নায় তুভাং
নমোহন্ত মা প্রতিষেধে মা মাং মা হিংসীঃ মা বধিয়াসি ইত্যর্থ:। চক্ষুইমিতি
যুম্মতং চক্ষুংঘন্তঃ পাদমিতি ষত্ম টুত্ম্। অপজহীতি ব্যবহিত্যোপসর্গসম্বন্ধঃ।

(১১) অনরা ত্রিষ্টু তা শুনংশেপঋষিন্ত্রিভিং পাশৈর্ব দ্বন্তবিমাক্ষণার বরুণং প্রার্থরামাস—হে ভগবন্ বরুণ! অন্তংসকাশাৎ উত্তমং কণ্ঠাবন্থিতং পাশবদ্ধনং উৎপ্রথার উর্দ্ধমবতারর, উত্তমাদিপদব্যবহিতেন প্রথারেত্যনেন সহ সম্বগ্যতে ছন্দসি ব্যবহিতাক্ষেতি বচনাং। উৎপ্রথারেতি প্রথি শৈথিল্যে ণিচ্ লোট্ হি শুণেহরাদেশে হিলোপে ছান্দসং দীর্ঘস্। উর্দ্ধমবতারর অন্মন্ বিমোচর ইত্যর্থং। অধমং পাদাবন্থিতং অবপ্রথার অধ্যাদবতারর, মধ্যমঞ্চ কটিদেশাবন্থিতং বিশ্রথার বিশিথিলীকুরু। অথ পাশবিমোচনানস্তরং ভূরোহিপি বরুণং প্রার্থাতে শুনংশেপঋষিণা—অদিতের-পত্যমিতি বৃৎপত্ত্যা আদিত্যশব্দেন বরুণ এবোচ্যতে। হে আদিত্য! আদিতিপ্র বরুণ! তব প্রসাদেন পাশত্রর্ম্কাং সন্তঃ তব ব্রতে পরিচর্য্যালক্ষণে বর্মনাগসং নিরপরাধাং স্থাম ভবেম, ন কেবলং তব অদিত্যে অদিতেশ্বর্মকোত্রিত্যর্থং। আদিত্যের ইতি ষ্ঠার্থে চতুর্থী বরং স্থামেতি সম্বন্ধঃ।

সাতক: তরকুলাৎ প্রত্যাবৃত্তো বন্ধচারী ইতার্থ:।

<sup>†</sup> शूनभू अनः चरः छालनक अन्नक्नां अछा। तृष्ठा म्याकात्म नमावर्धनकर्मि कर्वत्ताः इरोगुन्।

<sup>🏚</sup> त्रेषरकोडः नवः त्रावः महनः यन्न बाजिष्ठम् । चहन्तः छविकानीजाः मर्व्यकर्षम् स्थापनम् ।

শনেন মন্ত্রেণ বজ্ঞোপবীতদরং পরিদ্যাৎ—প্রজাপতিশ্বির্বজ্ঞোপবীতং দেবতা যজ্ঞোপবীতপরিধানে বিনিরোগং। ওঁ যজ্ঞোপবীতমিন, যজ্ঞান্ত দা বজ্ঞোপবীতেনোপনস্থামি। পূর্ব্বোপবীতং জলে ক্ষিপেং। কালান্তরেংশি ছিলং যজ্ঞোপবীতং জলে ক্ষিপ্তা, অপরম্ এতল্যন্তাভিমন্ত্রিতং গৃহীয়াং। ততঃ লাভকঃ অনেন মন্ত্রেণ মৃদ্ধি লক্ষং বরীয়াং—প্রজাপতিশ্বিং জ্রীদেবিতা ল্রুজননে বিনিরোগং। ওঁ শ্রীরিদি মন্তি রমস্ব। (১২) ততঃ লাভকঃ—প্রজাপতিশ্বিস্বিপানহৌ দেবতে উপানৎপরিধানে বিনিরোগং। ওঁ নেত্রো স্থোনরতং মাং। (১০) অনেন মন্ত্রেণ চর্ম্বপাত্ কাল্য্কালে পাদৌ নিদ্ধ্যাৎ। ততঃ লাভকঃ স্থেমাণং বৈণবং দণ্ডম্ অনেন মন্ত্রেণ গৃহাতি—প্রজাপতিশ্বিদিণ্ডো দেবতা দণ্ডগ্রহণে বিনিরোগং। ওঁ গদ্ধবিহিত্বপাব। ⇒ উপ মামব। (১৪) ততঃ রুষ্ণদারাজিনং পূর্ব-বজ্ঞোপবীতং মৌঞ্জনমেণলাঞ্চ বংশদণ্ডোপরি বন্ধীয়াৎ। ততঃ লাভকঃ আচার্য্যসমীপং গত্মা, সপরিষদমাচার্য্যম্ + অনেন মন্ত্রেণ পশ্রেৎ—প্রজাপতিশ্বিরিন্টার্য্যপরিষদ্দী কণে বিনিরোগঃ। ওঁ বক্ষমিব চক্ষ্যং প্রেরো বো ভূয়াসম্। (১৫) অথ লাভকঃ আচার্য্যসনীপং গত্ম উপবিশ্ব, প্রসারিতাকুলিনা

<sup>(</sup>১২) হে অক্! মালে! তং শ্রীরদি লক্ষীর্ভবদি অভো মরি রমস্ব অবস্থানং কুরু।

<sup>(</sup>১৩) হে উপানহৌ, মাং যুবাম্ ইষ্টফলপ্রাপ্তরে নয়তং দেশান্তরং প্রাপয়তম্। কুতঃ ? যতো নেত্রো স্থঃ নয়নশক্তিপ্রদানশীলে প্রাপণশীলে যুবাং স্থঃ ভবথঃ, নহি ভবতীভ্যাং বিনা পদমপি গদ্ধং শক্যতে।

<sup>(</sup>১৪) অনেন দণ্ড: প্রার্থাতে—হে দণ্ড! তং মা মাং ছরিতেজ্য: উপাব উপসমীপে ভূতা অব রক্ষ, ষতত্তং গর্ম্ব: আদিত্যোহনি, রক্ষণ-কর্ত্তানি, গর্ম্ব এব রক্ষণে সমর্থ: ( যুগপত্পচারাৎ ) উপ:মামব উপ সমীপে ভূতা মামবেত্যর্থ:। অব রক্ষণে ব্যবহিতোপসর্গেণ সম্বন্ধ:।

<sup>(</sup>১৫) হে আচার্য্য ! পরিষৎসমেত ! বঃ যুম্মাকং চকুষঃ লোচনক্ত প্রিরঃ বল্লভঃ অহং ভূরাসং ভবামি। ক ইব ? যক্ষমিব যথা যক্ষো দর্শনীরভরা

কেবুচিৎ প্রকের্ 'গছবেনিহস্থাপনামৰ' ইতি পাঠে। দৃপ্ততে, ভন্নন্দত্বং গুণবিকুনা
অন্তঃপাব উপ নামৰ ইতালৈব ব্যাধাত্বাৎ।

<sup>+</sup> পরিবৎ শিষাগোটা তৎসহিত্যিতার্থঃ।

দক্ষিণহত্তেন মুখমাছাত্ত, মুখভবং বায়ং স্পূৰ্ণন্ ইমং মন্ত্রং পঠেৎ—
প্রজাপতিঋ বিরম্প্র প্ ছন্দো জিহ্বা দেবতা মুখ্যপ্রাণস্পর্ণনে বিনিরোগঃ। 
তি ওঠাপিধানা নকুণী, দস্তপরিমিতঃ পবিঃ। জিহ্বে মা বিহ্বলো বাচং,
চারুমাত্তেহ বাদয়। (১৬) অথ আচার্যন্তমর্ঘ্যং † পাডাদিভিরভ্যর্জয়েং।
ততঃ স্নাতকো গোষ্ণসহিতক্ত রথক্ত সমীপং গড়া, পক্ষঃশন্ধবাচ্যং ক্বরবাছশন্ধবাচ্যং বা রথাবয়বছয়ং স্পূর্ণন্ অনেন মন্ত্রেণ পাদত্রমেণ ‡ রথমারোহেং। প্রজাপতিঋ বিঃ পঙ্জিশ্চন্দো রথো দেবতা রথারোহণে
বিনিয়োগঃ। ও বনস্পতে বীড়ালো হি ভূয়া অস্থংস্থা প্রতরণঃ স্ববীরঃ।
গোভিঃ সল্পন্ন অনি বীড়য়য়। (১৭) ততঃ চতুর্থপাদেন তত্ত উপবিশতি।

সর্বালোকচকুষাং প্রিরো ভবতি তদ্বদহমপি যুল্পচকুষামিত্যর্থ:। বক্ষমিব বক্ষ ইতি ব্যত্যয়ো বহুলমিতি প্রথমার্থে দ্বিতীয়ৈকবচনম্। অথবা বক্ষমিব অনমিব অথবা বর্গ্যো জকারঃ, চকুষ ইতি জাতাবেকবচনম্।

(১৬) স্নাতকেন জিহ্না প্রার্থতে—হে জিহ্বে! অস্মিন্ প্রস্তুতে কর্মণি অন্ত জং মা বিহ্বল, উ পাদপ্রণে (জল হবল চলনে) মা চলিয়সি মা মাং বাচং বাদর সম্চারয়, কথং চারু শোভনং যথা ভবতি। কিস্তৃতা জং? ওঠাপিধানা ওঠঃ অপিধানম্ আবরণং যস্তাঃ সা জং নকুলী চ্ঞলবচনস্বভাবা, মা চলিয়সি, জয়ি চলস্তাঃ চারুবাগুচ্চারণং ন ভবতি। পুনরপি সৈবোচ্যতে, পবিঃ বজ্রো ভবসি। কিস্তৃতঃ পবিঃ ? দস্তপরিমিতঃ দস্তাঃ পরিমিতং পরিমাণং যস্ত পবেঃ স দস্তাবরণ ইত্যর্থঃ।

১৭। অনেন রথ: প্রার্থতে—বনস্পতিবিকারত্বাৎ বনস্পতিশব্দেন রথ এবোচ্যতে। হে বনস্পতে! রথ!বীছ্বলা ভ্রাঃ মহাভারসহালো ভ্রা ইত্যর্থ:। বিজূনি দৃঢ়ানি মহাভারসহানি অঙ্গানি চক্রক্বরপ্রভৃতীনি যতা স তং তথোচ্যসে, হি পাদপ্রণে, তথা অস্বংস্থা অস্বাকং মিত্ররূপো ভ্রাঃ, তথা প্রতর্গঃ প্রকর্ষেণ তরম্ভি হুর্গাণি যেন স তথা, তথা স্থ্বীরঃ শোভনো বীরঃ

কেবুচিৎ পুতকেবু মৃথপ্রাণেতি লিখিতন্।

<sup>†</sup> অর্থাৰ অর্থাপ্তিযোগ্যমিতার্থ:। বড়র্ঘা ভবন্তি মান্তকা ইন্তাদয়:। ইতি বচৰাৎ।

<sup>া</sup> পাদত্ররেণ চতুপাদমন্ত্রপ্র পাদত্ররমাত্রমূচ্চার্য্যেভার্থ:।

প্রত্যয়ঃ।

ওঁ আন্থাতা তে জয়তু বেবানি। (১৮) ততঃ প্রার্থ উদল্পো বালিকেনা রথেন গড়া, প্রদক্ষিণং পরার্ত্য আচার্য্যমীপমাগছতি। আচার্য্যঃ পুনরর্ঘ্যার পাছাদিকং দছাৎ। ততো বদি পিতৈবাচার্য্যঃ, ভদাকর্মকাররিত্ত্রাহ্মণার দক্ষিণাং দছাৎ; যছন্ত এবাচার্য্যঃ, ভদাবেন বৃতঃ, স তলৈ দক্ষিণাং দছাৎ।

ইতি সমাবর্ত্তনকর্ম সমাপ্তম্। ইতি সামগানাং ভবদেবকুতা দশসংস্কারপদ্ধতিঃ সমাপ্তা।

স্থারথির্যা স জং গোভিঃ বলীবর্দৈঃ সয়দ্ধ: সংযুক্তঃ, গোচর্মান্তবাঁ সয়দঃ

য়তন্তবেবংভ্তঃ অভোহস্থানপি বীড়য়ন্ত বিভূশন্য দূঢ়বচনঃ দূঢ়াবয়ববান্
কুব্রিত্যর্থ:। বীড়াল ইতি বিভূশন্য ছান্দসং দীর্ঘন্ত এবং বীড়য়ম্বেতি।

(১৮) কিন্ত আহাতা আরোঢ়া তে তব সম্বন্ধীনি জেবানি জেতব্যানি

বিষদ্বন্দানি জয়তু বশীকরোতু। জেতব্যানীতি জি জয়ে ক্ত্যার্থে অন

# পরি**শিষ্ট**ম্

চক্রেমে চক্পরিমাণং ষথাহ গোভিল:—চত্যুষ্টিশ্চকঃ কার্যাশ্চতুর্ণ। মুন্তরোহপি বা।

অথ ইথুকুশানাং গ্রাহতাগ্রাহতাবিচার:।

ৰথা গৃহাসংগ্ৰহে—দৰ্ভাঃ কৃষণজিনং মন্ত্ৰা ব্ৰাহ্মণান্চ বিদেষতঃ। নৈতে নিৰ্মান্যতাং যান্তি নিযোজ্যান্ত পুনঃ পুনঃ ॥

স্বৃত্যস্তরেযু---

সংগ্রহাদ্বৎসরং বাবৎ শুদ্ধি: স্থাদিগ্রবর্হিষাম্। অতঃপরং ন গুহীয়াদ্জপাদে বজ্ঞকর্মণি॥

শত্ৰ—

মাসে নভক্তমাবক্তা তক্তাং দর্ভচয়ো মত:।
অবাত্যামান্তে দর্ভা বিনিযোজ্যাঃ পুনঃ পুনঃ।
ইতি মরীচিবচনম্।

বার্ষিকাংশ্চতুরো মাসান্ নাহরেৎ কুশম্তিকা:।
আদলীত বভাবে তু সভো ষস্তোপযোজনম্।
ইতি শিবরহস্তীয়স্ত নিষেধ্সাপবাদকম্।

পরস্ক সর্বাজ ন দর্ভাগামনির্মাল্যতা কিন্তু যজ্ঞানিধেব । তথা চ গোভিলগৃহ্যা—নর্ভাঃ পিণ্ডেষ্ নির্মাল্যা বিপ্রাঃ প্রেতারভোজনে ইত্যাদি নির্মাল্যাঃ
কর্মানহা ইত্যর্থঃ। তথা—পিণ্ডার্থং বে স্থৃতা দর্ভান্তর্পণন্ত কৃতন্ত বৈঃ। ধুতা
কৃতে চ বিশ্বত্রে ত্যাগস্থেষাং বিধীয়তে ॥

# যজুঃ-সংস্বারপদ্ধতিঃ

# ( পশুপতিকৃতা ব্রহ্মসংস্কারমঞ্জরীধৃতা চ )

## অথ যজুষাং সামান্য-কুশণ্ডিকা

তত্র বেডাঃ পশ্চিমে প্রাথা্থঃ কর্ত্তা স্নাতঃ শুচির্দিরাচান্ত উপবিশ্র হন্তপ্রমাণং স্থাভিলং কুতা কুশেন ত্রি: সমূজ্য গোময়েনোপলিপ্য স্থাভিল-মধ্যে ক্ষেন কুশেন বা পূর্ব্বাগ্রং প্রাদেশপ্রমাণং দপ্তাঙ্গুলান্তরিতং রেথাত্রয়ং সমূল্লিখ্য অকুষ্ঠানামিকাভ্যাং তত্তোৎকীৰ্ণমৃত্তিকামৃদ্ধৃত্য জলেন বেথাত্ৰয়ং ব্রিরভাক্যাত্মদক্ষিণে কাংস্থপাত্রেণ বা নবশরাবেণাগ্নিমানীর তম্মা**জ্ঞাণ**-দিশ্বনং গৃহীত্বা ওঁ ক্রব্যাদমগ্নিং প্রহিণোমি দুরং ষমরাজ্যং গচ্ছতু রিপ্রবাহ ইতি ক্রব্যাদাংশং পরিত্যজ্ঞ্যাপরমগ্নিং গৃহীত্বা ওঁ ইহৈবায়মিতরো জ্বাতবেদা দেবেভ্যো হব্যং বহতু প্রজানন্ ইতি মন্ত্রেণাভিম্থং তৃতীয়রেথোপরি সংস্থাপ্য কুতাঞ্জলিঃ পঠেৎ। ওঁ সর্বতঃ পাণিপাদান্তঃ সর্ববেতাংক্ষিশিরো-মুখ:। বিশ্বরূপো মহানগ্নি: প্রণীতঃ সর্ব্বকর্মস্থ ॥ ইত্যগ্নিপ্রণয়নং কৃত্বা ও পিন্ধক শাশ্র-কেশাক: পীনান্তর্ভাবরাহরণ:। ছাগন্ত: সাক্ষপত্রোহরিঃ সপ্তার্কিঃ শক্তিধারক:। ইত্যাদিত্যপুরাণীয়ং ধ্যাত্থা অগ্নে ত্মমুকনামাসীতি নাম ক্রতা সম্পূজ্য ততোংগ্রেদক্ষিণে অরত্নিমাত্রাস্তরিতে \* দেশে প্রাগগ্রকুশ-সমেতং ব্রহ্মাসনমান্তীর্য্য ধারাসহিতমুদকপাত্রং গৃহীত্ব। ওঁ এহে দৈধি সব্যোদত-ন্তিষ্ঠান্তস্ত সদনে সীদ যোহস্থংপাকতর ইতি মন্ত্রেণাগ্নিং প্রদক্ষিণীকতা দক্ষিণাং দিশং গড়া ব্ৰহ্মদনমীক্ষেত। ততগুমাদাসনাতৃণ্যেকং বামহস্তানামি-কাৰুষ্ঠাভ্যাং গৃহীত্বা ওঁ নিরন্তঃ পাপা। সহ তেন বয়ং দিম ইতি মল্লেণৈশান্তাং मिनि किरापेर। उँ रेममशः दृश्याराः ममरन मीमामि श्रयारा रास्तन সবিত্রা তদগ্ররে প্রবরীমি ভবায়বে তৎ পৃথিবৈয়। ইতি পঠেৎ। কুশবন্ধপক্ষে ত হোতা স্বয়ং পঠেও। ততঃ কুশকুস্থমৈরর্চ্চয়েও। তেনৈব পথা প্রভ্যাবৃত্য তভোহয়ের ত্তরতঃ কুশানান্তীর্য্য তত্ত্ব, বারুণং বজ্ঞিয়কাষ্ঠনির্ম্মিতং মুমারং চমসং প্রণীতাপাত্রং বা সব্যহন্তে কৃতা দক্ষিণহন্তেন জলৈরাপুর্য্য

শ্বত্ত ব্রহ্মনংশারনপ্ররী—পূর্বাভিম্বীং বারিধারাং দ্বা তত্তপরি পূর্বাবান কুশানাতীর্য উ ব্রহ্মরিহোপবিশ্বতামিতি মন্ত্রণ ব্রহ্মাণং সংস্থাপ্য কুশকুস্থমৈরর্চবেৎ। ত্যাহই।

কুলৈরাচ্ছান্তারেকভরে বন্ধণো মুখমবলোক্য স্থাপরেৎ। ততঃ সূত্রদচ্ছিরতুশেন क्रेमानत्कावामात्रका मक्रिवावतर्खन व्यक्षिः পরিস্তরেৎ, यथा—क्षेत्रमृत-नृतवर्हिकिः পূৰ্বকভাষাগ্ৰেষাদীশাৰান্তং দক্ষিণভাং ব্ৰহ্মণোখগ্নিপৰ্য্যন্তং পশ্চিমায়াং নৈশ্বত-কোণাদারভ্য বারব্যান্তম্ উত্তরস্থামগ্রে: প্রণীতাপর্যান্তং কুশ্তরেণ আশুরেৎ। তভোহগ্রেকত্তরে কুশোপরি প্রয়োজনজব্যাণি দক্ষিণাদিতো যথাক্রমমাসাদয়েৎ। **७ म्यथा**— পবিত্রচ্ছেদনার্থ: কুশপত্রত্তয়ः পবিত্রে ছে প্রোক্ষণীপাত্র: আজ্য-ञ्चानो (टिज्जनी मृत्रत्री ता:)। मत्रार्क्जनकूणाः वर् छे छे प्रयमनकूणाः ब्रह्मानण \* পলাশাভাঃ সমিধন্তিত্রঃ ক্রক্কবে আজ্যস্থালী চককেৎ চরুস্থালী উদ্থলম্বলে বৈণবং স্পৃথ মেক্ষণং ত্রীহয়ো যবান্তণুলা বা ঘাসুষ্ঠবিন্তারাগ্র-প্রাদেশপরি-মিতোডুম্বরনির্মিতা দব্বী সাদ্ধাসূষ্ঠবিন্তারাগ্র-প্রাদেশমাত্রং মেক্ষণং কপিলা-ছথ্বং বন্দদিশা পূর্ণপাত্তং অক্তাত্মপুক্তদ্রব্যাণি বিনিয়োগক্রমেণাসাদরতি। ততঃ পূর্বস্থাপিতকুশত্তরেণ পবিত্রে প্রাদেশমাত্রে ওঁ পবিত্রে স্থো বৈষ্ণব্যৌ ইতি ছিত্তা ্ওঁ বিষ্ণোম নিদা পূতে স্থঃ ইতি সংপ্রোক্ষ্য প্রোক্ষণীপাত্তে স্থাপয়েৎ। তত্র প্রণীতাজলং সংস্থাপ্য দক্ষিণহন্তানামাসুষ্ঠাভ্যাং মূলমেবং বামহন্তানামাসূষ্ঠাভ্যাং পবিত্রস্থাগ্রং গৃহীত। উপর্য্যধোভাবেনাধোমুখে হস্তো ক্ববা পবিত্রমধ্যেন প্রোক্ষণীপাত্রস্থ-কিঞ্চিজ্জলং গৃহীত্বা ভূমে বারত্রম্বং ক্ষিপেৎ। ততো বামহন্ততলে প্রোক্ষণীপাত্রং ক্বতা সপবিত্রদক্ষিণহন্তেন কিঞ্চিজ্জনং বারত্তরমৃত্তোল্য পুনন্তথৈব প্রক্ষিণ্য আত্মবামে প্রোক্ষণীপাত্তং সংস্থাপ্য তহদকেনাসাদিতদ্রব্যাণি সকুৎ সংপ্রোক্ষ্য প্রণীতাদক্ষিণেৎসঞ্চরে দেশে প্রোকণীপাত্রং স্থাপয়েৎ। তত আজ্যস্থালীমাত্মসমূধমানীয় পূর্বাসাদিত-মাজ্যং তন্ত্রাং নিক্ষিপ্য অগ্নের্দক্ষিণভাগেহধিপ্রিত্য পর্যায়িকরণার জ্ঞলদ্বিং: গৃহীত্বা ঈশানকোণাদারভ্য দক্ষিণাবর্ত্তেনাজ্যং ত্রিঃ পরিবেষ্ট্য তমগ্নিং তত্তৈবাগ্নৌ ক্ষিপেং। ততঃ ক্রবং গৃহীতা অধোমুখমগ্নৌ প্রতপ্য সম্মার্জন-কুশাত্রৈম্লাদগ্রং পুনরগ্রামাূলং যাবৎ সংম্বতা পুন: সম্মার্জনকুশম্লেন অঞান্দং ম্লাদগ্ৰং ধাবৎ ক্ৰবক্ত বাহুং সন্মৃত্যু সন্মাৰ্জনকুশান্ পরিত্যকা প্রণীতোদকেনাভ্যক্ষ্য পুনঃ ক্রবং প্রতপ্য আত্মসমুধভূমে স্থাপরেং। ততঃ প্রোক্ষণীপাত্রস্থং পবিত্রং পূর্ববিৎ গৃহীত্বা আজাস্ত কিঞ্চিত্রতোলন-ক্ষপমুৎপবনং কৃত্বা ওঁ সৰিতৃত্বা (সবিতৃত্বঃ) প্ৰসৰ উৎপূনাম্যচ্ছিদ্ৰেণ

শত্র ব্রহ্মদংকারমঞ্জনী সম্মার্ক্তনকুশাব্রর উপব্যনকুশাঃ বট্ ইত্যাহ।

পবিত্রেণ বসো: পূর্যান্ত রশ্মিভি: স্বাহা। ইতি মল্লেণ মতং কিঞ্চিমারতার-মুস্তোল্যাগ্নে ক্ষিপেং। ততঃ পুন: প্রোক্ষণীজনেংপি ও সবিতুর্ব: প্রসব ইত্যাদি-मद्भग প্রোক্ষণীজনঞ্চ উৎপূর \* উপব্যন্ত্শান্ বাষহতে কৃতা সমিধ উত্তিচন্ত্রী জুত্মাৎ। উপবিশ্য প্রোক্ষণীঙ্গলেন ওঁ দেব সবিতঃ প্রস্থব ষজ্ঞং প্রস্থব ষজ্ঞপতিং ভগার দিব্যে৷ গন্ধর্ক: কেতপু: কেতর: পুনাতু বাচম্পতির্বাজয়: খদতু ( বাচর: चम्छ ) हेजिरत्व मकिनावर्डनाधिः द्वहेरम् । † शविवः श्रीजामाः নিধার প্রোক্ষণীপাত্রং সংস্রবার্থমগ্রেফত্তরে স্থাপয়েৎ। ততো দক্ষিণজায়যাচ্য विमार्गारबात्रख्नुर्वकः करः गृशीषा वागातामा जारगी बृह्माए। ততापार्त्रो यथा—कट्दर्गाकाञ्चाना। व्याकामानात्र श्रकाशिकः मनमा शात्रन् ଓ श्रकाशिकत्र খাহা ইদং প্রজাপতমে : ইতি বায়ুকোণাদারভ্যাগ্নিকোণপর্যন্তং যুত্ধারাং म्बार । इंडरनरः श्रामनार्थः श्राक्रवीभाव्य द्याभरहर । ७ हेन्साम्र चारा हेन-মিল্লায় ইত্যায়েনৈ খতিকোণাদারভা ঈশানকোণপর্যান্তং জুছুয়াৎ। ওঁ অগ্নয়ে স্বাহা ইদমগ্লরে ইত্যগ্রেদ ক্ষিণতঃ পাশ্চমান্তাৎ পূর্ববান্তং যাবৎ যুতধারাং দভাৎ। ওঁ সোমায় স্বাহা ইনং সোমায় ইত্যগ্রেকত্তরতঃ পশ্চিমান্তাৎ পূর্বান্তং বাব্ৎ জুহুরাং। সর্ব্বত্র পশ্চাদ্দেবতোদেশ:। ততো মহাব্যাহৃতিহোম:—ওঁ ভূ: স্বাহা हेनमग्रदमः। ଓ जूनः चाहा हेनः नाग्नदनः। ଓ चः चाहा हेनः स्प्रीयः। ଓ ভুৰ্তু বংশ্বং স্বাহা ইদমগ্নিবায়ুসূৰ্য্যে ভ্যাঃ। ততঃ প্ৰকৃতং কৰ্ম। পু অথ প্ৰায়-কিত্তহোম:। ও অভোত্যাদি অমুককশাক্ষহোমকৰ্মণি বৈগুণ্যং জাতং তন্দোৰপ্ৰশমনায় ওঁ অল্লোহয়ে ইত্যাদি পঞ্চতিম দ্ৰৈঃ প্ৰায়শ্চিত্ত-হোমমহং করিয়ে ইতি সঙ্কল্ল্য স্ক্রং পঠিবা ও অগ্নে বং বিধুনামাসীতি নাম কৃষা আবাহ্য সম্পূত্র্য ওঁ ব্যান্ত অগ্নে বক্ষণশু বিধান দেবশু হেড়ো অবধাসি সীষ্ঠা:। যজিষ্ঠো বহ্নিতম: শোশুচানো বিশ্বা দ্বেষাইপি প্রমুমুম্বাশ্বৎ স্বাহা। § ইদমগ্লাবকুণাভ্যাং। ওঁ সহলো অগ্নেহ্থমো ভবোতী নেদিষ্টো অস্তা खेबरता बुरहो । व्यवस्क रना वक्रनए ब्रह्मारना वीहि मृड़ीक्ए खहरता न अधि

শত্র উৎপবনহরে ব্রহ্মসংক্ষারমঞ্জরীনন্ত্রপাঠং নানুমক্ততে।

ৰা বন্ধসংখ্যারমঞ্জা থিষ্টকুদ্ হোমান্তে প্রকৃতং কর্ম ধৃত্ব ।

<sup>§</sup> चळ अमानःका वनक्षत्री शकानामृहाम् कविष्ट्रत्यादम्बद्धाद्वयसाह ।

ইদমগ্রীবরুণাভ্যাং। ওঁ অরাশ্চাগ্নেহস্তনভিশন্তিপাশ্চ সতামিত্মরা অসি। অয়ানো বজ্ঞং বহাস্তরানো ধেহি ভেষজং স্বাহা। ইদমগ্নরে। ওঁ যে তে শতং বৰুণ যে সহস্ৰং যজিয়া: পাশা বিত্তা মহান্ত:। তেভিনে । অত সবি-তোত বিফুবিখে মুঞ্জ মকত: স্বৰ্কা: স্বাহা। ইদং বৰুণায়, সবিত্তে<u>.</u> বিষ্ণবে, বিশেভাো দেবেভাঃ, মরুদ্রাঃ, স্বর্ক্কেভাঃ। ওঁ উত্তরমং বক্ণপাশনব্দবাধনং বিমন্যনং শ্রথায় অথাবয়নাদিত্যব্রতে বয়ং তবানা-গদোহণিতয়ে স্থাম স্বাহা। ইদং বৰুণায়। ওঁ প্ৰজাপতয়ে স্বাহা ইদং প্ৰ**লা**-পতমে। ওঁ অগ্নমে স্বিষ্টকৃতে স্বাহা ইমমগ্নমে স্বিষ্টকৃতে। ততঃ পূর্ণহোম:। ওঁ অগ্নে বং মুড়নামাসীতি নাম কুথাবাহ্য সম্পূজ্য ফলতামূলাদিসহিতং মৃতপুরিতং পাত্রং গৃহী**রা ধঙ্গমানসহিত উত্থায় ∗ ওঁ মৃদ্ধানং দিবো অরতিং** পৃথিব্যা বৈশানরমূত আজাতমগ্রিম। কবিও সম্রাজমতিথিং জনানামাসরা পাত্রং জনমন্ত দেবা: স্বাহা ইদমগ্নরে। তত আন্তরণকুলৈ: ওঁ দেবা গাতুবিদো গাতুং বিভা গাতুমিত। মনসম্পত ইমং দেবৰঞ্জণু স্বাহা বাতেধা: স্বাহা ইতি বহিহোমং সমাপ্য। † ততঃ সংশ্রবং প্রাশ্র বন্ধণে পূর্ণ-পাত্রং দক্ষিণাং দভাৎ—ওঁ অভেত্যাদি কৃতৈতৎ অমুককর্মান্সহোমকর্মণ বন্ধকৰ্মপ্ৰতিষ্ঠাৰ্থং : দক্ষিণামিদং পূৰ্ণপাত্ৰাস্কল্পভোজ্যং বন্ধণে তৃভ্যমহং দদানি। ততঃ পবিত্রেণ প্রণীতাব্দলেন শির:প্রভৃতি মার্জ্জনং যথ!—ওঁ সুমিতিয়া ন আপ ওষ্ণয়ং সম্ভ। ইতি শিরসি। ছুম্মিতিয়ান্তলৈ সম্ভ। ইতাধ: ৷ পু যোহস্মান দেষ্টি যঞ্চ বয়ং দিম: ইতি এশাস্তাং প্রণীতাপাত্রং হ্যক্তং কুর্যা। । ওঁ ব্রহ্মন ক্ষমস্ব ইতি কুশবাহ্মণং বিস্ফল্ ওঁ অথে ত্বং সমুদ্রং গচ্ছ ওঁ পৃথি বং শীতলা ভব ইতি দধ্যানিকং নিক্ষিপ্য ক্ষবলগ্নভন্মনা ওঁ কণ্ঠপশ্য ত্যায়ুষ্-মিতি ললাটে (শিরসি)। ওঁ জমনপ্রেক্ত্রায়ুষমিতি কঠে। ওঁ যদ্দেবানাং ত্যায়ুষমিতি বাহুমূলয়ো:। ওঁ তল্মেংস্থ ত্যায়ুষমিতি হৃদি তিলকং দ্যাৎ। ততঃ শান্তিং কুর্য্যাৎ।

অত্র ব্রহ্মদংখারমঞ্জাং পূর্ণহোমে বিশেষ:—সপ্ত ত ইতি মন্ত্রত কৌণ্ডিল্যাধ্বিজ্পতীছলোহগ্রিৰারুস্থাপ্রজাপতয়ো দেবতাঃ পূর্ণহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ দপ্ত তে অংগ্র দমিধঃ দপ্তজিহ্নাঃ দপ্তবির: দপ্তধাম প্রিয়াণি। দপ্তহোত্রাঃ দপ্তধা তা যজতি দপ্তবোনীয়াপৃণব গুতেন বাহা।

 <sup>†</sup> विहिट्सामा न उक्तमःकात्रमञ्जनीवृष्ठः।

<sup>🚶</sup> কৃতাকুতাবেক্ষণাদিত্রক্ষকর্মপ্রতিষ্ঠার্থমিতি ব্রক্ষসংকার্মঞ্জরীপাঠি:।

१। अभिकासालन मार्क्सनाहिकः न मार्कात्रवश्चत्रीपृष्ठम्।

#### অথ জাভিকর্ম

তত্র প্রথমং বিবাহদিবসে পিতৃস্পিতে। হ্রিজা-মূল্স-মস্র-যব-মাষাণাং শ্লম্ব-চুর্ণাক্তেকীকৃত্য কন্সারাঃ শরীরং দ্রক্ষরিতা ইমং মন্ত্রং পঠেৎ—প্রজ্ঞাপতির্থাবিঃ প্রস্তারপঙ্ক্তিশ্ছন্য: কামো দেবতা জ্ঞাতিকর্মণি ক্সারা: শরীরপ্লাবনে বিনি-রোগ:। ওঁ কাম বেদ তে নাম মদো নামাসি সমানরামুং যুবা তেহভবৎ পরমঞ জন্মাণ্ডো তপসো নিৰ্দ্মিতোহসি স্বাহা। অনেনামুম্ ইতি সর্বনামস্থানে অমুক-শর্মাণমিতি দ্বিতীয়ান্তং পতিনাম নিঃক্ষিপ্যোদকপূর্ণকলসেন শিরঃপ্রভৃতি কস্তাং ততঃ প্ৰজাপতিৰ বিষ খ্যেজ্যোতিৰ্জগতীচ্ছৰ উপস্থৱপকাষে৷ দেবতা জ্ঞাতিকর্মণি কক্সায়া উপস্থগাবনে বিনিয়োগ:। ও ইমন্ত উপস্থ মধুনা সংস্ঞামি প্রস্থাপতেমু থমেতদ্ বিতীয়ং তেন পুংসোহভিভবামি সর্বান্ খবশান বশিক্তসি রাজ্ঞী খাহা। অনেন কন্তায়াঃ শিরসি কিঞ্চিজ্ঞলং দস্থা ক্রোড়দেশে বহুতরজ্বং দ্ভাৎ ধথোপস্থদেশঃ প্লাবিতো ভবতি। ততঃ প্রজাপতিশ্ববিরূপরিষ্টাজ্জোভিন্তিই ুপ্ছন্দ উপস্থরূপকামো দেবতা জ্ঞাতি-कर्मिन कन्नात्रा উপञ্चत्रावटन विनित्तार्थाः। उ अधिः क्रवानमक्र्यन् खरानाः ল্পীণামুপস্থ্যকঃ পুরাণাঃ। তেনাজ্যমকুগংল্পৈশৃঙ্গং ছাষ্ট্রং ছবি তদ্ধাত স্বাহা। অনেনাপি পূর্ববদেব কিঞ্চিজনং শির্মি দ্বা ক্রোড়ে বছতরক্সলং দম্ভাৎ ৰখোপস্থদেশঃ প্লাবিতো ভবতি। ইতি জ্ঞাতিকৰ্ম্ম সমাপ্তম।

অথ তদানীমসমর্থন্ত কালান্তরভাব্যদাহনির্বাহার বাগ্নানাধ্যং প্রতিজ্ঞাশক্ষপং কর্ম লিখ্যতে। তত্ত্ব প্রথমতো ব্রাহ্মণান্ স্বন্তি প্ণ্যাহঞ্চ বাচম্বিত্বা, ঘটশ্বাপনং ক্ষমা, পঞ্চদেবতা জামাতরঞ্চ গদ্ধমাল্যাদিভিরভ্যর্ক্তা প্রতিজ্ঞাং ক্র্যাৎ,
বথা—ওঁ তৎসৎ অভেত্যাদি অমুকগোত্রন্তাম্কপ্রবরন্তাম্কপ্রবরন্তাম্কদেবশর্মণঃ প্রশাম্কদেবশর্মণঃ
প্রায়াম্কদেবশর্মণে অমুকগোত্রন্তাম্কপ্রবরামম্কদেবগভিধানাং
ক্ষাং ব্রাহ্মাবিবাহেন দাতৃং তৃত্যমহং প্রতিজ্ঞানে ইন্তি। (পশুপভয়ন্ত্ব সর্ব্বিবাহাদে প্রতৎ কারম্ভি, কারম্ভি চ ষ্ঠ্যন্তেনৈব তবাহং প্রতিজ্ঞানে ইন্তি
বাক্সম্। তৎ কিম্বন্ধ ইন্তিন জ্ঞায়তে)।

<sup>\*</sup> कांकिक्फ-मञ्जराभा---माम्यदिनमःकाद्र-मञ्जनाभागः क्रहेगा।

#### ভাখ বিবাহঃ

ख्वानखोजनर्नवर्षकरक्वाचारह **ख्व्वाखानित्रहिख-ख्वनमर**त्र खेनगत्रन व्याशृद्य-মাণপক্ষে পুণ্যাহে কুমার্য্যাঃ পাণিং গৃহীরাদিতি পারম্বরস্ত্তাৎ অন্তথা তৃ চৈত্ৰপৌষবিৰাৰ্জিতেযু দশমাদেৰু বৈবাহিকনক্ষত্ৰেষু শুভেৰু চ তিথিবু শনিমঙ্গলান্তবারেষু কন্তাতুলামিথুনলগ্নেষু (অন্তেষু চ স্থতহিবুক্ষোগ-বলাৎ) ক্সাদানে নির্বাহে দাতা বরপিতা চ প্রাত: সগণাধিপ-গৌর্ঘাদিযোড়শমাতৃকাপৃস্থা-বস্থারাসম্পাতনায়্য্য-স্কল্পাভ্যুদ্যিকপ্রাদ্ধানি নির্বাহরেং। তত্ত্ব ওঁ বদোঃ পবিত্রমদি শতধারং বদোঃ পবিত্র-মিদ সহস্রধারং দেবভা সবিতা পুনাড় বসোঃ পবিত্রেণ শতধারেণ স্থপ্। কামধুক্ষ: ইভি মন্ত্রেণ গুড়েন সর্পিষা সপ্তধারা: ( দক্ষিণাভিমুখা: পশ্চিমাভি-মুখা বা ) পাতয়েৎ। বস্থারা চ নাতিহ্রসা নাতিদীর্ঘা পাদাদিনাভিপর্যান্ত-পরিমাণা) কার্য্য। তত আয়ুব্যস্কুং জপেৎ, বধা—ওঁ আয়ুব্যং वर्ककः त्रात्रत्म्भावत्मोम्खिम् हेमः हित्रगाः वर्कत्र व्यावाद्याविम्छाष्ट ষাম। ন তদ্রকাইসি ন পিশাচান্তরন্তি দেবানামোজঃ প্রথমজং ছেতদ-বো বিভর্ত্তি দাক্ষায়ণং হিরণ্যং স দেবেরু কুণুতে দীর্ঘমায়ুং স মন্মুরোর কুণুতে দীর্ঘমায়:। বদাবগুন দাকায়ণা হিরণ্যাই শতানীকায় স্থমনশুমানা:। তম আবধানি শতশারদায়ায়ুমান্ জরদষ্টির্যথাসম্। \* আভূমদয়িকলাদ্ধে ত্বরং वित्यवः-माठा উखत्राणिम्थः প्राचुर्यान् यत्थाखत्रम् अविद्यान् , तमय-माठ्-शिष्ट्र-মাতামহত্রাহ্মণান্ যুগাত্রা স্থিতান্ প্রাদক্ষিণ্যেন দেবতীর্থেন নম:পদেন পুজ্বেং। উদগগ্রকুশেরু দক্ষ্যকত-বদর-মিশ্রিভপিণ্ডানি নির্ক্তপেং। অক্ষয়াদানং -- অমুকগোত্রা নান্দীমুখ্যো মাতর: অমুকদেব্যোংশিন্ নান্দীমুখ্রাছে দত্তে-নারপানাদিনা প্রীয়স্তামিতি মন্ত্রেণ কর্ত্তব্যস্, এবং পিভামস্থাদীনামপি প্রথমাস্ত্রচনান্তনামোল্লেখ: কার্যা:। ও নান্দীমুখীম তির্বাচয়িষ্যে ইতি পুটা ওঁ নান্দীমুখীভ্যো মাতৃভ্য: প্রীরন্তাং ইতি স্বধাবাচনস্থলে প্ররোগ:। ইতি বন্ধদংস্থারমঞ্জরীমতম।

## অথ সম্প্রদানম্

ভভনরে ছারামগুপসমীপসমাগতং কুশাভাসনোপরি প্রালুথস্থিতং বরং প্রতি দাতা স্বন্ধিবাচনান্তে ওঁ সাধু ভবানাস্থামিতি ক্ররাং। ওঁ সাধ্বহমাসে

শত্র নঞ্জরী—নমুবোরু কুণুতে দীর্ঘনারুঃ ইত্যক্তনার ।

ইত্যক্তবন্ধি বরে দাতা ওঁ অর্চনিব্যামো ভবস্তমিতি বদেং। ততো বরঃ ও অর্চর ইত্যুক্তা উপবিশ্র দাতৃদত্ত-পাছার্ঘ্যাচমনীয়গরপুশ-वद्याखतीत्रनानानकत्रनामिकः প্রতিগৃহ পাদ্যাত্মপ্রোপং কর। তিঠেৎ। ভতে। দাতা ৰবক্ত দকিণজামু ধুখা বরয়েং। ওঁ অভামুকে মাসি অমৃক-রাশিস্থে ভাশ্বরে অমৃকে পক্ষে অমৃকতিথো অমৃকগোত্র: এঅমৃকদেবশর্মা অনুকগোত্তভামুকপ্রবরস্থামুকদেবশর্মণঃ প্রপৌত্রং এবং পৌত্রং এবং পুত্রং ष्यमुकरभाजः ष्यमुकश्चतदः श्रीष्यमुकरम्यांनः ष्यम्करभाजसामूकरम्यमंनः প্রপোত্রীং এবং পোত্রীং পুত্রীং অমুকগোত্রামমুকপ্রবরাং শ্রীমতীমমুকীদেবীং ব্ৰাক্ষ্যবিবাহেন দাতুং (পাছাদিপুৰায়াং পাছাদিভিরিত্যলেখ্যম্) এভি-র্গদ্ধাদিভিরভার্চ্চা ভবস্তমহং বুণে। ততো বরো বুতোহস্মীতি ক্রয়াৎ, माठा यथाविश्विः विवाहकर्ष कूरू, वादा यथाकानछः कत्रवानीि ক্রমাৎ। তত আচারামুখচত্রিকাং হস্তলেপাদিকঞ্চ কারয়িতা ছায়ামণ্ডপং প্রবেশরেয়:। ততে। দাতা পশ্চিমাভিমুখো বর: পূর্ব্বাভিমুখ: ক্সাপি পশ্চিমাভিম্থী ভিষেৎ। ততো দাভ্দম্বনী কশ্চিৎ বিষ্টর ইতি ত্রিৰারং বদেং। দাতা বিষ্টরং গৃহীত্বা বিষ্টর: প্রতিগৃহতাং, বর: ওঁ বিষ্টরং প্রতিগৃহা-মীতি \* পূৰ্বাভিমুখং বিষ্টরং গৃহীত্বা উত্তরাগ্রমাসনে দত্তা ওঁ ৰম্মে হিন্দ্র সমানানামুগুতামিব সুর্য্য:। ইমং তমভিতিষ্ঠামি বে। মা কন্চাভিদাসতি (১) ইতি মল্লেণ বিষ্টরমাসনোপরি নিধায় তত্বপর্যুপবিশতি। ততোহক্ত: পাভমিতি ত্রিবারং বদেং, দাতা পাত্রস্থজনমাদায় ওঁ পাতং প্রতিগ্রতামিতি ৰদেং। বর: পাদ্যং প্রতিগ্রামীতি গৃহীত্বা ভূমে সংস্থাপ্য তত্মাজ্ঞলাঞ্জলি-মাদার ওঁ বিরাজে৷ দোহোহিদি বিরাজে৷ দোহমদীয় ময়ি পাভারৈ বিরাজে৷

<sup>(</sup>১) সমানানাম্ সমানজাতীয়ানাম্ অহম্ বশ্ব আছোদকঃ অস্থি ভবাষি। কেযাং ক ইব ? উভতাম্ উদয়শালিনাং স্থ্য ইব, কিঞ্চ যঃ কশ্চন স্বাম্ অভিদাসতি হিনন্তি। তমিমং বৈষ্ট্রক্রপতামাপ্রম্ অভিতিষ্ঠামি অভিভ্যাধঃ ক্রন্থা তিষ্ঠামি।

বছতুকাং বিষ্
রং গৃহীরাৎ ইতি কেবাঞিসভন্।

লোহ: (২) ইতি মন্ত্রেণ ব্রাহ্মণো বরো দক্ষিণং পাদং স্বরং প্রক্ষান্য তেনৈব সব্যং প্রকান্যরে। ক্ষান্যরে তবৈপরীতোন। পুনর্বিষ্টর ইতি বিঃ শ্রাবিতে দাতা ভ তথৈব দভাং। † বরো গৃহীত্বা তেনৈব মন্ত্রেণ উত্তরাগ্রং প্রক্ষানিতপাদয়োরধন্তাং স্থাপরেং। ততো দাতা অর্থ ইতি অন্তেন বিঃ শ্রাবিতে গন্ধ-পূম্পাক্ষত-কূশ-ভিল-সর্বপ-দধি-দ্র্রান্থিতমূদকং শঙ্খাদিপাত্রস্থং কৃত্বা অর্থং প্রতিগৃহতামিতি বদেং। বরোহর্থং প্রতিগৃহামীতি গৃহীত্বা ও আপঃ স্থ মুমাভিঃ সর্বান্ কামানবাপ্রবানি ইতি (৩) মন্ত্রেণ গৃহীত্বা শিরুসি বিশ্বতা তজ্জনং ভূমৌ ত্যজন্ আনেন মন্ত্রেণাভিমন্ত্ররেং, বথা—ও সমৃদ্রং বঃ প্রহিণোমি স্বাং বোনিমভিগছতে অরিষ্টা জন্মাকং বীরা মা পরাসেচি মৎপন্নঃ। (৪) তত আচমনীর-মিতি বিঃ শ্রাবিতে দাতা আচমনীন্নং প্রতিগৃহতামিতি প্রক্ষতি, বর আচমনীরং প্রতিগৃহামীতি গৃহীত্বা ও আমাগন্ যাসা সংস্কে বর্চসা তন্মা কৃত্ব প্রিয়ং প্রজানামবিপতিং পশ্নামরিষ্টং তন্নাম্। (৫) ইতি মন্ত্রেণ সকুদাচম্য

<sup>(</sup>२) হে জল! দং বিরাজ: বিশিষ্টদীপ্তে: দোহ: প্রপ্রণমসি, বিরাজো দোহন্ বিশিষ্টদীপ্তে: প্রপ্রকং আমসীর গৃহামি। বিরাজো দোহ: বিশিষ্টদীপ্তে: প্রপ্রকল্বং মরি মম পাছারে পাছার ভবেতি অধ্যাহার্যান্। হে জল! দ্বং মম পাদক্ত দীপ্তিং কুর্বিত্যর্থ:।

<sup>(</sup>৩) হে আপঃ ! ষতঃ কারণাৎ ব্রমাপঃ আপুবস্তীত্যাপঃ স্থ ভবথ, অতোহহং যুমাভিগ্হীতাভিঃ সর্বানু কামানবাপ্লবানি আপ্লামান্।

<sup>(</sup>৪) হে আপঃ! বো ষ্মান্ সম্জং প্রহিণোমি প্রস্থাপরামি, মরা
প্রহিতা যুরং বাং বোনিং সীরমুৎপত্তিস্থানং সম্জ্রম্ অভিগছত। বৃরং
কিছ্তাঃ? অস্বাকমরিষ্টাঃ অহিংসকাঃ। পুনঃ কিছ্তাঃ? বীরাঃ উৎকৃষ্টাঃ।
কিঞ্চ মৎপরো মনীরপানবোগ্যঃ বৈং পরঃ তং মা পরাসেচি তৎপরাসিজ্ঞং
মা প্রহিতংন ক্ষরতু, তদিহৈব তির্চজিত্যভিপ্রায়ঃ। হে আপঃ, বং পরো
মনীরপানবোগ্যং তর মরা প্রহিতং, ইহৈব তির্চজু। ততো অস্তা বা
আপঃ তা মরা প্রহিতা অস্বাকমহিংসকা ভূজা সমুদ্রং গছারিতি বাক্যার্যঃ।

<sup>(</sup>e) হে জল! মা মাং বশদা আগন্ আগমর মাং বশবিনং কুর্বিত্যর্থ:।

ৰারধরং তৃকীমিতি পশুপতি:।

<sup>া</sup> পান্তবাৰাথ প্ৰাণেৰ বিষয়ব্দানং ক্ষকায়ভাষ্যাত্মতন্ হলায়ুধসম্বতক। কিন্ত প্ৰপতিৰ ক্ষসংকায়মঞ্জী চ মৰোভ্যাহ।

শার্ভমাচমনং করোতি। ততো মধুপর্ক ইতি ত্রি: প্রাবিতে দাতা মধুপর্ক: প্রতিগৃত্বতামিতি বদেং। বরো মধুপর্কং প্রতিগৃহামীতি গৃহীঝা
পিধানকাংস্তং কিঞ্চিদপনীর ওঁ মিত্রস্ত ত্বা চকুষা প্রতীক্ষে (৬) ইতি মন্ত্রেণ
প্রতীক্ষ্য ওঁ দেবস্ত ত্বা সবিতৃঃ প্রসবেহখিনোর্বাছভ্যাং পূঞো হন্তাভ্যামাদদে (প্রতিগৃহামীতি পাঠান্তরম্) (१) ইতি মন্ত্রেণাঞ্জলিনা প্রতিগৃহ্ব সব্যে
পাণৌ কৃত্বা দক্ষিণানাময়া ওঁ নমস্ভাবভাষান্তলালনে বত্ত আবিদ্ধং তত্তে
নিচ্নামি (৮) ইতি মন্ত্রেণ সকৃদালোভ্য তেনৈব মন্ত্রেণ দক্ষিণাকুষ্ঠানামাভ্যাং
বহিঃ কিঞ্চিন্নির্গময়তি এবং ত্রিঃ বহিঃ কৃত্বা পরিত্যভ্য পুনরাদায়ানামাকুষ্ঠাভ্যাং
ওঁ ব্মধুনো মধব্যং পরমং রূপময়াত্যং। তেনাহং মধুনো মধব্যেন পরমেণ
ক্রিপেণায়াদ্যেন পরমো মধব্যাহরাদোহশানি (১) ইতি মন্ত্রেণ ত্রিঃ প্রাশ্ত শেষং

তং মা মাং বর্চনা তেজনা সংস্থল তেজনা সংস্টং বর্চস্থিনং তেজস্থিনং কুরু। তথা মাং প্রজানাং প্রিরং কুরু। পশ্নাং গবাদীনাম্ অধিপতিম্ দ্বীরং কুরু। তন্নাং দেহাবরবানাম্ অরিটং আপদ্রহিতং কুরু।

- (৬) হে মধুপর্ক। মিত্রস্ত আদিত্যস্ত চক্ষা থা থাং প্রতীক্ষে পশ্চামি।
  সহমাদিত্যেন চকুর্দানেনামুগৃহীত্থাং মধুপর্কং পশ্চামীত্যর্থ:।
- (१) হে মধুপর্ক! তা তাম্ আদদে প্রতিগৃহামি। কন্মিন্ সতি ? দেবস্থ সবিতৃঃ আদিত্যস্থ প্রদবে অভ্যকুজানে। গ্রহণং কাভ্যান্ ? অধিনোঃ অধিনীকুমারয়োঃ বাছভ্যাং, তথা পৃঞ্চঃ আদিত্যস্থ হস্তাভ্যাং সবিতৃঃ সন্মতৌ অধিনীকুমারাভ্যাং বাছদানেনামগৃহীতঃ, পৃঞা চ হস্তাচ্ছাদনে-নামগৃহীতস্থাং মধুপর্কং গৃহ্নামীতি বাক্যার্থঃ।
- (৮) হে নমস্ত! নমস্বারার্হ মধুপর্ক! তাং অবভায়ানি মিশ্রয়াণি। কিঞ্চ তে তবাসনে যদ্ আবিদ্ধম্ উপহিতং তত্তে নিফ্নস্তামি অপসারয়ামি।
- (৯) মধুনো য়জপম্ স্বরূপং কিন্তৃতং মধব্যং মধুরং পরমং রূপমন্নাছাং তেনাহং মধুনো মধব্যেন উৎকৃষ্টম্ জ্বলাছমিব যথা জ্বলাদিকমূপভূকং সদ্বলাদিকমাদধাতি তথেদমপীত্যর্থ:। যেন পরমেণ রূপোলাদ্যেন মধুনো মধব্যং পরমরূপমন্নাছ্যমহমশানি জ্ক্রামি। মধব্যমিত্যাদি প্নবিশেষণমাদরাভিশন্নার্থম্। কিন্তৃতোহহং ? পরমং উত্তমং মধব্যং মধুরশীলং জ্বলাদেঃ ভক্কং। তদেবভূতমুৎক্র্বাছর্থং জ্ক্রামীতি।

পুত্রার শিষ্যার বা উত্তরপার্যোপবিষ্টার দ্ব্বাৎ, পূর্ব্বস্থাং দিশি বা ক্লিপেৎ, সর্বং বা প্রার্মীরাৎ, জনানামসঞ্চারস্থানে বা প্রক্রিপেৎ। ততঃ মার্ত্তেন বিধিনাচন্য ওঁ বাঙ্কম আন্তেহস্ত ইতি করার্ত্রোণ মুখং স্পৃসতি। ওঁ নসোঃ প্রাণো মেহস্ত ইতি দক্ষিণ-বাষ-চকুষী। ওঁ কর্ণরোঃ প্রোত্রেমহস্ত ইতি কর্ণো। ওঁ বাহেনার্ব লক্ষেহস্ত ইতি বাহু। ওঁ উর্ব্বোরোজো মেহস্ত ইতি ব্রুপপদ্র। ওঁ অরিষ্টানি মেহসানি তন্ত্রবা সহ সন্ত। (১০) ইতি শিরংপ্রভৃতি-পাদাস্তানি অঙ্গানি উভাত্যাং হন্তাভ্যাং স্পৃশেৎ। ততঃ আচাস্তোদকার বরার দাতা থড়ামাদার গামবস্থাপ্য গোগোঁ গোঁ রিতি বন্ধে । ততো বরং গাং দৃষ্টা ওঁ মাতা রুদ্রাণাং তহিতা বস্থনাং অ্বাদিত্যানামমৃতস্থ নাভিঃ। প্র পু বোচং চিকিত্রে জনার মাগামনাগামদিতিং বিধিট। মম চাম্ব্য (অমুকশর্মণঃ কন্তাদাতুঃ) চ পাপ্যা-হত ওঁ (ইত্যপাংশু উক্রা) উৎস্কৃত তৃণাক্সতু † (১১) ইতিক্রেরাং।

<sup>(</sup>১০) মে মম আন্তে মুখে বাগ্বচনমন্ত, মে মম নসোঃ নাসিকরোঃ প্রাণঃ খাসবায়ুরন্ত, মম অক্ষোঃ চক্ষ্রেলিরমন্ত। মম কর্ণয়োঃ কর্ণশঙ্লোঃ প্রোত্তমন্ত। মম বাহেলাঃ বলং সামর্থ্য, মম উর্ব্বোঃ ওজঃ পটুত্বমন্তিতি সর্বত্ত যোজ্যম্। মম অকানি শিরঃপ্রভূতীনি অরি-ষ্টানি আপত্রহিতানি সন্ত, মে মম তন্ঃ দেহাবয়বাঃ হস্তাদয়ঃ অরিষ্টাঃ সন্থিত্যর্থঃ। করা সহ ? তন্তা দেহাবয়বিনা সহেত্যর্থঃ।

<sup>(</sup>১১) ম ভো: । অর্থাকারক ! প্রবেচং প্রক্জবাননি । কন্মৈ জনায় ? বন্মৈ কন্মিচিৎ প্রাণিমাত্রায় । কিন্তু তায় ? চিকিতুবে জ্ঞানহেতবে শুশ্রুরবে ইতি যাবৎ । কিং বদসীত্যাকাজ্জায়ামাহ—গাম্ জনাগাম্ অদিতিং অহিংসনীয়াং মা বধিষ্ট মা মারয়ত । যা
ক্জাণাং মাতা, বস্নাং ছহিতা, আদিত্যানাং অমা, অমৃতস্ত দেবানামাহারভূতস্ত নাতিঃ উৎপত্তিস্থানম্ । কিঞ্চ মম চার্থায়স্ত অস্ত অর্থাকর্ত্ত্ব
পাপা পাপং হত নাশয়ত, ওমিতি মদীয়বচনমন্ত্র্যত উৎস্কৃত মৃঞ্চত
গামিতি পূর্বেণায়য়ঃ । তৃণাক্তব্র খাদয়ত্ গৌম্কা সতীতি বোল্যম্ ।

ॐ নমঃ প্রাণোল্বেহন্ত, ওঁ অক্লোর্ন্দ্রে চকুরন্ত, ওঁ কর্ণরোক্ত্র্ম শ্রোক্রমন্ত, ওঁ বাহেবার্ন্দ্রেবলমন্ত, ওঁ উর্কোর্ন্দ্রে ওক্লোহন্ত ইতি সংক্ষারমঞ্জনী।

<sup>† &#</sup>x27;ভ্ৰান্তভ**ু' ই**তান্তপাঠঃ পারকরেণ ধৃতঃ হলার্থেন চ ব্যাধ্যাতঃ পশুপতিনা চ 'অবলম্বিতঃ। শিবভূদক্ষিতি কচিৎ পাঠঃ।

ভতো বরো বহি:শালারাম্ ঐশাক্তাং চতুহ গুপ্রমাণং স্থণ্ডিলং রুত্বা স্থস্থিকাজিবিধিনা বাজকনামানমন্ত্রিং সংস্থাপ্য \* পাছাদিভিরভ্যর্ক্ত্য কল্পাশিত্রা দত্তবন্ত্রত্ত্বিক্ত একতমং বাসং বরো বাসগৃহং পরা কল্পাং পরিবাপরতি। (প্রজাপতিশ্ববিশ্রিই প ছন্দন্তরীবেমাদয়ো দেবতা বন্ত্রপরিবাপরতি। (প্রজাপতিশ্ববিশ্রিই প ছন্দন্তরীবেমাদয়ো দেবতা বন্ত্রপরিবাপনে বিনিরোগ:) ওঁ জরাং গল্ক পরিধৎস্ব বাসো ভবারুষ্টীনামভিশন্তিপাবা। শতক্ষ জীব শরদং স্থবর্কা রিশ্বক্ত পূল্রানম্পাংব্যর্মাযুম্মতীদং পরিধৎস্ব
বাসং।(১২)ইতি অনেন মন্ত্রেণ। (প্রজাপতিশ্বিদ্বর্গতিছনন্তরীবেমাদয়ো
দেবতা উত্তরীয়পরিধাপনে বিনিরোগ:। ওঁ যা অক্রন্তর্রবন্ধন্ যা অতহত
বাশ্চ দেবীজন্তুনভিতোহততন্ত্ব। তাল্পা দেবীর্জরসে সংব্যর্মাযুম্মতীদং পরিধৎস্ব
বাস:।(১০)ইত্যনেন মন্ত্রেণ হিতীরমৃত্রবীয়ং বাসং কল্পাং পরিধাপম্বতি।+ ততঃ
স্বরং তৃতীয়ং পরিদ্রাত্যনেন মন্ত্রেণ—ওঁ পরিধাল্যৈ যশোধাল্যে দীর্ঘাযুরায় জরদিষ্টরন্মি শতঞ্চ জীবানি শরদং পুরুচী রায়স্পোষ্মভিসংব্যয়্নিয়ে ইতি একং
পরিধত্তে। ওঁ বশসা মা ছাবাপৃথিবী যশসেন্দ্রাবৃহস্পতী বশো ভগশ্চ

<sup>(</sup>১২) হে আয়ুমতি। কন্তে। জরাং বৃদ্ধতং গছ চিরজীবিনী ভব, কিঞ্চ বাস: পরিবংশ ধারর, বন্ত্রবিম্কা কদাচিদপি মা ভব। কিঞ্চ আরুষ্টীনাং ভব আরুষ্টা মনোহর। ভবেত্যর্থং। অভিশন্তিপাবা অভিশন্তিং শরনং তত্ত্ব পাবা শরনার পবিত্রা ভব। কিঞ্চ শরদং শতং জীব শতবর্ষাণি জীবেত্যর্থং। স্থবর্চাং শোভনদীপ্রিযুক্তা সভী রিয়িং ধনং পুত্রাংশ্চ অমুসংব্যস্থয় সংবৃণ্। ষন্ময়া আশাসিতং তৎপ্রাপ্তরে বাসং পরিবংশ ।

<sup>(</sup>১৩) হে আর্মতি! যা দেবীঃ দেবাঃ তন্ত্ব অক্সন্কর্তিবতাঃ।
.তথা যান্তমূন্ অবয়ন্ বাপিতবতাঃ, তথা যান্তমূন্ অত্যত বিস্তারিতবতাঃ।
তা দেবাঃ আ আং সংব্যরম সংব্যরম পরিধাপরম্ভ। তথা অমিদং বাসঃ
আততত্ত্ বিস্তারয়। কেন প্রকারেণ ? অভিতঃ উভয়তঃ প্রতারেণ
দৈর্ঘেণ চ বিস্তার্য পরিধ্বয়। কিমর্থং ? জরুসে চির্জীবনায়।

ইদানীং সম্প্রদানকালে বহিন্থাপনং ন বাব হ্রিয়তে শিট্টঃ। তেন পাঁণিগ্রহণকর্মাদৌ
বহিন্থাপনং বপাদির্দিটং কার্যামিতি সিদ্ধান্তঃ। কস্তাদা
ক্রেলাভ্নতবন্ত্রপরিধাপনে
মক্তেছিপি বরেণ ন সম্প্রদানকালে পঠাতে। ইতি দেশাচারঃ।

<sup>†</sup> ৰন্ত্ৰপরিধানাদি-সমঞ্জনাত্তং কর্ম পাণিগ্রহণদিনে প্রযুদ্ধাতে ন সম্প্রদানদিবনে: ইতি ব্যবহার:।

ৰা বিদৎ ৰশো মা প্ৰতিপম্ভতাম্ ইতি চতুৰ্থং পরিদ্যাৎ। 🔸 ভতো দাতা ( কন্তাবরাবভিমুখীক্বতা ) পরস্পরং সমঞ্জেতামিতি প্রৈবং দন্তাৎ। অর্থ বর: ইমং মন্ত্রং পঠেৎ। ওঁ সমঞ্জ বিশ্বেদেবাঃ সমাপো জদরানি নৌ, সন্ত্রা-ভরিখা সন্ধাতা সমূদেদ্রী দধাতৃ নৌ। (১৪) ইতি পঠিত্বা পরস্পরং (স্পর্শনরূপং) সমগুনং কুৰ্য্যাৎ। অথ কন্তাদানং। দাতা ওঁ দাতা২হং বৰুণো বাজা ক্রবামাদিতাদৈবতম। বরোহসৌ বিফুরপেণ প্রতিগৃহাত্বয়ং বিধিরিতি t পঠিতা কুশতিলজলাকাদায় উদল্প: : প্রাল্থায় বরায় প্রত্যন্ত্র্যুথোপবিষ্টাং কল্রাং দল্লাৎ। যথা § অমুকে মাসি অমুকরাশিত্থে ভাস্বরে অমুকপক্ষে অমুক-ভিথৌ অমুকগোত্র: প্রীঅমুকদেবশর্মা শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিকাম: পুরাণোক্তশত-গুণীকুতজ্যোতিষ্টোমাতিরাত্রফলসমফলপ্রাপ্তিকাম: মহাভারতাত্যক্তকন্তাদান-ফলপ্রাপ্তিকামো বা "অমুকগোত্তভামুকপ্রবরত্তামুকদেবশর্মণঃ প্রপৌত্তায় এবং পৌত্রায় পুত্রায় অমৃকগোত্রায়ামৃকপ্রবরায়ামৃকদেবশর্মণে বরায় ব্রান্ধণায়ার্চিতায়—অমুকগোত্রসামুকপ্রবর্ত অমুকদেবশর্মণ: প্রপৌদ্রীং এবং পৌত্রীং পুত্রীং অমুকগোত্রামমুকপ্রবরাং অমুকদেব্যভিধানাম্ অর্চিভা"-ত্রিকৃত্ব প্রজাপতিদেবতাকামরোগিণীম্ অপ্রবাসিনীং সবল্পা-লম্বারাং তৃভ্যমহং সম্প্রদদে ইতি কুশতিলম্বলেন কন্তাহন্তঃ বরহন্তে দ্যাৎ ।

<sup>(</sup>১৪) বিখেদেবাঃ নৌ আবরোঃ হৃদয়ানি হৃদয়ে সমঞ্জ, আপোছণি পানীয়ানি সমঞ্জজ, নৌ হৃদয়ানীত্যনেন সম্বন্ধ:। পানীয়েনোৎসর্গপূর্বকং দভায়াত্তব হৃদয়ং মম হৃদয়েন সঙ্কতং ভবদ্বিত্যভিপ্রায়:। তথা মাতরিখা প্রাণবায়: নৌ আবাং সন্দধাতু সংবোজয়তু। তথা ধাতা প্রজাপতিঃ উদেষ্ট্রী ইচ্ছাকর্ত্রী দেবতা কামদেবক্চ নৌ আবাং সন্দধাতু।

ভাত বরকর্তৃকবন্ত্রপরিধানপ্রয়োগো ন স্তাকার-হলায়ৄধসম্বতঃ।

उक्तमःकात्रमञ्जतीवृट्डाश्तरः भाठः ।

<sup>💲</sup> প্রত্যরুখো দল্লাৎ ইন্তি পশুপতিমত্র।

<sup>§</sup> অত্ৰ কচিৎ পুত্তকে বিশেষ:—ওঁ িঞ্: বাৰ্ষ্ণপতাব্যবস্থারাং একণো বিভীরপরার্দ্ধে খেত-বরাহকলে বৈবস্বতাধানবস্তবে কলিম্পন্ত প্রথমসন্ধারাম্ অভামুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক্তিথে) অমুবীপন্ত মেণীভূতন্ত স্মেরোদ ক্ষিণপার্ধে শ্রীশৈলরাকাবচ্ছিরভারভবর্বাধা-ভূথদেশেহসিন্ শ্রীমন্নারারণ-বহ্নি-এাক্ষণাদিস্ত্রিথে) অমুক্গোত্রঃ অমুক্দেবশর্মা ইড্যাদি পাঠঃ।

বারমেকমূচ্চার্য্যেভি গৌড়া:। বারত্ররমূচ্চার্য্যেভি মৈথিলা:। বস্তুভস্ত বারত্রহং পাঠঃ, নামগোত্তে সমূচ্চার্য্য সম্প্রদানস্ত চাত্মন:। সংপ্রদানং প্রবচ্ছামি কক্সাদানে পুনস্তবমু ইত্যাগ্নেরবচনাৎ। ততো বর: স্বস্তীত্যক্ষা ওঁ কন্সেরং প্রজাপতিদেবতাকা ইত্যুক্তা ওঁ ছোজা পরিদদাতু পৃথিবী ঘা প্রতিগৃহ্লাতু (১৫) \* ইতি মন্ত্রেণ গুহ্নীয়াৎ। তত ইমং মন্ত্রং পঠেৎ। ওঁ কোহদাৎ কল্পা অদাৎ কামো-হদাৎ কামারাদাৎ কামো দাতা কাম: প্রতিগ্রহীতা কামৈতত্তে (১৬) ইতি মাধ্যন্দিনীয়া:। এতন্মন্ত্ৰান্তে ওঁ তব কাম সতা ভূঞামহৈ ইতি পাঠ্যম। + ততো—হরীতকী-লোধ-মরাচপত্রৈশ্চ তত্বচা দাড়িমবন্ধলৈশ্চ। প্রলেপো গিরিরাত্বপুত্রাা: সৌভাগ্যহেতো: কথিত: পুরাণৈরিতি। তথা চ সহদেবা-শতপুষ্পী-গুঞ্জাকর্প র-কুঙ্কুমেঃ। বিষ্ণুক্রাস্তা-সর্জ্বস-ধৃস্ত র-মধু-বিধীয়তে ইতি দর্শনাদচারাদেভি: পিট্রৈ: কশ্চিদ্রাহ্মণো বধুবরয়ো-হ'ন্তলেপং ক্রতা বরহন্তোপরি বধূহন্তং দত্তা গায়ত্র্যা কুশবেণ্যা বয়ীয়াৎ। ততো দাতা ওঁ অভেত্যাদি কুতৈতৎক্লাদানপ্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামেডৎ স্ববর্ণ গোমিথুনং বা তৃভ্যমহং সম্প্রদদে ইতি। বরঃ স্বন্তীতি প্রতিগৃহীয়াৎ। গো-হিরণ্য-ভূমি-ধান্ত-দাদ-দাসী-ভোজনাদিকঞ্চ দহ্যাৎ। বৌতৃকাদিকং দত্যা:। ততঃ কশ্চিদস্তোহপি ব্রাহ্মণঃ কন্তাবররোক্তরীয়-বস্ত্রাভ্যাং ফলমন্তর্ধান্ত্র গায়ত্র্যা গ্রন্থিং বন্ধীয়াৎ। ততঃ স এব বধুবরয়ো-হ'ন্তগ্রন্থিং গায়ত্রা মোচয়েং। ইতি সম্প্রদানং কর্ম।

<sup>(</sup>১৫) হে কন্তে। দ্যৌন্ধা বাং দদাতু পৃথিবী বা বাং প্রতিগৃহ্নাত । অর্থাৎ তব পিতা আকাশমিব যথা পৃথিবী বিশ্বেষামাশ্রমঃ তথা অহং তবা-শ্রমভূতন্বাং প্রতিগৃহ্নামীতি বাক্যার্থঃ।

<sup>(</sup>১৬) ক: কল্মৈ আদাৎ প্রশ্নে ইনমূত্তরং কামোহদাৎ কামারাদাৎ।
বতঃ কারণাৎ কামো দাতা কামঃ প্রতিগ্রহীতা অতো হে কাম! এতদ্বদত্তং প্রতিগৃহীতং তদেতত্তে। তথা চ সতি হে কাম! তব সতা সত্তবেন
সংক্ষিভূতমেতৎ কন্তাদিকং ভূঞামহৈ উপভূঞামঃ।

<sup>🛊</sup> হলারুখেন কামস্ততিপাঠানস্তরং পঠিভ:।

<sup>+</sup> विवास निकातानानानस्य दः कामस्रुजिनार्वः का बन्नास्य ।

#### অথ পাণিগ্ৰহণাদি

• ততো (প্র্রোজ-বন্ত্রপরিধাপনমন্ত্র-পাঠান্তে) বরঃ কন্তাং হন্তেনাদার প্রতিগ্রহস্থানারিক্রামরতি। ওঁ বদৈষি মনসা দ্বং দিশোহস্থপবমানো বা হিরণাপণে। বৈকর্ণঃ স তা মন্মনসাং করোজসৌ। অসাবিতি (১৭) সম্বোধনান্তম্ অমুকী-দেবীতি বধুনাম কার্য্য্য। ততঃ সবধুকো বরঃ অগ্নেঃ প্র্দেশাৎ দক্ষিণাবর্ত্তেন পশ্চিমে তিঠেও। এতৎকালাব্ধি অভিষেকপর্যান্তমন্তঃ কন্তিৎ ক্রনাবসক্ত-সচন্দন-চ্তপল্লবাস্ত্রজনপূর্ণকলসঃ অগ্নেদিক্ষণতঃ বাগ্যত উদ্ধৃতিঠেও। ততঃ পরস্পরং সমীক্ষেতামিতি প্রৈমেণোক্তে কন্তাপিতা বধুবরৌ পরস্পরং সমীক্ষরতি। ততঃ সমীক্ষমাণো বরো বক্ষ্যমাণান্ চতুরো মন্ত্রান্ পঠেও। ওঁ অবোরচক্রপতিন্মেধি নিবা পশুভাঃ স্থমনাঃ স্বর্চাঃ বীরস্দেবকামা স্থোনা শরো ভব বিপদে শং চতুষ্পদে। (১৮) ওঁ সোমঃ প্রথমো বিবিদে গন্ধর্বো বিবিদ উত্তরঃ। তৃতীয়ো অগ্নিষ্টে পতিন্তরীয়ন্তে

<sup>(</sup>১৭) অসৌ হে কন্তে! তং মন্মনদা হাদরেন দ্রমৈষি গছসি পিতৃকুল-বহির্ভা। কুত্র কেন নীয়তে? হাদরেন দ্রং বাসি সোৎকণ্ঠা ভবসি, ভত্র দিশং প্রাচ্যাদিদশদিশং অফু ভদনন্তরং প্রমানঃ বা সুমুচ্চেরে বায়ুশ্চেত্যর্থঃ, হিরণ্যপর্থঃ হিরণ্যং পর্বঃ রথং অত্য ইতি হিরণ্যপর্ণ আদিত্যঃ, বৈকর্ণঃ বিকর্ণে কোণে তিষ্ঠতি ইতি বৈকর্ণোহয়িঃ, তে দিগ্-বায়্-স্র্য্যাগ্রয়ঃ আ আং মন্মনসাং করোতু কুর্বস্ত ।

<sup>(</sup>১৮) হে কন্তে! অপতিন্নী এধি তব। কিন্তৃতা ? অঘোরচকু: অঘোরং অভীবণং সোম্যং পতিবিষয়ে চকু: যস্তা: সা। কিঞ্চ পশুভা: শিবা গবাদিভা: কল্যাণকারিনী। স্থমনা: শোভনমনা: স্থবর্চা: শোভনদীপ্তি: বীরস্থ: বীরং বীর্য্যবন্তং পূত্রং স্তে, দেবকামা দেবং দেবনং ক্রীড়নং কামন্তে ইচ্ছতি যা সা, স্তোনা স্থিনী নোহস্মাকং দিপদে মনুস্পরিজনে শং কল্যাণ-কারিনী ভব। তথা চতুস্পদে অখাদে শং ভব।

<sup>🍍</sup> ইদানীং সম্মদানপদ্মত্যুক্ত-নৰবন্ধপরিধানমন্তান্ বরঃ পঠভীতি ব্যবহারঃ।

নহ্বয়ঞ্জ:। (১৯) ওঁ সোমোহদদদ্ গন্ধব্যার গন্ধব্যাহদদদ্যরে রিরিঞ্চ পুত্রাংশ্চাদাদ্দিরিম্ হ্রমথে। ইমান্। (২০)ওঁ সানঃ পুষা শিবতমা মৈররৎ ম উক্ক উশতী বিবহ। বস্তাম্শন্তঃ প্রহরাম শেপং (ফং) বস্তাম্কামা বহবো নিবিষ্ট্যৈ। (২১) ততঃ প্রদক্ষিণমগ্রিং পরীতা পশ্চাদগ্রেঃ পূর্বস্থাপিততেজনীকটরোরক্তরে দক্ষিণং পাদমগ্রে ক্রোপবিশতি বরঃ, তস্ত দক্ষিণতো বধৃঃ। ততো বরস্থাপ্সকং কটং বা দক্ষিণপাদেনোল্লজ্যা প্রাত্ম্বাপ্রাত্ম দক্ষিণতো বধৃং হয়া তন্মিরের কটে হোমায়োপবিশতি। ততো বন্ধোপবেশনাদি-চক্ষবর্জ্জমগ্রিপরিস্তরণান্তং কর্ম কুর্ঘাং। ততঃ পরং দ্রব্যাসাদনে ইয়াংশ্র বিশেষঃ—শমীপলাশপত্রমিশ্রিতলালাঃ সপ্ত্র-শিলা অথতং লোহিত-মানডুহং চর্ম শূর্পং দৃঢ়ং পুরুষঃ আচার্যাবরণদ্রামতি। ততঃ সর্ব্ব-প্রারশিক্তান্তাং কুশপ্তিকাং \* বিধার ব্রন্ধণোহ্বারস্তত্যাগং ক্রবা রাষ্ট্রভূজ্জাব্যাতানগ্রিরৈবিত্যাদিকান্ পরং মৃত্যবিত্যস্তান্ জুত্রাং। রাষ্ট্রভূতো ষ্পা—ওঁ খতাযাড্তধামাগ্রির্গর্কঃ স্ব ইদং ব্রন্ধ ক্ষত্রং পাতৃ তব্যৈ স্বাহা বাট্। (২২)

<sup>(</sup>১৯) হে কন্তে। ত্বাং সোম: প্রথমো জন্মসময়ে বিবিদে শ্রুবান্। গর্ম্ধ উত্তর: দ্বিতীয়: বিবিদে শ্রুবান্, তে তব তৃতীয়: পতির্য়ি:। তথা তৃরী-রন্তে চতৃর্পতি: মহার্যজা: মহাযজাতোহ্ছমিত্যর্থ:। কিমিদানীঞ্তুর্পামেব পত্নীত্যত আহ সোমোহদদিত্যাদি।

<sup>(</sup>২০) সোম: ইমাং গদ্ধবিষ অদদৎ দত্তবান্, গদ্ধবিষ্থিয়ে ইমামদদৎ, অথো অনস্তয়ন্ অগ্নিম্ছমদদৎ। ন কেবলমিমাং রয়িংধনং পুদ্রাংশ্চ অগ্নি-মৃত্যুম্লাৎ।

<sup>(</sup>২১) সা ইয়ং পৃষা বৃদ্ধিকারিণী শিবতমা কল্যাণী মা ঐরয়ৎ ন তাজতু নঃ অস্থান্। কিঞ্চ মন্তাং ত্রি উপন্তঃ ইচ্ছন্তো বয়ং শেক্ষ্ ইন্দ্রিয়ং প্রহরাম প্রক্রিপাম:। মা ত্রম্ উরু বিবহ প্রসারয়। কিন্তৃতা ? নো অস্থান্ উপতী ইচ্ছন্তী। কিঞার্থে উপন্তঃ, কিঞ্চ মন্তাং ত্রি বহবঃ কামাঃ অভিলবিতাঃ নিবিষ্টো নিবেশিতাঃ।

<sup>(</sup>২২) বোহপ্রিগ কর্বকপত্তশৈ অগ্নরে স্বাহা বাট্, যতঃ স্বাহারতং সহতং

<sup>\*</sup> ইতি তু ব্রহ্মসংফারমঞ্জনীয়তন্, পশুপতরন্ধ অকৃতহোমান্তে আর্শিভহোমং সমাবনতি ৷

ইদমৃতাসাহে শৃতধায়েৎয়রে গদ্ধায়। ওঁ শ্বতাবাড় তথামায়ির্গদ্ধন্ত ভৌষ্ধরে প্রকার। (২০) ইদমোর্বিভ্যোহ্পরোলা মৃদ্ভা:। ওঁ সংহিতো বিশ্বসামা স্থায় গদ্ধার স্ব ন ইদ্বং বন্ধ করেং পাতৃ তব্দ্ব স্বাহা বাট্। (২৪) ইদং সংহিতার বিশ্বসায়ে স্থায়র গদ্ধায়। ওঁ সংহিতো বিশ্বসামা স্থায় গদ্ধবিজ্ঞ মরীচয়াহপরস আয়্বোলাম তাভাঃ স্বাহা। (২৫) ইদং মরীচিভ্যোহপ্ররোভ্যঃ আয়্ভাঃ। ওঁ স্ব্রুঃ স্থারশিক্তমা পদ্ধার সকরেং স ন ইদং বন্ধ করেং পাতৃ তব্ম স্বাহা বাট্।(২৬) ইদং স্ব্রুয়র স্থারশ্বিক্তমা পদ্ধায়ার স্থারশ্বিক্তমা গদ্ধবিজ্ঞ নক্ষরাণ্যপ্ররোজ্ঞ চক্রমসে গদ্ধবিজ্ঞ। ওঁ স্ব্রুঃ স্থারশিক্তমা গদ্ধবিজ্ঞ নক্ষরাণ্যপ্ররোজ্ঞ ভেক্ররোলাম তাভাঃ স্বাহা। (২৭) ইদং নক্ষরেভ্যাহপ্রোভ্যো ভেক্রিভাঃ। ওঁ ইবিরো বিশ্বয়চা বাতো গদ্ধরিঃ দ্

তৎ স্বাহা বাট্ বহতু। কিন্তৃতোংগ্নি: ? ঋতসাট্ ঋতং সত্যং সহতে ইতি সত্য-সহকৃত ইত্যৰ্থ:। পুন: কিন্তৃতঃ ? ঋতধামা ঋতং সত্যং ধাম স্থানং ৰচ্ছেতি ঋতধামা। কিমৰ্থং তলৈ স্থাহা ? স ন: অস্থাকং ইদং এম জ্ঞানং ক্ষত্ৰং বীৰ্য্যঞ্চ পাতৃ বক্ষতু।

- (২৩) তক্ত পূর্ব্বোক্তক্তায়ের্গন্ধব্রপদ্য অপ্সরস: ওবধয়: বীহাদয়:
  কিন্ত্তা: দুম্দা নাম মুলায়্য ইত্যর্থ:। তাভি: দর্ব্বে মোদত্তে ইতি মৃদঃ
  ভাঙ্য ওবধিভ্য: স্বাহা স্মৃত্তমন্ত । অয়ের্গন্বিকাপ্সরোভ্যো মুলায়ীভ্য
  ভবধিভ্য: অস্মাভিরিদমাল্য: প্রদত্তং তা অস্মাকং জ্ঞানং বীব্যঞ্চ রক্ষন্থিতি
  বাক্যার্থ:।
- (২৪) সুর্য্যো গন্ধর্কঃ, কিন্তৃতঃ ? সংহিতঃ দিবসং রাত্রিঞ্চ সন্দধাতীতি। পুন: কিন্তুতঃ ? বিশ্বসামা সর্বসামবেদময়ঃ। অপরং পূর্ববিৎ।
- (২৫) তিস্য স্থাত গন্ধরিরপত অপ্সরসং মরীচয়ং রশয়ং, কিছ্তাং ?
  আয়বো নাম আয়বন্তি আয়োজয়তীত্যায়বং। আয়নায়্যঃ।
- (২৬) বশ্চক্রমা, গন্ধবং কিন্তৃতঃ ? স্থ্যরশিঃ ? কতমঃ ? সুযুরঃ সূচ্ স্মনাঃ।
- (২৭) তক্ত চক্রমসো গর্ককিত অপ্সরসো নক্রাণি, কিছ্তানি ? ভেকু-রয়ো নাম।

ন ইদং ত্রন্ধ ক্ষত্রং পাতু তলৈ স্বাহা বাট্। (২৮) ইনমিবিরার বিশ্বচনে বাতারু পন্ধবির। ওঁ ইবিরো বিশ্ববাচ। বাতো গন্ধবিন্তস্তাপো অপ্যরস উর্জ্ঞো-নাম তাভাঃ স্বাহা। (২৯) ইদমদ্ভ্যোহপরোক্তা উর্গ্ ভাঃ। ও ভুজাঃ স্থপর্ণো बख्बा शक्तर्यः म न देमः बन्न कवाः পाजु जटेच चाहा वाह । (००) देमः जुकारक স্পর্ণায় যজায় পদ্ধর্কায়। ওঁ ভূজ্যু: স্থপর্ণো গদ্ধর্কস্তস্ত দক্ষিণা অপ্যরসন্তাবা-নাম তাভ্য: স্বাহা । (৩১) ইদং দক্ষিণাভ্যোহপ্সরোভ্যস্তাবাভ্য:। ওঁ প্রস্থাপতি বিশ্বকশ্বা মনো গন্ধৰ্বঃ স ন ইদং ব্ৰহ্ম ক্ষত্ৰং পাতৃ তলৈ স্বাহা বাট। (৩২) ইদং প্রজাপতয়ে বিশ্বকর্মণে মনসে গন্ধর্মায়। ওঁ প্রজাপতির্বিশ্বকর্মা মনো গন্ধবিতত ঋক্সামাজকারস এইরো নাম তাভ্য: ভাহা। (৩০) ইদমুক সামভ্যোহপ্যরোভ্য এষ্টিভা:। (কেচিদক্তথা মন্ত্রপ্ররোগং কুর্বস্তি স প্রদর্শ্যতে। ঝতাষাড় তথামাগ্রির্গন্ধ: স ন ইদং বন্ধ ক্ষত্রং পাতৃ তব্দৈ স্বাহা বটি। ইতি প্রথম:। তক্তোষধন্নোহপারসো মুদো নাম তাভ্য: স্বাহেতি বিতীয়:। এবং সর্বেষ্ মন্ত্রেষ্। অস্মিরপি পক্ষে ত্যাগান্ত এব।) অথ জয়হোম:। ওঁ চিত্তঞ্চ স্বাহা ইদং চিত্তার। চিত্তিশ্চ স্বাহা ইদং চিত্য। আকৃতঞ্চ থাহা ইদমাকৃতায়। আকৃতিশ্চ থাহা ইদমাকৃত্যৈ। বিজ্ঞাতঞ্চ স্বাহা ইদং বিজ্ঞাতায়। বিজ্ঞাতিশ্চ স্বাহা ইদং বিজ্ঞাতৈত।

<sup>(</sup>২৮) বো বাতো গন্ধৰ্কঃ, কিন্তৃতঃ ? ইষিরঃ গমনশীলঃ বিশ্বব্যচাঃ স্কাগতঃ।

<sup>(</sup>২৯) তক্ত বাতক্ত অপ্সরদ আপো জলানি, কিন্তৃতা ? উর্জ্জো নাম উর্জ্জ ইতি নাম যাসাম্।

<sup>(</sup>৩•) বজ্ঞো গন্ধর্কা: ভূজ্যুঃ সর্কাণি ভূতানি ভূনজি পালয়তীতি স্বপর্ণঃ শোভনপর্ণ: স্বগতিরিতি যাবং।

<sup>(</sup>৩১) বতন্ত্ত গন্ধর্কাপ্সরসো দক্ষিণা, কিন্তুতা ন্তানাম দক্ষিণারাং দন্তারাং বজন্ত ন্তাবাঃ।

<sup>(</sup>৩২) মন: অন্তরিন্দ্রিয়ং পদ্ধর্কা, কিছ্তা ? প্রজাপতিঃ প্রজানামীশঃ বিশ্বকশা বিশ্বং কর্ম্ম বস্তু সং মনসো ব্যাপারেণ বিশ্বস্তু নির্মাণাৎ।

<sup>(</sup>৩০) তন্ত মনসো গন্ধৰ্মতাপ সরস থক্ সামানি থচঃ সামানি চ। কিন্তু-ভানি ? এইরো নাম আ ইষ্টি: ইচ্ছা পূত্রাদীচ্ছরা থগাদিমন্ত্রপ্রকৃতিক পূত্রাদিকলং সম্পদ্ধতে।

মনশ্চ খাহা ইদং মনসে। শক্রীশ্চ খাহা ইদং শক্রীভাঃ। দর্শক খাহা ইদং দর্শার। পোর্থমাসঞ্চ খাহা ইদং পৌর্থমাসার। বৃহচ্চ খাহা ইদং বৃহতে। রথস্তরঞ্জ খাহা ইদং রথস্তরার। (৩৪) (চিত্তক্ষেত্যবমাদীনাং পদানাং চতুর্থস্তানাং প্রয়োগং কেচিদিচ্চন্তি তদসাম্প্রতম্। কুতঃ? ন ফোতানি দেবতাপদানি, কিন্তু মন্ত্রা এতে, মন্ত্রাশ্চ ব্যায়াতা এব প্রব্যুক্তরে।) প্রকাপতির্জানিক্রার বৃষ্ণে প্রায়চ্ছত্যঃ পূতনা জরের। তথ্য বিশঃ সমনমন্ত স্বাঃ স উগ্রঃ স হি হব্যো বহুব খাহা (৩৫) ইদং প্রজাপতরে। আথাভ্যাতানহোমঃ। ও অগ্নিভূতানামধিপতিঃ স মাবত্বনিন্ ব্রহ্মণ্যান্মিন্ কর্মণ্যান্মিং ভূতানামধিপতিঃ সমাবত্বনিন্ ব্রহ্মণ্যানিব্যুক্তানামধিপতিঃ সমাবত্বনিন্ ব্রহ্মণ্যানিব্যুক্তানামধিপতিঃ সমাবত্তনিন্ ব্রহ্মণ্যানিব্যুক্তাং প্রোধার্যামন্দিন্ কর্মণ্যায়ং দেবহুত্যাং খাহা। (৩৬) ইদমগ্রে ভূতানামধিপতরে। ও ইন্দ্রো জ্যেষ্ঠানামধিপতিঃ সমাবত্তনিন্ ব্রহ্মণ্যানিব্যুক্তাং প্রোধার্যামন্দিন্ কর্মণ্যায়ং দেবহুত্যাং খাহা ইদমিক্রার জ্যেষ্ঠানামধিপতরে। ও যমঃ পৃথিব্যা অধিপতিঃ

<sup>(</sup>৩৪) চিত্তং জ্ঞানং মহং জয়ং দদাতু, এবং সর্ব্যাশংসা ভবিষ্যতি। সৈবাক্ত মন্ত্রে চকারেণ সম্চিতা। চিত্তিশ্চ পরিছেদঃ, আকৃতঞ্চাভিমতম্। আকৃ-তিশ্চ আত্মনো ধর্মবিশেষো ধেন মনসঃ প্রেরণং ক্রিরতে, বিজ্ঞাতং শিল্পাদি-জ্ঞানং, বিজ্ঞাতশ্চ বিজ্ঞাতার্থঃ। শক্রী চ শক্তিঃ, বৃহচ্চ সাম, রথস্তরঞ্চ সাম-বিশেষঃ।

<sup>(</sup>৩4) প্রজাপতিঃ পৃতনা করের উত্যো বিপক্ষতেজোইভিভাবী ইক্রার বৃষ্ণে বৃষণনারে, জয়ান্ প্রায়ছৎ দত্তবান্। কর্থমিক্রার ? দেবরাজার তব্যৈ জয়ং দত্তবান্ হি যতঃ কারণাৎ তব্যৈ প্রজাপতরে সর্কা বিশঃ প্রজাঃ সমনমন্ত ই সমাক্ প্রণামং কৃতবত্যঃ। যতক্ষ স প্রজাপতিরুগ্রো বভ্ব সর্ক্তেজোইভিভাবী বভ্ব, যতক্ষ স হব্যো হব্যদ্রব্যহো বভ্ব। ইথমাছতিদানেন তুষ্টো মহ্মু-বিপ জয়ং দলাত্।

<sup>(</sup>৩৬) বোহরিভূতানাং প্রাণিনাম্ অধিপতিঃ স মা মাং অবত্ পালমত্। কুত্র কুত্র ? অস্মিন্ বন্ধণি ব্রাহ্মণ্যে মজে বা অস্মিন্ কেতের বীর্য্যে অস্তাম্ আশিষি আশাস্তে অর্থে অস্তাং পুরোধারাং পুরংস্থিতারাং ক্যায়াং অস্মিন্ কর্মণি বিবাহে অস্তাং দেবহুত্যাং দেবানাং হুতিরাহ্মানং তন্তাং প্রাণিনাং প্রভূরগ্নি-্ র্যাং ব্রাহ্মণ্যাদিয় রক্ষতিতি বাক্যার্থঃ।

স মাবত্মিন্ ব্ৰহ্মণ্যশ্মিন্ কেত্ৰেহস্তামাশিব্যস্তাং পুরোধায়ামন্ত্রিন্ কর্ম-ণ্যক্তাং দেবহুত্যাং স্বাহা ইদং যমায় পৃথিব্যা অধিপতয়ে। ততো **জন**-স্পর্শ:। এবং ওঁ বাযুবস্তরিক্সভাধিপতিঃ স মাবছম্মিন্ ইত্যাদি মন্ত্রস্ত্রস্ক্মেরের্ বক্ষ্যমাণেশ্বস্থক:। ইদং বায়বে অন্তবিক্ষপ্তাধিপতয়ে। ওঁ সুর্য্যো দিবো-**২ধিপতিরিত্যাদি। ইদং সূর্য্যায় দিবো**ংধিপত্তয়ে। ওঁ চক্রমা নক্ষ্রাণা-মধিপতিরিত্যাদি। ইদং চক্রমদে নক্ষত্রাণামধিপত্তরে। ওঁ বৃহস্পতি-র্বন্ধণোহধিপতিরিত্যাদি। ইদং বৃহস্পতয়ে ব্রন্ধণোহধিপতয়ে। ওঁ মিত্রঃ সত্যানামধিপতিরিত্যাদি। ইদং মিত্রায় সত্যানামধিপতয়ে। ওঁ বরুণো-২পামধিপতিরিত্যাণি ইনং বরুণায় অপামধিপতরে। ওঁ সম্ভঃ স্রোত্যা-নামধিপতিরিত্যাদি ইদং সমুদ্রায় স্রোত্যানামধিপতয়ে। ওঁ অরং সাম্রাক্যানামধিপতিরিত্যাদি ইদমরায় সাম্রাক্যানামধিপতরে। ওঁ সোম ওষ্ধীনামধিপতিরিতি ইদং সোমায়োষধীনামধিপতয়ে। ওঁ সবিতা প্রস্বানামধিপতিরিতি ইদং স্বিত্রে প্রস্বানামধিপত্রে। ওঁ রুড়: পশ্না-মধিপতিরিতি ইদং রুদ্রায় পশ্নামধিপতয়ে। ততো জলম্পর্শ:। ওঁ ছার্ রূপাণামধিপভিরিতি ইদং ঘট্টে রূপাণামধিপতরে। ওঁ বিষ্ণু: পর্বভানা-মধিপতিঃ ইতি ইনং বিষ্ণবে পর্বতানামধিপতয়ে। ও মরুতো গণানামবি-পতয়ত্তে মাবস্বস্থিন ইতি ইদং মক়ড্যো গণানামধিপতিভ্যঃ। (৩৭) ওঁ পিতরঃ পিতামহা: পরেহবরে ততান্ততামহা ইহ মাবন্তমিন্ ব্দণীত্যাদি ইদং পিতৃত্য: পিতামহেভ্যঃ পরেভ্যোহবরেভ্যস্ততেভ্যস্ততামহেভ্যঃ। (৩৮) ততো ः ञ्चन-স্পর্নঃ। এতে অষ্টাদশমব্রা অভ্যাতানসংজ্ঞকাঃ। ওঁ অগ্নিরৈতৃ প্রথমে নেবতানাং সোহস্থৈ প্রজাং মু্ঞ্তু মৃত্যুপাশাং। তদরং রাজা

<sup>(</sup>৩৭) জ্যেষ্ঠানাম্ শ্রেষ্ঠানাম্। পৃথিব্যা অধিপতিরিত্যাদি—পৃথিবীশব্দেন তৎস্থাৎ প্রাণী উচ্যতে, ব্রহ্মণঃ বেদস্তা। সত্যানাম্ অবিনাশিনাম্। স্বোত্যা-নাম্ নদীনাম্। প্রস্বানাং প্রস্তিধর্মিণাং পুনঃ স্বিতৃক্পাদানং মৃর্তিভেদ-প্রদর্শনার্থম্। পশ্নাম্ দেবানাম্, রূপাণাম্ প্রতিমানাম্।

<sup>(</sup>৩৮) বে পিতর: পিতামহা: পরে প্রপিতামহা: অবরে র্জপ্রপিতামহা: ততান্তবাদপি পূর্বে ততামহা: তবাদপি পূর্বে এবং বট্ পুরুষা উদায়তা:। বছ্বচন্মাণরার্থন্।

বক্রণোহমুমন্ততাং যথের ও বা পৌত্রমখং ন রোদাৎ স্বাহা। (৩৯) ইনমগ্রের। ও ইমামগ্রিপ্রারতাং গার্হ পত্য: প্রজামন্তৈ নম্বতু দীর্ঘমায়ঃ। অশ্ক্রোপস্থা জীবতানস্ত মাতা পৌত্রমানন্দমভিবিবৃধ্যতামিয়ও স্বাহা। (৪০) ইনমগ্রের গার্হপত্যায়। ও স্বস্তি নো অরে দিব আপৃথিব্যা বিশ্বানি ধেহুদ্যা যজ্ঞ । যদস্তাং মহি দিবি জাতং প্রশস্তং তদস্মার্ম্ব জবিণং ধেহি চিত্রং স্বাহা। (৪১) ইনমগ্রের। ও স্বার্ম পরা প্রদিশন্ন এহি জ্যোতিমধ্যে হজ্মন আয়ঃ। অপৈতৃ মৃত্যু-রম্বাহ্ম আগাদ্ বৈবস্বতো নো অভয়ং ক্রোত্ স্বাহা। (৪২) ইনং বৈবস্বতার।

<sup>(</sup>৩৯) আয়ি: ঐতু আ এতু আগজ্জু। কিন্তুতঃ ? দেবতানাং প্রথমঃ ইন্দ্রাদীনাং মৃথ্যঃ। আগত্য চ সোহয়িঃ অসৈ অস্তাঃ ক্যারাঃ প্রজাং প্রাদিকাং
মৃঞ্তু মোচয়ত্। কৃতঃ ? মৃত্যুপাশাং মৃত্যোঃ মরণাং পাশাদ বন্ধনাচ্চ।
তং মৃত্যুপাশমোচনং অয়ং বরুণো রাজা অনুমন্তাম্ ত্রায়মন্ত্রমতা ভবজ্বিত্যর্গঃ। কিমর্থম্ ? যথা ইয়ং ল্লী পৌত্রমত্বং প্রভবং জ্ঃখং ন রোদাং ন
রোদিতু।

<sup>(</sup>৪০) গার্হপত্যোহয়িঃ ইমাং ককাং আয়তাং রক্ষত্ তথা **অস্তৈ ককারে**প্রজাং প্রাণিকাং নয়ত্ প্রাপয়ত্, তথা দার্ঘায়্ড নয়ত্। তথা সতী ইয়ং
কক্তা অশ্কোপস্থা অস্ত নিত্যং ভর্ত্বদতা ভবত্। তথা জীবতাং মাতা অস্ত জীবপুলা ভবত্। তথা পৌল্লমানন্দং পুল্লবং স্থাং অভিবিৰ্ণ্যতাং সর্বতো-ভাবেনাম্ভবত্।

<sup>(</sup>৪১) হে অগ্নে ! কিন্তৃত ! যজত্ৰ ! যজন্ত আয়তে ইতি ন: অস্মাকং স্বন্ধি কল্যাণানি ধেহি ধারয়। কথম ? এবথা ক্রমব্যতিরেকেণ একলৈবেত্যুথ্য । কিন্তৃতানি ? বিশ্বানি সকলানি, কুত্র কুত্র ? দিবঃ আকাশে পৃথিব্যা পৃথিব্যাঞ্চ । কিঞ্প্রশন্তং শুভং যদ্দ্রবিণং ধনং অস্তাং মহি পৃথিব্যাং দিবি জাতম্ উৎপ্রন্ধ চিত্রং নানারূপং গোভ্হিরণ্যাদিকং তদস্মান্ত আধেহি।

<sup>(</sup>৪২) মু ভো! জ্যোতিমধ্যে জ্যোতিবাং মধ্যে সারভূত অয়ে! নঃ
অস্বাকং প্র। প্রানং প্রদিশন্ উপদিশন্ এহি আগচ্ছ । কিন্তু তং প্রানং ? সুগং
স্থান্তব্যং, তথা নোহস্বাকং মৃত্যুরপৈতৃ অপগচ্ছতু। মন্ত্রান্তঃস্থং নঃ-পদং মৃত্যুপদেন বোজ্যম্। মে মম অমৃতং মোক্ষম্ আগাৎ আগচ্ছতু। তথা বৈবস্বতো
মম: নঃ অস্বাকং অভয়ং ক্লোভু করোতু।

ওঁ পরং মৃত্যে। অহু পরেহি পয়াং যতে অন্ত ইতরো দেববানাং। চকুমতে শৃথতে তে ব্রনীম মানঃ প্রজাই রীরিবো মোত বীরান্ স্বাহা। (৪৩) ইদং মৃত্যবে। তত উনকোপসংস্পর্নাঃ। ততঃ কুমারী লাভা শুর্পেণ চতুর্জানী-রুত্বমনী-পলাশ-মিপ্রিতলাজানামেক তাগম্ অঞ্জনিনা গৃহীরা ক্রনেণ স্বতেনাভিবার্য্য বরেণ গৃহীতে কুমার্য্যা অঞ্জনাবাবপতি, পুনর্ম্ব তেনাভিবার্রেং। তান্ লাজান্ প্রায়ুখী তিষ্ঠতী কুমারী অঞ্জনিনা জুহোত্যেভিন্ম রৈঃ। ও অর্থ্যমণং দেবং কন্তা অগ্নিমক্ষত। দ নো অর্থ্যা দেবং প্রেতো মৃঞ্চতু মা পতেঃ স্বাহা। (৪৪) ইদমর্যারে। ইত্যনেন মল্লেণ তৃতীরাংশং জুহোতি। ও ইরং নার্ম পিক্রতে লাজানাবপত্তিকা। আয়ুমানস্ত মে পতিরেধস্তাং জ্ঞাতয়ো মম স্বাহা। (৪৫) ইদমর্রে। ইত্যনেন মল্লেণাঞ্জলিন্থিতানাং লাজানামন্ধং জুহোতি। ও ইমান্ লাজানাবপাস্যগ্রো সমৃদ্ধিকরণাং তব মম (তুভ্য চ) (তুভ্যঞ্চ) সংবননং তদ্যিরস্থমক্সভামিয়ং স্বাহা। (৪৬) ইদমন্নরে। ইত্যনেনাবিস্তলাজান্ স্বান্ জুহোতি। ইতি মন্ত্রেরং কন্যৈর পঠেং। অথ

<sup>(</sup>৪৩) হে মৃত্যো! পরম্ উৎকৃত্যং পদ্থাং পদ্থানং অহিংদাত্মকম্ অনু ইহি
অন্ত্রপদ্ধ। তে তব বোহন্তঃ পরাঃ হিংদাত্মকন্তং পরাং পরা ইহি পরাবৃত্যাগক্ষ। কিন্তৃতঃ পরাঃ ? দেবধানাদিতরঃ কেনাপ্যক্তেন দেবেন নান্ত্রগতঃ।
এতদেব তে তব বরীমি। কিন্তৃত্যা তে ? চক্ষুত্রতে শৃথতে সকল্যাবহারং
দৃষ্টবতঃ শুত্রবতক্ষ। কিং বরীমি ? নঃ অস্মাকং প্রজান্ মারীরিষঃ অস্থংসম্বরিমন্ত্রান্মা হিংদীঃ। উত অপি চ নোহস্মাকং প্রান্ বীরান্মা রীরিষঃ।
মনানয় আহত্যা তৃটো মন প্রাদিহিংদাং মা কুর্বিত্যগঃ।

<sup>(</sup>৪৪) ইয়ং কন্তা অর্থ্যমণং স্থ্যং দেবমগ্লিমারপম্ অধক্ষত অপ্জয়ৎ। কিমর্থং দু সোহর্থামা দেবং ইতঃ পতেঃ পত্যুঃ সকাশাৎ মা মাং নো প্রমৃঞ্চতু ন প্রমোচয়তু।

<sup>(</sup>৪৫) ইনং নারী উপত্রতে বদতি। কিং কুর্বতী? লাজান্ আবস্তিকা জাবপন্তী প্রক্ষিপন্তী। কিং ক্রতে ? মন পতিরাযুমান্ অন্ত মম জ্ঞাতন্ত্র এধস্তাং বৃদ্ধিযুক্তা ভবস্ক।

<sup>(</sup>৪৬) ইয়ম্ অহং ইমান্ লাজান্ অগ্নৌ আবেপামি প্রক্রিপামি। কিন্তৃতান্? তব পত্যুঃ নমুদ্ধিকরণং তব বৃদ্ধার্থং। অপি তুধদেতৎ মম তৃত্য ন চ সমদনং

বর: কলারা: সাকুঠং দক্ষিণং হন্তং গৃহাতি ওঁ গৃভামি তে সৌভগদার হন্তং
মরা পত্যা জরদষ্টির্বথাস:। ভগো অর্থামা সবিতা প্রন্ধি (প্রন্ধি) মেইং
ছাত্র্গার্হপত্যার দেবা:। জমোহরুশ্মি সা ওই সা ছমস্তমোহহং সামাহরুশ্মি
কর্ জং ভৌরহং পৃথিবী জং তাবেহি বিবহাবহৈ সহ রেতো দধাবহৈ প্রলাং
প্রজনরাবহৈ পুরান্ বিন্দাবহৈ বহুইন্তে সন্ত জরদষ্টয়:, সংপ্রিরো রোচিষ্ট্
ক্মনস্তমানো পশ্যেম শরদং শতং জীবেম শরদং শতই শৃব্রাম শরদং
শতম্। (৪৭) ইত্যন্তেম মন্ত্রসন্তেন। তত্যে বরঃ ক্মার্য্যা দক্ষিণং পাদং দক্ষিণহন্তেন গৃহীদ্বা অর্গ্রেক্তরতঃ স্থিতারাঃ শিলারা উপরি কার্রত্যনেন
নক্ষেণ—ওঁ আরোহেমমশ্যানমশ্যেব জং স্থিরা ভব। অভিতিষ্ঠ পৃত্রতাহ্বাধ্যে পৃত্রায়তঃ। (৪৮) তত্যে বরো গাথাং গারতি—ওঁ সরস্বতি প্রেদমব
ক্ষত্রে বাজিনীবতা যাং তা বিশ্বস্ত ভূতপ্ত প্রগারামস্ত্যাপ্রতঃ।

বশীকরণং তদগ্নিরত্মস্ততামিত্যেতদর্থক। তুভ্যেতি বঠ্যর্থে চতুর্থী স্থপাং স্থল্-গিতি বিভক্তিলোপ:।

<sup>(</sup>৪৮) হে কল্ডে। অমিষ্মগানং শিলাম্ আরোহ আক্রাম। কিম্বং ? জন্মারোহণেন স্থিরা ভব। ক ইব? অন্মেব কিঞ্চ, পৃতস্ততঃ দংগ্রতিপক্তরা

ষস্তাং ভৃতি দমভংদ্ ষস্তাং বিশ্বমিদং জগং। তামত গাথাং গাস্তামি বা জীণামৃত্তমং ৰশং। (৪৯) অথ সবধ্কো বরঃ অগ্নিং প্রদক্ষিণীকুর্বন্ ইমং মন্ত্রং পঠেং—
ওঁ তৃত্যমগ্রে পর্য্যবহুৎ ক্র্যাং বহতু না সহ। প্নং পতিভ্যো জারান্দা অগ্নে
প্রজন্ম সহ। (৫০) এবং পুনর্ব্বান্তন্ত্রং লাজাবপনাদি-পরিক্রেমণান্তং কর্ম ক্র্যাৎ।
ততঃ কুমার্য্যা ভাতা শৃপ্কোণপ্রদেশেন সর্বান্ লাজান্ মৃতাভিঘারিতে
কুমার্যাঞ্জলাবাবপতি, তিষ্ঠন্তী কুমারী ভগার স্বাহেতি মন্ত্রে বরেণোক্তে তান্
ভ্রেতি,ইদং ভগার ইতি প্রত্যাদেশঃ। তত আচারাৎ তৃফীং সবধ্কো বরক্তত্র্বপরিক্রেমণং ক্র্যাৎ। তত উপবিশ্য ব্রমণোহ্বারন্তপ্র্বাকং ম্বতন ওঁ প্রজাপত্রে
স্বাহা ইদং প্রজাপতরে। ইতি ত্যাগং বিধান্ন বরোহগ্রেকত্তরে বথোত্তরক্রত্নপ্রমণ্ডলেছিমাং প্রত্যেকং প্রতিমন্ত্রং সপ্তপদানি প্রক্রমন্ত্রি। যথা—ওঁ একমিবে
বিফুল্বা নর্যু ইতি বরেণোক্তে বধুরেকং পদং উদগ্দদাতি। এবং ওঁ বে উর্জ্বে
বিফুল্বা নর্যু ইত্যক্তে বিতীন্নং। ওঁ ত্রীণি রান্নপোষায় বিফুল্বা নরতু। ইতি
তৃতীন্ত্রম্। ওঁ চল্বারি মার্যোভবার বিফুল্বা নরতু। ইতি চতুর্বন্। ওঁ পঞ্চ
পশুভোগা বিফুল্বা নরতু। ইতি পঞ্চমং। ওঁ বডুত্তো। বিফুল্বা নরতু। ইত্যুক্তে

আজান: পৃতনাং দেনামিছত: পৃথবান্ অভিতিষ্ঠ অভিভূম তিষ্ঠ। কিঞ্চ পৃতনা-য়তভাদৃশানের অববারত ধণ্ডয়। পৃতস্তত ইতি ক্রাধারপৃতনতা কিলোপ ইত্যাকারলোপ:। পৃতনায়ত ইতি লোহিতাদিগণে পাঠাৎ ক্যপ্রভাষেন সিদ্ধন্।

<sup>(</sup>৪৯) হে সরস্বতি! বাং আ আং প্রসারামি উৎকীর্ত্রাম্, সা অমিদং
বিবাহকর্ম প্রাব প্রকর্মেণ পালর। কিন্তুতে ? স্মৃভগে! মনোহরে! বাজিনীবজী বাজিনা বোটকা সা যদ্যা অন্তাতি বাজিনীবতী বোটিকাবৎ কীর্ত্তিরপা
শীঅগামিনী, অমপি কুত্র পার্যাভ্যাহ অন্ত ভূতত প্রাণিনঃ বিশ্বক্ত সর্বাত্ত অগ্রতঃ। কীদৃশং তদ্পানং ? যতাং সরস্বত্যাং ভূতং পৃথিব্যপ্তেজাবাষ্যকাশাঅকং সমভবৎ যতাং বিশ্বমিদং জগৎ তিঠতি তাং গাথামত ইদানীং
পাত্তামি। যা গাথা খ্রীণামুত্রমং ষ্পঃ।

<sup>( • • )</sup> হে আরে! অত্যে প্রথমং স্থ্যাং স্থ্যবংকান্তিশালিনীং এতাং ক্সাং পর্বাবহৎ অং বিবাহিতবান, এতাং জন্না সহ পুনঃ না মহুষ্যঃ বহতু বিবাহমুহ, ততঃ পতি ভাঃ মহুষ্যপত্রে এতাং জানাং দা দেহি প্রজন্না সন্তত্যা সহ।

ষঠন্। (৫১) ওঁ সবে সপ্তপদা ভব সা মামহুবতা ভব বিফুজানমত্ ইতি সপ্তমন্। (৫২) ততো বরঃ স্কন্ধক তাত্দক কু ভাত্দক মাদার বধ্ং বারমেকং মৃদ্যুভিষিঞ্চি। ওঁ আপঃ শিবাঃ শিবতমাঃ শাস্তাঃ শাস্ততমান্তান্তে ক্ষম্ভ ভেষজন্। (৫৩) ইতি মন্ত্রেণ। প্রস্তথৈবোদক মাদার ওঁ আপো হি ঠেতাাদি আপো জনম্বাচন ইত্যস্তাভিশ্ব গ্ভিবায় এয়ং মৃদ্যুভিষিঞ্চি। ততো বরঃ স্বান্দীক্ষ স্বৈতি প্রস্তাজ্ম ক্ষ্মজন্ত। পশ্তেম শরদঃ শতং জীবেম শরদঃ শতং প্রস্তাজ্ম ক্ষ্মজন্ত। পশ্তেম শরদঃ শতং জীবেম শরদঃ শতং প্রস্তাজ্ম ক্ষ্মজন্ত। পশ্তেম শরদঃ শতং জীবেম শরদঃ শতং ভ্রশ্চ শরদঃ শতাং । (৫৪) ততো বধনা দক্ষিণাংসল্তোপরি হন্তঃ নীবা তন্তা হৃদয়মালভতে অনেন মন্ত্রেণ—ওঁ মম ব্রভে তে হৃদয়ং দ্বামি মম চিত্রমন্থ হিত্ত স্থেত স্থাম বাচমেক মনা জুবস্থ প্রজাপতিষ্টা নিয়্ন কু

<sup>(</sup>৫১) এবু সপ্তমন্ত্রের্ সথে ইতি বক্ষামাণং সংবাধনং সর্মত্র সংখাতে। হে সথে, তামেকং পদং বিষ্ণুন র চু, কিমর্থং ? ইবে অভীইলাভার। বে পদে উর্জ্জে বলার, ত্রীণি পদানি রারপোষার ধনসমূদ্ধরে, চহারি পদানি মারোভবার মার: সৌথাং তক্ত ভব উৎপত্তিঃ তক্তিয়। পঞ্চ পদানি পশুভাঃ গবদিভাঃ পশু-প্রাপ্তরে ইত্যর্থং। যটু পদানি অভুভাঃ ঋতুসমরপ্রাপ্তরে।

<sup>(</sup> e ২ ) হে সথে, যাং আং সপ্তপদানি বিষ্ণুন্মতু সা বং সপ্তপদা ভ্রাদি-সপ্তলোকস্থা ভব, তথা মামহূত্রতা ভব, মদীয়ত্রতং পাশয়ন্তী ভব ভ্রাদিসপ্ত-লোকপ্রাপ্তরে। পতিত্রতাতায় সপ্তমং পদং বিষ্ণুন্থাং নমতু।

<sup>( &</sup>lt; ৩ ) যা আপ: শিবা: কল্যাণকারিণ্য:, শিবতমা: অতিশব্দেন কল্যাণ্য:, শাস্তা: অন্থপদ্রবকারিণ্য:, শাস্ততমা: অতিশব্দেন শাস্তাস্তা আপস্তে তব ভেষজ: রোগনাশ: কৃথস্ক কুর্বস্তি।

<sup>(</sup> es) তৎ প্রেলিজং চক্ষু:, কিন্তু ভং ? দেবহিতং দেবানাং সমীহিতং। পুনঃ
কীনৃশং ? শুক্রং শুক্রং নির্মানং, তথা পুরস্তাৎ প্রাচ্যাং দিনি উচ্চরৎ উদ্পদ্ধং,
তদেতস্ত উপস্থানং ক্রমা বয়ং শরদং শতং বর্ষানি পর্যেম, তথা শরদং শতং
জীবেম, তথা শৃণুয়াম প্রক্রবাম, অস্থানিতবাগিন্দ্রিয়া ভবেম, অদীনাং স্থাম ন
কন্তাপ্যত্রো দৈন্তং ক্র্যাম,শতাৎ শরদং শতবর্ষোপ্র্যাপি ভূঞ্চ বহুকালং পশ্রেম
ইত্যাদি বোজাম।

মহুদ্। (ee) ততো বরো বিবাহপ্রেক্ষকান লোকান পশুন পঠেৎ—ওঁ মুমকুলী-রিমং বধুরিমাং সমেত পশুত সৌভাগ্যমক্তৈ দল্পায়াথান্তং বিপরেতন। (৫৬) ভত আচারাৎ বরক্ত বামভাগে বৃধুমুপবেশরতি, তক্তাঃ সীমন্তে সিন্দুরমপি দাপরতি। • ততোহয়ে: প্রাপ্তদক্ বা কল্লিতগুপ্তদেশে উত্তরলোমি প্রাগ্-ঞীবে আনভুহলোহিতচর্ম্মণি তাং ব্ধুমুপবেশম্বতি বরঃ দৃঢ়পুরুষো বা ওঁ हैर शास्त्र निरीपिश्वराया हेर शृक्षाः। हेरहाछ प्रश्यपिक्तिया यख हेर श्रा নিবীদস্ক ইতি মন্ত্রেণ।(৫৭) তত আগত্য পূর্ববদ্যধাস্থানমূপবিশু ব্রহ্মণোহ্যারক: বর: ওঁ অশ্বন্নে স্বিষ্টকুতে স্বাহা ইদমগ্ননে স্বিষ্টকুতে ইতি হুত্বা ততঃ সংস্ৰবং প্ৰাক্ত বন্ধণে পূর্ণপাত্রবরয়োরক্ততরং দক্ষিণাং দতাং 🔻 ওঁ অতেতাাদি ক্রতৈতমদীয়-বিবাহহোমকর্মণি কুতাকুতাবেক্ষণাদিত্রক্ষকর্মপ্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামিদং পূর্ণপাত্রং তদস্করভোজ্যং বা বন্ধণে তুভামহং সম্প্রদদে। স্বন্ধীতি বন্ধা। বান্ধণশ্চেৎ স্বকীরাচার্য্যার গাং দক্ষিণাং দদাতি, ক্ষত্রিরশ্চেদ্গামং বৈশ্রণ্ডেদরং অন্তব্যে स्वर्गानिकः। उ अप्तानानि कृटेन्नमौत्रविवाहकर्मश्रविष्ठांश्रीम्कत्राखात्रा-দক্ষিণাং তৃত্যমহং সম্প্রদে। ততো বরঃ ( প্রণীতোদকেন ওঁ স্থমিতিয়া ন ইত্যাদিনা আত্মানং বধৃঞ্চাভিষিচ্য) আশীর্বিবায়াচ্ছিদ্রাবধারণং কুর্য্যাৎ। ততো ঞ্বনীক্ষত্বেতি প্রৈষণ দত্ত। বরে। বধুং প্রবং দর্শগ্নতি —ওঁ প্রব্মনি প্রবং তা পক্সানি শ্ৰুবৈধি পোৰো মন্ত্ৰি। মহুং ত্বাদাদ বুহস্পতিমুগ্না পত্যা প্ৰজাবতী সংজীব শ্ৰুদ:

<sup>(</sup> ८६ ) अञार्थः मामरविन-विवाह श्रकत्रत्व प्रहेवाः ।

<sup>(</sup>৫৯) হে সভ্যা:! ইয়ং বধৃ: সুমন্ধলী: শোভনমন্ধলযুকা ইমাং ইঅ-ভূতাং সমেত সমাগচ্ছত, তথা ইমাং পশ্যত আলোকয়ত, অস্তৈ সোভাগ্যং দল্পার দল্প অথ অনস্তরং অন্তং গৃহং অং অং স্থানং বিপরেতন গচ্ছত। ইমাং মন্ধ্যাদিকং দল্প অস্থানং যাতেতি বাক্যার্থঃ।

<sup>(</sup>११) इंड व्यव्यति खन्ना जिनिविशा मह नार्या अशाः भूकवान्त नियो-मखः देश जिजनत्वार भारती, यक्तः महत्यः मिना यस्त्र मः महत्वनिक्नः भूवा भूष्ठिकाती ज्यानिष्ठाः नियोगक् नियोगज्। नियोगिकः मह व्यव्यति स्मृतिन देखि वाकार्यः।

শতর সিল্রদানে কেচিয়য়য়ি পঠিয় বয়া—ও সিংলারিব আয়েনে শ্বনাশাঃ
পভরতি য়য়াঃ। য়ৢতয় ধারা অরবোন বায়া কায়াভিলয়ৢয়িভিঃ পিয়নানঃ।

শতম্। (১৮) সা বদি ন পশ্তেৎ তথাপি পশ্যামীত্যেব ব্রেরাৎ। ব্রিরাত্রমকারলবণাশিনৌ স্থাতাম্, অধঃ শ্রীরাতাম্, চতুর্বীহোমানস্তরং সংবৎসরং ন
মৈথুনমূপেরাতাম্, ছাদশরাত্রং ষড়রাত্রং ব্রিরাত্রমস্ততঃ। ধদি দিবাভাগে
বিবাহস্তদা রাত্রো ভোজনোত্তরং শ্রুবদর্শনম্। ইতি বিবাহপ্তকৃতিঃ। \*

## অথ চতুর্থী-হোস্య

ততো বিবাহদিনাচ্চ হুর্থী যা রাত্রিস্তপ্তাঃ দার্দ্ধ প্রহর্বরোপরি † গৃহাত্যন্তর এব স্বগৃহ্যান্তারাজ্য ভাগান্তাঃ কৃশগুকাং বিধায় দ্রবাণাদানরে । বিশেষস্থ আজ্যস্থান্যন্তরে চক্ষাণীরীহিতপুদাঃ। অভিবেকার্থং চূতপল্লবাস্তোদকপূর্ণঘটঃ। আজ্যং নিরূপ্য চক্ষাল্যাং প্রদীতোদকং দল্ল। তত্রাদানিতরীহিতত্পান্ দল্লা চক্রময়ে প্রপরেং। তত্তোহবতার্য্য চক্ষাল্যাঃ পর্যাপ্রকরণং
বিধার আজ্যস্থাল্যা উত্তরে স্থাপরেং। ব্রহ্মণোহ্যারম্ভত্যাগং বিধার
আজ্যেনৈব পঞ্চাহতীন্ত্র্যাং। আদাং সংস্রবাহ্মদকুন্তে স্থাপরেং। ওঁ
অয়ে প্রায়ন্তিন্তে ছং দেবানাং প্রায়ন্তিন্তরদি ব্রাহ্মণন্ত! নাথকাম উপধারামি বাস্ত্রৈ পতিন্ত্রী তন্ত্রামন্তৈ নাশ্য স্বাহা। (৫৯) ইদমগ্রে। ওঁ বারো

<sup>(</sup>৫৮) হে বধু ! ধ্রুবমসি অবিনাশিনী ভবসি, তা তাং ধ্রুবং তারারপং প্রথানি দর্শরামি । কিমর্থন্ ? ত্বং মগ্লি ধ্রুবা শাখতী সতা পোষ্যা পোষ্ণীয়া এবি ভবেতি । কিঞ্চ বৃহম্পতিতা তাং মহুন্ অনাৎ দ্বুবান্ তথা সতি ত্বং প্রজা-বতা পুদ্রবতী ময়া সহ শরবং শতং বর্ধাণি জীব।

<sup>(</sup>৫৯) হে মরে! প্রায়শ্চিতে! দোষহর মরুপ। তং দেবানামিন্রাদীনাং প্রায়শ্চিত্তিরসি দোষনাশকঃ ভবসি। অতঃ কারণাৎ ব্রাহ্মণো নাথকমিঃ ষাচ্ঞাকামঃ অহং তা তাম্পরাবামি উপদর্পরামি। কা ষাচ্ঞা । অতৈ অস্যাঃ কন্তায়া যা পতিন্নী পতিহিংসকং যদসং অতৈ অস্তঃ তাং তন্তং প্রশময়। অতৈ ইতি ষষ্ঠার্থে চতুর্থী। প্রজান্না সন্তানবিরোধিনী, পশুনী গবাদিবিরোধিনী, গৃহন্না গার্হপত্যবিরোধিনী। হে গর্ম্বর্ণ। যশংপ্রকাশক। যশোন্নী অস্তা বশোবিরোধি ষদসং তরাশয়।

<sup>\*</sup> অথ যানভন্নাদৌ নিমিত্তে জাতে পারস্কর: —পর্কিশাস্তাং কুশগুকাং সমাপ্য ইং রক্তি: ইঃ রমষ ইং ধৃতি: ইং অঃতিঃ আহেতি প্রথমামাত্তিং জুহ্রাং, ইদমগ্রে । ওঁ উপ-ক্ষম ধরণক্ষাতে ধরণো মাভরক্ষয়ম্। রায়স্পোষমক্ষাক্ষ দাধরং আহা, ইদমগ্রে । ইতি হক্ষা আবারাদিখিষ্টরুদস্তং চতুর্দশাহতিকং হোষং কুর্গাদিতি প্রবোগমাহ।

<sup>🕇</sup> সার্ছপ্রহরতয়োপার ইতি মতান্তর্ম।

श्राप्रक्तित्वं दः दिवानाः श्राप्रकितित्रिनि बाक्षायः। नाथकाम छेलनावासि ষাজৈ প্রসায়া তনুস্থামলৈ নাশর ধাহা। ইনং বারবে। ও স্থা প্রায়ণ্চিত্তে তং दिन्तानः विज्ञानि পশুরो ভনুর্তাম । ज्ञानां प्रश्ना । हेनः प्रशास । প্রায়শ্চিত্তে বং দেবানামিত্যাদি বাজৈ গৃহদ্বী তন্তামজৈ নাশর স্বাহা। ইবং চক্রাষ। ওঁগদ্ধি প্রায়শ্চিত্তে ত্মিত্যাদি যশোলী তন্তামকৈ নাশর স্বাহা। ইদং পদ্ধর্কায়। স্থালীপাকস্তৈকদেশং জুহোতি ও প্রজাপতরে স্বাহা। ইদং প্রজাপতমে। ইতঃ পরং স্বিষ্ট্রদাদিদশাত্তীনাং সংঅবান প্রোক্ষণ্যাং ধারমেৎ। ব্রহ্মণোহরারবার স্থালীপাকেন ওঁ অগ্নরে বিষ্টকৃতে স্বাহা ইদমগ্নরে ভতে মহাব্যান্ত্ত্যাদিপ্রাজাপত্যস্তা ততঃ পরিস্তরণকুশানগ্রৌ প্রক্ষিপ্য চূতপল্লবেন পাত্রান্তরস্থান সংশ্রবান প্রাক্ত পূর্ণপাত্রবরয়োরকতরং ব্রন্ধণে দক্ষিণাং দন্থা তত উদ-পাত্রাত্মক্মাদার বধুং মুর্দ্ধ্যভিষিঞ্তি—ওঁ যা তে পতিল্লী প্রজালী বশোলী প্রস্থা গৃহদ্ম নিশিত৷ তনুর্জারদ্ধা তাংত এনাং করোমি সা জাধ্য বংময়া সহাসৌ (৬০) ইতি দখোৰনাত্ত বধুনাম প্রবোক্তবাদ্। অথ বরো বধুং স্থানী-পাকং প্রাশরতি অনেন মন্ত্রেণ—ওঁ প্রাণৈত্তে প্রাণান সন্দর্ধাম্যন্থিভিরত্বীনি ষাংদৈর্মাংলানি ছচ। বচমিতি মল্লেণ। (৬১) বার্বরং তুফীম্, সাচ ভর্তা মল্লে পঠিতে প্রাথাতি। ততঃ প্রণীতোদকেন (ওঁ স্থমিতিয়া ন ইত্যাদিমগ্রৈ:) আত্মানং বধুঞাভিষিচ্যানার্স্বাদং কৃত্বাচ্ছিদ্রাবধারণং কুর্য্যাৎ।

ইতি চতুৰীহোমপদ্ধতিঃ।

## অথ গৰ্ভাথানমূ

তত্ত্ব ক্বতনিত্যক্রিয়ে যজমান ওঁ কর্তব্যেংশিন্ অমুকগোত্রায়া মংপর্যা অমুকীদেব্যঃ: গুভন্গর্ভাধানকর্মান্ধীভূত-গণপত্যাদি-নানাদেবতা-পূজাপূর্বকষষ্ঠীমার্কণ্ডেরপূজাকর্মণি ওঁ পুণ্যাহং ভবন্তো ক্রবন্ত ইত্যাদি পুণ্যাহাদীনি বাচনিত্বা

<sup>(</sup>৬০) হে অসৌ । অমৃকি । তে তব যা তন্য নিশিতা দোষাবহা, তামেনাং জারন্নীং উপপতিবাতিনীং তন্ং ততঃ করোমি । কা সা তন্য ? পতিনীত্যাদি বোজ্যম্ । অনেনাভিষেক শ্রা। ময়া মহ জীর্য জরাং প্রাপ্ল হি ।

<sup>(</sup>৬১) হে কল্পে! তে তব প্রাণান্ ননীর প্রাণেঃ সন্দর্ধানি বোজয়ামি। অপরং স্পষ্টম্।

সকল্প বন্ধীং মার্কণ্ডেরঞ্চ বধাবিধি সম্পূজ্য গৌর্ব্যাদি-বোড়শ-মাভৃকাপূজা-বস্তবারা-বৃদ্ধিশ্রাদ্ধানি বিধায় পত্নীসহিত উত্থায় তাদ্রাদিপাত্তে বা নৃত্রশকাকে তৃক্ধ-রক্তচন্দন জ্বাপুপাদিযুক্তমর্ঘাং গৃহীত্বা ও নমো বিবন্ধতে ব্রহ্মন্ ভান্ধতে বিষ্ণুতেজ্বদে। জ্বগৎসবিত্তে শুচয়ে সবিত্তে কর্মণায়িনে। ওঁ এহি সূর্যা সহস্রাংশো তেজোরাশে জগৎপতে। পুত্রাধিনী দদামার্ঘং গৃহাণ বং দিবাকর। **७** विश्वन्ता विश्ववङ्ग्क विश्वाचा विश्ववञ्चवः। नवशूर्याप्तमदव ठार्घः गृशा पः ্দিবাকর। এষোহর্য: শ্রীসূর্য্যায় নম:। ইতি দত্ত্বা প্রণমেৎ—ওঁ কমলস্কলমূল অং সংসারাৎ ত্রাহি মাং প্রভো। পুত্রাথিনী প্রপন্নাহং স্বর্গদীপ নমোহস্ত তে॥ ততঃ স্বদক্ষিণে পত্নীমুপবেশ্য (তস্তা দক্ষিণস্কনাবসক্ত) দক্ষিণপাণিনা বঞ্চা হ্রনয়ং স্পৃষ্টাজপেৎ—ওঁ ষত্তে স্থুদীমে হ্রনয়ং দিবি চন্দ্রমদি শ্রিতম্। বেলাহং তন্নাং তদবিতাৎ পশ্যেন শরদঃ শতং জীবেম শরদঃ শত্র শৃণুধান শরদঃ শতম। ততঃ পদ্মা নাভিদেশে হস্তং দত্তা ইমং মন্ত্রং পঠেৎ—ওঁ গর্ভং ধেহি সিনীবালি গৰ্ভং ধেহি সরস্বতি। গর্ভন্তে অবিনৌ দেবাবাধন্তাং পুন্ধরশ্রজে। ॥ ইতি পঠিতা নিষেকং কুর্য্যাৎ। ইতি পশুপতিমতম্। অথ হলায়ুধমতং লিখ্যতে —দক্ষিণপাণিনা বংলা যোনিমনেন মন্ত্রেণ স্পৃশতি—যাজ্ঞবল্কাৠিষবিহাট্ছল: প্ৰ-স্বিত্-ক্ত-বৃষ্ট্-বৈধানৱা দেবতা গ্ৰভাধানে বিনিৰোগ:। ও প্ৰা ভগং তে সবিতা দধাতু কত্রস্থয়ী কল্পগ্রতু সামগং স্বয়ী রূপাণি তেন্সো বৈশ্বানরো দধাতু। (১) ততো বধুমভিমন্ত্রমেদনেন মন্ত্রেণ—ওঁ গর্ভং ধেহি সিনীবালি গ্র্ভং ধেহি সরস্বতি। গর্ভন্তে অধিনৌ দেবাবাধত্তাং পুদ্ধরশ্রজৌ। (২)ততো নিষেকং কুর্যাদনেন

<sup>(</sup>১) প্রস্তুত্তবাৎ পত্নী সম্বোধা। হে পত্নি! তে তব ভগং কামং প্রস্বাধীলং স্বর্যো দধাতু পৃষাতু। কিন্তৃতঃ ? পৃষা পোষকঃ রুদ্ধ: শিবঃ অন্তা ভূনুরপো নির্মাণকারকঃ, সামগং পৃত্রং করম্বতু দধাতু। কিঞ্চ অন্তা প্রজাপতিঃ রূপাণি দধাতু, তথা বৈশ্বানরো অন্তিঃ তেলো দধাতু।

<sup>(</sup>২) হে দিনীবালি ! চক্রপোষিকে তমিষে ! গর্জং ধেছি ধারম. হে সরমতি ! গর্জং ধেছি । কিঞ্চ হে পত্নি ! তে তব গর্জং অমিনৌ অমিনীকুমারে ।
আমব্রাং । কিন্তৃতৌ ? দেবৌ দেবমন্তৌ । পুনং কিন্তৃতৌ ? পুমরমভৌ পদ্মালিনৌ, এতেন বীজকলাপালিক। রাত্রিরূপা লদ্ধীঃ ব্যাহাররূপা সরম্বতী চ প্রার্থিতা। ততক্ত ছাতি অমিনৌ চ প্রার্থেতে, এতেষাং গুণৈর্ক্রা মম্প্রো তবন্থিতি প্রার্থনা।

মন্ত্রেণ—ওঁ রেভোংমৃতং বিজহাতি যোনিং প্রবিশদিক্রিয়ম্। গর্ভো জরায়্ণা রুভ উর্বং জহাতি জন্মনা। (৩) ততোংভিগমানস্তরং পতির্বধা দক্ষিণহন্ধে পরি দক্ষিণহন্তং দল্লা হৃদয়ং স্পৃণতানেন মন্ত্রেণ—ওঁ যতে স্থলীমে হৃদয়ং দিবি চক্রমিন ক্রিক্র্যাং তরিষ্ঠাং প্রেছম শরদং শতং জীবেম শরদং শতম্ শূণ্রাম শরদং শতম্। (৪) ইত্যস্তম্। এবং রুতে যদি গর্ভো ন ভবতি তদাংক্রিম্ভিত রজোদর্শনচতুর্থদিবদে দিবা দম্পতী নিরাহারৌ স্থাতাম্। ততঃ পতিঃ সায়ংসয়াং নির্বর্তা শুভে লয়েহহতবাসং পরিদ্ধানাং স্থাচাস্তাং ফ্রুমস্লাং প্রার্থীমাল্মবামে উপবেশ্য পূর্বিদিনে উপোল্প পূষ্যান শত্রেপ্রাতঃ সমৃদ্ধতং খেতকউকারিকামৃলং শিশিরজ্বলেন পিটা মঙ্গলপূর্বকং তম্পানাপ্রিট সিঞ্চেদনেন মন্ত্রেণ—ওঁ ইয়নোষ্ধী ত্রায়মাণা সহমানা সরস্বতা। সম্প্রিভানিকেনিষেকং কুর্যাং।

- (৩) মম ইন্দ্রিরং শেক: বেজ: বিজহাতি বিশিষ্টং তাজতি। কিন্তৃতং ? অমৃতং অধারূপং। কিন্তু তমিন্দ্রিরং যোনিং প্রবিশং। রেতোহমৃতমমোদ্ধেং মত এব পর্তঃ সন্ উবং ক্লেনং জহাতি জহাতৃ তাজতু। কেন ? জন্মনা উৎ-পত্তা। কিন্তৃতঃ ? জ্বায়্ণা বৃতঃ নানার্দেশাবেক্ষিতঃ।
- (৪) হে সুসীমে ! শোভনা সীমা অবয়বদ কিৰ্যস্তা সা সুসীমা হে শোভ-নাবয়বদকানে ! তে তব বং হৃদয়ং মনঃ তং অহং বেদ জানামি। দিবি আকাশে চন্দ্রমাসি প্রিতং সম্বরং প্রথমতো নারীণাং চন্দ্রঃ স্বামীতি শ্রুতেঃ। অতস্তানিশ্রিতং চিত্রম্ ইত্যভিপ্রায়ঃ। ইদানীং তক্দয়ং মাং বিছাৎ মাং পতিত্বন জানাত্। কিঞ্চ পশ্রেম শরদঃ শতং আবাং শতং বর্ষাণি পশ্রাবঃ। এবং জীবেম শরদঃ শতং শৃণুয়াম শরদঃ শতম্।
- (৫) ইয়ম্ ওয়বী বৃহতী ব্যাধিনাশকরা আয়মাণা রক্ষাকরী সহনানা উংপরদোষমধিনী সরস্বতা বাগিব প্রদাদহেত্য অস্তাং কটকারিকারাং পুত্রঃ নাম অপ্রভত প্রকাশকরং গৃহাতু। কিন্তৃতং নাম ? পিতৃরিব পিতৃসদৃশ-মিতার্থঃ।

#### অথ পুংসবনম্

ভত্ত গর্ভাবানাৎ বিতীরে ভৃতীরে বা মাসি পুংনক্ষত্রেষ্ হন্তা মূলা-শ্রবণপুনর্বাস্থানির জিলি কুন্তমিথুন-সিংহ-ধর্মনিলগ্রেষ্ রবিমঙ্গলবৃহস্পতিবারেষ্ প্ংসবনে কর্ত্তরে পতিঃ প্রাতঃ নির্বার্তি চনিতারতঃ সগণেশকোর্যাদি-বোড়শ-মাভ্কা-প্রা-বন্ধারায়্য্যস্ক্রপাভ্যাদিরক-শ্রাদানি বিধার
সপত্নীকো দিবা নিরাহারন্তিচেও। ততঃ সারংসদ্ধাং কৃষা জাচান্তাং
কৃতমন্ত্রাং প্রাত্ত্বীমাত্মবামে উপবেশ্য বটারোহং বটশুগাং কুশমূলং
সোমলতাঞ্চ শিলিরজনেন শীতলজনেন বা শিলায়াং পিষ্টা মঙ্গলপ্র্বাক্তং
দক্ষিণনাসাপুটে সিকেদাভ্যাং মন্ত্রাভ্যাম্—(ওঁ হিরণ্যগর্জম্বিঃ প্রজাপতির্দেবতা ত্রিষ্টু প্ ভূন্দশ্রনে হিরণ্যগর্ভপুক্ষোপধানে বিনিরোগঃ)। ওঁ হিরণ্যগর্ভঃ সমবর্ত্তবাত্রে ভৃতস্ত জাতঃ পতিরেক জাসীং। স দাধার পৃথিবীং ছাম্তেমাং কব্য দেবার হবিষা বিধেম। (১) (নারারণঝ্যিজ গ্রীজন্তংপুক্ষধাে
দেবতা ত্রিষ্টু প্ ভূন্দঃ পুক্ষবমেধেজ্যাদিত্যোপন্থানে বিনিরোগঃ)। ওঁ অন্ত্যঃ
সন্ত্রভঃ পৃথিবিয় রসাচ্চ বিশ্বকর্মণঃ সমবর্ত্তাগ্রে তম্ম ত্বী বিদধন্দ্রপমেতি
তন্মপ্তান্ত দেবত্বমাজানমগ্রে। (২) পুত্রবীর্যবন্ধকামনারান্ত বধ্বা বোনিস্রিধে

<sup>(&</sup>gt;) হিরণ্যগর্ভঃ হিরণ্যগর্ভাধাঃ পুরুষঃ অন্ত্রে সমবর্ত্ত প্রথমং সমবর্ত্ত বো হিরণ্যগর্ভা জাতমাত্রো ভৃতত্ত প্রাণিমাত্রত্ত একঃ অদিতীয়ঃ পতিরাসীং সামী বভূব। স এব পৃথিবীঃ দাধার ন কেবলং পৃথিবীমৃত ইমাং ছাম্ অস্ত্র-রীক্ষমেব। এবস্তৃতার কল্মৈ কায় প্রজাপত্রে হবিষা হবিঃ বিধেম দশ্মঃ। দাধার ইতি ছান্দস আকারঃ। কারেতি প্রাপ্তে শৈ আদেশ্ছান্দসঃ।

<sup>(</sup>২) বো বিষ্ণুবত্রে প্রথমন্ অস্ত্যো জলাৎ পৃথিব্যৈ চ পৃথিব্যা অপি,
সন্ত্তঃ সমবর্ত্ত উৎপরোহভবৎ, জলপৃথিব্যোকপাদানং পঞ্চমহান্ত্যানাম্পলক্ষণম্, কুতো নিমিত্তকারণাৎ ? রসাৎ কামাৎ সিস্ক্রারপাৎ বিশ্বকর্মণঃ
বিশ্বং সর্ব্বং কর্ম যন্ত তন্ত বিজ্ঞো রূপং মৃত্তিং বিদধৎ ধাররন্ অটা আদিত্যঃ
অগ্রে পুরতঃ সর্বেবামপরোক্রমিতার্থঃ। এতি গক্ততি। তত্রপং মত্তান্ত
মহ্যান্ত দেবত্বং দেবত্বেনিব ভবতি। কিন্তুতং ? আজানং যাবজ্জন । বিষ্ণুঃ
স্ট্যানৌ পঞ্চত্তভাঃ উপাদানকারণেভ্যঃ সিস্ক্রাং নিমিত্তকারণং প্রাপ্ত
উৎপত্ততে। তদ্বমর্থঃ — আদিত্যক্তর্ত্ত বিজ্ঞোর্যজ্ঞপং ধাররন্ গছতীতি সর্ব্বেবাঃ

জনশবাবং স্থাপয়িরা তজ্জনমতিময়য়েদনেন মস্ত্রো—(প্রজ্ঞাপতিশ্ববির্গরুড়ো দেবতা প্রকৃতিভ্রূশক্ষনস্থলাভিময়েদে বিনিয়োগঃ) ওঁ স্পর্ণোহিসি গরুঝাই-স্থিবতে শিরোগায়ত্রাং চক্র্র্ভ্রেপস্তরে পকৌ। স্তোম আরা চ্ছুন্নাইস্থানি বজুইবি নাম সাম তে তন্র্বামদেবাং যজা যজ্ঞিয়ং পুচ্ছং বিষ্ণাঃ শফাঃ স্পর্ণোহিসি গরুঝান্ দিবং গচ্ছ স্থঃ পত। (৩) ততঃ শাস্তিং রুঝাশীর্বাদং বিধায়াচ্ছিদ্রাব্ধারণং কুর্যাৎ।

## ইতি পুংসবনম।

# অথ সীমস্তোলয়নম্

তত্র প্রথমে পর্ভে গর্ভাধানাবিধ ষঠেই ইমে বা মাসি পুংনক্ষত্রে রিক্তাক্তিথে পুংসবনোক্তনক্ষতের অনুরাধায়াঞ্চ মকর-মেষাগ্যতিরিক্ত লয়ে রবি-মকল-গুরুবারের চন্দ্রতারামূক্লে দিবসে সীমস্তোলয়নে কর্ত্তব্যে পতিঃ প্রাতঃ সগণেশ-গোর্যাদি-মাতৃকাপূলা-বন্ধারা-সম্পাতনামূ্র্যস্ক্রন্পাভাদিরিকশ্রাদ্ধানি বিধার বিহিন্দালায়াং স্বগ্রেক্তবিবিনা পরিস্তরণাস্তাং কুশগুকাং বিধার দ্রব্যাণ্যাদাদরেও। তত্র বিশেষঃ—তিল-তণ্ড্ল-মূল্যাঃ মৃত্রপাঠং শঙ্ম চক্র-গদা-পদ্ম-বিষ্ণুপদ্ম্থান্ধিতং বৃথাম্যাভূষরকলানি একস্তবকনিবদ্ধানি ত্রের্যাদশদর্ভপিঞ্জল্যঃ প্রালেশমিত-কুশত্রনির্দ্ধিতাঃ ত্রিখেতশল্লক্ষিকত্বকং বীক্ষবতর্শক্ত (কাণ্ডং) আরবেথা বা শক্ষঃ শরেষীকা তর্কুঃ পূর্ণপাত্রং বীণাগাধিনো চেতি। তত আল্রামবিশ্রিতা চক্র্যাল্যাং মূল্যান্ প্রক্রিণ্যাধিশ্রিত্য ঈষৎশ্রিতেষ্ তিলতপুলপ্রক্ষেণং তের্কু ক্রা প্রণীতোদকং দত্তা সোদকং চক্রমর্মেদ্দিকণতঃ

প্রত্যক্ষং ভদ্রপং মনুষ্যস্ত দেবত্বেন ভবতীতি । পৃথিবৈয় ইতি পঞ্চম্যর্থে চতুর্থী। দেবস্বমিতি তৃতীয়ার্থে দ্বিতীয়া।

<sup>(</sup>৩) স্থপণ শোভনপকঃ গ্রুত্থান্ দ্রগামিডাদিওণযোগেন প্রশন্ত পক্বান্ বিবৃত্ত ওঁকারঃ তে তব নিরঃ মন্তক্ম, গায়ত্রাং দাম তে চক্ষুঃ, বৃহত্তথ-ভরে দামনী তে পক্ষো. ভোম ভোমাথ্যপঞ্চিংশতিদামানি তে আজা স্বরুপন্, ছলাংজ্বই বাদানি অলানি, বজুংবি বজুর্কেনো নাম সংজ্ঞা, দাম তে তব তন্ঃ শরীরং, কতমং দাম ? বামদেব্যং দাম, বজ্ঞা বজ্ঞিয়ং দাম চ প্ছেং লাজুক্ম, বিষ্ণাঃ অগ্নয়ঃ শকাঃ নথাঃ, যতন্তং স্থপণিংসি গ্রুত্থাংশ্চ অতো দিবস্থাকাশং গছহ স্থঃ স্বর্গং পত ঘাহি।

ৄলপ্রিত্বা অবতার্ব্য আজ্যান্তোতরতো নিধায় পর্যায়িকরণায় निक्रनः शरीया जेनानटकानानावज्य मिक्रनावटर्खन ठकः जिः পরিবেট্য তত্ত্বৈবাগৌ নিক্ষিপ্যাজাভাগান্তে অগ্নে एং মঙ্গলনামানীতি নাম কুত্বাবাহ্য সম্পূজ্য স্থানীপাকেন ও প্রজাপতয়ে স্থাহা ইতি হত্তা ইদং প্রজাপতয়ে ইতি ত্যাগং বিধায় বৃষ্ণবোহরারক্ক: স্থালীপাকেনোতরাদ্ধাৎ বিষ্টকুদাছতিং হ্বা আজ্যেন মহাব্যাহত্যাদি-প্রান্ধাপত্যান্তা নবাহতীর্ছবা ব্ৰহ্মণোহয়ারন্তত্যাগং বিধায় পরিত্তরণ-কুশান্ অগ্নে প্রফিপ্য সংস্তবং প্রাস্থ পূর্ণপাত্র বরুরোরক্ততরং ব্রহ্মণে দক্ষিণাং দত্তা অগ্নেঃ পশ্চানাদানাপরি স্থিতাং স্কাতাং পরিহিতাহতবস্তমুমাং গর্ভিনীমুপবেশ্য ঔড়ুম্বরাদিপূর্ণপাত্রাস্ত-দ্রব্যেণ পুঞ্জীক্তেন পত্না ললাটোপরি শিরঃপ্রদেশস্থকেশান্ (তন্তা: সীমন্তং) ও ভূভুবিংস্ববিন্যামি ইতি মল্ভেণ স্কুদ্বিন্যতি (ললাট্মারভা কেশান্ দিগা করোতি।) অথবা ওঁ ভূবিনয়ামি ওঁ ভূবো বিনয়ামি ওঁ অবিনয়ামি (১) ইতি মন্ত্ৰত্নেন বিবিক্তান্ কুৰ্য্যাৎ। ভতত্তেন কেশেন গুচ্ছত্ৰয়েণ বেণীক্বতকেশ-কলাপং প্রাপ্য তত ঔডুম্বরাদি পঞ্চ গর্ভিণ্যা বেণ্যাং বর্ধাতি—ও অমমূর্জাবতো বৃক্ষ উৰ্জ্জীব ফলিনীভব (২) ইতি মন্ত্রেণ। ততো বীণাগাথিনো রাজানং সংগায়তামিতি প্রৈষেণ বদতি অথবা অমুকং বীরতরং ইতি। যদি তৌন প্রাপ্যেতে তদেমাং গাথাং স্বয়ং সংগায়তি। সা যথা—ওঁ সোম এব নো রাজেমা মান্থীঃ প্রজা:। অবিম্ক্তচক্রা ্আসারংস্তীরে তুভ্য-মদৌ। (০) অসাবিতি সমীপাবস্থিতায়া নতা গণামমূনানি প্রথমান্তং নাম

<sup>(</sup>১) ভূর্লেকেং পৃথক্ করোমি, অন্তরীকং পৃথক্ করোমি. স্বর্গলোকং পৃথক্ করোমি। পুংসবনে হিরণ্যগর্ভ ইত্যাদিমন্ত্রবয়েন নম্ভং দন্ত্য ত্রৈলোক্যপতিস্ত্রৈলোক্যাধারঃ পুক্ষোন্তমে। গর্ভে আহিতঃ। অতো গর্ভিণীয়ঃ ত্রৈলোক্যমন্ত্রী বর্ত্ততে। তথা চ সতি ভ্রাদিলোক্তরমসন্ত্রীণং ভবতু।

<sup>(</sup>২) হে গর্ভিণি! অয়ং বৃক্ষ উজ্জাবতো বলবান্ উজ্জীব উত্থয়ীব ফলিনী ভব, বধা উত্থয়ী ফলযুক্তা তথা অমপি পুদ্রিণী ভব। উজ্জাবৎ ইতি স্মপাংস্থপো ভবন্ধি ইতি বিভক্তিব্যক্তায়েন প্রথমৈক্বচনস্থানে বিচীয়া-বছব্চনম্।

<sup>(</sup>৩) হে অদৌ! অমুকনদি! তু ছাং তব তীরে ইমা: প্রকা: আগীরন্

গৃহাতি গর্ভিণ্যেব। \* ততঃ অভেত্যাদি মংপ্ড্যাঃ শুভদীমন্তোর্ধনকর্মণি ইদং ভোজ্যত্রয়ং পদাভর্চিতং প্রজাপতিদৈবতং যথাসন্তবগোত্রশাধানামভ্যে ব্রান্ধণেভ্যোহহং সম্প্রদেদে ইত্যুৎস্কেব। তত বচং বাচনিত্যাদিনা পারস্করমতে (শান্তিপ্রকরণে মন্ত্রোহম্পদেরয়ঃ) শান্তিং কৃষা পশুপতিমতে ওঁ স্থাতিয়া ন আপ ওবধয়ঃ সন্ত ইত্যনেন আত্মানং বধ্ঞাভিষিচ্য ছর্মিত্রিয়া ইত্যাদিনা পবিত্রক্ষেপাদিকং কৃষা অচ্ছিদ্রাবধারণং কৃষ্যাং। তত আচারাৎ পর্যাশ্চহণেবভঙ্গণ্। দৈবাদক্তসীমন্তায়াঃ প্রস্বে ক্রোড়- হিতপুত্রায়াঃ সামন্তোরয়নং কার্যায়্। তথাহি—নারী যাহকৃতসীমন্তা প্রস্বেত কথঞ্চন। ক্রোড়ে নিধায় তং বালং পুনঃ সংস্কারমইতি। ইতি মার্কণ্ডেয়-পুরাণবচনাং।

## हेि गोगस्थानम्।

### অথ সোষ্যন্তীকর্ম

তত্ত্ব শূলবতীং পত্নীনালক্য শুচিরাচান্তো ভর্তা ব্দলং গৃহীত্বা বিলম্বিতপ্রদ্রবাং কুশোদকেন স্থিন্নভূত্ত্বতি। ও এজতু দশমাস্তো পর্যেও জরায়ুণা সহ। বথারং বায়ুরেজতি যথা সমুদ্র এজতি। এবারং দশমাস্তো অম্রুজরায়ুণা সহ। (১)

তিষ্ঠন্তি। কিন্তৃতা: ? মাসুধী: মাসুধা:। পুন: কিন্তৃতা: ? অবিমৃক্তচ্কো: অবিমৃক্ত-মপরিত্যক্তং চক্রং মণ্ডলং বাভিন্তা: তাদাং প্রজানাং রাজা ইব রাজা রক্ষক: পোষ্টাচ দ এব ন: অস্মাকং দোমশ্চল্রো রক্ষক: পোষ্টাচ ভবতু।

(১) বধায়ং বায়ুরেজতি কম্পতে বধা সমৃদ্ধঃ এজতি কম্পতে তথা বদ্গর্ভো দশমান্তঃ সম্পূর্বিদবকালীনো গর্ভ এজতু কম্পতাম্ তেন সহ। ন কেবলং গর্ভঃ অপি তু জরায়ুণা সহ জরায়ুর্গর্ভবেষ্টনং চর্মপুটকন্। বধা বায়ুঃ সমৃদ্রশ্চ এজতি তথা গর্ভো দশমান্তঃ জরায়ুণা সহ অস্ত্রং অংগাতী ভবতু। অস্ত্রং স্থান্ত অংগতনে আশংসায়াং লিঙ্ছাল্দস অভাপমঃ আগমশাসন-মনিতামিতি বাৎ ন ভবতি।

स्व नछ। अमस्यरख्य (इ मद्रम १ वम्द्रम ३ वि वदम ।

ষদি প্তপ্রসবে জরায়্পতনে বা বিশ্বা ভবতি, তদা ওচিরাচান্তঃ পতির্পুদিমম্ মন্ত্রং, বথা—ওঁ অবৈতৃ পৃশ্নিঃ শেবলাই ওনে জরায়্ভবে। নৈব মাংসেন পীবরীং ন কম্মিংশ্চনায়ত রাজরায় পছতামিতি। (ইমং মন্ত্রং শ্বিয়ং প্রাবয়ন্ পঠেদিতি পশুপতিঃ)। ইতি সোধ্যন্তীকর্ম!

#### অথ জাভকর্ম

তত্তাদে পুত্রে জাতে সচেলং স্নাথা পিতা অচ্ছিন্নারাং নাড্যাং পুত্র-জন্ম-পুত্রম্থদর্শন-নিমিন্তব্যাল্লেথেন তত্ত্বেণ সগণেশমাতৃকাপ্জাদিকং বৃদ্ধিশ্রাদ্ধ চি বিধান্ন মেধাজননায়ুব্যে করোতি। মেধাজননক আনামিকরা স্বর্ণান্ত হিতয়া মধুন্বতে প্রাশন্ত, কেবলং ন্বতং বা, তেন কুমারজিহ্বাং পরিমান্তি ওঁ ভ্রমি দধামি ওঁ ভ্রমি দধামি ওঁ ভ্রমি দধামি ওঁ ভ্রুবি দধামি ওঁ ভ্রুবিঃ দ্বানিত্যাদিকান্ সম্ব আয়ুন্মান্ ইত্যস্তানটো মন্ত্রান্ ত্রির্জপতি—ওঁ অগ্নিরায়ুন্মান্ স বন-স্পতিভিরায়ুন্মান্তেন বায়ুন্ম আয়ুন্মন্তং করোমি। (২) (ক) ওঁ সোম আয়ুন্মান্ স ওবিণীভিরায়ুন্মান্তেন বায়ুন্মন্তং করোমি। (২) ওঁ বিতর আয়ুন্মন্তত্তে ক্রায়ুন্মন্তত্তেনেত্যাদি। (৩) ওঁ পিতর আয়ুন্মন্তত্তে

<sup>(</sup>১) ছির কুমারে ভূলে কিন্ আদধানি, অস্তরীক্ষলোকং ছির দধানি, সং স্বর্গলোকং ছির দধানি ভূভূবিঃম্বরেতল্লোকত্ররোপলক্ষিতনেতদান্তিতং সর্ব্বং প্রমেয়জাতং ছির দধানি। ছমনেন ত্রৈলোক্যগতপ্রমেয়জাতাধানকর্মণা মেধাযুক্তো ভব।

<sup>(</sup>২) (ক) বোহরনগ্রিরায়ুমান্ চিরস্থায়ী স বনস্পতিভির্'লৈঃ দাকতয়া অগ্রেরাশ্রম্বস্পপতি আয়ুমান্ তেন অগ্রিনম্বিনা আয়ুষা বা বাং কুমারম্ আয়ুমান্ কে বরামীতি সম্বরঃ। (খ) সোমতক্রঃ ঔষণীতিঃ বীর্যাদিভিরমানক্রায়াং ক্ষাণশ্চক্রো বনস্পতিং বিশতি ততঃ শুক্রপক্ষে তাভিরাপ্যায়্মানঃ ক্রমেণ বৃদ্ধিমাসাদয়ন্ আয়ুম্মান্ ভবতি। (গ) ব্রহ্ম বেদঃ বাহ্মণে শিস্তোন্ধায়ক্রমেণ ধার্যমানো বেদ আয়ুম্মান্ ভবতি। (ব) দেবানাং হি অমৃতং প্রাপ্যামর্ক্রম্। (৪) শ্বর্য় মরীচ্যাদয় ব্রৈঃ চাক্রায়ণাদিভিঃ ঋষীণাং

ষধাভিরায়ুয়য়ভেনেত্যাদি। (চ) ওঁ যক্ত আয়ুয়ান্ স দক্ষিণাভিরায়ুয়াইতেনেত্যাদি। (ছ) ওঁ সমুদ্র আয়ুয়ান্ স প্রবন্তীভিরায়ুয়াইতেনেত্যাদি। (জ)
ওঁ কণ্ঠপশু ত্রায়ুয়ং, জমদপ্রে: ত্রায়ুয়ং ত্রায়ুয়ং। মদেবানাং
ত্রায়ুয়মিতি কার্যাথীয়ানাম্। মদেবেরু ত্রায়ুয়মিতি মাধ্যদিনানাং, তনেংস্থ
ত্রায়ুয়মিতি কির্পাত। (৩) ততঃ পিতা মদি কাময়েত সর্বময়য়ুয়য়দিতি
বাৎসপ্রেণনমভিম্শেৎ। দিবস্পরীভ্যারভ্য উবিজাে বিবক্রিত্যন্তা মন্ত্রা
বাৎসপ্রসংজ্ঞকাঃ, ৻তৈঃ কুমারং হদি স্প্শেৎ। যথা—(দিবস্পরীত্যাজেকাদশার্চানাং বৎসপ্রশ্বমিপ্তিপুল্লেকাইয়ির্দেবতা অয়ৢয়পস্থাপনে বিনিরোগঃ।) ওঁ দিবস্পরি প্রথমং জক্তে অয়য়য়য়দিতীয়ং পরিজাতবেদাস্ত্রীয়মস্
নুমণা অজ্ঞমিক্ষান এনং জরতে স্বায়ীঃ। (৪) ওঁ বিদ্মাতে অয়ে ত্রেধা
তেরাণি,বিদ্মাতে ধান,বিভ্তাপুক্রা। বিদ্মাতে নাম পরমং গুহা, বিদ্মাত
তমুৎসং বত আজগন্থ। (৫) ওঁ সমুদ্রে ঝানুমণা অঞ্বন্তিকা সিধে দিবো

তপদ ইব দীর্ঘায়ৃষ্ট্রন্। (চ) পিতরঃ অগ্নিষাত্তাদয়ঃ অধাতিঃ পিতৃণামন্নৈঃ (ছ) বজ্ঞো দক্ষিণাভিঃ সমৃদ্ধঃ। (জ) সমৃদ্ধঃ শ্রবস্তীভিঃ নদীভিঃ, বনস্পতিভি-রিতি অন্তেষামপি দৃশ্যতে ইতি দীর্ঘয়ন্।

<sup>(</sup>৩) ত্রীণি আনুংধি সমাহতানি ত্রারুণং।—আয়ুংশব্দোহতাবস্থাবাচী-বাল্য যোবন-বার্দ্ধকা অকমবস্থাত্ররন্। কশ্যপশু জনদর্মেণ্ট ঝবেদে বানাং যং ত্রায়ুষং তন্মে অস্ত । যগুপি তন্মে অস্ত ইতি কর্তুগোচরা আশংসা তথাপি কুমারগোচরৈব বোদ্ধব্যা। ধাং বৈ কাঞ্চন যক্ত ঝবিজ আশিষমাশাসতে তাং যজমানস্থৈব ইতি শ্রুতেঃ।

<sup>(</sup>৪) অগ্নি: দিবস্পরি আকাশমধিকতা প্রথমং জব্জে জাতবাম্ জাতবেদাং আগ্নিরেব অস্থংপরি অস্থংসদৃশং পুরুষরূপং বিশুমধিকতা দিতীরং জব্জে অপ্লুজনেব তৃতীরং জব্জে। নৃষ্ মনুষ্যের্মনো ষস্ত নুমণাং প্রজাপতিরেন-মগ্নিমিরানং অজ্ঞাং দীপন্ন জরতে জরম্বতি। কিন্তৃতং প্রজাপতিং ? স্থাধীং স্বশোভনম্ আহিতা ধী বৃদ্ধির্মস্ত সং।

<sup>(</sup>৫) হে ঋগে! তে তব তেবা ত্রিপ্রকারং ত্রয়াণি ঋগিবায়ুস্ব্যাখ্যানি ক্রপাণি বিদ্ধঃ জানীমঃ, কিঞ্চতে ধাম স্থানানি আহবনীয়-সার্হপত্য-দক্ষিণাগ্রিশক্ষপাণি বিদ্ধঃ। কিস্তানি ্রু? বিভ্তা বিভ্তানি বিশেষণ ভ্তানি। পুনিং

আগ্ল উগন্। তৃতীয়ে তা রক্ষসি তৃষ্টিবাই সমপামুপত্ত মহিবা আবর্জন্। (৬) ওঁ আক্রনদ্যিঃ স্তন্যন্নির ভৌ: কামা রেরিছদ্ বীক্ষণঃ সমজন্। সভ্যোজ্ঞানো বি হীমিন্ধো অথ্যদারোদ্যী ভাষনা ভাত্যন্তঃ। (৭) ওঁ প্রীণামূদারো
ধক্ষণো রগ্নীণাং মনীবাণাং প্রাপণিঃ সোমগোপাঃ। বস্থঃ সহসো
অপুসু রাজা বিভাত্যন্ত উবসামিধানঃ। (৮) ওঁ বিশ্বস্ত কেতৃতুর্বনস্ত

কিন্তৃতানি ? পুক্রা পুক্ বছ ত্রায়তে ইতি পুক্রং তানি জগদ্রকাকারকাণী-ভার্থ:। অপি চ তে তব নাম বিদ্যঃ পরমন্ উত্তমন্। ন কেবলমূভ্রমন্ অপি তু ষদ্গুহা গুহারামিব স্থিতঃ গুহুমিতি যাবৎ, অপি চ ষতঃ সকাশাৎ আজগন্থ আগতোহসি।

- (৬) হে অয়ে! তা তাং নৃষণাং প্রজাপতিং ঈধে দীপয়াঞ্কার।
  কিন্তুতং তাং? সমৃতে অপ্যুক্ত অস্তম্ধি বৃত্বায়িত্বন অবস্থিতং।
  কিন্তুতা নুমণাং? নৃষ্ চক্রত্যেতি নৃচক্ষাং। পুনং কিন্তুতং তাং? দিবং অগ্রন্থ উবন্ উবসি আপীনস্থানে আদিত্যতয়া স্থিতম্ আদিত্যো হি পৃথিবীগতং রসং রশিভিরাদায় বর্ণায় তাজতি। তৃতীয়ে রজসি ভ্মিরাকাশং অর্গন্চ ইতি গণনক্রমেণ তৃতীয়ং অর্গো ভবতি। তৃতীয়ে অর্গে লোকে অপাম্ উপস্থে জলানাম্ সয়িধে উৎসক্ষে চ তন্তিবাংসং স্থিতবন্তং তা তাং মহিষা প্রাণবায়বং অবর্দ্ধন্ বর্দ্ধয়াঞ্জুঃ। উবন্ ইতি উধংশকাৎ সপ্তম্যেক্বচনান্তস্ত স্থপাং লুগিতি লুক্ ব্যত্যয়ো বহুলমিতি সম্ভ নকারং। সমুত্রে বাড়বায়িতয়া দিবি আদিত্যতয়া স্থিতং ত্থাময়িং বায়বো বর্দ্ধয়ি ইত্যয়েঃ স্থতিঃ।
- (१) অগ্নি: অক্রনং শবং করোতি, কিঞ্চ ক্ষামা ক্ষমাং ভূমিং রেরিছৎ লেড়ি, কিং কুর্বন্? বীরুধং ওষধীঃ সমজন্ ব্যাপ্নুবন্, অপি চ ইছঃ সন্ক্রিতঃ সন্ ব্যথাৎ বিখ্যাপন্নতি। কিন্তৃতঃ ? সভোজজ্ঞানঃ তাৎকালিকং জান্নমানঃ হি-ঈংশলো পালপ্রণে। কিঞ্চ, আরোদনী ভাবাপ্থিবাে) অন্তম ধ্যে ভান্তনা রিখিনা আভাতি প্রকাশতে। ক ইব ? ভৌরিব ভোশবেন মেঘ উচ্যতে উপচারাৎ যথা মেঘঃ ন্তনন্ধলং কুর্বন্ পৃথিবীম্পকেন লেড়ি ওমধীব্যাপ্রোভি বিখ্যাপন্নতি ভান্ন। বিভাৎপ্রকারেণ প্রকাশন্নতি এবমগ্রিরপি। ক্ষামা ক্ষমাণক্ষত দ্বিতীয়ার্থে প্রথমা ছাল্পাে দীর্ঘঃ।
- (৮) বসু: অগ্নি: বিভাতি প্রকাশতে। উষসাং উষসি প্রভাতসময়ে
  আথে প্রথমম্ ইধানঃ দেদীপ্যমানঃ প্রত্যুবসময়ে অগ্নীনাং প্রাত্তরণং
  ভূতীয়—১

গর্ভ আ রোদনী অপৃণাজ্জারমান:। বীডুঞ্চিদন্তিমভিনৎ পরারন্
জনা বদগ্লিমবজন্ত পঞ্চ। (৯) ওঁ উশিক্ পাবকো অরতিঃ স্থমেধা মর্ত্যেশগ্লিরমৃতো নিধারি। ইর্ল্ডি ধ্মমক্ষং ভরিত্রত্তে কেণ শোচিষা ভামিনক্ষন্। (১০) ওঁ দৃশানো কল্ম উর্ব্যা ব্যক্ষৌদ শুর্বমায়ং প্রিরে রুচানঃ। অগ্নিরমৃতো অভবদ্বরোভির্বদেনং ভৌরজনরৎ স্থরেতাঃ। (১১) ওঁ যত্তে

ক্রিয়তে। অগ্নি: কিন্তৃতঃ? শ্রীণাম্ উদারঃ আধাতা, রয়ীণাং ধনানাং ধকণো ধার্মিতা, মনীধাণাং মনোহতিল্যিতানাং প্রার্পণঃ প্রাপমিতা ধনমিচ্ছেকুতাশনাদিতি শ্রুতেঃ। সোমগোণাঃ সোমং গোপায়তি যং সং, সহসো বলভা, স্থাং পুত্রং বলবতা মথ্যমানশ্বেত্ৎপভতে। অপ্লু জনেবু রাজা বরুণঃ স্কাসামেব শ্রীণামুদারঃ।

- (৯) ষমগ্নিং পঞ্চ চন্তারো ব্রাহ্মণাদয়ঃ নিষাদাখ্যঃ পঞ্চমশ্চেতি পঞ্চলনা মহন্তা অধলন্ত প্লিভবন্তঃ। সোহগ্নিং বিশ্বত প্রাণিজাভত কেতৃক্র তা সর্বান্দী। ভ্বনত ভ্বনবর্ত্তিনঃ প্রাণিজাভত গর্ভোহগ্নিঃ ? রোদদী দ্যাবাপ্থিব্যো আ অপূণাৎ প্রিভবান্ আদিভ্যভয়া জায়মান উৎপত্মমানঃ, কিঞ্চ অদিং পর্বভং বীছুং দৃচং অভিনৎ বিদারিভবান্ চিৎশব্দোহপ্যর্থে। কিং কুর্বন্ ? পরায়ন্ পরাগচ্চন্ ভত্ত পর্বতে পভন্নিভি যাবং। এতেন অগ্নিরেব ইক্র ইত্যুক্তং ভবতি।
- (>•) অগ্নিঃ মর্জ্যের্ নিধারি নিহিতঃ, উপিক্ কাস্তঃ, পাবকঃ পবিত্রতাকারী, অরভিঃ পর্য্যাপ্তবৃদ্ধিঃ অনেধাঃ অবৃদ্ধিঃ অমৃতঃ অমরণধর্মা এবস্ত্রতাহগ্নিঃ স ধ্মম্ উদিয়র্জি উর্জং গময়তি। উদিতি ব্যবহিতমত্র সম্বন্ধ। কিন্তৃতং ধ্মম্? অক্ষমং আরোচনং রূপবং। কিং কুর্মন্ অগ্নিঃ গ অবিত্রং জগদ্ধারয়ন্, অপিচ শোচিয়া রিশ্মনা ভাম্ আকাশং ইনকন্ ব্যাপ্লুবন্। কিন্তৃতেন শোচিয়া ? অত্রেণ শুরুংর্নেন। অরতিঃ অলং মতির্ক্ত ইতি ব্যত্যয়ো বহুলমিত্যস্থার-মকারয়োলোপ:।
- (১১) অগ্নিঃ ব্যভৌৎ বিজোততে, করা ? উর্ব্যা মহত্যা দীপ্তা ইত্যর্পাৎ। কিন্তুতঃ ? দৃশানঃ প্রত্যকীভূতঃ, করাঃ রোচনঃ রপবান্, ন কেবলং ভোততে ক্সায়েরায়্জীবনং হর্মবং হঃধেন মৃয়তে ধঙ্গিতুং ন শব্যতে ইতি বাবং। সোহ্গিঃ অনুভঃ অম্বণ্যনা অভবং। কিংকুর্ন্ ? কচানঃ

অন্ত কণবদ্ ভদ্রশোচেহপৃপন্দেব ঘৃতবস্তমগ্নে। প্র ভং নয় প্রভরং বস্তো অছাভি মুন্নং দেবভক্তং ধবিষ্ঠ। (১২) ওঁ আ তং ভদ্ধ সৌশ্রবসেশ্বয় উক্থ উক্থ আভন্ধ শত্মমানে। প্রিয়: স্থেয় প্রিয়ো অগ্না ভবাত্যজ্জা-তেন ভিনদহজ্জনিহৈঃ। (১০) ওঁ স্বামগ্নে যন্তমানা অমুদ্যূন্ বিশ্বা বমু দধিরে বার্য্যাণি। স্বন্না সহ দ্বিণমিছ্মানা ব্রন্ধং গোমস্বমুশিজো বিবক্তঃ। (১৪)

ইচ্ছন্। কলৈ ? প্রিয়ে লক্ষ্যে লক্ষ্যং দাত্মিচ্ছন্ ইত্যর্থ:। কিঞ্চ ষম্ এন মৃ অপরোক্ষনির্দেশ মাদিত্যং ভৌরজনরৎ জ্বনিতবতী শোভনং রেতঃ শুক্রং বস্তাঃ স্থার তোঃ গোভনবঞ্ধ রেতস এব তদেব যৎ তেনাদিত্যো বিশ্ব-প্রকাশকো জনিতঃ। কৈরজনরৎ ? বয়োভিঃ রথৈঃ পশুপুরোডাশাদিভিঃ প্রাদ্যো হুয়ৌ ছতা আদিত্যোদরহেত্ ভাবং ভজস্ক ইতি ভাবঃ।

- (১২) হে ভদ্রশোচে! কল্যাণরশ্মে! দেব! দেবনাদিগুণযুক্ত!
  আয়ে! বো ষজমানন্তব অল্য ইদানীং অপূপং পুরোডাশং ঘৃতবস্তঃ ঘৃতেন
  যুক্তং ক্লাবৎ করোতি, যত্ত যজমানত বত্তঃ বত্তং বাসোচিতস্থানং প্র তং নয়
  নয়সি প্রণয়ি। কিন্তৃতং বত্তং? প্রতরং প্রকর্ষেণ তীর্যাং গম্যং তথা আছে
  আছেং নির্মালং নিজ্পাপমিতি যাবৎ, কিঞ্চ তং যজমানং হে যবিষ্ঠ যুবতম। স্বয়ং
  স্থেশ্ অভিমুথং নয়। কিন্তৃতং স্বয়ন্? দেবভক্তং দেবসেনিতন্। হে আয়ে!
  যো যজমানন্তব পুরোডাশং করোতি, তং মুখাভিমুথং ক্রখা ঘদীয়প্রসাদপ্রাপ্যং
  স্বর্গং প্রাপয়। বত্ত ইতি বিতীয়েকবচনে প্রথমৈকবচনম্। আছে ইতি
  অমুস্বারলোপশ্ছাক্সঃ।
- (১৩) হে অগ্নে! তং যদমানন্ আভদ্ধ তক্ত সন্নিহিতো ভব। তথা চ কিং স্থাদিত্যাহ যক্ত যদমানক্ত উক্থে উক্থে স্থোত্তে স্থোত্তে শক্তমানে প্রশক্তন মানে সৌপ্রবাসের্ সাধ্পাবীয়ের্ স্থোত্তের্ আভদ্ধ আসেবসে সন্নিহিতো ভবসীত্যর্থ:। অসৌ যদমানঃ স্থো স্থ্যক্ত প্রিয়ঃ উদ্ভবতি উৎপদ্ধতে। অগ্না অগ্নেঃ প্রিয় উদ্ভবতি ন কেবলমেবং অপি তৃ জাতেন পুত্রেণ জনিবৈশ্ব জনিযামাণিঃ পুর্পোত্রাদিভিঃ উদ্ভিনদং উদ্ভিনত্তি ধর্মার্থকামান।
- (১৪) হে অগ্নে! আ আং যজমান। বিখা বিখানি সর্কাণি গোহিরণ্যা-দীনি বহু বস্থনি ধনানি দধিরে ধারমন্তি। কিন্তুতানি ? বার্যাণি বরণীয়ানি। কথং ? অন্নুন্ অস্থানিবসম্ ই প্রতাহমিতি যাবৎ, কিঞ্, অয়া সহ জ্ঞা

ইত্যেকাদশর্চাঃ। ততঃ কুনারশু চতুর্দিকু মধ্যে চ পঞ্চ ব্রাহ্মণান্ সংস্থাপ্য পিতা ও ইমমন্থ প্রাণিতেতি তান্ জ্রাং। ততঃ প্র্কিদিক্স্তিতো ব্রাহ্মণঃ কুমারং লক্ষ্যীকত্য ও প্রাণ ইতি, দক্ষিণও ব্যান ইতি, পশ্চিম ও অপান ইতি, উত্তর ও উদান ইতি, পঞ্চমঃ ও সমান ইতি উপরিষ্টাদবেক্ষমাণো জ্রয়াং। অবিভ্যমানেষ্ তু ব্রাহ্মণের ক্যাং । অব্যাং তল্পাং দিশি গ্রা কুমারাভিম্পং স্থিয়া প্রাণেত্যাদি পূর্ব্বোক্তং জ্রয়াং। অব্যান্ পক্ষে ন প্রিয়ং। ততো বিশ্বন্ দেশে কুমারো জাতন্তঃ দেশমভিমন্ত্রেং। ও বেদ তে ভূমি হাদ্যং দিবি চন্দ্রমদি শ্রিতম্। বেদাহং তন্মাং তদ্বিদ্যাং পশ্চেম শরদঃ শতং জীবেম শরদঃ শতং শৃণুরাম শরদঃ শতম্ ইতি মন্ত্রেণ। (১৫) ততো নাড়ীং ছিল্লা কুমারমভিম্পতি—ও অশ্বা ভব পরশুর্ভব হিরণ্যক্ষতং ভব। আল্বা বৈ পুত্রনামাদি দ জীব শরদঃ শতম্। (১৬) ততঃ কুমারমাতরমভিক্রারাং। ও ইড়াদি মৈত্রাবক্ষী বীরে বীরমজীজন্থাঃ। সা তং বীর্বতী ভব যাম্মান্ বীরবতোহকরং ইত্যনেন মন্ত্রেণ। (১৭) ততঃ কুমারমাত্র দিক্ষিণন্তনং প্রক্ষাল্য প্রফ্রতি। (পরমেষ্ঠী ঋষিন্তিইপ্ ছনেলা অগ্নিদেবিতা

সহিতাং দাগন ইতার্থং যজমানাং দ্রবিণং যজ্ঞফলং মোক্ষরপমিচ্ছমানাং ব্রজং বৃদ্ধক্ষ বৈর্ক্তং কৃতবৃদ্ধঃ। কিন্তুতং ? গোমন্তং রশ্মিমন্তং আদিতামিতার্থং। কিন্তুতা যজমানাং ? উলিজে। জ্ঞানিনং, বাং যজমানাং যদা ধনাদিকমিচ্ছন্তি তদা তৎ প্রাপ্রুবন্তি যদা মোক্ষমিন্তন্তি তদা জ্ঞানিনো ভূবা জ্ঞানকর্মনমৃচ্চেরেনাদিত্যং ভিত্তা মোকং প্রাপ্রুবন্তি ইতি ভাবং।

<sup>(</sup>১৫) হে ভূমি! তেতব হাদয়ং বেদ জানামি। কিন্তুতং? দিবি চন্দ্রমদি শ্রিতং দম্বদ্। তন্মাং বিভাৎ মামপি জানাতীত্যর্থঃ। অন্তৎ স্থামম্।

<sup>(</sup>১৬) হে কুমার ! ইতাধ্যাহার্য্যন্। অংশা ভব প্রস্তর ইব দৃঢ়ো ভব, পরশুঃ কুঠার ইব বিরোধিনাং ছেদকো ভব, হিরণ্যমক্রতং অক্ষয়ং বথা স্থমপি তথা ভব কিঞ্জ স্বং মমাত্মা ভবিদি পুল্লনামা। অক্সং স্থামম্।

<sup>(</sup>১৭) হে বীরে ! ত্বন্ ইড়া দেবমাতাসি তথা মৈত্রাবরুণী মিত্রাবরুণাস্থতা বীরং পুদ্রাস্তরং অজীজনথাঃ উৎপাদিতবতী। সা বংবীরবতী বীরমাতা ভব। তথা অস্মান্বীরবতঃ পুত্রযুক্তান্ অকরৎ রুতবতী।

<sup>(</sup>১৮) হে অয়ে ! অমিমং ন্তনম্ উজ্জিল্জং প্রাণহেতৃভূতন্ অপাং ত্ঝৈঃ প্রপীনং প্রিতং ধর পিব। কুত্র স্থিতমিত্যাকাজ্জারামাহ—শরীরক্ত মধ্যে অপ্শব্দেন অগ্ত্রমৃচ্যতে সাদৃভাব। উৎসং প্রবস্তং ইমং জুবল সেবল শতধারং বহুধারং সর্বতোগতং সর্বদেহগতং হে অর্বন্ । সর্বদেহগত । সমৃত্রিয়ং সমৃত্রসম্বিদ্ধি স্থানম্ আবিশ্ব প্রবিশ। যথা সমৃত্রস্থা বড়বানলং সর্বমেব জরয়তি তথা ভ্রানপি তথাভূতমাহারং জরয়ত।

<sup>(</sup>১৯) হে সরস্বতি ! সরস্বতীনদীসদৃশে ! বৎসমাতঃ ! সাদৃশুঞ্চ প্রবজ্ঞপতয়া, তে তব যা অনা শশয়া সবৈর্দ্ধপভ্জামানোহপি স্বপ্ত ইবাছ দিয়া, যো ময়োভ্যময়া স্বং তত্ত ভ্যোনম্। যো রত্ত্বারত্ত্বার রে বমনীয়া পয়া তত্ত ধার রিতা বস্ত্বলা বেদয়তি প্রাপরতি বস্থবিং। যা স্বৰ্জা শোভনদাননীলা, যেন ভানেন বিখা বিখানি প্রাসি প্রাসি প্রাসি। কিস্তানি ? বার্য্যাণি প্রার্থনীয়ানি তা ভানি মিহাত্ত ধাতবে পানায় অকা কৃষ্ণ। হে প্রিণি! তব যা ভানা প্রেণ পীয়নানোহপাছ দিয়া স্বর্ধকারী রমনীয়ভত্ত বস্থারী বলপ্রাপকা ভাভদারী বিশ্বপোষ্টা তা ভানমত্ত কুমারত্ব পানায় কুর্মিত্যের্থা।

<sup>(</sup>২০) হে আপঃ! বৃহং দেবের জাগ্রথ ইতি অপাং স্বরূপমূৎকীর্ত্তা অস্তাঃ সপুত্রায়াঃ রক্ষার্থং জাগ্রথ।

ইদম্দপাত্রং আউখানাৎ স্থাপিতমেব তিষ্ঠতি ) ততঃ স্তিকারা উথান-পর্যস্তং সন্ধারান স্তিকাপৃহ্বারদেশে কুশগুকাব্যতিরেকেণ পঞ্জ্-সংস্কারান্ করা স্তিকাগ্নিং স্থাপরিষা সন্ধার্বরে তণ্ড্লকণামিশ্রিতান্ সর্বপান্ তশ্মির্রী হন্তেন স্থাহান্তেন ও শগুমকা উপবীরঃ শৌগুকের উল্পলঃ। মলিমুচোন্রোণাসশ্চাবনো নশুতাদিতঃ স্থাহা। (২১) ও আলি-ধ্রনিমিষঃ কিম্বরন্ত উপশৃতিইর্যাক্ষঃ কুন্তী শত্রুং পাত্রপাণিন্মিণি-ইন্রীম্থঃ সর্বপার্লণচাবনো নশুতাদিতঃ স্থাহা। (ইদমগ্নরে) (২২) ইত্যাহতিদ্বর্ম ব্যাক্রমং সন্ধ্যরোদ্ঘাৎ। অথ ধদি কুমারম্পদ্রবেৎ তদা তং বালং জালেন উত্তরীয়বন্ত্রেণ বা আচ্ছাত্য পিতা অন্ধ আধার জপতি—ও কুর্কুরঃ স্কুর্কুরঃ কুর্কুরো বালবন্ধনঃ। চেচেচ্ছ্রনক স্প্র নমন্তে অন্ত সীসরো লপেতাপহ্বর তৎ সত্যম্। যত্তে দেবা বর্মদত্য স ত্বং কুমারমেব বার্ণীথাঃ। চেচেচ্ছ্রনক স্প্র নমন্তে অন্ত সীসরো লপেতাপহ্বর তৎ সত্যং হাত্তে সরমা মাতা সীসরঃ পিতা শ্রামশবলী প্রাতরী চেচেচ্ছ্রনক স্প্র নমন্তে অন্ত সীসরো লপেতাপহ্বর। (২৩) ততঃ কুমারং হাদি স্পৃষ্টাহতিমুশতি—ও ন নামর্যতি ন ক্র্মতি ন হ্যাতি ন গ্রায়তি যত্র ব্যঃ

<sup>(</sup>২১) শণ্ডাভিধানো বালগ্রহ ইত আহতেন শ্রতাৎ নধ্যে ভবতু। এবং মর্কা-দয়শ্যবনাস্তাঃ সপ্তবালগ্রহা নশ্রতাদিতি প্রত্যেকং সম্বধ্যতে।

<sup>(</sup>২২) আলিধরিত্যাদরো বালগ্রহা দশ, অত্যাপি নশুতাদিতি ক্রিয়াপদং প্রত্যেকং সম্বধ্যতে।

<sup>(</sup>২৩) কৃর্রাদীনি ত্রীণি নামানি বালং কুমারং বরাতীতি বালবন্ধনঃ কুমারগ্রঃ ত্রিভিরেব ক্র্রাদিভিঃ সহ প্রত্যেকং সম্বাতে। তথা চ ক্র্রে শেষালবন্ধনং, স্ক্র্রিশেষালবন্ধনং, ক্র্রিশেষালবন্ধনং। এতেষাং মধ্যে যদি কশ্চিঘালবন্ধন আন্তে তথা হে শুনক। তে তব নমোহস্তা, তং স্জ কুমারং সম্ভাজেতার্থঃ। হে শুনকেতি ত্রয়াণাং সম্বোধনম্। কিঞ্চ, সীসরস্তেষামেক শিতালপেতা বদতি, অপহবর অপগচ্ছ কুটিলো ভব। হে শুনক! যতে তব-দেবাঃ ব্রহাদয়ঃ বরং প্রাধিতম্ অবতঃ দত্তবন্তঃ স পূর্ব্বোক্তর্মপন্তং কুমারমেক বরং আর্বীথাঃ কৃত্বানদি, অত্রাপি দেবৈর্বিদানং ত্রা চ বরত্বন কুমারস্ত প্রার্থনিসিত্যভ্রেন সহ তৎ সত্যমিত্যক্ত সম্বন্ধা বিবিশিতঃ। ব্রুপি তত্তরং

বদামো যত্র চাভিমূশামসি ইতি মন্ত্রেণ। (২৪) (দকিণছন্তেন কুমারং সর্ব্বতঃ স্প্রাদিতি পশুপতিঃ)। ততো দক্ষিণাং কাঞ্চনাদিকং দ্রা অচ্চিদ্রাবধারণং কুর্যাং। ইতি জাতকর্ম।

### অথ নাসকরণম্

তত্র পিতা একাদশেহহনি কতনিত্যক্রিয়ঃ সগণেশ-মাত্কাপ্লা-বম্ধারা-বৃদ্ধিজাদিকং বিধায় ভোজ্যত্রম্ৎস্ত্বেৎ। ওঁ তৎসদিত্যাদি মদীয়াভিনবজাতকুমার-নামকরণকর্মণি বথাসন্তব-বেদ-গোত্রশাখানামভ্যো ব্রাহ্মণেভান্ত্রপ্রোপয়িকভোজ্যান্তহং দদে। কঠিতল্ভোজ্যদানকর্মণঃ সান্ধতার্থং দক্ষিণাং তাম্ব্লং বথাসন্তবগোত্র বেদশাখানায়ে ব্রাহ্মণায়াহং দদে। তত জাচারাৎ ঘটয়াপনং করা তত্র
গণপতি-নবগ্রহ-দিক্পালাদীন্ সম্পুল্য শিলাপট্রকে শিলাপ্ত্রকেণ
রেধাদয়ং করা কঠিলাপি তদেব রেখাদয়ং প্রক্জ্রাল্য উজ্জ্বলম্বতপ্রদীপদয়ং নামরূপেণ হলা পরিকল্পা তদধো নামদয়ং বিলিখ্য তত্র মৃতপ্রদীপদয়ং বাপয়েৎ। ততঃ পিতা প্রাম্বন্তরেশ নামা সালকায়ায়াঃ পদ্মা স্বামস্থিতায়াঃ প্র্রাভিম্থ্যাঃ ক্রোড্রিতস্থ কুমারস্থ দক্ষ্ণিকর্দেবশর্মাসীতি নাম কুর্যাৎ। কল্পা চেৎ কল্পায়া বাসকর্দে অযুগাকরদীর্ঘান্তামৃকদেবসনীতি নাম কুর্যাৎ। তত্তো ব্রাহ্বণার বাসসী দক্ষিণাং দম্বা

সভাং তথাপি তে নমোহস্ত ইত্যাদি পূর্ববং। হে ওনক! যতে মাতা সরমা সীসরঃ পিতা স্থামশবলো ভাতরো তচ্চেৎ চেৎ সত্যং তথাপি তে নমোহস্ত ইত্যাদি পূর্ববং, তথাপি মম নমস্কারেণ তুইঃ পিতৃবাক্যেন চৈনং কুমারং ত্যক্ষেতি প্রার্থনা।

<sup>(</sup>২৪) যত্ত্র কুমারে বরং বদামঃ, কিং বদামঃ ? রক্ষামন্ত্রমিতি সাকাজ্জ্বাৎ বোধ্যম্। যত্ত্র চ বরম্ অভিমূশামিস অভি সর্বতোভাবেন যত্ত্র স্পর্শনং কুর্মঃ স কুমারো ন নামরতি অস্বনামনং ন করোতি, ন ক্ষতি ন হ্বয়তি ন প্লারতি রোদন-হর্মানিয়জো ন ভবতি।

শান্ত্যদকেন শান্তিং কৃষা কুমারমভিষিচ্য আশিষং কৃষ্। ছিদ্রা-বধারণং কুর্যাৎ। •

### ইতি নামকরণম্।

### অথ নিজ্ৰমণম্

তত্ত্ব মাসি শুকে পক্ষে চক্রতারাস্কৃলে জীবভার্গবিসাধারাণ।মন্তত্বে তদভাবে ভৌমশনীতরদিনে জ্যোতিঃ-শাস্ত্রোক্তন্ত্রভান্তন্তর্তার তদভাবে ভৌমশনীতরদিনে জ্যোতিঃ-শাস্ত্রোক্তন্ত্রভান্তন্তন্তর শিংহতুলাক্স্তান্তন্তন্তর শিশোনিক্রমণে কর্ত্রের পিতা সগণেশ-গোর্যাদি-মান্তকা-প্রকাং বদোর্যারাং বৃদ্ধিশ্রাদ্ধক করা কন্তমঙ্গলাভরণং কুমারং মাত্রক্ষন্থিতম্ অলক্তং বহিরানীয় ওঁ তচ্চক্র্দেবহিতং প্রস্তাচ্ছু-ক্রেম্করৎ পল্ডেম শরদঃ শতং জীবেম শরদঃ শতং শৃণ্যাম শরদঃ শতং। (প্রক্রবাম শরদঃ শত মদীনাঃ ভ্যাম শরদঃ শতং ভ্রশ্চ শরদঃ শতাৎ) + ইত্যনেন স্র্যাং দর্শ্বতি। তত আচারাৎ পিতা কুশ-কুস্তম-তিলাক্ষত-দ্র্বা-গন্ধ-ফল-জ্লাবিত্রম্বাং তাদ্রাদি-পাত্রন্থিতং গৃহীত্বা ওঁ আকৃষ্টেন রজসা বর্ত্তমানো নিবেশয়য়য়তং মর্ত্তাঞ্চ হিরণ্যমেন সবিতা রথেনা দেবো যাতি ভ্বনানি পশ্যন্ ইতি মন্ত্রেণ (১) (সম্পূজ্য ওঁ এহি স্ব্য্য সহস্রাংশো তেজোরাশে জ্বংপতে। অন্তকম্পন্ন মাং ভক্তং গৃহাণার্যং দিবাকর॥ ইতি মন্ত্রেণ নমো বিবস্বতে ইত্যাদি মন্ত্রেণ বা) ‡ স্ব্যার্যং দন্ত্বা ব্রাহ্বগার তাত্রপাত্রং দক্ষিণাং দন্ধা আচ্চিদ্রাবধারণং কর্যা ব্রাহ্বণভ্যো ভোজ্যত্রন্থং দল্লাং।

ইতি নিজ্ঞ মণম্।

ে (১) অস্তার্থঃ সামবেদিসামান্যকুশণ্ডিকায়াং গ্রহহোমে দ্রষ্টব্যঃ।

অত্ত কচিং পৃত্তকে পশুপতিমতে বিশেষ:—বালস্ত কৃতনামানং পৃ্ধিকত গদাভৃতঃ।
 নিবেদরেমহাভাগ তব পু্কোহম্মিতাত। শিষা: প্রেষ্ট দাসন্চ সংবিভক্তান্চ কেশব।
 নিতাং মতিবিভাগে চ শুভে চমধুস্দন। ইতানেন পু্কিতশীগদাধরান্তিকে কুমারং
সম্প্রেং। ইতি।

বন্ধনীমধ্যহোহতিরিক্তঃ পাঠঃ সংস্কারমঞ্জরীধৃতঃ।

<sup>‡</sup> वक्कवीत्रशृष्टः পাঠোহতিরিক্তো ব্রহ্মসংক্ষারমঞ্জরীধৃত:।

### অথ নৈমিত্তিকং পুত্র-মুর্কাভিজ্ঞাণম্

 বথা গৃহত্ত্বম্—প্রোধ্যেত্য গৃহাত্বপতিষ্ঠতে পূর্ববং। পুত্রং দৃইা জপতি— उँ अन्नामनार मुख्यमि अनुप्रामिधिकात्रम आजा देव भूजनामामि म जीव नेत्रमः শতম্। অথাতা মূদ্ধানমবজিন্ততি। ওঁ প্রজাপতেই। হিস্কারেণাবজিন্তামি সহস্বায়্যাহমুকদেবশর্মন জীব শরদ: শতম্। ইত্যন্তেন মল্ভেণ দিন্ত ফীমবজিছতি। পুন: ওঁ গবাং ত্বা চিম্বারেণাবজিছামি আযুষামুকদেবশর্মন জীব শরদ: শতমিতি মল্রেণ সরুদ্ মৃদ্ধানমবভার বিস্তৃ ফীমবজিছতি। দক্ষিণে হস্ত কর্ণে জপতি—ও অবস্থে প্রয়ন্ধি মঘবনু-জীবিন্নিন্দ্র রায়ো বিশ্ববারক্ত ভূরেঃ, অব্দে শতং, শরদো জীবসেধা অব্দে বীরাঞ্ছশ্বত ইন্দ্র শিপ্সিন। অব্থ সব্যে কর্ণে ওঁ ইন্দ্র শ্রেষ্ঠানি দ্রবিণানি ধেহি চিত্তিং দক্ষত্ত স্মৃতগত্বমন্ত্রে। পোষং রগ্নীণামরিষ্টিং তন্নার্থ স্থাদ্মানং বাচ: স্থানিবমহামিতি জপেও। কক্সাগ্রৈ তু মৃদ্ধানমেবাবজিছতি তৃফীম্।

### ইতি মৃদ্ধাভিদ্রাণম্।

### অথারপ্রাশনস্

তত্ত্ৰ ৰা সপ্তমমাসাদে শুরুপকে জ্যোতি:শাস্ত্রোক্ত-তিথি-নক্ষত্র-কন্সায়াশ্চ वाद्यम् वृष-मौन-क्ळा-मिथ्नाञ्चलभनद्यश्माम्यन कर्नुद्या क्रजनिलाक्यः সগণেশ-গোর্যাদি-মাতৃকাপূজা-বম্ধারা-রুদ্ধিশ্রাদানি ( স্বগৃহোক্ত-বিধিনা শুচিনামাগ্নিং সংস্থাপ্য আঘারাজ্যভাগাস্তাং কুশণ্ডিকাং চৰুদহিতাং বিধায় ) ব্ৰন্মণোহ্যারস্ত-ত্যাগং কৃত্বা + ইতি ব্ৰহ্মদংস্কারমঞ্জরী-ক্রম:। আজ্যেন ওঁ দেবীং বাচমজনয়ন্ত দেবান্তাং বিশ্বরূপাঃ পশবো বদন্তি। সা নোমন্ত্রেষমূর্জ্ঞং ত্রানা ধেত্ববাগস্বাত্বপস্থ তৈতু স্বাহেতি (১) প্রথমান্ত্তিং হ্রা

<sup>(</sup>১) দেবা ব্রহ্মান্যে। বাচং বাণীমু অঞ্জনয়ন্ত উৎপাদিতবন্তঃ। কিন্তুতামু ? দেবীং কান্তিগুণযুক্তাং তাঃ বাচং পশবো বদন্তি, কে তে পশবঃ ? বিশ্বরূপাঃ বিখং মাত্রাদিরূপং ষেষাং দা বাক ধেতুর্ধে হুর্ভা অম্মার্টপতু উপগচ্ছতু,

পশুপতিনা ব্রহ্মগ্রারমপ্রবার চন ধৃত্ব। পরস্ত গৃহস্তারুমোদিত্ব।

<sup>†</sup> পৃহাভ্যন্তরে অগ্নিমূপসমাধার—প্রাণাপানচকু: শ্রোত্র-পৃষ্টিদৈবতং স্থালীপাকং শ্রপগ্নিত্বা পর্কিশান্তাং কুশণ্ডিকাং সমাপ্য বন্ধণোহয়ারন্তেণাল্কোন আঘারাজ্যভাগে হতা বন্ধণোহয়ারন্ত-ত্যাগং বিধায় ত্মগ্রিং গুটিনামাসীতি নাম কুত্বা জাবাহ্য সম্প্রদ্ধা ইতি পত্তপতিক্রম:।

ইদং বাচে ইতি ত্যাগং বিধার পুন: ওঁ দেবীং বাচমজনয়ন্ত দেবান্তাং বিশ্বরপা: পশবো বদন্তি ইত্যাদিপাঠান্তে বাজো নো অত প্রস্থবাতি দানং বাজো দেবা ঋতুভি: কল্লয়াতি। বাজো হি মা সর্কবীরং জজান বিখা (সর্কা) আশা বাজপতির্জন্মেং আহা (২) ইতি বিতীয়াহুতিং হন্ধা ইদং বাচে ইদং বাজায় ইতি ত্যাগং কুর্যাৎ। ততঃ স্থালীপাকেনাবদানপূর্ককং চতত্র আহুতীজুহোতি বথা—ওঁ প্রাণেনাল্লমনীর স্বাহা ইদং প্রাণায়। ওঁ অপানেন পর্কাননীর স্বাহা ইদমপানায়। ওঁ চক্ষা রপাণ্যনীয় স্বাহা ইদং চক্ষ্যে। ওঁ প্রোত্রেণ বশোহশীয় স্বাহা ইদং প্রোত্রায়। (৩) ততো ক্রমণোহ্যায়নঃ স্থালীপাকেনৈব ওঁ অগ্রন্থে স্থিইকতে স্বাহা ইদমগ্রে স্থিইকতে। ইতি হন্ধা মহাব্যাহত্যাদি-প্রাঞ্জাপত্যাস্তা নবাহুতীরাজ্যেন হন্ধা (পরিস্তরণকুশান্ হন্ধা ইতি পশুপত্রে বিশেষঃ) প্রোক্ষণীপাত্রস্থং হতশেষং প্রাশ্রাচম্য ক্রমণে পূর্ণপাত্রং দক্ষিণাং দত্যাৎ—ওঁ অত্যেত্যাদি অমুকগোত্রত্য মংপুক্রতামুক্দেবশর্মণোহন্ধ প্রাশানাক-হোমকর্মণি কৃতাক্তাবেক্ষণ-ব্রন্ধকর্ম-প্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামিদং পূর্ণপাত্রং ক্রমণেহংং সম্প্রদদে ইতি দক্ষিণাং দত্যাৎ। ততশ্বনুস্ত্র-ত্রিকোণ-বর্জুলার্ক্কন্তিং মণ্ডলিকাং ব্যাক্ষণিদিক্রমেণ ভূমৌ কৃষা তত্র পাত্রং সংস্থাপ্য

উপেতি ব্যবহিত্তম্ এত্বিত্যনেন সম্বধ্যতে। সাকথং ধেমুর্ভবতি ইত্যাকাজ্জায়াম্ আহ—নো অস্বাকম্ উর্জ্জং সামর্ব্যং হুহানা প্রয়ন্তী। কিন্তৃতম্ ? মন্ত্রেষ্ণ গাজীরং তম্ম ইয়ং গমকং জ্ঞাপকমিত্যর্থং। অব্যক্তং পরোক্ষোহব্যর্থো বেনাব-গম্যতে তৎ সামর্থ্যম্ অস্বাকং প্রমন্তী সা বাণীত্যর্থং। কিন্তৃতা ? স্বষ্টৃতা স্বৃষ্ণ স্থাবাৰ বাক্ প্রথমতো দেবৈজনিতা ততো মামুবাদিভিঃ সর্বৈক্ষ্যতে।

<sup>(</sup>২) বাজঃ জন্নং নো জন্মকন্ জন্ম জনপ্রশানসময়ে দানং হোমরূপং প্রস্থাতি জন্মজানাতি, কিঞ্চ বাজো দেবান্ ইন্দাদীন্ ঋতৃতিঃ সমমবিশেষৈঃ ক্লমাতি বোজয়তি, অন্দিন্ কর্মণি ছতেনাল্লেন দেবাশ্চিরকালং বর্তন্তা-মিত্যর্থঃ। বাজো হি বতঃ মা মাং সর্ক্বীরং সর্ক্ত্র কার্য্যে বীরং ক্ষমং জ্জান চকার, জতঃ বাজপতির্রভ্রেখরোহহং স্ক্রা জাশাঃ প্রত্যাশা জ্বেরম্।

<sup>(</sup>৩) প্রাণেন প্রাণবায়না অরম্ অদনীরং অশীর ভূঞ্বিন, অপানেন বায়না গন্ধানশীর, চক্ষা চক্রিজিরেণ শুক্লাদীনি রূপাণি অশীর। শ্রোত্তেজিরেণ কা বিশীর। অনেন আহতিচতুইরেন চক্রাদিভোগ্যানস্ভবামীত্যাংশসা।

**ভত্তান্নাদিকং নিধায় সর্ব্ধান রসান সর্ব্ধঞ্চারং হুডশেবসহিত্যেকীক্বত্য সক্ত**-দেব কুমারং তৃষ্ণীং প্রাশয়তি। ওঁহস্ত ইতি ময়েণ বা ( এ অমুকদেরণর্শ-রিদমরং হস্ত ইত্যনেন পঞ্ধা প্রাশরেৎ ইতি পশুপতিমতম্ ) স পিতা ধদি কুমারক্ত বাগ্মিত্মিচ্ছেত্রদা ভারবাজমাংসং প্রাশবেং। যগুলাগুং কাম-মতে তদা কপিঞ্জলমাংদং ষদি বেগিত্বং তদা মৎস্তং বদি দীৰ্ঘাযুহীং ভদা ক্লক্ষামাংসং যদি ব্রহ্মবর্চ্চসং ভদা শরারিমাংসং যদি সর্ব্বকাম: তদা সর্কমাংসানি ক্রমেণ প্রাশবেৎ একীকত্য বা। ততঃ কুমারমাচাম্য ভাষ্দং দল্প কুমারস্থাগ্রতো দেববান্ধণসন্নিধৌ জীবিকাভাণ্ডান্সবভারমেৎ। তেবাং वनारती कुमात्रः म्भृमंति তেনৈবাশ্য सौरिका ভবিষ্যতীতি জ্ঞানায়। যথা মার্কণ্ডেরপুরাণম্—দেবাগ্রতোহথ বিক্তস্ত শিল্পভাণ্ডানি সর্ববিশঃ। শস্ত্রাণি চৈব শাস্ত্রাণি ততঃ পঞ্জেত্র লক্ষণম্। প্রথমং ষং স্পৃশে-দাল: শিল্পভাগুং স্বয়ং তথা। জীবিকা তম্ম বালম্ম তেনৈব তু ভবিষ্যতি। বান্ধণভোজনমূৎফরেও। ওঁ অভেত্যাদি মৎপুদ্রস্থানপ্র-সমৃদ্ধার্থং ব্রান্ধণেভ্যো যথোপকল্লিতং তৃপ্তৌপগ্লিকমন্নমহং मच्चानतम हेजुारसम्बा कृरेजजन्दकामानकर्यनः मामजार्यः **जात्रृनः यथामञ्जरत्वरताजनाथानात्राज्ञा बान्तर्गरङ्गार्थः मन्त्रकार्या** । ইতি দক্ষিণাং দভাৎ। ততঃ কাংস্তপাত্রং দক্ষিণাং দত্তা শাস্তিং। কুত্বাহচ্ছিদ্রাবধারণং কুৰ্য্যাৎ। ইত্যন্নপ্ৰাশনম্।

### অথ চূড়াকরণম্

তত্ত্ব প্রথমেংকে তৃতীরে বা যুগ্মমাসে শুক্লে পক্ষে জ্যোতিঃ শান্ত্রোক্ত ভিধিনক্ষত্র-বারের চন্দ্র-তারামূক্তে কালে বৃষ-মিথুন-ধর্ম্ম করমীনলগ্নেষ্ চূড়া-কর্ম্মণি কর্ত্বয়ে পিতা ক্যতনিত্যক্রিয়ঃ সগণেশ-গৌর্যাদি-মাড্কা পূজা-বস্থারা-বৃদ্ধি-প্রাদ্ধাদীনি বিধার ত্রান্ধণেভান্তুপ্রৌপরিকভোন্ধ্যায়্যুৎস্তত্ত্বং। শু অন্মেত্যাদি অমুকপোত্রত্তামূকদেবশর্মণক্ষ্ ভাকরণকর্মণি কর্ত্তব্যে ত্রান্ধণেভ্যো ভোন্ধ্যান্তহং দদে ইত্যুৎস্ক্য তাদ্লং দন্দিণাং দ্বান্ধিংশালায়াং অগ্লোক্তবিধিনা চক্তরহিতাং বিষ্টিক্রদন্তাং কুশগুকাং বিধার অয়ে বং সত্যনামানীতি নাম কৃত্বা পাত্যাদিডিঃ পুক্তরেং। ততঃ প্রব্যোক্তন্ত্রাণ্যাসাদরেং। তত্রায়ং বিশেষং। শীতোক্ষোদকে নবনীত-মৃত্তদধি-পিগুনামক্সতমং ত্রিবেত্সম্বন্ধকীকন্টকং; কুশপত্রত্তরনির্দ্ধিত-কুশপিঞ্লনীনবকং

নু চনশুরা বস্থিত-বলী বর্দ্ধ-গোময়পিণ্ডং তামুপরিষ্কৃতান্বসক্ষুরং ভাষকুরং নাপিতশ্চেতি ব্রহ্মগরমঞ্জরীধৃতক্রম:। (পশুপতিমতে ব্রহ্মোপবেশনাদি-প্ৰ্যাক্ষণান্তাং কুশগুকাং সমাপ্য দ্রব্যাণ্যাসাত ব্রন্ধণোহয়ারত্তে-ণাবারাজাভারেগী হুৱা সত্যনামানমগ্নিং সংস্থাপ্যাভ্যর্চ্চা**জ্যেন** মহাবাহিত্যাদি-ধিষ্টকুদন্তা দশাহতীজু হিন্নাৎ) ততঃ সংস্রবং প্রাশ্ত বৈন্ধণে দক্ষিণাং দতাৎ। ওঁ অভেত্যাদি অমুকেগোত্রস্তামুকদেবশর্মণঃ করণকর্মাঙ্গহোমকর্মণি কুতাকুতাবেক্ষণাদি-ব্রহ্মকর্মপ্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামিদং পূর্ণপাত্রং (তদত্বকরভোজ্যং বা) এক্ষণেহহং সম্প্রদদে ইত্যুক্তর্য দভাৎ। ততঃ শীতশঙ্গলেন উঞ্জলং মিশ্রয়ত্যনেন মন্ত্রেণ —ওঁ উঞ্জেন বায় উদক্তেনস্থলিতে কেশান্ বপ (১) ইতি মন্ত্রেন, কেশান্তে তু কেশখ্র বপ ইতি বিশেষ:। ততন্ত্রস্মিঞ্জলে নবনীতাদিপিগুানামন্ত্রমং নিক্ষিপ্য তেন পয়সা কুমারশিরো-দক্ষিণভাগস্থং কেশমান্ত্ৰীকরোত্যনেন মস্ত্রেণ—ওঁ সবিত্রা প্রস্থতা দৈব্যা আপ উন্দম্ভ তে তহুং দীৰ্ঘায়ুত্বায় (দীৰ্ঘায়ুষ্ট্ৰায়) বৰ্চ্চদে। (২) ততন্ত্ৰিশ্বেত-শল্লকীকণ্টকেন ভৃষ্ণীং কুমারকেশান্ বিজ্ঞীকভান্ ত্রিধা বিভজ্যেত ত্রিভাগমপি ত্রিধা কুর্য্যাৎ। ততো দক্ষিণত্রিভাগদৈয়কভাগে একাং কুশপিঞ্জলীং যোজয়ত্যনেন মল্লেণ— ওঁ ওষধে ত্রায়ম্ব স্বধিতে মৈন্ত হিত্দীব্রিতি। (৩) ততন্তামক্ষুরং গৃহু।তি—ওঁ শিবো নামাদি স্ববিতিন্তে পিত। নমন্তে অস্ত মা মা হিওদীরিতানেন মন্ত্রেণ। (৪)

<sup>(</sup>১) হে বায়ে! বায়ুসম্বোধনেনাত্ত কার্য্যে কারণোপচারাজ্জনং সম্বোধি-তম্ অদিতে ! অথণ্ডিত ! শীত অম্ উচ্ছেন উদকেনৈহি সন্ধতো ভব । সন্ধৃত্য চ কেশান্বপ ছিন্ধি ।

<sup>(</sup>২) আবাং সবিত্রা আদিত্যেন প্রস্থতাঃ দৈব্যা দিবি ভবান্তব তহুং দেহা-বয়বম্ উল্লন্ত ক্লেদয়ন্ত। কিমর্থম্ ? দীর্ঘায়্রায়, উকারাস্ত আয়ুশক্ষঃ। বর্চনে ভেজ্পে চ।

<sup>(</sup>৩) হে ওষধে ! কুণ ! কুমারমেনং আয়ন্ত রক্ষ । অত এনমিতি দিতীয়পাদে ক্রায়তে তদেব কর্মাত্রা বোদ্ধবাং সাকাজক্ষাৎ। ত্রধিতে ! বজ্ঞ ! মা এনং হিংসীঃ হিংসামস্ত মা কুদ।

<sup>(</sup>৪) হে ক্ষা ! শিবো নামাসি কল্যানরপো ভবসি, তে তব স্বধিতিঃ পিতাবজু উৎপত্তিরিত্যর্থঃ। এবস্ত্তায় নমোহস্ত তুত্যম্মা মাং মা হিংসীঃ মা মাং ব্যথয়।

ভত: কুশতরুণান্তর্হিতেযু কুশেবু তাম্রক্রং যোজয়তি—ও নিবর্তয়ামাায়ুয়েঽয়া-ছার প্রজননার রারস্পোষার স্থপ্রজান্তার স্থবীর্যার (৫) ইত্যনেন মন্ত্রেণ। ততঃ ভূফীং লৌহকুরমাদায় সকুশান্ কেশান্ ছিনত্তি – ওঁ ষেনাবপৎ সবিতা কুরেণ সোমস্ত রাজ্ঞা বরুণস্ত বিদান্ তেন ত্রান্ধণো বপতেদমস্তায়ুব্যং জরদষ্টির্যধাসং (৬) ইত্যনেন মল্লেণ। ততঃ সকুশান কেশান আনডুহে গোময়পিতে কুমারস্ভোতরে বিশ্বতে ভূঞীং নিক্ষিপেৎ। 🛊 ততন্তকৈবাপরভাগবন্বে উলনাদিনিক্ষেপান্তং কর্ম তৃষ্টীং কুর্য্যাৎ। ততঃ কুমারশিরঃ-পশ্চিমাংশস্থিত-কেশভাগং ত্রিধা বিভজ্য ত্রিভাগীকুত্রৈস্কভাগে উন্দ্রাদিসর্বং তত্ত্তন্ত্রেঃ পূর্ববৎ বিধায় ওঁ ত্যায়ুষং জমদগ্নেঃ কখ্যপশ্ৰ ত্যায়ুষং ষদেবেষু ত্যাযুষং তলো অস্ত ত্যায়ুষ-মিতি মন্ত্রেণ † ( ওঁ কশ্মপশ্র ত্র্যায়ুবং ওঁ জমদগ্রেস্ত্র্যায়ুবং ওঁ বন্দেবানাং ত্র্যায়ুবং ওঁ তন্মেংস্ত ত্রায়ুমমিতি মন্ত্রেণ ইতি পশুপতিমতম্) ছেদনং কৃত্বা পূর্ব্ববদ্গোময়-পিতে ভূফীং নিক্ষিপেং। কাথানান্ত যদেবানাং ত্যায়ুষং ইতি পাঠ:। ব্দপরভাগদমে দর্বমেবমমন্ত্রকং কুর্য্যাৎ । ততঃ কুমারস্থ শির উত্তরভাগং ত্রিধা বিভজ্য তক্ত্রৈকভাগে উন্দনাদিকং তত্ত্রমন্ত্রৈঃ পূর্ব্ববৎ বিধায় ওঁ যেন ভূরিশ্চরা-দিবং জ্যোক্ চ পশামি স্থাং (ওঁ যেন ভূরিশ্চরাদিবং জোক্তং পশ্চাদ্ধিস্থান্

<sup>(</sup>৫) নিবর্ত্তরামি সংশাগরামি অহং ক্রমিতি শেষ:। কিমর্থং ? আয়ুবে জীবনার, তথা অলাভার অলগত তদ্ আভং ভক্ষ্যঞ্জি অলাভং তদর্থং, তথা প্রজননার প্রস্বশক্তরে, রারস্পোষার রায়ে। ধনভা প্রার্থং, স্প্রজান্তার শোভনসন্ততরে, স্ববিগ্রার উৎকৃষ্টবীর্গ্যার্থম্। অনেন ক্রলাগনকর্মণা কুমারভা অলাদীনি ভবন্ত।

<sup>(</sup>৩) হে কুমার! যেন ক্রেণ সবিতা আদিত্যঃ সোমশ্য রাজঃ অর্থাৎ কেশান্ অবপৎ থণ্ডিতবান্। ন কেবলং সোমশ্য বরুণস্থ চ, বিঘান্ বেদবিৎ তেন ক্রেণ তে তব ব্রাহ্মণো ব্রহ্মা বপতি মৃ্ওয়তি। যথা ইদং চূড়াকর্মাশ্য তব আয়্ষ্যং সৎ ভূয়াৎ। কিন্তৃতমায়্ষ্যং ? জরদষ্টিঃ জরত্বাৎ বার্দ্ধক্যমশ্বতে ব্যাপ্রোতি বার্দ্ধক্যপর্যন্তমশ্বায়্র্থথা স্থাৎ। ষচ্চূড়াকর্ম আদিত্যেন বেদবিদা সোমবরুণয়োঃ কৃতং তত্তব ব্রহ্মা করোতু।

পারস্করমতে শিবোনামানীতি লোহকুরমাদার তৎ মিবর্তরামীতি কুশতরুণান্তহিতের
কেশের সংযোজয়তি তেন যেনাবপদিতি সকেশানি কুশতরুণানি প্রচ্ছিল্যাৎ।

<sup>†</sup> ইভি পৃহস্ত্র-ব্রহ্মসংকারনঞ্জীমতম্।

ইতি পাঠান্তরম্ ) তেন তে বপামি ব্রহ্মণা জীবাতবে জীবনার সংশ্লোক্যার স্বন্ধরে (৭) ইত্যনেন মন্ত্রেণ ছেদনং করা পূর্ববন্ধ ক্ষীং নিজিপেং। অপরভাগব্যে সর্বম্বন্দনাদিকং অমন্ত্রকং কুর্যাং। ততঃ ক্ষুরং দক্ষিণাবর্ত্তেন বারত্রেং শিরদি কুমারশু ভামরেং। কেশান্তে তু মুখে শিরদি চ। ও বংক্রেণ মজ্বরতা স্থপেশানা বপ্তা বপতি কেশাংশ্ছিম্নি শিরোমাখ্যায়ুং প্রমোধীরিত্যনেন মন্ত্রেণ। (৮) কেশান্তে তু তত্ত্র শির ইত্যনন্তরং মুখমিতি মন্ত্রে পাঠ্যম্। ততন্তেনৈবোদকেন সমন্ত্রশির আর্জু মাপান্ত পিতা নাপিতার ক্ষুরং দদাতি—ও অক্ষরণ্ পরিবপেত্যনেন মন্ত্রেণ। ততঃ (অক্ষরং পরিবপেতি পশুপতিঃ) পঞ্চশিথং ত্রিশিথং মৃত্তিতং বা বথাকুলাচারং ক্ষোরং কারম্বিত্বা কেশাংশুম্মিন্ গোমরপিণ্ডে নিজ্পিয় মঙ্গলাচারপূর্বকং সরদি পোঠে বা স্থাপরেং। ততঃ স্থাপিতং কুমারং কৃত্যক্ষরং তথিবায়েং পশ্চিমে উপবেশ্ত (কর্ণবেধং কর্ত্বা) শান্তিং ক্যাজিদ্রাবধারণং কুর্যাং। ততঃ সহৎসরং কুমারশ্য ব্রন্ধচর্য্যমিতি অশক্তো হাদেশারাত্রং বড্রাত্র ত্রিরাত্রমিতি।

### অথোপনস্ক্রনম্।

তত্ত্ব শুক্রান্তাদি-রহিতে শুদ্ধে কালে জন্ম-তৃতীয়-চতুর্থ-পঞ্চম-ষঠাইম-দশম-বাদশাতিরিক্তে গুরে রবে চ গোচরশুদ্ধে গর্ভমাসাবধ্যষ্টমে নবমে সপ্তমে দশমে একাদশে ত্রয়োদশে বা বর্ষে মাবাদিষট্কে বসস্তাদিখতৌ যথোক্তমাসে

<sup>(</sup>१) যেন ক্ষুরেণ ভ্রিশ্চন্দ্রমাং, কিন্তৃতঃ ? চরা অমণশীলঃ দিবং জ্যোক্তমর্নে সক্ষতঃ সমন্তবং। পশ্চাধি পশ্চাদধি স্থাঃ স্থের্য জ্যোক্তঃ স এব চন্দ্রমাঃ স্থের্য সক্ষতো ভ্তত্তেন ক্ষুরেণ তে তব বপামি ছাং ক্ষোরয়ামি। কল্মৈ ফলায়েত্যাহ— ব্রহ্মণা ব্রহ্মণে বেদলাভার্থং, জীবাতবে জীবনাপায়ার্থঞ্চ, জীবনায় চিরকাল-জীবনার্থং, স্ক্রোক্যায় শোভন্যশসে, স্বস্তরে কল্যাণার্থঞ্চ!

<sup>(</sup>৮) অত কুমারত বং ক্রেণ বথা বপতি বপামি এতত কুমারত বং ক্রেরং সমাপ্য পুনর্বারত্তরং ক্রং তাময়ামি। ততত্তেন পুনঃ পুনঃ কৌরেণাপ্যত কেশান্ ছিরি ছেনর। মা শিরঃ অত শিরভেননং মা কুরু। মা অত আয়ুং প্রমোশীঃ আয়ুংথগুনং মা অত কুরু। কিন্তৃতেন ক্রেণ ? মজ্জরতা শোধয়তা শিরো নিজন্বং কুর্বতা ইতি যাবৎ, তথা স্থপেশসা শোভনাবয়বেন। বপতীতিমধ্যমৈকবচত্ত্বানে প্রথমৈকবচনম্।

আপুর্যামাণপকে জ্যোতিঃশাস্ত্রোক্ততিথি-নক্ষত্র-বাবের ষ্ঠাষ্টমভিন্ন-চন্দ্রতারামু-कृत्न व्यनशामन्रहिङ्गित्नम् त्रुय-जूना-निःश्-धसूर्यीननात्रम् উপनम्रत्न कर्त्तत्रा প্রাত্রনিবর্ত্তিতনিত্যকৃত্যঃ পিতা দগণেশ-গোর্য্যাদি-মাতৃকা-পূজা-বস্থারা-বৃদ্ধি-শ্রাদানি বিধায় ব্রাহ্মণেভ্যো ভোক্যত্রয়মুৎসক্তেও। ওঁ অত্যেত্যাদি।অমুকগোত্রস্তা-भूकरन्तर्भर्यनः উপনয়নকর্মণি সমৃদ্ধার্থং ব্রাহ্মণেভ্যো ভোজ্যান্তহং সম্প্রদদে। ইতি দন্তা তান্ ভোজয়িত্ব৷ অছেত্যাদি-কুতৈতদ্ভোজ্যদানকৰ্মণঃ সাঙ্গতাৰ্থং দকিণামেতত্তাস্থলং যথাসস্তবগোত্ত-বেদ-শাথা-নামভ্যো সম্প্রদদে ইতি উৎস্কা দশকুমারাংশ্চ ভোজিরিবা বহিংশালায়াম্ অগ্নিতাপন-পর্যন্তাং কুশণ্ডিকাং কুর্য্যাৎ। তত্ত: পর্যুপ্তশিরদন্ অলঙ্কাড ভূক্তকীরালং কুমার-মাচার্য্যপুরুষা আচার্য্যদমীপমানগন্তি। আচার্য্য আনীতং কুমারং পশ্চাদয়েঃ স্বস্ত দক্ষিণতোহবস্থাপ্য ব্রহ্মচর্য্যমাগামিতি ত্রহি ইতি কুমারং প্রতিবদতি। কুমারঃ ওঁ ব্রহ্মচর্য্যমাগামিতি ত্রন্তাৎ। (১) পুনরাচার্য্য: ওঁ ব্রহ্মচার্য্যসানীতি ত্রহি ইতি কুমারং প্রতিক্রগাৎ। কুমারঃ ওঁ বন্ধচার্য্যদানি ইতি বদেৎ। (২) তত স্মাচার্য্যো मानवकः मानः वानः পরিধাপয়তি। ওঁ বেনেক্রায় বুহস্পতির্বাসঃ পর্যাদধাদমূতং তেন তা পরিদধাম্যায়ুষে দীর্ঘায়ুতার (দীর্ঘায়ুষ্টার) বলার বর্চ্চদে (৩) ইতি মস্ত্রেণ। • ততো গুরু: ওঁ ইয়ং ছুরুক্তং পরিবাধমানা বর্ণং পবিত্রং পুনতী ম অগাৎ। প্রাণা-পানাভ্যাং বলমাদধানা স্বদা দেবী স্মৃত্যা মেধলেয়ম্। (৪) ইতি মন্ত্রং পঠিতবতো

<sup>(</sup>১) হে আচাৰ্যা! অহং ব্ৰন্ধ্যাং বেদাধ্যয়নাৰ্থং ব্ৰহ্ম, আগাম আগত-বানস্মি।

<sup>(</sup>২) হে আচার্য্য। অহং ব্রন্ধচারী অসানি ভবামি।

<sup>(</sup>৩) বৃহস্পতির্দেবানামাচার্য্যো যেন বিধানেন ইক্রায় ইক্রং বাসঃ বক্ত্রং পর্য্যদধাৎ পরিধাপিতবান্। কিন্তৃতং বাসঃ ? অমৃতমহতদ্ তেন বিধানেন আ আং পরিদধামি পরিধাপরামি। কিমর্থম্ ? আয়ুষে জীবনায় দীর্ঘায়্ত্রায় চির-কালজীবিত্রার্থং বলায় সামর্থ্যায় বর্চনে তেজনে চ।

<sup>(</sup>৪) ইরং মেথলা আগাৎ আগতবতী। কিং কুর্বাণা ? মে মম ছফ্জ-মমুপনীতমিতি দোষং পরিবাধমানা পরি সর্বতোভাবেন খণ্ডরন্তী, অতএব

<sup>\*</sup> वक्षः পत्रियात्र वित्राहात्मः।

মাণবকস্ত কটিদেশে ত্রিরাবৃতাং প্রবরদংখ্যগ্রন্থিয় মেঞ্জীং মেথলাং প্রাদ্দিশনে বর্গীরাৎ। ততো গুরুর্গজ্ঞোপবীতমিত্যাদি মন্ত্রং পঠিতবতো মাণবকস্তর্গ দিকণং বাছম্দ্র্ত্য বামস্বন্ধে একং যজ্ঞোপবীতং নিবেশরতি। ওঁ যজ্ঞোপবীতং পরমং পবিত্রং বৃহস্পতের্যৎ (প্রজাপতের্যৎ) সহজং পুরস্তাৎ। আর্য্যমগ্র্যং প্রতিম্প শুলং যজ্ঞোপবীতং বলমস্ত তেজঃ। (৫) (যজ্ঞোপবীতমিদ ষজ্ঞস্তা যজ্ঞোপবীতেনোপনহামি ইতি অতিরিক্তঃ স্ত্রকারগ্রহঃপাঠঃ) ততন্ত্র্কীমৈণেরমুত্রবীয়নাচার্য্যো মাণবকং পরিধাপরতি ইত্যাহ ভাষ্যকারঃ। পশুপতি-স্ত্রকারৌ তু ওঁ মিত্রস্থা চক্র্যকণং বলীরত্তেজোয়শস্বী স্থ্বির্প্ত সমিদ্ধ্য। অনাহনস্থং বসনং জরিষ্ট্রপরীদং বাজ্যজিনং দধেহহম্ (৬) ইতি মন্ত্রেণ ইত্যাহতুঃ। \* ততন্ত্র্কীম্ আচার্য্যো দণ্ডং কুমারায় প্রযক্ষতি। কুমারশ্রুর্ বন্ধণে ব্রদ্ধবিদ্ধার্যাং। তমহং পুনরাদদ আযুষে বন্ধণে ব্রদ্ধবিদ্ধার্যাং। তমহং পুনরাদদ আযুষে বন্ধণে বন্ধবিদ্ধার্যিঃ প্রস্তি আভিন্তিস্ভির্মণ্ডিঃ। ওঁ আপো

দেবী স্বত্যাদিবিষয়া, কিঞ্চ পবিত্রম্ উৎক্রষ্টং বর্ণং বিজ্ঞজাতিং পুনতী পাব-য়ন্তী, ঈদৃশী ইয়ং মেধলা স্বসা অস্ত ইতি শেষঃ ভগিনীব নিত্যমভ্যুদহৈ-বিণী ভবতু। কিন্তৃতা ? প্রাণাপানাভ্যাং বলং সামর্থ্যমাদধানা প্রাণাপানয়ো-ব্লম্প্য়ন্তী তথা স্মৃত্যা অকর্কশা স্থ্যস্পর্শেতি যাবং।

<sup>(</sup>৫) হে মাণবক ! ষজ্ঞোপবীতং প্রতিমৃঞ্চ ধারয়। কিন্তৃত্ম ? সায়-যাম আয়ুর্দ্ধিহেতুম্ অগ্রাং শ্রেচং, শুলং নির্মাণং, পরমং, পবিত্রং, তথা পুরস্তাৎ পূর্বং প্রজাপতেঃ সহজং প্রজাপতিনা সহ একসময়ে জাতমিত্যর্থ:। কিমর্থমশু ধারণম্ ইত্যাহ বলং সামর্থ্যম্ স্বস্তু। তেজোহস্তু।

<sup>(</sup>७) অস্তার্থ: সামগোপনয়নে দ্রষ্টব্য: ।

<sup>(</sup>৭) মে মম বো দণ্ড: অধিভ্ন্যাং ভ্ষেকপরি পরাপতৎ পতিতঃ, কিছুতঃ ? বৈহারসং বিহারঃ আকাশং তত্তভ্তঃ অহং তং দণ্ডং পুনরাদদামি প্রাক্তনজন্মতহং বিজ আসন্ এবমন্মিলপি জন্মনি দণ্ডং গৃহামীত্যভিপ্রারঃ। কিমর্থন্? আয়ুষে জীবনার, ত্রন্ধণে বেদার্থং, ত্রন্ধবর্চসার ত্রন্ধতেজঃ-প্রাপ্তার্থন্।

কচিৎপাশুপতপুত্তকে গৃহভাষ্যে চ তুঞীং কৃষ্ণাজিনগ্রহণনিতি লিখিতন্।

হি ঠা মরো ভ্বতা ন.উর্জে দথাতন মহে রণায় চক্ষসে। (৮) ওঁ যো বঃ শিবতমো রসস্তম্ভ ভালয়তেহ নঃ। উপতীরিব মাতরঃ। (৯) ওঁ তথা অরঙ্গমাম বো যস্ত করার জিল্বথ আপো জনয়থা চ নঃ। (১০) ইতি। পশুপতিস্ত বারত্রয়ং তিস্থতি-র্থা ভিঃ প্রণমাহ। ততো গুরুমাণবকং প্রেষয়তি ওঁ স্থাম্নীক্ষতেতি। মাণবকণ প্রেষিতস্তচক্রিত্যাদিমন্ত্রেণ স্থাম্ অঞ্জনিং দরা উর্দ্ধবাহং উদীক্ষেত। ওঁ তচ্চক্দে বিভিণ্ণ প্রতাচ্ছুক্রম্চরেও। পশ্তেম শরদং শতং জীবেম শরদং শতং শ্রতাদ্ম শরদং শতং কর্ম শরদং শতং ভ্রশ্চ শরদং শতং ও প্রবাম শরদং শতং কর্ম শরদং শতং হতং নীয়া হৃদয়মালভতে অনেন মন্ত্রেণ—ওঁ মম ব্রতে তে হৃদয়ং দধামি মম তিত্তমন্থতিত তে অস্ত মম বাচমেকমন। জ্বত্ব বৃহস্পতিষ্টা নিয়নক্ত্ মহুম্। (১১) অথাচার্য্যো মাণবকন্ত দক্ষিণং হতং পাজুষ্ঠং স্বদক্ষিণহত্বন গৃহীত্বা পৃচ্ছতি—ওঁ

<sup>(</sup>৮) হে আপং! হি ষমাৎ যুধং ময়ং মৃথং তস্ত তুবং ভাবয়িত্রা: স্থ ভবথ, মৃথদায়িত্যো,ভবথেত্যর্থ:। তাং তাদৃশ্যো যুধং নো অমান্ উর্জ্জে অয়ায় দধাতন স্থাপয়ত। কিঞ্চ মহে মহতে রণায় রমণীয়ায় চক্ষদে দর্শনায়। হে আপং! ষমাৎ যুধং মৃথং প্রাপয়থ তমাৎ কারণাৎ অমান্ ঐহিকেনা-নেনামৃমিকেণ চ মহারমণীয়দর্শনেন পরব্রসাণা সংযোজয়ত ইতি ভাবং।

<sup>(</sup>৯) হে আপং! বো যুমাকং যো রসং নির্যাসং, কীদৃশং? শিবতমঃ
অত্যন্তক গ্রাণিরপং, ততা রসতা ইং নং অস্মান্ ভাজরত ভাগিনং কুকত।
কিন্তৃতা যুরং আপং? উশতীং ইচ্ছন্ত্যো মাতর ইব। অসমর্থং—হে আপং!
যথা সম্মেহা মাতরং পুলান্ কল্যাণাযুক্তান্ কুর্কন্তি, তথা যুয়মিপি কল্যাণাঅক-যুম্নীয়রসেন অস্মান্ সম্বনান্ কুক্তেতি অস্পু প্রার্থনা।

<sup>(&</sup>gt;•) হে আপং ! বো যুমাকং তব্মৈ তত্ম রসতা। অরং আলং প্র্যাপ্তং বৈত্ঞ্যং সমাম গচ্ছেম। কিঞ্ তবৈরে রসবিষয়ে নং অম্মান্ যুয়ং জনয়থা চ তদ্রসভোক্ত্যে নং আমান্ যুয়ং পরিকল্লয়তেত্যর্থং। কতা ? যতা রসত্ত ক্লার ক্লমতা স্থানতা একদেশেন জিল্প প্রীণয়থ। ব্লাদিস্তম্পর্যান্তঃ জ্লাৎ।

<sup>(</sup>১১) হে মাণবক ! তে তব হাদরং মম ব্রতে দধামি তব হাদরং মদেক-ব্রতং সম্পাদরামি। কিন্তং মদেকব্রতমিত্যাকাজ্ঞারামাহ—তে তব চিত্তং

বলনীপূর্বপর্যাল্কঃ পাঠঃ পশুপতিসম্বতঃ, প্রবামে জাদি অতিরিক্তঃ পাঠো ব্রহ্মসংকারকল্পরীয়তঃ।

কো নামাদি ইতি । পৃষ্টঃ কুমার: খ্রীঅমুকদেবশর্মা২হং ভো: ইতি প্রাহ । ততো গুরুম াণবকং পূচ্ছতি—ও কস্য বন্ধচার্য্যসীতি। ভবত ইতি কুমারেণোক্তো গুরু: পঠতি—ওঁ ইন্দ্রদ্য বন্দচার্য্যস্যগ্নিরাচার্য্যন্তবাহমাচার্যান্তবাসে (১২) ইতি পঠেৎ। অসৌ ইতি সর্বানমন্থানে অমুকদেবশর্মারিতি সম্বোধনান্তং কুমারনাম গ্রহী-তবাম ৷ তত আচার্য্য এনং কুমারং ভতেভাঃ পরিদদাতি —ওঁ প্রশাপত্রে বা পরিদদামি দেবার আ সবিত্রে পরিদদামান্তান্তৌষধিভাঃ পরিদদামি ছাবা-পৃথিবীভ্যাং তা পরিদদামি বিখেভাত্বা দেবেভাঃ পরিদদামি সর্বেজাত্বা ভতেন্তঃ পরিদদামারিষ্টো (১৩) ইতি। ততো মাণবকোহরিং প্রদিক্ষণীকুত্যা-চার্যান্তোত্তরত উপবিশতি। তত আচার্য্যো ব্রন্ধোপবেশনাদিপযুক্তশান্তাং কুশণ্ডিকাং সমাপ্যাজ্যেন আঘারাজ্যভাগে ছবা সমুদ্রবনামাগ্নিং সংস্থাপ্যাজ্যেন মহাব্যাহত্যাদিখিষ্টকুদন্তাশতুর্দশাহতীহ বা (অথে বং সমুদ্ভবনামাসীতি নাম কুছা সম্পূজ্য ইতি ব্লুসংস্থারমঞ্জীমতম্) ত্তশেষং প্রাশ্ত পূর্ণপাত্রং বরং বা ব্রহ্মদক্ষিণাং দত্তা গুরুমাণবকং শিক্ষয়তি—ও ব্রহ্মচার্য্যসীতি, ভবামীতি ( অসানীতি ) মাণ্বকেনোক্তো গুরুঃ আপোহশান ইতি বদতি। অশ্লানি ইতি মাণবকঃ, কর্ম কুরু ইতি গুরুঃ, করবাণীতি মাণবকঃ,( কস্যচিন্মতে ওঁ আপো-২শানং কর্ম কুরু ইতি গুরুঃ, ওঁ করবাণীতি মাণবকঃ) মা দিবা স্বাঞ্চীঃ ইত্যাচার্য্যঃ. ন স্বপানি ইতি ব্ৰহ্মচারী, বাচং ৰচ্ছেত্যাচার্য্য:, ৰচ্ছানীতি ব্ৰহ্মচারী, সমিধ্যা-ধেহীতি আচার্যা:, আদধানীতি বন্ধচারী, পুনও ক: ইতি বদেৎ, মাণবকঃ ওঁ অশানীতি ক্রয়াৎ। ততো গুরুরগ্রেরুত্তরে প্রাল্মুখ

মম চিত্তমন্থ অনুকৃলমন্ত, অমেকমনাঃ একচিত্তঃ সন্মম বাচং জুবস্ব সেবস্ব,
বৃহস্পতিদে বাচাৰ্য্যন্ত। আং মঞ্ছ নিযুনজ্ব নিৰোজন্ত ।

<sup>(</sup>১২) হে মাণবক! ইক্সত ত্রৈলোক্যনাথস্ত বন্ধচারী অসি ভবসি। তব অগ্নি: আচার্যাঃ গুরুরগ্নিদি জাতীনামিতি শ্রুতেঃ। ইদানীস্ত এতত্প-নয়নকর্ত্ত্বোহং তবাচার্যাঃ।

<sup>(</sup>১০) হে মাণবক। প্রজাপতরে তা তাং পরিদদানি সমর্পরামি। কিঞ্ সবিত্রে স্থ্যার পরিদদামীতি সর্বান্ত বোজাস্। কীদৃশার ? দেবার দেবনাদি-গুণযুক্তার। এবং অন্তঃ জলেভ্যঃ ওববীভ্যঃ ব্রীক্সাদিভ্যঃ স্থাবাপৃথিবীভ্যাং আকাশভ্নিভ্যাং বিশ্বেভ্যা দেবেভ্যঃ সর্ব্বেভ্যা ভূতেভ্যঃ রাক্ষসাদিভ্যন্তাং পরিদদানীতি। কিমর্বং সমর্পনস্ ? জরিট্যে রিষ্টিক্সংপাভন্তত্বদশ্যনার।

উপবিষ্টা প্রতালুধার শিব্যার গুরুম্ধা সমীক্ষমাণার স্বরম্প্যাচার্ব্যেণ সমীক্ষি-ভার দক্ষিণহত্তেন গুরোদ ক্ষিণং পাদং বামহস্তেন বামপাদং সৃহীত্বা উপ-সরায় গায়ত্রীং দভাৎ। যথা—প্রথমং ( গায়ত্র্যা বিশ্বামিত্রশ্ববিগায়ত্রীজনঃ স্বিতা দেবতা সাম্মন্নিহোত্রহোমানস্তরং পার্ছপত্যাগ্ন্যপ্রাপনে [ আহ-ৰনীয়াগ্যুপস্থাপনে ] বিনিয়োগ:। ইতি ত্রন্মচারিণে ত্রান্মণায়। পায়ত্রা বৃহস্পতিশ্বিশ্বিষ্ট্প্ছন্দঃ দবিতা দেবতা বাজপেয়ে আজ্যহোমে বিনি-রোগ:। ইতি ক্ষত্রিয়ায়। পায়ত্র্যা প্রজাপতিঋষিজ গতীচ্ছন্দ: সবিভা দেবতা রুক্সপাশপ্রতিমোচনে উথাসংস্তরণে বিনিয়োগ:। ইতি বৈশ্রার শ্রাবিয়িত্বা) ওঁকারব্যাহৃতিপূর্বকং প্রথমং পাদং ওঁ তৎসবিভূব রেণ্যং প্রথমং পাঠরেৎ। (পুনর্গায়ত্র্যা বিখামিত্রগারিত্যনম্ভরং দ্বিতীয়ং পাদুং **শবিচ্ছ**েলাদেবতাবিনিয়োগখবণানম্ভর্য্যং সর্বাত্ত। ভর্মো দেবস্ত ধীমহীতান্তম্, তদনন্তরং তৃতীয়ং পাদং ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ ইত্যন্তং বিভীয়বারে প্রথমং ধীমহীত্যস্তং ততঃ প্রচোদয়াদিত্যস্তং ভৃতীয়বারে সমগ্রাং সাবিত্রীং বন্ধচারিণা সহৈব পঠেৎ। ততো মাণবকোংগ্লিং পর্যুক্ষ্য সমিদাধানং কুর্য্যাৎ। যথা—প্রাদেশপ্রমিতাভিত্ব তাক্তাভি: কাষ্ঠিকাভি: ওঁ অংগ্রে সুত্রবং স্ত্রবদং মা কুরু। ১। বথা স্বমগ্রে সুত্রবং স্মাৰা অসি। ২। এবমগ্নে স্মাৰঃ স্মাৰ্কা মা কুক। \* ৩। বৰা ত্মগ্নে দেবানাং ষজ্ঞ নিধিপা অসি। ৪। এবমহং মহুষ্যাণাং বেদশু নিধিপো ভূরা-সম্। ৫। (১৪) ইত্যেতি: পঞ্চিম স্ত্রৈ: প্রতিশ্বচং ইন্ধনাধানৈরগ্নিং জ্বালয়তি। কেচিত্র মা কুরু ইত্যস্তমেকং অপ্রবসংমা কুরু ইত্যপরং ভূয়াসমিতাস্তং

<sup>(&</sup>gt;8) (र षर्ध! षः किष्ठः ? स्र्यंतः শোভনः व्यतः नाम बच्चार्त्र) मा माः स्र्यंतमः क्र्न स्र्र्घं व्यतः कर्शिव्यमण छः दिनाधात्रत्न मामितिकर्निव्यतः क्र्विछार्थः। (र षर्ध! स्र्यंतः! षः वर्धा स्र्यंता षिति स्र्यंतरात्री स्र्यंताः भाष्टितमः क्र्न, स्र्यंत वनित जतः जथा (र षर्धा, स्र्यंतः मा माः मोयंतमः क्र्न, स्र्यंत वनित लाजन-यंतनः क्रिनिज्ञाननानिनः क्र्न। (र षर्ध! षः वर्धा मिताः वक्षण निर्धिणो षित हेन्द्यानीनाः वक्षण वक्षमस्रातः निर्धिणा विविद्यक्षकः जतम्हः मक्ष्यानाः दिवन्ण निर्धिणा दिन्छानीदिका खरामीछार्थः।

<sup>\*</sup> এবং मार युख्यः जीखनमः कूत्र देखि मृक्युवनार्धः।

छ्ठोत्रमाहः। छठः श्रविक्षिमीमानां क्रिक्छ क्रिक्ष्य क्रिक्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रिक्ष्य क्रि

<sup>(&</sup>gt;৫) হে অয়ে! সমিধমাহার্বম্ আয়তবানিয়। কলৈ ? জাতবেদসে অয়য়ে তুতামেবেতার্থ:। কিন্তৃতার ? বৃহতে জাজলামানার, হে অয়ে! বং ষথা সমিধা সমিধাকে ময়া আয়তয়া জনয়া সমিধা জলসি এবমহং সমিকে সপ্রকাশো ভবামি। কৈ: ? আয়্বা জাবনেন,মেধয়া বৃদ্ধা, বর্চমা ডেজসা,প্রজয়া সস্তানেন, পশুভির্গবাদিভি:, ব্রহ্মবর্চমেন ব্রহ্মতেজসা। কিঞ্চ মম আচার্যা: জীবপুরো মেধাবী চ অস্ত, অহম্ অনিরাকরিফু: অসানি ভবানি, অয়মাধায় য়াগভাকরণং নিরাকরণং তৎকারী নিরাকরিফু: ন তথা জনিরাকরিফু: নিতাং বাগকারী ভবামীতার্থ:। অপি চাহম্ আয়্মান্ যশবী তেজবী বেলাধায়নর্জিমান্ অয়াদঃ ভ্রাসং কলাচিদপি মমায়াদিচ্ছেদো মা ভবজিতার্থ:।

<sup>(</sup>১৬) হে অগ্নে! তন্পা অসি তন্ং শরীরং তক্তাং পাতা রক্ষকো ভবসি,
অতা মে মম তন্বং তন্থং পাহি রক্ষ। হে অগ্নে! আয়ুর্দা অসি আয়ুর্বো দাতা
ভবসি, অত আয়ুর্দো দেহি। হে অগ্নে! বর্চোদা তেজসো দাতা ভবসি,
অতা বর্চো মে দেহি। মম তথাং শরীরক্ত বদ্নং অসম্পূর্ণং তন্মে আপুণ
আপুরর। মে মম মেধাং বৃদ্ধিং সবিতা দেব আদধাতু অর্পরত্ন। তথা
সরস্বাতী দেবী মেধাং মে আদধাতু ইত্যন্তরং। অখিনো দেবে অধিনীকুমারৌ মম মেধামাধতাম্। কিন্তুতো পুক্রপ্রক্রো পদ্মালাধ্রৌ।
সবিত্রাদ্রো দেবা মেধাং মে জনমন্ত ইতি আশংসাবাক্যার্থং।

অনেন মত্রেণ—ওঁ অলানি চম আপ্যায়ন্তাম। (১৭) ওঁ বাক্চম আপ্যায়-ভাম্। ইতি মুধম্। ওঁ প্রোণশ্চ ম আপ্যায়ভামিতি নাসিকে যুগপৎ। ওঁ চক্ষ্ক ম আপ্যায়ভামিতি যুগপচকৃষী। ওঁ শ্রোতঞ্চ ম আপ্যায়ভামিতি ক্রমেণ মন্ত্রা-বৃত্তিপূর্বকং দক্ষিণবামকণোঁ। ও ষশোবলঞ্চ ম আপ্যায়তামিতি পাঠমাত্রম্। ততঃ শিষ্টাচারাদনামিকয়া ভন্ম গৃহীত্বা নলাটে ওঁ কশুপশু ত্যায়ুষং, প্রীবারাং ওঁ জমদগ্রেস্ত্রায়্বং, দক্ষিণাংসে ওঁ বদ্দেবেষু ত্র্যায়ুষং, তথৈব বামাংসে। ওঁ যদ্দেবানাং ত্যায়ুষমিতি কাথশাখীয়ানাং পাঠঃ, ক্লদি ওঁ তল্লে অস্ত ( তলেহস্ত ) ত্যাযুষমিতি দলাতি। ( অতাহক্তমপি স্বত্যস্তরোক্তমভিবাদনং ব্ৰহ্মচারী কুর্যাাৎ। ওঁ অমুকগোত্রোহমুকপ্রবরোহমুকদেবশর্বাহং ভো অমুকদেব-শর্মন্ তামভিবাদয়ে ইত্যকা দক্ষিণবামচরণো দক্ষবামপাণিভ্যাং গুরোঃ ততো গুরুরায়্মান্ ভব সৌম্যামুকদেবশর্মন্ভো ইতি প্রভান্তঃ বদেৎ।) ততো ভিক্ষাচরণম্। তদ্ধথা—ভবতি ভিক্ষাং দেহীতি ব্রাহ্মণঃ। ভিক্ষাং ভবতি দেহীতি রাজন্তঃ। ভিক্ষাং দেহি ভৰতীতি বৈশ্য:। প্রথমং মাতরং ভগিনীং মাতৃত্বদারং অক্তাং বা কামপি বড়বা ঘাদশ বা প্রিয়ো ভিক্ষেত। ততো গুরবে নিবেদয়েৎ—ইয়ং ভিকা ময়া লব্লেতি। ভিক্ষাস্তরং বাচেত। অথ গুরুণা তবৈতদেব ভোজনায় ইত্যভিহিতো ষীকুর্য্যাৎ। ততো গুরু: শাস্ত্রাদকং ক্লবা শিব্যমভিষি-চ্যাচ্ছি जावधादनः कूर्याए। ততে। उन्नहादी सोनी (अवनाम्यूक्टाइन्। বিনা সমিধমান্তত্য) অহংশেষং নীমা সন্ধ্যামুপাক্ত পূর্ববভ্রায়ুৰকরণাক্তং निमिनांशानः कूर्यार। चनः भत्रमानमार्यस्तम् व्यथः महीर व्यक्तात्रनरनानी ष्ट्रधात्रौ नायः श्राजः भर्कक्ष्मभूर्यकः ब्रायूयकत्रभाष्टः निमाधानकात्रौ छन्न-ভুজ্বাপর: ভিকাচারী মধুমাংসাদন-নভাভবপাহন-থট্বাভারোহণচেলাসনো-भटवननद्वीमधावद्यानान्छভावनानखनानानीनि वर्ष्क्रदश् । मःस्वातानाः **घट**नाक्र-कानाजिक्टम अनामिष्टे थात्र कि उटामः कार्याः। वर्था-जृतः स्रादेशली कि-কাগ্নিং সংস্থাপ্য স্থান্যামাজ্যং তৃঞ্জীং নিরূপ্যাগ্নাবধিপ্রিত্য ক্রবং দর্ভৈ: সন্মার্জ্জ্যা-জাম্বাক্ত কুশতকণাভ্যাম্ৎপুরাজ্যং ক্রবেণাদার উপরি সমিধং নিধার উত্থার

<sup>(</sup>১৭) যে মনান্সানি শরীরাবয়বা আপ্যায়স্তাং ফীডানি ভবস্ক, ন কেবলমেবং ভবড় এতদপি ভবস্থিতি বাক্যার্থ:।

কবং সব্যে পাণো কথা দক্ষিণেনায়ে তির্গুন সমিবমাধার উপবিশ্ব দক্ষিণং কাষাচা ওঁ ভৃঃ স্বাহেতি ক্রবন্ধিতাজোনৈকাছতিং হ্যা তথৈব জিলঃ ওঁ ভৃবঃ স্বাহা ওঁ সং স্বাহা ওঁ ভৃত্বংসং স্বাহা ইতি হ্যা ওঁ ব্রো অগ্নে ইভ্যাদিভিঃ প্রোক্তাভিঃ পঞ্চিশ্বর্গ ভিঃ \* পঞ্চাহতীক্র্হোতি। ইত্যনাদিইপ্রায়শ্চিত্তম্। ইভ্যাপনরনম্।

<sup>\*</sup> ১৬১৭ পৃঠান্থা: তন্ন ইত্যাদন্ত: পঞ্চৰচো এট্টৰাা: ; অত্ৰ তাসাং ব্যাখ্যা: :---

<sup>(</sup>क) হে অয়ে! তং বরুণস্ত দেবস্ত হেলং ক্রোধং অমিন্ কর্মনি বৈগুণাঞ্জনিতং অব্যাসিসীষ্ঠাং অপনর। কিন্তৃত্তং? নে। অমান্ বিদান্ অমেব অমাকং কর্মসাক্ষী। ন কেবলং বরুণস্ত ক্রোধ্যপনর, অমং অমাতঃ বিশ্বা সর্মানি বেষাংসি দৌর্ভাগ্যানি তথা যঞ্জিষ্ঠাং যষ্ট্তমং, বহ্নিতমং হবিষাং বোচ্তুমং, শোশুচানাং দেদীপামানাং। প্রমুম্ধি মুঞ্চ। হেল হেড্ অনাদরে। দিতীয়ায়াং প্রথমৈকবচনম্।

<sup>(</sup>থ) হে অংগ! স অং নো অসাকং অবমো পালমিত্তমো নেদিষ্ঠং নিত্যং পাবকজেন সমিহিত্ত তব। স কঃ ? বল্বমূতী উত্যা অবনেন। কমিন সমরে অবমঃ ? অস্তা উবসঃ প্রভাতস্ত বুটো সমাপ্তো অস্মিরের দিবসে কেবলমেবং নঃ অসান্ প্রতি এধি আগচ্ছ। কিন্তুতলং ? সুহবঃ সুথাহ্বানঃ, আগত্য বরুণং অ্বফ্রু পূজ্র। কিং কুর্মন ? নো অসাকং মূড়ীকং মূলীকং ররাণঃ অসংস্বৃদ্ধর স্থকরং হবিদ্ধানঃ অয়ঞ্চ বীহি এতদেব ভক্ষর। অয়মর্থঃ —হে অয়ে! বতলং লোকস্ত পালনেন নিত্যং সমিহিতঃ স অমত্যৈব অস্মাকং পালকো ভব, অস্থান প্রত্যাগচ্ছ আগত্য চ মন্দ্রীরহবিদ্ধিনে বরুণং পূজ্র স্বয়মণি ভক্ষর।

<sup>(</sup>গ) হে অয়ে! অমৃ অয়াক প্রাণিনাং শুভাবহবিধির্সি, অপরম্ অনভিশন্তিপাক অবিজ্ঞান। অভিশন্তির্গাচ্ঞা ষক্ত সঃ তং পাসীতি অনভিশন্তিপাঃ। অয়মর্থঃ—ষক্তাং রক্ষণার্থং ন ষাচতে, তদ্যাপি অং মাহান্ত্যাৎ রক্ষকো ভবসি, এবস্তু তবং অয়া আগছ, আগত্য নো অম্বাকং ষক্তং বহ, যদ্ধবিবেতচ্ছৃতং তদ্দেবান্ প্রাপর। কিঞ্চ অং সত্যমি সত্যমেব অয়া অসি আতাসি জগতো নিস্তারকোপায়ং জানাসি, অতোহপি কারণাৎ অমৃ অয়া আগছ, আগত্য নো অম্বাকং ভেষজং ধেহি, নিস্তারকোপায়তেষজং পরিক্রয়। সত্যমি ইশকোহব্যয়ম্ অবধারণার্থঃ। অয়ঃশবং দান্তঃ
শত্তবাচকোহণান্ত। অয়া অয়া ইতি ক্রিয়াবয়মত্যন্তার্থকোতনার্থম্।

#### তাথ বেলারন্তঃ

ভত্ত প্ণোহহনি কৃতনিত্যক্রিয়ো গুরু: সগণেশ-মাতৃকাপুজা-বস্থারাপুনিশ্রানানি বিধার স্বগৃহ্যোক্তবিধিনা (লোকিক) হিয়: দংস্থাপ্য ব্রুক্টারিণমাহ্রায়্রে: পশ্চাৎ সম্প্রেব্রুক্ত উপবেশ্র ব্রুক্তাপবেশনাদি-আঘারাজ্যভাগা স্তঃ কৃত্রা
ব্রুক্তব্যাগাং বিধার জাতবেদোনামায়িং সংস্থাপ্য জাতবেদসে অর্মে
নম ইতি সম্পুজা (পশুপতিমতে সম্প্রনামায়িং সংস্থাপ্য ততো ব্রুক্তবাহ্রা
রস্কত্যাগাং কুর্যাৎ) অন্তর্মীক্রার স্বাহা ও বার্মবে স্বাহা ইতি ছে আহতী হ্রা
ও ব্রুক্তবাহা ইদং ব্রুক্তবা ও ছন্দোভ্যঃ স্বাহা ইদং ছন্দোভ্যঃ । ও প্রজাপতয়ে
স্বাহা ইদং প্রজাপতয়ে । ও দেবেভ্যঃ স্বাহা ইদং দেবেভ্যঃ । ও প্রবিভ্যঃ স্বাহা
ইদ্য প্রবিভ্যঃ । ও প্রনারে স্বাহা ইদং প্রকারে । ও মেধারে স্বাহা ইদং মেধারে ।
ও সদসম্পতয়ে স্বাহা ইদং সদসম্পতয়ে । ও অনুমতয়ে স্বাহা ইদমনুমতয়ে ।
নবাহতীজুহিয়াৎ । যদি প্রগ্রেদং স্বারভ্যতে তদা ও পৃথিবৈ স্বাহা ও স্বায়ে
স্বাহা ইতি ছে আহতী হ্রা ব্রুক্তবি ছলোভ্য ইত্যাদি নবাহতীছ্রা শেষং
স্বাপ্রের্থ । যদি সামবেদং তদা আজ্যভাগানস্তরং ও দিবে স্বাহা ও স্ব্যায়
স্বাহা । ও ব্রুণে স্বাহ্ত্যাদি নবাহতীজুহিয়াৎ । যদি অথ্পর্বনেন্তদাজ্যভাগাস্তং

<sup>(</sup>ম) হে বক্ষণ! তব শতং পাশা বিততা বিত্তীৰ্ণা: অপি চ যে সহস্ৰা: সহস্ৰসংখ্যা: যজিলা: যজান্ত চানজনিতা: মহান্ত: সর্ক্রোক্রাপকা: তেতি: তৈ: পাশৈ: ন: অমান্ অভ ইদানা: সবিতা উত বিষ্ণু: বিখেদেবা মক্ত: বাগ্য: মুঠ্ অর্কা: আদিত্যা: মুঞ্জ মুক্তান্ কুর্বস্ক । অন্নং বাক্যার্থ:—
অমিন্ কর্মণি প্রমাদাদিক্তানি পাপানি তৃ:থহেতুত্ত গুণযোগাৎ পাশশলাভি-ধেয়ানি তৈ: পাপৈ: সবিত্রাদ্রো দেবা: অন্যা আহত্যা তোষিতা অমান্
মুক্তান্ কুর্বস্ক । তেভিরিতি বহুলং ছন্দ্সীতি প্রসাদেশনিষেধ:।

<sup>(</sup>৪) হে বরুণ! উত্তমং পাশং অব্দেহ অব্দ্রঃ উৎশ্লথা উৎশ্লথয় উৎ উর্দ্ধং ক্রাগং করা নয়। অনমং পাশং অব্দ্রথয় অব নীচং শ্লথয়। পূর্ববিত্তদেবং মন্যম্ত্রমান্ধরয়েরয়ন্বিশ্রথয় অহান এব বিশেষণ শ্রথয়। অথৈবং সতি হে আদিত্য অদিতেঃ পূত্র! বরুণ! তব ব্রতে কর্মণি বর্ত্তমানা বয়ম্ অনাগসঃ অনপরাধাঃ সন্তঃ অদিতয়ে অদীনতারৈ স্যাম অদীনা ভবেম ইতি। অয়মর্থঃ—বরুণে উত্তমাধ্যমধ্যমপাশত্রয়শ্লীকরণমভ্যর্থ্য বারুণব্রতাচরণেনাদীনা ভবেম ইত্যাশংসা।

কৃষা ওঁ দিগ্ভাঃ স্বাহা ওঁ চক্রমসে স্বাহা। শেষং প্রাগ্বং। নবাহতীহ স্বা বন্ধণোহৰারকো নহাব্যাহত্যাদি-স্বিষ্টিকুদন্তা দশাহতীহ'বা (বহিহোমং সমাপ্য ইতি পশুপতিমতে) দংশ্রবং প্রাখ্যাচম্য ব্রহ্মণে পূর্ণপাত্র-বরয়োরক্সতরং দক্ষিণাং দত্তা অন্সচারিণং বেদমব্যাপয়েৎ। বথা—গুরুরগ্রেরুত্তরতঃ প্রাত্মুখ উপবিষ্টঃ প্রত্যমুখার দক্ষবামকরা ভাগে গুরোদ কিল-বামপানো গৃহীতা গুরুমুখং সমীক-শাণ<sup>্য ওঁ</sup>কারমহাব্যাহৃতিপূর্ব্বিকাং গায়ন্ত্রীং মাণ্**বকেন সার্দ্ধং পঠিবা। ওঁ ই**বে ষোর্জেকা বায়বঃ স্থ। দেবো বঃ দবিতা প্রার্পয়তু। প্রেষ্ঠতমায় কর্মণে (ইতি बक्दर्सनानिमञ्जः) এवः क्राप्तन उँ चित्रमीतन भूत्राहिङः। वख्रच्य तनवमूषिकः। হোতঃবং রত্মণাতমম্। (ইতি দামবেদানি:)। ওঁ অগ্ন আয়াহি বীতরে। গুণানে। হ্ব্যদাতয়ে। নিহোতা সংদি বর্হিষ। (ইতি ঋগ্বেদাদিঃ)। 🤨 শলো দেবীরভিষ্ট্রে। জ্বাপো ভবস্ত পীতরে। শং যোরভিস্রবস্তু নঃ। :( ইতি অথর্কবেদাদি।) ইমান মন্ত্রান পাঠয়েৎ প্রথমং পাদাবচ্ছেদেন। বিতীয়ে আৰ্দ্ধাবচ্ছেদেন। তৃতীয়ে সহৈব সৰ্বাম ঋচং পঠন মাণবকং পাঠয়েও। ( ততঃ প্রণবমুক্রার্য্য ভূমিং স্পৃষ্টা বিরমেদিতি পশুপতিঃ ) ততঃ শাস্কাদকং কুৰা শিক্ষমভিষিত্যাশীৰ্মাদং বিধায়াচিছদ্ৰাবধারণং কুৰা অনধ্যায়বৰ্জ্জং শিশুং ্পাঠয়েৎ। ইতি বেদারস্তঃ।

### অথ সমাবর্তনম্

তত্র মাণবকো বেদং বেদে বেদান্ বা সমাপ্য গুরবে দক্ষিণাং দরা আচার্যাহং স্লাস্ফে ইতায়্মতিং গৃহীয়াং। গুরুং স্লাহীত্যস্কাং দরা বহিঃ—
শালাবাং ক্বতনিতাক্তাঃ সগণেশ-গোর্যাদি-মাতৃকাপ্লা-ৰস্থারা-বৃদ্ধিশাদ্ধানি
বিধার স্বগৃহ্যোক্তবিধিনাহ(লোকিক)য়িং স্থাপয়েং। ততো দ্রব্যাসাদনে অয়ং
বিশেষঃ। শুচিজলপূর্ণাশ্চ্ তপল্লবাস্তাঃ সকুশা অষ্টে কলসাঃ উত্মুম্বর্দাদশাস্কুলদস্ত-কাঠন্ অন্তলেপনার্থং পিইতিলপিগুং স্থানি দ্রব্যং পরিধেয়োজরীয়ং বাসোমুক্মম্উদ্ধীয়ং বজ্ঞোপবীত্বরং পরিধেয়পুলাং সৌবর্ণকুগুলদ্বয়ম্ অঞ্জনং দর্পণং ছত্তং
পাতৃকাগ্র্যাং বৈণবো দগুঃ, কুশাঃ দবি নাপিতশ্রেতি। ততো ব্রন্ধোপবেশনাদি
আজ্যভাগান্তং কর্মা নির্বর্তা ব্রন্ধনাহরারস্তত্যাগং বিধায় বেদারস্তবং
স্বেদাদিক্রমেণ বেদাহতীজুভ্রাং। ততো ব্রন্ধনোমানীতি নাম কৃত্যা গদ্ধাদিভিত্নভার্চ্চ্য সংস্রবং প্রাস্থাচম্য ব্রন্ধণে দক্ষিণাং পূর্ণপাত্ত-বর্রমোরস্কৃতরং দন্তাং।

অধ ব্রদ্ধারী উপসংগ্রহণপূর্বকং গুরুং নমস্কৃত্য পূর্ববং সমিদাধানাদি-অ্যায়্ব-করণান্তম্বির্গ্রে সমিদাধানং কুর্যাৎ। ততোহগ্রেক্তরে আচার্যপুক্ষ-ভাগিত্যনাং দক্ষিণোন্তরায়তানামন্তানাং জলপূর্বকলদানাং পূর্বভাগে আন্তত্ত্ব প্রাগগ্রেষ্ কুশেষ্ উদঅ্যো মাণবকং স্থিয়া ওঁ বেহপদ্পর্যয়ঃ প্রবিষ্টা গোহ্ম উপ-গোহ্মে। ময়ুথো মনোহা খলো বিক্রম্তন্দ্বিরিক্রিয়হা তান্ বিজহামি (অতিতান্ ফ্রামি ইতি পাঠান্তরম্) বো রোচনন্তমিহ গৃহামি। (১) ইতি মন্ত্রেণ দক্ষিণক্রমেণ প্রথমকলদাং দক্ষিণহন্তচ্পুকেন জলমাদায়ানেন মন্ত্রেণাআনমভিষিঞ্চতি—ওঁ তেন মামভিষিঞ্চামি প্রিরে বশদে ব্রন্ধণে ব্রন্ধবর্চদায়। (২) ততো বিতীয়াদিজলক্ত্রেভাঃ—ওঁ বেহপদ্পর্যয়ঃ ইত্যাদিমন্ত্রেণ একৈক স্মাজ্জলমাদায় ওঁ যেন প্রিয়মকণ্তাং যেনাবমুশতাং সুরাম্। যেনাক্যাবভাষিঞ্চাং যহাং তদন্বিনা ষশঃ। (৩) ইতি বিতীয়কলদজলেনাভিষেচনম্। ওঁ আপো হি দ্বা বয়ে প্রন্তান উর্জ্জে দ্বাতন মহে রণায় চক্ষদে ইতি তৃতীয়কলদজলেন। ওঁ যো বঃ শিবভ্রমা ব্রম্মন্ত ভাজয়তে হ নঃ। উশতীরিব মাতরঃ। ইতি চতুর্থকলদজলেন। ওঁ তথা

<sup>(:)</sup> অপ্সূজনের অন্তর্ম বৈষ্টার প্রবিষ্টান্তান্ বিজহামি তাজামি। তে কে? গোহা উপগোহা ময়ুখা মনোহা খলো বিজ্ঞা তন্দ্যিঃ ইন্দ্রিহা ইত্যগ্রে অগ্নিনামানি। ইহ জলে যোহগ্নিং রোচনামা কল্যাণনামা তং গৃহামি। স্নানার্থং জলে গৃহমাণে জলে অগ্নান্তিষ্ঠিন্তি তেরু মধ্যে গোহাদয়ো দোষাবহান্তান্ বিহার কল্যাণপ্রকাশকাগ্নিসহিতং জলং গৃহামীতি বাক্যার্থং।

<sup>(</sup>২) খ্রিমৈ লক্ষালাভায় যশসে যশোলাভায় ব্রদণে ব্রদ্ধকসায় ব্রাক্ষ-তেজোলাভায় চাহং মাম্ আত্মানং তেন জলেন অভিবিকামি।

<sup>(</sup>৩) কেন? বেন জলেন হে অবিনা! অবিনো! ভবজো প্রিরং লক্ষাং অকৃণ্ডাং কৃতবজৌ। তথা বেন স্থবাং অরাজনিতং দোষমবমূশতাং মার্জিতবজৌ। তথা বেনাক্ষ্যো অক্ষিণী অভ্যবিঞ্চতাম্ অভিবিক্তবজৌ। তথা বাং যুবরোঃ বজ্জলং বশো বশোহেতৃকং ভজ্জলং মমাস্ত ইত্যধ্যাহার্য্যম্। বেন জলেন অবিনীকুমাররোল ক্ষীর্জনিতা স্থবাদোষক্ষ মার্জিতঃ চক্ষ্রভিবিচ্য দিব্যং কৃতং তয়্যারিপমভূদেরকারণং বজ্জলং তেনাভিবেকান্মম লক্ষীবশোক্ষান-বন্ধতেলাংসি ভবন্ধিত্যাশংসাবাক্যার্থঃ।

অরঙ্গমাম বোষশু ক্ষার জিল্প। আবেগ জনর্পাচ ন: ইতি পঞ্মকলস-करणना जित्यहनम्। देजद्रवाः बद्राणाः कननानाः करनन जुकीयजित्यहनानि। ততো মাণবকঃ বিরোমার্গেণ মেথলামুন্মোচন্নেৎ অনেন মন্ত্রেণ—ওঁ উত্তবং বুকুণপাশুমুখুৰবাধুমুখ বিষ্ণামুখ প্ৰথাৰ অথাব্যুমাদিতাব্ৰতে তবানাগুদো অদিত্যে স্থাম ইতি মন্ত্রেণ তাং মেখলাং ( শিরোমার্গেণ নিঃসার্য্য বৈৰং ৰতময়ৌ প্ৰক্ষিপ্যেতি পশুপতিমতম্) ভূমৌ নিধার দণ্ডকৌপীনমপি তৃষ্ণীং ভূমে সংস্থাপরেং। অক্সবাসঃ পরিধারাচম্যাদিত্যমূপতিষ্ঠতে। ওঁ উষ্ণন্ ভাজভৃষ্ণুরিন্ডো মকভিরস্থাৎ প্রাতর্যাবভিরস্থাদনশসনিরসি দশসনিং মা কুর্বা বিদনাগমর। ওঁ উত্থন ভাজভৃষ্ণুরিক্রো মক্তিরস্থাদ্দিবা যাবভিরস্থাৎ শতসনি-রসি শতসনিং মা কুর্বা বিদ্যাগময়। ওঁ উত্তন্ ভ্রাজভৃষ্ণুরিক্রো মরুত্তিরস্থাৎ সায়ং যাবভিরস্থাৎ সহস্রদনির সি সহস্রদনিং মা কুর্বন। বিদ্যাগময়। (৪) ইত্যাদি-ত্যোপস্থানমন্ত্র:। ততো মাণবকঃ দবি-তিলানু বা দক্ষিণ-হন্তগতদোমতীর্থেন কেশেষু এক্ষিত্বা জ্টালোমনথানি বাপগ্নিত্বা স্নাত্রাচম্য পূর্ব্বাসাদিতদস্তকাষ্ঠেন मछशापनः कूर्गामत्नन मरञ्जन—ॐ अव्याष्टांत्र गृहश्वएँ সোমে। রাজারমাগদং। স মে মুখং প্রমাক্ত্রিতে যশদা চ ভগেন চ। তত আচমা স্থারিদ্রবামিশ্রি-তেন ধ্বাদিচুর্ণেন তৈলসম্বিতেন শ্রীরমূষ্ঠ্য পুনঃ স্পিরস্কং স্বাস্থাচ্য্য চন্দনাম্মলেপনং পাণিভ্যাং গৃহীত্ব। মুধং নাদিকাঞালভতে এভিম দ্রৈ:। 🤏 প্রাণাপানৌ মে তর্পর চকুমে তর্পর খোত্রং মে তর্পর (৫) ইতি। ততঃ পাণ্যোঃ

<sup>(</sup>৪) ইক্স: আদিত্য: উত্যন্ উন্মং কুর্মন্ অস্থাৎ স্থিতো বভূব। কিন্তৃতঃ ?
ভাজভৃষ্ণ: ভাজং রশিং বিভর্তীতি প্রাতঃ প্রত্যুষদি মক্তিঃ দেবৈং দহ অস্থাৎ।
কিন্তৃতিঃ ? যাবভিঃ যাবস্তো দেবাস্তৈঃ দর্কিঃ দহ স্থিতো বভূবেতি।
হে বিদন্! দর্কং জানন্ আদিত্য! তং দশদনিরদি বছধনো ভবদি অতো মা
নাং দশদনিং বছধনং কুক। কিঞ্চ মা মাং ব্রহ্মত্যাত্তীর্থমাগময় জানীহি।
বিতীয়ভৃতীয়পাঠয়োল্চ নিবা যাবন্তিঃ সায়ঞ্চ যাবন্তিঃ শতদনিরদি সহস্রদানরদি,
শতদহস্রশক্ষে বছবাতিনো। আদিত্যঃ কাল্তরেহপি রশ্মীন্ ধারয়ন্ দেবৈঃ
দর্কিঃ সহ স্থিতো বভূবেতি তম্ৎকীর্ত্য মাং বছধনং কুক ব্রশ্ধত্যাত্তীর্ণং
জানীহি চেতি ষাচ্ঞাবাক্যার্থঃ।

<sup>(</sup>৫) হে অফ্লেপন! মে মম প্রাণাপানৌ শরীরবায় চকুঃ শ্রোত্রঞ তপ্রেতি। অপরং অগমম্।

প্রকালনজনাঞ্জলিমাদার অপসব্যং ক্রন্তা দক্ষিণামুখো ভূদা দক্ষিণস্তাং দিশি ওঁ পিতরং শুদ্ধবং (৩) ইত্যনেন মন্ত্রেণ ভূমৌ নিষিঞ্চেৎ পিতৃতীর্থেন। \* অব যজ্ঞো-পবীতী ভূমা অপ উপস্পৃত্য চন্দনাদিনা আন্থানমন্থলিপ্য এত্মন্ত্রং জপতি—ওঁ স্ফুচ্ফা অহমক্ষীভ্যাং ভূয়াস্থ স্বর্চ্চা মুখেন স্কুশ্ণ কর্ণাভ্যাং ভূয়াসম্। (৭) ততো মাণবকঃ অহতং বাসঃ পরিদ্ধাত্যনেন মন্ত্রেণ—ওঁ পরিধাত্তৈ (পরিধাত্তে) মাণবকঃ অহতং বাসঃ পরিদ্ধাত্যনেন মন্ত্রেণ—ওঁ পরিধাত্তি (পরিধাত্তে) মাণবকঃ উত্তরীয়ং বাসঃ অনেন মন্ত্রেণ পরিদ্ধাণ্ড—ওঁ যলসা মা স্থাবাপ্থিবী যলসেন্ত্রাবৃহস্পতী যলো ভগশ্চ মা বিদদ্ধশো মা প্রতিপন্থতামিতিমন্ত্রেণ। (১) ততো যজ্ঞোপবীতমিত্যাদিনা বজ্ঞোপবীতদ্বঃ ধাররেং। পূর্বস্থিত্যজ্ঞোপবীতম্ত্রার্য জলে নিক্ষিপেং। ততঃ পুশাঞ্জলিং গৃহ্রাত্যনেন মন্ত্রেণ—ওঁ যা আহ্রজ্ঞমন্ত্রিং শ্রুনাইর মেধারে ।

<sup>(</sup>৬) হে পিতর: । শুরুধ্বং শোধয়ত মামিতি অধ্যাহার্য্যম্।

<sup>(</sup>१) অহম্ অকীভ্যাং সুচকা ভ্রাসং শোভনদৃষ্টি: সুচকাঃ, মুথেন সুবর্চাঃ শোভনদীপ্তিঃ, কর্ণাভ্যাং সুঞ্জ সুঞ্জঃ শোভনশ্রী।

<sup>(</sup>৮) পরিধাত্তে পরিধানং করিয়ামি, পরিধার যশঃকীর্ত্তিং ধাত্তে ধারমিন্তামি অপি দীর্ঘায়ৃট্টার দীর্ঘায়ৃট্টার্থং, কিঞ্চ জরদটেরন্মি জরা বার্দ্ধক-মন্ত ব্যাপ্নোতীতি বৃদ্ধো ভবামীতি, কিঞ্চশোভনদীপ্তিঃ সন্শরদঃ শতং জীবামি, রায়স্পোষম্ ধনবৃদ্ধার্থং চতুর্থার্থে দিতীয়া, এতাবদিঃ প্রয়োজনৈঃ অভিসংবারিয়ে সর্বতোভাবেন সম্বরণং করিয়ামি।

<sup>(</sup>৯) ছাবাপৃথিবী ছাবাপৃথিবো) মা মাং ছাদয়তাম্ ইতি ক্রিয়া-পদমধ্যাহার্যাম্। কেন ? যশসা। কিঞ্চ ইন্দ্রাবৃহস্পতী যশসা মাং ছাদয়তাং, কিঞ্চ যশো মা মাম্ অবিদৎ প্রাপ্নোতৃ, ন কেবলং যশো ভগশ্চ মামবিদৎ প্রাপ্নোতৃ, কিঞ্চ যশো মা মাং প্রতিপ্রভাম্ অভিগ্রুতৃ। পুনং পুনরভি-ধানমাদরার্থম্।

এতৎ তর্পণং লীবংপিতৃকেনাপি কর্তব্যং সামাল্যতো বিহিতত্বাং। ইতি ধ্যেরস্।

<sup>🕇</sup> গৃহস্ত্রে 'মেণারৈ' ইতি ন গুতব্।

কামারে দ্রিরার তা অহং প্রতিগৃহামি বশসা চ ভগেন চ। (১০) ইতি। ততো
মাল্যং পরিদধাত্যনেন মন্ত্রেণ —ওঁ বদু বশোহ স্পরসামিক্রণ্টকার বিপ্লং পৃথু।
তেন সংগ্রথিতাঃ স্থমনস আবগ্যামি বশো মরি। (১১) ইতি শিরসি বদ্ধা
উফীবং বগ্নাত্যনেন মন্ত্রেণ—ওঁ বুবা স্থবাসাঃ পরিবীত আগাৎ স উ শ্রেরান্
ভবতি জারমানঃ। তং ধীরাসঃ কবর উরয়ন্তি আধ্যা মনসা দেবরন্তঃ। (১২)
ততঃ স্থবর্ণকুগুলাত্যলঙ্করণাদি ধাররেদনেন মন্ত্রেণ—ওঁ আলঙ্করণমসি ভ্রো
আলকরণং মে ভ্রাঃ (ভ্রাদিতি গৃহস্ত্রপাঠঃ)। (১৩) ইতি দক্ষিণকুগুলং
বৃহা আনেনৈব বামকর্ণে পরিধার চক্ষ্যী অঞ্জয়তি আনেন মন্ত্রেণ—ওঁ বৃত্রহ্যাস
কনীনিকাশ্চক্ষ্য অসি চক্ষ্মে দেহি। (১৪) ইতি দক্ষিণং অঙ্কা তথৈব

<sup>(&</sup>gt;•) বাঃ পুশানা। জমদগ্নিং আহরৎ আহ্বতবান্ গৃহীতবান্। কিমর্থম্ ? শ্রেনারৈ এবনেবেতি বেদে প্রত্যয়ং শ্রেনা তদর্থং, মেধারৈ ধিয়ে, কামার অভিলমিতিসিদ্ধার্থং, ইন্দ্রিয়ার চক্ষ্রাণিসিদ্ধার্থং, ষশোহর্থং ভাগ্যার্থং, তা অহং প্রতিগৃহামি।

<sup>(</sup>১১) ইব্রোহপ্সরসাং অর্বেশ্রাদীনাং যদ্বশঃ উর্কাশীপ্রভৃতরো রূপবত্য ইত্যেবংরূপং যদ্বশঃ বিপুলং বিস্তীর্ণং চকার ক্তবান্। কিন্তুতং ? পৃথু বহুতরং, তেন বশসা সংগ্রথিতাঃ সম্যক্ গ্রাথিতাঃ স্থমনসঃ পূ্পাণি ময়ি আবগ্রামি। কিমর্থং ? বশো বশসে, মমাপি অপ্সরসামিব রূপপ্রাপ্তরে ইব্রেণাপ্সরসাং রূপবত্তরা যদ্বশঃ কৃতং তেন বশসা স্ত্রস্থানীরেন গ্রথিতানি পূ্পাণি মমাপি রূপবত্তরা বশো ভবতু এতদর্থম্ মাল্যং ধারয়ামি ইতি বাক্যার্থঃ।

<sup>(</sup>১২) যো যুবা পরিবীতঃ বস্ত্রবেষ্টিতঃ আগাৎ আগতবান্ শ্রেরান্ শ্রেগো ভবতি উ ছান্দসঃ স্তোত্রার্থঃ। কিন্তৃতং ? স্থবাসাঃ শোভনবস্থধারী জারমানঃ তং যুবানং ধীরাসঃ পণ্ডিতাঃ কবরঃ কীর্ত্তিবক্তারঃ স্বাধ্যঃ সুষ্ঠ্ আহিতা ধীর্যেবাং তে স্থবুদ্ধঃ মনসা হৃদয়েন দেবয়ন্তঃ স্ববন্ধঃ উৎকীর্ত্তর্যান্ত।

<sup>(</sup>১০) হে কর্ণকুণ্ডল ! অলঙ্করণম্সি ভ্যাসাধনং ভবসি ইতি তব স্ক্রপম্। অতো ভ্র উত্তরোত্তরম্ অলঙ্করণং মম ভ্রণং ভ্রা:।

<sup>(</sup>১৪) হে অঞ্জন। বৃত্তজাস্বরত কনীনিকা অক্ষিতারকাসি ততক্দুর্দা অসি ব্যক্তেবাং চক্দ দাসি অতো মে মহং চক্দে হি। যতঃ বৃত্তাস্বরতাক্ষি-তারকোৎপরম্ অঞ্জনং অতব্দীরাঞ্নেনাতেয়ামপি অক্ষিপ্রকাশং কুরু।

শামজ্যাৎ। ওঁ রোচিফুরিস। (১৫) ইতি আদর্শে মৃথং বিলোক্য ছত্রং গৃহাত্য-নেন মন্ত্রেণ—ওঁ বৃহস্পত্তেশ্ছদিরসি পাপানো মামস্তর্ধে হি তেজ্বসো বশসো মামস্তর্ধে কি। (১৬) ততঃ স্বপাদরোক্ষপানহৌ দ্বাত্যনেন মন্ত্রেণ—ওঁ প্রতিষ্ঠে স্থো বিশ্বতো মা পাতম্। (১৭) ততো বৈণবং দণ্ডমাদত্তে জনেন মন্ত্রেণ—ওঁ বিশ্বাভ্যো মা নাষ্ট্রাভ্যঃ পরিপাহি সর্বতঃ ইতি। (১৮) ততঃ পূর্ণহোমং সমাপ্য শুক্রব্বিগারমঙ্গলং কৃষা ( স্থামিত্রিয়া ন ইত্যাদিনাভিবেচনং পশুপতিমতে ) শাস্ত্যদক্ষে: শিশ্বমভিষিচ্যাশীর্কাদং কৃষা অচ্ছিদ্রাবধারণং কৃষ্যাৎ। ততো মাণবকো শুরবে বৃষম্ল্যোপকল্লিতং বৃষং বা দক্ষিণাং দন্তা গুরুক্তস্লাতক্ষ্

ইতি-রাজপণ্ডিত-পশুপতিক্বতা গৃহস্তান্থমোনিতা দশকর্মপদ্ধতিঃ বাশিষ্ঠশ্রীনারারণ-তর্কবাগীশরচিতা ব্রহ্মগংস্কারমঞ্জরী চ সম্পূর্ণা।

ইতি হলায়ুধোক্ত-ৰজু:-সংস্কার-মন্ত্র-ব্যাখ্যা।

<sup>(</sup>১৫) হে দর্পণ ! রোচিঞ্রসি প্রকাশশীলোহসি, অভো মাং সর্বত্ত প্রকাশনশীলং কুফ।

<sup>(</sup>১৬) হে ছত্ত ! স্থা বৃহস্পতেশ্ছদিরাবরণমিদ, স্বতঃ পাপানঃ মাম্
স্বস্তধে হি স্বাবৃতং কুরু। যথা মে পাপসম্বন্ধাংপি ন ভবেৎ, তথা কুরু। ন
কেবলং পাপাদিপি তু তেজসং আদিত্যতাপাৎ রক্ষ। কিমর্থং ? যশসঃ যশসে।
বৃত্তস্থা বৃহস্পতেরপি পাপসন্তাপাদিবারণমতো মামপি তের্ভ্যাংন্তর্জার যশবিনং
কুরু।

<sup>(</sup>১৭) হে উপানহৌ! বুবাং প্রতিষ্ঠে স্থঃ উপক্রান্তগতিকিয়ায়। অত্যাগঃ প্রতিষ্ঠা তলিমিত্তগাৎ যুবামের প্রতিষ্ঠে স্থঃ ভবথঃ, ততো মা মাং পাতম্ রক্ষতম্। কুতঃ ? বিশ্বতঃ সর্বিশ্বাৎ গতিবিরোধিনঃ কণ্টকাদেঃ।

<sup>(</sup>১৮) হে বৈণবদণ্ড! মা মাং পরিপাহি। কুতঃ? নাষ্ট্রাভ্য: নাশ-কারিণীভ্য:। কিন্তুভাভ্য:? বিশ্বাভ্য: সর্বাভ্য: রাক্ষসাদিভ্য:। সর্বতঃ স্বাস্থাক দিকু ইত্যর্থ:।

## ঋগ্বেদীয়-দশসংস্কারপদ্ধতিঃ

### ( কালেশিকৃতা গৃহ্যসূত্র-বাস্থদেব-সম্মতা চ )

### অথ সৰ্বসাধারণী কুশণ্ডিকা

তত্র কর্ত্তা প্রাত্ম্ব উপবিশ্র ইবুমাতাবরং \* স্থতিলং বিধায় সর্ব্বতো গোমরেনোপলিপ্য যজ্ঞিরশকলমূলেন ( কুশমূলেন ) প্রাদেশমাত্রাঃ বড় বেখা উল্লিখেং। + যথা একা উদগগ্রা প্রাদেশমাত্রা অগ্নিপ্রতিষ্ঠাপনদেশস্ত পশ্চাৎ, তন্তা উপরি অন্তরোর্ঘে প্রাপত্তা অসংশ্লিষ্টে, মধ্যে তিল: প্রাপত্তাঃ পর্কা: প্রাদেশপ্রনাণা অসংশ্লিষ্টা রেখা: কার্য্যা:। উল্লেখনশকলং তত্তিব নিধায় তাশ্চান্তিরভাক্ষা শকলমাগ্রেম্যাং নিরস্তা ‡ অপ উপস্পৃত্ত বাগ্-ততোহগ্নিমূভাভ্যাং পাণিভ্যাং গৃহীত্বা বথা—অরস্তে বিখামিত্রথবিরগ্রিদেবতা অনুষ্প্ছন্দো২গ্নাবরাপণে ষোনিবিতাস্ত ( त्रियेष्ट्रने विनिद्यां शः । ওঁ অয়স্তে ধোনিধাছিয়ো যতো काट्या चट्याहथाः। उर बानश्च चानीमाथाटना वर्षश्च शिदः। মুপনয়েৎ। ক্রব্যাদমগ্রিনিত্যদ্ধঠন্ত বিখানিত্রশ্বিরগ্রিদের্বতা তিই প্ছলে। পূर्वार्क्तन क्यानाः मनविज्ञारंग विनित्यांगः। उ क्यानमधिः अहिलामि দুরং ষমরাজ্যে গছতু রিপ্রবাহ: ইত্যাগ্রেদ ক্ষিণস্তাং দিশি নিক্ষিপেং। ইহৈবায়মিতার্দ্ধর্চন্ত বিশ্বামিত্রশ্বিরগ্নিদেবতা ত্রিষ্ট্রপ্ছন্দো উত্তরার্দ্ধেনাগ্নি-গ্রহণে বিনিয়োগ:। ওঁ ইহৈবায়মিতরো জাতবেদা দেবেভ্যো হব্যং বহুকু প্রজানন্। ইতি অবদল্লিং গৃহীত্বা জুষ্টোদমুনা ইত্যক্ত বসুশ্রুতঋষিরগ্নি-র্দেবতা ত্রিষ্ট্রপ্ছনেশাং গ্লিছাপনে বিনিয়োগঃ। ও জুষ্টোদমূনা অতিথি-র্ঘাণ ইমংনো ৰজ্ঞমূপৰাহি বিদান্। বিশা অধ্যে অভিযুক্তো বিহত্যা শক্রয়তা মা ভরা ভোজনানি। ও ভৃতুর্ব:ম: শ ইত্যনেন বছেপো-পরি ততঃ প্রচুরতরকাঠাদিনাংগ্রিমুপবুংহয়েৎ স্থাপরেৎ।

<sup>\*</sup> শরপরিমাণান্যনমিত্য**র্থ:।** 

<sup>†</sup> হণ্ডিলম্বাদেশাপেক্ষরা দকিশেহটো প্রভীচাং চন্থারি উদীচাং যে অঙ্গুলানি ভাজ্বা রেখাঃ কুর্যাৎ।

<sup>💲</sup> প্রাচ্যাং বা ইতি হস্তলিখিতপ্তকেষ্ দৃষ্ঠতে, পরিশিষ্টকৃতা অধৃতত্তাৎ তত্তপেক্ষিত্য।

ণ অধে জ্বৰ নো হবিঃ পুরোডাশং জাতবেদং প্রান্ত: সাবেধিরাবসো ইত্যবিকো বল্লঃ কুত্রচিং প্রকে দৃষ্ঠতে।

কর্মসমাপ্তিপর্যন্তং স্থিরো ভবতি। ততোইগ্রিমাবাহরেৎ। এহার ইত্যস্য রাহ্গণো গোতমঋষিরগ্নির্দেবতা ত্তিষ্টুপ্ছলোংগ্লাবাহনে বিনিয়োগ:। 'ও এহাগ্ৰ ইহ হোতা নিবীদাদক্ক: সূপুৰ এতা ভবানঃ। অবতাং তা বোদসী বিশ্বমিদ্ধে বজামহে সৌমনসার দেবান্। ইত্যাবাহ্ন ও এয়ো হ দেব: প্রদিশোংস্থ দর্কাঃ পূর্বের্না হ জাতঃ দ উ গর্ভে অন্তঃ। দ এব জাতঃ দ জনিয়া-মাণঃ প্রত্যঙ্কনন্তিগতি সর্বতোমুখ:। \* ইতি মন্ত্রেণ জ্বলপ্ত বং পৃহীত্বা প্রদক্ষিণী কুর্বারগ্রিং সমুখীকুর্য্যাৎ। ততো হতেত্যাদি অমুককর্মাদী-ভূতহোমকর্মাহং করিবো ইতি সকলা ধারেদ্বথা—[ সপ্তহন্ত ইত্যাদ্য বামদেবৰ বিরণ্ডিদে বিতা ত্রিষ্টুপ্ছনেলা ( অনুষ্টুপ্ছন্ল: ) হগ্নিগানে বিনি-ষোগ: ] (কেচিদিতি ঝষিচ্ছনেশানেবভা: পঠস্তি)। ও সপ্তহন্তকভা্ৰ সপ্তজিকো বিশীর্থক:। ত্রিপাৎ প্রসন্নবদন: সুধাসীন: শুচিস্মিত:। স্বাহাস্ত पिकत्व भार्य (पर्वोः वारम चक्षां छथा । विज्ञक्किनश्रेष्ठ मेक्किमनः करः ক্রচম্। তোমরং ব্যজনং বামৈগুতিপাত্রঞ্ ধারমন্। আত্মাভিমুখমাসীন এবংরপো হুতাশন:। † ইতি ধ্যাত্ব। যথোক্তনায়। অগ্নিমাবাহ্য পালাত্মপচারে: ততঃ প্রাদেশমাত্রে দ্বতাক্তসমিধৌ ‡ প্রকাপতিং মনসা ধ্যাত্ম ভূফীমগ্রে ক্ষিপেৎ। প ততঃ পরিসমূহনম্। বথা—অগ্নিস্থানাদ্টাকুলপরিমিতে **एमटम क्रेमानीः** निम्मात्रका मिक्किमानिकस्मन छेखताः मिमर यावर सामस्कन পাণিনা ত্রি: পরিমার্জ্জনং কুর্যাৎ। পর্যুক্ষণম্ অগ্নে: পূর্বত আরভ্য **एकि**शां निक्तरम् উত্তরং যাবৎ সোদকেন পাণিনা অগ্রেস্তি: পর্যুক্ষণং কার্য্য । ৰখা হোমীয়দ্ৰব্যমণি প্ৰযুক্তিতং ভবতি। অথ পরিশুরণম্। मर्जानामारातः नकामान्द्रोक्नाशिक्षकाराज त्नरम आज्ञाम्नारेधर्मकाराज्ञाः প্রাগবৈঃ প্রতীচ্যামুদগবৈক্দীচ্যাং প্রাগবৈশ্ব বিস্তৃতীয়াৎ। বন্ধবর্ণম্। যথাশক্তি বন্ধবর্ণং কুর্য্যাৎ। রুশময়বন্ধপক্ষে **অ**থ

<sup>\*</sup> বিশ্বতোসুধ ইভি পাঠান্তরস্।

<sup>🕇</sup> চত্বারি ও শুকা ইত্যাদি শোতোধ্যানমন্ত্রং কেচিদ্ব্যবহরভি ।

<sup>া</sup> কাচৎ পৃত্তকৈ অত্র মন্ত্রো বিহিতো বধা—ও পূর্ণমিদ পূর্ণং মে ভ্রাঃ স্পূর্ণমিদ স্পূর্ণং মে ভ্রাঃ স্বাচ্চাদিশি স্বপূর্ণং মে ভ্রাঃ দ্বিদ্যাল দিব দেবা ক্রিছেল মার্জ্জ্যন্তান্। দক্ষিণভাশিশি মাদাঃ শিতরো মার্জ্জ্যন্তান্। প্রতীচ্যান্দিশি এছাঃ পশবো মার্জ্জ্যন্তান্। উদীচাং আগ ওবংরো বনশতেরে। মার্জ্জ্যন্তান্, উর্দ্ধে বজ্ঞাঃ সম্বংসরঃ প্রজ্ঞাপতির্দ্ধান্ত্রতান্ ইতি।

किर भूखत्कर्वावायानः विशिष्ठम् । अक्क वास्त्यवभक्षणा असूरवायिष्ठम् ।

বন্ধবরণং নান্তি। বান্ধণবন্ধপকে বদা অগ্নে: পূর্বেণ দকিণদেশং গতা অংগ্লেদ ক্লিণত: প্রাগগ্রান্তীর্ণকুশোপরি কুশাসনং বিষ্টরং বা পরিকল্প্য প্রত্য-অুথন্তিষ্ঠন্ অহেদৈধিম ব্যোদতন্তিষ্ঠাক্তস্ত সদনে সীদ যো অস্থৎ পাক্তর ইত্যুচ্চার্য্য নিরস্ত ইত্যক্ষ প্রজাপতিখ বিঃ প্রজাপতিদে বিতা অনুষ্টুপ্ ছলঃ তুণাদিনিরসনে বিনিয়োগ:। ওঁ নিরন্তঃ পরাবস্থ:। ইত্যানেন ত্রন্ধাসনাৎ বাম-হস্তানামিকাসুষ্ঠাভ্যাং আত্তীৰ্ণকুশানাং কুশপত্ৰমেকং গৃহীত্বা নৈশ্বত্যাং দিশি ক্ষিপেং। অথ অপ উপস্তা ইন্মহ্মিত্যতা প্রজাপতিঝ বিরন্ট,প্ ছন্দোহ্যি-দেবিতা ব্রক্ষোপবেশনে বিনিয়োগ:। ওঁ ইদমহমর্কাবসো: সদনে সীদানি ইতি ক্ষপেং। • কুশমশ্বাদিপক্ষে হোতৈব ব্ৰন্মকাৰ্য্যং কুৰ্য্যাৎ। গন্ধাদিভিস্তমর্চ্চয়েৎ অনেন মন্ত্রেণ—ব্রন্ধা দেবানামিত্যস্ত দৈবোদাসি প্রতর্দনশ্ববি-স্ত্রিষ্ট প্ ছল: প্রমান্সোমো দেবতা ব্রসাসাদনে বিনিয়োগ:। ওঁ ব্রসা দেবানাং পদবী: क्वीनामृषिर्विञ्चाणाः महित्या मृगाणाम् । (श्राटना गृधाणाः व्यविভिर्वनानाः সোম: পবিত্রমভ্যেতি রেভন্। ততো ব্দা প্রজাপতিখ ধিরহাই,প্ছন্দো ব্দা দেবতা ব্রহ্মজপে বিনিয়োগ:। ওঁ বৃহস্পতির্বন্ধা ব্রহ্মদন আশিষ্যতে বৃহস্পতে ৰজ্ঞং গোপায় (দ ৰজ্ঞং পাহি ৰজ্ঞপতিং পাহি দ মাং পাহি ভূভু বংখঃ বৃহস্পতি-প্রস্ত:।) ইতি জপেৎ। কুশময়ত্রন্ধপক্ষে হোতৈব এভজ্জপেৎ। পাত্রাণামাপাদনম্ উদগগ্রেষু দর্ভেষ্ কুর্য্যাৎ। প্রোক্ষণীপাত্রং প্রণীতাপাত্রং অ: প্রাস্থালী চরুস্থালী দর্ব্বী-মেক্ষণ-কমগুলুক্র কৃ-ক্রব-বর্ধিরিগ্রানি অক্তদ্ বাব-তুপযুজ্যতে তত্তাপ্যাসাননং কার্য্যন্। অথেগ্রানি পঞ্চনশ অরত্নিপ্রমাণানি পলাশোদ্তবানি অসম্ভবে যজ্ঞীয়বুক্ষোদ্তবানি চ ততো নবকূশপত্ৰৈ-ক্রিগুণং কৃষা সকুদেষ্টিতরজ্জ্বয়ং কৃষা স্থাপয়েৎ। † ততো ৰে ৰে

<sup>+</sup> অবেগাহিবী সর্জ দতি: প্রাদেশনাত্তি: তিদক্ষী তিবুতো রজ্জুক্র্যাৎ, পাণিভ্যাং সব্যোভরাভাাং পূর্ব্বং বর্ত্তরেৎ, ততো দক্ষিণোভরাভাামতে প্রদক্ষিণাবৃতং রজ্জুং ক্র্যাদেতৎ রজ্জুক্রণং বথা—প্রাদেশমাত্তান্ ব্ট্তিংশদভান্ গৃহীরা তিভিঃ ত্রিভঃ ( ভালশভঃ) কুলৈ: দক্তিত্তরকাং রজ্জুং প্রাদাক্ষণান্ কুলা প্ররক্তামেবং কুলা উভরমণি প্রাদক্ষিণান সমস্তাতে প্রদক্ষিণগ্রন্থিং কুলা দিভি রজ্জুকরণ্য। প্রথমাং রজ্জুমুলগ্রামাতীয়্য প্রাদেশমাত্তং দর্ভাল্ত ভাল্ত প্রামাতীয়্য প্রাদিভি রজ্জুকরণ্য। প্রথমাং রজ্জুমুলগ্রামাতীয়্য প্রাদেশমাত্তং দর্ভাল্ত ভাল্ত প্রাদ্ধি বিধার তথা বহিছিরাবেট্য ভালুল্ক দিরাবেট্য তাং প্রব্যাহনত্ত্বিভাল্ত বিধার তথা বহিছিরাবেট্য ভালুলক দিরাবেট্য তাং প্রধ্ববেটনভাল্ভাল্লমেদেবং ভিতীর্যা ইশ্বং

পাত্তে \* অসংশ্লিষ্টে পাণিভ্যাং গৃহীত্বা অধােমুথে স্থাপনীয়ে। † অধানামিকায়াং কুশান বদ্ধা প্রোক্ষণীমুভোলয়েও। ইতরপাত্রাণ্যপি। প্রোক্ষণীমন্তিঃ পুরবিধা কিঞ্চিত্দকং স্রাবয়েৎ। ভজ্জলেন সর্বাণি পাত্রাণি প্রোক্ষয়েৎ। ভতঃ কমণ্ডলো-क्रमकः गृशीचा ट्यामटकन अभीखाः भृतरत्र । आक्रावनः किक्षिप्रमकः खावरप्रः (श्राक्तरप्रकः। छे९भवनम् वक्तामः। श्रीजा-(श्राक्रर्भावनः পরিশিট্সরসসিদ্ধন্। তথা চ—অন্তি: পূর্যিত্বা উৎপূর তদিতরপাত্রাণি প্রোক্ষতি ইতি পরিশিষ্টম্। প্রণীতাপাত্তে কমণ্ডল দকং দ্বা তত্ত ববং পুসাং পবিত্রে চ দহা ত্রিকংপূর ব্রহ্মাণং পুচছেং। ‡ প্রজাপতিঋষিবর্জা দেবতা গায়ত্ৰীচ্ছনোহপঃ প্ৰণয়নাৰ্থজ্ঞপে বিনিয়োগঃ। ওঁ ব্ৰহ্মপ্ৰণঃ প্ৰণেষ্যামি। (ওঁ বৃহস্পতির স্বা ব্রহ্মদন আশিষ্যতে। বৃহস্পতে ষজ্ঞং গোপার) স পতিং পাহি স মাং পাহি। ততো ব্ৰহ্মা প্ৰজাপতিঋষিব স্মা দেবতা ব্রন্ধজপে বিনিয়োগ:। ষজ্ঞং পাহি ষজ্ঞ ও ভৃভূবিঃম্বর্হস্পতিপ্রস্ত ইতি জপ্তা ওঁ প্রণয় ইতি বদেৎ। শ ততঃ প্রণীতামগ্রেরুত্তরতো (ব্রহ্মসমূধে) স্থাপরিত্বা কুশাইপত্রৈ: প্রচ্ছাদরেৎ। আজ্যস্থাল্যাং দর্পিঃ রুত্বাংরেরুত্তর-তোহঙ্গারমাকৃষ্য ত্রবীকুর্য্যাৎ। অলৎকুশেনাজ্যং সংবেষ্ট্য কুশপত্রদ্বন্ধমাজ্যে নিক্ষিপ্যাজ্যং শোধ্যেও। পুনরাজ্যং অলতা কুশেন সংবেষ্ট্য তৎকুশমাজ্যে

সকুলাবেষ্ট্য সন্নত্যেৎ অবজ্যান্ত্রাম ইশ্বঃ পঞ্চদশদাক্ষকত্তত্বপরি নিদ্যাদেওদিখাবহিৰোঃ সন্নহনন্।
অথ সোদকেন পাণিনা প্রাঞ্জনীচ্যা আরভ্য প্রবক্ষিণমগ্নিং ত্রিঃ পরিসমূহ্য প্রাদেশমাত্রৈদ তৈঃ
প্রদক্ষিণং প্রাচ্যাদির প্রতিদিশমুদক্সংস্থং পরিস্তৃণীরাৎ দক্ষিণোত্তরকোঃ সন্ধির মূলাইগ্ররাচ্ছাদক্ষে
দ্রোবিষ্ঠান্ বা দর্ভাংস্তরোস্থারাৎ। উত্তরতঃ পাত্রাসাদনার দক্ষিণতো ব্রহ্মাসনার কাংশিচদ্দভানাতীর্যাগ্নিং প্রতুদ্ধেবাহ্যিসংকারঃ। ইতি গৃহ্যপরিশিষ্টকৃতা ক্রমনির্পরঃ কৃতঃ।

<sup>\*</sup> চর-স্থানীপ্রোক্ষণ্যে), দর্কীক্রবৌ, প্রণীভাষ্যাপাত্তে, ইশ্ববর্হিনী, শূর্পকৃষ্ণাব্দিনে, উদ্ধল-মুসলে চ।

<sup>†</sup> অথেদানীং গৃহাস্ত্রপরিশিষ্টমতং লিথাতে।

<sup>়</sup> অথ প্রচলিতমতং লিখাতে যথা—হে হে পাত্রে অসংস্লিষ্টে পাণিভ্যাং গৃহীত্বা অধােমুখে স্থাপনীরে। ততঃ প্রোক্ষণীপাত্রমূভানং কৃতা তত্র পবিত্রে নিধার তৎ পাত্রমন্তিঃ প্রস্থিত্ব হতরারনামানুষ্ঠাজ্যাং পবিত্রে উদগ্যে ধৃত্বা প্রোক্ষণীপাত্রমূলং ত্রিরুৎপূর ইতরপাত্রাথি উত্তানানি কৃত্ব। ইথাং বিশ্রস্ত প্রোক্ষণীলেলন সর্বাণি পাত্রাণি ক্রিং প্রোক্ষেও। ততঃ প্রোক্ষণীলাত্রাৎ কিঞ্জিল্পনং কমওলে) নিধার প্রণীতাপাত্রং অগ্নেঃ প্রভাঙ্ নিধার তত্র প্রাগত্রে পবিত্রে নিধার উৎপূর্তাভঃ কমওলােরন্তিঃ প্রণীতাপাত্রং প্রস্থিতা তত্র সন্ধ্রপ্রাক্ষতানি বিক্রস্ত বন্ধাং প্রক্ষেও। প্রনাপতির্থ বিরিত্যাদি।

প অত্র পরিশিষ্ট্রস্ক্র প্রপাং প্রণয়নে ওঁ ব্রহ্মপ্রণঃ প্রণেষ্যামীত্যতিসষ্টঃ ওঁ ভৃত্ বংমবৃ ইপঠি-শুসত ইতি ক্রপিড়া ওঁ প্রণয় ইতি অতি স্বল্পেং সর্বাবা চ ব্রহ্মমা ভবেং।

নিকিপ্যাক্ত্যমানীর সন্মুথে বর্হিবি স্থাপরেং। আরুষ্টান্থারময়ে প্রক্ষিপ্য আব্যোৎপবনং কুর্যাং। ততঃ পবিত্তং গৃহীত্বা প্রক্ষাপতিশ্ব বিঃ পবিত্রে দেবতে পবিত্রমার্জনে বিনিয়োগঃ। ওঁ পবিত্রে স্থে। বৈক্ষব্যে ইত্যনথং ছিত্বা প্রকাপতিশ্ব বিঃ পবিত্রে দেবতে পবিত্রমার্জনে বিনিয়োগঃ। ওঁ বিক্ষোমনিয়া পতে স্থঃ। ইত্যভ্যুকেং। যথা—পবিত্রহয়ঃ অসংশ্লিষ্টং প্রাগগ্রমগ্রে বামহন্তানামান্দুষ্ঠাত্যাং মূলে চ দক্ষিণহন্তানামান্দুষ্ঠাত্যাং গৃহীত্বা তরোম ধ্যেনাগ্রে আব্যোৎক্ষেপণং সবিতৃষ্ট্বে হাস্ত হিরণ্যন্ত পুরুষিঃ সবিতা দেবতা পুরুষিক্ ছন্দ আব্যোৎপবনে বিনিয়োগঃ। ওঁ সধিতৃষ্ট্বা প্রস্ব উৎপুনাম্যচ্ছিদ্রেণ পবিত্রেণ বসোঃ স্থ্যস্ত রশ্মিভিঃ ইত্যুনেন প্রথমমুৎপুনাতি বিন্তৃ ক্ষীম্। \* তত্তং পবিত্রহয়ং প্রকাল্যাগ্রে কিপেং। (ওঁ ভৃত্ বংশ্বরোম্ তৎসবিত্রিত্যাদি। ওঁ সবিতৃষ্ট্ব। ইতি পঠেং।) † অর্থ ক্রবাদিসংস্কারঃ। ক্রক্তিরে বিজ্ঞান্য প্রাণ্য প্রতাপ্য মৃত্যুং ক্রতা স্থাপরেং। শ্ব যদিপ্রকৃতে কর্ম্মণি ক্রেরেম্ব্রু প্রান্ত বাম্বার্য স্বার্য বা কর্ত্ব্যা। চক্রপ্রাণীং বামহন্তেন গ্রাবারাং ধন্ত্বা ভন্মেয় উত্তরাগ্রং পরিত্রং দল্পা

ভণাচ হক্তং সকুন্মন্ত্রণ বিস্তৃষ্ণীন্।

<sup>†</sup> অথ পরিশিন্তমতং যথা—চমনং প্রত্যাগর্মেনিধার তে পরিত্রে অন্তথ রান্তিঃ প্রত্নিথা গন্ধাদি প্রক্রিণা দক্ষিণোত্তরাজ্যাং পাণিত্যাং নাসিকান্তমূদ্ভূতা উত্তরতোহরেদ র্ভেষু নিধার দক্তিঃ প্রজ্ঞাদরেৎ। ইতি প্রনীতা-প্রণয়নন্। অথ তে এব পরিত্রে প্রাগরেরাজ্যপাত্রেহন্তম্বাজ্ঞাসাসিচা বহিং পরিন্তরগাদসারাম্দর্গপোহ ছেবাজ্যমধিপ্রিত্যোগ্ম কেনাব্দ্রালা দর্ভাগ্মে প্রক্রিভ্রালারাক্র পরিক্রালা দর্ভাগ্মে প্রক্রিভাগান্ধ কর্মান উপ-ক্রালার্য কর্মান তিক্তম আন্তাম্বংশ্র পরির্বিত্ত উপ-ক্রালার্য কর্মান তিক্তম আন্তাম্বংশ্র পরিত্রে প্রাক্ষাণ্যা প্রাক্তাপ উপ-ক্রেদ্বে আন্তামংক্রিং।

<sup>‡</sup> অথ পরিশিষ্টমতম্—ৰহিরাক্সনোহতো প্রাপ্তমান্তীয় ত্রাজ্যমাসাল্প সহদর্ভদ ব্রীক্রবাবাদারায়ে প্রতাপ্য দক্ষীং নিধার ক্রবং সব্যেন ধারমন্ দক্ষিণেন পাণিনা দর্ভাগ্রৈবিলং
প্রাপারক্য প্রাদক্ষিণ্যং প্রাগ<sup>স্</sup>বর্গং তিঃ পরিমুক্ষ্য তৈরের বিলপৃষ্টমত্যাক্ষং তিঃ সংমূজ্যাথ
পৃষ্ঠাদারক্য বাবহুপরি বিলং দণ্ডং দর্ভস্টানিঃ সংমূজ্য ক্রবং প্রোক্ষ্য প্রতাপ্য উদগাক্সাধিহিয়াসাল্প উদকন্দ্রিইক্তরের দর্ভিরেবং দক্ষিণ সংস্কৃত্য ক্রবাহুদঙ্নিধার দর্ভান্ প্রোক্ষ্যাগ্রেমী
প্রহরেদেব ক্রবক্রবসংমার্গঃ।

প অত ক্ৰাদিগংকারে মতান্তরম—ক্রবং ক্রচণ প্রকাল্য দক্ষিণহন্তেন গৃহীতা বামেন দর্ভানাদার মূলানগ্রং দক্ষার্জ্য গ্রহাইং রক্ষ প্রত্যুপ্তঃ পরাত্রে নিষ্টপ্তং রক্ষ নিষ্টপ্তা অরাতরঃ। অনেনারৌ প্রতাপ্য দক্ষিণহন্তে নাস্তা বিলং দর্ভাটিগ্রং ক্রিক্স, আ এবমস্তব্ধার্থরং কৃত্য প্রোক্ষাণ্ ক্রোনাভিঘান্য অগ্যান্তরোম ধ্যে নাত্য আজ্যাক্ষণতো বহিষি স্থাপথেৎ। এবমেন দক্ষিং মেক্ষণক্ষ সংস্কৃত্যিং। নিম্ননমূপবেশনং অপঃ প্রায়ন্তিজনহোমঃ সংস্কৃত্যিকা বিদ্যান্য চেতি প্রকর্মাণি ব্রক্ষণঃ। ইতি পরিশিষ্টকারস্থত দ্রমনির্পয়ঃ।

অতপ্তমিতত পুলান আনীয় দেবতানাং নাম প্রবোক্তব্যম্। ও অমুদৈ বা জুইং নিৰ্বাসাম প্ৰোক্ষামীতি চতুরশ্চতুরো মুখীন নিৰ্বাপেৎ প্ৰোক্ষেৎ। তিঃ ফণী-কুতান তিঃ প্রকাল্য পাকামুরপং চন্ধং দছাং। ততঃ স্থাসিদং জ্ঞাত্বা ভূতানি হবীংষি দত্তা উদগুদ্বাস্থাগ্যাজ্যয়োম ধ্যেন নীত্বা আজ্যাদক্ষিণতো বৰ্হিষি স্থাপরেং। ততোংগ্নে বং পাবকনামাসি ইতি নাম ক্ববাভার্চ্চা গদ্ধপুশা-ক্ষতানি গৃহীত্বা—বিশ্বানি ন ইতি তিফ্লাং বস্কু তথাবির্গ্লিক্তা ত্রিষ্ট্রপ্ ছন্দোহগ্রার্চনে বিনিয়োগ:। ওঁ বিশ্বানি নো তুর্গহা জাতবেদ: সিন্ধুং ন নাবা ছবিতাতিপর্ষি। অগ্নে অতিবন্ নমদা গৃণানো অস্মাকং বোধাবিতা ভন্নাম্। ওঁ যন্তা ক্লা কীরিণা মন্তমানঃ অমর্ত্যং মর্ত্যো জোহবীমি। জাতবেলো যশোহস্মান্ত বেহি প্রজাতিরগ্রেরমৃতত্বমুখান্। ওঁ যদৈ বং স্কুতে জাতবেদ উলোকমগ্নে কুণবস্থোনং। অধিনং সপুত্রিণং বীরবস্তং গোমস্তং রয়িং ন শতে স্বস্তি। এবং বহ্নিমভার্ক্য ইশ্মবন্ধনরজ্জ্ব বামকরে সংবেষ্ট্য ইশ্মাধানং কুর্য্যাৎ। অথেগ্রাধানম। প্রজাপতিঋ বিরগ্নিদে বিতা ইরূনাদিপ্রতাপনে বিনিয়োগ:। ওঁ প্রত্যুষ্ট্র্ড রক্ষ:প্রত্যুষ্টা অরাতয়ো নিইপ্তর্ণ রক্ষো নিইপ্তা অরাতয়:। (উর্বন্তরিক্মছেমি।) ইত্যানেন প্রতপেৎ। যদা পুনরেক-কালমাজ্যহোম চকুহোমৌ ভবতঃ তদা ক্রকুকুবপ্রতাপানস্তরং প্রসাধ্যাবভার্য্য ইথাধানং কুর্যাৎ। অন্যথা বামহত্তে ইথাং কৃতা মূলমধ্যাপ্রদেশেষু আজ্যেনাভিলার্য দক্ষিণহত্তে ইথং গৃহীত্বা অন্নন্ত ইথা ইত্যস্ত বামদেবশ্ববিজ্ঞাতবেদা অগ্নিদে বিতা ত্রিষ্ট্রপ্ ছল ইগ্নাধানে বিনিয়োগঃ। ওঁ অন্তন্ত ইগ্ন আত্মা জাতবেদন্তেনেধাস্ব বৰ্দ্ধস্ব চেদ্ধ বৰ্দ্ধস্ব চাম্মান্ প্ৰজন্ম পশুভিত্ৰ ন্মবৰ্চ্চংসনান্নাত্মেন সমেধন্ন স্বাহা। ইতি হত্বা ওঁ অগ্নরে জাতবেদসে ইতি নমম ইদং ত্যজন্ ততন্ত্রকীং আঘারাজ্ঞাছতী-র্ভয়াৎ। ষথা—ক্রবেণ চতুবাজাং ক্রচি ন্থা বায়ুকোণাদারভ্য স্বাগেরীং বাবৎ ভূফীং হবা পুনন্তবৈধবাদ্যমাদায় নৈশ্ব তীমাবভ্য ঐশানীং ধাবৎ অবিচিন্নামাজ্য-ধারাং হনেং। । মাজ্যভাগৌ যথা—অগ্নেক্তরপার্যে ওঁ অগ্নয়ে স্বাহা ওঁ অগ্নয়

<sup>\*</sup> তথা চ সূত্রং—(একবহিরিগ্নাজাবিষ্টকৃতঃ স্বান্তব্যকালতা)। তথা শৃতানি হণীংব্যভিবার্থো—`
দণ্ডবাস্ত বহিষ্যাসাল্ভাতিবার্যা অবন্ধে ইতি তৃঞ্জীমাঘারৌ আঘার্ধ্য আজাভাগৌ জুহুরাৎ।

<sup>†</sup> কচিত্ এলাপতিং মনসা শ্বরন্ খাহা ইত্যুক্তার্য অবিচ্ছিল্লামূজ্ধারাং জুহরাও। এলা-পতর ইলং নমম। পুনত্তিগ্রাজ্যমালার ও এলাপতিন্ মনসা স্বরন্ যাহেত্যনেন জুহরাও।

ইনং নমম। এবং দক্ষিণপার্শে ওঁ সোমার স্বাহা সোমার ইনং নমম। ইতি ক্রবেণোভে) জুত্রাং। \* উপলেপনাভাজ্যভাগান্তং যাবং সর্বাকশ্ব সমানম্। ইতি আজ্যভাগান্তা কুশণ্ডিকা।

### অথ প্রক্রতহোসঃ

প্রকৃতকর্ম্মোক্তাগ্নের্নাম কৃত্বা স্মাবাহ্থ অভ্যর্চ্চ্য তত্ত্র যো বিহিতো হোম: স কর্ত্তব্য:। ততঃ প্রকৃতং কর্ম সমাপ্য প্রায়ন্চিত্তহোমং কুর্য্যাৎ। †

### অথ উদীচ্যং কর্ম্ম

তত্রাদৌ বিধুনামানমগ্নিমাবাহ্ সম্পূজ্য সল্পলং কুর্য্যাৎ। অয়াশ্চাগ ইত্যক্ত विमन्श्रवित्रश्नामाशिद्यार्वे वा १७ किन्छनः श्रीशन्ति बाक्याराय विनिद्यार्थः। অরাশ্চাগ্নেইস্তনভিশন্তিপাশ্চ সত্মত্তময়া অসি অয়াসা বয়সা কতোহবাসন হ্ব্যম্হিষে অয়ানো ধেহি ভেষজং স্বাহা। অয়াসে অগ্নয়ে ইদং নমম। অতো দেবা ইত্যস্ত মেধাতিথিখ বিদেবি৷ দেবতা গায়ল্রীচ্ছন: প্রায়শ্চিত্তাজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ অতো দেবা অবস্তু নো যতো বিষ্ণুবি চক্রমে। পৃথিব্যাঃ সপ্তধামভিঃ স্বাহা। দেবেভ্য ইনং নমম। ইনং বিষ্ণুরিত্যস্ত মেধাতিথিঋ বি-বিষ্ণুদে বিতা গান্ধলীচ্ছলঃ প্রায়শ্চিতাজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ইদং বিষ্ণুবিচক্রমে ত্রেধা নিদধে পদং সমৃত্মস্ত পাংশুলে স্বাহা। বিষ্ণবে ইদং নমম। ভ্রাদিব্যান্তীনাং বিশামিত্র-জমদগ্নি-ভরদাব্দা ঋষয়োহগ্নি-বায়ু-সূর্য্যা দেবতা भावकारिक्षभग्रहे जन्हनाः नि श्राव्याक्रिकाकारहारम विनिरवानः । ও जुत्रश्रद চ পৃথিবৈর চ দিব্যায় চ মহতে চ স্বাহা। ভূরগ্নয়ে ইদং নমম। ওঁ ভূবো বায়বে চান্তরীক্ষার চ দিব্যার চ মহতে চ স্বাহা। ভূবো বারবে চান্তরীক্ষার চ ইদং নমন। ওঁ স্বঃ সূর্য্যার চ দিব্যার চ মহতে চ স্বাহা। সূর্য্যার দিব্যার মহতে ইদং নমম। সমস্তানাং ব্যাহ্বতীনাং প্রজাপতিশ্ববিরু হতীচ্ছন্দঃ প্রজাপতিশুদ্রমো-নকত্রদিশো দেবতাঃ প্রায়শ্চিত্তাজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ ভূভূ বংম্ব: প্রজাপতরে চচক্রমসে চ নক্ষত্রেভ্যশ্চ দিগ্রভাশ্চ দিব্যার চ মহতে চ স্বাহা। ইদং প্ৰজাপতি-চক্সমো-নক্ষত্ৰ-দিগ ভো । নমম।

ইমাবালাভাগে ভবত:। তথা চ কুলং চকুলী এতে বজ্ঞ বদালাভাগে অনরোম ব্যাহ্বীংবি কুছরাং।

<sup>†</sup> যত্র প্রকৃতে কর্মণি আক্ষোটনৰ হোমন্ত্রাদে আজোটনর প্রায়শ্চিত্তং তদন্তে বিষ্ট-কৃদ্ধোমঃ, যত্র তু চঙ্গহোমন্তত্রাদে চঙ্গদৈর বিষ্টকৃৎ তদন্তেন প্রায়শ্চিত্তং ইতি ধ্যেয়ন্।

যৎ পাকতা ইত্যস্ত ত্রিত্র বির্নিদেবতা ত্রিগুপ্ছনঃ সর্বপ্রায় শিত্রাক্যহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ যং পাকতা মনদা দীনদকা ন যজ্জ মহতে মন্ত্যাস:। অগ্নিষ্ট-দ্ধোতা ক্রত্বিদ্বিজানন যজিপ্তো দেবা ঋতুশো যজাতি স্বাহা। আগমে ইদং নমম। পুরুষদন্মিত ইত্যক্ত হিরণ্যগর্ভঋষিরগ্নিনে বিতাহমুগুপ ছলঃ প্রায়শ্চিত্রাক্যহোমে বিনিমোগ:। ওঁ পুরুষদ্মিতো ষজ্ঞ: যুক্তবদ্মিত:। অগ্নে তদক্ত কল্লয় তং হি বেখ ষ্ণাষ্থং স্বাহা। অগ্নয়ে ইদং নমম। যুদো দেবা ইত্যুক্ত নোর্ঘ্যাংভিতপা ঋষি: সুর্য্যো দেবতা ত্রিষ্ট্পু ছন্দো দ্রব্যবিপর্য্যাসকাল-বিপর্য্যাস-মন্ত্রবিপর্য্যাস-তন্ত্রবিপর্য্যাস।র্থপ্রায়শ্চিত্রাজ্যহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ বছো দেবাশ্চকুম জিহ্বয়া গুরু মনসো বাপ্রযুতী দেবছেলনম্। বা যো নো অভিহুচ্ছুনায়তে তন্মিন তদেনো বসবো নিধতেন স্বাহা। নেবা ইত্যক্ত অভিতপাঋষিম্কতো দেবতান্ত্রিই,প্ছনেদা দ্ব্যবিপর্যাস-কালবিপর্য্যাস-মন্ত্রবিপর্য্যাস-তন্ত্রবিপর্য্যাসার্থ-প্রায়শ্চি ন্তাজ্যহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ যদো দেবা অভিপাতয়ানি বাচা চ প্রযুতী দেবহেলনম্। অরা যো অস্মান্ অভিহৃদ্ধনায়তে অক্তবাশান মক্তন্তরিধতেন স্বাহা। মক্তা ইদং নমম। অথ বিষ্টক্লদোম:। ষত্ৰ চকুহোমোহন্তি তত্ৰ চকুণৈব স কৰ্ত্ৰয়ঃ। যত্ৰ ন চকুহোমন্তর প্রার্ণিত প্রেনাজ্যেন বিষ্টকুদ্ধোম:। আজ্যেনিষ্টিং সমাপত্রেৎ ইতি বচনাং। স্রুবেণ চতুরাজ্যং স্রুচি দত্তা অগ্নে: প্রাক্ উদক্ষিষ্টিকুদানম্। ষনস্তোত্যস্ত ( হিরণাগর্ভশ্ব হিঃ ) প্রজাপতিশ্ব হিঃ স্বিষ্টকুদগ্নিদ্দেবতা অতিধৃতিশ্ছনঃ বিষ্টক্লমে বিনিয়োগ:। ওঁ ষদশু কর্মণোহতারীরিটং যদা নানমিহা-করম্। অগ্নিষ্টৎ স্বিষ্টকুদ্বিদ্বান সর্বাং স্বিষ্টং স্মৃত্তং করোতু মে। অগ্নমে ষিষ্টক্বতে স্ত্তত্তে সর্মপ্রায়ণ্ডি বাছতীনাং কামানাং সমন্ধ্য়িত্তে সর্মায়ঃ কামান সমর্থ স্বাহা। অগ্নরে স্বিষ্টক্ততে ইনং নমম। ইত্যগ্রীশানকোণে জুত্রাৎ। ওঁ কড়ায় সাহা ইতীপাবন্ধনরজ্জুং জুত্যাও। রুড়ায় ইদং নমম ইতিপ্রত্যুদেশ:। যদি যজমান: স্বয়ং হোতা তদাসে বর্হিষি প্রণীতামাদায় তেনোদকেনাত্মান-মভিষিঞেং। + যতারস্তনাসে যজ্মানমিতি বিশেষঃ।—আপোহস্মানিতাস্ত

শ অনাজাতমিতি মন্ত্রপ্ত হিরণাগর্ভয়বিরগ্নিদে বিতাহন্ত পু ছন্দঃ জ্ঞাতাজ্ঞাত-দোষনির্বরণার্থং
 প্রারশিতভালাহোমে বিনিরোগঃ। ওঁ অনাজ্ঞাতং বজ্ঞপ্ত ক্রিরতে মিপু। অগ্নে তদপ্ত করার ছং। হে বেথ বণাত্রথং স্বাহা অগ্নর ইদং নমন ইতি মন্ত্রেণ অধিকো হোনঃ কুত্রচিৎ লিখিতঃ।

<sup>†</sup> কেবাঞ্চিন্নতেহল্মিন্ সমরে পূর্ণহোম: ততো মার্জ্জনম্। ততক সংস্থাজপো বিহিতঃ।

(প্রজাপতিঃ) দেবপ্রবা শ্ববিরাপো দেবতান্ত্রিই,প্ ছন্দো মার্জনে বিনিয়োগঃ। ওঁ ৰ্মাপো অস্মানু সাতরঃ শুদ্ধয়ন্ত মৃতেন নো ম্বতপঃ পুনস্ক। বিষং হি রিপ্রং প্রবহন্তি দেবীরুদিদাভ্য: শুচিরাপ্ত এমি। ইদমাপ ইত্যক্ত সিরুদীপক্ষবিরাপো দেবতা অফুষ্টুপ্ ছলো মার্জনে বিনিয়োগঃ। ওঁ ইদমাপঃ প্রবহত ষৎ কিঞ্চিৎ ছরিতং ময়ি। বহাহমভিত্তোহ বহা শেপ উতামৃত্যু। স্থমিত্র্যান আপ ইত্যস্য নারায়ণঋষিরাপে। দেবতাপ্তিষ্প্ ছল্লোংভিষেকে বিনিয়োগ:। ও স্মিত্রা ন আপ ওষধয়: সম্ভ ইতি ভূমৌ নিক্ষিপেং। ওঁ তৃশ্বিত্রান্তলৈ সম্ভ ষোহস্মান্ বেষ্টি ষঞ্চ বয়ং দ্বিমঃ ইত্যাত্মানমভিষিঞেৎ। ততঃ পরিস্তরণকুশৈঃ কক্কবৌ অত্যে মধ্যে মূলে চ প্রোস্থ্যাগ্রৌ ক্ষিপেৎ। \* ততোহগ্রাপস্থাপনম্। কুতাঞ্জলিঃ পঠেং। অথ্যে ত্বনো অন্তম ইতি চতুর্ম চম্ম গৌপায়না (লৌপায়না বা) বন্ধু: স্থবন্ধু: শ্রুতবন্ধু: প্রিয়বন্ধু: ক্রমেণ ঋষয়োহিয়িদেবিতা দ্বিপদা বিরাট্ছলোংগ্যপহানে বিনিয়োগঃ। ওঁ অগ্নে বল্নো অস্তম উত ত্রাতা শিবোভবাবর্রথাঃ। বস্তুর্রির্বস্থাবা আছোনক্ষিত্যমন্তমং রুরিং দাঃ। ওঁ সনো বোধি শ্রুধীহব্মুক্ষ্যানো অধায়তঃ সমস্মাৎ। তং তা শোচিষ্ঠ দীদিংঃ সুমায় নূনমীমহে স্থিভাঃ। † ততো মুড়নামানম্যিং সংস্থাপ্য সম্পূজ্য মূর্দ্ধান-মিত্যস্ত বাৰ্হপ্পত্যঋষি (বামদেবঋষিঃ ) বৈ খানবো দেবতা (অগ্নিদেবিতা) ত্রিষ্ট্প ছল: পূর্ণহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ মৃদ্ধানং দিবো অরতিং পৃথিবা বৈশানরমূত আজাতমগ্রিং। কবিং স্থাজমতিথিং জনানামাসরা পাত্রং জনম্বন্ত দেবাঃ স্বাহা। অগ্নয়ে ইনং নমম। ধামত্তে বিশ্বমিত্যস্থ বামদেবশ্ববি-त्राटभा त्मरणा क्रशजीष्ट्रनः भूर्गद्शात्म विनिद्यांगः। उ धामरस विनेर जूरन-মধিশ্রিতমন্তঃ সমুদ্রে হৃতন্তরাযুধি। অপামনীকে সমিধে ব আভৃতন্তম্ভাম মধুমন্তং ত উৰ্বিং স্বাহা। স্বদ্ধা ইদং নমম। নাভিং বজ্ঞানামিত্যস্ত বাৰ্ছস্পত্য-ঋষি (বামদেবঋষিঃ) বৈ ৰানবো দেবতা (অগ্নিদে বতা) ত্ৰিষ্ট প্ছনঃ পূৰ্বহোমে विनित्रात्रात्रः। ଓ नाज्ञिः वज्ञानाः महनः वृत्रीताः महामानावम् । देवचानद्रः द्रशामक्षदानाः रक्कण त्कृतः अनुद्रस्य (मर्वाः। देवचानदात्र हेनः

<sup>•</sup> অত্ত পৃত্তকান্তরে বিশেষো লিখিত:। ও মাহং প্রজাং পরাসিচং বানঃ স বাবরীয়ন।
সমূত্রে বো নিনয়ানি ঝাং পাধো অসীম ইতি কুশাত্রৈরণঃ সিঞ্চেং।

<sup>🕇</sup> পুত্তকান্তরে অত্রৈব চ মে ইত্যাদি মন্ত্রজপো লিখিত:।

নমম। • ইতি ঝক্তায়েণ পূর্ণাহুতিং দছাং। ততঃ সংস্থাজপ:। † ওঁ চম ইত্যক্ত হিরণাত্ত প্রধানিঃ দারস্বতোহয়িদে বিভা উপরিষ্টাদ্রহতীচ্ছন্দঃ দংস্থাজপে বিনি-রোগ:। ওঞ্চমে স্বরশ্চ মে যাজ্ঞাপচ তে নম:। যতে ন্যানং তরে ত উপযতেং-তিরিক্তং তল্মৈ তে নম:। ওঁ যজ যজপতিং গচ্ছ স্বাং বোনিং গচ্ছ স্বাহ।। ওঁ স্বস্তি। প্রকাং মেধাং যশঃ প্রক্রাং বিভাং বৃদ্ধিং প্রিয়ং বলম্। আয়ুষ্যং তেজ আরোগ্যং দেহি মে হব্যবাহন দেহি মে হব্যবাহন ওঁনম:। ততো ত্রহ্মদক্ষিণাং দতাং। ততঃ স্থালীস্থ্যতেন সর্বাপরিস্তরণকুশান ওঁ সর্পোভ্যঃ স্থাহেতি জুত্রাং, ‡ তত ওঁ পৃথি বং শীতলা ভবেতি দধি নি:ক্ষিপ্য ভশ্ম গৃহীত্বা মানস্ভোক ইত্যস্ত क्ष्मश्चिक्र गडौष्ट्रत्म। कृत्या त्मवडा विकृष्डिश्रह्त। त्रकांकत्रत विनित्रांतः। ওঁ মানস্তোকে তনয়ে মান আবে মানো গোষু মানো অশ্বেষু রীরিষ:। বীরানুমানে। রুদ্র ভামিতো বধীর্হবিষ্মন্তঃ সদমি আ হ্বামহে। ইতি দক্ষিণা-বর্ত্তেনাভিমন্ত্রা ওঁ ত্র্যায়ুষং জমদগ্রেরিতি ললাটে। ওঁ কশ্রপশ্র ত্র্যায়ুষ্মিতি হৃদি। ও অগন্তান্স ত্রায়ুক্ষিতি বাহুমূলস্নো:। ও যদেবানাং ত্যায়ুষ্মিতি কর্তে। ওঁ তল্পোহস্ত ত্র্যায়্ধমিতি ব্রহ্মরন্ধে, দত্তাৎ। শ ততোহয়িং বিসর্জ্জন্তে, বধা—ত্রিতশ্ববিগারত্রীচ্ছলোংগ্লিদেবতা অগ্নিবিসর্জ্বনে বিনিয়োগ:। অভ্যারমিদদ্রয়ো নিষিক্রং পুষ্করে মধু। 💌 ব তন্ত বিসর্জ্জনে।

ইতি সামান্ত-কুশণ্ডিক।।

### অথ বিবাহঃ

তত্র সম্প্রদাতা ক্বতনিত্যক্রিয় আচম্য পুণ্যাহং স্থান্তি-ঋদ্ধিঞ্চ বাচয়িতা স্বন্ধি নো মিমীতা ইত্যাদি স্বন্ধিস্কুং পঠিতা স্ব্যঃ সোম ইত্যাদিনা দেবসালিধ্যং

किछ् नाण्टिः राज्ञानाभिति मञ्जन्तात्व उं मथा ति चार्यामभित्रः मथिक्साः मथक्षमः,
 मथाम श्रिमानि । मथाहोजाः मथा।
 मथाम श्रिमानि । मथाहोजाः मथा।
 मथानि । मथाहोजाः मथा।

<sup>🕇</sup> মতান্তরে ইদানীং অগ্নাপস্থাপ নমন্ত্রপা:।

<sup>্</sup>ৰ জত কচিৎ ক্ৰমভেদো দৃষ্ঠতে যথা—সৰ্বমন্ত শতায়্বমিতি বিভৃতিগ্ৰহণাৎ পরং মৃদ্ধানং দিব ইত্যাদি মন্ত্ৰৱেদ পূৰ্বহোমাতে সংস্থাকপং। যথা ওঁ পঞ্চম ইত্যক্ত হিম্বণাত প্ৰধিৱিত্যাদি। জতোহগ্ৰিবিসজ্জনন্ ওঁ যজ্ঞ বজ্ঞং গছে যজ্ঞপতিং গছে যাং যোনিং গছে যাহা এব তে যজ্ঞো বজ্ঞপতে সহ স্কুবাকন্তং জুবন্ন যাহা। ততো চুগ্ধাদিনা পৃথি, তং শীতনা ভবেতি শান্তিং নাড়া বক্ষণে দক্ষিণাং দত্যাৎ।

শ অত্র কেচিৎ ওঁ আায়ুবং অধন গ্রেঃ ইতি ললাটে, ওঁ কশুপশু আায়ুব্যিতি ছদি,ওঁ অগন্তাশু আায়ুব্যিতি নাজে, ওঁ যদেবানাং আায়ুবং ইতি দক্ষিণক্ষলে, তবে অপ্ত আায়ুব্যিতি বাম-ক্ষনে, সর্ক্ষয়ন্ত শতায়ুব্যিতি শির্মি ধার্মেৎ। ইতি ক্রমভেদং বর্ণয়ন্তি। ক্সিংশ্চিৎ পুত্তকে অইত্রব ব্রহ্মদক্ষিণা উদাহতা।

कन्नक्रिया প্রার্থং বরং বল্লাদিভিরর্চ্চয়েও। यथां—দাতা ওঁ দাধু ভবানান্তাং, ্বরঃ ওঁ সাধ্বহ্মাসে, দাতা ওঁ অর্চ্চির্য্যামো ভবস্তম্, বরঃ ওঁ অর্চ্চর ইতি বদেৎ। ততো দাতা পদ্মপুষ্পবস্তাদিভিত্ৰভাৰ্চ্চা দক্ষিণং জামু ধুৱা ওঁ তৎসদম্য অমৃকে মাসি অমৃকরাশিত্তে ভাস্করে অমৃকে পক্ষে অমৃকতিথৌ অমৃকগোত্র: এঅমুকদেবশর্মা অমুকগোত্রসামুকপ্রবরস্থামুকদেবশর্মণঃ প্রপৌত্রং এবং পৌত্রং পুত্রং অমুক্রোত্রামুমকপ্রবর্ষ অমুক্দেবশর্ষাণং অমুক্রোত্রসামুক-প্রবরস্থামুকদেবশর্মণঃ প্রপৌত্তীং এবং পৌত্তীং পুত্তীং অমুকগোত্তামমুক-প্রবরাম্ অমুকীং ভভরান্ধবিবাহেন দাতুমেভির্গন্ধাদিভিরভ্যর্চ্চা বরত্বেন ভবস্তমহং বুণে ইতি বুণুরাং। বর: ওঁ বুতোহস্মীতি স্বীকুর্যাং। দাতা ওঁ ষথাবিহিতং বরকর্ম কুরু ইতি বদেৎ। বরঃ ওঁ ষ্ণাজ্ঞানং করবাণীতি ততো বরক্সযোম্বিচন্ত্রিকাং কারয়েৎ। ততো দাতা ওঁ বিষ্টরো বিষ্টরো বিষ্টরঃ ইতি প্রৈষেণোক্তে প্রতিগৃহতামিতি দভাৎ, বর: ওঁ বিটরং প্রতিগৃহামীতি গৃহীভাওঁ অনহং বর্ম সজাতানাং বিজুতামিব স্থাঃ। ইদন্তমধিতিষ্ঠামি যোমা কশ্চাভিদাসতি ইত্যুদগতো বিষ্টরে উপ-বিশেৎ। দাতা পুনর্বিষ্টরং তথৈব দভাৎ। বরন্তং পূর্ববদ্যহীত্ব। উক্ত-ক্রমেণ পুনব্মিপদে দভাৎ। ততো দাতা পাভং পাভং প্রতি-গৃহতামিত্যুকা প্রযচ্ছেৎ, বরঃ ওঁ পালং প্রতিগৃহামীতি গৃহীতা দক্ষিণবাম-ক্রমেণ পাদৌ প্রকালয়েং। দাতা অর্ঘ্যমর্ঘ্যং প্রতিগৃহতামিত্যকু। অর্পমেৎ, গ্রহীতা ও অর্ঘ্যং প্রতিগৃহামীতি গৃহীত্বা শির্মি নিদ্ধ্যাৎ অনেন মন্ত্রেণ—ওঁ অর্চত প্রার্চত প্রিরমেধাদো অর্চত ইতি। \* ততো দাতা ওঁ আচমনীয়মাচমনীয়মাচমনীয়ং প্রতিগৃহতামিতি ত্রিরুজ্বাপিতং জলং বরঃ ওঁ আংচমনীরং প্রতিগৃহামীতি গৃহীত্বা ওঁ অমৃতোপত্তরণমদি স্বাহা ইতি আচামেৎ। দাতা মধুপকো মধুপকো মধুপকঃ প্রতিগৃহতাম্ ইতি দছাং। বর: ওঁ মধুপর্কং প্রতিগৃহ্নামীতি গৃহীত্বা ওঁ মিত্রস্থা চকুষা প্রভীক্ষে ইতি পঞ্চেৎ। ওঁ দেবস্ত তা সুবিতৃঃ প্রসবেহয়িনোর্বাছভ্যাং প্ৰেণ হন্তাভ্যাং প্ৰতিগৃহামীতি তমঞ্জলিনা প্ৰতিগৃহ মধু বাতেতি তিন্দণাং রাছগণো গৌতমঋষিবিধেদেবা দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দো মধুপর্কাবেক্ষণে বিনিয়োগ:। ওঁমধু বাতা ঋতায়তে মধু করস্তি দিয়ব:। মাধ্বীন: সলো-

অত্ত গৃহস্তে পরিশিষ্টে ভাষ্যে চ মস্তো ন ধৃতঃ।

ষ্বী: । ওঁ মধু নক্তমৃতোৰসো মধুমৎ পার্থিবং রক্ষ:। মধু ছোরস্ত ন: পিতা। ওঁ মধুমালো বনস্পতিম ধুম'। আছে স্থাঃ। মাধ্বীপাবো ভবন্ত নং। ইতি ত্যুচেণাবেক্যানামিকয়া চাকুঠেন চ ত্রিঃ প্রদক্ষিণমালোড্য বসবস্থেতি চত হৃণাং বহুশ্ৰত ঋষিণি ছোক। দেবত। উঞ্চিক্ছলে। মধুপৰ্কনিৰ্মাৰ্জনে (প্রক্ষেপণে) বিনিয়োগ:। ওঁ বসবস্থা গায়ত্রেণ ছন্দদা ভক্ষয় ইতি পুরস্তা-ন্নিৰ্মাষ্টি ওঁ কুদ্ৰাস্থা তৈই,ভেন ছন্দদা ভক্ষমন্ত ইতি দক্ষিণত: ওঁ আদিত্যাস্থা জাগতেনচ্ছল্যা ভক্ষন্ত ইতি পশ্চাৎ, ওঁ বিশ্বে তা দেবা আহুই,ভেন ছল্মা ভক্ষন্ত ইতি উত্তরত ওঁ ভূতেভাঞা প্রক্ষিণামি ইতি মধ্যতঃ গৃহীয়া ত্রিক্রং-ক্ষিপতি। ততো ভূমৌ পাত্রং নিধায় বিরাজো দোহো২দীত্যস্ত ত্রিতঋষি-লি ক্লোক্তা দেবতা গায়ত্রীচ্ছনেদা মধুপর্কপ্রাশনে বিনিয়োগ:। ওঁ বিরাজে। rোহোহদি ইতি প্রথমসন্ত্রীয়াও। ওঁ বিরাজো দোহমণীয় ইতি দ্বিতীয়ং, **ওঁ** ময়ি দোহ: পছাবৈ বিরাজ, ইতি তৃতীয়ং, ন সর্কমন্ত্রীয়াৎ শেষং শিষ্যেভ্যো দতাৎ, অপ্স বা ক্ষিপেৎ। শৌচার্থমাচমনং কৃতা অথাচমনীয়েনারাচামতি ওঁ অমৃতাপিধানম্স (স্বাহা) ইতি প্রথম্ম। ওঁ সভ্যং যশঃ শ্রীম্প্লি শ্রী: শ্রন্থতামিতি विजीयः। व्यानारत्यामकात्र वतात्र माजा এकरमान वकाः गाः शोर्शिरार्शितिजि নিবেদয়েও। ওঁ হতো মে পাপ্মা পাপ্মা মে হত ইতি জপিতা নাতা ক্রাণামিতি ভার্ব-জামদগ্লিশ্বির্গিদেবতা ত্রিষ্ট্ ছন্দো গোমোক্ষণে বিনিয়োগ:। ওঁ মাতা কূদ্রাণাং ছহিতা বস্থনাং স্বসাদিজানামমূতক্ত নাভি:। প্রণুবোচং চিকিতৃষে জনায় মা গামনাগামদিতিং বধিষ্ট। ততো দাতা यक्रनमत्होर्यायिक्षः कन्नात्रा क्रिक्निच्छः वत्रहत्छान्ति निवसार। एटा ব্রাহ্মণান বাচয়েৎ #--ওঁ শিবা আপ: সন্ত, সৌমনশুমস্ত অক্ষতঞারিইঞাস্ত,দীর্ঘ-মায়ুরস্তু,শ্রী: কান্তি: পুষ্টি: শান্তি: স্থিতিরস্তা। ওঁ অস্ত ইতি অপরবান্দণো বরোহপ্যেতৎসর্বাং বদেৎ।

### অথ কন্যাদানম্

ওঁ এততৈ সবস্বাচ্ছাদনালস্থ্তায়ৈ কন্যায়ে নমঃ ইতি ত্রিঃ প্রোক্ষ্য সম্পূল্য বামপাণিনা ধুহা ওঁ অভোত্যাদি অমুক্গোতঃ শ্রীমন্কদেবশর্মা

<sup>\*</sup> অত পরিশিষ্ট:—দাতা বৃণীধ্বিতি জরাদেবং তিঃ প্রযুজা দাতা প্রদানতি চোচৈচন্ত্রিকর্মাৎ, অধ ব্রাহ্মণা উজ্বন্তারনাঃ শিবা আপঃ সন্ত সৌমনভ্যমন্ত অক্ষতং চারিষ্টং চাল্ড দীর্ঘমায়ু: শ্রেয়: শান্তিঃ প্রিষ্টশ্চান্ত ইত্যাজ্ব। এতম্বচঃ সভামন্তিভান্ত সমানা আকৃতিঃ প্রস্থা,
মন্তাধির সানভ্য সক্ষনীত্যেতা পঠেয়ঃ। ইতি বিশেষমাই।

শ্ৰীবিষ্ণুপ্ৰীতিকাম: অমুৰ্গোত্ৰসামুকপ্ৰব্যক্ত অমুক্দেবশৰ্মণ: প্ৰপোদ্ৰায় এবং 'পৌলার, পুলারামুকপোতারামুকপ্রবরারামুকদেবশর্মণে বরার ত্রান্ধ-পারার্চিতার—অমুকগোত্রসামুকপ্রবরস্থামুকদেবশর্মণঃ প্রপৌত্রীং পৌত্রীং পুলাং অমুক্লোত্তামমুক্প্রবরাং প্রীম্মমুকীদেবীমর্চিতাং, এবং ত্রিরাবৃত্তং কৃষ্ এনাং কন্তাং সালস্বারামাচ্ছাদিতাং প্রজাপতিদেবতাকাং তৃভ্যমহং সম্প্রদদে। ইতি জ্বলং বরহত্তে দভাৎ। ততো বর: স্বস্তীত্যকা গায়ত্রীং পঠেৎ। ততঃ কলেমং প্রজাপতিদেবতাক। ইতি বদেৎ। ততো দাতা ওঁ ধর্মে চার্থে চ কামে চ নাতিচরিতব্য। ছয়েমমিতি বদেৎ। বরোহপি ওমিতি প্রতিগৃহ স্বন্তীত্যুক্ত। \* কামস্বতিং পঠেৎ—প্রজাপতিশ্ববিং কামো দেবতা বৃহতীক্ত্নাং কামস্বতিপাঠে বিনিয়োগ:। ওঁক ইনং কথা অনাৎ কাম: কামায়ানাৎ কামো নাতা কাম: প্রতিশ্রহীতা কামং সমুদ্রমাবিশ কামেন তাং প্রতিগৃহামি কামৈততে, বৃষ্টি-রদি ছৌন্থা (পরি) দদাতু পৃথিবী প্রতিগৃহাতু। + ততো বান্ধণান্ বাচম্বেৎ। ওঁ দিক্ষিণাঃ পাস্ত বহু দেয়ঞ্চ নো অস্ত প্রজাপতিঃ প্রীয়তাং তিথি-মূহুর্ত-করণ-নক্ষত্র-গ্রহলগ্ন-সম্পদ: সন্ত। ‡ ততঃ পুণ্যাহাদিকং বাচগ্নিছা কন্তাং কুশৈরভিধিঞেৎ — उँ ज्ञानादृष्टेमक नाधुरेः त्वतानात्मात्कार जित्रखिनाः ज्ञानिकाकानाम का-মূপাগসাংস্বস্থি তে মেধা। ওঁ ধৎকক্ষীবাংসং বলনং পুত্রো আন্দিরসামদ তেন নৈত্যে বিশ্বেদেবাঃ সংপ্রিয়াং সমজীজনম্। ও সমুদ্রজ্যেষ্ঠা সলিলস্ত यशां भूनानावस्त्रानिविभानाः । हेट्या वा बङ्घो द्ववर्षा दवां छ। आश्री দেবীরিহ মামবস্ক। ওঁ ধা আপো দিব্যা উত বা অবস্তি ধনিত্রিমা উত বা যাঃ বরংজা:। সমূদ্রার্থা ষাঃ শুচরঃ পাবকান্তা আপো দেবীরিছ মামবন্ত । ওঁ যাসাং রাজা বরুণো যাতি মধ্যে সত্যানুতে অবপশুন জনানাম্। মধুশ্চ, যতঃ ভচয়ে। যাঃ পাবকান্তা আপো দেবীরিহ মামবন্ত। ওঁ যাত্ম রাজা বরুণো यांच्र त्मात्मा वित्वतन्या यांच्युर्व्हः मनश्चि । देवचानद्या यांचिधः श्रीविष्टेखाः चारिं त्वीदिश्यामरस्य। उँचारिं। हि छिंछि, त्वा दः निरुच्य हेछि. তত্মা অৱদমাম ইতি। স্থ্যা সাবিত্রী ঋষি: প্রজাপতির্দেবতা জগতীক্তল:

দকিশেংনে ক্লামভিমৃখেতি পরিশিষ্ট্র্।

<sup>†</sup> অত্র পরিশিষ্টং—প্রজাপতিষমুশ্ব চা ধর্মপ্রজাসিদ্ধার্থং কল্পাং প্রতিগৃহানীতি জরাদেবং ত্রিঃ প্রযুদ্ধ্য পুরোধা দাত্বরৌ প্রতি বক্তস্ত হি শুরুধঃ সন্তি পুরীরিতি তিলো বিশিষ্ঠ। এতবং সভাসমুদ্ধবৃদ্ধিতি ক্ররাং। ইতি অতিরিক্তপ্ররোগমাহ।

<sup>‡</sup> এতত্ত পরিশিষ্ট্রতন্।

কন্তামভিম্ব্য জ্বপে বিনিরোগঃ। ওঁ আনঃ প্রজাং জনরত্ প্রজাপতিরাজরসার সমনজ্ব্যামা। অত্ম'রুলীঃ পতিলোকমাবিশ শরো ভব
ছিপদেশঞ্চতুপাদে। ইতি কন্তামভিম্ব্য জ্বেং। ততো দক্ষিণাং দ্যাং—
ওঁ অন্তেত্যাদি কৃতৈতং কন্তাসম্প্রদানকর্মণঃ প্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামিদং কাঞ্চনং
তন্মূল্যং বা শ্রীবিষ্ণুদৈবতমর্কিতমমূকগোজারাম্কপ্রবরারাম্কদেবশর্মণে বরায়
তৃত্যমহং সম্প্রদদে। বরঃ স্বতীত্যক্রা দক্ষিণাং গৃহীরাং। ততোহচ্ছিদ্রাবধারণং
কৃত্যা হৈ ওণ্যশান্তিং কুর্যাং। আচারাং পত্যদক্ষিণে বর্ম্পবেশরেং।
ইতি সম্প্রদানম্।

# অথ বিবাহ-কুশণ্ডিকা

তত্র বরঃ স্নাত আচারাৎ বয়ীমার্কণ্ডেয়পূজানন্তরং সামাক্তকাণ্ডোক্তমগ্নিং সংস্থাপাঝাধার চরুং প্রসাধ্য \* ইঝাধানান্তং কর্ম সমাপ্যাত্মবামে পত্নীমূপ-বেশ্য তত্যা দক্ষিণকেশপক্ষে উপাস্তরং বয়ায়াদনেন মন্ত্রেণ—† অয়ে বিশ্বেভিরি-ত্যক্ষ ভরন্বাজঝাররগ্রিদে বতা ত্রিষ্টুপ্ ছলো বধুদক্ষিণকেশপক্ষে উপাস্ত্রবন্ধনে বিনিয়াগঃ। ও অয়ে বিশ্বেভিঃ স্বনীকদেবৈর্ম্বণিনন্তং প্রথমঃ সীদ্যোনিন্। কুলায়িনং মৃতবন্তং সবিত্রে যজ্ঞং নর যজমানার সাধু। (তথৈব বামকেশ-পক্ষে বন্ধনম্) ইতি। ততাে বরঃ কল্যারৈ বল্পযুগাং দল্লাৎ। যুবং বল্পাণিত্যক্ত দীর্ঘতমাঝাবিমি ত্রাবন্ধণা দেবতে ত্রিষ্টুপ্ ছলো বল্পপ্রদানে বিনিয়োগঃ। ও বুবং বল্পাণি পীবসা বসাথে মুবোরচ্ছিত্রামন্তবোহসর্গাঃ। অবাতিরতমন্তানি বিশ্ব ঋতেন মিত্রাবন্ধণা সচেথে। ততঃ কল্পান্থী বাসসী গৃহীয়া পরিণাপরেৎ। ও যুবা স্ববাসাঃ পরিবীত আগাৎ স উ শ্রোন্ ভবতি জার্মানঃ। তং ধীরাসঃ কবন্ধ উল্লয়ন্তি সাধ্যো মনসা বেদয়ন্তঃ।

কাফ্রেবপদ্বতী সংগ্রী স্বাধানপ্রকারো দর্শিতঃ। বংগা—সমিত্রমাদার ও অল্পেতাাদি অনুকর্গোত্রঃ প্রী স্বাধ্বনর্পর্যা করিবামাণ বিবাহ-কর্মান্তরেমকর্মণি দেবতাপরিপ্রহার্থমধাধান-মহং করিবো। অস্মির্বাহিতেহগ্নে জাতবেদসর্গ্রিমিথোন প্রজাপতিমাঘারাজোনাগ্রিং প্রমান-মর্বার্মণং প্রজাপতিয় এতাঃ প্রধানদেবতা আজাদ্রব্যোগার্যারণং বরুণং প্রজাপতিং পূর্বমেতাঃ প্রধানদেবতা লাজন্তরোগাগ্রিং হবিঃলেবেণ খিইকৃত্রমাজোন ইর্মানরহনেন রুজং বিখান দেবান্ সংস্রবেণ সর্বপ্রারশ্ভিতদেবতা অগ্নিং দেবান্ বিক্রপ্রিং বায়ং স্বর্গং প্রজাপতিঞানজাতদােবনির্বর্গার্থকে আজাদ্রবেণ সাক্ষেন কর্মণা সম্প্রোহহং বক্ষ্যে ইতি দৃষ্কর্যা প্রজাপতিং মনসা ধ্যাছা তৃষ্কীয়গ্রে। জ্বরুরং।

<sup>†</sup> छेशीन्यवरक्रनामि शत्रभवावरमाक्रनासः कर्ष वान्यम्बर्णा न भूष्ठम् ।

ভতো বর: জাতবেদ্দ ইত্যক্ত ক্রপ্রধিজাতবেদা অগ্নির্দেবতা ত্রিষ্ট্রপ্ ছল: 'স্বন্তায়নে বিনিয়োগ:। ওঁ জাতবেদদে স্থনবাম দোমমরাতী বতো নিৰহাতি বেলঃ। স নঃ পৰ্ষণতি হুৰ্গাণি বিশ্ব। নাবেব দিরুং ছবিতাত্যগ্নিঃ। ইতি পঠেং। ততঃ ক্লাবরয়োরক্লোলাবলোকনম্। ওঁ অবোরচক্রপতি-ছ্যেধি শিবা পশুভাঃ স্থমনাঃ স্থবর্চাঃ। বীরস্থর্দেবকামা স্থোনা শরে। ভব 'दिशाम भः চতুম্পাদে। ততোহয়েঃ পশ্চিমতঃ সপুত্রাং !শিলাং প্রতিষ্ঠাপ্য শমী-পত্ৰ-মিশ্ৰিতান লাজান কুৰ্পে নিধায় সপ্তমগুলিকাৰ্থং পিটাতকমগ্নেঃ পূর্ব্বোত্তরকোণে উদকুত্বঞ্চ স্থাপয়েও। ততঃ কল্পয়া সময়ারব্বোবর আজ্যেন পঞ্চাহতীজু হয়াৎ। অগ্ন আয়ুংষীতি তিস্থাং শতং বৈথানসা ঋষয়ঃ প্रমানোহগ্রিদেবভা গায়ত্রীচ্ছন্দে। বিবাহে প্রাধানাজ্যহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ অগ্ন আয়ুংষি পবস আসুবোর্জমিষঞ্চ নঃ। আরে বাধর ছচ্ছু নাং স্বাহা। প্রমানার অগ্নরে ইনং নমম। ও অগ্নিঝ বি: প্রমানঃ পাঞ্জন্তঃ পুরোহিতঃ। ত্মীমহে মহাগয়ম্ স্বাহা। প্রমানায় অগ্নয় ইদং নমম। ও অগ্নে প্রস্থ স্থপা অস্মে বচ: স্থবীর্যান। দধন্দুরিং মরি পোষন্ স্থাহা। প্রমানার অগ্নরে ইনং নমম। প্রজাপত ইত্যস্ত হির্ণ্যার্ডৠিষঃ প্রজাপতির্দেবতা ত্রিষ্ট্রণ্ ছন্দে। বিবাহে প্রধানাজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ও প্রজাপতে ন বনেতাক্তরে। বিশ্বাজাতানি পরিতা বভূব। যং কামান্তে জুত্মন্তল্পে অস্তু বয়ং স্থাম পতরো রয়ীণাং স্বাহা। প্রজাপতর ইদং নমম। \* স্বম্যামাইত্যস্তাত্তেয়ো বস্কুইত-খবিবগ্নিদেবতা † তিই প ছন্দে। বিবাহে প্রধানাজ্যহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ অমর্যামা ভবসি মৎ কনীনাং নাম স্বধাবন গুঞ্ং বিভর্ষি। অঞ্জি মিত্রং स्वितः न त्रां निर्वक्षण हो समन्त्रा कृत्यां वि स्वाता । स्वश्च हेनः नमम । ‡ ততো বরঃ প্রত্যন্ত্র্যঃ প্রাল্থাসীনামা বন্ধা হন্তং গৃহীয়াননেন মন্ত্রেণ-গৃভামী-ত্যক্ত স্থ্যাসাবিত্ৰীঋষিষ্ঠগাদয়ো দেবতান্ত্নিষ্ট্প ছন্দঃ পাণিগ্ৰহণে বিনি-রোগ:। ওঁ গৃভামি তে দৌভগরায় হন্তং ময়া পত্যা জ্বদষ্টির্থান:। ভগো অধ্যমা সবিতা। পুরদ্ধিম হং আ তুর্গাইপত্যায় দেবাং। শ ইত্যানেন সাকুষ্ঠং

কেচিৎ আচাবা ঋগাহতীনাং বাাছ লাহতীনাক সমুচ্চরমিচ্চতি তেনা প্রছিতরঃ।
 নৈকে কাঞ্ন আহতিমিত্যাহঃ। ইতি গৃহত্তভাষ্যকার আহ।

<sup>†</sup> কেটিক্রামা দেবতা ইত্যালঃ। অগ্নিদেবিতা ইতি ঋক্সংহিভারাং পাঠঃ।

वाद्राप्तवणकाओं आकाल आहामार आक् आवामरहास्म। विविधः ।

প্র অত গৃহকার: অসুষ্ঠমেব গৃহীয়াৎ যদি কামরীত পুমাংস এব মে পুতা জারেরলিতি।

করং গুহ্লীয়াৎ। অথ গ্রন্থিবন্ধনম্। বিশ্বেত্তাত ইত্যস্ত ভার্গবনেমঞ্চালিক্লোক্তা দেবতা স্ত্রিট,প্ ছলো গ্রন্থিকনে বিনিরোগ: । ওঁ বিশ্বেত্তাতে সবনের্প্রধাচ্যা ষা চকর্ণ মধ্বলিক্র ক্ষতে। পারাবতং ষং পুরুসংভূতং বন্ধাবৃণোঃ শরভায় ঋষিবদ্ধবে। ততে। বরো বধুদহিতোহগ্নিং উদকুম্বঞ্চ প্রদক্ষিণীকৃত্য পঠেৎ— ওঁ অমোহত্মিরি সা বং সা ব্রক্তমোহতং গ্রেরতং পৃথিবী বং সামাহত্মুক্তং তাবেহি বিবাহবহৈ প্রজাং প্রজনয়াবহৈ সংপ্রিয়ে বোচিষ্ণু স্থমনস্তমানৌ জীবেব শরদঃ শতম্। ততো বরোহগ্রেকত্তরে দক্ষিণপাদেন বধ্নশানমারো-হরেৎ— ও ইমমশানমারোহাশের বং স্থিরা ভব। সহস্ব পৃতনারতোহভিতিষ্ঠ পৃতক্ততঃ। ততো বন্ধঞ্লাব্পন্তীয়্ ত্রিরভিনার্ঘ্য তদ্লাতা \* দিলাকানা-বপতি, তত্ত্ব মৃতক্ষবং দ্বা অর্থ্যমণমিত্যস্ত স্থ্যাসাবিত্রীঋষিলি স্বোক্তা দেবতা অত্ত্ত্প ছনেলা লাজহোমে বিনিয়োগ:। ও অধ্যমণ: হু দেবং কলা অগ্নিমবক্ষত। স ইনাং দেবে। অর্ধ্যনা প্রেতো মুঞ্চাতু মামুত: স্বাহা ইতি-বরেণ পঠিতে বধৃরঞ্জলিভেদমকুর্বতী লাজান্ জুত্রাৎ। ততোংগ্লিপ্রদক্ষিণং क्वा भृद्यवर निनादाहनभृद्यकः भूननीकान् गृहीवा अशानिकः भृद्यवर পঠিত্বা ওঁ বরুণং হু দেবং কন্তা অগ্নিষক্ষত। স ইমাং দেবো বরুণঃ প্রেতো মৃঞ্চাতুমামুতঃ স্বাহা।† বরুণায় ইদং নমম। ইতি দভাৎ। পুনরপি প্রদক্ষিণামারোহণপূর্ব কং পূর্ববৎ লাজান্ গৃহীত্বা ও পৃষণং হু দেবং কলা অগ্নিষক্ত। স ইমাং দেব: পূষা প্রেতো মুঞাতু মাম্ত: স্বাহা। প্রে ইদং নমম। ইতি দভাৎ। চতুর্থে প্রদক্ষিণমক্কবৈব লাজানভিবার্গ্য স্থপপুটে **रुख**दशः मञ्जा जृक्षीः अक्रुशार। जटा वटता यनि कन्नात्रा उर्नानिटनामनटक বিশিধে তলানেন মজেণ মোচবেৎ—ক্র্যাসাবিতীঋষিরস্থীপ্ ছলঃ কন্তা **(** त्वका निशासिकत्व विनित्ताताः। ७ थ वा मुकामि वक्रवका भागान्-বেন ছা বগ্নাৎ সবিভাস্থ শেবঃ। ঋতস্ত বোনৌ স্থকৃতস্ত লোকে রিষ্টাং ত্বা সহপত্যা দধামি। ইতি দক্ষিণাং শিথাং মোচয়তি। স্থ্যাসাবিত্তী-ঋষিরস্টুপ্ছন্দঃ কন্তা দেবতা শিথামোক্ষণে বিনিয়োগঃ। ওঁপ্রেতো

<sup>ূ</sup> প্রস্কারের ব্রীকাম:। রোমাত্তে হস্তং সাস্তমুভরকাম:। ইতি পাণিগ্রহণে কামনাভেদেন বিশেষমাহ।

লাতৃস্থানো বা ইভি গৃহস্তব্
।

<sup>†</sup> গৃহস্তে মুঞ্চাতু নামুতঃ ইভি পাঠো ধৃতঃ।

-মুঞ্চামি নামুতঃ পুৰকামমুভক্তব্। বথেরমিজনীচুঃ স্বপুলা স্ভপা সতি। ইত্যুত্তরাং শিখাং মোচয়তি। ততঃ প্রাগুদীচ্যাং দিশি বধুং সপ্তমগুলিকাস্থ সপ্রপদানি কাময়তি। সপ্ততিম হৈঃ—বস্ঞাতঋষিক্তিই প্ছলো লিকোকা নেবতাঃ সপ্তপনীকরণে বিনিয়োগ:। ওঁ ইয় একপদীভব সা মামনু-ब डा ७ र भूबान् विन्नावरेर वर्शस्य मञ्ज कत्रवेषः। देखि अथममधनिकाम्। ঋষ্যাদিকং পূর্ববং—ও উর্জ্জে দ্বিপদীভব সা মামন্ত্রতেত্যাদি। ইতি দ্বিতীয়-মণ্ডলিকাম্। এবং ওঁ রায়স্পোষায় ত্রিপদীভবেত্যাদি। ওঁ মায়োভব্যায় চতু-শদীভবেত্যাদি (৪) ওঁ প্ৰজাভ্যঃ পঞ্চদীভবেত্যাদি। (৫) ওঁ ঋতুভ্যঃ ষ্ট্পদী-ভবেত্যাদি। (৬) ওঁ স্থা সপ্তপদীভবেত্যাদি। (৭) ততো বেছাং দম্পত্যোঃ শির্দী স্ত্রিধায় পূর্বস্থাপিতকুস্তোদকেন জীবৎপতিপুত্রা আমপল্লবেনাভিষি-ঞেয়:। ততো বধুঃ ধ্রবমরুদ্ধতীং সপ্তথ্যধীন পশ্রেৎ, বরণ্চ মন্ত্রং পঠেৎ —ওঁ ধ্রবা ত্যৌশ্র বা পৃথিবী ধ্রবং বিশ্বমিদং জগৎ। ধ্রবাসঃ পর্বতা ইমে ধ্রবো রাজা বিশা-মরম। ও ধ্রুবন্তে রাজা বরুণে। ধ্রুবন্দেবো বৃহস্পতি:। ধ্রুবন্ত ইন্দ্রুণচাগ্নিন্দ রাষ্ট্ পারয়তাং ধ্রুবন্। ইতি \* দৃষ্টা বাচং বিস্তব্জেত ওঁ জীবপত্নী প্রজাং বিলেম্নমিতি। ভতে। যুৱসমাবেশান্দিনাস্তবে বধুপ্রবেশো ন ভবতি তদা প্রায়ন্ডিভং সমাপ্যাগ্রি विमर्ज्जात्वर। नाइतन इज्वीं हो सर कूर्या र। + अस्मिन् ममात्र आहोतार वत्र च বামভাগে বধৃমুপবেশ্য বরেণৈর তস্তাঃ দীমস্তে দিন্দূরং দাপয়েও। অথ প্রাস্থা-निकः यथोरित वरता वधः यानमारत्राष्ट्रपर । उँ शृथा ख्टा नम्रजू हेजाञ স্গ্রাসাবিত্রী দেবতে ত্রিষ্ট্রেশা যানারোছণে বিনিয়োগ:। ওঁ পূষা জেতো নয়তু হত্তগৃহাখিনা বা প্রবহতাং রথেন। গৃহান্ গচ্ছ গৃহপত্নী ষ্থাসো বশিনী ত্বং বিদ্থমাবদাসি। অথ পথি যদি নাবাগমনং ভবতি তদা তাং নাবমা-বোহমেৎ—ও অশাৰতা রীয়ত ইত্যস্ত দেবা ঋষয়োহগ্নিদেবিতা ত্রিষ্ট্ দেনা

† প্রান্থানিকং কর্ম প্রাথমিকভাও চতুপাঁহোমাও প্রাক্কার্য্য । বাহুদেবপদ্ধতে তথা ক্রিভিড্ছাচ্চ ইতাবধেরন ।

<sup>\*</sup> বাহ্নদেৰপদ্বতৌ গ্ৰহদৰ্শনানন্তরং ৰক্ষামাণা আশীর্বাচক। মন্ত্রা উলিখিতাঃ। বধা—ওঁ আবিধবা ভব বর্ধাণি শতংট্রনাগ্রন্থ হয়বাচা। তেজ্বা চ যশবা চ ধর্মপত্নী পতিব্রতা। জনয়েছত্ পুরাণি মাচ ছঃথং লভেৎ কচিৎ। ভর্ত্তা তে সোমপা নিতাং ভবেদর্মপরারণঃ। অন্তপুরা ভব ত্ব হংকা চ পতিব্রতা। ভর্তু কৈব পিতৃত্র তিন্তু ক্রানন্দিনী সদা। ইক্রস্ত ত বধেক্সাণ্ট্রীবরন্ত ববা প্রিয়া। শব্দরন্ত যথা গৌরী তত্ত ব্রুবিপ ভর্তুরি (তথা দ্বমপি ভর্তুরি ইতি পাঠান্তরন্)। আর্বেধণালুহুরা ভাৎ বশিষ্ঠ লাক্ষের টা। কৌনিকস্ত যথা শচী (যথা সতী) তথা দ্বর্মপি ভর্তুরি। গ্রুবিধি শোষাা মন্ত্রি মঞ্চং খাদাব্হশাতিঃ। মন্ত্রা প্রাধাবতী সংলীব শব্দঃ শতন্ ইতি ॥

লাবারোহণে বিনিয়োগ:। ওঁ অশ্বরতী রীয়তে সংরভধ্বমৃত্তিষ্ঠত প্রতরতা मथायः। देखाक्रिकतः। व्यथं जाम छेखरत्रां श्वामारत्रः। स्रवां मिकः श्वांतरः, বিশেষজ্ঞ নাববভারণে বিনিয়োগঃ। ওঁ অত্যাজহাম যে অসরশেবাঃ শিবা-স্বয়মুত্তরে মাভিবাজান। ইত্যর্দ্ধর্চেন। অথ পত্নীং রুদতীং দৃষ্টা বরো জপেৎ। उँ कीरः कृतसीठाना काकीवठी सविद्यांगांत्रिको तनवटा क्रमठीष्ट्रत्ना व्हर्भ विनिद्यांगः। उ कोदः क्रवस्ति विमय्रस्य अध्वदत मीर्घामस्थितिष्टः मीक्ष्य-न तः। वामः भिज्ञा । ये हेनः मरमित्रद्वममः भिज्ञा अनमः भित्रम्यः । \* ততঃ কল্যাণেরু দেশচতুষ্পথেরু বিশ্রম্য জপেৎ। মা বিদনৃ ইত্যক্ত স্ব্যাসাবিত্রী ঋষিঃ স্থ্যাসাবিত্রী দেবতা অন্তঃপ্ ছনদচতুষ্পথামন্ত্রণে বিনিয়োগঃ। 🧐 মা বিদন্:পরিপন্থিনো য আসীদন্তি দম্পতী। স্বগেভির্থ র্গমতীতামপদ্রান্তরঃ। বর্মনি চেম্বধুদমীক্ষকান পশ্চেৎ তদা ইমং মন্ত্রং জ্পেৎ—ওঁ স্থমন্থলীরিয়ং বধূ-রিমাং সমেত পশ্রত। সৌভাগামলৈ দ্বায়াথান্তং বিপরেতন। ততঃ ওত-দিবসে নববধুং গৃহং প্রবেশয়েৎ—ওঁ ইহ প্রিয়ং প্রজয়। তে সমুধ্যভামস্মিন্ গৃহে গাৰ্হপত্যায় জাগৃহি। এনাপত্যা তবং সংস্থজ স্বাধাজিবী বিদ্ধ মাবদাথং। ততঃ প্রাগগ্রীবাস্কৃতানভূচ্চর্মনি বধুমুপবেশয়েৎ। তয়া সংস্পৃষ্টঃ স্বয়মেব জুত্র্যাৎ— ওঁ আন ইতি চতস্থাং স্থ্যাসাবিত্ৰীঋষিঃ স্থ্যাসাবিত্ৰী দেবতা (নানাচ্ছনাংসি) আজাহোমে বিনিয়োগ:। আন: প্রজাং জনয়তু প্রজাপতিরাজ্বসায় সমন-ক্তর্যামা। অত্র্যক্ললীঃ পতিলোকমাবিশশল্পো ভব দ্বিপদে শং চতুষ্পদে স্বাহা। ইনং স্থ্যায়। † ও অবোরচকুরপতিয়োধি শিবা পণ্ডভাঃ স্মনাঃ স্বর্চাঃ। বীরস্থদে বিকামা স্তোনা শলো ভব দ্বিপদেশং চতুষ্পদে স্বাহা। স্ব্যায় ইদং নমম। ওঁ ইমাং অমিজ্মীচ্য অপুলাং মুভগাং কুণু। দশাস্তাং পুলানাধেহি পতিমেকাদশং কৃষি স্বাহা। স্ব্যায় ইদং নম্ম। ও সম্রাজ্ঞী শ্বত্তরে ভব সম্রাজ্ঞী খগ্রাং ভব। ননান্ত্রি সম্রাজ্ঞী ভব সম্রাজ্ঞী অধিদের্যু স্বাহা। সাবিত্রৈর ইদং নমন। ইতি চতুরাছতীছ ছা ওঁ সমগ্রন্ত ইত্যক্ত স্থাাসাবিত্রী ঋষিঃ স্থ্যা-সাবিত্রী দেবতা অনুষ্প্ছন্দো জপে বিনিয়োগ:। ওঁ সমঞ্জ বিশ্বেদেবা: সমাপো হৃদয়ানি নৌ। সন্মাতরিখা সন্ধাতা সমুদেট্রী দধাতু নৌ। ইতি নন্ত্রেণ পত্নৈ দধি প্রাশিতৃং ফছতি সা চালাম্য দধি প্রাশ্ত পুনরাচামেং। অথবা

কালেশিপদ্ধতৌ অত্ত গবিচ্ছলো দৈৰতানি ন গুতানি ৰাস্থ্যেৰপদ্ধতৌ তু গৃত্দিতি ।

<sup>†</sup> कारनिनक्षत्छ) जार्रन्पूष्टःक अरुवाः बहानाः विक्रत्निरेक्तरकार्वादाया नान्छ।

সমজ্ঞ ইত্যানেন আজাশেষেণ বধুহানমং অহানয়ঞ্চানক্তি। \* অথ চতুর্থীছোম:। স চ ত্রিরাত্রে নিরুত্তি ঘাদশরাত্রে সংবৎসরে বা কর্ত্তব্য:। শিথিনামানমগ্রিং সংস্থাপ্য উপলেপনাভাজ্যপ্রতাপনান্তং কর্ম করা চক্রং প্রপন্নেও। ততো মহ:-বাাহ্নতিভিশ্চত্র আজাহতীজুহুরাও। যথা—ও ভুরগ্নরে পৃথিবৈ চ দিব্যার চ মহতে চ স্বাহা। অথার ইনং নমম। ওঁ ভূবো বায়বে চাস্তরীক্ষার निराग्रिक महत्क क चाहा। वाग्रव हेनः नमम। **७ चः प्**र्याप्र निराग्रिक মহতে চ স্বাহা। স্থ্যায় ইদং নমম। ওঁ ভৃভূবিঃস্বন্দ্ৰমদে নক্ষত্ৰেভাো দিগ্ভ্যশ্চ † দিব্যায় চ মহতে চ স্বাহা। চক্রমদে নক্ষত্রেভ্যো দিগ্ভা ইদং নমম। তত-চরুণা ‡ সপ্তাহতীজুহিয়াৎ। ওঁ অয়ে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরদি যাস্তাঃ পতিন্নী তন্তামস্তামপজহি স্বাহা। অগ্নরে ইনং নমম। ওঁ বারো প্রায়শ্চিত্তে ডং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ষাস্তাঃ অপুল্রা তনুভামস্তামপজহি খাহা। বায়বে ইদং নমম। ও সূর্যা প্রায়শ্চিত্তে বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি যাস্তাঃ অপসব্যা তনুস্তামস্তামপজহি স্বাহা। সূর্যায় ইদং নমম। ওঁ অর্যামণং হু দেবং কন্তা অগ্নিমফলত। স ইনাং দেবো অধ্যমা প্রেতো মুঞ্চাতু মাম্তঃ স্বাহা । অধ্যম ইদং নমম। ওঁ বরুণং রু দেবং কক্সা অগ্নিময়ক্ষত। স ইমাং দেবো বরুণ: প্রেতো মুঞ্চাতু মামৃতঃ স্বাহা। বরুণায় ইদং নমম। ওঁ পূষণং হু দেবং কক্সা অগ্নিমধক্ষত। স ইমাং দেবঃ পূষা প্রেতো মুঞ্চাতু মামুত: স্বাহা। পৃষ্ণ ইদং নমম। ও প্রজাপতে ন ত্বেতাক্তকে। বিশ্বা জাতানি পরিতা বভ্ব। যৎ কামান্তে জ্হুমন্তরো অস্ত বয়ং স্তাম প্রৱোর্যীণাং স্থাহা। প্রজাপত্য ইদং নম্ম। শ অথ চরুণা স্থিষ্টকুতং সমাপ্য আজ্যেন প্রায়শ্চিত্তং সমাপয়েৎ। ততঃ উদীচ্যং কর্ম কৃতা পূর্ণাহত্যাং মৃত্নামানমগ্রিং সম্পুদ্ধ্য পূর্ণাহুতিং দল্পা দক্ষিণাং সমাপ্য স্বস্তায়নং বাচয়ীত। §

ইতি কালেশিপদভৌ বিবাহপদ্ধতিঃ।

চতুর্ণীহোষো ন স্ত্রকারগৃতঃ।

<sup>🛨</sup> ওঁ ভূতুবিংমঃ চক্রমদে নক্ষত্রেভো দির্ভাঃ প্রজাপতরে চ মাহা ইতি বাহদেবপদ্ধতি:।

<sup>া</sup> গৃহপরিশিষ্টমতে চতুর্থীহোমশ্চরুগৈব।

ष ওঁ ছোত। দলাতু পৃথিবী বা প্রতিগৃহাতু স্বাহা ছাবে ইদং নমস। ইতি অধিকো হোমো বাহদেবপদ্ধতিসম্বত: ।

<sup>§</sup> ওঁ সভ্যেনোন্ডভিডা ভূমি: স্থ্যেণোন্ডভিডা স্কৌ:। খডেনাদিত্যান্তিঠন্তি দিবি সোমো अधिकः। সোমেনাদিত। विननः সোমেন পৃথিবী মহী। अध्या नक्ष्णांगारमयाम्भरः

## অথ গৰ্ভাথানম্

তত্র মারুতো নামাগ্নি:। যদা পদ্মা: প্রথমং রজো ভবতি, তদা সা গৃহে ঋতু-ব্রতমাচরস্তী ত্রিরাত্রমতিবাহরেৎ। ততঃ বোড়শদিনাভ্যস্তরে জ্যোতিঃশাস্ত্রোক্ত-ফলবন্ধন-দিবসে পতি: কৃতনিত্যকৃত্য: সঙ্কল্পা সগণাধিপ-গৌর্যাদি-যোড়শ-মাতৃকা-পূজা-বহুধারা-সম্পাতনায়ুষ্যস্কজপাভাূদ্যিকানি ক্লবা শুভলগ্লসময়ে প্রাক্ণকৃতচ্ছারামগুণে মঙ্গলতুর্ঘাঘোষেয়ু সংস্থ প্রাজ্ঞ্থ আসনে উপবিশেৎ। পত্নী চ পরিহিতবন্ত্রালঙ্কারবতী নাভে নিহিতক্সবর্ণপদ্মা পত্যুর্বামপার্টে উপবিশেৎ। 

তত উপবেপনাদি-মেক্ষণসংস্কারান্তং কর্ম ক্র্যা প্রাক্ষাপত্যং চরুং + প্রসাধ্য ইথাধানাদিকং কুত্বাহয়েন মিকরণাঘারাজ্যভাগান্তং কর্ম কুর্য্যাৎ। ভতঃ পত্নীদমাররঃ পতিঃ স্রুচি স্রুবেণাজ্যং দত্তা পূর্বাদ্ধান্মেক্ষণেন বিরবদায় পুনরাজ্যেনাভিঘার্য ও প্রজাপতয়ে স্বাহা প্রজাপতয়ে ইদং নমম ইতি হ্যা বক্ষ্যমাণমন্ত্র: ‡ সপ্তাহ্তীজুহোতি—বিষ্ণুর্যোনিমিতি ত্যুচম্ম ( গভকর্ত্তা ) ছষ্টাঝ্যি ( হিরণ্যগর্ভশ্বাই: ) বিষ্ণু-ছষ্টু-প্রজাপতি-ধাতারো দেবতা অহষ্ট প্ছলো গর্ভাধানে (চরু)হোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ বিফুর্বোনিং কল্পয়তু স্বন্ধী রূপাণি পিংশতু। স্থাসিঞ্চু প্রজাপতিধাতা গর্ভং দধাতু তে স্বাহা। বিষ্ণু-স্বষ্টু-প্ৰজাপতি-ধাতৃভ্য ইদং নমম। ধেহীতি মন্ত্রস্থা (ছাটা) হিরণ্যগর্ভঋষিঃ দিনীবালী-সরস্বত্যশ্বিনো দেবতা অত্ত্রপ্ছলো গর্ভাধানহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ গর্ভং ধেহি সিনীবালি গর্ভং

সোম আহিত:। সোমং মহাতে পপিবান্ যৎ সংপিষজ্যোষধিম্। সোমং যং ব্ৰহ্মাণো বিহুন ডফালাতি কণ্চন। আছে ছিণানৈও পিতো বাহ তৈ: সোমরক্ষিত:। গ্রারামিছে গৃতিষ্ঠানন তে অলাতি পার্থিব:। ষরা দেব প্রপিবত্তি তত আপ্যাহ্মে পুন:। বারু: সোমস্ত রক্ষিতা সনানাং মাস আকৃতি:। ইতি স্ক্রার্থিকে বিপ্রায় দক্ষিণাং দ্যাদিতি বাহ্দেরপদ্ধতিমত্ম।

<sup>\*</sup> গর্ভাধানে পর্তারেবাধিকারঃ। তদঙ্গহোমে তু স্বয়সশক্তো রাহ্মণং সুণুরাও। যথা—ওঁ জন্তেতালৈ অমুক্ষেণাত্রগুর্বেদান্তর্গতাখনারনশাথৈকদেশাধ্যারিনং শ্রীঅমুক্দেবশর্মাণং মৎপ্রাঃ শ্রীঅমুক্টাদেব্যাঃ প্রথমন্ত্রপ্রাক্ষান্তস্ত্রহ্মন্তম্ব কর্তুং ভবস্তমহং বৃণে। ওঁ রতোহস্মীতি প্রতিবচনম্। যথাবিহিতং হোমকর্ম ক্রুইতি প্রার্থনেও। ওঁ যথাজ্ঞানং কর্বাণীতি প্রতিবচনম্।

<sup>†</sup> তত্ৰ চ বিশেষ:—ওঁ অন্তেত্যাদি কৰিব্য-গৰ্ভাধানকৰ্মান্তমখাধানমহং কৰিব্যে ইত্যাদ্যহো বাক্যে কাৰ্যাঃ। মুষ্টগ্ৰহণমভিহিত্য বাহদেবপদ্ধতো বধা—ওঁ বিফবে ছা জুইং গৃহামি এবং নিৰ্বেগামি, প্ৰোক্ষামি। তথা দিনীবাল্যৈ, অখিনীকুমারাভ্যাং, বিফবে, পৃথিব্যৈ, বিশ্বৰে, প্ৰালাভ্যে ইতি।

<sup>‡</sup> বাস্থদেবমতে চক্ষণৈব সপ্তাহতর:। পরিশিষ্টমতে আজ্যেন। ততীয়—১২

ধেহি সরস্বতি। গর্ভন্তে অখিনো দেবাবাধতাং পুন্ধরম্ভল সাহা। সিনীবালী-সরস্বত্যখিত্যঃ ইদং নমম। (বৃষ্টা) হিরণ্যগর্ভঃ ঋষিরখিনৌ দেবতে অত্থ প্ছন্দো গর্ভাধানহোমে বিনিয়োগঃ। ও হিরণায়ী অরণীয়ং নিৰ্মন্থতো অধিনা। তত্তে গৰ্ভং হ্বামহে দশ্যে মাসি স্তবে স্বাহা। অবিভ্যাম ইনং নমম। নেজমেবেতি তিম্বাং (ব্রা) হিরণ্যগর্ভশ্ববিঃ প্রজাপতিরে বতা (বিষ্ণুদে বতা) অম্ট্রপ্ছনে। গর্ভাধানহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ নেজ্বেষ পরাপত স্থপুত্রঃ পুনরাপত। অস্তৈ মে পুত্রকামারৈ গর্জমাধেহি যঃ পুমান স্বাহা। প্রজাপত্যে (বিফাবে) ইদং নমম। ওঁ যথেরং পৃথিবী মহাত্তানা গর্ভমাদধে। এবং তং গর্ভমাধেহি দশমে মাসি স্থতবে স্বাহা। विकटव ( পृथिदेवा ) हेमः नमम । उ विद्यक्षाः त्यात्र्वेन क्रार्पाणाः नार्याः গবীন্তাং। পুমাংসং ( পুত্রান্ ) পুত্রমাধেহি দশমে মাসি স্তবে স্বাহা। বিষ্ণবে ইদং নমনঃ প্ৰজাপত ইত্যক্ত হিরণ্যগর্ভশ্বিঃ প্ৰজাপতিদে বতা ত্রিষ্টুপ্ ্ছনো গর্ভাধানে (চরু) হোমে বিনিয়োগঃ। ও প্রজাপতে ন ব্রেভান্তরে বিশ্বা জাতানি পরি তা বভূব। যৎকামান্তে জুত্মন্তলো অন্ত বয়ং স্থাম পতরে! রয়ীণাং স্বাহা। প্রজাপতরে ইদং নমম। ইতি সপ্তাজ্যাত্তীজুহোতি। ততো পতির্ক্যমাণ্মস্ত্রৈঃ প্রাু। মৃদ্ধান-মালভেত। অপ নঃ শোশুচদঘমিতাক্ত অইর্জক্ত স্কুক্তক্ত কুৎস্থাবিঃ শুচিরগ্নি-দেবিতা গারত্রীচ্ছন: শির আলভনে বিনিয়োগ:। ও অপন: শোওচদ্বমগ্নে শুশুগ্রা ররিম্। অপনঃ শোশুচদবম্। ওঁ সুক্ষেত্রিয়া সুগাতুয়া বসুয়া চ ষজামতে। অপনঃ শোশুচদবন্। ওঁ প্রবদ্ ভন্দিষ্ঠ এবাং প্রাম্মাকাসন্চ সূরবঃ:। অপন: শোগুচদঘম্। ওঁ প্রবত্তে অধ্যে স্বরেরা জারেমহি প্রতে বয়ম। অপনঃ (শাক্তচদ্বম্। ওঁ প্রাবদয়েঃ সহস্বতো বিশ্বতো যন্তি ভানবঃ। অপনঃ ৰোভচদঘম্। ওঁ বং হি বিখতোম্থ বিখতঃ পরিভ্রসি। অপনঃ শোগুচদ্বম। ওঁ বিষো নো বিশ্বতোম্থাতিনাবেব পারয়। অপনঃ শোগুচদ্বম্। ওঁ স নঃ সিরুমিব নাবধাতি পর্বা অস্তব্যে। অপনঃ শোগুচদ্বম্। (ততো বাঃ ফলিনীর্যা অফলা অপুন্দা বান্চ পুপ্রিণীঃ। বৃহস্পতিপ্রস্থতান্তা নো মুঞ্জংহস: এতাং জপিতা বধেন দক্ষ্যমিতি ষ্ণাং বস্ত্রশতক্ষবির্গি-দেবিতা ত্রিষ্ট্রেশাংগ্রপস্থানে বিনিয়োগাং। ও বংখন দক্ষ্যাং প্রহি চাতয়ম্ব বয়ঃ য়য়ানন্তবে স্বাবয়। পিপর্ষি বৎ সহসম্প্রদেবান্ সো 'অব্যে পাহি নৃতম বাজে অসান্। ওঁ বয়স্তে অগ উক্থৈবিধেম

বরং হব্যৈ: পাবক ভদ্রশোচে। অব্দ্রে রব্ধি বিশ্ববারং সমি-ৰাম্মে বিখানি ত্রবিণানি ধেহি। ওঁ অম্মাকমগ্নে অধ্বরং ভূষম্ব সহসঃ স্থান। ত্রিষধস্থ হব্যম্। বয়ং দেবেরু স্কুক্তঃ স্থাম শর্মণা নিজ্ঞবর্কথেন পাহি। ও বিশ্বানি নো হুর্গহা জাতবেদঃ সিন্ধুং ন নাবা ছরিতাতিপর্ধি। অঞ্চে অত্তিবল্লমদা গুণানোহস্মাকং বোধ্যবিতা তনুনান্। ওঁ যন্তা হাদা কীরিণা মক্তমানো মর্ত্ত্যং মর্ত্ত্যো জোহবীমি। জাতবেদো বশো জমাস্থ ধেহি প্রকাভিরগ্নে অমৃতত্বমস্তাম্। ও ধন্মে তং স্কুতে জাতবেদ উলোক-মথে রুণবঃ স্থোনম। অধিনং সপুদ্রিণং বীরবস্তং গোমস্তং রৃদ্ধিং ন শতে স্বন্ধি। অগ্নিস্ক বিশ্রবন্ধনিতিবদোরাতেদ্যোবস্থবঋষিরগ্নিদেবিতা অন্ত্রপ্ ছন্দোহগ্যপস্থানে বিনিয়োগঃ। ওঁ অগ্নিস্ত বিশ্রবন্তমং ভূবি ব্রহ্মাণ-মুত্তমম্। অভূর্তং শ্রাবয়ৎ পতিং পুত্রং দদাতি দাশুৰে । ওঁ অগ্নি-র্দাতি সংপতিং সাদাহয়ো যুধা নৃভিঃ। অগ্নিরত্যং রঘুষ্যদং জেতার-মপরাজিতম্।) ইত্যপ্তাভিরগ্নিমূপস্থায় । স্বিষ্টকুদাদিহোমশেষং (চকুণা) সমাপ্য কুর্য্যাপস্থানং + কুর্য্যাৎ। কুর্য্যো নো দিবস্পাত পঞ্চতিত্ত স্কুন্ত চকুশ্বি: স্র্ব্যো দেবতা গায়ত্রীচ্ছন: স্র্ব্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ। ওঁ স্থোঁ নো দিবস্পাত বাতো অস্তরিক্ষাৎ। অগ্নির্ন: পার্থিবেভ্যঃ। জোষা সবিতর্যস্য তে হরঃ শতং সবা অর্হতি। পাক্তি নো দিত্যতঃ পতস্ত্যাঃ। চক্ষ্নের্ব দেবঃ সবিতা চক্ষ্ন ইত পর্বতঃ। চক্ষ্-ধাতা দধাতু নঃ। চক্ষ্নে ধেহি চক্ষ্বে চক্ৰি থৈয় তন্তাঃ। সংচেদং বি চ পশ্রেম। স্থানদূশং তা বয়ং প্রতিপশ্রেম স্থ্য। বিপশ্রেম নুচক্ষসঃ। ‡ ততঃ পতিরুখার স্ব্যায়ার্ঘান্ন্ কুর্যাৎ ¶ —বথা আরুফেনেতি মন্ত্রস্ত হিরণান্ত,পশ্বষি: সবিতা দেবতা ত্রিষ্ট,প্ছন্দঃ স্ব্যার্ঘ্যদানে বিনিয়োগঃ। ওঁ আক্লফেন রজ্পা বর্ত্তমানো নিবেশয়রমূতং মত্যঞ। হিরণ্যয়েন সবিতা রথেন। দেবো যাতি ভবনানি পশুন। ওঁ বিখাত্মা বিখকর্তা চ বিখেশো বিখদক্ষিণ:।

ঋগাপস্থানং নামদেশীয়পুয়কে লিখিতং ধৃতন্ত পরিশিষ্টকৃতা অতো নোপেকিতম্।

<sup>+</sup> পরিশিষ্টমতে আদৌ সুর্বোপস্থানং ততঃ বিষ্টুকৃদ্ধোর:।

<sup>়ৈ</sup> ভতো যাঃ ফলিনীথা অফলা ইত্যাদি স্থ্যমুপন্থার ইত্যন্তো ভাগো নামদেশীরপুতকের্
দৃখতে। দৃখতে তু গৃহগরিশিটে দেশান্তরীরপুতকের্ চ নাত উপেক্ষিতঃ। অধাত্র অম্বদেশীর:
পুতকে বিশেষঃ। আক্টেনেতি স্থাব্যদানম্।

প পরিশিষ্টকৃতা সূর্যার্ঘাদানং ন বিহিতন্।

नवशूरम्भाष्त्रत्व कार्त्व शृहांगांचाः निवांकत्र । नमरख शिन्ननीकाख स्था-कांख नरमारुख राज । नवभूरम्भारमस्य स्थानम् गृहांभाषाः विवाकत । अखिमेरिकः र्शार्धाः म्हार। ७७: कनवस्तम् यथा-याः कनिनीतिष्ठि मञ्जन्न विज्यविर्वन-স্পতিদে বিতাহ হুটু প্ছন: ফলদানে বিনিয়োগ:। ওঁ বাঃ ফলিনীরিত্যাদিঃ। ওঁ সা<sup>,</sup> চ প্রসারিতকরা ষাঃ ফলিনীরিতি-মন্ত্রেণ পজ্যৈ ফলানি দভাৎ। পুলাণামিত্যাশংসম্ভী গুহীয়াং। ইতি চ অতিরিক্তপাঠ: কুত্রচিৎ বর্ত্ততে, পরিশিষ্টকৃতা ন ধৃত:। তত: স্বিষ্টকুদাদি সমাপরেৎ। ওঁ অন্তেত্যাদি মৎপত্মা অমুকীদেব্যা: কুতৈতৎ ঋতুসংস্কারকর্মাকভূত-সত্রন্মক-হোমপ্রতিষ্ঠার্থং দক্ষিণামিদং পূর্ণপাত্রামূকল্পভোজ্যং বন্ধণে তৃভ্যমহং সম্প্রদদে। ততোংচ্ছিদ্রাবধার-ণম্। অথ গর্ভলম্। \* ঋতাবহুক্লারাং নিশি অলঙ্কতে স্থান্ধবাসিতে বেশ্বনি তথাভূতে পর্যান্তশয়নে স্থলাতামলয়তাং শুক্রবসনাং অধিনীং ভার্য্যাং স্বয়ং তথাভূতঃ প্রবেশ্র দুর্কাঃ পিষ্টু। অশ্বস্কাং বা স্ক্রেণ বাসসা সংগৃহ উদীৰ্ঘাত ইতি মন্ত্ৰমুখ্য স্থ্যাসাধিতীঋষিঃ স্থ্যাসাধিতী দেবতা **ভা**ভা-ত্রিই,ব্-মন্ত্যা অনুষ্প্ছলো নস্লানে বিনিয়োগ:। ওঁ উদীৰ্ঘতিঃ পতিবতী হোৱা বিশ্বাবস্থা নমদা গীর্ভিরীলে। অক্তামিচ্ছ পিতৃষদং ব্যক্তাং সতে ভাগো জহুষা তক্ত বিদ্ধি (স্বাহা)। ও উদীর্ঘাতে। বিশ্বাবদো নম দেলামহে থা। অকামিক প্রকর্ম্যাং সংজাবাং পত্যা স্তল (স্বাহা)। ইতি উভরোন সা-বিলরোনি বিচ্য ওঁ গর্ম্বক্ত বিধাবসোম্ খনদীতি উপস্থমভিম্ভ বিষ্ণুর্বোনি-মিতি মন্ত্রত বশিষ্ঠ বিশিকোকো দেবতা অনুষ্ঠ প্ছলো বোনিবিকাশে বিনিয়োগঃ। ওঁ বিষ্ণুর্ঘোনিং কল্পমতু ঘটা রূপাণি পিংশতু। প্রজাপতিধাতা গর্ভং দধাতু তে । ইতি দারং বিদারমেৎ। তাং প্যরিতি মন্ত্রস্ত স্থ্যাসাবিত্রীঝবিঃ স্থ্যাসাবিত্রী দেবতা পঙ্কিশ্ছন্দঃ পত্ন্যুপগমনে বিনিয়োগঃ। ওঁ তাং পৃষঞ্ছিবতমা মেরয়য় যস্তাং বীজং মহুয়া বপস্তি। যা ন উর উশতী : বিপ্রয়াতে যত্তামুশস্তঃ প্রহরাম শেকম্। ইতি ঘাভ্যাং বিহরেৎ ( ষদ্যামিতি স্থানে সপ্তমান্তং পত্নীনাম গ্রহীতব্যম্ )। অতঃ পরং পুত্তকান্তরে বিশেষো লিথাতে—যো গর্ভমিতাশু বশিষ্ঠঋষিঃ পর্জ্জাে :দেবতা গায়ন্ত্রীচ্ছনো জপে বিনিয়োগঃ। ওঁ যো গর্ভমোষধীনাং গবাং কুণোত্যর্কতান্ পর্জন্তঃ পুরুষীণাং।

নস্ত দানং নাক্সদেশীরপুদ্ধকেন ধৃতধ্ পরিশিষ্টকৃতা বিহিতধ্।

আহং গর্ভমিত্যক্ত প্রান্তাপত্যশ্বহিং পত্নী দেবতা ত্রিষ্টুপ্ ছন্দো জপে বিনিয়োগং। ও অহং গর্ভমদধামোষধীষহং বিষেষ্ ভ্রনেষস্কঃ। আহং প্রজা অজনয়ং পৃথিব্যামহং জনিভ্যো অপরীবু পূলান্। ইতি জপিত্বা উপগচ্ছেৎ। ততঃ ও প্রাণেতে রেতো দধাম্যমে ইত্যক্তপ্রাণ্য ও বথা ভূমিরয়িগর্ভা ষথা ছৌরিল্রেণ গর্ভিণী। বায়ুর্যথা দিশাং গর্ভ এবস্তে গর্ভং দধাম্যমে ইতি হৃদয়মভিমৃশেৎ। \* (নৈকে উপগমনে মন্ত্রবিধিমিছ্ছিন্ত ন হৃনেন কিঞ্চিৎ সংক্রিয়তে। তে ওষধীভিনিষ্কেং কুত্বোপগছ্জি।) পরিশিষ্টমতম্ ইতি। অসাবিভিসর্কনামস্থানে সম্বোধনান্তং বধনাম প্রযোক্তব্যম্। ততঃ পঞ্চগব্যং বয়্বং পায়য়েও। তত আচারাৎ বয়বা নাভিদেশাৎ স্বর্ণেন স্বতং পাত্রেও। ইদঞ্চ গর্ভাধানং বদি স্বকালে ন ক্রিয়তে তদা পুংস্বনসীমন্তোয়য়নকালয়োনরপি কর্ত্ব্যং নিত্যত্বাও।

## ইতি গৰ্ভাধানম্।

#### অথ পুংসবনম্

তত্ত চন্দ্রনামা সগ্নিঃ। গর্ভস্ত তৃতীরে মাসি প্রানক্ষত্তে এতৎ কর্ত্তবাদ্যন্ত ন চ সামাস্তনক্ষত্তা দিশুদ্ধিবাদরণীয়া বিধিনিমিন্তবাং। ততঃ পুংসবনদিবদে নির্বাহিতনিতারতাঃ পতিম তিপুলাদিপ্রবৃক্তং বৃদ্ধিশ্রাদ্ধং কুর্যাং। গর্ভবতী চ প্রবিদিনে সরুৎকৃতহবিষ্যভোজনা নিম স্থনাদিমগলপ্র্বকং প্রাবৃতস্থানে সায়াং। ততো লগ্নদমরে ছায়ামগুপে পতিঃ প্রাস্থ্য স্বাসনোপবিষ্টঃ কর্ম কুর্যাং। (স্বয়শক্তো প্রবিদ্বৃত্তো ব্রাহ্মণঃ) হোমকর্তা চন্দ্রনামানমগ্নিং প্রতিষ্ঠাপ্য (অহাধার) + পরিসমূহনপরিস্তরণাদি-প্রণীতাপ্রণয়নাস্তঃ কৃত্বা প্রস্থাপতরে বা লুইং নির্বাপামীতি চতুরো বীহিম্টীরির্বাস্য প্রোক্ষণাব্যাতাদি

<sup>\*</sup> অতঃপরং প্তকান্তরে বিশেষ:। ওঁ আপ ইত্যত্তেমনীরাপোহনীব চাতনীঃ।আপঃ
সর্বান্ত তেমনীতাতে কুণ স্ত ভেমনুম্ ইত্যুপস্থং প্রকাল্য ওঁ হস্তাভ্যাং দশশাধাত্যাং নিব্বানাচঃ
প্রোগবি। অনায় ইত্যভান্ত্যাং হোপম্পুশামসি অনেন বোনিং প্রকাল্যেং। ততো হস্তো
পাদৌ প্রকাল্য বিরাচ্যা স্ব্যোপস্থানমগু প্রবাক্তমন্তৈঃ কুর্যাৎ ইতি ক্রমভেদঃ।

<sup>†</sup> ওঁ অন্তেতাদি ক্রিয়মাণে অমিন্ পুংস্বনহোমে দেবতাপরিগ্রহার্থযবাধানসহং করিবো অমিরবাহিতেহগ্রে জাতবেদসমন্ত্রিবিয়েন প্রজাপতিমাদারাজ্যেন অগ্নীবোমে চকুবা আজ্যেন প্রজাপতিং চরুণা লেবেণ বিষ্টকুত্রমিগ্রসন্ত্রহনেন রুক্তমন্ত্রসাধাসমন্তিং দেবান্ বিস্কৃমন্তিং বারুং হ্রাং প্রজাপতিকৈতাঃ প্রায়ক্তিভদেবতা আজ্যেন বিবান্ দেবান্ সংপ্রবেণ সাজ্যেন কর্মণা সজ্যেহহং বক্ষ্যে। ইতি বাস্থদেবসন্থতন ।

वर्हिषि रविदामाननासः कर्ष कृषा चनकित्व चानजूराकित्न उपविष्टेया পज्जा **অ্যারনঃ আক্র**ভাগান্তং তস্তা গোরোচনাদিরতরক্ষালম্বারায়াঃ কুত্ব পরিহিতরক্তবস্ত্রযুগ্মায়াঃ অবিদ্নশরাবহস্তায়া লিখিতবাস্থদেবাদিদাদশনাম-<u>ণস্তবেষ্টনকৃতরক্ষারা: প্রদারিকদক্ষিণহস্তারা: পত্র্যা: প্রস্থতীকৃতে দক্ষিণে</u> পাণো স্মানরপ্রংসায়া অভাবে অস্মানবংসায়া অপি গোঃ প্রস্তি-পরিমিতং দধি নিক্ষিপ্য তত্ত্বপরি অগুবৎ দ্বৌ মাধৌ শিশ্লবৎ ষ্বমেকং নিধায় কিং পিবদীতি ত্রিঃ পুচ্ছেৎ। সা চ পুংস্বন্মিতি ত্রিক্স্কু। স্বব্মাষং তৎ পিবেৎ। পুনরেবং বিঃপ্রশ্নপ্রতিবচনপূর্বকং প্রাশ্র আচামেৎ। পতিঃ জীববৎসাভ্যাং দম্পতিভ্যাং শিশিরপিষ্টদূর্কারসেন দক্ষিণনাসাপুটে নস্তং দ্ভাদনেন মন্ত্রেণ—ওঁ আতে গর্জে। যোনিমৈতু পুমান্ বাণ ইবেষ্ধিম্। আবীরো জায়তাং পুত্রন্তে দশমাস্তঃ। ওঁ জায়িরৈত প্রথমো দেবতানাং সোহসৈত প্রজাং ষ্পতু মৃত্যুপাশাং। তদয়ং রাজা বরুণোহত্মন্যতাং যথেয়ং স্ত্রীপৌত্রমঘং ন রোদাৎ। ততো হ্রদয়দেশমস্তা আলভেত যত্তে স্থুসীম ইতাস্ত প্রজাপতি-শ্বিক্তন্ত্রো দেবতাহমুষ্টুপ্ ছন্দো হৃদয়ালভনে বিনিয়োগ:। ওঁ যতে সুসীমে হৃদরে হিতমন্ত: প্রজাপতে । মন্যেখহং মাং তদ্বিদাংসং মাহং পৌল্রম্বং নিয়াম্। ততঃ † পত্নীসমারদ্ধো হোমকর্তা চরুণা ওঁ প্রজাপতরে স্বাহা প্রজাপতয়ে ইদং নমম ইতি হ্বা বক্ষামাণমন্ত্রেশ্চকৃতিঃ ষড়াহতীজুহোতি। **ব্রদ্মণাগ্নিরিতি** ষড়চন্ত স্ক্রন্ত সাংখ্যঋষিত্র সাগ্রী দেবতে অনুষ্প্ বিনিয়োগঃ। প্রধান*চ*ক্তহোমে ওঁ ব্ৰহ্মণাগ্নিঃ সংবিদানো রকোহা বাধতামিত:। অমীবা বল্তে গর্ভং তুর্ণামা বোনিমাশরে স্বাহা। ইদমগ্নীব্ৰশ্বভাং নমম। ওঁ ষত্তে গর্ভমমীবা তুর্ণামা যোনিমাশয়ে। অগ্নিষ্টং ব্ৰহ্মণ। সহ নিজ্ঞব্যাদমনীনশৎ স্থাহা। ইদমগ্ৰীব্ৰহ্মভাগং নমম। ওঁ যতে হস্তি পতন্ত্ৰতং নিৰৎস্থং যঃ সরীস্থপম্। জাতং যত্তে জিঘাংসতি তমিতো নাশয়ামসি . স্বাহা। ইদমগ্নীব্রন্ধ ভাগে নমম। ওঁ ৰস্ত উরু বিহরতান্তরা দম্পতী শরে। যোনিং বো অন্তরারেটি তমিতো নাশরামিসি স্বাহা। অগ্নরে ইনং নমম। ওঁ বন্ধা ভ্রাতা পতিভূৰি জারে।ভূষা নিপলতে। প্রজাং যতে জিলাংসতি তমিতো নাশয়া-মিসি স্বাহা। ব্রহ্মণে ইদং নমম। ওঁ ষ্ট্রা স্বপ্নেন তমসা মোহয়িত্বা নিপ্রততে।

গৃহাস্ত্রে আতে গর্ভমিতি অগ্নিরৈত্ ইতি মন্ত্রাজ্ঞাং দুর্বরসসেক উল্পঃ।
 বাস্বদেবপদ্ধতৌ ইদানীং গভিণীনাসাপুটে দুর্বারসসেকঃ তৃঞ্জীং কার্যাঃ তত চরুণা।
 প্রজ্ঞাপতরে একাং আহতিং দ্বা গভিণ্যা হৃদরালম্ভনম্ কর্ত্রাম্।

প্রজাং যত্তে জিবাংসতি তমিতো নাশরামিদি স্বাহা। ব্রহ্মণে ইনং নমম। \*
ততোহস্যাঃ সর্বান্ধাণি হস্তাভ্যাং মার্জ্জরেং। ওঁ অক্ষীভ্যান্তে নাদিকাভ্যাং
কণিভ্যাং চিব্কাদি। যক্ষং শীর্ষণাং মন্তিকাজ্জিহ্বায়া বিবৃহামি তে। গ্রীবাভ্যন্ত
উফিহাভ্যঃ কীক্সাভ্যো অন্ক্যাং। যক্ষং দোষণামংসাভ্যাং বাহভ্যাং বিবৃহামি
তে। আত্রেভ্যন্তে গুলাভ্যো বনিষ্ঠোহ দরাদি। যক্ষং মত্রমাভ্যাং বরুং প্রাণিভ্যাে
বিবৃহামি তে। উক্ত্যাং তে অপ্তীবস্ত্যাং পাণিভ্যাং প্রপদাভ্যাম্। যক্ষং
শ্রোণিভ্যাং ভাসদাদ্ ভংসসো বিবৃহামি তে। মেহনাদ্দংকরণাৎ লোমভ্যন্তে
নথেভ্যঃ। বক্ষং সর্বস্থাদাত্মনন্তমিদং বিবৃহামি তে। অক্ষাদকালোমে। লোমে।
জাতং পর্বণি পর্বাণি। যক্ষং সর্বস্থাদাত্মনন্তমিদং বিবৃহামি তে। † ইতি।
ততশ্চকণা বিষ্টকুতং সমাপ্য আজ্যেন প্রার্দিত্তং সমাপ্রেং। ব্রাহ্মণার দক্ষণাং
দত্যাৎ ইতি।

#### অথ অনবলোভনম্ ‡

তচ্চ চতুর্থে মাসি কর্ত্ত্রাম্। তত্র জ্যোতিঃশাস্ত্রোক্তভ্ত দিবসৈ প্রাত্তিনিব তিত্র নিত্য কর্ত্তাঃ পতির্মাত্ কাপ্জনপূর্বকং বৃদ্ধিশ্রাদ্ধং ক্র্যাৎ। তত ছারা-মণ্ডপে প্রাঙ্ম্থ জ্বাসনাপবিষ্টঃ পতিব মিপার্যে উপবিষ্টয়া পুংসবনোক্তবেশরা গর্ভবত্তা। স্পৃষ্টঃ উপলেপনাদি-পূর্ণপাত্র-নিধানাস্তং কর্ম করা প্রাজাপত্যং পৌকষণ্ণ চক্তব্যং ভ্রপয়েৎ। (অসন্তবে উভ্রুদেবত্য একশ্চকঃ)। ততঃ আজ্যভাগাস্তং কর্ম সমাপ্য প্রাত্ম্যাং পত্নাং পশ্চিমতন্তিষ্ঠন্ পতিন্তনানম্মন্ময় তত্তা। দক্ষিণনাসাপুটে প্রজাবদাথ্যজীবপুত্রাথ্যস্ক্রদ্বয়ং জপন্ শিলাপিইদ্র্বারসেন নত্যং দদ্যাৎ। ই তত্ত্র প্রজাবদাথ্যস্ক্রং ষথা—ওঁ আ তে গর্ভো যোনিমত্ব পুমান্ বাণ ইবেষ্ধিম্। আ বীরো জারতাং পুত্রন্তে দশমাত্যঃ। জীবপুত্রাথ্যং স্ক্রং—ওঁ অগ্নিরৈত্ব প্রথমো দেবতানাং সোহত্যৈ প্রজাং ন্রাজা বক্ষণোহত্মক্সতাং যথেয়ং স্ত্রী পৌত্রমবং ন রোদাৎ। তত্ত আচান্তজ্বলয় পত্যা স্পৃষ্টঃ প্রাজাপত্যচক্রমবদানধর্ম্বণাদার

ভতঃ প্রাজাপতান্থালীপাকংহামঃ ইতি গৃহকারদক্ষতঃ।

<sup>🕇</sup> অয়ং মার্জনব্যাপারঃ পরিশিষ্টসম্মতঃ।

<sup>া</sup> নেনমনবলোভনম্ পরিশিষ্ট্রতা বাহুদেবপদ্ধতে) বা লিখিতম্। তদিনমন্দেশীর-আচীনপুস্তকগৃতত্বাৎ গৃহুদ্কানুমোদিতগ্যক্তত্বাচ্চ শিষ্টেরমুপেক্ষিতমন্মাভিঃ।

<sup>§</sup> বধুনাসাপুটে নস্তরসদানং ন সার্কাত্রকম্।

ওঁ প্রজাপত্তরে স্বাহা ইত্যেকাছতিং হ্বা প্রজাপত্তরে ইদং নমম ইজি ভাৰসং বিধার ততঃ পদ্ধা হৃদয়দেশমালভেত—বত্তে স্থপীম ইতি মন্ত্রস্থ হিরণ্যগর্ভশ্বি: প্রজাপতিদেবিতা অনুষ্ঠুপ্ছন্দো ভার্যায়া জ্নয়ালস্তনে বিনিরোগঃ। ওঁ যত্তে স্থসীমে হৃদরং হিতমন্ত: প্রজাপতৌ। মজে২হং মাং তৰিবাংসং মাহং পৌত্রমঘং নিয়াম্। ইত্যনেন ময়েণ। ততশ্চরোর্ভাগ-মুদ্,ত্য হিরণাগর্ভ ইত্যস্ত হিরণাগর্ভঋষিঃ প্রজাপতিদেবিতা ত্রিষ্টুপ্র ছন্দ-ক্ষর্কেহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ হিরণাগর্ভ: সমবর্ত্তাগ্রে ভৃতস্ত জাতঃ পতিরেক আসীৎ। স দাধার পৃথিবীং ভামুতেমাং কলৈ দেবায় হবিষা বিধেম খাহা। প্রজাপতয়ে ইদং নমম। শহাঝিষিব্রিটুপ্ছনে। লিকোক্তা দেবতা প্রধানচরুহোমে বিনিয়োগঃ। ওঁৰ আত্মদা বলদা যক্ত বিশ্ব উপাদতে আংশিষং যতা দেবাঃ। যতা ছোয়ামৃতং যতা মৃত্যুঃ কলৈ দেবায় হবিষা বিধেম-খাহা। প্রজাপতরে ইদং নমম। ততঃ পৌরুষচরোর্ভাগমুদ্ভ্যাছতি-মেকাং জুত্মাৎ। সহস্রশীর্ষেত্যস্ত নারায়ণঝিষঃ পুরুষে৷ দেবতা অনুষুপু ছলঃ প্রধানচক্রেয়ে বিনিয়োগ:। ওঁ সহস্রনীধা পুরুষ: সহস্রাক্ষ: সহস্রপাৎ। স ভ্নিং বিশ্বতো বৃত্বাত্যতিষ্ঠকশাঙ্গুলং স্বাহা। ইদমাদিপুরুষায় বিফবে নম্ম। তত আয়্ব্যং বৰ্চস্তমিত্যায়্ব্যস্কং (১৮৫ পৃঃ) পঠিবা গৰ্ভবত্যাশ্চভূৰ্দ্দিক্ বক্ষাং কুর্য্যাৎ। ততশ্চরুণা স্বিষ্টরুতং সমাপ্য আজ্যেন প্রায়শ্চিতাদিহোমশেষং সমাপয়েৎ। ব্রাহ্মণায় দক্ষিণাং দন্ধা ব্রাহ্মণান্ ভোজয়েৎ। ইত্যনবলোভনম্।

# **সীমন্তোল্লয়ন**ম্

তত্ত্ব গর্ভমানে বর্ষেষ্ট্রমে বা শুরুপক্ষে জ্যোতিঃশাস্ত্রোক্ত-নক্ষত্রাদিশুভলরে পতিমণ্ড্রাপ্র্ক্রকং কুতবৃদ্ধিশ্রান্ধা মন্ত্রনামানমারিং প্রতিঠাপ্য ও অভ্যেত্যাদি অম্কগোত্রায়া মৎপত্নাঃ প্রীঅম্কীদেব্যাঃ সীমস্তোয়য়ন-কর্মান্ত-সত্রক্ষক হোমকর্মাহং করিষ্যে। \* আবারাজ্যভাগাস্তাঃ
কুশগুকাং বিধার বামপার্যে প্রাগ্রাবোর্দ্ধলোমামুড্ইচর্মানীনয়া
পুংসবনোক্তবেশয়া মাতয়া প্রায়্থ্যা পত্না সমারকঃ অটাবাজ্যাহতীক্ত্রাৎ। ধাতা দ্ধাত্ দাশুষ ইত্যাদি মন্ত্রন্মন্ত হিরণাগর্ভক্ষিধিতা
দেবতা প্রথমস্থান্ত্র্ব্ বিতীর্ম্ম তিটুপ্ ছন্দঃ সীমস্তোলম্বনে প্রধানাক্যহোমে

अवाधानः বাহদেবসক্ষতন।

বিনিরোগ:। ওঁ ধাতা দধাতু দাশুবে প্রাচীং জীবাতুমক্ষিতান্। বয়ং দেবক্ত ধীমহি। সুনীতিং বাজিনীবতঃ স্বাহা। ধাত্রে ইনং নমম। ওঁ ধাতা প্রজানামূত বাৰ ঈশে ধাতেদং বিশ্বং ভূবনং জ্ঞান। ধাতা রুগীরনিমিষা-ভিচটে ধাত্র ইদ্ধব্যং দ্বতবজ্জুহোত স্বাহা। ধাত্রে ইনং নমম। রাকামহমিতি षत्त्रार्ग् ९ममनश्रवी त्राका त्मवे जा जगजीक्न नः मौमत्स्रान्त्रत्न अधानास्रात्म বিনিমোগ:। ওঁ রাকামহং অহবাং হুট্টী হুবে শৃণোতু নঃ স্বভগা বোধতু जाना। সীব্যত্তপঃ স্চ্যাচ্ছিতমানয়া দদাতু বীরং শতদারমূক্থ্যং স্বাহা। बाकारेय हेनः नमम। ও यान्छ बात्क समजयः स्रतभारमा याजिक्तामि नाज्य বস্নি। তাভিনো অন্ত সুমনা উপাগহি সহস্রপোরং স্কুভগে ররাণা স্বাহা। বাকারৈ ইদং নমম। নেজমেষেতি তিস্থাং ছষ্টা (হিরণাগর্ভঃ) ঋষির্বিষ্ণু-দেবতা অনুষ্প ছল: সীমস্তোরয়নে প্রধানাজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ও নেজমেষ পরাপত স্থপুত্র: পুনরাপত। অত্যৈ মে পুত্রকামারৈ গর্ভমাধেছি यः পুমাन याश। विकटत हेनः नमम। 🤏 यटथग्नः পृथितौ महाखाना गर्छमानट्य। এবং তং গর্ভমাধেহি দশমে মাসি স্থতবে স্বাহা। বিষ্ণবে ইদং নমন। ওঁ বিষ্ণোঃ শ্রেছেন রূপেণান্তাং নার্য্যাং গবীন্যাং। পুমাংসং পুত্রমাধেহি দশমে মাসি স্থতবে স্বাহা। বিফবে ইদং নমম। প্রজাপত ইত্যস্ত হিরণ্যগর্ভঋষিঃ প্রজাপতিদে বতা ত্রিষ্ট্র ছলঃ সীমস্তোরয়নে প্রধানাজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ওঁ প্রজাপতে ন ওদেতান্তক্যো বিশ্বা জাতানি পরি তা বভুব। যৎ কামান্তে **ब्र्ट्मखद्रा ख**ञ्च दर्शः श्राम পতद्रा द्रशीनाः श्राञा। প্रজालेखद्र हेनः नमम। ততোহপকোতৃমরফণযুগাধিতত্তবকদ্বয়ং ত্রিশুক্লং শল্পকীকণ্টকং প্রাদেশমাত্র-সাগ্রকুশপত্রদ্বয়রপ-পিঞ্লত্রম্ঞেকীকৃতং পাণিনা গৃহীত্বা তন্মূলেন পড়াা: কেশললাটয়ো: সন্ধিমারভা আমুদ্ধপ্রদেশাৎ ওঁ ভূভূবি:স্বরিতি মন্ত্রবয়স্ত প্রজাপতি খবি: প্রজাপতিদে বিভা বৃহতীছেল: সীমন্তব্যহনে বিনিয়োগ:। ও ভূভু বংষং ইতি মন্ত্রাবৃত্ত্যা ত্রিশ্চতুর্বা সীমন্তমুন্নরেও। ততঃ পতিবীণাগাথিনৌ দিলো ভবস্তো সোমং রাজানং সংগারেতাম ইতি প্রেষরেৎ। তৌ চ-ওঁ সোমো নো রাজা অবতু মামুষী: প্রজাঃ নিবিষ্টচক্রা অসৌ। অসাবিতি বাং নদীং সেবেত তন্তা নাম সংখাধনাস্তং পাঠ্যম্। সেবনাসম্ভবে সমীপস্থনভাঃ मच का छः शक्त रमूटन देजा कि क्रांश नाम निर्दिग हो वी वा शाद्या । ততঃ পতিঃ দৌবর্ণচক্রাদিকং পত্ন্যাঃ কঠে বন্ধীয়াৎ—ওঁ আয়ুষ্যাং বর্চস্ত बाटम्भावरमोम्किन्म्। हेनः हिब्रगाः वर्क्षय टेक्कवामाविभानिमाम् हेकि

মন্ত্রেণ। \* ততঃ স্বিষ্টকুদাদি-হোমশেষং সমাপ্য কর্মকারয়িত্তাহ্মণায় দক্ষিণাং দভাৎ।

#### ইতি সীমস্তোনমন্।

### অথ জাভকর্ম 🕆

জাতমাত্রং কুমারং শ্রুষা সচে বং কৃতস্মানঃ পিতা কৃতবুদ্ধিশাদ্ধঃ প্রগল্ভ-নামানমগ্নিং প্রতিষ্ঠাপ্য অভেত্যাদি অম্মিন্ জাতকর্মাঙ্গহোমকর্মণি দেবতা-পরিগ্রহার্ধমিত্যাদি চক্ষ্মী আজ্যেন ইত্যন্তমূক্তা অগ্নিমিন্দ্রং প্রজাপতিং বিশ্বান্ দেবান ব্ৰহ্মাণমাজ্যেন শেষেণ স্বিষ্টকৃত্মিত্যাদি সভ্যে। যক্ষ্যে ইত্যস্তমূক্ত্ৰ স্বাহি-মৰাধায় : আঘারাজ্যভাগান্তং কর্ম কৃত্বা প্রগণ্ডনামানমগ্রিং সংস্থাপ্য অগীক্র-প্রজাপতি-বিশ্বদেব-ব্রহ্মভ্যঃ পঞ্চাজ্যাহতীহ বা প্রাঙ্ নাভিচ্ছেদনাৎ অক্তম্পর্শনাৎ পূর্বং কুমারং হিরণাসংস্থান্ত মধুসর্পিষী হিরণ্যেন প্রাশারেদনেন মন্ত্রেণ § — প্রতেদদামীত্যক্ত হিরণ্যগর্ভঋষিং সবিতা দেবতা ত্রিষ্ট্রপ্, ছন্দং কুমারক্ত মধুসর্পিঃ-প্রাশনে বিনিয়োগ:। ও প্র তে দদামি মধুনো ঘৃতস্ত বেদং সবিতা প্রস্তুতং মঘোনামূ। আয়ুমান গুপ্তো দেবতাতিঃ শতং জীব শরদে। লোকে অমিন্। ইতি কুমারং মধুসর্পিষী পান্তবিদ্বা তদ্ধিরণ্য প্রকাল্য কুমারশু দক্ষিণে কর্ণে নিধায় তৎকর্ণসমাপে অমুখমানীয় মেধান্ত ইতি মন্ত্রস্ত হিরণ্যগর্ভঋষিঃ সবিতৃ-সরস্বত্য খিনো দেবতা অন্ত্রপ্ছনঃ কুমারশ্র মেধাজননজপে বিনিয়োগ:। ওঁ মেধাং তে দেবঃ সবিতা মেধাং দেবী সরম্বতী। মেধাং তে অধিনৌ দেবাবাধত্তাং পুষ্করত্রজৌ ॥ ইক্যুচং জপিত্বা পুনন্তদ্ধিরণ্যং সব্যে কর্ণে নিধায় তথৈব তাম ঋচং জপেং। ততঃ অখা ভবেত্যস্থাথৰ্বণঋষিলিক্ষোক্তা দেবতা অনুষ্পু ছলঃ কুমারভাংসাভিমর্শনে বিনিয়োগ:। ও অখা ভব পরশুর্ভব হিরণ্যমন্তৃতং ভব। বেদো বৈ পুত্রনামাদি স জীব শরদঃ শতম্। ইক্স শ্রেষ্ঠাণীত্যস্ত গৃৎসমদঋষিরিক্রো দেবতা ত্রিষ্ট্রনঃ কুমারস্যাংসাভিমর্শনে বিনিয়োগ:। ওঁ ইক্র শ্রেষ্ঠানি দ্রবিণানি ধেহি চিত্তিং দক্ষশ্র স্বভগ্রমশ্বে।

শনপ্রকং নৌবণচক্রাদিধারণং ন পুত্রকারেণ পরিশিষ্ট্রতা চ ধৃত্য । বিধিওঞ্জাস
দবলঘা-প্রচানপুত্রকেয় বিটেয়িভি নোপেকিভয়।

<sup>†</sup> জাতকর্মনামকরণারপ্রালনেষু স্ত্রকারেণ হোষো ন বিহিতঃ, বৃত্তিকারেণ পরিশিষ্ট-কৃতা চ এবু বোমস্ত বিহিত্তাৎ কর্ত্তবাত্মন্তোব ইতি বহুসম্মতিঃ।

<sup>💲</sup> অধাধানং বাহুদেবপদ্ধতৌ গুভন্, পরস্ত কালেশিপদ্ধতৌ সর্বতে ন দৃষ্যতে।

<sup>🖇</sup> কাংস্তপাত্তে নিধায় স্বর্ণেন ভোলয়িত্বা কুমার্মঞ্লারাং দল্ভাৎ ইতি কুত্রচিৎ পাঠ:।

পোষং রয়ীণামরিটিং তন্নাং স্বাদ্মানং বাচঃ স্থাদিনত্বমন্থা, অন্মে প্রবন্ধীভাল বিখামিত্রশ্বাধিরিক্রো দেবতা ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ কুমারল্ঞাংসাভিমর্শনে বিনিরোগঃ। ওঁ অন্মে প্রযক্তি মঘবর্জীবিনিন্দ্র রায়ো বিখবারল্ঞ ভ্রেঃ। অন্মে
শতং শরদো জীবসেধা অন্মে বীরাস্থাত ইক্র শিপ্রিন্। ইতি মন্ত্রত্রান্তে
যুগপৎ কুমারল্ঞাংসাবভিম্পেৎ। \* ততো নাড়ীচ্ছেদং কারয়িত্বা হিরণ্যোদকেন মাতুর্দক্ষিণং স্তনং প্রক্ষাল্য ওঁ ইমাং কুমারো জরাং ধয়তু দীর্ঘমায়ুঃ
প্রজীবসে। অন্মৈ স্তনৌ প্রযুক্তানা আয়ুর্বর্চেটা মশো বলম্। ইতি দক্ষিণং
স্তনং মাত্রা পায়য়িত্বা তথৈব বামং প্রক্ষাল্য পায়য়েছে। ততো হোমশেষং
সমাপ্য ব্রাহ্মণায় দক্ষিণাং দ্লাং। কুমার্যা এতদমন্ত্রকং কুর্যাৎ।

#### ় ইতি জাতকৰ্ম।

## প্রোষিতাগত কর্ম ( গুপ্তনামকরণম্ ) †

यि দেশান্তরগতঃ পিতা শৃণোতি পুত্রো মে জাতঃ তদাগতঃ স্তকান্তে কৃতসানঃ পুত্রস্য মৃদ্ধানং গৃহীত্বা জপেৎ—ওঁ অঙ্গাদঙ্গাৎ সম্ভবসি হৃদয়াদধিজায়সে। আত্মা বৈ পুত্রনামাসি স জীব শরদঃ শতম্। ইতি মৃদ্ধানং ত্রিরবছায়
(পরিচ্ছা) জপেৎ। (ততঃ প্রায়শ্চিত্রাদি সমাপ্রেং।)

# অথ মামকরণস্

তত্র পার্থিবনামান্নি:। পিতা অস্তো ভাত্রাদির্কা মাতৃকাপৃদ্ধকং কৃতবৃদ্ধিশ্রাদ্ধ প্রাথ্য আদনে উপবিশ্য স্বয়ং হোমকরণাদামর্থ্য ত্রাদ্ধান্দির প্রাথানান্তং কর্ম কুর্যাৎ। মাতাপি স্নাতং কৃতমঙ্গলং নৃতন-বস্থাচ্ছাদিতং দ্র্বাক্ষতশিরসং কুমারমঙ্কে কৃত্য প্রাত্ম্বী উপবিশেৎ। ততঃ স্বর্ধ-বদ্ধুইশস্তাত্রপাত্রস্থলনে কুমারমভিদিঞ্চেদভিম দ্রৈ:—সম্দ্রজ্যেষ্ঠা ইতি মন্ত্রচতৃষ্ট্রস্থা বশিষ্ঠশ্বিরাপো দেবতান্ত্রিই,প্ ছন্দো মার্জনে বিনিয়োগং। ও সমুদ্রজ্যেষ্ঠাং দলিলভা মধ্যাৎ পুনানা বস্তানিবিশ্যানাং। ইন্দ্রো বা বজ্রী

শ অল্পদেশীরপুত্তকের্ প্রায়শঃ দক্ষত্তৈর অল্পতি ময়েগাংসাভিমর্শঃ। ততে। দক্ষিণস্তনপ্রকালনপুক্কং ইমাং কুমার ইতি ময়েণ স্তনদানানস্তরং বামস্তনদানে ইল্রাজার্টানীতি অল্মে
ইতি ময়্বয়ং প্রযুক্তর্য। তচ্চ প্রকৃত। পরিশিষ্টকত। চ অধৃতত্বং পরিস্তনস্মাতিঃ।

<sup>🕇</sup> অক্টেব গুপ্তনামকরণমিতি সংজ্ঞান্তরং পুত্তকান্তরে লিধিতন্।

বৃষভো ররাদ তা আপো দেবীরিহ মামবস্ক। ওঁ বা আপো দিব্যা উত বা শ্ৰৰম্ভি থনিত্ৰিমা উত বা ধাঃ সমুঞ্জাঃ। সমুদ্ৰাৰ্থা ধাঃ শুচয়ঃ পাৰকান্তা আপো দেবীরিহ মামবস্ক। ওঁ বাসাং রাজা বরুণো বাতি মধ্যে সত্যানৃতে অবপশুন্ জনানাম্। মধুক্চ্যত: শুচয়োষা: পাবকান্তা আপো দেবীরিহ মামবন্ধ। ওঁ याञ्च ताका तकराना याञ्च रमारमा तिरचरानता बार्ज्जः मनस्ति । देवचानरता याचित्रः প্রবিষ্টন্তা আপো দেবীরিহ মামবস্ত। আপো হি গ্রা ইতি ত্যুচস্ত সির্-দীপঋষিরাপো দেবতা গায়ত্রীচ্ছলো মার্জ্জনে বিনিয়োগঃ। ওঁ আপো হি ষ্ঠা মধ্যো ভূবন্তা ন উৰ্জ্জে দধাতন মহে রণায় চক্ষসে। ওঁ বো বঃ শিবতমো রসন্তস্ত ভাজরতে হ ন:। উশতীরিব মাতর:। ওঁ তত্মা অরঙ্গমাম বো ষশ্ত ক্ষরার জিন্বথ আপো জনমুধা চ নঃ। দেবস্য ত্বেতি মন্ত্রস্থ প্রজাপতিঋষিঃ সবিত্রখি-পূষণো দেবতা মার্জ্জনে বিনিয়োগ:। ওঁ দেবস্থ তা সবিতৃঃ প্রসবে-श्वित्नार्वाङ्खाः शृत्का रुखांखाम्। 🛊 ७ व्यथं नः मास्कानवस्य उत्पाद्धा র্রিম্। অপ নঃ শোগুচদ্বম্। সুক্ষেত্রিয়া সুগাতুরা বসুরা চ যজামতে। অপনঃ শোশুচদ্বম। প্রবদ্ভনিষ্ঠ এষাং প্রাক্ষাকাসন্চ স্বরঃ। অপ নঃ শোভচদঘদ্। প্রয়ত্তে অগ্নে স্রুরে। জারেমহি প্রতে বয়ম্। অপ ন: শোভচ-मचम्। প্রযদয়েঃ সহস্বতো বিশ্বতো यश्चि ভানবः। অপ নः শোশুচদবম্। षः হি বিশ্বতোমুখ বিশ্বতঃ পরিভূরসি। অপ নঃ শোশুচদৰম্। দ্বিষো নো বিশ্বতোমুখাতি নাবেব পারয়। অপ নঃ শোশুচদখন্। স নঃ সিরুমিব নাব-ৰাতি প্ৰাস্থ্যয়ে। অপ নঃ শোগুচদ্বন্। ইত্যপ্তাভিশ্বপ্তিরভিষিঞ্চে। ততঃ পার্থিবনামানমগ্নিং প্রতিষ্ঠাপ্য আধারাজ্যভাগান্তং পঞাত্তীজুতিয়াং। ওঁ অগ্নয়ে খাহা। অগ্নয়ে ইদং নমম। ওঁ ইন্দ্রায় খাহা। ইক্রায় ইদং নমম। ওঁ প্রজাপতয়ে স্বাহা। প্রজাপতয় ইদং নমম। ওঁ বিখেভ্যে। দেবেভ্যঃ স্বাহা। বিখেভ্যে। দেবেভ্য ইদং নমম। ওঁ ব্ৰহ্মণে স্বাহা। বন্ধণে ইনং নমম। ততঃ পুত্রিণী উত্তরশিরসং পুত্রং নামকর্ত্র্ভু; ক্রোড়ে ष्ठाः । সমঙ্গতৃर्वारचारवयु भ०न्य निनामाः (वाषवनानिय्थाकरत्र। नाम-षद्रः निथिषा श्रामीभवद्यम উब्बनः कृष। कुमात्रच मिक्निक्टर्भ नाम तरमर

<sup>\*</sup> অপন ইতাষ্টর্চনত স্কত কুৎদক্ষমি: শুচিরগ্নিদে বিতা গার্ম্প্রীচ্ছন্দো মার্জ্জনে বিনিরোগঃ। ইতি কুত্রচিৎ পাঠঃ।

শ্রী অমৃকদেবশর্মানি। এবং বামকর্ণেহিপি। তন্মাত্রে চ কথয়েৎ—শ্রী অমৃকদেবশর্মারস্তে পুল:। ◆ ততে। হোমং সমাপ্য স্বিষ্টকৃতং সমাপরে ।
কর্মকার রিত্-বান্দ্রণার দক্ষিণাং দছাৎ। †

ইতি নামকরণম্।

## অথ নিদ্রুমণম্ ‡

তত্র পিতা ক্বতনিত্যক্রিয়ো মাতৃপূজাং বলোধবিরাদানং বুদ্ধিপ্রাদ্ধঞ কুৰ্ব্যাৎ। ততশ্চ বিষ্ণুধর্মোক্তমব্রৈস্ততদেবতাপৃঙ্গাং কুর্য্যাৎ। বথা—ও বড ইক্স ভন্নামহে ততো নে। অভন্নং কৃধি। মঘৰন্ছগ্ধি তব তন্ন উতিভিবি বিষো বিমুধো জহি। ইতি ইন্দ্রস্থ। ওঁ অগ্নিং দূতং বুণীমহে হোতারং বিশ্ববেদসম্। অস্ত যজ্ঞ সুক্রতুম্। ইত্যগ্নে:। ওঁ যমায় সোমং সুত্ত যমায় জুত্তা হবি:। ষমং হয়জ্ঞো গচ্ছতাগ্লিদূতো আবং কুতঃ। ইতি যমস্তা। ওঁ মোবুণঃ পরাপরা নিশ্বতিছ হণা বধীৎ। পদীষ্ট তৃষ্ণয়া সহ। ইতি নিশ্বতিঃ। ওঁ তত্ত্বায়ামি बन्धा वन्धानस्त्रानारस्य यक्षमात्ना हविन्धिः । **च**र्हनमात्ना वक्रान्ध ताधान কশংসমান আয়ুঃ প্রমোধী:। ইতি বৃক্ণশ্র। ওঁ তব বায় বৃতস্পতে ছষ্টু-জামাতরত্ত্ত। অবাংস্তা বুণীমহে। ইতি বারো:। ওঁ দোমো ধেমুং সোমো অবস্তমাতং সোমো বীরং কর্মণ্যং দদাতি। সাদক্তং বিদ্ধ্যং সভেরং 'পিতৃশ্বৰণ যো দদাশদশৈ। ইতি সোমস্ত। ওঁ তমীশানং জগতস্তমুৰম্পতিং ধিরং জিন্বমবসে হ্রমতে বরুম্। পূষাণো বথা বেদ সামু সন্তুধে রক্ষিতা পায়ুরদক্ষঃ স্বস্তবে। ইতি ঈশানস্তা ওঁ ক্রন্ধ জ্ঞানং প্রথমং পুরস্তাদ বি সীমতঃ স্থকচোবেন আবঃ। স বুগ্লা উপমা অস্তা বিষ্ঠাঃ সতশ্চ বোনিমসতশ্চ বিবঃ ইতি ব্ৰহ্মণঃ। ওঁ কালিকো নাম সৰ্পো নবনাগসহস্ৰবলঃ। ষম্নাহ্ৰদে সো জাতোহয়ং নারায়ণবাহনঃ। যদি কালিকদৃতত্ত যদি বা কালিকাদ্ভয়ম্। জমভ্মিপরিক্রান্তো নির্কিষে। বাতৃ কালিকঃ। ইতি অনস্তস্ত। ওঁ সোনা

ওঁ বন্তান্ত বিক্ষিত্রায় বন্তান্ত ব্রাদ্ধী ইভিব্রিজণা কর্:। ইভাতিরিক: পাঠ: ক্ত্রিচৎ
দুখাতে।

বাহদেবপদ্ধতো নামকরণে অন্ত্রীক্রপ্রকাপতিবিবদেবপ্রক্ষণাং হোমমাত্রং বিহিত্তন।

<sup>🗜</sup> নিজমণং ন স্ত্রকারমত্য।

পৃথিবি নো ভবা নৃক্ষরা নিবেশনী। বছা ন: শর্ম সপ্রধাঃ। ইতি পৃথিব্যাঃ। ওঁ পোনং রাজানং বক্ষণমগ্রিমবারভামহে। আদিত্যং বিষ্ণুং স্থাং প্রকাণক্ষরহন্দাতিন্। ওঁ আক্ষেত্রন রজদা বর্ত্তমানো নিবেশররমূতং মর্ত্ত্যক্ষ হিরণ্যয়েন সবিতা রথেনা দেবে৷ যাতি ভ্বনানি পশুন্। ইতি সবিত্য়। ওঁ ভদিকোঃ পরমং পদ্মিত্যাদি বাস্থদেবশু। ওঁ আদিংপ্রস্তু বেত্তদা জ্যোতিঃ পশুস্তি বাসরম্। পরো যদিধাতে দিবি। ইতি গণেশশু পৃজামন্ত্রঃ। ততো মাতা শুভলগ্রসময়ে নৃতনবস্তাচ্ছাদিতং উত্তরশিরদং কুমারং জ্যোড়ে কৃষ্যা পত্যাদিশিবে দণ্ডায়মানা ভব্রে মঙ্গলত্র্যধ্বনিসহকারেণ সমর্পর্যত । পতিশ্চ স্বন্ধি নো মিমীতা ইত্যাদি স্ক্রমপ্রতিরথমন্ত্রং বিষ্ণুধ্র্মোক্তমন্ত্রাংশ্চ জপতি।

খতি নো মিমীতামিতি সপ্তর্কত শক্ত শক্তাতের ভাবাধঋষিবি খৈদেবা দেবতান্তির আতারিই তো মধ্যে দেবতান্তির লাতারিই তো মধ্যে দেবতান্তির দেব্যদিতির নর্ববণঃ খন্ডি প্যা অস্থরো দধাতু নঃ খন্তি ভাবাপ্থিবী স্থচেত্না। খন্তি নো (খন্তরে) বায়ুম্পরবামহৈ। সোমং খন্তি ভ্বনত মন্দতিঃ। বৃহস্পতিং সর্বর্গণং খন্তরে খন্তর আদিত্যাসো ভবন্ধ নঃ। বিশ্বেদেবা নো আতা খন্তরে। বৈশানরো বস্কর্নাঃ খন্তরে। দেবা অবস্কৃতবং খন্তরে খন্তি নো ক্রন্তঃ পাতংহসঃ। খন্তি মিত্রাবক্রণা খন্তি পথ্যেরবৃতি খন্তি ন ইক্রন্তাগ্রিশ্চ খন্তি নো অদিতে কৃষি। খন্তিপ্রমান্তরেম খ্রাচন্দ্রমাবিব। পুনর্দ্দিতা মতা জানতা সঙ্গমেমহি। খন্ত্যমনং তার্ক্রামরিইনেমিং মহন্তৃতং বারসং দেবতানাম্। অস্থ্রমন্দ্রমান্তিরমা নাবমিবাক্রহেম। অংহোম্নমান্তিরসং গরঞ্চ শন্তাগ্রেরং মনসা চলক্রি। প্রত্পাণিঃ শরণং প্রপত্যে খন্তি সংবাধেষভরং নো অস্তা। ১॥

আতঃ শিশান ইতি ত্রেরাদশর্চত স্কুত্র পৈল্থবির্লিকোকা দেবতা দ্বিষ্ট প্ছন্দে। অপ্রতিরথক্সে বিনিয়োগ:। ওঁ আতঃ শিশানো বৃষভো ন ভামো ঘনাঘন: কোভণশূর্বনাম্। সংক্রন্দনো নিমিষ একবীর: শতং সেনা অজয়ৎ সাক্মিক্র:। সংক্রন্দনোনিমেষেণ জিফুনা মুৎকারেণ ত্ল্যবনেন ধৃফুনা। তদিক্রেণ জয়ত তৎসহধ্বং যুধোনর ইবুহন্তেন বৃষ্ণা। স ইবুহন্তেঃ স নিষ্কিভির্কিশীসংস্তা সমুধ ইক্রো গণেন। সংস্টুজিৎসোমপা বাহশর্ক্যগ্রধ্যা প্রতিহিতাভিরস্তা। বৃহস্পতে পরিদীয়া রথেন রক্ষোহামিত্র। অপবাধ্যান:। প্রভঞ্জনৎ সেনাঃ প্রম্পো যুধাক্ষয়শ্বাক্ষেধ্যবিতা র্থানাং। বলবিক্রায়ঃ স্থবিরঃ প্রবীর সহস্থান্ বাজী সহ্মান উগ্রঃ। অভিবীরো অভিসন্থা সহোজাকৈত্রমিল্ররথমাতির্গু গোবিং। গোত্রভিদং গোবিদং বজ্রবাহুং জয়য়য়য়্যাপ্রমুণস্তমোজ্বা। ইমং সজাতা অম্বীরয়ধ্বমিল্রং স্থায়ো অমুসংরভধ্বং। অভিগোত্রাণি
সহ্সা গাহমানো দয়ো বীরঃ শতমম্মারিল্রঃ। তৃশ্চাবনঃ পৃতনাষাড় যুধ্যোহ্মাকং সেনা অবত্ প্রয়ৎম। ইক্র আসাং নেতা বৃহস্পতির্দিক্ষিণাযজ্ঞঃ পূর
এতু সোমঃ। দেবসেনানামতিভক্ষতীনাং জয়স্তীনাং মক্রতোষস্থগ্রু। ইক্রস্তা
বৃহ্ণা বক্রণস্ত রাজ্ঞ আদিত্যানাং মক্রতাং শর্দ্ধ উগ্রং। মহামনসাং ভ্রনচ্যবানাং
বোষো দেবানাং জয়তাম্দস্থাং। উদ্ধর্ম মঘবরায়ুধায়্যুৎসন্থানাং মামকানাং
মনাংসি। উন্ত্রহয়াজিনাং বাজিনায়্যদ্রথানাং জয়তাং য়ন্ত ঘোষাঃ। অম্মাকমিল্রঃ সমুতের্ ধ্বজেরমাকং যা ইয়বস্তা জয়য়ৢ। অম্মাকং বীরা উত্তরে ভবন্তমাঁ উ দেবা অবতাহবেরু। অমীয়াং চিত্তং প্রতিলোভয়ন্তী গৃহাণাক্রান্তপে,
পরেহি। অভিপ্রেহি নির্দ্ধহন্থ স্বশোকৈরন্ধেনামিত্রান্তমসাস্রস্তাং।
প্রতাজয়তা নর ইল্রো বং শর্ম বচ্ছতু। উগ্রা বং সন্ত বাহবে অনাধ্ব্যা
যথাস্থ॥ ২॥

ওঁ অসো বা সেনামকতঃ পরেষামতৈ । ত ও জসা স্পর্কমানা। তাং গৃহত তমসাপরতেন ষথা মাষাস্থোহন্তং ন জানাং। অন্ধা অমিত্রাভবতা শীর্ষাণ অহর ইব। তেষাং বো অগ্নিদগ্ধানামগ্নিমূঢ়ানামিক্রো হস্ত বরং বরং। ততন্তত্ত্ব পঠেন্দ্রং ষত্ত জামা নিবোধ মে। চন্দ্রার্করাে দিগীশা্নাং বিশাঞ্চগগ্নস্ত চ। নিক্ষেপার্থমহং দলি তে মে রক্ষন্ত সর্ব্বদা। অপ্রমন্তং প্রমতং বা দিবারাত্রমথাপি বা। রক্ষন্ত স্ব্বতঃ স্ব্বে দেবাঃ শক্রপ্রোগমাঃ॥৩॥

ততো ব্রাহ্মণ-বান্ধবাদি-পরিবৃতং কুমারং বস্ত্রাচ্ছাদিতমুথং বহিনি জ্র-ময়েং। বহিনি জ্রম্য মুখাচ্ছাদনমুন্মোচ্য তচ্চকুরিত্যাদিন। সুর্যাং দর্শয়েং।

তচ্চক্রিতি মন্ত্রন্নস্থ বশিষ্ঠঝিং স্ব্রো দেবতা গায়প্রীচ্ছলং কুমারশ্ব স্ব্যদর্শনে বিনিয়োগং। ওঁ তচ্চকুর্দেবিহিতং পুরস্তাচ্ছুক্রম্করেও। পশ্বেম শরদঃ
শতং জীবেম শরদং শতং নলাম শরদং শতং মোদাম শরদং শতং তবাম শরদঃ
শতং শৃগ্রাম শরদং শতং প্রবাম শরদং শতং প্রতীতাং স্থাম শরদং
শতম্। ততঃ স্ব্যার্ঘং দভাৎ—আরুফেনেত্যশ্ব হিরণ্যস্তৃপঝিষিং সবিতা
দেবতা ত্রিষ্টুপ্ ছলং স্ব্যার্ঘাদানে বিনিয়োগং। ওঁ আরুফেন রজসা
বর্তমানো নিবেশয়য়মৃতং মর্ত্যঞ্চ হিরণ্যয়েন সবিতা রথেনাদেবো যাতি
ভ্বনানি পশ্বন্।

ততঃ মাত্রে সমর্পরতি মাতাহণি পতিপুত্রবত্যা পরিবৃতা মঙ্গলত্র্যঞ্জনি সহকারেণ কুমারং গৃহং অমানরেৎ। ইতি। \*

### অথারপ্রাশনম্

তত্র শুনিনামা আয়ি:। বঠে অইমে দশমে বা মাসি তৎ কার্য্য্। ততঃ শুন্ধিবেদ কৃতনিত্যক্রিয়ঃ পিতা সগণেশ-মাত্কা-পূজাং বিধায় কৃত-বৃন্ধিশান্ধঃ ব্রহ্মানঃ ব্রহ্মানঃ ব্রহ্মানঃ ব্রহ্মানঃ বিধায় কৃত্বিশ্রান্ধানঃ ব্রহ্মানঃ বিধায় কৃত্বিশ্রান্ধানঃ ব্রহ্মানঃ বিধায় কৃত্বিশ্রান্ধানঃ ব্রহ্মানা বিধায় ক্রা বহলী যথায়ত্তমিতি বিষ্ণুধর্মোন্তর্বচনাৎ ব্রহ্মানীন্ সম্পূজ্য শুনিনামানমিয়ঃ প্রতিষ্ঠাপ্য আঘায়াজ্যভাগান্তঃ কর্মা করা জাতকর্ম-নাম-করণবৎ আনাদেশদেবভাজ্যঃ পঞাছতীহ বা † মাতুঃ ক্রোড়ে উপবিষ্টঃ স্থ্র্মাতঃ কৃত্রমঙ্গাং পরিহিত্রভ্রবর্মানালার ক্রার্ম্মার প্রাশ্রেদনেন মল্রেণ। শুল্লপত ইত্যক্ত নলক্বর্মাবির্ম্নপতিদে বৃহতীচ্ছন্দঃ শিশোরয়প্রাশনে বিনিয়োগঃ। ও অন্নপতেহয়ক্ত নো দেহ্নমীবক্ত শুদ্মান প্রাশনে বিনিয়োগঃ। ও অন্নপতেহয়ক্ত নো দেহ্নমীবক্ত শুদ্মান প্রাশ্রহিত কলগণ্ডুবং কারয়িছা ও প্রাণায় স্বাহেতি পঞাহ্নতী-ভিক্ষিত্বা ও অমৃতাপিধানমিদি স্বাহেতি আপোহশানং কারয়িছা তামূলং প্রাশ্ত শিশুং ভ্যাব্পবেশ্য তদ্যে পুত্তক-শঙ্ক-বস্ত্রাদি-শিল্পভাণ্ডানি নিধায় তক্ত

<sup>\*</sup> পরিশিষ্টনতং যথা—চতুর্থে মাসি আপুর্থামাণপক্ষে যতি বাচরিছা বিষ্টকৃতঃ প্রাক্ক্ষাতালক্ তং কুমারমাদার সহভার্যাজ্ঞাতিবান্ধবৈঃ পুরন্ধীভিন্চ মঙ্গলতুর্বানির্ঘোষেণ গৃহান্নিক্ষান্য দেবারতনমেতঃ দেব তামুপহারেণাভার্চ্যাশিবো বাচরিছারতনং প্রনক্ষিকৃত্য গৃহমের।ৎ
সম্বন্ধিনো বা গৃহং নীছানরেদিতি। অত্র বাহ্দেবপদ্ধতিমতং লিখাতে। তদ্ধথা—জননাৎ চতুর্থে
মাসি শুভলগ্রতিখ্যাদির পুণানহং বাচরিছা সগণেশ-গৌর্ঘাদি-বোড়শনাত্কাপুলাং বিধারাভ্যুদ্বিকং কৃষা হলাতং বলকৃতং বিহিত্যন্তারনং কুমারমাদার গেহান্নিগতা প্রাতঃ ওঁ এহি হ্ব্যু
সহপ্রাংশো তেলারাশে জগৎপতে। অত্কশ্পর মাং ভক্তং গৃহাণার্যাং দিবাকর ইতি স্বাারাঘাং
দল্প প্রশান্ত ক্ষান্তার্যাদ ক্ষান্ত ক্ষারাদ্যাশিক্ষে দল্প দেবালয়ং প্রদক্ষিকৃত্য
স্কীয়াদিগৃহে বালকমভিনন্দা সাহং ওঁ ক্ষারোদার্বিস্ভুত্ অত্তিনেত্রসমূদ্ধব। গৃহাণার্ঘাং
শশান্থেদং রোহিণীসহিতো মম ইদমর্ঘাং ওঁ চক্রায় নমঃ ওঁ দিবাশন্ত্রারাভং ক্ষারোদার্বসন্তবম্। নমামি শশিনং ভক্তা শক্তোমুকুটভূষণমিতি প্রণমেৎ। ইতি বহিনিক্রমণ্ম।

<sup>†</sup> ওঁ অগ্নরে যাহ। অগ্নরে ইনং নমম, ওঁ ইক্রার স্বাহা ইক্রার ইনং নমম। ওঁ প্রজাপতরে স্বাহা প্রজাপতর ইনং নমম। ওঁ বিখভায়ে দেবেজ্যাঃ মাহা বিবেজ্যো দেবেজ্য ইনং নমম। ওঁ প্রসাদে স্বাহা প্রসাদে বিশ্বাহার স্বাহা প্রসাদে বিদ্যাদিন স্বাহার স্

<sup>‡</sup> ওঁ আজমলাতাকানঃ। তৈতিরং ব্রহ্মবর্চসকামঃ। মৃত্তোদনং ভিতলকামঃ। দ্ধি-সধু-মৃত্যিব্রমলং প্রাশ্রেৎ সর্ক্বকামঃ।

জীবিকাং পরীক্ষেত। শিশু স্বেচ্ছয়া প্রথমং ষৎ স্পৃ্শেৎ তদস্ত জীবিকেতি বিস্থাৎ। ততঃ বিষ্টকুদাদিহোমশেষং সমাপ্য কর্মকাররিত্ত্রাহ্মণায় দক্ষিণাং দক্ষাৎ। কুমার্য্যা এতৎ সর্কামমন্ত্রকম্।

### অথ চূড়াকরণম্

অত্ত দত্যনামাগ্নি:। ততঃ শুদ্ধদিবদে প্রাতনি ব'র্ত্তিতনিত্যকুত্যঃ পিতা সগণাধিপ-মাতৃকা-পৃজাদিকং নির্বর্ত্তা বৃদ্ধিশ্রাদ্ধং কুর্য্যাৎ। ততো লগ্নসমন্ত্রে প্রাঙ্গনে ছায়ামগুপে শুচিরাচান্তঃ প্রারুপ উপবিশ্ পূর্ববং উপলেপনাদি-পর্তকণান্তাং কুশণ্ডিকাং করা অগ্নে বং সত্যনামাসীতি নাম করাবান্ত সম্পূক্ত কুমারেণাবারকঃ স্রুবেণাবারাক্যভাগে জুছয়াৎ। তত্ত দ্ৰব্যাসাদনে বিশেষঃ। ত্রীহিষব-মাধ-ভিল-পূর্ণপাত্রত্তরং 🗢 তাত্রময়ং লোহময়ং বা শীতমুক্তমুদকং বলীবৰ্দ্দ-গোময়ং নবনীতং শমীপত্তং ত্রিখেতশল্পকীকণ্টকং ৰধি চাদাদরেও। ততো মাতা কুমারমঙ্কে ক্বরা পত্যবামপার্শে অগ্নে: পশ্চি মতঃ প্রাল্থী উপবিশতি। ততঃ পিতা একবিংশতিকুশপিঞ্গীদক্ষিণহক্তে কুৱা তিষ্ঠেৎ। ততো হোমকর্ত্তা আজ্য ভাগান্তঃ কর্মা কুৱা চত্তম আছতী-ভ্ছিতি—অগ্ন আয়ুংষীতাক ত্যুচক্ত বৈথানদা ঋষরোহগ্লিঃ প্রমানো দেবভা গায়ত্রীচ্ছন্দ আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ। ও অগ্ন আয়ুংযি পবস আন্তবোর্জ্জমিষঞ নঃ। আনরে বাধক ত্চভূনাম্কাহা। অগ্নরে পবমানার-ইদং নম্ম। আরি-শ্বি: প্রমান: পাঞ্জন্ত: পুরোহিত:। ত্নীমহে মহাগন্ন সাহা। আগ্রে প্रदर्भानात्र हेनः नस्म । उँ व्यद्य প्रदेश व्यशी व्यत्य वर्ष्टः यूरीर्गम् । ५४-जिश्वः मित्र (भावः स्वारः। अञ्चल्य भवमानात्र हेनः नमम। अञ्चलिक न जिन्न-ত্যক্ত হিরণাসর্ভ্রাষ্টঃ প্রজাপতিদে বিতা ত্রিষ্ট্রপ্ ছন্দ পাজ্যহোমে বিনিয়োগ: : ওঁ প্রজাপতে ন বদেতাক্তকো বিশ্বাজাতানি পরি তা বভূব। বৎকামান্তে জুত্মন্তলো অন্ত বয়ং স্থাম পতয়ো রয়ীণাং স্বাহা। প্রজাপতয়ে ইদং নমম। ইতি চতত্ৰ আহতীহ'ৰ৷ পিতা শীতমুফফোদকম্ একপাত্ৰে মিশ্ৰীকুৰ্য্যাৎ— ওঁ উচ্চেন বায় উদকেনেহি। ততঃ কিঞ্মিশ্রিজনং নবনীতঞ্চ গৃহীত্বা তেন কুমারশু বামপ্রদেশমারভ্য পুরস্তাদ্দকিণদেশপর্য্যন্তং প্রদক্ষিণং

মতান্তরে পাত্রচতুইরম্।
 তৃতীয়—১০

ত্রি: ক্লেন্ত্রং অনেন মন্ত্রণ—ওঁ অদিতি: কেশানিত্যক্ত প্রজাপতিশ্ববি-রদিতিদে বতা ( আপো দেবতা: ) গায়ন্ত্রীচ্ছনশ্চূ ড়াকরণে বিনিয়োগ:। অদিতি: কেশান্ বপতৃ আপ উলল্ভ (মেদসে দীর্ঘায়ুইায় তত স্থিখেত শল্লকী-কণ্টকেন স্ৰ্কান্ কেশান্ বর্চ্চসে। দক্ষিণবামক্রমেণ ভাগদমং কুর্য্যাৎ। ততো দক্ষিণভাগং চতুর্দ্ধা বামভাগং ত্রিধা কুর্য্যাৎ। ততন্ত্রীণি কুশপিঞ্লানি আদায় (অভ্যাত্মাগ্রাণি) দক্ষিণ-কেশভাগে নিদ্ধাতি—ওষধ ইত্যক্ত প্রজাপতিশ্ববিরোষ্ধিদেবিতা গায়জ্ঞী-চ্ছলাশচূড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁ ওষধে ত্রায়বৈদং। ততো দক্ষিণহত্তেন তাত্রকুরেণ পীড়য়েৎ—স্বধিত ইত্যস্ত প্রজাপতিস্কবিঃ স্বধিতিদেবিতা গায়ন্ত্রীক্তলশ্চৃড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁ স্ববিতে নৈনং হিংদীঃ। ততে। লৌহক্রেণ ছিলাৎ—ওঁ ষেনাবপৎ সবিতা ক্রেণ সোমস্ত রাজ্ঞো বরুণস্ত বিঘান তেন ব্রহ্মাণো বপতেদমস্তায়ুমান্ জ্বদষ্টির্যথাসৎ ইতি ময়েণ শমীপত্র-কুশপিঞ্লীদহিতকেশান্ প্ৰচ্ছিত প্ৰাগগ্ৰান্ শমীপৰ্ণৈ দহ মাত্ৰে প্ৰষ্চ্ছিত স। চ তান্ **আন**ভুহে গোময়ে নিদধাতি। ততঃ পুনরপি **অ**পরকেশেষু উফোদক-নবনীত্মক্ল-দর্ভপিঞ্লীত্ররার্পণ-তামক্ষুর-পীড়নাস্তং কর্ম কথা লোহক্রং গৃহীথা-প্রজাপতিথ বিধাতা দেবতা ত্রিষ্ট্রপ্ছলক্ডা-করণে বিনিয়োগঃ। ওঁষেন ধাতা বৃহস্পতেরগ্নেরিক্রস্ত চায়ুষেহবপৎ। তেন ত আয়ুবে বপামি স্কলোক্যায় স্বস্তবে। ইতি দিতীয়কেশং ছিত্তা শমীপত্রৈঃ সহ পূর্ব্ববৎ গোময়ে নিক্ষিপেৎ। ততোহপরভাগেহপি পূর্ব্ববৎ উন্দনাদিকং ক্বা লৌহক্ষুরমাদায়—ও ধেন ভূগত রাত্রাং জ্যোক চ পশাতি স্থান। তেন ত আয়ুবে বপামি স্থালোক্যায় স্বস্তায়ে ইতি ছিত্তা মাত্রে শমীপত্রৈ: সহ দলতি, মাতা চ গোময়ে নিক্ষিপেং। ততঃ পুনরপ্যপরভাগে সর্বাং পৃর্বাবং ক্বৰা পূৰ্ব্বোক্তমট্ত্র: সর্বৈশ্চতুর্থভাগচেছদনং কুর্য্যাৎ। বামভাগেছপি উফোদক-দর্ভপিজুলীত্রয়ার্পণং তামুক্রপীড়নান্তং কুতা পূর্ব্বোক্ত-প্রথমচ্ছেদনমন্ত্রেণ প্রথমং দিতীয়েন দিতীয়ং তৃতীয়েন তৃতীয়ং কেশং ছিত্বা মাত্রে প্রবচ্ছেৎ, মাতা চ গোনস্বশরাবে নিক্ষিপেৎ। চতুর্থভাগচ্ছেদনং নাপিতেনৈব কর্ত্তবাম্। ততঃ কর্ত্তা অনুষ্ঠোপকনিষ্ঠাভ্যাং কুরধারাং মার্জ্জেৎ— ৰৎক্ষুরেণেত্যস্ত প্রজাপতিঝ বিঃ ক্ষ্রো দেবতা ক্রধারামার্জ্জনে বিনিয়োগঃ। ওঁষংক্রেণমর্চয়তা স্থপেশসা বপ্তা বপদি কেশান্ ভঞ্জি শিরো মান্তাযুঃ প্রমোধী:। ততো নাপিতায় ক্ষুরং দল্পা বদেৎ—ওঁ শীতোঞাভিরদ্ভিরবর্থং

কুর্নাণোহকুথন্ কুশলাকুর । নাপিতঃ করবাণীতি বদেৎ। ততোংগ্রিসমীপে সর্বান্ কেশান্ মুগুরেও। ততঃ কুমারং বেদীং নীআ পতিপুত্রবভ্যো মঙ্গল পূর্বকং স্নাপায় বাহালতঃ কেণ্ডিবংং কার দ্বিআ মাতৃরকে দহ্যঃ। ততো হোতা প্রায়শ্চিতঃ বিষ্টরুতঞ্চ সমাপ্য - কর্ম্মকার দিত্রান্ধণায় দক্ষিণাং দছাও। আজি দাবধারণঞ্চ কুর্য্যাও। কেশাংশ্চ গোষ্ঠে বংশবিটপে বা স্থাপদ্মেও। ব্রীহাদিচতুরঃ শরাবান্ নাপিতায় দতাও। তৃষ্ণীমেবৈতও কুমার্যাঃ।

## ইতি চূড়াকরণম্।

# অথোপনয়নম্

তত্র সমূত্রবনামা অগ্নিঃ। পিতা ক্বতনিত্যক্রিয়ো মাতৃপ্রাং বিধার বৃদ্ধি-শ্রাদ্ধং কুর্যাৎ। মাণবকং প্রাতর্ভোজন্বিত্বা আচাম্য শিথাধারণপূর্বকং ক্ষোরং কারয়েও। ততঃ কুমারং স্নাপন্থিতা গৈরিকাদিবস্ত্রমেকং পরিধাপ-রেং। ততঃ পিতা উপলেপনাদি-মেক্ষণ-সংস্কারান্তং কৃত্ব। চকং শ্রপয়েং। তত্র ও সদসম্পত্তরে তা জুইং গৃহামি ও সদসম্পত্তরে বা জুইং নির্বাপামি ও সদসম্পত্ত্বে তা জুষ্টং প্রোক্ষামি ইতি ষথাক্রমং গ্রহণ-নির্ব্বাপণ-প্রোক্ষণরপদংস্কারান্ কুর্য্যাৎ। এবং গায়ন্ত্রৈ শ্ববিভাঃ বন্ধণে। ততঃ প্রক্ষোটনাদি-পাকান্তঃ কর্ম্ম কুত্বাবতারয়েও। অথ মেকং কুমারতা বামক্তরে দক্ষিণভাগাবলম্বনং কুর্য্যাদনেন 🛬 —ওঁ যজ্ঞোপবীত-মিত্যস্ত পরমত্রশ্বশ্বঃ পরমান্ত্রা দেবতা ত্রিষ্টুপ্ ছলো বজ্ঞোপবীতধারণে বিনিয়োগ:। ওঁ যজ্ঞোপবীতং পরমং পবিত্রং বৃহস্পতের্যৎ সহ**জং পুরস্তা**ৎ। সার্য্যমগ্র্যং প্রতিমুঞ্ শুদ্রং যজ্ঞোপবীতং বলমস্ত তেজঃ। ততঃ কৃষ্ণাব্দিনো-ত্রীয়ং দতাদনেন মল্লেণ-প্রসাপতিশ্বিলিষ্টুপ্ছনদঃ কৃষ্ণাজিনং দেবতা कुछाकिनপরিধাপনে বিনিয়োগ:। ওঁ মিত্রস্ত চকুর্বরুণং বলীয়ন্তেলে। যশসী ত্বিরং সমিদ্ধ:। অনাহনতাং বসনং জরিষ্ণু পরীদং বাহাজিনং দধেৎহম্। ততো বথাবিভবং কুওলানিনা অলঙ্ক্যাৎ। ততো মাণবকঃ করসম্প,টৌ বদ্ধা বাচেত ওঁ উপনম্বন্ধ মাং যুম্মৎপালা:। গুরু: ওঁ উপনেষ্যামি ভবস্তমিতি বলেৎ। তত আচার্যোখনের তরতো গ্রা কুমারেণাধার রুশ্তত্ত আছতী জু হয়াৎ। অগ্ন **আ**য়ুংযীতি তিন্দণাং শতং বৈথানসা ঋষরোহন্নিঃ প্রমানো দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দ

গৃহত্তে পরিশত্তে চ বজ্জত্তকুঞাজিনমেখলাপরিধাপনের মন্ত্রো ন বিহিতঃ।

**भाकारहारम** विनिरमां १:। **७ व**श बाग्र्शि পবস बाखरवार्कमियकनः। আরে বাধন্ব হুচ্ছুনাং স্বাহা। অগ্নরে প্রমানায় ইদং নম্ম। ও অগ্নিঞ্জি: প্রমানঃ পাঞ্জক্তঃ পুরোহিতঃ। ত্রমীমহে মহাগর্ম স্বাহা। অগ্নরে প্রমানায় ইদং নমম। ওঁ অয়ে প্রবন্ধ স্থপা অস্মে বর্চ্চঃ সুবীর্য্যম্। দধ্যায়িং ময়ি পোষং স্বাহা। অগ্নরে প্রমানায় ইদং নমম। প্রজাপত ইত্যক্ত হিরণ্যগর্ভঋষি-স্তিইপুছনঃ প্রজাপতির্দেবতা আজ্যহোমে বিনিয়োগ:। ওঁপ্রজাপতে ন ঘদেতাম্বন্থো বিশ্বাব্দাতানি পরি তা বভূব। যৎকামান্তে জুহুমন্তন্নো অস্ত্র বয়ং স্তাম প্রতারে রয়ীণাং স্বাহা। প্রজাপত্তর ইদং নম্ম। তত উত্তরতোখ্য়ে: প্রাত্ম্ব আচার্য্য উর্দ্ধন্তিষ্ঠেৎ। তত আচার্য্য পুরস্তাৎ প্রত্যব্ধা মাণবক: कृठाञ्चलिखिष्टिष्ठेर । व्यथानार्यम्। बन्ननात्रित्वारञ्जलिमस्टः भूतरम् । व्यानार्यम् স্থান্তঃ ভচিত্র ক্ষিণঃ। আচার্য্যো মন্ত্রং পঠন্ বন্ধচারিণোংঞ্জলিং স্বাঞ্জলৌ মিশ্রী-করোতি, ৰথা—খ্যাৰাশ্বন্ধিঃ দবিতা দেবতা অন্ত্প্ ছন্দো জলাঞ্লিদেকে বিনিয়োগঃ। ওঁ তৎসবিতুর্বীমহে বয়ং নেবল্ড ভোজনম্। শ্রেষ্ঠং সর্বধাতমং তুরং ভগস্ত ধীমহি। ইতি তেনোদকেন ব্রহ্মচারিণোংঞ্জলো আব্মনো-২ঞ্জলিমাসিঞ্জি। ততো মাণবকস্ত দক্ষিণহন্তং সাঙ্গুষ্ঠং গৃহীত্বা পঠেৎ— দেবস্ত ত্বেত্যস্ত শঙ্কাষি: সবিত্রশ্বিপৃষ্ণে। দেবতা উপনয়নে মাণবক-**रुख श्रद्रा** विनिद्यांगः। **७ ए**नवस्त्र पा मविजः श्रमत्वश्वित्नार्वा इन्हाः পুষ্ণো হন্তাভ্যাং হন্তং গৃহ্বামি এঅমুকদেবশর্মন্। ততঃ পুনরঞ্জল-शृत्रवास्तः कर्म विधात्र श्रूनः मात्रुष्ठेः पिकनः शानिः पिकटनन शानिना গৃহীত্বা সবিতেত্যক্ত প্রজাপতিঋষি: সবিতা দেবতা উপনয়নে মাণবক-হত্তগ্রহণে বিনিয়োগ:। ওঁ স্বিতা তে হত্তমগ্রহীৎ শ্রীঅমুকদেবশর্মন্। পুনরপ্যঞ্জলিপুরণান্তং কর্ম কৃষা সাঙ্গুঠং পাণিং গৃহীয়া—অগ্নিরিত্যস্ত প্রকাপতি শ্বিরায়িদে বিতা উপনয়নে মাণবকহস্ত গ্রহণে বিনিয়োগঃ। ও ষ্মিরাচার্যন্তব শ্রী মনুকদেবশর্মন্। তত স্বাচার্য্যো মাণবক্ষ্ স্বাদিত্য-মীক্ষরেং। ওঁদেব স্বিতরেষ তে এক্ষ্যারী তং গোপার স্মামূত। ইত্যাচার্য্যো জপেং। আচার্য্যো মাণবকং পুচ্ছতি কিন্নামাসি ইতি। মাণবকঃ 🕮 অমুকদেবশর্মাহং ভো: ইতি বদেৎ। 🔸 অথাচার্য্য: ওঁ কন্ম বন্ধচার্য্যদি

কিল্লামাসীতি অমুকদেবশর্মাহহমিতি চ পাঠে! ন প্রকারগৃতঃ প্রচলিতাক্মদেশীরপুস্তকের বর্ততে।

প্রাণস্থ বন্ধচার্য্যদি কন্তামুপনয়তে কার তা পরিদদামি। অথাচার্য্যো বন্ধচারিণং প্রদক্ষিণমাবর্ত্রে । যুবেতাশু গৃৎসমদ্শবিঘূপো দেবতা তিই প্ ছবং প্রদক্ষিণাবর্ত্তনে বিনিয়োগ:। ওঁ যুবা স্থবাসাঃ পরিবীত আগাৎ স উ শ্রেমান্ ভবতি জারমান:। ইত্যর্দ্ধর্চেন। আচার্য্য: সমাবৃত্তমূথস্থ বন্ধচারিণ উদ্ধস্থিতস্থ পৃষ্ঠদেশে স্থিতা স্কল্পোরপরি হন্তং দত্তা উত্তরার্দ্ধেন হানম্বদেশমালভেত। তন্ধীরাস ইত্যক্ত গুৎদমদঋষিযুদ্ধা দেবত। ত্রিষ্প্ছলো মাণবক্ষদমদেশা-लष्टरन विनिद्यार्थः। ও जसीतामः कव्य जैवयस्य चारवा मनमा दमव्यसः। তত উভৌ প্রাল্পে অগ্নিস্মীপে উপবিশেতান্। ততো মাণবকন্তৃ ফীমেকাং স্মিধ্মশ্রে ভ্রা অপ্রাং গৃহীত্বা—প্রজাপতিখ বির্গ্নিদে বতা বৃহতীচ্ছল: দ্মি-কোমে বিনিরোগ:। ও অগ্নরে সমিধমাহার্যং বৃহতে জাতবেদসে। তরা অমগ্রে বর্দ্ধ সমিধা ব্রদ্ধণা বরং স্বাহা। অগ্নর ইনং নমম। ততো মাণবকো>গ্নিমুশস্খ নোদকেন পাণিনা বারত্রয়ং মূথং নিশাষ্ট্রনেন মল্লেণ—ওঁ তেজদা মা সমনজ্যি। অথাঞ্চলিং বদ্ধাগ্রিমুপতিষ্ঠেৎ। মরি মেধামিতি বল্লাং বস্তুশ্রতথবিলিক্ষোক্ত। দেবতা ক্তিইপু ছল্দোহগ্যুপস্থানে বিনিয়োগ:। ওঁ মরি মেধাং মরি প্রজাং মধ্যগ্রিকেজে। দধাতু ওঁ মগ্নি মেধাং মগ্নি প্রজাং মগ্নীক্র ইক্রিয়ং দধাতু। ওঁ মগ্নি মেধাং মগ্নি প্রজাং মিয়ি সুর্বো লাকো দধাতু। ওঁ ষত্তে অংগ তেজস্তেনা২হং তেজস্বী ভূরাসন্। ওঁ ষত্তে অগ্নে বর্চ্চন্তেনাহহং বর্চন্ত্রী ভূমাসম্। ওঁ ষত্তে অগ্নে হরন্তেনাহহং হরস্বী ভূগাসম্। \* (ততঃ কৌৎসঞ্বিঃ ক্রেণ দেবতা জগতীচ্ছন্ আশীঃকর্মণি বিনি-য়োগ:। ও মানভোকে তনয়ে মান আয়ুষি মানো গোষু মানো অথেবু রীরিষ:। মানো বীরান্ রুদ্র ভামিতো বধীইষিষ্ঠঃ সদনি ছা হবামহে। उँ ब्यायूबः समारक्षः क्र अभे ज ब्यायूबः भाषाण ब्यायूबः यरक्षांनाः ब्यायूबः তবে অস্ত ত্রায়ুষ্ম। ওঁপতি শ্রদাং যশঃ প্রজাং বিভাং বুরিং শ্রিয়ং বলম্। আয়ুষ্যং তেজ আরোগ্যং দেহি নে হব্যবাহন)। † ততো ব্রন্ধচারী জাহবয়ং ভূমৌ নিপাত্য গুরোদ ক্ষিণপাদং দক্ষিণহত্তেন বামেন বামং গৃহীত্ব বদেৎ শ্রীমমুকদেবশর্দাহং ভো অভিবাদয়ে। আচার্ঘ্য ওঁ আয়ুমান্

ময়ি মেধামিতি ঽয়াং হিরণাগর্ভবিষ্টিং পূর্বব্রয়াণাময়৾ল্রাগন্তাস্থা। দেবতা উত্তরতয়ণাময়িদেরতা য়য়ামাস্তরী পায়ত্রীছেন্দোহয়াপয়ালে বিনিয়োয়ঃ। ইতি য়বিদেরতাচ্ছলনাং
পাঠো বাস্ত্রেরপাছতে।
† বদ্ধনীয়য়ায়পাঠঃ কেবলং বাস্ত্রেরপাছতে) গুতঃ ন সাব্বব্রিকঃ।

ভব সৌম্য শ্রীঅমূকদেবশর্মান ইতি। ততো ব্রহ্মচারী পাদাবৃপসংগৃহ ব্রন্থাৎ— 🕹 ষ্কীংই ভোঃ সাবিত্রীং ভো অমুক্রহীতি। ● আচার্য্যো বন্ধচারিহন্তো হস্তাভ্যাং সংগৃহ্ উত্তরীয়বাসসা আচ্ছাত 🕇 গায়ত্রীমুপদিশেৎ । বিশ্বামিত্রশ্ববিগায়ত্রীচ্ছলঃ সবিতা দেবতা গায়জ্যুপদেশে ( সাবিত্রীঙ্গপে ) বিনিয়োগঃ। ততো ধ্যানম্— ওঁ স্বেতবর্ণা সমুদ্দিষ্টা কৌষেয়বসনা তথা। শ্বেতৈর্বিলেপনেঃ পুল্পৈরলক্ষা-বৈশ্চ শোভিতা। অক্ষমালাধরা দেবী পদ্মাসনগতা আদিত্যমণ্ডলাস্থায় বুন্ধলোকগ্ৰা স্থিত। । ‡ ওঁ ভূতুবি:স্বন্ধ স্বিত্ব রেণ্ড: পুনর্পি বিশ্বামিত্রৠ্বিরিত্যাদি ওঁ ভূত্**বঃ**স্ব-ন্তৎস্বিতুর্ববেণ্যং ভর্মে। দেবস্তা ধীমহি। ততঃ পুনরপি বিশামিত্র-ঋষিরিত্যাদি ও ভূভূবিঃম্বন্তৎ সবিত্ববিবাস্। ভর্গো দেবস্থ ধীমছি ধিয়ে। <sup>রোন</sup>: প্রচোদয়াৎ ওঁ। ¶ ততঃ ওঁ ভূঃ ওঁ ভূবঃ ওঁ স্বরিতি পাঠয়েৎ। ততো আচ্যব্যো মাণবকস্থ হাদয়ে উদ্ধাঙ্গুলিং দক্ষিণং করং দত্তা পঠেৎ—মম ব্রত ইত্যস্থ পরাকদাসঋষিষ্দিয়ং দেবতা ত্রিষ্ট্রনা মাণ্বক্ষ্দিয়দেশালভনে বিনিয়োগঃ । ওঁ মম ব্রতে তে হৃদয়ং দ্বামি মম চিত্তমফুচিত্তত্তে অস্তু। মম বাচমেকমনা জুষস্ব বৃহস্পতিষ্টা নিযুনক্ত, মহৃম্। ততো মাণবকস্ত কটিদশে মেথলাং বগ্নতি— বিশ্ব:মিত্রঝবিমে থলা দেবতা ত্রিষ্টুপ্ছনেশা মেথলাবন্ধনে বিনিয়োগঃ। ওঁ ইয়ং হরুক্তাৎ পরিবাধমানা শর্ম বরূথং পুনতী ন(ম) আগাৎ। প্রাণাপানাভ্যাং বলমাবহন্তী অসাদেবী স্মৃভণে মেথলেয়মু। ওঁ ঋতস্ত গোপ্ত্রী তপসঃ পরস্বী ঘতী রক্ষঃ সহমান। অরাতীঃ। সা মা সমস্তমভিপর্ব্যেহি ভদ্রে ধর্তারস্তে মেথলে মারিষাম। ততো মাণবককেশাগ্রসন্মিতং পলাশদণ্ডং দতাদনেন ময়েণ---আত্রেরঝবিস্তিষ্ট্ ছন্দো বিশ্বেদেবা দেবতা দণ্ডপ্রদানে বিনিয়োগঃ।

বামদেবমতে অধী হ ভো: দাবিত্রীমিত্যাচার্যান্ত ভো অমুক্রহীতি মাণবকন্ত উল্জি: ।

<sup>🕆</sup> আত্মানং ব্রহ্মচারিণং বাসনাচ্ছাদ্ম ইতি বাস্থদেবঃ।

<sup>🚦</sup> ধানিং ন গৃহস্ত্রকারেণ বাস্থদেবেন বা ধৃতম্।

শ বাহদেশন্ত ওঁ ভূত্বংশতংশবিত্ববৈশান। ইতি প্রথমং পাদং। ওঁ ভূত্বংশং ভলো দেবন্ত ধীমহি। ইতি দিতীয়ং পাদং। ওঁ ভূত্বংশং ভলো দেবন্ত ধীমহি। ইতি দিতীয়ং পাদং। ওঁ ভূত্বংশং। ধিলো রো নং প্রচোদরাৎ ওঁ ইতি তৃতীয়ং পাদম্। ততঃ দর্বাং। পাদং পাদং বদি বন্তুং ন শকোতি তদা পাদার্দ্ধং পাদার্দ্ধং ন এ তেগবিতুং। ব্রেবিরং। ভর্গো দেব। স্ত ধীমহি। ধিরো রো নং। প্রচোদয়াৎ ওঁ ইক্তি বাচরিখা সর্বাং বাচরীত। ইতি ক্রমাহ। মন বতে ইত্যাদি মন্ত্রন্ত ধ্যাদিকং ন বাহদেবেন লিখিতম্। ন বা মেধলাপারধাপনে মন্ত্রো বিহিতঃ। প্রকারেণাপি মেধলাক্রনে ন মন্ত্রং সমুপ্দিষ্টঃ।

স্বন্তি নো মিমীতামখিনা ভগঃ স্বন্তি দেব্যদিতিরনর্ববণঃ। স্বন্তি পৃধা অসুরো ন্ধাতু নঃ স্বস্তি ভাবাপৃথিধী স্থচেতুনা। 🛊 ততো ব্লচারিণমাদিশেৎ। 🗝 ব্ৰন্ধচাৰ্য্যদি, অপোহশান, কৰ্ম কুৰু, মা দিবা স্বাপ্দী: আচাৰ্য্যাধীনো বেদ-सवीच + जिनकमिष्क्माणाह्रवाः कृत्न, मात्रः প्राठः मिष्याद्यहि, मात्रः প্রাতর্ভিকাচরণং কুরু। অন্তারী দর্বত বাচ্মিতি ক্রয়াৎ। 🛨 ততো ক্রন্ চারী উনকং স্পৃষ্টা বদ্ধাঞ্জলিব দৈৎ—ওঁ ব্রচানাং ব্রতপতির্দি ব্রতং দাবিত্রীকং বৈদিক্ষিমং কালং চরিষ্যামি ভক্তকেরং তেনাধ্যাসম্ইতি ষ্থাশক্তি কাল-নির্দ্দেশং কুর্য্যাৎ। প ততে। গৃহীতদণ্ডো বন্ধচারী ভিক্ষাপাত্রং হস্তে কৃত্ব। প্রার্থমেং—ওঁ]ভবতী ভিক্ষাং দদাতু। § ইতি মাতরং ততো ভগিনীং ততো ভবান ভিক্ষাং দদাতু ইতি পিতরং যাচেত। তে চ যথাশক্তি দহ্যা। ততো ভৈক্যমাচার্য্যায় নিবেদ্রেৎ। স্বাচার্য্যোহপি উপযুক্তাতামিতি অফুজ্ঞাং দ্যাৎ। মাণবকোহপি তৎ সায়ং ভোক্তঃ স্থাপয়েৎ। (ততো বেদাব্যয়নং কুর্য্যাৎ)। অথাচার্য্যো (ভিক্ষালনৈত্তভূলৈমু ষ্টিগ্রহণাদিপুর্বাকং শ্রপরিত্বা) ব্রন্ধচারিণায়ারকঃ স্রুচি ঘূতক্রবং দ্রা চরোম ধ্যাৎ পূর্বার্কাত মেক্ষণেনারং বিরবদায় অনোপরি মৃতক্রব্যবদানস্থানে মৃতক্রব্রয়ং দত্তা বশিষ্ঠৠযিঃ **मतमव्यक्तित्र विश्व शांत्र बोञ्च स्थान श्री अप्रकार कराय अप्र** বিনিয়োগ:। ওঁ সদদম্পতিমভুতং প্রিয়মিজ্র কাম্যং সনিং মেধাময়াদিয়ং चारा। मनमञ्जलदा हेनः नमम। ७ जरमित्त्र्व द्वामित्रानि विजीयः भावरेखा

ৰাফদেৰপদ্ধতে দঙ্প্ৰদানে অন্তবিধা মন্ত্ৰে লিখিতঃ। বধা—এৰ ক্ষেতি ইতি
মন্ত্ৰপ্ৰিয় শত্ৰিদ্ধিঃ নিত্ৰাৰকণী দেৰতে ত্ৰিষ্টুপ্ছন্দো দঙ্পাদানে বিনিয়োগঃ। ওঁএৰ
ক্ষেতি রধবীতিম্থিবা গোমতী রতু। প্ৰতিষ্পশ্ৰিতঃ।

<sup>🕇</sup> উনকে লাদি সায়ং প্রাতর্ভিকাররণং কুর্বিলান্তঃ পাঠো ন স্ক্রকারণ্ডঃ।

<sup>‡</sup> অন ৰাফ্ৰেবঃ—ওঁ একচাৰ্ঘাসীতি গুলা; একচাৰাত্মীতি ৰট্টঃ। আপোশানং কৰ্প কুলাইত গুলা। কৰোমীতি বট্টঃ। আচাৰ্যাধীনো অব। ভবামীতি বট্টা। দিবা মা স্বাপ্সীঃ, ন দিবা স্থাপমীতি বট্টা। সদ্যাশ্বপাষ। উপাদে ইতি বট্টা। বাজং প্ৰাতঃ সমিধমাধৎয়। আদেধে ইতি বট্টা। বেদানধীয়। পঠামীতি বট্টা। বাজং প্ৰাতভিক্ষা ভিক্ষামীতি বট্টা। ইতি:মন্থভিদমাহ।

<sup>¶</sup> ওঁ ব্রতানামিত্যানি মন্ত্রো ন স্ত্রকারসম্মতঃ ধৃতঃ,বাস্থদেবপদ্ধতৌ বা ন পৃতঃ, প্রসলিভ-পুস্তকের্ দৃষ্ঠতে।

<sup>ৢ</sup> অরং স্ত্রকারগৃতঃ পাঠঃ—ভবতি ভিক্ষাং দেহীতি বা ভবন্ ভিক্ষাং দেহীতি প্রচলতপুতঃকর্ গৃহীতঃ পাঠঃ। ততঃ বিউকুলাদিহোমং সমাপরেদিতি কেবাঞ্জিলতন্।

हेनः नमम। ७ अविजाः स्रोहा अविजा हेनः नमम। (जजः नमिटकामः।—-- ननन-ম্পত্তিমিতাত বশিষ্ঠ্যবিঃ সদদম্পতিদে বিতা গায়ত্রীচ্ছনঃ সমিদ্ধোমে বিনিয়োগঃ। ওঁ সদসম্পতিমভূতমিত্যাদি। সদসম্পত্য ইদং নমম। এবং গায়ন্ত্র্যা গায়ন্ত্র্য ইনং নমম। ঋষিভ্যঃ স্বাহ। ঋষিভ্য ইনং নমম)। † অথ সন্ধ্যোপাসনম। ততে। ব্ৰন্ধচারী তৃষ্ণীমেকাং সমিধং ছবা অপরাং গৃহীবা প্রজাপতিঋষিরগ্নিদেবিতা বুহতীচ্ছলঃ সমিদ্ধোমে বিনিরোগঃ। ওঁ অগ্নরে সমিধমাহার্বং বুহতে জাতবেদসে তরা অমগ্রে বর্দ্ধর সমিধা ব্রহ্মণা বয়ং স্বাহা, স্বগ্নরে ইদং নমম। ততঃ স্বিষ্টকুদ্ধোমং সমাপ্য ব্ৰাহ্মণান ভোজয়িবা তান মাণবকো২ঞ্জলিং বদ্ধা যাচেত—ওঁ বেদসমাপ্তিং ভবস্তো ক্রবস্ত্র। তে চ বেদসমাপ্তিরস্ত ইতি ক্রয়ুঃ। ‡ ততো মেধাজননম। আচার্য্য: কুন্ডোনকেন বিঞ্জঃ বন্ধচারিণমিমং মন্ত্রং পাঠয়েন্বথা— বু ও মুপ্রব: স্মানা অদি ৰথা তং স্মানঃ স্মানা অসেবং মাং স্মানঃ দৌলাবসং কৃষ্ণ। যথা खः तनवानाः वक्षण निवित्भाशत्रावशः सञ्चानाः त्वनण निवित्भा ज्ञामम्। অথ বেদারন্ত:। গুরু: সঙ্করং ক্ববাজ্যহোমং কুর্যাৎ—ওঁ পৃথিব্যৈ স্বাহা পৃথিব্যৈ ইদং নমম। এবমু অগ্নরে, ব্রন্ধে, প্রজাপতরে, ছল্পোভ্যঃ, দেবেভ্যঃ, ঋষিভ্যঃ, শ্রদারে, মেধারে, সদসম্পত্রে, অনুমত্রে। তত্তো আচার্য্যোহরেরুত্তরতঃ প্রাব্যুথার শিষ্যার গুরুমীক্ষমাণার দক্ষিণহক্তেন গুরুদক্ষিণপাদং গৃহীত্বা উপসন্নায় ওঁকারমহাব্যাহ্নতিপাঠপূর্ব্বকং বেদাদীন পাঠবেরৎ, ৰথা--মধুচ্ছলৰাষির্গ্নিদেবিতঃ ব্ৰহ্মযজ্ঞজপে বিনিয়োগ:। ওঁ অগ্নিমীলে গায়ন্ত্ৰীচ্চন্দো পুরোহিতং। পুনরপি ঋষিদেবতাচ্ছলাংদি পঠিবা ওঁ ভূতুবিংমঃ ওঁ অগ্নিমীলে পুরোহিতং ৰজ্ঞ দেবমুদ্ধিজন। পুনরপি ঝব্যাদিকং পঠিবা ওঁ ভূতু বংবং ওঁ অধিমীলে পুরোহিতংযজ্ঞ দেবমুরিজন্। হোতারং রত্রধাতমন্। এবং দর্বতি পচ্ছ:

সমিদ্ধোমো ন স্ত্রকৃতা পরিশিষ্টকারেণ বা ধৃতঃ ধৃতত্ত কৈন্চিৎ প্রাচীনপৃত্তকৈরিতি
লিখিতোহরং হোমঃ।

<sup>†</sup> অত্র বাহ্নদেব:—ওঁ অগ্নরে যাহা ইতি ছবা সদসম্পতিরিভান্ত মেধাতি বিক্রমবর্গারত্রী-চছন্দ: দনসম্পতিদে বিভা চক্রহোনে বিনিরোগ:। ওঁ সদসম্পতিমিত্যাদিনা জুহুরাও। অথ বিধা-মিত্রথয়ি স্বিভা দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দছের হোমে বিনিরোগ:। ওঁ তৎসবিত্রিভাদি স্বিভ্-হোমং ধ্বিভা: খাহেতি ধ্বিহোমঞ্চ স্মাপ্রেও। ইভাহ।

<sup>‡</sup> অত উদ্ধাৰকারলবণাশী এক্ষচাৰ্য্যংশারী তিরাত্তং ধারশরাত্তং সৰ্থসরং বা ইতি গৃহস্তব্য

প অনিশিতারাং দিঞ্চেক্স্লং পলাশং ক্শন্তবং বা পলাশাপচারে প্রদক্ষিণম্দক্ষেন। ত্রি: পরিষিক্তং বাচরতি । ইতি গৃহস্তব্যুতপ্রয়োগ:।

আদ্ধশং সর্বান্ ইআদে ঋষাদি ওঁকার-মহাব্যান্থতি-পাঠপুর্বকমধ্যাপরেও।
ইতি ঋগ্বেদাধ্যয়নম্। \* ৰাজ্ঞবন্ধাধীক্ষিক্ছলো বায়্দে বিভা ব্রমারক্তমণে
বিনিয়োগং। ওঁ ভূভূবিংমাং ওঁ ইবে বোর্জেম্বা বায়বং ছ। দেবো বং সবিতা
প্রাপমত্ব। শ্রেষ্ঠতমার কর্মণে। ইতি যজ্বেদাধ্যয়নম্। গৌতনভরম্বাজঋষিগায়লীচ্ছলোহয়িদে বিভা ব্রমারক্তমণে বিনিয়োগং। ওঁ ভূভূবিংমাং ওঁ
আর আায়াহি বীতয়ে। গুণানো হ্বাদাতয়ে। নিহোতা সৎসি বহিষি। ইতি
সামবেদাধ্যয়নম্। নায়দ্ধিমিগায়লীচ্ছলো বক্ণো দেবতা ব্রম্মক্তমণে
বিনিয়োগং। ওঁ শয়ো দেবীরভিটয়ে। আাপো ভবস্ত পীতয়ে। শং বোয়ভিশ্রবন্ত

## অথ সমাবর্তনম্

ব্রদ্ধচারী প্রিয়ব্চনপ্রণিপাতাশ্রয়াত্মরূপ-পারিতোষিকপ্রদানেন ভোষয়িত্বা স্বাত্বা প্লবননামকদংস্কারং করোতি। তত্ত্তৈতানি দ্রব্যাণি বথা—কর্ণে काक्षनानिनिधि छकु छनः कर्छ পরিধানবোগ্যং মণিং বস্ত্রম উপানদ্রুগ্রং বৈণব-দণ্ডং সর্বেবিধিপদ্ধান্তবেপনম উঞ্চীবং ছত্ত্রং সর্বমাচার্য্য এব দভাৎ। ততঃ সর্কা: সমিধোহগ্রিসমীপে স্থাপয়েৎ। আচার্য্যায় ভোজাং গাঞ্চ দত্তা অক্তেভ্যো-হপি ভোজানি দহাৎ। ততঃ কর্তা অত্যেতাদি অমুকদেবশর্মণঃ সমাবর্ত্তনকর্মান্সহোমনহং করিষ্যামি। ততঃ শাশ্রাদিসংস্কারং কুর্য্যাৎ। তত্রাদৌ চৌড়দমাপকে। হোম:। ভতঃ কুশপিঞ্ল্যাধান-তাম্র-লৌহক্ষ্র-পীড়নাদিকাঃ ক্রিয়া: কার্য্যা:। তন্মস্ত্রাশ্চ ড়াকরণপ্রকরণে তৈত্তিম'লৈ: সপ্তবা ছিত্বা মাত্রে সমর্পণান্তং কুত্বা শিথাধারণপূর্ব্বকং কৌরং कांत्रदार । ততো মাণবক: मर्द्योववीजि: स्राचा वस्रामिकः श्वत्रदा निर्देश स्वाः গৃহীয়াৎ यथा-नौर्चल्या अविभिजादकर्ता राष्ट्रित जिल्ले प्रत्या राज्यभिविधारन বিনিয়োগ:। ওঁ ঘূবং বন্ধাণি পীবসা বসাথে মূবোরচ্ছিড়ামস্তবোহদর্গা:। অবাতিরতমনতানি বিশ্বঋতেন মিত্রাবরুণাসচেথে। ইত্যনেন পরিধায়াপরবক্তমূপধায় উফীষং বধীয়াৎ। ততঃ—পরমাত্মশ্বয়িং পরমাত্মা দেবতা

গামপ্রীক্তনো যজোপবীতধারণে বিনিয়োগঃ। ও যজোপবীতং পরমং বৃহম্পতের্গৎ সহজং পুরস্তাৎ। আয়ুমুমগ্রাং প্রতিমৃঞ ৰজ্ঞোপনীতং বলমস্ত তেজঃ ইতি গৃহীয়াৎ। তত ওঁ উত্তৰ্মং বৰুণপাশ-মন্দ্রবাধমং বিমধ্যমং শ্রেণার অথাদিত্যব্রতে বরং তবানাগ্রেণাহদিত্বে স্থামঃ। ইতি মেথলাকুফাজিনে মোচম্বিত্ব! ওঁ অশ্বনন্তেজোহদি চফুর্মে পাহি ইত্যনেন মঞ্জনং গৃহীয়াৎ। 🔸 ওঁ অশ্মনন্তেজোহদি শ্রোত্রং মে পাহি ইতি কুণ্ডলে বধীয়াৎ। অফুলেপনেন পাণী প্রলিপ্য মুখমগ্রে ব্রাহ্মণো লিম্পেত ওঁ অনার্তাহস্তনার্ত্তোহহং ভূগাদ্মিতি শিথায়াং স্রজং বগ্নীয়াৎ। ওঁ দেবানাং প্রতিষ্ঠে স্থ: সর্বতো মা পাতমিত্যুপানহাবাস্থায় ওঁ দিবশ্ছনাদি ইতি ছত্রং। ওঁ বেণুরদি বানম্পত্যোহদি সর্ব্বতো মা পাহি ইতি বৈণবং দণ্ডং গৃহী**দা**। उँ षायुवाः वर्षकः त्राय्यत्यावस्योपि जित्य । हेनः हित्रगुः वर्षकः देवजात्राविण-**जा** निमाम् । हेिं कर्ष्ट मिनः वद्योद्यार । ততে। मानवरका नम्यारनास्मीयः कृदा छेलानरशे मछाक्राधिनमोलमान्नजार्धारत्नाकाः निनि छेद्वांदिका वकाः মাণমন্ত্রেণ সমিধনেকাং জুত্রাৎ। ওঁ স্বতঞ্চ মে অস্বতঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্রতঞ্(মে) নিন্দা চ মে অনিন্দা চ মে তম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), বিভা চ মে অবিভা চ মে তম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), শ্ৰদ্ধা চ মে অশ্ৰদ্ধা চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), প্ৰজ্ঞা চ মে অপ্ৰজাচ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), ইষ্টঞ্চ মে অনিষ্টঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে). দত্তঞ্চ মে অদত্তঞ্চ মে তন্ম উভন্নব্ৰতঞ্(মে), অধীতঞ্চ মে অনধীতঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্চ (মে), কৃতঞ্চ মে অকৃতঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), স্ত্যঞ্চ মে অস্ত্যঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), শ্ৰুতঞ্চ মে অশ্ৰুতঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), ব্ৰতঞ্চ মে অব্ৰতঞ্চ মে তন্ম উভয়ব্ৰতঞ্(মে), যদগ্নে সেব্ৰস্থ সপ্রজাপতিকতা স্থায়িকতা স্থায়িরাজতাতা সাকাশতা সাতীকাশতা সান্কাশতা সপ্রতীকাশস্ত সদেবমন্ত্রাস্ত সগন্ধবিশেরক্ষত সহার্থােশ্চ পশুভিগ্রাইমান্চ যাম আবাৰ আবাৰুনি ব্ৰতং তলে সৰ্বব্ৰতমিদমহমধ্যে সৰ্বব্ৰতো ভবামি স্বাহা। আগ্রে ইনং নমম। ততে। ব্রহ্মতারী উপবিশা মণ্ডপাৎ সমিধমাকুষ্য বক্ষ্যমাণ-দশভিমন্ত্রি: স্মিদ্ধোমং করোতি। মুমাগ্ন ইতি নবর্চন্ত স্কুন্তান্বিরসো বিহ্ব্য-ঋষিবিশেদেবা দেবতা আভাঅটো ত্রিষ্টুভঃ অস্ত্যা চ জগতীচ্ছ-লাংসি সমিদ্ধোমে विनिद्यार्भः। ७ मर्भादः वट्का विरुद्ध वदः (बक्कानांख्यः शूद्धम। मशः

স্বাং পূর্ব্বঞ্লীরভা ততে। দক্ষিণমঞ্জরীত। প্রতিচকুর্ম জার্ত্তিঃ ইতি পৃহতাব্যব্।

নমস্তাং প্রদিশক্ত প্রস্থাধ্যকেণ প্রনা জয়েম স্বাহা। বিশেভ্যো দেবে ভা हेनः नमम। ও मम (नवा विहर्त मुद्ध मुर्स हेन्द्रवरसा मकरला विसूविधः। ৰমান্তরিকম্ক্লোকমন্ত মহুং বাতঃ প্রতাং কামে অস্মিন্ সাহা। বিশেভ্যো **८**नटवङ्ग हेनः नमम । ওঁ মধি ८नव। জবিণমাধক্ষ**তাः মধ্যাশীরস্ত মধি ৮েবহু**তিঃ। দৈৰ্যা হোতাৰো বহুৰত্ত পুৰ্বেরিটাঃ স্থাম তথা স্থ্যীরাঃ স্বাহা। বিশ্বেভ্যো নেবেভা ইনং নম্ম। ওঁ মহাং বজন্ত মম বানি হব্যা কৃতিঃ সভ্যা মনসো মে অন্ত। এনোমা নিগাং কতমচ্চ নাহং বিশ্বেদেবাসো অধিবোচতা নঃ স্বাহা। বিখেভ্যো দেবেভ্য ইদং নমম। ওঁ দেবীং বছুর্বীকৃত্বপ: কুণোভ বিখেদেবাদ ইহ ৰীরম্বন। মাহা স্মৃহি প্রজ্মা মা তন্তিম বিধাম বিষতে সোম রাজন্ স্বাহা। বিষেত্যো দেবে ভা ইনং নমম। ওঁ অঞ্চে মহাং প্রতিমুদন্ পরেষামদরো গোপা: পরিপাহি নত্ত্ব। প্রত্যঞোবন্ত নিগুত: পুনত্তে মৈষাং চিত্তং প্রবৃধাং वित्नमं श्राहा। वित्यंत्छ। त्रत्वछ। हेनः नमम। ७ श्राहा शाह्यान्य ষপ্পতির্দেবং ত্রাভারমভিষাতিষাহম। ইমং যজ্ঞমশ্বিনোভা বুহস্পতির্দেবাঃ পান্ত যজমানং ক্রথাং স্বাহা। বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য ইনং নমম। ওঁ উরুব্যচা নো মহিষঃ শর্ম বং সদস্মিন হবে পুরুহুতঃ পুরুক্ষঃ। স নঃ প্রজাবি হ্যাখ मुख्राक्त मारना त्रीतिरया मा প्रतानाः चाहा। विरयरेखा रहरवेखा हेनः नमम । ওঁ যে নঃ সপত্ন। **অপতে** ভবন্ধিন্দ্রাগ্নিভ্যামববাধামহে তান্। বসবো রুদ্রা ব্দাদিত্যা উপরিম্পৃশং মোগ্রং চেত্তারমধিরাজমক্রন স্থাহা। বিশ্বেভ্যো **(मर्ट्स होतर नम्म। ७ अर्सिकमिन्सम्**र्ह्छ। इत्राम्ह स्वा शाकिकन शिनशंकित्यः। हेमः त्ना रक्षः विहत्व कृषश्चाण कृत्वाहतित्वा त्म निनः चा স্বাহা। \* স্থ্যার ইনং নমম। ততঃ প্রায়শ্চিত্তং সমাপ্য স্বিষ্টকুতং সমা-পরেৎ। ব্রহ্মদক্ষিণাং দত্তা কর্ম্মকারয়িত্বাহ্মণায় দক্ষিণাং দত্যাৎ। ততো-शिक्त जार्याद्र शास्त्र क्या । जिनकक मधार ।+

অর্কাঞ্মিতান্ত ঝবাাদিকং ন দৃশুতে।

<sup>†</sup> বাস্থদেৰমতে সমাবর্ত্তনন্। যথীচরিতত্রক্ষচর্থা। বিস্তান্তে গুরুমর্থেন সন্তোষ্য তেনামুভাতঃ স্বর্থেন সমাবর্ত্তনং কুর্থাৎ। ওঁ অন্তেত্যাদি ব্রক্ষটর্থাং সমাবর্ত্তরিয়ে ইতি সক্ষয়
কৃতপ্রাণারামো ব্রক্ষচারী স্থানামানম্বিং ছাপরেও। ত্রবাাসাদনে বিশেষ:—বীহিষ্বমাবৃত্তিলঃ
পৃথক্ পূর্ণানি শরাবাশি কুরং শীতমুকোদকং নবনীতং দধি মণিকুগুলষরং বাসসীক্ষ্ত্রং
উপানগ্রুগলং বৈণবং দতঃ ক্ষণ্ডস্থ প্রলং ক্রপ্তবীজপিষ্টন উপাষ্যপ্তনং প্রথিতং স্বর্ণমন্ত্র
মণিকাসাদ্রেও। আবারাত্তং বহিন্তাপনং বিধার প্রকৃতকর্ম কুর্যাও। ব্রথা—একাদশপ্রাদেশভাত্রাঃ সমিধ আসাদ্রায়িমর্করেও। ভিন্তরেবারো অর আর্বীতি ভিস্পাং শতং বৈধানসা

व्यवसार्थाः भवमात्ना स्ववज शांत्रज्ञोत्क्रक जालात्शास विनित्ताशः। ও जश जांगुरवीजाति দেবিতা ত্রিষ্ট প্ ছন্দ আজাহোমে বিনিরোগ:। ওঁ প্রজাপতে ন বদেতাদিত্যাদি প্রজাপতরে হতা শীতোঞ্চান্তসী গৃহীতা একস্মিন্ পাত্তে ওঁ উচ্চেন বার উদকেনেহীতি মিশীকুর্বাণ। নবনীতং দৰি চ অংস নিক্ষিপা তাসামেকদেশং গৃহীত্বা তিঃ প্রদক্ষিণং শার্মণাং মুওনং ওঁ জদিতিঃ শ্বশ্ৰণি বপতু জাপ উলভ বৰ্জনে ইতি প্ৰবিক্ষণগ্ৰহণকে কুণানভাগোগ্ৰাগ্ৰান শ্ৰী-পত্রাণি চ নিৰধাৰে। ওঁ ওৰৰে তারৰ সাং ইতি ওঁ ৰখিতে সা সা হিংসীরিতি কুরেণাবপীড ওঁ বেনাবৰ্ণং সবিভা কুৰেণ সোমভ রাজ্ঞো বঙ্গণভ বিহান্ তেন তে এক্ষণো বপ্তেদমভায়ুখান্ बन्दरहिर्देशानः हेडि हिन्छि। এरमुख्द्रभाक्तः ज्रुष्टेद्राटह्नरन क्नेनिष्ट्रवाख्यरनीएनासः कृषा ওঁ বেন বাতা বৃহস্পতেরগ্রেরিক্রন্ত চাবপং। তেন ত আর্বে বপামি ফ্রোক্যার স্বস্তরে। ইতি বিভারং ভিৰেলাং। পুনস্তবৈধবাৰপীভাওঁ বেন ভূরে-চরাধিবং ক্লোক্চ পঞ্চতি স্থাস্। তেনাবুবে বপানি হলোক্যার বস্তবে ইতি তৃতীয়ং পূর্ব্বোক্তবিভিন্ন বৈশ্বতৃত্বং ছিল্যাং। ওঁ বং-ক্ষেণ মচ্যতা কপেশস। বঞা ৰণসি ঋঞাণি শুদি মুখং মাস্তায়ু প্ৰশেষীরিভিঋঞাবপনং কুর্বাৎ। এবং শাক্ষনথলোমানি বাপরিত। পিটুকরঞ্জনীজেনাক্ষমুলিপ্র কুর্থাৎ। ভত আচমাাগ্রিদমীপমাগতা যুবং বস্ত্রাণীতি দীর্ঘতমা ঋবিরিত্যাদিনা বস্তুং পরিদ্ধাৎ আচমা ওঁ যজোপবীতমিত্যাদিনা যজোপবীতং তৃঞীমুকীষং পরিধায় ছিরাচমা ওঁ অস্বনতেজোহসি চকুর্বেপাহি ইতি চকুষী অপ্লয়িতা ওঁ অপুনতেজোহসি শ্রোতং দে পাহি ইতি কুওলে পরিধার কুত্ব মান্তত্ত্বিপ্তাভ্যাং পাণিভ্যাং ব্রাহ্মণরাজন্ত-বৈশ্ব-শুদ্রবীদেবকা বধা-क्रमः मृथवाङ्कद्वाभरञ्चात्रनपूनित्म्भतः। भन्नार करत्रो श्रक्ताना अ वनार्द्वजापि व्यन् वक्षनः ওঁ ৰেবানামিত্যাদি উপানদ্বারণং কুর্ঘাৎ, ওঁ দিব ইত্যাদি ছত্তং বেণুরিত্যাদি বৈপবং দণ্ডং ভূঞীং कमधन् हमनक शृहोदार। ७ व्याद्वाः वर्कक्रिक शांति हैया त्ना वद्धाः विहत्त स्वयाक क्रिका हिंदिरोटम हिनः हो हे ठारछनावृशाल्रेखन स्वर्गबहः मिंश कर्छ बन्नीतार । उटछा बक्कानी উদ্বাহিত উপাৰছে ত্যক্তা আসাদিতৈকাদশ সমিধাং প্রাদেশপ্রমাণামেকাং সমিধনাদার ওঁ শুতং নিন্দা একা বিভা প্রজেটং দত্তং সত্যং শৃতং যদগ্রেঃ সেক্রস্ত সরাজস্ত সপ্রজাপতিকুল সদেবক সদেবরাজভ সপিতৃকভ সপিতৃরাজভ সমনুবাজভ সমনুরাজভ সাকাশন্ত সাতীকাশন্ত সানুকাশন্ত সপ্ৰতীকাশন্ত সহারণ্যঃ পশুভিগ্ৰ বিশ্বপ্ৰয়াস্থানাস্থলি এতং ভব্মে সর্ব্বেভাষদমহরপ্লে সর্ব্বেজতা ভূরাসং ঝাহা ইদমগ্রথে নমম ইতি ছত্বা উপবিশ্য মমাপ্লে বর্চ ইতি দশভিশ্প্ভিরকা দশ সমিধো জুহরাৎ। মমাগ্রে ইতি স্জক্ত বিহবাধবিরিতাাদি দেবা অবিশ্বিত্যাদি। ।। ওঁ বৃহং বল্পন্ত ইত্যাদি। ৪। ख रेषवीः ৰড়কীরিত্যাদি।।। ওঁ অল্লে মক্তং প্ৰতিসুদ্ধিত্যাদি। ৬। ওঁ ধাতা ধাতৃণামিত্যাদি। ৭। ওঁ উঞ্নাচা ইত্যাদি। ৮। **ଓଁ यে नः मन**का অপত ইত্যাদি। »। ଓ অर्र्साक्ष्मिक रेত্যাদি। ১০। ইতি সমিৰো হত্য ওঁ ভূতু ব: च: वाहा हेवः প্ৰজাপততে নমম। ইতি হছা বিষ্টকুদাদিহোদশেং বিধায় তিলকং कृषों जेक्काल भूर्यभाजः प्रक्रिमाः पद्म वानित्या नाम्त्रिका जाकगान् त्वावदार । देखि नाम्रत्यनमञ्ज ৰগ্ৰেদসংক্ষারপদ্ধতি:।

रैि अग्रविमनाः मनविधनः सांद्रशक्षिः।

# দ্বিতায়ঃ প্রবাহঃ

# পাঠ্য-প্রকরণম্

# বিরাটপর্ব

#### প্রথমোইব্যার্

ওঁ নারায়ণং নমস্বত্য নরকৈব নরোভ্তমন্। দেবীং সরস্বতীকৈব ততো অয়মূদীরয়েৎ॥

#### ওঁ নমো ভগবতে বাস্ফদেবার।

ওঁ জনমেজয় উবাচ। কথং বিরাটনগরে ময় পূর্ব্বপিতামহাঃ। অজ্ঞাতবাস-মূবিতা তুর্ব্যোধনভয়ার্দিতাঃ॥ পতিব্রতা মহাভাগা সততং ব্রহ্মবাদিনী। দ্রোপদী চ কথং ব্রহ্মবঞ্জাতা তৃঃধিতাহবসং॥

বৈশশায়ন উবাচ। যথা বিরাটনগরে তব পূর্বপিতাময়া:। অজ্ঞাতবাসমূবিতাতচ্ছ্গ্র নরাধিপ॥ তথা তু স বরাঁল্লক্য ধর্মাদ্রর্মভূতায়র:। গর্মায়ন
রাম্মণেভ্য আচথ্যে সর্বামেব তং॥ কথমিরা তু তং সর্বং রাম্মণেভ্যোমূবিটির:। অরণীসহিতঃ তল্ম রাম্মণার ক্সবেদয়ং॥ ততো মূবিটিরো রাজা
ধর্মপুরো মহামনা:। সন্নিবর্ত্তায়্লান্ সর্বানিতি হোবাচ ভারত। বাদশেমানি বর্বাদি স্বান্তাই প্রোবিতা বয়ম্॥ অরোদশোহয়ং সংপ্রাপ্তঃ য়ভ্রাৎ
পরমত্র্বসঃ। স সাধু কৌত্তের ইতো বাসমর্জ্ন রোচয়। সমৎসরমিমং
বত্র বসেমাবিদিতাঃ পরিঃ॥

অর্জুন উবাচ। তত্তিব বরদানেন ধর্মন্ত চ মহাত্মন: (মন্থ্রাধিপ)।
অক্সাতা বিচরিয়ামো নরাণাং ভরতর্বত । কিন্তু বাসার রাষ্ট্রাণি কীর্ন্তরিয়ামি
কানিচিৎ। রমণীরানি গুপ্তানি তেবাং কিঞ্চিৎ শ রোচর । সন্তি রম্যা
কনপদা বহুরোঃ পরিতঃ কুরন্। পাঞালাকেদি-মংতাক্ত শ্রুরেনাঃ পটচ্চরাঃ ।

নশার্ণা ( নব ) নর্রাষ্ট্রান্ত নর্নাঃ শারা যুগন্ধরাঃ। কুন্তিরাষ্ট্রং স্থবিভাবং স্থান্ত্রার্বন্তরভাগ। এতেবাং ক্তমো রাজনিবাসভব রোচতে। বংস্থামো যত্ত্র রাজেজ সমৎসর্বিবং বর্ষ।

যুধিন্তির উবাচ। এবমেতরহাবাহো বথা স ভগবান্ প্রভূ:। অববীৎ সর্বভূতেশন্তব্যা ন তদন্তথা। অবশ্রমের বাসার্থং রমণীরং শিবং সুংম্। সমন্ত্র্য সহিতিঃ সর্বৈর্থত্যমকুতোভরৈঃ॥ মংস্ত্রো বিরাটো বলবান-ভিরক্ষেৎ স (ভিরজ্ঞোহথ) পাশুবান্। ধর্মশীলো বদান্তশ্চ বৃদ্ধশ্চ স্মহাধনঃ॥ বিরাটনগরে তাত সম্বংসরমিশং বয়ম্। কুর্বস্তম্ভ কর্মাণি বিহরিয়াম ভারত॥ যানি হানি চ কর্মাণি তম্ভ বক্ষামহে বয়ম্। কর্জুং বোগ্যঃ স তৎ কর্ম ব্রবীতু কুক্রনশনাঃ॥

অর্জুন উবাচ। নরদেব কথং তক্ত রাষ্ট্রে কর্ম করিয়সি। বিরাটনগরে লাধো বংক্তসে কেন কর্মণা॥ মৃত্র্বদাকো ব্রীমাংশু ধার্মিকঃ সত্যসন্ধর:। রাজংখ্যাপদার্কটা কিং করিয়সি পাওব॥ ন ত্ংথম্চিতং কিঞ্চিজাজা বেদ ব্যাজনঃ। স ইমামাপদং প্রাপ্য কথং ঘোরাস্তরিয়সি॥

যু । টির উবাচ। শৃণুধ্বং বং করিয়ামি কর্ম বৈ কুরুনন্দনাঃ। বিরাটমত্ব সংপ্রাপ্য রাজানং পুরুষর্বভাঃ। সভান্তারো ভবিয়ামি তক্ত রাজো মহাত্মনঃ। কজো নাম বিজ্ঞা ভূষা মতাক্ষঃ প্রিরদেবনঃ। বৈদ্ব্যান্ কাঞ্চনান্ দাঙান্ ফলৈক্যোতীরলৈঃ সহ। কৃঞাক্ষালোহিতাক্ষাংশ্চ নির্বাহ আমি মনোরমান্। বিরাটরাজং রময়ন্ সামাত্যং সহ বায়বম্। ন চ মাং বেংশুতে কশ্চিভোন্যিয়ামি (ভোষরিয়ে চ) তং নৃপম্। আসং মৃধিষ্টিরশ্ভাহং পুরা প্রাণসমঃ স্থা। ইতি বক্ষ্যামি নৃপতিং বদি মাং সোহত্যোক্ষ্যতে। ইভ্যেত্বো ময়া থ্যাতং বিহরিয়াম্যহং যথা। বুকোদর বিরাটে তং বংশুসে কেন কর্মণা। ১ — ২৭॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণ বাদ-সংমন্ত্রণে যুধিন্তিরবাক্যং নাম প্রথমেহধ্যারঃ।

## দ্বিভীহেরাইপ্রায়ঃ

ভীমনেশ উবাচ। পৌরোগবো ক্রবাণোহহং বল্পবো নাম নামতঃ। উপস্থাস্থামি রাজানং বিরাটমিতি মে মতিঃ॥ স্পান্ত করিয়ামি কুশলোহস্মি মহানসেশ্ব ফুডপুর্কাণি বৈর্ভ ব্যশ্বনানি স্থানিজিতৈঃ॥ ভানপ্যভিভবিয়ামি প্রীতিং সংজনমন্তম্। আহরিয়ামি দারূপাং নিচরারহিটাইপি চ॥ বং প্রেক্ষ্য বিপূলং কর্ম রাজা প্রীতো ভবিয়তি। অনাম্বাণি ক্র্মাণ্ড তানি কর্মাণি ভারত॥ রাজ্যতক্ত পরিপ্রেয়া মংস্তত্তে মাং ভূশং (বর্ণা) নূপন্। ভক্ষ্যান্তরস্পানানাং ভবিয়ামি তথেশরঃ॥ বিপা বা বলিনো রাজন ব্রভা বা মহাবলাঃ। বিনিগ্রাহ্য যদি মরা নিগ্রহীয়ামি তালপি॥ বে চ কেচিরিযোৎক্রতি সমাজের নিযোধকাঃ। তানহং নিহনিয়ামি রতিং তক্ত বিবর্ধয়ন্॥ ন বেতান্ যুধ্যমানান্ বৈ হনিয়্যামি কথকন। অথ তান্পাতয়িয়্যামি যথা বাক্তত্তিন কয়ম্॥ আরালিকো গোবিকর্তা ক্রপক্তা নিযোধকঃ। আসং যুধিন্তিরক্তাহমিতি বক্ষ্যামি (পৃচ্ছতঃ) রাজনি॥ আজানমাজনা রক্ষংশ্চরিয়্যামি বিশাম্পতে। ইত্যেতৎ প্রতিজ্ঞানামি বিহরিয়্যান্যাহং বর্ণা॥

যুধিষ্ঠির উবাচ। বমগ্লির কিবো ভূতা সমাগচ্ছমূলাং বরম্। দিংকুঃ था ७वः नावः नामाईनहिष्ठः भूता॥ महावनः महावाहमिष्ठः कृकनम्नम्। সোহয়ং কিং কর্ম কৌন্তেয়: করিষ্যতি ধনঞ্জয়: ॥ **সোহয়মাসান্ত তং দাবং** তর্পরামাস পাবকম । বিজিত্যৈকরথেনেক্রং হত্তা পরগ-রাক্সান ॥ বাস্থকেঃ নর্পরাজক্ত স্বদারং হতবাংশ্চ য:। শ্রেষ্ঠ: (য: প্রতিযোধানাং) প্রতিষ্ধাং নাম সোহজুনি: কিং করিষ্যতি॥ সূর্য্য: প্রতপতাং শ্রেষ্ঠো বিপদাং बान्नत्वा वतः। जामीविदक मर्नावामित्रिक्कचिनाः वतः॥ जायुवानाः वतन বছ্র: করুলাংশ্চ গবাং বরঃ। হ্রদানামূদধিঃ শ্রেষ্ঠঃ পর্জ্জন্তো বর্বতাং বরঃ॥ युज्जाह्रेफ रःजानाः ( नांगानाः ) रुख्टियजावटमा वजः । भूद्धः श्रियामायधिटका-ভার্ব্যা চ মুহূদাং বরা। বথৈতানি বিশিষ্টানি জাত্যাং জাত্যাং বুকোদর॥ এবং ধুবা গুড়াকেশ: শ্রেষ্ঠ: সর্বধমুমতাম্। সোহর্মিক্রাদনবরো বাস্থদেবা-ন্মহান্তাতি:।। গাণ্ডীবৰৰা বীভৎস্থ: শেতাশ্ব: কিং করিবর্মতি। উষিদ্যা পঞ্বধাণি সহত্রাক্ষত্ত বেশ্বনি॥ **অ**স্ত্রবোগং স্থাসাত্ত **স্বর্ণীর্যান্মান্থবাত্ত্ত**ম্। দিব্যাক্সন্ত্ৰাণি চাপ্তানি দেবক্ৰপেণ ভাষত। ॥ যং মক্তে ছাদশং ক্ৰুমাদিত্যামাং जरमानमम्। वरुनाः नवमः मरक श्रहाणाः नममः छथा॥ वक वाहु महमो দার্ঘো জ্যাবাত-কৃতিনত্বচো। দক্ষিণে চৈব সুব্যে চ গ্রামিব বহুঃ ক্লভঃ॥ श्यिवानिव देननानाः नमूजः निज्ञामिव। विष्यानाः वथा नव्या वर्षामिव িহব্যরাট্ (হব্যবাট্)॥ মৃগাণামিব শার্দ্ধলো গরুত্মানু পভভামিব। বর: সর্থ্যানানাং সোহর্জ্ব: কিং করিয়তি॥

আর্থুন উবাচ। প্রতিজ্ঞাং বণ্ডকোংশীতি করিব্যানি মহীপতে।
ক্ল্যাঘাতো স্মহান্তো মে সম্বর্জ্যং নূপ তৃত্বরো॥ বলরিশ্ছাদরিব্যামি বাহ্
কৃতবিণাবৃত্তো। কর্ণরোঃ প্রতিষ্ঠ্যাহং কৃপ্তলে জ্ঞলনোপমে ॥ পিনদ্ধকম্ব্যুং
পাণিভ্যাং তৃতীরাং প্রকৃতিং গতঃ। বেণীকৃতশিরা রাজরারা চৈব বৃহরলা ॥
পঠরাখ্যারিকাঞ্চিব স্থীভাবেন পূনঃ পূনঃ। রময়িব্যে মহীপালমক্তাংশাভ্যঃপূরে জনান্ ॥ গীতং নৃত্যং বিচিত্রক্ষ বাদিত্রং বিবিধং তথা। শিক্ষরিব্যান্
ন্যহং রাজন্ বিরাটক্ত পুরস্থিরঃ ॥ প্রজানাং সম্দাচারং বহু কর্ম কৃতং বদন্।
ছাদরিস্থামি কোন্তের মার্রাম্মান্নমান্ত্রনা ॥ র্ষিষ্টিরক্ত গেহে বৈ দ্রোপভাঃ
পরিচারিকা। উবিতাশীতি বক্ষ্যামি পৃষ্টো রাজ্ঞা চ পাণ্ডব (ভারত)॥
এতেন বিধিনাক্ষরঃ কৃতকেন বধানলঃ। বিহরিব্যামি রাজেক্র বিরাটভবনে স্থাম্॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। ইত্যেবমূজা পুরুষঞ্জবীরত্তথার্জ্বনো ধর্মভ্তাং বরিষ্ঠঃ। বাক্যং তথাসৌ বিররাম ভ্রো, নূপোহপরং লাভরমাবভাবে ॥ ১-৩৩॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বাদি বাসসংমন্ত্রণে অর্জুনবাক্যং নাম বিতীরোহধ্যারঃ॥

# ভূতীয়োহধ্যারঃ

যুখিন্তির উবাচ। কিং বং নকুল কুর্রাণত্তক তাত চরিয়সি। কর্ম তং বং সমাচক্ রাট্রে ভক্ত মহীপতেঃ। সুকুমারক শ্রক দর্শনীরঃ সুপোচিতঃ॥ নকুল উবাচ। অথবরো ভবিয়ামি বিরাটনূপতেরহম্। সর্রথা জ্ঞানসম্পন্নঃ কুশলঃ পরিরক্ষণে॥ গ্রন্থিকো নাম নামাহং কর্মৈতং স্থপ্রিরং মম। কুশ-লোহন্মাধনিকারাং তথৈবাধচিকিৎসিতে॥ প্রিয়াক্ষ সভতং মেহখাঃ কুরুরাক্ষ বথা তব। ন ছ্টাক্চ ভবিয়ন্তি কিশোরা বড়বা অপি॥ ন চ হুটা (অহুটাক্চ) ভবিয়ন্তি (সুপ্ঠাক্চ) পৃঠেষু চ রথেষু চ। পুরা যুখিন্টিরক্তাহং হয়জ্ঞো ভরত-র্বভ॥ বে চ মাং মন্ত্রিয়ন্তি বিরাটনগরে জনাঃ। তেভ্য এবং প্রক্রামি বিহরিয়ামাহং য়থা॥ পাশুবেন পুরা তাত অন্যেথধিকতঃ পুরা। বিরাটনগরে ছ্লক্রিয়ানি মহীপতে। ন চ মাং বেৎক্ততে কন্টিভাষরিব্যাত তং নূপম্॥ মুখিন্তির উবাচ। সহদেব কথং তক্ত সমীপে বিচরিয়াসি। কিং বা বং

কর্ম ( তাত ) কুর্মাণঃ প্রচ্ছেরো বিহরিষ্যাস ॥

সহদেব উবাচ। গোসংখ্যাতা ভবিষ্যামি বিশ্বাটন্ত মহীপতে:। প্রতিবেদা চ দেখা চ সংখ্যানে কুশলো গবাম্॥ তন্তিপাল ইতি খ্যাতো নায়া বিদিতমন্ত তে। নিপ্শন্ত চরিষ্যামি ব্যেতৃ তে মানসো জর:॥ আহং হি ভবতা গোষ্ সততং প্রহিত: প্রা। তত্র মে কৌশলং কর্ম হৃত্বন্ধং বিশাম্পতে॥ লক্ষণকরিতকাপি গবাং ঘচাপি মকলম্। তৎসর্কাং মে স্বিদিতমন্তচাপি মহীপতে॥ ধাষভানপি জানামি রাজন্ প্রভিলক্ষণান্। বেষাং মৃত্রম্পান্তার অপি বন্ধ্যা প্রস্থাতে॥ সোহহমেবক্ষরিষ্যামি প্রীতির্ক্ত হি মে সদা। ন চ মাং বেংশুতে কশ্চিভোষ্মিব্যে চ পার্থিব্য॥

যুধিটির উ্বাচ। ইরং হি নঃ প্রিয়া ভার্য্যা প্রাণেভ্যোহপি গরীরসী।
মাতেব পরিপাল্যা চ পূজ্যা জ্যেষ্ঠেব চ বসা॥ কেন সা( प्र ) কর্মণা ক্রমণা
ভৌপদী বিচরিব্যতি। ন হি কিঞ্চিজ্ঞানাতি কর্ম কর্ত্ত্ত্ত; বথা স্থিরঃ॥
ক্রম্মারী চ বালা চ রাজপুত্রী যশবিনী। পতিব্রতা মহাভাগা কথছ(রু)
বিচরিব্যতি॥ মাল্য-গন্ধানলকারান্ বস্ত্রাণি বিবিধানি চ। এতাজেবাভিজানাতি যতো যাতা হি ভাবিনী॥

জৌপতাবাচ। সৈরন্ধ্যো রক্ষিতা লোকে ভ্রিষ্যাঃ সন্তি ভারত।
নৈবমন্তাঃ (মন্তঃ) দ্বিরো বান্তি ইতি লোকস্ত নিশ্চয়ঃ॥ (একপন্নীত্রতাশ্চৈব
ইতি লোকস্ত নিশ্চয়ঃ)॥ সাহং ক্রবাণা সৈরন্ধী কুশলা কেশকর্মণি।
বুধিন্তিরস্ত গেহে বৈ জৌপতাঃ পরিচারিকা॥ উবিতাশীতি বক্ষ্যামি পৃষ্টা
রাজ্ঞাচ ভারত। আত্মগুপ্তা চরিষ্যামি বন্মাং বং পরিপৃক্ষ্সি॥ স্থদেষ্কাং
প্রত্যুপস্থান্তে রাজভার্যাঃ বশবিনীম্। সা রক্ষিয়তি মাং প্রাপ্তাং মা ভ্রে
ত্রুপন্ধীদৃশম্॥

ষ্থিছির উবাচ। কল্যাণং ভাষদে ক্লে ক্লে কাতাদি ভাবিনি। ন পাপমভিজানাদি সাধ্বী সাধুবতে স্থিতা॥ বধান ছইন্দরা (বধান ছহ'দঃ পাপা) ভবস্তি স্থানঃ প্নঃ'। কুর্যান্তথা তং কল্যাণি লক্ষয়ের্ন'তে বধা॥১-২০॥

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপ্রবিশি বাসমন্ত্রণং নাম তৃতীরোহধ্যারঃ।

# **उन्दर्शा** शासि

দ্বিষ্টির উবাচ। কর্মাণ্য কানি ব্যাভির্বানি বানি করিব্যথ। মম চাপি বথাবৃদ্ধা (বথাবৃদ্ধি) রুচিতানি বিনিন্দরাৎ॥ প্রোহিজোৎরমন্মাকমরিহোজাণি রক্ষপুঃ। স্ত-পৌরোগবৈঃ সার্জং জ্রুপদশু নিবেশনে॥ ইক্রসেনম্থান্দেমে রথানাদার কেবলান্। বাদ্ধ ঘারবতীং শীন্তমিতি মে বর্ত্ততে মতিঃ॥ ইমান্দ নার্ব্যো জৌপছাঃ সর্বান্দ পরিচারিকাঃ। পাঞ্চালানেব গছেদ্ধ স্ত পৌরোগবৈঃ সহ॥ সর্বৈরপি চ বক্তব্যং ন প্রাক্তারন্ত পাশুবাঃ। গতা ক্রুমানপাঞ্বীর্য্য সর্বে বৈত্বনাদিতি॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবস্তেৎস্থোৎস্থমামন্ত্র কর্মাণ্যুক্তা পুথক্ পৃথক্। ধৌম্যমামন্ত্রমামান্তঃ স চ তাল্ডমত্রবীৎ ॥

ধৌম্য উবাচ। বিদিতাঃ (বিহিতং) পাগুবাঃ সর্বের ( সর্বং.) ব্রাহ্মণেযু স্বন্ধুর চ। বানে প্রহরণে চৈব তথিবাগ্নিযু ভারত॥ অয়া রক্ষা विधाखना कृष्णामाः कास्तुत्नन ह। विमिन्डः द्या यथा नर्दाः (यथानामाः) লোকবুত্তমিদং তব (নুপা:)॥ বিদিতে চাপি বক্তব্যং স্থস্থাভিরম্বরাগত:। এষ ধর্মক কামক অর্থকৈব সনাতন:।। অতোহহরপি বক্ষ্যামি হেতুমত্র নিবোধত। হস্তেমাং রাজবদতিং রাজপুত্রা ত্রবীম্যহম্ ( ত্রবীমি বঃ )। ৰথা ব্লাক্ত্রণ প্রাপ্য সর্বান্ দোষাংশুরিষাথ। তুর্বসং হেত (তেব) কৌব্রষ্যা আনতাং রাজবেশনি॥ পাওবাগ্নিরয়ং লোকে সর্বশক্তমযো মহান্। ভর্ত্তা গোপ্তা চ ভূতানাং রাজা পুরুষবিগ্রহঃ॥ অমানিতৈর্মানিতৈর্বা আজাতৈ: পরিবৎসরম্। ততক্ততুর্দ্ধে বর্ষে চরিষ্যথ ষ্থাস্থ্যম্॥ দিইছারো ( पृष्ठेचांदा ) नास्त्रम् स्रष्टेः त्रव्रस्थय् न विश्वदम् । ज्याननमित्रस्य ষত্র নাভিবজেৎ পর:। যোন যানংন পর্য্যকং ন পীঠংন গজং রথম্। আরোহেৎ সম্মতোহস্মীতি স রাজবস্তিং বসেৎ। অথ ( ষত্র ) ষত্রৈন-मानीनः भटकतन् षृष्टेगात्रिगः। न उट्याशिविटमम् या देव म त्राव्यवमितः বসেৎ॥ ন চান্ত্ৰিয়াজাজানমপৃত্ৰন্তং কুদাচন। তৃঞ্চীঞ্চনমুপাসীত কালে সমভিপ্জয়েৎ॥ অস্থান্তি হি রাজানে। নরানন্তবাদিন:। তথৈব চাব-মক্ততে মন্ত্ৰিণং বাদিনং মুখা।। নৈবাং দাৱেষু কুৰ্বীত মৈত্ৰীং প্ৰাজ্ঞ: কদাচন। **শ্লন্ত:পু**র্চরা যে চ **খে**ষ্টি যানহিতাশ্চ যে॥ বিদ্যিতে কুৰ্বীত কাৰ্য্যাণি সুলঘুৰূপি। এবং বিচরতো রাজি(জো) ন ক্ষতিকারতে ক্ষ্টিৎ। গচ্ছমপি পরাং ভূমিমপৃষ্টোৎপ্যনিষোজিতঃ। জাত্যদ্ধ ইব মস্তেত

वर्गानावकृतिस्तरन्॥ न हि श्रेष्टाः ( भूदाः ) न वश्रातः व खांखतविन्नवाः । সমতিক্রান্তমর্য্যাদং পূক্তরন্তি নরাধিপা: ॥ বত্রাচ্চোপচরেদেনমন্ত্রিবক্ষেত্রবৎ সহা । अनुटल्डानां भेहीर्ता हि इम्रोटस्य न मःभद्रः ॥ यस्यद्वश्चित्र्युश्चील ल्डास्यास्य বর্ত্তরেং। প্রমাদমবলেপঞ্চ কোপঞ্চ পরিবর্জ্জরেং॥ সমর্থনাত্ম সর্ব্বাত্ম হিতঞ প্রিরমেব চ। সংবর্ণরেজদেবাক্ত প্রিরাদিণি হিতং বদেৎ ॥ অত্কৃলো ভবে-চ্চাস্ত সর্বার্থের্ কথাস্থ চ। অগ্রিরঞাহিতং বং স্তান্তদলৈ নাহবর্ণরেৎ। নাহমস্ত প্রিয়োহন্মীতি মন্তা সেবেত পণ্ডিত:। অপ্রমন্তক্ত মন্ত্রাচ্চ হিতং কুৰ্য্যাৎ প্ৰিন্নঞ্চ য় । নাজানিষ্টানি দেবেত নাহিতৈঃ সহ সংবদেৎ। সন্থা-নাম বিকম্পেড স রাজবস্তিং বসেৎ॥ দক্ষিণং বাথ বামং বা পার্থমাসীত পণ্ডিত:। রকিণাং হাত্রশন্তাণাং স্থানং পশ্চাবিধীয়তে । নিতাং হি প্রতি विकक भूत्रखानांत्रनः महर। न ह मन्तर्गति किकिए श्रद्धकारि मञ्जातर ( সঞ্জরেৎ )॥ অপি হেতদরি জাণাং বালীক স্থানমূত্রমম্। ন মুবাভিহিতং রাজ্ঞাং মহুষ্যেয় প্রকাশয়েৎ ॥ অসুমৃত্তি হি রাজ্ঞানো নরাননৃত্বাদিন:। তথিব চাব্মক্ততে নরান্ পণ্ডিত্যানিন:॥ শুরোহ্মীতি ন দৃপ্ত: স্তাদ্ব্দিমানিতি বা পুন:। প্রিয়মেবাচরন্ রাজ: প্রিয়ো ভবতি ভোগবান্। ঐথবাং প্রাপ্য তৃপ্রাপং প্রিরং বা প্রাপা ভারত। অপ্রমত্তো ভবেদ্রাজ্ঞ: প্রিরেষ্ চ হিতেষ্ ह॥ यक्त दकारणा महावादः अनामक महाकनः। कत्त्वक मननाशीतक्तनवर्षः প্ৰাক্তসম্মত:। ন চোঠোন ভূজো জান্ (ন চোঠোন ভূজো জাভূ) ন চ वाकाः ममाकिरभर। मना वाज्य वाज्य श्रीवनकान्द्रबहर्दनः॥ राज्यवस् চাপ্যক্ত বর্ত্তমানেষু কেষ্টিৎ। নাতিগাঢ়ং প্রহ্বোত ন চাপ্যুদ্মভবদ্ধণেৎ। ন চাতিথৈর্য্যেণ চরেদ্গুরুতাং হি ব্রক্তেথা। স্মিত্ত মৃত্পূর্বেণ দর্শ-त्य्रमश्रमामञ्जम्॥ नाटञ्ज न व्रव्यम्बद्ध न व्याद्यम्द्रपाविकः। মৃঢ়ক যো নিভ্যং স রাজবস্তিং বদে९॥ রাজানং রাজপুদ্রং বা সংবর্ণরতি য: नদা। অমাত্য: পণ্ডিতো ভূষা দ চিরং তিষ্ঠতে প্রিয়: (প্রিয়া) ॥ প্রগৃহীতক ষোহমাত্যো নিগৃহীতক কারণৈ:। म নির্বাহাতি (নির্বাচত) রাজানং লভতে সম্পদং পুন:॥ প্রত্যক্ষণ পরোক্ষণ গুণবাদী বিচক্ষণ:। উপজীবী ভবেন্তাজ্ঞো বিষয়ে ষোহপি বা বদেং॥ অমাভ্যোহপি বলাভোক্ত; রাজানং প্রার্থনেড, यः। न म जिट्छेकिदः स्थारिन शब्हक श्रानमः भद्रम्॥ त्यादाः मनाजाता मृडे। পররাঞা ন সংবদেए। বিশেষরের রাজানং যোগ্যভ্ষিরু সর্বাদা। व्यवादना (व्यवादना) वनवाश्वत्रकारमवाश्वतः नना। मञ्जवानी मृद्दिनावः

म त्राक्षवमिकः वरमः ॥ अश्विन् श्रिश्चमाः पृ भूत्रखाम्यः मृश्भाजः । अश्वः किः क्रावागिकि म त्राक्षवमिकः वरमः ॥ अश्वार्त देव श्वार्त्व । विकल्मिक म त्राक्षवमिकः वरमः । व्यामित्ये । विकल्मिक म त्राक्षवमिकः वरमः ॥ .द्यां देव शृत्रखाः श्वारम् श्वित्रां । विकल्मिक म त्राक्षवमिकः वरमः ॥ .द्यां देव शृत्रखाः श्वारम् श्वित्रां । वर्षः म त्र्वीक दार्थिकः मित्रिकः मित्रिकः वरमः । मञ्चः म वृष्याद्वादः त्राञ्चः श्वित्रां । श्वार्वः म कर्षाः नियुकः मन् यमः किश्वमिन म्मृत्यः । श्वार्वः वर्षः । श्वार्वः वर्षः वर्षः

যুধিষ্টির উবাচ। জন্মশিষ্টা: শ্ব ভদ্রস্তে নৈত্বজ্ঞান্তি কশ্চন। কুন্তীমৃতে
মাতরং নো বিছরং বা মহামতিম্ ॥ যদেবানন্তরং কার্য্যং তদ্ভবান্ কর্ত্নুমইতি।
ভারণারাক্ত হংথক্ত প্রস্থানায় জ্যায় চ ॥

বৈশশারন উবাচ। এবমুক্ততো রাক্সা খোম্যোহও বিজসভম:।

অকরোবিধিবৎ সর্কং প্রস্থানে যদিধীয়তে॥ তেবাং সমিধ্য তানগ্রীদ্মন্ত্রকচ
জুহাব স:। সমৃদ্ধি-বৃদ্ধিলাভার পৃথিবীবিজ্ঞরায় চ॥ অগ্নিং প্রদক্ষিণীকৃত্য
বান্ধণাংশ্চ তপোধনান্। বাজ্ঞসেনীং পুরস্কৃত্য বড়েবাথ প্রবজ্ঞলুঃ॥ গতেষ্
তেষ্ বীরেষ্ থোম্যোহও জপতাং বরঃ। অগ্নিহোত্রাণ্যপাদার পাঞ্চালানভ্যগক্ষ্ড॥ ইন্দ্রসেনাদরশৈক্ষ্য ব্রেধান্তাঃ প্রাপ্য বাদবান্। রথানবাংশ্চ রক্ষয়ঃ
স্থাস্থ্য স্সন্তাঃ॥ ১-৫৮॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং দংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণি ধৌম্যশিক্ষা নাম চতুর্বোহধ্যারঃ।

## প্রথমে প্রায়

বৈশন্দায়ন উবাচ। তে বীরা বছনিজিংশান্তভাষ্থকলাপিনঃ। বছ-গোধাঙ্গুলিআপাঃ কালিন্দীমভিতো ষয়ঃ॥ ততন্তে দক্ষিণং তীরমন্বগছন্ পদাভয়ঃ। নির্ভা বনবাসাবৈ (নির্ভবনবাসা বৈ) শ্বরাষ্ট্রং প্রেপ্সবন্তদা॥ বসভো বনছর্গেষ্ গিরিছর্গেষ্ ধ্যিনঃ। সিংহান্ ব্যান্ত্রান্ বরাহাংশ্চ মারমন্তি চ সর্কাশঃ॥ বিধ্যন্তো মুগবৃধানি মহেদাসা মহাবলাঃ। উত্তরেণ দশার্ণান্তে পাঞ্চালান্ দক্ষিণেন তু॥ অন্তরেণ 'বকুলোমান্ শ্রসেনাংশ্চ পাওবাঃ।
ল্কা ক্ররাণা মৎক্রক্ত বিষয়ং প্রাবিশন্ বনাৎ (বলাৎ)॥ ধরিনো বন্ধনিস্থিশা
বিবর্ণাঃ শাশ্রধারিণঃ। গবাঢ্যমন্নসম্পন্নং ক্রপ্টজনার্তম্॥ ততো জানপদং
প্রাপ্য কৃষ্ণা রাজানমত্রবীৎ। পশ্রেক (যক্তৈক) পজো দৃশ্যন্তে ক্রেতাণি
বিবিধানি চ॥ ব্যক্তং দূরে বিরাট্স্য রাজধানী ভবিষ্যতি। বসামেহাপরাং
রাত্রিং বলবামে পরিশ্রমঃ॥

যুধিছির উবাচ। ধনঞ্জর সমৃত্যম্য পাঞ্চালীং বহ ভারত। রাজধান্তাং নিবৎ-স্যামো বিষ্কাশ্চ বনাদিতঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ ॥ তামাদায়ার্জ্নন্ত বং দ্রোপদীং গল্পরাড়িব। সংপ্রাপ্য নগরাভ্যাসমবঁতারয়দর্জ্নঃ ॥ স রাজধানীং সংপ্রাপ্য কৌন্তেরোহর্জ্নমত্রবীৎ। কায়ধানি সমাসল্য প্রবেক্যামঃ পূরং বয়ম্ ॥ সায়ধান্ত প্রবেক্যামো বয়ং তাত পূরং বদি । সম্বেগং জনস্যাস্য করিষ্যামো ন সংশয়ঃ ॥ গাজীবঞ্চ মহাচাপং লোকে চ বিদিতং নৃণাম্ । তচেচেদায়্ধমাদায় গজ্ঞামো নগরং বয়ম্ ॥ ক্ষিপ্রান্যান্ বিজ্ঞানীয়ুর্ময়্ব্যা নাত্র সংশয়ঃ । ততাে ছাদশবর্ষাণি প্রবেষ্টব্যং (বস্তব্যানি) বনে পূনঃ ॥ একমিয়পি বিজ্ঞাতে প্রতিজ্ঞাতং হি নন্তথা ॥

অর্জুন উবাচ। ইরং কুটে মহুবেজ গহনে মহতী শমী। ভীমশাখা 
হরারোহা শ্রশানক সমীপতঃ॥ ন চাপি বিছতে কল্চিন্নহ্ব্য ইতি মে মতিঃ।
বোহস্মানিন্ধতো দ্রন্তা ভবেজ্জ্বানি পাগুব॥ উৎপথে হি বনে জাতা
মুগব্যালনিবেবিতে। সমীপে চ শ্রশানক গহনক বিশেষতঃ॥ সমাধারাম্থং
শন্যাং (সমাসজ্যার্ধাক্তক্তাং) গজ্জামো নগরং প্রতি। এবমত্র বথাজোবং
বিহরিষ্যাম ভারত॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। এবম্জ্বা স রাজানং ধর্মাত্মানং বৃধিচিরম্। প্রচক্রমে নিধানার শস্ত্রাণাং ভরতর্বভ॥ বেন দেবার্মস্থ্যাংশ্চ সর্বাং(সর্পাং) শৈতকরথেছিলরং। ফ্রীভান্ জনপদাংশ্যাভানজ্বং কুরুপুলবঃ॥
ভত্দারং মহাঘোরং (ঘোষং) সপত্মগণস্থনন্। অপজ্যমকরোৎ পার্থো গাঙীবং
স্পভরক্রম্॥ বেন বীরঃ কুরুক্কেঅমভ্যরক্ষৎ পরস্তপঃ। অম্ঞ্চ্ছেস্থতভ্য জ্যামক্ষ্যাং বৃধিচিরঃ॥ পাঞ্চালান্ বেন সংগ্রামে ভীমসেনোহজ্বরৎ প্রভঃ।
প্রভাবেধ্বহুনেকঃ সপত্মাংশ্চৈব দিগ্লবে॥ নিশ্য বস্য বিক্ষারং ব্যাতবন্ত
রণাৎ পরে। পর্বভিস্যেব দীর্ণস্য বিক্ষাইশনেরিব॥ সৈদ্ধং বেন (সংগ্রামে)
রাজানং পর্য্যায়ণত চানখঃ। জ্যাপাশং ধছ্বভস্য ভীষসেনোহবভারবং॥

আজরৎ পশ্চিমামাশাং ধছ্বা বেন পাগুবং। মাজীপুজো মহাবাহন্তান্তান্তান্তান্তি । তিনা মাজীপুজো মহাবাহন্তান্তান্ত্ৰা মিজভাবিতঃ॥ তিনা বিশিপাকবিক্ষ্ বং সংক্রন্তনা ধূদি। কুলে নান্তি সমোল ক্রেপ বজেতি নকুলং স্বতঃ॥ দক্ষিণাং দক্ষিণাচাবে দিশং বেনাজরৎ প্রভঃ। অপজ্যমকরোশীরং সহদেবন্তদায়ুধ্ম॥ খড়গাংশ্চ (দীপ্তান্) পীতান্ দীর্ঘাংশ্চ ক্রাপাংশ্চ মহাধনান। বিপাঠান ক্রেধারাংশ্চ ধন্তুভির্মিধুং সহ॥

বৈশন্দারন উবাচ। অথাষশাসরকুলং কুন্তীপুত্রো যুখিন্তির:। আরুছেমাং
শমীং বীর ধন্ংযেতানি নিক্ষিপ॥ তামুপারুছ নকুলো ধন্ংযি নিদধে স্বরুষ্।
বানি তন্তাবকাশানি দৃঢ়রপাণ্যমন্তত॥ ধত্র চাপশুত স বৈ তিরোবর্ধানি বর্বতি।
তত্র তানি দৃঢ়ৈঃ পাশৈঃ স্থগাঢ়ং পর্য্যবন্ধত॥ শরীরঞ্চ মৃতক্তৈকং সমবন্ধন্ত
পাশুবাঃ। বিবর্জনিয়ন্তি নরা দ্রাদেব শমীমিমাম্॥ আবদ্ধং শবমত্রেতি
গক্ষমাদার (আর) পৃতিকম্। অশীতিশতবর্ধেরং মাতা ন ইতি বাদিনঃ॥
কুলধর্মোহরম্মাকং পৃর্কৈরাচরিতোহিপি চ। সমাসজ্যাথ বৃক্ষেহমিন্নিতি বৈ
ব্যাহরন্তি তে॥ আগোপালা বিপালেভ্য আচক্ষাণাঃ পরস্কপাঃ। আজ্ঞানুর্নগরাভ্যাসং বোধাঃ (পার্থাঃ) শক্রনিবর্হনাঃ॥ জ্বেরা জয়ংন্তা বিজ্বেরা জয়ৎসেনো
জয়্বলঃ। ইতি গুহানি নামানি তেবাং চক্রে যুধিন্তিরঃ॥ তত্রো যথাপ্রতিজ্ঞাতং প্রাবিশ্রগরং মহৎ। অজ্ঞাতচর্য্যাং বংশ্রস্তারো রাষ্ট্রে বর্ধং ত্রেরাদশম্॥১-৩৬॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণ পাণ্ডবপ্রবেশপর্বণি অস্ত্রসংস্থাপনে পঞ্চমোহংগায়:॥

### ষটে প্রায়গ্র

देवनन्नायन खेवार । विदार्धनगदः द्रमाः शब्हमादना य्थिष्ठितः । अञ्चवसनमा दिविः कृतीः विख्वदनभदीम् ॥ वरमानागर्जमस् वाः नाताप्रविद्याम् । नम्न-र्गाशकृत्व खांचाः स्वनाः कृवविकिनीम् ॥ कःमविप्रावनकतीमस्त्रानाः क्ष्यकतीम् । निनाज्येविनिक्षिशीमाकानः श्रव्या गामिनीम् ॥ वास्त्रवच्य खितीः निरामानाविख्विजाम् । निराम्वत्रवताः त्वतीः थकारथवेकथातिनीम् ॥ खात्रवज्रतः नृत्वा त्याप्रविद्याम् । कात्रवज्रतः नृत्वा विविदेशः व्याव्यम् श्रव्याः । विविदेशः व्याव्यम् विद्याः । व्याम्बा प्रमानाकाको ताका त्वतिः महास्वः ॥ न्याप्रस्य वद्यान कृत्यः कृतादि व्याव्यक्तिनि । वानार्वमृत्रानावाद पूर्वक्यनिखानतः ॥ प्रकृत्व कृत्विः व्याव्यक्तिनि । वानार्वमृत्रानावाद पूर्वक्यनिखानतः ॥ प्रकृत्व कृत्विः व्याव्यक्तिनि । वानार्वमृत्रानावाद पूर्वक्यनिखानतः ॥ प्रकृत्व कृत्विः व्यवहारिनि । वानार्वमृत्रानावाद पूर्वक्यनिखानतः ॥ प्रकृत्व कृत्विः व्यवहारिनि । वानार्वमृत्रानावाद पूर्वक्यनिखानतः ॥ प्रकृत्व कृत्विः व्यवहार्विनि । वानार्वमृत्रानावाद पूर्वक्यनिखानतः ॥ प्रकृत्व कृत्विः विविदेशः विवि

( তকুমধ্যে ) পীনভোণিপরোধরে। মনুরপিচ্ছবলরে কেরুরাক্দধারিণি ॥ ভাসি দেবি ৰথা পদ্মা নারারণপরিগ্রহা। স্বরূপং ব্রহ্মচর্য্যঞ্চ বিশদং-তব বেচরি॥ কৃষ্ণছবিসমা কৃষ্ণা (শ) সন্ধর্ণসমাননা (নিভাননা)। বিভ্ৰতী বিপুলৌ বাহু শক্ৰথবজসমূহ মৌ॥ পাত্ৰী চ পকৰী ঘণ্টী স্ত্ৰী বিভদ্ধ চ বা ভূবি। পাশং ধরুর্মহাচক্রং বিবিধাস্তাযুধানি চ। কুগুলাজ্যাং यूर्वीख्याः क्वीख्याक विख्विखा ॥ हक्षविष्यिता त्विव मृत्येन यः विवाक्त । মুকুটেন বিচিত্রেণ কেশবদ্ধেন শোভিনা॥ ভুজদাভোগবাদেন শ্রোণিস্ত্রেণ वाक्छा। जाकरम हानविष्क्रम (जारनरवर मन्तरः॥ श्वरक्रम निथिभृष्क्रामा-মুদ্ধিতেন বিরাশ্বনে। কৌমারং ব্রতমাস্থায় ত্রিদিবং পালিতং ব্য়া॥ তেন তং ন্তু য়দে দেবি ত্রিদলৈ: পূজাদেহপি চ॥ ত্রৈলোক্যরক্ষণার্থায় মহিবাস্থর-নাশিনি। প্রসন্না মে স্থরশ্রেষ্ঠে দরাং কুরু শিবা ভব॥ জরা বং বিজয়া চৈব সংগ্রামে চ জয়প্রদা। মমাপি বিজয়ং দেহি বরদা ভঞ্চ (বরয়ে ভাঞ্চ) সাম্প্রতম্॥ বিদ্ধ্যে চৈৰ নগশ্রেষ্ঠে তব স্থানংহি শাশ্বতম্। কালি কালি মহাকালি গীধুমাংস্পশুপ্রিয়ে॥ কুতামুযাত্রাভৃতিভং (কুডা স্বভৃতেন্তাং) বরনে কামচারিণি। ভারাবতারে যে চ আং সংশ্রবিষান্তি মানবা:। প্রণমন্তি চ যে খাং হি প্রভাতে চ নরা ভূবি। ন তেষাং তুর্ল ভং কিঞ্চিৎ প্রতা ধনতোহপি বা॥ তুর্গান্তারয়দে তুর্গে তত্ত্বং তুর্গা স্মৃতা জনৈ:। काञ्चाद्रवरमधानाः मधानाक महार्गद्य। मञ्चाखिक्या निष्ट्रकानाः यः गढिः পরমা নৃণাম ॥ জ্বলপ্রভরণে চৈব কাস্তারেষ্ট্রীযু চ। বে শ্বরস্তি মহাদেবি ন চ সীদন্তি তে নরা:। 🗨 কীর্ত্তি: শীর্মু তি: সিদ্ধির্শ্রীর্বিদ্যা সন্ততির্মতি:। সন্ধ্যা রাত্রি: প্রভা নিদ্রা জ্যোৎসা কান্তি: ক্ষমা দরা॥ নুণাঞ্চ বন্ধনং মোহং পুত্রনাশং ধনক্ষয়ন্। ব্যাধিং মৃত্যুং ভয়ঞৈব পুঞ্জিতা তপরিষ্যাদি (নাশয়িষ্যদি)॥ সোহহং রাজ্যাৎ পরিভ্রষ্ট: শরণং আং প্রপন্নবান্। প্রণতশ্চ যথা মৃষ্ট্রা তব দেবি স্বরেশরি॥ তাহি মাং পদ্মপত্রাকি সত্যে সত্যা ভবস্ব নঃ। শরণং ভব মে **प्**रर्ग मंत्रं का ज्ञानिक विकास का जाति । विकास का जाति । विकास का जाति । উপগম্য তু রাজানমিদং বচনমত্রবীৎ॥

দেব্যবাচ। শৃণু রাজন্মহাবাহো মদীয়ং বচনং শুভম্। ভবিয়ত্যিচিরাদেব সংগ্রামে বিজয়ন্তব ॥ মম প্রসাদানির্জিত্য হস্বা কৌরববাহিনীম্। রাজ্যং নিঙ্ককং কৃত্বা ভোক্যসে মেদিনীং পুনঃ॥ প্রাতৃতিঃ সহিতো রাজন্ প্রীতিং প্রাপৃত্যসি পুঙ্কাম্। মংপ্রসাদান্ত তে সৌধ্যমারোগাঞ্চ ভবিষ্যতি॥ বে চ মাং কীর্ত্তরিষ্যন্তি লোকে বিগতমংসরা:। তেবাং তুটা প্রাদান্তারি রাজ্যমার্কিপু: ত্বতম্ ॥ প্রবাসে নগরে বাপি সংগ্রামে শত্রুসকটে।
আটব্যাং তুর্গকান্তারে সাগরে গহনে গিরৌ ॥ যে শরিষ্যন্তি মাং রাজন্
মথাহং ভবতা শ্বতা। ন তেবাং তুর্গ ভং কিঞ্চিদ্মিলোঁকে ভবিষ্যতি ॥ ইদং
ভোত্তবরং ভজ্যা শৃণুরালা পঠেত বা। তক্ত সর্কাণি কার্য্যাণি (কর্মাণি)
সিদ্ধিং যাক্তন্তি পাওবা:॥ মংপ্রসাদাচ্চ বং সর্কান্ বিরাটনগরে স্থিজান্।
প্রজ্যাক্তন্তি ন ক্রবো নরা বা তলিবাসিন:॥ ইত্যুক্ত্যা বরদা দেবী
মুধিন্তিরমরিশ্রুমন্। রক্ষাং ক্রবা চ পাওনাং তত্তিবাস্তরধীরত ॥ ৬-১৬ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতার াং বৈরাদিক্যাঃ বিরাটপর্কণি শ্রীত্র্গান্তবে ষষ্টোহধ্যারঃ।

#### সপ্তমেভিপ্র্যারঃ

বৈশশ্পাষন উবাচ। ততো বিরাটং প্রথমং ষ্ধিছিরো, রাজা সভারাম্পবিষ্টমাব্রজং। বৈদ্যারপান্ প্রতিম্চা কাঞ্চনানকান্ স ককে পরিরভা বাসসা॥ নরাধিপো রাষ্ট্রপতিং বশস্থিনং, মহাযশাঃ কৌরববংশবর্জনঃ। মহাস্থাবো নররাজসংক্তাে, ত্রাসদন্তীক্ষবিবাে বথােরগঃ॥ বলেন রূপেণ নরর্বজাে মহান্, প্রজ্বরূপেণ বথামরন্তথা। মহাক্রজালৈরিব সংবৃতাে রবির্বণানাে ভন্মরৃতক্ বীর্যাবান্॥ তমাপতন্তং প্রসমীক্ষ্য পাগুবং, বিরাটরাভিন্দু-মিবালুসংবৃতম্। সমাগতং পূর্ণশিপ্রভাননং, মহাস্থভাবং ন চিরেণ দৃষ্টবান্॥ মন্তিরিজান্ স্তম্থান্ বিশন্তথা, বে চাপি কেচিৎ পরিতঃ সমাসতে। পপ্রছে কোহরং প্রথমং সমীয়িবান্, নূপাপমাহরং প্রসমীক্ষতে সভাম্॥ ন তৃ বিজ্ঞাহরং ভবিতা নরোভ্রমঃ, পতিঃ পৃথিবা ইতি মে মনোগতম্। ন চাক্ত বাজী (দাসাে) ন রথাে ন ক্রমঃ, সমীপতাে লাজতি চার্মিক্রবং॥ শরীর-লিকৈর্পস্টিতাে হ্রং, মুর্জাভিবিক্তভিতি মেহতা মানস্য। সমীপমারাতি চ মে গতব্যথাে, যথা গজন্তামরসীং মদােৎকটঃ॥ বিতর্করন্তঞ্চ নরর্বভন্তথা, র্থিষ্টরোহভান্তা বিরাটমত্রবীং॥

যুধিটির উবাচ। সম্রাজ্বিজানাথিত জীবিজার্থিনং, বিনটসর্বাধম্পাগতং বিজম্। ইতাত্মিজামি তবানবান্তিকে, বন্ধং বধা কামচরক্তথা বিভো॥ ভমম্মবীং স্বাগত্মিতান্তরং, রাজা প্রহটঃ প্রতিসংগৃত্যি চ। তং রাজসিংহং প্রতিপূজ্য রাজা, প্রীতাত্মনা চৈনমিদং বভাবে॥ কামেন তাতাভিবদাম্যহং ত্বাং, কন্তাসি রাজ্যে বিষয়াদিহাগতঃ। গোত্রঞ্চ নামাপি চ শংস তত্ততঃ, কিঞাপি শিল্পং তব বিভাতে কৃতম্॥

যুধিটির উবাচ। যুধিটিরস্থাসমহং পুরা স্থা, বৈরাজপভঃ পুনরশি বৈ বিজঃ। অকান্ প্রবোজঃ কুশলোহনি দেবিতা, করেতি নায়ানি

বিরাটবিশ্রতঃ॥

বিরাট উবাচ। দলামি তে হস্ত বরং যদিছেসি, প্রশাধি মংস্তান্ বশগো হাহং তব। প্রিরা হি ধ্র্তা মম দেবিনঃ দলা, ভবাংশ্চ দেবোপম রাজ্যমর্হতি॥

যুধিষ্টির উবাচ। আপ্তো (প্রাপ্তো) বিবাদঃ প্রথমং বিশাম্পতে, ন বিশ্বতে কন্দ্রন মংস্থ হীনতঃ। ন মে জ্বিতঃ কন্দ্রন ধাররেদ্ধনং, বরো মরৈবোংস্ক তব প্রসাদতঃ ॥

বিরাট উবাচ। হস্তামবশ্যং যদি তেহপ্রিরঞ্চরেৎ, প্রব্রাজরেরং বিষরাদ্দিজাংতথা। শৃথন্ত মে জানপদা: সমাগতাঃ, কজো বথাহং বিষরে প্রভৃত্তথা॥
সমানজাতো (বানো) ভবিতাসি মে স্থা, প্রভৃতবস্থো বহুপানভোজনঃ।
পশ্ভেত্মন্তশ্চ বহিশ্চ সর্বাদা, কৃতঞ্চ তে ঘারমপাবৃতং ময়া॥ বে ঘাহ্যবাদেয়্ববৃত্তিক্ষিতা, ক্রয়াশ্চ তেযাং বচনেন মাং সদা। দাশ্তামি সর্বাং তদহং ন
সংশ্রো, ন তে ভরং বিছতি সমিধৌ মম॥

বৈশম্পান্ন উবাচ। এবং স লক্ষ্য তুবরং সমাগতো, বিরাটরাজ্ঞাহথ নর্বভন্তদা। উবাস ধীর: প্রমার্চিতঃ স্থাী, ন চাপি কশ্চিচ্চরিতং বুবোধ তং ॥১-১৮॥

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বাণ বৃধিষ্টিরপ্রবেশো নাম সপ্তমোহধ্যারঃ।

## অষ্ট্ৰমোহপ্যায়ঃ

বৈশম্পায়ন উবাচ। অথাপরো ভীমবলঃ প্রিরা জলর পাববৌ সিংহ-বি(লাস) শালবিক্রমঃ। থজাঞ্চ দব্বীঞ্চ করেণ ধারয়য়সিঞ্চ কালালমকোবম-ত্রণম্॥ স ক্লক্রপঃ প্রমেণ বর্চ্চসা, রবির্থথা লোকমিমং প্রকাশয়ন্। ক্রক্ষবাসা গিরিরাজ-সারবাংতঃ মৎক্ররাজঃ সমুপেত্য তত্ত্ববান্॥ তং প্রেক্ষ্ বাজানমিবান্তিকাগত , ততোৎ মবীজ্ঞানপদান্ সমাগতান্। সিংহোমতাংসোহরমতীব রূপবান্, প্রদৃত্ততে কো হু নর্বতো যুবা ॥ আদৃইপ্র্বঃ পূরুষো
রবির্ষথা, বিতর্করয়াত লভামি নিশ্রম্। তথাত চিত্তং হানিশং বিতর্করয়র্বভত্তাত্ত ন বামি তত্ত্বতঃ ॥ দৃইইব চৈনং ন বিচারয়াম্যহং, গন্ধর্বরাজ্ঞা বদি বা
প্রক্রয়ঃ। জানীত কোহয়ং মম দর্শনে স্থিতো, বদীপ্সিতং তল্লভতাঞ্চ মাচিরম্ ॥
বিরাটবাক্যেন চ তেন চোদিতা, নরা বিরাটতা স্থামিনঃ। উপেত্য
কৌন্তেরমথাক্রবংগুদা, বথা স রাজাবদদচ্যতাত্মজম্ ॥ ততো বিরাটং সম্পেত্য
পাশুবং, স্থানরূপং বচনং মহামনাঃ। উবাচ স্পোহ্মি নরেন্দ্র বল্লবো, ভক্তম্ব
মাং ব্যঞ্জনকারমুত্তমম্ ॥

বিরাট উবাচ। ন স্পতাং মানদ প্রদর্ধামি তে, সহস্রনেত্রপ্রতিষো ছি দৃষ্ঠসে। প্রিয়াচ রূপেণ চ বিক্রমেণ চ, প্রভাসদে বং ন্বরো নরেষিহ॥

ভীমসেন উবাচ। নরেক্স • স্থাং পরিচারকোহন্মি তে, জানামি স্থপান্
প্রথমং ন কেবলান্। আস্থাদিতা যে নূপতে পুরাভবন্ যুধিষ্টিরেণাপি নূপেণ
সর্বশং॥ বলেন তুল্যক ন বিভাতে ময়া, নিযুদ্ধনীলক্ষ সদৈব পার্থিব। গজৈক
সিংহৈক্চ সমীয়িবানহং, সদা করিষ্যামি তবান্য প্রিয়ম্॥

বিরাট উবাচ। দদামি তে হস্ত বরং মহানদে, তথা চ কুর্যা:
কুশলং প্রভাষদে। ন তৈব মজে তব কর্ম তৎ সমং, সম্দ্রনেমিং পৃথিবীং
অমর্ছসি॥ যথা হি কামন্তব তত্তথা কৃতং, মহানদে তং ভব মে পুরস্কৃত:।
নরাশ্চ বে তত্ত্ব সমাহিতা: পুরা, ভবাংশ্চ তেবামধিপো ময়। কৃত:॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তথা স ভীমো নি (বি) হিতো মহানসে, বিরাটরাজ্ঞো দয়িতোহভবদ দৃঢ়ম্। উবাস রাজ্যে ন চ তং পৃথগ্জনো, বুবোধ তত্তাহচরাশ্চ কেচন ॥১-১৩॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণি ভীমদেনপ্রবেশো নাম অষ্টমোহধ্যায়ঃ।

#### নবসোহধ্যারঃ

বৈশপায়ন উবাচ। ততঃ কেশান্ সম্থক্ষিপ্য বেলিতাগ্রাননিন্ধিতান্।

কৃষ্ণান্ স্থান্ মৃদ্ন্ দীর্ঘান্ সম্দ্র্গ্র ত চিন্মিতা।। জুগৃহ দক্ষিণে পার্থে

মৃদ্নসিতলোচনা। বাসশ্চ পরিধারৈকং কৃষ্ণা সুম্বিনং মহৎ।। কৃষ্ণা বেশঞ্

দৈরক্যান্ততে। ব্যচরদার্ভবং॥ তাং নরাঃ পরিধাবন্তীং দ্বিরশ্চ সম্পাদ্রবন্। অপ্তথেকৈর তাং দৃষ্ট্রা কা অং কিঞ্চ চিকীর্বসি॥ সা তাহ্যবাচ রাজেন্দ্র সৈরক্যাহম্পাগতা। কর্মা চেছামি বৈ কর্ফ্যং ভক্ত বো মাং বৃত্বতি (যুযুক্তি পুশুক্তি)॥ তক্তা রূপেণ বেশেন শ্লক্ষা চ তথা গিরা। ন শ্রদ্ধত তাং দাসীমন্নহেতোরুপস্থিতাম্॥ বিরাটক্ত তু কৈকেন্দ্রী ভার্য্যা পরমসম্মতা। আলোকরন্ত্রী দৃদ্রশে প্রাসাদাদ্জেপদাযাজাম্॥ সা সমীক্ষ্য তথারূপামনাথা-মেকবাসসম্। সমাহ্যাব্রবীদ্ ভল্তে কা অং কিঞ্চ চিকীর্বসি। সা তাম্বাচ হে রাজ্ঞি দৈরক্ষ্যহমিহাগতা। কর্ম্ম চেছামি বৈ কর্ডং তক্ত বো মাং যুযুক্তি (পুশুক্তি)॥

স্বদেক্ষেবাচ। নৈবংরপা ভবস্তোব বধা বদসি ভাবিনি। প্রেবরতী চ বৈ দাসীর্দাসাংশ্চ বিবিধান্ বহুন্ ॥ গৃঢ়গুল্ফা সংহতোর বিপ্তারীর বছুরতা। রক্তা পঞ্চর রক্তেয়্ হংসগদ্গদভাষিণী ॥ স্বকেশী স্বন্ধনী ভাষা পীনপ্রোণি-পর্যোধরা। তেন তেনেব সম্পরা কাশ্মীরীব তুরক্ষী ॥ অরালপন্মনরনা বিষোধী তন্ত্রমধ্যমা। কয়্থীবা গৃঢ়শিরা পূর্ণচন্দ্রনিভাননা ॥ শারদোৎ-পলগ্রাক্ষ্যা শারদোৎপলগন্ধরা। শারদোৎপলসেবিক্তা রূপেণ সদৃশী প্রিরা ॥ কা অং ক্রহি বথা ভক্তে নাসি দাসী কথঞ্চন। বক্ষী বা যদি বা দেবী গন্ধবর্মী যদি বাপেরাঃ ॥ দেবকক্তা ভূজদী বা নগরস্তাধিদেবতা। বিভাধরী কির্বাবা যদি বা রোহিণী স্বর্ম্। অলঘুরা মিশ্রকেশী প্তরীকাথ মালিনী। ইন্দ্রাণী বাক্ষণী বা অং ঘটু ধাতুঃ প্রকাপতেঃ ॥ মেনকা সহক্তা বা রন্তা বাপি তিলোভ্যা। দেবেয়া দেবের বিধ্যাভাষ্যাসাং ছং কত্যা শুভে ॥

জৌপত্যবাচ। নামি দেবা ন গন্ধৰ্কী নামনী ন চ রাক্ষনী। সৈরন্ধ্রী তু ভূজিয়ামি সত্যমেতদ্ এবীমি তে॥ কেশাঞ্জানাম্যহং কর্ত্তুং পিংবে সাধু বিলেপনম্। মলিকোৎপলপদ্মানাং চম্পকানাং তথা শুভে॥ প্রথমিয়ে বিচিত্রাশ্চ অজঃ পরমশোভনাঃ। আরাধরং সত্যভামাং কৃষ্ণশু মহিনীং প্রিয়াম্। কৃষ্ণাঞ্চ ভার্যাং পাঞ্লাং কুর্ণামেক মুলরীম্॥ তত্ত্ব তত্ত্ব চরাম্যেবং লভ্যানা স্ভোজনম্। বাসাংসি যাবচ্চ লভে তাবভাবদ্রমে তথা॥ মালিনীত্যেব মে নাম স্বয়ং দেবী চকার সা। সাহমভ্যাপতা দেবি স্থদেকে অলিবেশনম্॥

স্থদেকোৰাচ। মূর্দ্ধি, আং বাসবেয়ং বৈ সংশব্দো নাত্র বিভাতে। ন ওচিদিছেতি রাজা আং গছেৎ সর্কোণ চেতসা॥ ক্রিয়ো রাজকুলে বাশ্চ বাশ্চেমা মম বেশ্মনি। প্রাক্তান্থাং নিরীক্ষত্তে প্মাংসং কং ন মোহরেঃ ॥
বৃক্ষাংশ্চাবস্থিতান্ পশু য ইমে মম বেশ্মনি। তেছপি ত্বাং সরমন্তীব পৃষাংসং
কং ন মোহরেঃ ॥ রাজা বিরাটঃ স্মুন্তোনি দৃষ্ট্বা বপুরমান্ত্রম্ব। বিহার মাং
বরারোহে গচ্ছেৎ সর্বেশ চেতসা ॥ বং হি ত্বমনবর্তান্তি তরলায়তলোচনে।
প্রসক্তমন্তিবীক্ষেথাঃ স কানবশগো ভবেৎ ॥ যশ্চ ত্বাং সততং পশ্রেৎ পুক্ষশচারহাসিনি। এবং সর্বানবতান্তি স চানক্ষবশো ভবেৎ ॥ অধ্যারোহেদ্ বথা
বৃক্ষান্ বধারেবাত্মনো নরঃ। রাজবেশ্মনি তে স্ক্রু বাসত্তে ত্যাত্রথা মম ॥
বধা কর্কটকী গর্ভমাধত্তে মৃত্যুমাত্মনঃ। তথাবিধমহং মত্তে বাসং তব
ভিচিন্সতে ॥

ভোপত্যবাচ। নামি লভ্যা বিরাটেন ন চান্তেন কদাচম। গন্ধৰাঃ
পভরোমহুং ধুবানঃ পঞ্চ ভাবিনি॥ পুত্রা গন্ধর্বরাজ্য্য মহাসন্তব্দ কন্দুচিং।
রক্ষত্তি তে চ মাং নিভ্যং তুঃখাচারা তথা হুহম্॥ বো মে ন দভাত্তিইং ন চ
পাদৌ প্রধাবয়েং। প্রীয়েরংভেন বাসেন গন্ধরাঃ পভরোমম॥ বো হি মাং
পুক্রো গৃধ্যেদ্ যথান্তাঃ প্রাকৃতাঃ স্ত্রিয়ঃ। তামেব নিবসেদ্রাত্তিং প্রবিশেদপরাস্তর্ম্ম॥ ন চাপ্যহং চালগ্রিতুং শক্যা কেনচিদক্ষনে। তুঃখনীলা হি গন্ধর্বাভ্যে
চ মে বলবংপ্রিয়াঃ। প্রচ্ছয়াল্যভিরক্ষত্তি তে মাং নিভ্যং শুচিম্মিতে॥

স্থানেকোবাচ। এবং খাং বাসরিয়ামি যথা খং ননিধনীচ্ছসি । ন চ পাদৌ ন চোচ্ছিটং প্রকাস খং কথঞ্চন॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবং কৃষ্ণা বিরাটস্থ ভার্য্যয়া পরিসাম্থিতা। উবাস নগরে তশ্মিন্ পতিধর্ম্মবতী সতী। ন চৈনাং বেদ,ত্রাক্সস্তত্ত্বন জনমেজয় ॥১-৩৭॥

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাদি দ্রৌপদীপ্রবেশো নাম নবমোহধ্যায়ঃ।

### দেশবেমা ১ প্র্যাহাপ্ত

বৈশম্পায়ন উবাচ। সহদেবোহপি গোপানাং ক্বা বেশমস্ত্যম্। ভাষাকৈবাং সমাস্থায় বিরাটমূপরাদধ॥ গোষ্ঠমাসান্ত তিষ্ঠন্তং ভবনক্ত সমী-পত:। রাজাধ দৃষ্টা পুরুষান্ প্রাহিণোজ্জাতবিক্ষয়:। ভমারান্তমভিপ্রেক্য ভাজমানং নর্বভন্। সমূপস্থায় বৈ রাজা পঞ্জচ্ছ কুরুনক্ষনম্॥ কক্ত বা দ্বং কুতো বাদ্বং কিংবা ভাত (দ্বন্ধ) চিকীর্বসি। ন হি মে দৃষ্টপূর্বন্ধ ভবং ক্রহি নর্বভ॥

সহদেব উবাচ। সংপ্রাপ্য রাজানমনিত্রতাপনং, তভোহ ববীত্রেষমহোর-নিখনং। বৈখ্যাহিন্য নামাহমরিষ্টনেমির্গোসংখ্য আসং কুরুপুদ্বানাম্॥ বস্তুং স্বরীজ্ঞামি বিশাং বরিষ্ঠ, তান্ রাজসিংহার হি বেল্পি পার্থান্। ন শক্যতে জীবিত্রস্পাকর্মণা, ন চ স্বদ্ধো মম রোচতে নুপং॥

বিরাট উবাচ। দং ব্রাহ্মণো বা যদি বা ক্ষপ্রিরোহসি, সম্ভনেমীধররূপবানসি। আচক্ষ্ব মে তত্ত্বমমিত্রকর্ষণ, ন বৈশুকর্ম দ্বির্গি বিভতে ক্ষম্।
কল্পাসি রাজ্যো বিষয়াদিহাগতঃ, কিং বাপি শিল্পং তব বিভতে কুতম্। কথং
ত্বমনাস্থ নিবংশ্যসে সদা, বদস্ব কিঞাপি তবেহ বেতনম্॥

সহদেব উবাচ। পঞ্চানাং পাঙ্পুত্রাণাং ক্যেটো ভ্রাতা র্ষিটিরঃ।
তন্তাষ্টশতসাহস্রা গবাং (বর্গাঃ) বর্ণাঃ শতং শতম্ ॥ অপরে দশসাহস্রা
বিত্তাবস্তত্ত্বাপরে। তেবাং গোসংখ্য আসং বৈ ভন্তিপালেতি মাং বিতঃ॥
ভূতং ভব্যং ভবিষ্যঞ্চ বক্ত সংখ্যাগতং প্রবাম্। ন মেইজ্যবিদিতং কিঞিৎ
সমস্তাদশযোজনম্॥ গুণাঃ স্থবিদিতা হ্যাসমম ভক্ত মহাত্মনঃ। আসীক্ত স
ময়া তৃষ্টঃ কুকুরাকো ব্রিটিরঃ॥ ক্ষিপ্রং হি গাবো বছ্লা ভবন্তি, ন তাম্ম
রোগো ভবতীহ কন্তন। তৈত্তিকপারৈবিদিতং মমৈতদেতানি শিল্পানি মরি
হিতানি ॥ ঋষভানপি জানামি রাজন্ প্রিতলক্ষণান্। মেবাং মৃত্রম্পালার
অপি বন্ধ্যা প্রস্থাতে॥

বিরাট উবাচ। শতং সহস্রাণি সমাহিতানি, স্বর্ণবর্ণক বিমিশ্রিতান্ গুণৈ: (বর্ণক্ত বর্ণক্ত বিনিশ্চিতানি)। পশ্ন্ সপালান্ ভবতে দদাম্যহং, দদাশ্রা মে পশবো ভবস্থিহ॥

বৈশম্পান্নন উবাচ। তথা স রাজ্ঞো বিদিতো বিশাম্পতে, ছ্যবাস তত্ত্রিব স্থাং নরেশ্বর। ন চৈনমক্তেংপি বিহু: কথঞ্চন, প্রাদাচ্চ ভদ্রৈ ভরণং যথেন্সিতম্॥

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্কাণ সহদেবপ্রবেশো নাম দশমোহধ্যারঃ।

#### একাদেশোইপ্রাম্থ্য

বৈশন্দায়ন উবাচ। অথাপরোহদৃশ্যত রূপসম্পদা, ত্রীণামলয়ারধরো বৃহৎ পুমান্। প্রাকারবপ্রে. প্রতিমৃত্য কুগুলে, দীর্ঘে চ কম্ পরিহাটকে শুভে ॥ বাহু চ দীর্ঘাংশ্চ বিকীর্য মুর্জ্ঞান্মহাভূজো বারণভূল্যবিক্রমঃ। গতেন ভূমীং প্রতিকম্পন্নংগুলা, বিরাটমাসাঘ্য সভাসমীপতঃ॥ তং প্রেক্ষ্য রাজ্ঞোপগতং সভাতলে, সত্রপ্রতিজ্ঞারপ্রিপ্রমাথিনম্। বিরাজমানং পরমেণ বর্চসা, ত্বতং মহেক্রস্থ গজেক্রবিক্রমম্॥ সর্বানপৃচ্ছচে সভাত্রহারিণঃ, কুভোহয়মায়াতি পুরান মে শুভঃ। ন চৈনম্চুর্বিদিতং তদা নরাঃ, স বিক্রিতো বাক্যমিদং নুপোহরবীং । সন্ত্যোপসাঃ পুরুষোহমরোপমঃ, খ্যামে। মুবা বারণমূথপোপমঃ। আমৃত্য কম্বৃপরিহাটকে শুভে, বিমৃত্য বেণীমপিনছ কুগুলে॥ শিখী স্থকেশী পরিধান্ন বাসনী (চান্তথা), শোভস্ব ধন্বী কবচী শরী মথা। আরুছ্ যানং পরিধাবতাং ভবান্, স্থতঃ সমো মে ভব বা ময়া সমঃ॥ বৃদ্ধো হৃহং বৈ পরিহাতুকামঃ, সর্বাংস্ত মৎস্থান্ পরিপালয়্ব। নৈবংবিধাঃ ক্লীবর্মণা ভবন্ধি, কথঞ্চনেতি প্রতিভাতি মে মনঃ॥

অর্জুন উবাচ। গায়ামি নৃত্যাম্যথ বাদয়ামি, ভদোহন্মি নৃত্যে কুশলোহন্মি গীতে। অমৃত্রায়ৈ প্রদিশস্ব মাং স্বয়ং, ভবামি দেব্যা নরদেব নর্ত্তরঃ॥ ইদস্ত রূপং মম ষেন কিয়ু তৎ, প্রকীর্ত্তয়িষা ভূশশোক-বর্দ্ধনম্। বৃহয়লাং মাং নরদেব বিদ্ধি বৈ, স্কৃতং স্কৃতাং বা পিতৃ-মাতৃ-বর্জ্জিতাম্॥

বিরাট উবাচ। দদামি তে হস্ত বরং বৃহন্নলে, স্থতাঞ্চ মে নর্ত্তর যাশ্চ তাদুশীঃ। ইদস্ত তে কর্ম সমং ন মে মতং, সম্দ্রনেমীং পৃথিবীং অমর্হনি॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। বৃহশ্নলাং তামভিবীক্ষ্য মৎস্যরাট্, কলাস্থ নৃত্যেষ্
তথৈব বাদিতে। সংমন্ত্র্য রাজা বিবিবিধঃ স্থমন্ত্রিভিং, পরীক্ষ্য চৈনং
প্রমদাভিরাশু বৈ। অপুংশ্বমপ্যস্য নিশম্য চ স্থিরং, ওতঃ কুমারীপুর উসসর্জ্জ তাম্। স শিক্ষয়ামাস চ গীত-বাদিতং, স্থতাং বিরাটস্য ধনঞ্জয়ঃ প্রভুঃ॥
স্থীশ্চ তস্যাঃ পরিচারিকান্তথা, প্রিশ্বন্ধ তাসাং স বভ্ব পাশ্তবঃ॥ তথা স
সত্রেণ ধনঞ্জয়োহবসং, প্রিয়াণি কুর্বন্ সহ তাভিরাত্মবান্। তথা চ তং
ভ্রেন ক্রিব্রেজনা, বহিশ্বরা বাপ্যথ বাস্তবেচরাঃ॥

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বণ্যর্জ্জনপ্রবেশো নাম একাদশোহধ্যারঃ।

## দাদশো>খারঃ

বৈশন্দারন উবাচ। অথাপরোহদৃশ্যত পাশুবং প্রভুর্বিরাটরাজ্জরগান্
সমীক্ষিতৃম্। তমাপতত্তং দদৃশুঃ পৃথগ্জনা, বিষ্ক্তমলাদিব পূর্যামগুলম্॥
স বৈ হয়ানৈক্ষত তাংক্ততত্তঃ, সমীক্ষমাণঞ্চ দদর্শ মৎস্যরাট্। ততোহত্তবীক্তানমুগানমিত্রহা, কুতোহরমায়াতি নরোহমরপ্রভুঃ॥ অয়ং হয়ানীক্ষতি
মামকান্ দৃঢ়ং, গুবং হয়জো ভবিতা বিচক্ষণঃ। প্রবেশ্ততামেষ সমীপমাশু মে,
বিভাতি বীরো হি ষ্থামরস্তথা॥ সোহভ্যেতা রাজানম্মতহাত্তবীজ্জয়োহস্ত
তে পার্থিব ভদ্যমন্ত বঃ। হয়ে প্রমুক্তো নূপসন্মতঃ স্দা, ত্বাশ্বত্তো নিপ্ণো
ভ্বাম্যহম্॥

বিরাট উবাচ। দদামি ধানানি ধনং নিবেশনং, মমাশস্তো ভবিতৃং অমর্হিনি। কুতোহিনি কভানি কথং অমাগতঃ, প্রক্রাহি শিল্পং তব বিহাতে চ যৎ ॥
নকুল উবাচ। পঞ্চানাং পাণ্ডুপুত্রাণাং জ্যেঠো ত্রাতা যুষিষ্টিরঃ।
তেনাহমখেষু পুরা নিযুক্তঃ শক্রকর্ষণ ॥ অখানাং প্রকৃতিং বেদ্মি বিনর্ম্ঞাপি
সর্বাং। তৃষ্টানাং প্রতিপত্তিঞ্চ কুৎস্পঠেশ্ব চিকিৎসিতম্ ॥ ন কাতরং ভাষাম
ভাতু বাহনং, ন মেহত্তি তৃষ্টা বড়বা কুতো হয়াঃ। জনস্তু মামাহ স চাপি
পাণ্ডবো, যুষিষ্টিরো গ্রম্ভিক্মেব নামতঃ ॥

বিরাট উবাচ। যদন্তি কি কিয়ম বাজি-বাহনং, তদস্ত সর্বং আদধীনমত বৈ। যে চাপি কেচিয়ম বাজিযোজকান্তালাগ্রাঃ সারথর চ সন্ত মে॥ ইনং তবেষ্টং যদি বৈ স্বরোপম, প্রক্রছি যতে প্রসমীক্ষিতং বস্থা ন তেংক্স কণং হয়কর্ম বিভাতে, প্রভাসি রাজেব হি সমতো মম॥ যুধিষ্টিরভাব হি দর্শনেন, সমং তবেদং প্রিয়মতা দর্শনম্। কথন্ত ভূতৈতাঃ স বিনাক্তো বনে, বসত্যনিন্দ্যো রমতে চ পাওবঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তথা স গন্ধর্কবরোপমো যুবা, বিরাটরাক্সা
মৃদিতেন পৃঞ্জিতঃ। ন চৈনমক্তেহপি বিহুঃ কথঞ্চন, প্রিয়াভিরামং বিচরস্তমন্তরা॥ এবং হি মৎস্তে স্তবসন্ত পাগুবা, যথাপ্রতিক্সাভিরমোদদর্শনাঃ।
অক্সাত্চর্যাং ব্যচরন্ সমাহিতাঃ, সমৃদ্রনেমীপতয়োহতিহঃথিতাঃ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণ নকুলপ্রবেশো নাম বাদশোহধ্যায়ঃ।

### ওছোটেই।**শ**্বসাই

জনমেজয় উবাচ। এবং তে মংশুনগরে বসস্তম্ভত্ত পাগুবা:। (এবং মংশুশু নগরে প্রচ্ছনান্তত্ত পাগুবা:)। অত উর্জং মহাবীর্ব্যা: কিমকুর্বত বৈ দ্বিজ।

বৈশপায়ন উবাচ। এবং তে মৎস্তনগরে প্রছ্রাঃ কুকনন্দনাঃ। আরা-ধন্বজো রাজানং বৰকুৰ্বত তক্তৃণু। তৃণবিন্দুপ্রসাদাচচ ধর্মস্ত চ মহাত্মন:। অক্লাতবাসমেবন্ধ বিরাটনগরে বদন্॥ যুধিষ্টির: সভাস্তারো মংস্থানামভবং প্রিয়:। তথৈব চ বিরাটস্ত সপুত্রস্য বিশাম্পতে॥ স চাক্ষদয়জ্ঞতান ক্ৰীড়য়ামাস পাণ্ডবঃ। অক্ষবত্যাং ৰখাকামং স্ত্ৰৰদ্বানিব বিজ্ঞান্। অজ্ঞাতঞ্চ বিরাটদ্য বিজি গ্য বস্থ ধর্মরাট্। ভাতৃভ্যঃ পুরুষব্যান্তো বথার্ছং স্থং প্রবচ্ছতি ॥ ভীমসেনোহপি মাংদানি ভক্ষাবি বিবিধানি চ। অভিস্টানি মংসোন বিক্রীণীতে যুধিষ্ঠিরে ॥ বাদাংদি পরিজ্ञীর্ণানি লক্কান্তন্তঃপুরেহর্জ্জুনঃ। বিক্রীণাa- সর্ব্বেভ্য: পাণ্ডবেভ্য: প্রবস্থতি। সহদেবোহপি গোপানাং বেশ্যাস্থার পাওবং। দৰি ক্ষীরং ম্বতকৈব পাওবেভ্যঃ প্রযক্তি॥ নকুলোহপি ধনং লক্ষ্য ক্বতে কর্মণি বাঞ্চিনাম্। তুটে তিম্মিরবপতৌ পাওবেভ্যঃ প্রবছতি॥ কৃষ্ণা ত সর্বান্ ভর্গুড়ানিরীক্ষ্টী তপম্বিনী। যথা পুনরবিজ্ঞাতা তথা চরতি ভাবিনী। এবং সম্পাদয়ন্তত্তে তদাতোহতাং মহারথাঃ। বিরাটনগরে চেক্নঃ পুনর্গত্তে ধুতা ইব ॥ সশক। ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য ভরাং পাণ্ডুস্থতান্তদা। প্রেক্ষমাণান্তদা কুঞা-মৃষ্শ্ছধা নরাধিপ।। অথ মাদে চতুর্থে তু ব্রহ্মণঃ স্থমহোৎদবঃ। আসীৎ সমুকো মংস্যের পুরুষাণাং স্থান্মতঃ॥ তত্ত্ব মলাঃ স্থাপেতুর্দিগ্ভ্যো রাজন সহস্রশঃ। ১মাজে বন্ধারাজন্তথা পশুপতেরপি॥ মহাকায়া মহাবীর্যাঃ কালকঞ্জা ইবাহ্ররাঃ। বীর্য্যোন্মত্তা বলোদগ্রা রাজ্ঞা সমভিপুঞ্জিতা:॥ বিংহত্বর কটিগ্রাবাঃ স্ববদাতা মনস্বিনঃ। অবকুল্লরকান্তে রক্তে পার্থিব-সক্লিৰো। তেখানেকো মহানাদীৎ দৰ্কমল্লান্ সমা হ্বন্ত। আবল্গমানং তং ব্ৰক্তে নোপতিষ্ঠেত (তিষ্ঠতি) কন্দন॥ বলা সর্বে বিমনদন্তে মলা হতচেতস:। অথ স্বদেন তং মল্লং যোধয়ামান মৎদ্যরাট্॥ নোভমানস্তদা জীমো ছ:থেনৈবা-করোমভিম্। ন হি শক্ষোতি বিরুতে প্রত্যাখ্যাতৃং নরাণিপম্॥ ততঃ **স** পুরুষব্যাত্তঃ শার্দ্দূল-শিথিলশ্চরন্। প্রবিৰেশ মহারকং বিরাটমভিপ্জয়ন্॥ ববন্ধ ককাঃ কৌল্ডেঃভতঃ সংহর্ষঃগুরুষ্ (সংহর্ষন ভ্রম্)। বুত্রসঙ্কাশং ভীমো মলং সমাহবন্ধং ॥ জীমৃতং নাম তং তত্র মলং প্রথ্যাতবিক্রমম্

তাবুভৌ স্থৰহোৎসাহাবুভৌ ভীমপরাক্রমৌ ॥ মন্তাবিব মহাকারৌ বারণৌ बष्टिशम्बर्ता। उज्जलो नत्रभाकृत्नो वास्त्रुत्क नमीम्ब्रुः॥ वीत्त्रो भत्रममःक्ष्टी-বজোংক্তজ্বকাজ্জিণো আসীৎ স্থভীম: সম্পাত্তো বজ্পর্বতয়োরিব 🛭 পরমসংহটো বলেনাতিবলাবুভৌ ( অক্টোইক্সভাস্তর: ీ পরস্পরক্ষরৈবিণো॥ উভৌ পরমসংহৃটো মত্তাবিব মহাগজো। কৃতপ্রতি-ञ्जक्रें ( नक्केंदिकः ) ॥ **সন্নিপাতাবধৃতৈ**ক কুতৈ শিতে বিবিছ ভিশ্চ প্রমাথোনথানা কেপণেমু ষ্টিভিক্তিব বরাহোদ্ ত্রিকলে। তলৈবজ্ঞ-িপাতৈক প্রস্টাভিত্তবৈ চ। শলাকানধপাতিক পাদোদ্ধতক দারুণৈ: ॥ জামুভিশ্চাশ্মনির্ঘোটিशঃ শিরোভিশ্চাবঘটিতৈঃ ( ঘট্টনিঃ )। তদ্যুদ্ধমভবদেবার-মশস্ত্রং বাহুতেজ্বনা ॥ বলপ্রাণেন শুরাণাং সমাজোৎস্বসন্ধিন। অরুধ্যত জন: দর্কা: দোৎক্রুইনিনদোখিত:॥ (কীচকোহপি যদা মলং ন বিশেষয়তে वनो। छमा स्टानन छः ताका त्याध्यामान ভात्रछ॥) वनितनाः मःशूरन ताकन् वृज-वामवरत्रात्रिव । श्रव्यक्षंनाकर्यनाञ्चामञ्जाकर्यविकर्यरेनः ॥ র্থান্তোহন্তং জাহুভিশ্চাপি জন্নতুঃ। ততঃ শব্দেন মহতা ভং দরভৌ পরস্পরম্ ॥ ব্যাচ়োরস্কৌ দীর্ঘভূজৌ নিযুদ্ধরুশলাব্ভৌ। বাছভি: সমসজ্জেতা-পরিবৈরিব ॥ চকর্ষ দোর্ভ্যামৃৎপাট্য ভীমো মল্লমমিত্রহা। নিনদন্তনভিক্রোশপ্থাদি, ল ইব বারণম্ ॥ সমৃত্যম্য মহাবাছ অ'ময়ামাস বীথ্যবান্। ততো মল্লাশ্চ মৎস্থাশ্চ বিশায়ং চক্রিরে পরম্॥ আম্রিজা ্শতগুণং গতসত্তম-চেতনম্। প্রত্যপিংবল্মহাবাহর্মল্লং ভূবি বুকোদর:॥ তম্মিন্ বিনিহতে বীরে জীমৃতে লোক-বিশ্রুতে। বিরাট: পরমং হর্ষমগচ্ছবান্ধবৈ: সহ। প্রহর্ষাৎ व्यनरामे विखः वह बाक्ना महामनाः। वह्नवाम् महाब्राच्न यथा दिव्यविभक्तथा॥ এবং স অবহুন মল্লান পুরুষাংশ্চ মহাবলান। বিনিম্নাৎশ্ররাজ্ঞ প্রীতিমাহর-ত্ত্তমান্। যদাশু তুল্য: পুরুষো ন কশ্চিত্তত বিশ্বতে। ততো ব্যাছৈশ্চ मिःटेह्न्ट वित्रटेनन्टाभारवाधत्र ॥ शूनत्रस्थः भूतर्गातः श्वीनाः मरधा तृरकानतः। বোধাতে শ্ব বিরাটেন সিংহৈশ্বর্ত্তর্শহাবলৈ:। বীভৎস্করপি গীতেন অনুত্যেন চ পাণ্ডব:। বিরাটং তোৰহামাদ সর্বাশ্চান্ত:পুরে স্থিয়:। অধৈবিনীতৈজ্বিনন্তত্ত্ব ভত্ত সমাগতৈঃ। তোৰখামাস বাজানং নকুলো রাজসভ্যম্। তবৈ প্রদেশং প্রায়হ্ছৎ প্রীতো রাজা ধনং বছ। বিনীতান্ वृष्णान् मृष्टे। महरमवच देव विरक्षा ॥ उदेशव श्रमामे विश्वमत्नकः मश्चनाष्ट्रे বয়ন্ । জৌপদী প্রেক্য তানু সর্কানু ক্লিক্তমানারহারধান্। নাভিপ্রীতিষ্তী

রাজরিখাসপরমাভবং । এবন্তে স্থবসংগুর প্রচ্ছনাঃ পুরুষর্বভাঃ। কর্মানি ভক্ত কুর্ববাণা বিরাটনুপতেগুলা ।

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বণি শ্রীমৃত-মন্ত্রবংগে নাম ত্রেরোদশোহধ্যারঃ।

## চতুদ্দিশোহপ্র্যায়

বৈশম্পান্ন উবাচ। বসমানেষু পার্থেরু মৎস্তস্ত নগরে তদা। মহারথেষু চ্ছেম্মানা দশ সমভায়:॥ বাজ্ঞাননী স্থানফাছ ভাষ্টী বিশাম্পতে। ষ্মবসৎ পরিচারাহা স্রতঃখং জনমেজর॥ তথা চরস্থী পাঞ্চালী স্থানেফারা নিবেশনে। তাং দেবীং তোষয়ামান তথা চাস্তঃপুরে স্ত্রিয়ঃ॥ তন্মিন বর্ষে গতপ্রায়ে কীচকল্প মহাবল:। সেনাপতির্বিরাটভা দদর্শ জ্ঞপদাত্মকাম ॥ তাং দৃষ্টা দেবগর্ভাভাং চরস্তীং দেবতামিব। কীচকঃ কাময়ামাস কামবাণ-প্রপীড়িত:। স তু কামাগ্লিসম্বপ্তঃ স্থদেফামভিগম্য বৈ। প্রহসন্ধিব সেনানীরিদং বচনমত্রবীৎ । নেয়ং ময়া জাতু পুরেহ দৃষ্টা, রাজ্ঞো বিরাটস্ত নিবেশনে শুভা। রূপেণ চোনাদয়তীব মাং ভূশং, গল্পেন জাতা মদিরেব ভামিনী। কা দেবরূপা হৃদয়কমা ভুভা, হাচক্ষু মে কস্ত কুভোহত শোভনে। চিত্তং বিনির্মণ্য করোতি মাং বশে, ন চান্তদত্রৌষধমন্তি মে মতম্ ॥ অহো তবেরং পরিচারিকা ভভা, প্রত্যগ্ররূপা প্রতিভাতি মামিয়ন্। অযুক্তরূপং হি করোতি কর্ম তে, প্রশাস্ত মাং ষচ্চ মমান্তি কিঞ্চন ॥ প্রভৃতনাগাশ্বর্থং সভাজনং, সমৃদ্ধিযুক্তং বছপান-ভোজনম। মনোহরং কাঞ্চন-চিত্রভূষণং, গৃহং মহচ্ছোভরতামিয়ং মম। ততঃ স্থদেঞ্চামনুমন্ত্র্য কীচকন্ত্রণা সমভোতা ৰরাধিপাত্মজাম্। উনাচ কৃষ্ণামভিসাত্ত্মাত্তদা, মৃগেল ক্সামিব জমুকো বনে॥

কীচক উবাচ। কা স্থাং কশ্বাসি কল্যাণি কুতো বা স্থাং বরাননে।
প্রাপ্তা বিরাটনগরং তত্ত্বমাচক শোভনে ॥ দ্ধপমগ্রাং তথা কান্তিঃ সৌকুমার্য্যমন্থ্যমন্। কান্ত্যা বিভাতি বক্তুন্তে শশাক্ষ ইব নির্মানন্য ॥ নেত্রে স্থবিপুলে
স্থক পদ্মপত্রনিভে শুভে। বাক্ চ তে চাকসর্কালি পরপুটকভোপমা ॥ এবংক্রপা মরা নারী কাচিদক্তা মহীতলে। ন দৃষ্টপূর্বা সুখোণি যাদৃশী স্থমনিন্দিতে ॥
লক্ষীঃ পদ্মালয়া কা স্থমও ভৃতিঃ সুমধ্যমে। ব্রীঃ প্রীঃ কান্তিরখো কীর্ত্তিরাসাং
কা স্থং বরাননে ॥ রতীব রূপিণী কিং স্থমনশাক্ষবিহারিণ। স্থতীব ভাকসে

কুক্র প্রভেবেন্দোরমূত্তম। অপি চেক্ষণপদ্মান্ধং ( পদ্মাণাং ) স্মিতজ্ঞোৎস্মো-পনং শুভদ্। দিব্যাংশুরশিছিবর্তাপ্তং দিব্যকান্তিমনোরমন্। নিরীক্ষ্য .চল্র-বক্ত ত্তে লক্ষাহপময়া যুতম্। কুৎকে জগতি কো নেহ কামস্ত বশগো ভবেৎ ॥ হারালঙ্কারহোগ্যের তে অনৌ চোভে স্থশোভনো! স্থলাতে সহিতৌ লক্ষ্যা পীনৌ বুত্তো নিরন্তরো॥ কুটালামু (কুড়লামু ) কুহাকারে তব স্ক্র পরোধরো। কামপ্রতোদাবিব মাং তুদত ভাকহাসিনি । বলীবিভঙ্গচতুরং স্তন-ভারাবনামিতম্। করাগ্রদম্মিতং মধ্যং তবেদং তহুমধ্যমে । দুট্টেব চারুক্সমনং সরিৎপুলিনসন্নিভন্। কামব্যাধিরসাধ্যো মামপ্যাক্রমতি (বাধতেৎতীব) ভামিনি॥ জালাবানত (জজাল চাগ্নি) মদনো দাবাগ্নিরিব নির্দশ্ব:। परमन्यां जिनकरत्ना विवृत्का याः वहजात्रम् ॥ व्याज्यश्रानवर्द्धन मन्यारखां स्टब्स मगत्रच वत्राद्वारङ ज्वलखः मन्यथानलम्॥ मिक्ठिरखामाननकता मन्यथा শরোত্তমা:। ত্রংসঙ্গমেন শমিতান্তীবা: শশিনিভাননে॥ মহ্যং বিদার্য্য ক্ষদয়মিদং নির্দ্ধরবৈগিতা:। প্রবিষ্টান্চাসিতাপান্ধি প্রচণ্ডান্চণ্ডদারুণা:॥ (অ) রত্যুনাদ্দমারস্তা: প্রীত্যুনাদ্করা মম। আত্মপ্রদানসম্ভোগানামৃদ্ধর্ভুমিহাইসি॥ চিত্রমাল্যাম্বরধরা সর্ব্ধাভরণভূষিতা। কামং প্রকামং সেব তং ময়া স**হ** विनामिनि॥ नाईमोहायुथः वज्रः युथार्धा यूथवर्षिछ। সৌখ্যং মত্তম্বং গৰুগামিনি॥ স্বাদৃক্তমৃতকল্লানি পানানি বিবিধানি চ পিবমানা মনোজ্ঞানি রমমাণা বথাস্থবম্। ভোগ্োপচারান্ বিবিধান্ সৌভাগ্যঞ্চাপ্যস্কুত্তমম্। পানং পাছি (পিব) মহাভাগে ভোগৈরস্থপমৈঃ ষ্ঠেভ:।। ইদঞ্চ রূপং প্রথমঞ্চ তে বয়ো, নিরর্থকং কেবলমভ ভাবিনি। অধার্য্যমাণা অগিবোত্তমা শুভা, ন শোভতে (সে) সুন্দরি শোভনা সতী। ত্যজ্ঞামি দারান্মম যে পুরাতনা, ভবস্ক দাস্তস্তব চারুহাসিনি। অহঞ্চ তে স্থলরি দাসবৎ স্থিতঃ, সদা ভবিষ্যে বশগো বরাননে ॥

সৈরদ্ধী উবাচ। স্বপ্রার্থনীয়ামিহ মাং স্তপুলাভিমন্তনে। নিহীনবর্ণাং সৈরদ্ধীং বীভৎসাং কেশকারিণীম্॥ পরদারাহিন্মি ভদ্রক্তে ন যুক্তং তব সাম্প্র-তম্। দরিতাঃ প্রাণিনাং দারা ধর্মং সমন্ত্রিস্তর ॥ পরদারে ন তে বুদ্ধির্জাতু কার্য্যা কথঞ্চন। বিবর্জনং হ্কার্য্যাণামেতৎ সৎপুরুষত্রতম্॥ মিধ্যাভিগুগ্নে হি নরঃ পাপাত্মা মোহমান্থিতঃ। স্বশং প্রাপুরাদেবাবং মহবা প্রাপুরাত্রম্॥

বৈশম্পান্ন উবাচ। এবমুক্ত সৈরস্থ্য কীচকঃ কামমোহিতঃ। জানমপি সুত্রুদ্ধিঃ প্রদারাভিমর্বণে। দোধান্ বহুন্ প্রাণহরান্ সর্বলোকবিগহিতান্। প্রোবাচেদং অতুর্ দিন্তো পদীমজিতে জ্রিয়ঃ॥ নাইত্যেবং বরাবোহে প্রত্যাখ্যাতুং বরাননে। মাং মন্মথদমাবিষ্টং ত্বংকতে চাক্লহাসিনি॥ প্রত্যাখ্যার চ মাং ভীক্ষ বর্ণগং প্রিয়বাদিনন্। নৃনং ত্বমসিতাপালি পশ্চাত্তাপং গমিয়সি॥ অহং হি অক্র রাজ্যন্ত ক্বমন্তান্ত অমধ্যমে। প্রত্রাসরিতা চাম্মি বীর্ষো চাপ্রতিমঃ ক্লিতৌ॥ পৃথিব্যাং মৎসমো নান্তি কশ্চিদন্তঃ পুমানিহ। ক্লেবোবন-সৌভাগ্যৈতোগৈশ্চামৃত্তমৈঃ ভতৈঃ॥ সর্বাকামসমুদ্ধেষু ভোগেষমুপমেষিহ। ভোক্তব্যের চ কল্যাণি কম্মাদ্দিশ্রে রতা হাসি॥ ময়া দন্তমিনং রাজ্যং স্থামিয়্যমিন্ বরাননে। ভজন্ব মাং বরারোহে ভ্রুক্র ভোগানমুত্তমান্॥

বৈশম্পান্তন উবাচ। । এবম্জা তু সা সাধনী কীচকেনাশুভং বচ:। কীচকং প্রত্যুবাচেদং গর্হস্বস্তান্ত তঘচ:॥ (উবাচ পরমক্রুদ্ধা সৈরন্ধী কীচকং প্রতি)।

দৈরদ্ধী উবাচ। মা স্তপুত্র হয়স্থ মাছ তাক্ষাসি জীবিতন্। জানীহি পঞ্চতিনিত্যং মাং বীবৈরভিরক্ষিতান্॥ ন চাপ্যহং অগা লভ্যা গদ্ধনাং পত্রো মম। তে আং নিহস্তাঃ কুপিতাঃ সাধবলং মা ব্যনীনশঃ ॥ অশক্যরপং প্রুইবর্ধনানং গছমিছসে। বথা নিশ্চেতনো বালঃ কুলস্থঃ কুলম্ভরম্ ॥ তর্ভ্ মিছ্ছতি মন্দাআ তথা অং তর্ভ মিছ্ছিলি । অস্তম হাং বা যদিবোর্দ্ধম্পেতেঃ, সম্দ্রপারং যদি বা প্রধাবসি । তথাপি তেভ্যো ন বিমোক্ষমর্হনি, প্রমাথিনো দেবস্থতা হি তে বরাঃ ॥ অং কালরাজীমিব কন্টিনাত্রঃ, কিং মাং দৃঢ়ং প্রার্থরসেহছ কীচক । কিং মাত্রক্ষে শন্নিতো বথা নিতশ্তরং জিল্লক্ষিব মন্ত্রসে হি মান্ ॥ (তেবাং প্রিয়াং প্রার্থরতো ন তে ভ্বি, গজা দিবং বা শরণং ভবিশ্বতি। নিবর্ত্তে কীচক নেদৃশং ভঙং, জ্ঞাবৈব সংজীবিত্মছ স্থপ্রিরম্ ॥)

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণ কীচক-বধে কীচক-কৃষ্ণাদংবাদে চতুর্দ্দশোহধায়য়ঃ।

### শঞ্চলেই প্রায়প্ত

বৈশাসন উবাচ। প্রভ্যাথ্যাতো রাজপুত্র্যা স্থদেকাং কীচকোংব্রবীৎ। অমর্য্যাদেন কামেন বোরেণাভিপরিপ্লভ:॥ কীচক উবাচ। বথা কৈকেন্নি সৈরন্ধ্রী মামিরাভিধিবীয়তাম্। বেনো-পারেন সৈরন্ধ্রী ভলেনাং গলগামিনী। তং অদেকে পরীপান্ব মাহং প্রাণান্ প্রহাসিষম্য

বৈশপান্তন উনাচ। তত্ত্ব তাং বহুশ: শ্রু হা বাচং বিলপতন্তল। বিরাট-মহিনী দেবী কুপাঞ্চক্রে মনস্বিনী॥ স্বমর্থমভিদ্যার তত্ত্বার্থমস্চিন্তা চ। উদ্বেপঞ্চিব কুফারা: সুদ্বেফা স্তমত্রবীৎ॥

সুদেক্ষোবাচ। পর্ত্তি বং সমৃদ্দিগু সুরামন্ত্রঞ্চারয়। তত্তিনাং প্রেবক্ষিণামি সুদাহারীং তবাস্তিকম্॥ তত্ত্ব সংপ্রেষিতামেনাং বিজনে নির্ব-গ্রহে। সাস্ত্রেথা যথাকামং সাস্ত্যমানা রমেদ্ধদি॥

বৈশপান্তন উবাচ। ইত্যক্তঃ স বিনিক্রম্য ভগিষ্ঠা ভবনারণা।
স্থামাহাররামাদ রাকার্ছাং স্থানিষ্কৃতান্ ॥ (আজৌরভ্রঞ্চ স্থভূশং বহুংশেচাচ্চাবচান্ মুগান্] ভক্যাংণ্চ বিবিধাকারান্ বহুংশেচাচ্চাবচাংগুদা। কারয়ামাদ
কুশলৈরলং পানং স্থাভনন্॥ ভিমান্ ক্তে তদা দেখা কীচকেনোপমন্তিতা।
স্থান্থা প্রেষয়ামাদ দৈরজ্ঞীং কীচকালরম্॥

স্থাদেকোবাচ। উত্তিষ্ঠ গছ দৈরন্ধি কীচকস্ত নিবেশনম্। পানমানর কল্যানি পিপাসা মাং প্রবাধতে ॥

দৈরক্ষী উবাচ। ন গক্তেষ্যহং তল্প কীচকন্ম নিবেশনম্। স্বমেব রাজ্জি জানাসি বধা স নিরপত্রপঃ॥ ন চাহ্মনবলাকি তব বেশানি ভাবিনি। কামবুর! ভবিয়ামি পত্রীনাং বাভিচারিশী॥ স্বটেগ্র দেবি জানাসি যথা স সময়ঃ কতঃ। প্রবিশস্তা ময়া পূর্বং তব বেশানি ভাবিনি॥ কীচকণ্চ স্কেশান্তে ম্টো মদনদর্পিতঃ। সোহবমংসাতি মাং দৃষ্টা ন ঘাসোত্র শোভনে॥ সন্তি বহান্তব প্রেয়া রাজপুত্রি বশাহ্গাঃ। স্বস্তাং প্রেষয় ভত্রং তে স হি মামবমংস্যতে॥

স্থানেকোবাচ। নৈৰ আং জাতু হিংস্যাৎ দ ইতঃ সংপ্ৰেৰিতাং মগা। ইতাস্যাঃ প্ৰদদৌ পাত্ৰং স্পিধানং হির্থায়ম্। সা শ্রমানা রুদতী দৈবং শর্পমীযুষী। প্রাতিষ্ঠত সুরাহারী কীচক্স্য নিবেশন্ম্॥

সৈরস্থ্রী উবাচ। বথাহমস্যং ভর্তৃভ্যো ( পাণ্ড্ভ্যো ) নাভিঙ্গানামি কঞ্চন : তেন সত্যেন মাং প্রাপ্তাং মা কুর্যাৎ কীচকো বলে॥

বৈশন্দারন উবাচ। উপাতিষ্ঠত সা স্বর্য্যং মৃত্র্রমবলা ততঃ। স তদ্যা-তহমধ্যারাঃ সর্বং স্বর্যোহববুদ্ধবান্ ॥ অন্তর্হিতং ততত্তদ্যা রক্ষো রক্ষার্থমাদিশং । ততৈনাং নাজহাত্ত সর্মাবস্থাখনিন্দিতাম্ ॥ তাং মুগীমিব সম্ভাং দৃষ্টা কৃষ্ণাং সমীপগাম্। উদ্ভিদ্মুলা স্তো নাবং লক্ষেব পারগং ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বশি জৌপদীস্মরাহরণে পঞ্চদশোহধ্যারঃ।

### <u>ষোড়ুশো</u>ইপ্রায়ঃ

কীচক উবাচ। স্থাগতত্তে বরারোহে সুর্টো রঞ্জনী মৃদ্ । স্থামিনী স্মস্প্রাপ্তা প্রকৃত্তক মম প্রিয়ন্ ॥ সুর্বনিলাঃ ক্ষৃংশ্চ কুণ্ডলে পরিহাটকে । নানাপত্তনকে শুলু মণিরস্বঞ্চ শোভনন্। স্থাহরণত্ত ( আহরত্ত চ ) বস্থাণি কৌশেরাক্সজ্বিনানি চ ॥ স্বন্ধি মে শয়নং দিব্যং স্বন্ধ্প্কল্লিতন্। এহি তত্ত্র ময়া সার্জং পিবস্থ মধু-মাধ্বীম্ ॥

দ্রোপত্যবাচ। অতিপ্রবীক্রাজপুত্রী মাং সুরাহারীং তবাস্তিকম্। পানমা-হর মে ক্রিপ্রং পিপাদা মেহতি চারবীং ॥

কীচক উবাচ। অন্তা ভদ্রে নরিয়ন্তি রাজপুল্রাঃ পরিক্রতম্ (প্রতি-শ্রুতম্ )। ইত্ত্যেনাং দক্ষিণে পাণৌ স্তপুলঃ পরামুষ্থ ॥

দ্রোপত্যবাচ। ষথৈবাহং নাভিচরে কদাচিৎ, পতীমদাবৈ মনসাৎপি জাতু। তেনৈব সত্যেন বশীকৃতং খাং, দ্রষ্টান্মি পাপং পরিক্যমাণম্॥

বৈশন্দায়ন উবাচ। স তামমুপ্রেক্য বিশালনেত্রাং, জিল্পনাণঃ পরিভৎসরস্তীম্ ॥ জগ্রাহ তাম্তরবল্ধদেশে, সা কীচকং তং সহসা কিপন্তী ॥ প্রগৃষ্থমাণা তু মহাজ্বেন, মৃত্র্বিনিধস্য চ রাজপুত্রী । চিক্রেপ তং গাঢ়মমুস্তমাণা,
প্রবেপমানাতিক্ষা শুভালী ॥ তয়া সমাক্ষিপ্ততম্যং স পাপঃ, পপাত শাখীব
নিক্ত্রমূলঃ দা গৃহীতা বিধ্বানা ভূমাবাক্ষিপ্য কীচকম্ । সভাং শরণমাগক্ষ্প বত্র রাজা যুধিষ্ঠিরঃ ॥ তাং কীচকঃ প্রধাবস্তীং কেশপাশে পরাম্শৎ ।
অথিনাং পশ্রতো রাজঃ পাতরিত্বা পদাববীৎ ॥ ভস্যা বোহসৌ তদার্কেশ
রাক্ষয়ং সন্নিধাজিতঃ । শ কীচকমপোবাহ বাতবেগেন ভারত ॥ স পপাত
তদা ভূমো রক্ষোবলসমাহতঃ । বিঘূর্ণমানো নিক্টেক্ত্রমূল ইব ক্রমঃ ॥
তাঞ্চাসীনো দদ্শত্রতীমনেন-যুধিষ্ঠিরো । অমুস্তমাণো ক্রফারাঃ কীচকেন পরাভবম্ ॥ ভস্য ভীমো বধং প্রেক্যুঃ কীচকস্য ত্রান্থনঃ । দক্তিপ্রাংশুদা

রোষান্তিশিপের মহামনাঃ ॥ ধ্যক্ষারামভক্তাং নেত্রে চেচ্ছিতপক্ষণী।
সম্বেদা জকুটী চোগ্রা ললাটে সমবর্ত্ত ॥ হত্তেন মমুদে চৈব ললাটং পরবীরহা। ভ্রশ্চ ব্রিক্ত: ক্রুদ্ধঃ সংসোথাতুমৈক্ষত ॥ অথাকুঠেনাবমুদরকুঠং
তস্য ধর্মরাট্। (অথাবমুদ্নাদকুঠমকুঠেন যুধিটিরঃ।) প্রবোধনভরাদ্রাক্ষা ভীমং
তং প্রত্যবেধরং॥ তং মন্তমিব মাতকং বীক্ষমাণং বনম্পতিম্। স তমাবাররামাস ভীমসেনং মুধিটিরঃ॥ (আলোকরসি কিং বৃক্ষং স্বদ দাককুতেন বৈ।
বদি তে দাক্ষভিঃ কৃত্যং বহির্কারিগৃহতাম্)॥ সা সভাষারমাসাভ কদতী
মংস্যমন্ত্রবীং। অবেক্ষমাণা স্বশ্রোণী পতীংস্তান্দীনচেত্সঃ॥ আকারমভিরক্ষী প্রতিজ্ঞাং ধর্মসংহিতাম্ (প্রতিজ্ঞাধর্মসংহিতা)। দহুমানেব রৌত্রেণ
চক্ষা ত্রপদাত্মলা॥

(फोপছावाह। (यशाः देवत्री न चिश्रिक वर्ष्ठश्रि विवदम वसन्। (छवाः भाः भानिनीर खार्याः क्छभूदाः भागवरीर । य महान ह बाटहरू आगाः সত্যবাদিন:। তেষাং মাং মানিনীং ভার্য্যাং স্তপুত্র: পদাবধীৎ॥ তুনুভিনির্ঘোর জ্যাবোষ: শ্রন্নতেহনিশ্য। তেষাং মাং মানিনীং ভার্য্যাং স্তপুত্র: পদাবধীং ॥ বে চ তেজবিনে। দান্তা বলবন্তোহতিমানিন:। তেষাং মাং মানিনাং ভার্যাং স্তপুত্র: পদাবধীং ॥ সর্বলোকমিমং হত্মার্ধপাশসিভাল্ত ষে। তেষাং মাং মানিনীং ভার্য্যাং স্তপুত্র: পদাবধীৎ ॥ শরণং যে প্রপন্নানাং ভবন্তি শরণার্থিনাম। তেষাং মাং মানিনীং ভার্য্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধীৎ॥ চরস্থি লোকে প্রচ্ছন্না: ক ন্ন তেখ্য মহারথা:। কথন্তে স্তপুত্রেণ বধ্যমানাং প্রিয়াং দতীম। মর্বয়ন্তি যথা ক্লাবা বলবন্তোহমিতৌ প্রসঃ ॥ क ছ তেষামমর্বন্চ বীর্যান্তেজ্বত বর্ত্ততে। ন পরীপান্তি যে ভার্যাং বধ্যমানাং ত্রাক্মনা॥ ময়া তু শক্যং কিং কর্ত্তঃ বিরাটে ধর্মদূষকে। यः পশুনাং মর্বয়তি বধ্যমানামনাগদম্॥ ন রাজা রাজ্বং কিঞ্চিং সমাচরতি কীচকে। দম্যানামিব ধর্মন্তে ন হি সংসদি শোভতে। নাহমেতেন যুক্তা বৈ হন্তং মৎস্য তবান্তিকে। সভাসদশ্চ পশ্ৰদ্ধ কীচক্ষ্য ব্যতিক্ৰম্ । ন কীচকশ্চ ধৰ্ণজ্ঞোন চমৎসাঃ কথঞ্চন সভাসদোহপ্যধর্মজ্ঞা ষ এনং প্যুত্তপাসতে॥

বৈশপায়ন উবাচ। এবম্বিধৈর্বচোভিঃ সা তদা রুফাশ্রলোচনা। উপাল-ভত রাজানং মৎস্যানাং বরবর্ণিনী॥

বিরাট উবাচ। পরোকং নাজিজানামি বিগ্রহং যুবরোরহম্। অর্থজন্ম-বিজ্ঞায় কিন্তু স্যাৎ কৌশদং মন । বৈশম্পায়ন উবাচ। ততত্ত্ব সভ্যা বিজ্ঞায় কৃষ্ণাং ভূরোহভ্যপুক্ষয়ন্। সাধু সামিবতি চাপ্যাহঃ কীচকঞ্চ ব্যগ্রহান্॥

সভ্যা উচু:। যস্যেরং চারুসর্বাদী ভার্যা স্যাদারতেক্ষণা। পরে। লাভন্চ তস্য স্যান্নাসপ্তাবঃ (ন চ শোভেৎ) কদাচন ॥ ন হীদৃশী মহুয়েষ্ স্থলভা বরবর্ণিনী। নারী সর্বানবছাদী দেবীং মন্তামতে বরম্॥

বৈশশ্পায়ন উবাচ। এবং সংপ্রয়প্তস্তে কৃষ্ণাং প্রেক্ষ্য সভাসদঃ। যুধিষ্ঠিরস্য কোপা তুলাটে বেন আগমং॥ অথা ববী দাজপুলীং কৌরব্যো
মহিষাং প্রিয়াম্। গচ্চ সৈর্দ্ধি মাহত্র স্থাঃ স্থানেষ্ট্রা নিবেশনম্॥ ভর্তারমরক্ষন্ত্যঃ ক্রিশুন্তে বীরপত্নঃ। শুশ্রম্যা ক্রিশ্রমানাঃ পতিলোকং জ্বয়ন্ত্যত ॥ মক্রে
ন কালং ক্রোধস্য পশ্চন্তি পত্রস্তবঃ তেন বাং নাভিধাবন্তি গন্ধবাঃ
ফ্র্যাবর্চ্চসঃ॥ অকালজ্ঞাসি সৈর্দ্ধি শৈল্ঘীব বিরোদিষি। বিদ্বং করোষি
মৎস্যানাং দীব্যতাং রাজসংস্দি॥ গৃদ্ধ সৈর্দ্ধি গন্ধবাঃ করিশ্বন্তি তব প্রিয়ম্।
ব্যপনেশ্বন্তি তে গুংখং বেন তে বিপ্রিয়ং কৃত্যম্॥

দৈরন্ধী উবাচ। অতীব তেষাং দ্বণিনাং মন্তেহহং ধর্মচারিণী। তক্ত তক্তৈয়ৰ তে বধ্যা ষেধাং ক্যেঠোহক্ষদেবিতা॥

বৈশপায়ন উবাচ। ইত্যুক্তা প্রাদ্রবৎ ক্লফা স্বলেঞ্চায়া নিবেশনম্। কেশানুক্তা তু কুশ্রোণী সংরম্ভালোহিতেক্ষণা॥ ওততে বদনং ততা কদিতায়া-শ্চিরন্তদা। মেবলেখা-বিনিম্ব্রুং দিবীব শশিমগুলম্॥

স্থানেফোবাচ। কন্তাহ্বধীন্বরারোহে কন্মান্ডোদিষি শোভনে। কস্থান্থ বিরতং ভদ্রং কেন তে বিপ্রিয়ং ক্লতম্ ॥

দ্রোপত্যবাচ। কীচকো মাবধীন্তত্র স্বরাহারীং গতান্তব। সভারাং প্রভাবাক্তো বথৈব বিজনে তথা॥

স্থদেফোবাচ। ঘাতগ্নামি স্থকেশান্তে কীচকং যদি মন্তনে। বোৎসৌ স্বাং কামসম্মত্যো ত্র্প্রভামবমন্ততে ॥

দ্রোপত্যবাচ। অক্তে বৈ তং বধিয়স্তি ধেবামাগঃ করোতি সং। মঞ্চে চাত্যৈব সুব্যক্তং পরলোকং গমিয়তি॥

ইজি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণ কীচকবধে জৌপদীপরিভবে বোড়শোহধ্যারঃ।

#### मक्षलटमाञ्चाइह।

বৈশন্পায়ন উবাচ। সাহতা স্তপুত্রেণ রাজপুত্রী বশবিনী। বধং কৃষ্ণা পরীপান্তী সেনাবাহক্ত ভাবিনী॥ জগামাবাসমেবাথ তদা সাজপদাজ্ঞা। কৃষা শৌচং বধাস্তায়ং কৃষ্ণা বৈ তত্ত্মধ্যমা॥ গাত্রাণি বাসদী চৈব প্রক্ষাল্য সিলিনেন সা। চিন্তরামাদ কদতী তক্ত ত্বংখক্ত নির্ণয়ন্ম। কিং করোমি ক গজামি কথং কার্য্যং ভবেল্লম। ইত্যেবং চিন্তরিদ্ধা দা তীমং বৈ মনদাগমং॥ নাক্তঃ কলিদতে ভীমান্ মমাল্য মনসং প্রিয়ম্। তত্ত উথায় রাজ্রো দা বিহায় শয়নং স্বক্ষ্। প্রাদ্রবন্ধাথমিছন্তী কৃষ্ণা নাথবতী সতী॥ ভবনং ভীমদেনক্ত ক্রিপ্রমান্নতালোল। ত্বংখন মহতা যুক্তা মানদেন মনবিনী॥

জৌপতাবাচ। তশ্বিন্ জীবতি পাপিষ্ঠে দেনাবাহে মম বিবি। তৎ কর্ম্ম কুতবত্যত কথং নিজাং নিষেবদে॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবমুক্তা তু তাং শালাং প্রবিবেশ মনম্বিনী। মস্তাং ভীমন্তথা শেতে মুগরাজ ইব খদন্ ৷ তন্তা রূপেণ সা শালা ভীমস্ত চ মহাত্মন:। সংমুর্জিতের কৌরব্য প্রজ্জালাভিতেজ্লা। সা বৈ মহানদে প্রাপ্য ভীমদেনং শুচিম্মিতা। সর্বধেতের মাহেয়ী বনে জাতা ত্রিহায়নী॥ উপাতিষ্ঠত পাঞ্চালী বাদিতেব মহাগঞ্জম্ ॥ সা লতেব মহাশালং ফুল্লং (গোমতী)-গোমতিতীরজ্বন। পরিষজ্বতি পাঞালী মধ্যমং পাণ্ডুনন্দনম্। বাহুত্যাং পরিরতভানং প্রাবোধয়দনিন্দিতা॥ দিংহং মুপ্তং বনে তুর্গে মুগরাজবধুরিব। ভীমদেনমুপালিফলভিনীৰ মহাগজম্ ৷ বীণেৰ মধুরালাপা গালারং সাধু মুর্চ্ছিতা (মুর্চ্ছতী)। অভ্যভাষত পাঞ্চালী ভীমদেনমনিন্দিতা॥ ( পরিদংস্পৃত্য गानिजाः यथः श्रादाधमः পতिम्। श्रीविवाधाः मदश्याः प्रथः कृषः মহার্ণবে॥ শ্রামাবদাতা শয়নে শয়ানমূবভেক্ষণম্॥ সা শচীব সহস্রাক্ষং ক্ষদ্রাণীৰ চ শঙ্করম। সাবিত্রীৰ চ ব্রহ্মাণং গুহং ৰ্ষ্ঠীৰ ভাবিনী॥ ভীমং প্রাবোধন্ত कृष्ण नन्त्रीमीरमानतः वर्षा। तन्तर्गर्छ। ममा ভাদা প্রিয়ং প্রিয়বচঃ-প্রিরা)॥ উত্তিষ্ঠোত্তিষ্ঠ কিং শেষে ভীমসেন যথা মৃতঃ। নামৃতস্ত হি পাপীয়ান ভার্য্যামানভ্য শীবতি॥ স সংপ্রহায় শয়নং রাজপুত্র্যা প্রবোধিতঃ। উপা-তিষ্ঠত মেঘাভঃ পর্য্যক্ষে দোপদংগ্রহে । অথাববীদ্রাজপুত্রীং কৌরেয়ে। মহিবীং প্রিয়াম্। কেনান্তংর্থেন সংপ্রাপ্তা ত্রিতেব মমান্তিকম্। ন তে প্রকৃতিমান্ বর্ণ: রুশা পাণ্ড্শ্চ লক্ষ্যদে। আচক্ষ্ পরিশেষেণ সর্বাং বিভামহণ वथा। ज्यार वा विन वा दृःश्र श्रिवः वा विन वाश्श्रिवम्। यथावर नर्समाहकः শ্রবা ধান্তামি (জ্ঞান্তামি ) বং ক্ষম্॥ অহমেব হি তে কৃষ্ণে বিশান্তঃ সর্ক-কর্ম্ম। অহমাপংস্থ চাপি বাং মোক্ষামি পুনঃ পুনঃ॥ শীল্মফ্লা বথাকামং বত্তে কার্য্যং ব্যবস্থিতম্। গছে বৈ শরনাধ্যেব বাবরাক্যো বিব্ধাতে॥

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বণি ভীমসেনামন্ত্রণং নাম সপ্তদশোহধ্যারঃ।

## অস্টাদ্দশোহধ্যায়ঃ

দ্রোপহ্যবাচ। অশোচ্যবং কৃতত্তস্তা যতা ভর্তা ঘুধিষ্ঠির:। জানন্ সর্কাণি তুঃখানি কিং মাং ত্বং পরিপৃত্তসি॥ যুনাং দাসীপ্রবাদেন প্রাতিকামী তদানয়ং। সভাপরিষদো মধ্যে তন্মাং দহতি ভারত॥ পার্থিবশু স্থতা নাম কা মুজীবতি মাদৃশী। অবমুভূদেদৃশং হুংখমত্যন্তং দ্রোপদীমৃতে॥ বনবাস গতায়া-চ দৈরুবেন ত্রাজ্মনা। পরামর্যং দ্বিতীয়ং বৈ দোচুমুৎসহতে স্থ কা॥ মংস্তরাজ্ঞ: সমক্ষত্ত তক্ত ধ্রিদা পশুত:। কীচকেন পদা স্পৃষ্টা কা হ জীবেত মাদৃশী।। এবং বছবিধৈঃ ক্লেশৈঃ ক্লিখ্যমানাঞ্চ ভারত। ন মাং कार्नानि (कोटक्य किः कनः कीविटलन मा वाश्यः ताटका विवारिमा কীচকো নাম ভারত। সেনানীঃ পুক্ষব্যাদ্র খালঃ প্রমহ্মতিঃ॥ স মাং সৈর্দ্ধি,বেশেন বদস্তীং রাজনেশানি। নিত্যমেবাছ তৃষ্টাত্মা ভার্যা মম ভবেতি বৈ॥ তেনোপমন্ত্র্যাণায়া বধার্হেণ সপত্বজিৎ। কালেনেব ফলং পকং হাদয়ং মে বিদীর্ঘাতে॥ ভাতরঞ্চ বিগর্হত্ত জ্যেষ্ঠং ছুদ্যিতদেবিনম্। যস্যান্দি কর্মণা প্রাপ্তা তঃথমে চদনস্তকম্॥ কে। হি র।জ্যং পরিত্যজ্য সর্বাস্থং চাত্মনা দহ। প্রজ্যাদ্মৈব দীব্যেত বিনা ছদ্তিতদেবিনম্॥ यनि নিক্ষহত্তেণ যজাভং সারবদ্ধন্। সায়ং প্রাতরদেবিভাদপি স্থৎস্রান্ বছন্॥ রুকুং হিরণ্যং বাসাংসি যানং যুগ্মজাবিকম্। অশাশ্রতরসজ্যাংশ্চ ন জাতু ক্ষমাবহেৎ।। সোহয়ং দ্যতপ্রবাদেন শ্রিয়া প্রত্যবরোপিত:। তৃষ্ণীমান্তে ষ্থা মৃঢ়ঃ স্থানি কর্মাণি চিভয়ন্॥ দশনাগসহস্রাণি পদ্মিনাং হেমমালিনাম্। ষং ৰান্তমত্বান্তীহ দোহরং দ্যুতেন জীবতি॥ তথা শতসহস্রাণি রাজ্ঞামমিত-তেজ্বসাম্। উপাদত মহারাজমিলপ্রতে যুধিষ্টিরম্॥ শতং দাদীদহস্রাণাং ৰদ্য নিত্যং মহানদে। পাত্ৰীহন্তং দিবারাত্রমতিধীন্ ভোক্ষত্যুত॥ এব

নিছসহস্রাণাং প্রদাতা দদতাম্ব:। দ্যুতজ্বেন হ্নর্থেন মহতা সমুপালিত:॥ এনং হি স্বরস্পলা বছর: স্তমাগধাঃ। সালং প্রাতরূপাতিষ্ঠন স্ব্যুট্থশিকুওলাঃ॥ সহস্যায়ে বৃদ্য নিত্যমাদন সভাদনঃ। তপঃশতোপদপরাঃ দক্কামৈর-পত্তিতা: ॥ অষ্টাশীতিসহস্রাণি স্নাতকা গৃহমেধিন:। ত্রিংশদাসীকমেকৈকং যান বিভর্তি যুধিষ্টির:॥ অপ্রতিগ্রাহিণাঞ্চৈব যতীনামূদ্ধরেতসাম। দশ চাপি সহস্রাণি সোহরমান্তে নরাধিপ:।। আনুশংশুমহকোশং সংবিভাগতথৈ চ। যশিলেতানি সর্বাণি সোহয়মাতে নরাধিপঃ॥ অন্ধান্ বৃদ্ধাংতথানাথান্ বালান রাষ্ট্রেয় তুর্গতান। বিভর্তি বিবিধান্ রাজা ধৃতিমান্ সত্যবিক্রম:॥ চারক:।। মভায়াং দেবিতা রাজ: ককো ক্রতে যুধিষ্ঠির:। ইন্দ্রপ্রস্থে নিবসতঃ সময়ে যস্য পার্থিবাঃ॥ আসন্ বলিভৃতঃ সর্কে সোহকুমাদ-ব্রন্তিমিচ্ছতি। পার্থিবাঃ পৃথিবীপালা ষদ্যাসন্ বশ্বর্তিনঃ॥ স্ববশে বিবশে রাজা পরেধামত বর্ত্ততে। প্রতাপ্য পৃথিবীং দর্কাং রশ্মিমানিব তেজদা॥ দোহয়ং রাজ্ঞো বিরাটস্য সভাত্থারো যুণিষ্ঠিরঃ। যমুপাসত রাজানঃ সভায়ায়বিভিঃ সহ।। তমুপাদীনমভান্তং পশু পাণ্ডব পাণ্ডবম্। সদসাং সমুপাদীনং প্রস্য প্রিরবাদিনম্। দৃষ্টা যুধিষ্ঠিরং শোকো ন বিশেৎ কমসংশয়ম্। অতদর্হং মহাপ্রাক্তং জীবিতার্থেহলুদংশ্রিতম্॥ দৃটা কস্য ন হঃখং স্যাদ্ধর্মাত্মানং ষ্ধিষ্টিরম। উপাত্তে আ সভায়াং যং কংআ বীর বত্তন্তরা॥ তমুপাসীনমপ্যক্তং পশ্য ভারত ভারতম্। এবং বছবিধৈছ্ থৈঃ পীডামানামনাথবং। শোক-সাগরমধ্যস্থাং কিং মাং ভীম ন প্রভাস ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং বিরাটপর্বাণ •কীচকবধে অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ।

## **ভনবিংশো**হপ্রা**র**ঃ

দ্রোপদ্যবাচ। ইদন্ত ছংখং কৌন্তের মমাসহং নিবোধ তং। ন মেহভ্যস্থরা কর্ত্তব্যা ছংখাদেতদ্রবীম্যহন্ ॥ স্থদকর্মণি হীনে জ্মস্মে ভরতর্বভ। ক্রবন্ বল্লবজাতীয়ং কস্য শোকং ন বর্জয়েঃ॥ স্থপকারং বিরাটস্য বল্লবং ছাং বিদ্রুজনাঃ। প্রেয়াস্থাং সমস্থাপ্তং ততো ছংখতরং হু কিম্ ॥ মন্

মহানসে সিদ্ধে বিরাটমূপতিইসে। ত্রুবাংণা বল্পবং স্থলক্ষণা সীদতি মে মনং ॥ यमा প্রস্তঃ সমাট্ তাং সংযোধন্নতি কুঞ্জরে:। হসস্তান্তঃপুরে নার্য্যো মন ज्विकटज मनः ॥ भौकृटेलम शिर्देश निःदेशतांशादत्र द्याधादन यता । देकटकशाः প্রেক্ষমাণারাং তদা মে কশ্মলো ভবেৎ।। তত উত্থায় কৈকেয়ী সর্বান্তা: প্রত্যভাষত। প্রেয়াঃ সম্থিতাশ্চাপি কৈকেয়ী তাঃ স্থিয়োহবদং॥ মামনবভাঙ্গীং কথালোপহতামিব। ত্মেহাৎ সংবাসজাদ্ধর্মাৎ শুচিম্মিতা। [একাস্তার্পিততাবেন বল্লবং চারুহাসিনি।] বোণ্যমানং মহাবীর্ব্যেরিয়ং সমন্ত্রশাচতি॥ কল্যাণরূপা সৈরন্ধী বল্লবশ্চাপি স্কলর:। স্ত্রীণাং চরিত্রং (চিত্তঞ্চ) তুত্তের্মং যুক্তরপৌ চ মে মতৌ॥ সৈরন্ধী প্রিয়-সংবাদা (সা) নিত্যং করুণদেবিনী (বাদিনী)! অস্মিন রাজকুলে চোভৌ जुनाकानिवांत्रित्नो॥ रेंि क्वांना वांकानि मा माः निजामण्डक्यः। ক্রশুন্তীং ( ক্র্ধান্তীং ) মাঞ্চ সংপ্রেক্ষ্য সমশন্তত মাং ছবি ॥ তব্দান্তপা ক্রবত্যান্ত योधिष्ठेतत मधा नांदर कीविजूम्<मटर। यः मरावासक्षार्यः मर्कारिक-সোহয়ং রাজ্ঞো বিরাটস্ত কন্তানাং নর্তকো ষোহতপ্রদমেরাআ। থাওবে জাতবেদসম্॥ সোহন্তঃপুরগতঃ পার্থ: কুপে-ছগ্নিরিব সংবৃতঃ। যন্মান্তর-মিত্রাণাং সদৈব পুরুষর্যভাৎ॥ স লোকপরিভূতেন বেশেনান্তে ধনঞ্জবঃ। ষশু জ্যাক্ষেপকঠিনো বাহু পরিবদলিভৌ ॥ স শঝ-পরিপর্ণাভ্যাং শোচনাত্তে ধনঞ্জয়ঃ॥ যস্ত জ্যাঘাতনির্ঘোষাৎ সমকম্পন্ত শত্রবঃ। স্ত্রিরো গীতস্বনং তম্ম মুদিতাঃ পর্যাপাসতে॥ কিরীটং স্ব্যাসকাশং ষম্ম মুর্জন্ত-শোভত। বেণীবিক্লতকেশাস্তঃ সোহয়মগ্র ধনপ্রয়ঃ॥ তং বেণীক্লতকেশাস্তং ভীমধৰানমৰ্জ্বন্। কন্তাপরিবৃতং দৃষ্টা ভীম সীদতি মে মন:॥ যশ্মিদ্বপ্রাণি দিব্যানি সমন্তানি মহাত্মনি। আধারঃ সর্কবিভানাং স ধারমতি ষক্ত রাজসহস্রাণি তেজসাপ্রতিমানি বৈ। সমরে নাভ্যবর্ত্তম্ভ বেলামিব মহো-দ্ধি: ॥ সোহয়ং রাজ্যে বিরাটস্থ কন্তানাং নর্ত্তকো যুবা। আত্তে বেশপ্রতিছ্র: কল্পানাং পরিচারকঃ॥ বশু শ্ব রথঘোষেণ সমকম্পত মেদিনী। সপর্বতিবনা ভীম সহস্থাবরজন্মা॥ যশ্মিন জাতে মহাভাগে কুন্তা: শোকো ব্যনশুত। স শোচয়তি মামল্য ভীমসেন তবাস্থকঃ ॥ ভৃষিতং তমলকারেঃ কুণ্ডলৈঃ পরি-হাটকৈ:। কমুপাণিং তমায়ান্তং দৃষ্ট। সীদতি মে মন:॥ বস্তু নান্তি সমো বীর্ষ্যে কন্চিতুর্ক্যাং ধহর্দ্ধর:। সোহত কন্তাপরিবৃতো পায়নাতে ধনঞ্জঃ॥

ধর্মে শৌর্য্যে চ সভ্যে চ জীবলোকশু সম্মতম্। স্ত্রীবেশ-বিকৃতং পার্থং দৃষ্টা সীদতি মে মন:॥ যদা ছেনং পরিবৃতং কল্পাভিদ্দেবরূপিণম্। প্রভিন্নমিব মাতকং পরিকীর্ণং করেণুভিঃ॥ মৎস্তমর্থপতিং পার্থং বিরাটং সমুপস্থিতম্। প্রভাষি তৃর্যুষ্ণান্তং দিশো নশুন্তি মে তদা ॥ নূন্মার্য্যা ন জানাতি কৃদ্ধং প্রাপ্তং थनक्षत्रम्। अकाजभव्यः दकोत्रवाः मधः वृत्र्जित्तिवम्॥ उथा पृष्ठी ववीत्राःमः স্হদেবং প্রবাং পতিম্। [ পোষু পোবেষ ] পোপালবেশমারান্তং পাণ্ডুভূতান্মি ভারত ॥ সহদেবকা বৃত্তানি চিন্তমন্তী পুন: পুন:। ন নিদ্রামভিগচ্ছামি ভীম-সেন কুতো রতিম্॥ ন বিন্দামি মহাবাহো সহদেবতা তৃত্বতম্। ব্যারেবং-বিধং তু:খং প্রাপ্ন রাৎ সভ্যবিক্রম:॥ দৃয়ামি ভরতশ্রেষ্ঠ দৃষ্টা ভে ভ্রাতরং श्चित्रम्। त्रांत्र् त्रात्रवनकानः स्टल्छनाजिनित्वनिजम्॥ मःत्रकः त्रकत्नथाः (गोशोनोनाः शूरतांशमम् । वितांष्ठेमिकिनमञ्जमे । खर्वि खतः ॥ महराप्तः হি বীরং মে নিত্যমার্য্যা প্রশংসতি। মহাভিজনসম্পন্ন: শীলবান্ বুত্তবানিতি॥ হ্রীনিবেবো মধুরবাগ্ ধার্মিকশ্চ প্রিয়শ্চ মে। স তেখরণ্যেয়ু বোঢ়ব্যো ৰাজ্ঞদেনি ক্ষপাৰ্পি। স্কুমারণ্ট শূরণ্ট রাজানঞ্চাপ্যত্ত্তঃ। জ্যেষ্ঠানু-ষায়িনমিমং স্বয়ং পাঞ্চালি ভোজয়ে। ইত্যুবাচ হি মাং কুন্তী রুদতী পুত্র-গৃদ্ধিনী। প্রব্রজ্ঞং (প্রয়চ্ছঞ্জং ) মহারণ্যং তং ( যং ) পরিষ্ক্র্য তিষ্ঠতী ॥ তং দৃষ্টা ব্যাপৃতং গোষু বৎসচর্মক্ষপাশয়ম্। সহদেবং যুধাং শ্রেষ্ঠং কিং হ জীবামি পাণ্ডব। যন্ত্রিভির্নিভ্যদম্পলো রূপেণাত্মেণ মেধ্যা। সোহখবদ্ধো বিরাটক্ত পশ্য কালবিপর্যায়ম্। অভ্যকীর্যান্ত বৃন্দানি দামগ্রন্থিদীক্ষতাম্। বিনয়ন্তং জ্বেনাখান্মহারাজ্য পশুতঃ॥ অপশুমেনং শ্রীমন্তং মৎস্তং ভাজিফুম্ত্রমন্। বিরাটমুপতিষ্ঠন্তং দর্শগন্তঞ্চ বাজিনঃ॥ কিন্নু মাং মন্ত্রেস পার্থ স্থাথিতেতি পর-স্তপ। এবং তু: গশতাবিষ্টাং যুধিষ্টিরনিমিত্তত: ॥ স্বত: প্রতিবিশিষ্টানি তুঃখান্তকানি ভারত। বর্তত্তে মন্নি কৌত্তের বক্ষ্যানি শৃণু ভাক্তপি॥ বৃন্ধান্ত ঙ্জিরমাণের অংথানি বিবিধারতে। শোষয়ন্তি শরীরং মে কিন্ধু অংথমতংপরম্॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্ব্বণি কীচকবধে জৌপদীবাক্যে উনবিংশোহধ্যারঃ।

## বিংশোহগায়ঃ

· एको शक्का वाहर देन इस्ति दिस्ति क क्रिकी साम्य देश नि व में शिक्ष ক্লেফারা অকণ্ঠত কারণাং ॥ পর্ত মে বিক্রিরাং তীব্রাং রাজপুত্রাঃ পরন্তপ। আদে কালমুপাসীনা সর্মং তৃ:খং কিলান্তবং। অনি গা কিল মর্ত্তানামর্থ-मिक्तिक्रीवरत्रो। ইতি কৃষা প্রতীকামি ভর্জুণামুদমং পুনঃ ॥ চক্রবৎ পরিবর্ততম্ভ হুর্থান্চ (কিল মর্ত্ত্যানামর্থান্চ) ব্যসনানি চ। ইতি কৃত্বা প্রতীক্ষামি ভর্গামূদয়ং :পুন:।। য এব হেতুর্ভবতি পুরুষত জয়াবহঃ। পরাক্সমে দ হেতু: স্তাদিতি চ প্রতিপালরে ৷ কিং মাং ন প্রতিজানীবে ভীমসেন মৃতামিব ৷ দত্তা বাচন্তি পুরুষা হত্বা বংগ্রন্তি চাপরে। পাতরিতা চ পাতাত্তে পরৈরিতি চ মে শ্রুত্ম। ন দৈবস্থাতিভারোহতি ন দৈবস্থ নিবর্ত্তন্ম। ইতি চাপ্যাগমং ভূরো দৈবক প্রতিপালয়ে॥ স্থিতং পূর্মং জলং যত্ত পুনন্তত্তৈর তিষ্ঠতি। ইভি পর্যাগ্রমিক্স্তী প্রতীকাম্যুদয়ং পুন:॥ দৈবেন কিল মন্তার্থ: স্থনীতোছপি বিপশ্ততে। দৈবস্থাগমনে ৰত্নকেন কাৰ্য্যো বিজ্ঞানতা ॥ যভুমে কথিতস্থাস্ত বচন ত প্রয়োজনম্। পৃহ্ন মাং ঘুঃ ধিতাং তর্মপৃষ্ঠা চ এবীমি তে॥ মহিবী পাওুপুত্রাণাং তৃহিতা ক্রপদক্ত চ। ইমামবহাং সংপ্রাপ্তা কা মদকা বিকীবিবেৎ ॥ कूजन পরি ज्जन मर्कान পাঞ্চালানপি ভারত। পাঞ্চের্যাংশ্চ সংপ্রাপ্তো মম ক্লেশা হরিক্ষম । প্রাকৃতিঃ বঙ্গৈঃ পুরৈর হুতিঃ পরিবারিতা। এবং সমুদিতা नां को ज्ञा कः विछा छटवर ॥ नृनः हि वानश शाकूर्यश देन विखिन्नः कुछम्। যক্ত প্রদাদাদ্নীতং (প্রমাদাদ্নীতং) প্রাপ্তামি ভরতর্বভ ৷ বর্ণাবকাশ-মপি মে পশ্য পাণ্ডব যাদৃশন্। তাদৃশো মে ন তত্তাদীল হুঃথে পরমকে তদা॥ खत्मय जोय कानीत्य बत्य शार्व स्थः शूत्रा । माहः नामी बमाशवा न मालियवना लट । नार्टनिव कमरः मरक यदा शार्ट्स धनक्षतः । **छोमधना महावाहतात्य छन्न** ইবানল:। অৰক্যা বেদিতুং পাৰ্থ প্ৰাণিনাং বৈ গতিন হৈ:। বিনিপাতমিমং মতে যুমাকমবিচিস্তিতম্ ॥ যদ্যা মম সূপ-(মুখ) প্রেকা যুর্মিশ্রসমা: দলা। সা প্রেক রথ (মৃধ) মকাদামবরাণাং বরা সূতী। পশু পাণ্ডব মেছবস্থাং বধা নাহ মি বৈ তথা। যুখাত্ম ধ্রিয়মাণেষ্ পশু কাল্ড পর্যায়ন্ ॥ যন্তাঃ সাগরপর্যন্তা পুণিধী বণবর্ত্তনী। আসাৎ সাহত স্থবেক্ষারা ভীতামি বণবর্ত্তনী॥ .পুর: বরা হাসন্ পৃষ্ঠত ভাত্যালিন:। সাহমভ স্থলেঞালা: পুর: शामिनी ॥ देन छ ए: थः दकोदस्त्र ममानकः मिद्रांध ७९। न या जांकु पत्रः পিংবে গাতোবর্তনমাত্মন:।। অক্তত্র কুন্তা ভদ্রন্তে সা পিনম্মন্ত চন্দনম্। প্রভ

কোন্তের পাণী মে নৈবং বৌ ভবতঃ পুরা॥ ইত্যস্য দর্শরামাস কিণবছে। করাবুভৌ ॥ বিভেমি কৃত্যা নৈবাহং বুমাকং বা কদাচন। সাভাগ্রতো বিরাটস্য ভীতা তিষ্ঠামি কিলরী ॥ কিনু বক্যতি সম্রাড্মাং বর্ণকঃ স্কৃতো ন বা। নান্তপিটং হি মংস্যা চলনং কিল রোচতে ॥

বৈশপায়ন উবাচ। সা কীর্ত্তয়ন্তী ছংখানি ভীমদেনস্য ভারত। করোদ শনকৈ: রুঞা ভীমদেনমূদীকতী ॥ সা বাপাকুলয়া বাচা নিংখসভী পুন: পুন:। হাদয়ং ভীমদেনস্য ঘটুয়ন্তীদমত্রবীৎ ॥

ক্ৰৌপত্যবাচ। নাল্লং ক্বতং মন্না ভীম দেবানাং বিপ্ৰিন্নং পুরা। অভাগ্যা ৰত্ৰ জীবামি মৰ্জব্যে সতি পাণ্ডৰ॥

বৈশপান্ত্ৰন উবাচ। ততন্ত্ৰদ্যা: করে ত্ৰেন কিণবন্তে বুকোদর:। মুখ-মানীর দ্রোপতা করে।দ পরবীরহা॥ তে গৃহীবা তু কৌল্ডেরো বাষ্প্রস্থ্য বীর্যবান্। ততঃ পরমন্থার্ত ইদং বচনমত্রবীৎ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাগ্স্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বাণ কীচক্ষবধে জ্রৌপদীনিবেদনে বিংশোহধ্যারঃ।

# একবিংশোহধ্যায়ঃ

ভীমদেন উবাচ। ধিগন্ত মে বাছবলং গাণ্ডীবং ফান্তনস্য চ। বজে রক্তো প্রাভ্রাপানী ক চিনিগ্রেছা॥ সভারান্ত বিরাটস্য করোমি কদনং মহং। তত্র মে কারণং ভাতি কোন্তেরো যং প্রতীক্ষতে॥ অথবা কীচকস্যাহংপ্রোথমামি পরা শির:। এবর্গ্যমদমন্ত্রস্য ক্রীড়লিব মহাদিপ:॥ অপশ্রং বাল ক্ষেণ্ড কীচকেন পদা হতাম্। তদৈবাহং চিকীর্বামি মৎস্যানাং কদনং মহং॥ তত্র মাং ধর্মরাজন্ত কটাক্ষেণ স্থবারমং। তদহং তস্য বিজ্ঞান্ন স্থিত এবান্মি ভামিনি॥ যচ্চ রাষ্ট্রাৎ প্রচ্যবনং ক্রনামবধন্দ য:। সুবোধনক্ত কর্ণস্য শকুনে: সৌবলক্ষ চ॥ তৃঃশাসনক্ত পাপক্ত মন্মান ক্তং শির:। তারে দহতি গাত্রাণি হাদি শল্যমিবার্শিতম্॥ মা ধর্মং জহি সুশ্রোণি কেলাগং জহি সুমধ্যমে। ইমঞ্চ সম্পালন্তং অভাে রাজা মুখিন্টির:॥ শৃণ্রাদ্ যদি কল্যাণি ক্রংমং জহাৎ স জীবিতম্॥ ধনঞ্জন্তো বা সুন্ধোণি যমে বা তৃত্যমধ্যমে। লোকান্তরগতেন্তের্ নাহং শক্যেমি জীবিত্স্॥ প্রা

সুক্তা শার্যাতী ভার্মবং চ্যাবনং বনে। বন্ধীকভূতং শাম্যস্কমন্থপন্থত ভামিনী॥
নারামণী চেন্দ্রনেনা রূপেণ বদি তে শ্রুতা। পতিমন্বচরৎ বৃদ্ধং পূরা বর্ষস্থানিশ্।
ছহিতা জনকত্যাপি বৈদেহী বদি তে শ্রুতা। পতিমন্বচরৎ সীতা মহারণ্যনিবাসিনম্॥ রক্ষ্যা নিগ্রহং প্রাপ্য রামস্ত মহিন্বী প্রিয়া। ক্লিপ্রমানাপি সুপ্রোণী
রামমেবানপন্থত॥ লোপামুদ্রা তথা ভীক্র বরোরপসমন্বিতা। অগন্ত্যমন্বিয়াদ্রিত্বা
কামান্ সর্বানমান্থবান্॥ ছ্যামৎসেনস্বতং বীরং সত্যবস্তমনিন্দিতা। সাবিত্ত্যস্কুচ্চাবৈকা ব্যলোকং মনন্বিনী॥ ব্রেতাঃ কীর্ত্তিতা নার্য্যো রূপবত্যঃ
পতিত্রভাঃ। তথা ত্বমপি কল্যাণি সর্ব্যঃ সমৃদিতা গুণ্রঃ রাজ্ঞা ভবিয়িদি॥
কালস্বং মাসমধ্যদ্রসন্মিতম্। পূর্বে ত্রেরাদ্রশে বর্বে রাজ্ঞাং রাজ্ঞা ভবিয়িদি॥

জৌপত্যবাচ। আর্বন্ধৈতন্ময়া ভীম কৃতং বাষ্পপ্রমোচনম্। অপারয়স্ত্যা ছঃখানি ন রাজানমুপালভে। কিমুক্তেন ব্যতীতেন ভীমদেন মহাবল। প্রভাগস্থিতকালস্য কার্য্যস্যানস্তরো ভব॥ মমেহ ভীম কৈকেরী রূপাভি-ভবশঙ্করা। নিত্যমূহিকতে রাজা কথরেয়াদিমামিতি॥ তদ্যা বিদিত্বা তং ভাবং স্বয়ঞ্চানুতদর্শন:। কীচকোহয়ং স্মৃত্র্ন্তাত্মা সদা প্রার্থয়তে হি মাম্। ভমহং কুপিতা ভীম পুন: কোপং নিশম্য (নিয়ম্য) চ। অব্রবং কামসংমৃঢ়-মাস্মানং রক্ষ কীচক॥ গন্ধর্কাণামহং ভার্য্যা পঞ্চানাং মহিষী প্রিয়া। তে ত্বাং নিহ্মু: কুপিতা: শুরা: সাহসকারিণম্॥ এবমুক্ত: সুতুষ্টাত্মা কীচক: প্রত্যুবাচ হ। নাহং বিভেমি সৈরন্ধি গন্ধর্কাণাং শুচিন্মিতে॥ শতং সহঅমপি বা গন্ধৰ্কাণামহং রণে। সমাগতং হনিয়ামি বং ভীক কুক মে ক্ষণম।। ইত্যুক্তে চাত্রবং স্তং কামাতুরমহং পুনঃ। ন বং প্রতিবলস্তেষাং গন্ধবাণাং বশস্থিনাম্। ধর্মে স্থিতান্মি সততং কুলশীলসমন্বিতা। নেচ্ছামি কঞ্চিদ্বধ্যন্তঃ তেন জীবসি কীচক॥ এবমূক্তঃ স হুষ্টাত্মা প্রাহসৎ স্বনবন্তদা। অধু মাং তত্ত্ব কৈকেয়ী প্ৰেষয়ৎ প্ৰণয়েন তু॥ তেনৈব চোদিতা পূৰ্বং ভাতৃপ্রিম্বচিকীর্ধয়। সুরামানম কল্যাণি কীচকল্ম নিবেশনাৎ॥ স্তপুত্রস্ত মাং দৃষ্টা মহৎ সাত্তমবর্ত্তয়ৎ। সাত্তে প্রতিহতে কুদ্ধ: পরামর্থমনাভবৎ॥ বিদিত্বা তশু স্কল্পং কীচকশু তুরাত্মনঃ। তথাহং রাজ্পরণং জবেনৈব প্রধাবিতা॥ সন্দর্শনে তুমাং রাজ্ঞ: স্তপুত্র: পরাম্বৎ। পাতি গ্রিতা তু তুষ্টাত্মা পদাহং তেন তাড়িতা। প্রেক্ষতে স্ম বিরাটস্ত কল্কন্ট বহবো জনা:। ৰুখিন: পীঠমৰ্দা[জ্ব]ক্ত হন্ত্যাংরাহাক নৈগমা: ॥ উপালজো ময়া রাজা ক্ষশাপি পুন: পুন:। ততো ন বারিতো রাঞান তত্ত বিনর: রুড:।।

বেগ্ছয়ং রাজ্ঞে। বিরাটশু কীচকো নাম সার্থি:। ত্যক্তধর্মা নৃশংসক্ত তর্মী সমত: প্রিয়:॥ শ্রোহভিমানী পাপাত্মা সর্কার্থের চ ম্ধ্বান্। দারামর্বী মহাভাগ লভতেহর্থান্ বহুনপি ॥ আহরেদপি বিত্তানি পরেষাং ক্রোশতামপি। ন তিষ্ঠতি স্ম সন্মার্গে ন চ ধর্মং বৃভ্যতি ॥ পাপাত্মা পাপভাব-চ কামরাগ-বশাছ্না:। অবিনীতশ্চ হুষ্টাত্মা প্রত্যাধ্যাতঃ পুন: পুন:॥ দর্শনে দর্শনে হক্ষাদ্বথা জহাঞ্জীবিতম্। তদ্ধশে যতমানানাং মহান্ধৰ্মোন শিয়তি॥ সময়ং রক্ষ্যমাণানাং ভার্য্যা বো ন ভবিষ্যতি। ভার্য্যায়াং রক্ষ্যমাণায়াং প্রস্তা ভবতি রক্ষিতা। প্রজায়াং রক্ষ্যমাণায়ামাত্মা ভবতি রক্ষিত:। আত্মা হি জায়তে তন্তাং তেন জায়াং বিহুর্ব্ধা:॥ ভর্তা তু ভার্যায়া রক্ষ্য: কথং জায়ান্মমোদরে। ব্দতাং কর্থশ্মাংশ্চ ব্রাহ্মণানামিতি শ্রুতঃ । কব্রিয়স্ত সদা ধর্মো নাতঃ শক্রনিবর্হণাৎ। পশ্যতো ধর্মরাজস্ত কীচকো মাং পদাবধীৎ। তব চৈব সমক্ষং বৈ ভীমসেন মহাবল। অন্না হৃহং পরিত্রাতা তত্মাদেবারাজ্জটা-সুরাধ। ক্ষয়দ্রথং তথৈব স্বমকৈষীত্র তিভিঃ সহ। জ্ঞহীমমপি পাপিষ্ঠং ষোহয়ং মামবমস্ততে । কীচকো রাজবাল্লভ্যাচ্ছোকরুমম ভারত। তমেবং কামসন্মত্তং ভিন্ধি কুন্তমিবাশ্মনি॥ যো নিমিত্তমনর্থানাং বহুনাং মম ভারত। তঞ্চেজীবস্তমাদিত্যঃ প্রাতরভ্যুদ্ধিব্যতি॥ বিষমালোড্য পাশ্রামি মা কী ক ৰশং গ্ৰম। শ্ৰেয়ো হি মরণং মহুং ভীমদেন তবাগ্ৰত:॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ইত্যুক্তা প্রাক্রদৎ রুফা ভীমস্তোর:সমাজিতা। ভীমশ্চ তাং পরিষজ্ঞা মহৎ সান্ধং প্রযুক্তা চ॥ আখাসরিঁথা বহুশো ভূশমার্তাং স্মধ্যমাম্। হেত্-ভন্ধার্থসংযুক্তৈর্বচোভিক্র পদার্থায়মাম্। প্রযুক্তা বদনং তস্তাঃ পাণিনাশ্রসমাকুলম্। কীচকং মনসাগচ্ছৎ স্কণী পরিসংলিছন্। উবাচ চৈনাং ছঃথার্তাং ভীমঃ ক্রোধসমন্থিতঃ॥

ইতি শীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্কণি কীচকবধে ডৌপদীদাস্তনে একবিংশোহধ্যারঃ।

## দ্বাবিংশোহপ্রায়ঃ

ভীমসেন উবাচ। তথা ভদ্রে করিয়ামি যথা বং ভীক ভাষসে। অভ তং স্থারিয়ামি কীচকং সহবাদ্ধবম্॥ অভাঃ প্রাণোধে শর্ম্যাঃ কুক্ষানেন সম্পত্ম। তঃখং শোকঞ্চ নির্দ্ধ রাজ্যেনি শুচিশ্বিতে॥ বৈধা নর্জনশালেহ মৎশ্বরাজেন কারিতা। দিবাত ক্যা নৃত্যন্তি রাজে বান্তি ব্ধাগৃহ্ম্॥ তত্তান্তি শরনং দিব্যং দৃঢ়াকং স্থাতিষ্টিতম্। তত্তাশ্ত দর্শরিয়ামি পূর্বব্যেতান্ পিতামহান্॥ বথা চ খাং ন পশ্মেয়্ কুর্বাণাং তত্ত সংবিদম্। কুর্গ্যান্তথা সংকল্যাণি বথা সন্ধিহিতো ভবেৎ॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। তথা তে কথিয়তা তু বাল্সমূৎক্জ্য তু:খিতে । রাজি-শেষং তমত্যগ্রং ধারয়ামাসত্র্লা ॥ তন্ত্রাং রাজ্যাং ব্যতীভারাং প্রাতক্ষণায় কীচকঃ। গত্তা রাজ্জ্বলারৈব জৌপদীমিদমত্রবীৎ ॥ সভারাং পশুতো রাজ্জঃ পাতিয়িত্বা পদাহনম্। ন চৈবালভদে ত্রাণমভিপন্না বলীয়সা ॥ প্রবাদেনেহ মৎস্থানাং রাজ্ঞা নায়ায়ম্চ্যতে । অহমেব হি মৎস্থানাং রাজ্ঞা বৈ বাহিনী-পিঃ ॥ সা [মাং ] স্থং প্রতিপত্তম্ব দাসো ভীক্র ভবামি তে । অহ্নায় [আজ্জয় ] তব স্প্রেণাণি শতং নিজং দদামাহম্ ॥ দাসীশতঞ্চ তে দত্যাং দাসানামপি চাপরম্ । রথঞ্চাশ্বতরীযুক্তমন্ত্ব নৌ ভীক্র সঙ্গমঃ ॥

দ্রৌপত্যবাচ। এবং মে সময়ত্বত প্রতিপত্তম কীচক। ন স্বাং স্থা ৰা লাতা বা কানীয়াৎ সঙ্গতং ময়া॥ অববোধাদ্ধি ভীতাম্মি পদ্ধর্কাণাং ষশবিনাম্। এবং মে প্রতিফানীহি ততোহহং বশগা তব॥

কীচক উবাচ। এবমেতৎ কবিয়ামি যথা সুশ্রোণি ভাষসে। একো ভদ্রে গমিয়ামি শৃষ্ঠমাবস্থং তব ॥ সমাগমার্থং রস্তোক ত্রা মদনমোহিতঃ । মধা ত্বাং নাবভোৎশুস্তি গন্ধর্কাঃ সুর্য্যবর্চসঃ ॥

জৌপত্যবাচ। যদেত এই বাগারং মংস্তরাজেন কারিতম্। দিবাত কন্তা নৃত্যন্তি রাজে বান্তি বর্থাগৃহম্॥ তমিত্রে তত্র গচ্ছেবা গন্ধবিস্থিন জানতে! তত্র দোষঃ পরিহতো ভবিশ্বতি ন সংশয়ঃ॥

বৈশশ্পায়ন উবাচ। তমর্থমভিজয়ন্ত্যাঃ রুঞ্চায়াঃ কীচকেন হি। দিবসার্থং সমভবন্মাসেনৈব সমং নৃপ॥ ততঃ সা ভীমসেনস্ত তমর্থং প্রত্যবেদয়ৎ। কীচকোইথ গৃহং গ্রা ভূশং হর্বসমন্তিঃ॥ সৈরন্ধারিপিণং মৃত্যুং মৃদ্তায়াব-বৃদ্ধবান্॥ গন্ধাভরণমাল্যের ব্যাসক্তঃ স বিশেষতঃ। অলঞ্চক্রে তদাআানং সম্বরং কামমোহিতঃ॥ তস্ত তৎ কুর্বভঃ কর্ম কালো দীর্ঘ ইবাভবং। অস্কৃতিস্তয়তশাপি তামেবায়তলোচনাম্। আসীদভাধিকা চাপি প্রীঃ প্রিয়ং প্রমৃক্ষতঃ। নির্বাণকালে দীপস্ত বর্তীমিব দিধক্ষতঃ। রুতসংপ্রত্যরন্তস্তাঃ কীচকঃ কামমোহিতঃ। নাজানান্দিবসং যাতঃ চিন্তয়ানঃ সমাগমম্॥ তত্ত জৌপদী গ্রা তদা তীমং মহানসে। উপাতিষ্ঠত কল্যাণী কৌরব্যং

পতিমন্তিকে ॥ তব্বাচ স্থকেশালা কীচকল্য রা ক্লড় । সকমো নর্থনাগারে বথাবোচঃ পরন্তপ ॥ শৃন্তং স নর্থনাগারমাগমিয়াতি কীচকঃ । একো নিশি মহাবাহো কীচকং তং নিস্পর ॥ তং স্তপুত্রং কৌন্তের কীচকং মদদর্শিত্ম । গ্রা তর্মর্থনাগারং নিজীবং ক্র পাণ্ডব ॥ দর্শাচ্চ স্তপুত্রোহসৌ গন্ধর্মান-বমন্ততে । তং বং প্রহরতাং শ্রেষ্ঠ কলং নাগ ইবোদ্ধর ॥ অশ্রু তংথাত্তিভ্রায়া মম মার্জির ভারত । আত্মনশ্রেক ভ্রারা মম মার্জির ভারত । আত্মনশ্রেক ভ্রারা মম মার্জির ভারত । আত্মনশ্রেক ভ্রারা স্বা মানং ক্লশ্র চ ॥

ভাম উবাচ। এবং করোমাহং ভদ্রে বথা বং ভীরু ভাষসে। স্বাগতং তে বরারোহে যমাং বেদয়সে প্রিরম্। ন হলং কঞ্চিদিছামি সহারং বরবর্ণিনি। যা মে প্রীতিত্তরাখ্যাতা কাচকশু সমাগমে। হবা হিড়িছং সা প্রীতিমনাসাঁবরবর্ণিনি। সত্যং প্রাতৃংশ্চ ধর্মঞ্চ পুরস্কৃতা ব্রবীমি তে। কাচকং নিহনিয়ানি বৃত্তং দেবপতির্যথা। তং গহরের প্রকাশে বা পোথয়িয়ামি কীচকম্। অথ চেদপি বোৎশুন্তি হিংল্রে মৎশ্রানপি গ্রুবম্। ততো ত্র্যোধনং হবা প্রতিপৎশ্রে বস্করাম্। কামং মৎশ্রম্পান্তাং হি কৃত্তীপুল্রো যুধিষ্ঠিরঃ।

ক্রৌপত্যবাচ। যথা ন সংভ্যজেথান্তং সভ্যং বৈ মৎক্বতে বিভো। নিগুঢ়ক্তং তথা (মহা ) বীর কীচকং তং নিস্ফায়॥

ভীমদেন উবাচ। এবমেতৎ করিয়ামি বথা বং ভীর ভাবসে। **অন্নতং** ক্ষেয়ামি কীচকং সহ বান্ধবৈঃ । অদৃশুমানস্তস্থাত তমন্বিস্থামনিন্দিতে। নাগো বিন্ধমিবাক্রম্য পোথরিয়াম্যহং শিরঃ। অগভ্যামিচ্ছতত্ত্বত কীচকক্ষ ত্রাক্সনঃ॥

বৈশন্দায়ন উবাচ। ভীমোহথ প্রথমং গন্ধা রাত্রো ছব্ধ উপাবিশং।
মৃগং হরিরিবাদৃশ্য: প্রত্যাকাজ্জত কীচকন্ ॥ কীচকণ্ডাপ্যলঙ্ক্ত্য বথাকামমুপাগমং। তাং বেলাং নর্ত্তনাগারং পাঞ্চালীসক্ষাশয়া ॥ মন্তমানং স সঙ্কেতমাগারং প্রাবিশন্ততঃ। প্রবিশ্ত চ স তবেশা তমসা সংবৃতং মহং ॥ পূর্ব্বাগতং
গতন্ত্র ভীমমপ্রতিমৌকসন্ । একান্তাবস্থিতকৈনমাসসাদ স্বত্ন্সতিঃ ॥ শয়ানং
শয়নে তত্র স্তপ্তঃ পরামূষং। [পতসং পাবকং দীপ্তং সিংহং ক্র্যুপশুর্থণা]
আজ্জল্যমানং কোপেন ক্রফাধর্ণজেন হ ॥ উপসক্ষয় চৈবৈনং কীচকঃ কামমোহিতঃ। হর্ষোয়থিতচিন্তান্মা শয়মানোহভ্যভাবত ॥ প্রাপিতন্তে ময়া
বিত্তং বছরপমনস্তকন্। বংকৃতং ধনরত্বাত্যং দাসীশতপরিচ্ছদন্ ॥ রপলাবণ্যমুক্তাভির্বৃত্তীভিরলক্ক্তন্ । গৃহং চান্তঃপুরং সুক্র ক্রীম্বারতিবিরাজিতন্ ॥ তৎ

সর্বং তাং সম্দিশ্য সহসা সম্পাগতঃ। অকমানাং প্রশংসন্তি সদা গৃহগতাঃ
স্থিয়ঃ॥ স্থাসা দর্শনীয়ণ্ড নাজোংতি তাদৃশঃ পুমান্॥

ভীমসেন উবাচ। দিট্যা তং দর্শনীয়শ্চ দিষ্ট্যাত্মানং প্রশংসসি। ঈদৃশন্ত দ্বয়া স্পর্শঃ স্পৃষ্টপূর্ব্ধোন কর্হিচিৎ॥ স্পর্শং বেৎসি বিদগ্ধন্তং কামধর্মবিচক্ষণঃ। স্বীণাং প্রীতিকরো নাক্তব্যমঃ পুরুষভিহ॥

বৈশম্পান্তন উবাচ। ইত্যুক্তা তং মহাবাছভীমো ভীমপরাক্রম:। সহ-সোৎপত্য কৌন্তের: প্রহক্ষোবাচ কীচকম্। অত আং ভগিনী পাপং রুম্বমাণং ময়। ভূবি। দ্রক্ষ্যতেহজিপ্রতীকাশং সিংহেনেব মহাবিপম্। নিরাবাধা স্বয়ি হতে দৈরদ্ধী বিচরিয়তি। স্থমেব চরিয়তি দৈরদ্ধা: পতয়: সদা॥ ভতে। জগ্রাহ কেশেষু মাল্যবৎস্থ মহাবলঃ। স কেশেষু পরাষ্টো বলেন বলিনাং বর:। আক্ষিপ্য কেশান বেগেন বাহেবার্জগ্রাহ পাণ্ডবম্॥ বাছ্যুদ্ধং তরোরাসাৎ ক্রকরোন রিসিংহরো:। বসস্তে বাসিতাহেতোর লবদগঞ্জারিব॥ কীচকানাঞ্ মুখ্যক্ত নরাণাম্ত্রমক্ত চ। অব্যোক্তমভিসংরকৌ পরস্পার-करिश्वित्।। বালিস্থাীবয়োর্রাত্রোঃ পুরেব কপিসিংহয়ো: ৷ ততঃ সমৃত্তম্য ভূজো পঞ্চনীর্বাবিবোরগো। নথদংখ্রাভিরস্তোহন্তং জন্নতুং ক্রোধম্চ্ছিতো। বেগেনাভিহতো ভীমঃ কীচকেন বলীয়দা। দ্বিপ্রপ্রতিজ্ঞঃ দ রণে পদার চলিতঃ পদম। তাবতোক্তং সমালিক প্রকর্যন্তা পরস্পরম্। উভাবপি প্রকাশেতে প্রবৃদ্ধে বুষ ভাবিব ॥ তয়োর্হ্যাদীৎ স্বভূম্ন: সম্প্রহার: স্থলারুণ:। নধদংষ্ট্রায়ুধ্বতো ব্যাদ্রয়োরিব দৃপ্তরো: । অভিপত্যাথ বাহুভ্যাং প্রত্যগৃহাদ-মর্বিতঃ। মাতক ইব মাতকং প্রভিল্করটামুধনু॥ স চাপ্যেনং তদা ভীমঃ প্রতিজ্ঞাহ বীর্যাবান্। ভমাকিপৎ কীচকোহও বলেন বলিনাং বর:॥ তম্বোভূ অবিনিপোবাত্তমোব লিনোগুলা। শব্দ: সমতবদ্বোরো বেগ্ন্ফোট-সমো যুধি॥ অবৈশন। ক্ষিপ্য বলাদ্গৃহমধ্যে বৃক্ষোদর:। ধ্নয়ামাস বেগেন ৰায়ুশ্চও ইব ক্ৰমন্॥ ভামেন চ পরামৃষ্টো তুর্বলো বলিনা রণে। ব্যকম্পত ষণা-প্রাণং বিচকর্ষ চ পাশুবম ॥ ঈষদাকলিভঞ্চাপি ক্রোধাচ্চল[ ক্রভ ]পদে স্থিতম্। कीচকো বলব।ন্ ভীমং **কাহ**ভ্যামাক্ষিপভূবি । পাতিতো ভূবি ভীমন্ত কীচকেন বলীয়দা। উৎপপাতাথ বেগেন দশুপাণিরিবাস্তকঃ। স্পর্দ্ধয়া চ বলোন্সভৌ ভাবুভৌ স্তপাশুবৌ। নিশীবে পর্য্যকরেতাং বলিনো নির্জ্জনে স্থলে॥। ততত্ত্তবনশ্ৰেষ্ঠং প্ৰাকম্পত মৃত্মুহি:। বলবচাপি সংকুদাবভোৎস্থং [ প্ৰতি-পৰ্কত:] ভাবপৰ্কতাম্॥ তলাভ্যাং স তু ভীমেন বক্ষ ভিহতো বলী।

কীচকো রোষসন্তপ্ত: পদার চলি দ: পদম্ ॥ স মৃত্তিস্ত তবেগং সহিতা ভূবি হু:সহম। বলাদহীয়ত তদা স্ততো ভীমবলাৰ্দিত:। তং হীয়মানং বিজ্ঞায় ভীমদেনো মহাবল:। বক্ষস্থানীয় বেগেন মমকৈনং বিচেতসম্।। ক্রোধা-বিষ্টো বিনিশ্বস্ত পুনশ্চিনং বুকোদর:। জগ্রাহ জয়তাং শ্রেষ্ঠ: কেশেবের তদা ভূশন্। গৃহীয়াকীচকংভীমো বিরুরাব মহাবল:। শার্দি,ল: পিশিতাকাজ্জী গৃহীত্বের মহামুগম্॥ তত এনং পরিশ্রাস্তমুপলভ্য বুকোদর:। বো ্রুয়ামাস বাহুভ্যাং পশুং রস্নয়া যথা॥ নদস্তঞ্চ মহানাদং ভিন্নভেরীসমন্বন্ম্। লাময়ামাস স্থচিরং বিক্ষুরস্তমচেতসম্।। প্রগৃহ তরসা দোর্ভ্যাং কণ্ঠং তস্ত বুকোদর:। অপীভূয়ত কৃষ্ণায়ান্তদা কোপোপশাস্তয়ে॥ অথ তং ভগ্নসর্বাস্থং ব্যাবিদ্ধনম্বনাম্বরম্। আক্রম্য চ কটাদেশে জামুনা কীচকাধমম্॥ অপীড়য়ত বাছ ভ্যাং পশুমারমমারমং॥ তং বিধীদন্তমাজ্ঞায় কীচকং পাণ্ডুনন্দন:। ভূতবে बामग्रामान वाकारक्षममूनाह इ॥ अछाइमन्रत्ना ज्ञा बाजूर्जारापशातिनम्। শাস্তিং লকোংশ্মি পরমাং হত্তা দৈরদ্ধি কণ্টকম্॥ ইত্যেবমূকা পুরুষপ্রবীরত্তং কীচকং ক্রোধ-সরাগনেত্র:। অস্তবেস্থাভরণক্রস্তমৃদ্রাস্তনেত্রং ব্যস্থমৃৎসমর্জ্জ ॥ নিম্পিয় পাণিনা পাণিং সন্দটোষ্ঠপুটো বলী। সমাক্রম্য চ সংক্র্দো বলেন বলিনাং বরঃ।: [ অভ্যহননাহাবাত্তঃ পাদাষ্ঠীনৈন্ত দারুণে: ॥] তক্ত পাদৌ চ পাণী চ শিরো গ্রীবাঞ্চ সর্বন:। কাষে প্রবেশয়ামাস পশোরিব পিনা**কণ্ড**ক্॥ তং সম্ব্রথিতস্ক্রাক্সং মাংস্পিত্তোপমং কৃত্র্। কৃষ্ণায়া দুর্শুয়ামাস ভীমসেনো মহাবল:॥ উবাচ চ মহাতেজা দ্রৌপদীং বোষিতাং বরাম্। পশ্তৈনমেছি পাঞ্চালি কামুকোহরং ধ্বাকৃত:॥ এবমুকা মহাতেজা ভীমো ভীমপরাক্রম:। পাদেন পীড়য়ামাস তক্ত কায়ং হুৱাত্মনঃ॥ ততোহগ্নিং তত্ত্ব প্ৰজ্ঞাল্য দৰ্শবিষা চ कीठकम्। পाक्षानीः म जना वीत्र हेनः वहनमववी९॥ श्रार्थमस्डि ऋरकभारङ ষে বাং গুণসম্মিতাম্। এবং তে ভীক্ষ বধ্যন্তে কীচক: শোভতে মধা॥ তৎ ক্ববা তৃষ্ণরং কর্ম ক্লফারা: প্রিরমূত্রমন্। তথা স কীচকং হবা গবা রোবক্ত বৈ শমন্। আমন্ত্র জৌপনীং কৃষ্ণাং কিপ্রমায়ান্মহানসম্। কীচকং ঘাতরিছা চ ষোবিতাং বরা। প্রস্তুটা গতসন্তাপা সভাপালাহবাচ হ॥ কীচকোহয়ং হতঃ শেতে গন্ধৰ্কিঃ পতিভিৰ্মম। পরস্বীকামসম্মতঃ সমাগচ্ছত ভদ্ধুত্বা ভাষিতং ভশ্ত। নর্ত্তনাগাররক্ষিণ:। সহসৈব সমাধ্যমূরা-দানোৰা: দহত্ৰশ:॥ ভডো গৰাৰ তৰেশ কীচকং বিনিপাভিতম্। গতাসং দদৃশুভূ মৌ ক্ধিরেণ সমুক্ষিতম্। পাণিপাদবিহীনং

ব্যথিভাভবন্। ততো ভরং বয়ং সর্বে সায়্ধা ভরতর্বভ ॥ অথৈনং হাইরোমাণো বিশ্বিতাঃ প্রেক্ষ্য কীচকম্। নিরীক্ষন্তে ততঃ সর্বে পরং বিশ্বরমাগতাঃ ॥ অমাহ্যং ক্বতং কর্ম তং দৃষ্টা বিনিপাতিতম্। কাস্ত গ্রাবা ক চরণো ক পানী ক শিরস্তথা। ইতি [ সত্যং পরীক্ষন্তে ] তাং প্র্যুপ্তভ্তং গন্ধর্কেণ হতং তদা।

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং বিরাটপর্ম্মণি কীচকবণে স্বাবিংশভিতমোহধ্যারঃ।

### ত্রস্থোবিংশোহধ্যায়

বৈশশ্পায়ন উবাচ। তশ্মিন্ কালে সমাগম্য সর্ব্বে তত্রাস্য বাদ্ধবাং।
ক্রুক্তঃ কীচকং দৃটা পরিবার্য্য সমস্ততঃ ॥ সর্ব্বে সংস্কৃতিরামাণঃ সম্ভ্রন্তাঃ প্রেক্ষ্য
কীচকম্। তথা সন্তিল্পর্বালঃ কৃষ্ণং ত্বল ইবোক্তম্॥ প্রোথিতঃ ভীমসেনেন
তমিক্রেণেব দানবম্। সংস্কার্মিত্নিক্সন্তো বহিনে তৃং প্রচক্রম্য ॥ দদ্ভত্তে
ততঃ ক্রফাং স্তপ্রাঃ সমাগভাঃ। অনুরাচ্চানবভাঙ্গীং অসমালিল্য তিষ্ঠতীম্ ॥
সমবেতের্ সর্ব্বেষ্ তাম্চুক্রপকীচকাঃ। হস্ততাং শীদ্রমসতী যংক্তে কীচকো
হতঃ ॥ অথবা নৈব হস্তব্যা দহ্যতাং কামিনা সহ। মৃতস্যাপি প্রিরং কার্য্যং
স্তপ্রস্য সর্ব্বেণ ॥ ততো বিরাটম্চুত্তে কীচকোহস্যাঃ ক্রতে হতঃ । সহানব্রৈব
দহ্মে তদক্ষাত্মইসি ॥ পরাক্রমন্ত স্তানাং মত্বা রাজান্ত্রাদ্যতাং ক্ষণং
ক্রেপ্রেণ সহ দাহং বিশাম্পতে ॥ তাং সমাসাভ্য বিত্রন্তাঃ কৃষ্ণাং ক্মল-লোচনাম্। মাম্হ্যমানাং তে তত্র জগৃহঃ কীচকা ভূশম্ ॥ ততন্ত তাং সমা-রোপ্য নিবধ্য চ স্থমধ্যমান্। জগ্মুক্তম্য তে সর্ব্বে শ্বাণানাভিম্থান্তদা ॥
ছিল্পাণা তু সা রাজন্ স্তপুইল্রনিন্দিতা। প্রাক্রোশ্রাথমিচ্ছন্তী কৃষ্ণা নাথবতী
সতী ॥

দ্রৌপত্যবাচ। জয়ো জয়বজা বিজয়ে। জয়ৎসেনো জয়বলঃ। তে মেবাং বিজানত প্তপুত্রা নয়ভি মান্॥ বেষাং জ্যাতলনির্বোবো বিক্ষুর্ভিত-বিবাশনেঃ। ব্যক্রয়ত মহাযুদ্ধে ভীমবোবতর বিনান্॥ রথবোবত বলবান্ গদ্ধবাণাং মনবিনান্। তে মে বাচং বিজানত প্তপুত্রা নয়ভি মান্॥

বৈশম্পারন উবাচ। তন্তান্তাঃ রূপণা বাচঃ রুঞ্চারাঃ পরিদেবিডাঃ। শ্রুহৈবাভ্যপতন্তীমঃ শরনাদ্বিচাররন্॥ ভীম উবাচ। অহং শৃণোমি তৈ বাচং দ্বরা দৈর্দ্ধি ভাবিতাম্। ভুমাতে স্তপুরেভ্যোন ভরং ভীক বিভাতে ॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। ইত্যুকা স মহাবাহুবিজ্ঞকুজ্ঞে জিখাংসয়া। ততঃ স্ব্যায়তং কথা বেশং বিপরিবর্ত্তা চ। অহারেণাভ্যবস্কল্য নির্জ্ঞ গাম বহিস্তল্য ॥ স ভীমসেনঃ প্রাকারমারুহ তরসা ক্রতম। শ্বশানাভিমুখঃ প্রায়াদ বত্র তে কীচকা গতা:।। স লঙ্ঘগ্নিতা প্রাকারং নি:স্ত্যু চ পুরোত্তমাৎ। ভবেন পতিতো ভীম: স্তানামগ্ৰতন্ত্ৰা॥ চিতাসমীপে গ্ৰা স তত্ৰাপশ্ৰহনম্পতিম্। ভালমাত্রং মহাস্করমূজ্যভন্ধং বিশাম্পতে॥ তং নাগ্বত্পাক্রম্য বাছভ্যাং পরিরভ্য চ। স্কল্মারোপয়ামাস দশব্যামং পরস্তপঃ॥ স তং বৃক্ষং দশব্যামং সম্বন্ধবিটপং বঁলী। প্রগৃহাভ্যদ্রবৎ স্তান্ দণ্ডপাণিরিবাস্কর:। উরুবেগেন তস্তাথ স্বগ্রোধাশ্বকাংশুকা:। ভূমৌ নিপতিতা বুক্ষা: সঙ্গশন্তত্ত । তং সিংহমিব সংক্রৃদ্ধং দৃষ্ট্রা গন্ধর্কমাগতম্। বিত্রেন্দ্র: সর্কাশ: স্তা বিবাদভয়-**কম্পিতা:** ॥ তমন্তকমিবায়ান্তং গন্ধৰ্কং প্ৰেক্ষ্য তে তদা। দিধকন্তন্তদা জ্যেষ্ঠং ভাতরং ত্রাপকীচকা:। পরস্পরমথোচুত্তে বিষাদভয়ক্ষিতা:। গরুর্বো বলবানেতি ক্রন্ধ উন্নয় পাদপম্। সৈরন্ধি মৃচ্যতাং শীঘং যতে। নো ভন্নমাগতম্। তে তু দৃষ্টা তদাবিদ্ধং ভীমদেনেন পাদপম্। বিমৃচ্য দ্রোপদীং তত্র প্রাদ্রবন্নগরং প্রতি। দ্রবতন্তাংস্ক সংপ্রেক্ষ্য স বছ্রী দানবানিব। [বুক্ষেণ তেন রাজেন্স প্রভঞ্জনস্থতো বলী।] শতং বিঞাধিকং ভীৰ: প্রাহিণোদ ব্যসাদনম্॥ তত আখাসরৎ ক্লফাং পরিমূচ্য বিশাম্পতে। উবাচ ह महावादः शाकानीः शाकुनसनः। अक्ष्र्र्वभूवीः मीनाः इद्ध्यः न वृत्कामतः॥ এবং তে ভীক বধ্যন্তে বে ছাং ক্লিপ্সন্তানাগসম্। প্রৈহি ছং নগরং ক্ষে न ভবং বিভাতে তব ॥ অভেনাহং গমিছাৰি বিরাটস্থ মহানসম্॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। পঞাধিকং শতং তচ্চ নিহতং তত্ত্ব ভারত।
মহাবনমিব দ্বিলং শিশ্রে বিগলিতক্রমম্॥ এবং তে নিহতা রাজস্বতং পঞা চ কীচকাং। স চ সেনাপতিঃ পূর্বমিত্যেতৎ স্ত-ষ্ট্শতম্॥ তদ্ধী মহদা-শ্রহ্যং নরা নাধ্যশ্চ সঙ্গতাঃ। বিশারং প্রমং গ্রা নোচুঃ কিঞ্চন ভারত ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বণি উপকীচকবধো নাম অরোবিংশতিতমোহধারঃ।

## চতুর্বিবশেহপায়ঃ

বৈশপারন উবাচ। তান্দৃষ্টা নিহতান্ স্থতান্ রাজ্ঞে পৌরা ক্তবেদরন্। গন্ধবিনিহতা রাজন্ স্তপুত্রা মহাবলাঃ॥ যথা বজ্ঞেণ বৈ দীর্ণং পর্বতন্তর মহজ্ঞিরঃ। বিনিকীর্ণাঃ প্রদৃশুন্তে তথা স্থতা মহীতলে॥ সৈরস্কৃত্রী চ বিম্ক্রানা প্নরায়াতি তে গৃহম্। সর্বাং সংশিয়তং রাজ্যরগরং তে ভবিশ্বতি॥ যথারপা হি সৈরস্কৃত্রী গন্ধবাশিক মহাবলাঃ। পুংসামিষ্টশুক্ত বিষয়ো মৈথ্নার ন সংশয়ঃ॥ যথা সৈরস্কৃতিদাযেণ ন তে রাজ্মিদং প্রম্। বিনাশমেতি বৈ ক্রিপ্রং তথা নীতির্বিশিয়তাম্॥ তেষাং তল্বচনং শ্রুষ্। বিনাশমেতি বৈ ক্রিপ্রং তথা নীতর্বিশিয়তাম্॥ তেষাং তল্বচনং শ্রুষ্। বিরাটো বাহিনী প্রিং। অরবীৎ ক্রিয়তামেষাং স্থানাং চরমক্রিয়া॥ এক ক্রিয়েব তে সর্বেই স্পামদ্দে ত্রাশনে। দহস্তাং কীচকাঃ শীঘ্রং গর্মেশ্যাল্যেশ্য সর্বাশঃ॥ মহিষাং জাতসাধ্বসঃ। সৈরস্কৃত্যাগতাং ক্রিয়া মমেব বচনাদিদম্॥ গচ্ছ সৈর্বিন্ধি ভল্লতে যথাকামং বরাননে। রাজা বিভেতি স্থােশালি গন্ধব্রিভাঃ পরাজ্বাৎ॥ ন হি ত্যাম্ৎসহে বক্তৃং স্বয়ং গন্ধব্রক্রিতাম্। ক্রিয়াভ্রেদেব্রভাং বক্ত্যত্রখাং প্রবীম্যহম্॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। অথ মৃক্তা ভয়াৎ কৃষ্ণা স্তপুত্রায়িরস্ত চ।
মোক্ষিতা ভীমসেনেন জগাম নগরং প্রতি॥ ত্রাসিতেব মৃগী বালা শার্দ্ধিলন
যশিষিনী। গাত্রাণি বাসদী চৈব প্রকাল্য সলিলেন সা॥ তাং দৃষ্টা পুরুষা
রাজন্ প্রাদ্রবন্ধ দিশো দশ। গন্ধবিণাং ভয়ত্রন্তাঃ কেচিদ্টান গ্রমীলয়ন্॥
ততো মহানস্বারি ভীমসেন্মবস্থিত্য্। দদর্শ রাজন্ পাঞ্চালী যথা মতঃ
মহাজিপম্॥ তং বিশায়ন্তী শনকৈ: সংজ্ঞাভিরিদ্মপ্রবীৎ। গন্ধবিরাজায় নমো
বেনাশ্বি পরিমোক্ষিতা॥

ভীমসেন উবাচ। বে পুরা বিচরস্তীহ পুরুষা বশবর্ত্তিনঃ। তক্তাত্তে বচনং শ্রুষা হুনুণা বিচরস্ক্যত ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততঃ সা নর্ত্তনাগারে ধনঞ্জয়মপশুত। রাজ্ঞঃ করা বিরাটশু নর্ত্তয়ানং মহাভূক্ষ্॥ তত্তা নর্ত্তনাগারাদিনিশ্রুম্য সহার্জ্ত্নাঃ। কন্তা দদৃশুরায়ান্তীং ক্লফাং ক্লিষ্টামনাগসম্॥

কন্তা উচ্:। দিট্টা সৈরন্ধি মুক্তাসি দিট্টাসি পুনরাগতা। দিট্টা বিনিহতাঃ স্থতা যে আং ক্লিঞ্জ্যনাগসম্॥

বৃহয়লোবাচ। কথং দৈরন্ধি মুক্তাদি কথং পাপাশ্চ তে হতাঃ। ইচ্ছামি বৈ তব শ্রোভুং সর্কমেতদ্যণাতথম্॥ সৈরজ্বী উবাচ। বৃহয়লে কিন্ন তব সৈরজ্বা কার্য্যমন্ত বৈ। বা জং বসসি কল্যাণি সদা কল্পাপুরে অ্থম্॥ ন হি ছঃখং সমাপ্রোধি সৈরজ্বী ৰজ্পাশুতে। তেন মাং ছঃখিতামেবং পৃচ্চদে প্রহসন্নিব॥

বৃহন্নলোবাচ। বৃহন্নলাপি কল্যাণি ছ:খমাপ্লোত্যস্ত্তমন্। তির্ব্যপ্রনালগতা বালে ন চৈনামবব্ধ্যনে॥ ত্ত্মা সহোধিতা চালি তথ্য সর্বৈশ্ব [ ত্ত্মান্ত কুলিতা ] সহোধিতা। ক্লিস্ত্যাং ত্ত্মি স্লেশাণি কো হু ছংখং ন বিন্দতি॥ ন তু কেনচিদত্যস্তং কস্তচিদ্ স্লদ্মং কচিৎ। বেদিতুং শক্যতে নৃনং বেন মাং নাবব্ধ্যনে॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততঃ সহৈব কন্সাভিন্তৌপদী রাজবেশ্ম তৎ। প্রবিবেশ স্থানেফায়াঃ সমীপং গজগামিনী॥ তামব্রবীজাজপদ্ধী বিরাট-বচনাদিদম্। নৈরন্ধি গম্যতাং শীত্রং ষত্র কামন্ত্রনে গতিম্॥ রাজা বিভেতি ভদ্রস্তে গন্ধর্বেভ্যঃ পরাভবাৎ। ত্বঞাপি তরুণী স্থক্র রূপেণাপ্রতিমা ভূবি॥ পুংসামিষ্টশ্চ বিষয়ো গন্ধর্বাশ্চাতিকোপনাঃ॥

সৈরজ্বী উবাচ। ত্রয়োদশাহমাত্রং মে রাজা ক্ষাম্যতু ভামিনি। ক্বতক্বত্যা ভবিম্বস্তি গন্ধর্কান্তে ন সংশয়ঃ॥ ততের মামুপনেয়স্তি করিয়স্তি চ তে প্রিরম্। ধ্রুবঞ্চ শ্রেয়সা রাজা বোক্ষ্যতে সহ বান্ধবৈঃ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বাণ কীচকবধসমাপ্তিন্মি চতুর্বিংশতিতমোহধ্যারঃ।

# অথ গোহরণপর্বব প্রশুবিংসোহপ্র্যায়ঃ

বৈশম্পায়ন উবাচ। কীচকন্স নিপাতেন সাহজন্স বিশাম্পতে।
অত্যাহিতং চিন্তরিবা ব্যময়স্ত পৃথগ্জনাঃ॥ তন্মিন্ পুরে জনপদে সঞ্জলা।
১ ভূচ্চ সর্বাশঃ। শৌর্যাদ্দি বল্লভো রাজ্ঞো মহাসত্ত কীচকঃ॥ আসীং প্রহর্তাঃ
চ নৃণাং দারামর্যী চ ছ্মিভিঃ। স হতঃ থলু পাপাত্মা গল্পকৈর্ছ প্রস্কাঃ॥
ইত্যজন্মহাভাগ পরানীকবিনাশনম্। দেশে দেশে মহয়াশ্চ কীচকং
ছ্ম্প্রধ্বণম্॥ অথ বৈ ধার্ত্তরাষ্ট্রেণ প্রযুক্তা বে বহিশ্চরাঃ। মুগন্ধিতা বহুন্
গ্রামান রাষ্ট্রাণি বিবিধানি চ॥ সংবিধার মধাদৃষ্টং ষ্থাদেশপ্রবেশনম্।

কৃতকৃত্যা কৃবর্ত্তত তে বৈ নাগপুরং প্রতি॥ তত্ত্ব দৃষ্টা চ রাজানং কৌরব্যং খৃতরাষ্ট্রকম্। দ্রোণকর্ণকৃপৈ: সার্দ্ধং ভীলেণ চ মহাস্থানা॥ সক্ষতং ভ্রাতৃ-ভিন্চাপি ত্রিগত্তিক মহার্থিং। তুর্ব্যোধনং সভামধ্যে ভাদীনমিদমক্রবন্।

চরা উচু:। ক্বতোহস্মান্তি: পরো বত্বস্তেবামবেবণে দদা। পাওবানাং মহুয়েন্দ্র তন্মিন্মহতি কাননে। নির্জনে মুগদঙ্কীর্ণে নানাক্রমণতাবৃতে। ণতাপ্ৰতানবহুলে নানাগুৰুসমাকুলে॥ ন চ বিদ্যো গতা যেন পাশুবা দৃঢ়বিক্রমা:। মার্গমাণা: পদভাসং তেষ্ তেষ্ তথা তথা।। গিরিকুটেষু তুর্বেরু नानां सन्भारतम् ह। सनाकौर्ययु (क) थर्दाहेषु भूदत्र वृह्म नदत्रस् বহুশোহৰিষ্টা নৈব বিদ্যুক্ত পাগুবান। অত্যন্তভাবং নটান্তে ভদ্রং তুভ্যং নর্বত। (ন হি বিল্লো গতিভেষাং বাসঞ্চাপি হি সন্তম।) ৰজ-ক্তবিব্যমাণাশ্চ রথিনাং রথিসত্তম॥ কঞ্চিৎ কালং মহয়েক্ত স্তানামনুগা বয়ম। মুগদিবা ৰথাকারং বিদিতার্থা: স্ম তত্ত্ত: । প্রাপ্তা দারবতীং স্থতা বিনা পার্থি: পরস্তপ। ন তত্র পাশুবা রাজন কৃষ্ণা বাপি পতিব্রতা॥ সর্ব্বথা বিপ্রনষ্টাল্ডে নমন্তে ভরতর্বভ। ন হি বিদ্যো গতিন্তেষাং বাদঞাপি মহাত্মনামু॥ পাওবানাং প্রবৃত্তিং বা বিদ্য: কর্মাপি বা কৃতম। স নঃ শাধি [ ন তে সন্তি ] মুকুয়েন্দ্র অ 5 উর্দ্ধং বিশাম্পতে॥ অন্তেম্বণে পাগুবানাং ভূর: কিং করবামতে। ইমাঞ্চ নঃ প্রিয়াং বীর বাচং ভদ্রবতীং শৃণু॥ ধেন ত্রিগর্ত্তা নিহতা বলেন মহতা নূপ। স্তেন রাজ্ঞোমংস্তস্ত কীচকেন পুন: পুন: ॥ স হত: পতিত: শেতে গন্ধনৈশি ভারত। অদুখ্যমানৈত্তী আ ভাত্তি: সহ দোদরৈ:।। প্রিরমেতত্বপশ্রক্তা শত্রুণাঞ্চ পরাভবম। ক্বন্তক্তত্যন্চ কৌরব্য বিধৎস্ব যদনস্তরম্॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতাশ্বাং বৈশ্বাসিক্যাং বিরাটপর্বাণ ( গোহরাপর্বাণ) চারপ্রত্যাচারে পঞ্চবিংশতিতমোহধ্যাশ্বঃ।

## ষড় বিংশোহধ্যায়ঃ

বেশস্পারন উবাচ। ততো ত্র্যোধনো রাজা শ্রুমা তেষাং বচন্তদা।

চিরমন্তর্মনা ভূষা প্রত্যুবাচ সভাসদঃ॥ স্বত্যুগা ধর্ কার্য্যাপাং
গতিথিকাত্মন্ততঃ। তত্মৎে সর্কে নিরীক্ষণ্ডং ক মুতে পাওবা গতাঃ॥

জন্নাবশিষ্টং কালভা গতভ্রিষ্ঠমন্ততঃ। তেষামঞ্জাতঃগ্যাণামন্মিন্ বর্ধে

অবোদশে॥ অশু বর্ষশু শেষঞ্চোতীর্রিছ পাওবা:। নিব্রসময়াতে হি সত্য-ত্রতপরায়ণা:। করন্ত ইব নাগেন্ড: সর্বে হালীবিষোপমা:। ছ:খা ভবেয়ু: সংরক্ষা: কৌরবান্ প্রতি তে গ্রুবন্॥ অর্থাক্ কালস্ত বিজ্ঞাতাঃ রুছ্করপধরাঃ [ততঃ] পুনঃ। প্রবিশেষ্জিতকোধান্তাবদেব পুনর্কনম্। তত্মাৎ সর্কে বুৰুৎসধ্বং প্ৰতিকৰ্ত্তন্যমন্মন্ [প্ৰতিকৰ্ত্তন্যমশ্ৰ বং]। রাজ্যং নিৰ্দেশন্যগ্ৰং নিঃসপত্নং চিরং ভবেৎ॥ অথারণীত্ততঃ কর্ণঃ ক্ষিপ্রং গছন্ত ভারত। অক্তে ধৃষ্ঠতরা দক্ষা নিভ্তাঃ সাধুকারিণঃ॥ চরস্ক দেশান্ সংবীতাঃ ফীতান্ জনপদান বহুন্। ততা গোগীবু রম্যাম সিদ্ধপ্রজিতেষ্চ । পরিচারের্ তীর্থের বিবিধেশাকরেষ্চ। বিজ্ঞাতব্যা সন্ধায়তে তর্করা স্বিনীতরা॥ বিবিটধন্তৎপরে: সমাক্ ভজ্জৈতিপ্ণসংবৃতৈ:। অবেইব্যা: স্থলিপ্লে: পাওবাশ্ছরবাদিন:॥ নদীকুঞেষু তীথেষু এামেষু নগরেষুচ। আশুমেষুচ রম্যেষ্ পর্কতের্ গুহাসু চ॥ অথা গ্রজানস্তরজঃ পাপভাবাকুরাগিণম্। জ্যেষ্ঠং তৃঃশাসনত্ত্ত লাতা লাতরমূরবীৎ ॥ ধেষু নঃ প্রতারো রাজঃশচারের মুফুঞ্রভ । তে যাত্ত দত্তদেয়া বৈ ভ্রতান্ পরিমার্গিতুম্। এতচ্চ কর্ণো যৎ প্রাহ সর্ক্রমী-ক্ষামহে বয়ন্। যথোন্দিষ্টং চরা: সর্কো মুগয়স্ক ততন্ততঃ॥ এতে চাস্তে চ ৰহবো দেশাদ্দেশং ঘণাবিধি। ন তু তেষাং গতিকাসঃ প্রবৃত্তিশ্চোপলভ্যতে॥ অত্যাহিতং বা গৃঢ়ান্তে পারং বোর্দ্মিনতো গতাঃ। ব্যালৈবাপি মহারণ্যে ভক্ষিতাঃ শ্রমানিনঃ॥ অথবা বিষমং প্রাপ্য বিনটাঃ শাখ্তীঃ সমাঃ। তত্মানানসমব্যগ্রং কৃষা হং কুফনলন। কুফ কার্য্য মহছোৎসাহং মস্তদে বর্রাধিপ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং বিরাট-পর্বনি চারপ্রত্যাচারে ষড়্বিংশতিতমোহধ্যায়ঃ।

### সপ্তবিংশোহপ্যায়ঃ

বৈশশ্যায়ন উবাচ। অথা ব্ৰবী নহাবী যোগ জোণ গুৱাৰ্থন শিনি:। ন তাদৃশা বিনশ্যন্তি নাপি যান্তি পরাভবন্ ॥ শ্বাশ্চ কৃতবিদ্যাশ্চ বৃদ্ধিনতো জিতে প্রিয়াঃ। ধর্মজ্ঞাশ্চ কৃতজ্ঞাশ্চ ধর্ম রাজমন্ত্রতাঃ ॥ নীতিধর্মার্থত জ্ঞঃ পিতৃবচ্চ সমাহিতাঃ। ধর্মে স্থিতঃ সভ্যরতঃ জ্যেষ্ঠং জ্যেষ্ঠান্থনায়িনঃ ॥ অন্ত্রতা মহাত্মানং লাভরঃ লাভবো ন্প। অঞাতশক্রং ধীমন্তঃ স্ক্লিভাত্নন্ত্রতন্ ॥ তেবাং তথাবিধেয়ানাং নিভ্তানাং মহাস্থনাম্। কিমর্থং নীতিমান্ পার্থ: শ্রেয়ো নৈষাং করিছাত্রা তত্মাদ্ বত্বাৎ প্রতীক্ষত্তে কালজোদ্যমাগতম্। ন হি তে নাশমুচ্ছের্মিতি পশ্সমাহং ধিয়া॥ সাম্প্রতঞাপি বং কার্য্যং ভচ্চ ক্ষিপ্রমকালিকম্।
ক্রিয়তাং সাধু সঞ্চিত্তা বাসশৈচ্বাং প্রচিন্ত্যভাম্॥ ব্যাবং পাঞ্পুত্রাণাং
সর্বার্থের ধৃতাত্মনাম্। ছভ্তের্যাঃ ধলু শ্রান্তে নিম্পাপান্তপসার্তাঃ॥ বৃদ্ধিনান্ গুণবান্ পার্থ: সত্যবান্ নীতিমান্ শুচিঃ। তেজোরাশিরসংখ্যেয়ো
গৃহীয়াদপি চক্ষা।। বিজ্ঞায় ক্রিয়তাং তত্মান্ত্রশ্চ মৃগ্যতাঞ্চরঃ। ব্রাক্ষণৈশ্চ
চরঃ সিক্রৈর্থে চাল্ডে ত্রিধা জনাঃ॥

ইভি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং বিরাটপর্বাণ ( গোহরণপর্বাণ ) দ্যোণবাক্যে সপ্তবিংশতিতমোহধ্যায়: ।

#### . অস্টাবিংশোহধ্যায়ঃ

বৈশম্পান্নন উবাচ। ততঃ শাস্তনবো ভীম্মো ভরতানাং পিতামহঃ। শ্রুত-বান দেশকালজ্ঞত্তত্ত্ব সর্বধর্মবিৎ ॥ আচার্য্যবাক্যোপবমে তদ্বাক্যমভিদন্দধৎ। হিতার্থং স উবাচেমাং ভারতীং ভরতান্ প্রতি ॥ যুধিষ্টিরে সমাসক্তাং ধর্মকে ধর্মসংশ্রিতাম। অসতাং হল্লভাং নিত্যং সতাঞ্চাভিমতাং সদা। ভীমঃ সমবদত্তত গিরং সাধৃভির্চিতাম। যথৈষ ব্রাহ্মণ: প্রাহ দ্রোণ: স্কার্থতত্ত্বিৎ ॥ সর্বলক্ষণসম্পন্ন। নাশং নাইন্তি পাগুবা:। শ্রুতরতোপসম্পন্না নানাশ্রুতি-স্মাহিতা: । বৃদ্ধান্তশাসনে লগা: সত্যব্তপরারণা:। সমরং সমরজ্ঞাত্তে পালম্বন্ত: শুচিত্রতা:। ক্রন্ত্র্যপ্রা নিত্যং কেশ্বান্ত্র্মতা: সদা। প্রবীর-পুরুষাত্তে বৈ মহাত্মানো মহাবলা:।। নাবদীদিতুমইন্তি উবহস্ত: সতাং ধুরুম। ধর্মতকৈব গুপ্তাত্তে স্ববীর্যোণ চ পাগুবা:।। ন নাশমধিগচ্ছেয়ুরিতি মে ধীয়তে মতি:। তত্ত্র বৃদ্ধিং প্রণেয়ামি পাওবান প্রতি ভারত॥ ন তু নীতিঃ স্থনীতক্ত শক্যতেংগ্ৰেণিতৃং পরিঃ। বভু শক্যমিহান্দাভিন্তান্ বৈ সঞ্চিন্তা পাণ্ডবান্।। বৃদ্ধা প্রবন্ধুংন ছোহাৎ প্রবিক্যামি নিবোধ তৎ। ন জিলং মাদুৰৈনীভিত্তত বাচ্যা কথঞ্চন।। সা জিলং সাধু ৰক্তব্যা ন জনীতিঃ কণঞ্চন। বৃদ্ধান্থশাসনে তাত তিষ্ঠতা সত্যশালিনা। অবশুস্থিহ ধীরেণ मुखाः मरशु दिवक्रका । यथामिक दिवक्रवाः मुक्तिथा धर्मानिष्मम्।। एख नाहः ख्था मरक वर्धाविषठाता कनः। निर्वामः धर्मत्रोकक वर्षश्चिश्च खर्मागरन ॥

তত্ত্ব তাতুন তেবান্ত রাজ্ঞাং ভাব্যমসাম্প্রতম্। পুরে জনপদে বাপি বত্ত রাজা যুধিষ্ঠির:॥ দানশীলো বদাশত নিভূতো হ্রীনিষেবক:। জনো জনপদে ভব্যোষত্র রাজা যুধিষ্ঠির:।। প্রিম্নবাদী সদা দাস্তো ভব্য: সভ্যপরো জন:। ब्रहे: शृह: चिहिन को या वाका यूथिष्ठित: ।। नाम्यस्कान गिर्मार्व निकानी ন মংসরী। ভবিশ্বতি জনন্তত্র স্বয়ং ধর্মমত্বতঃ।। বন্ধবোষাক ভূরাংসঃ পূর্ণাহুত্যন্ত্রথৈব চ। ত্রুতবশ্চ ভবিশ্বন্তি ভূরাংসো ভূরিদক্ষিণা:।। সদা চ তত্র পৰ্জ্জঃ সমাগ্ৰী ন সংশয়ঃ। সম্পন্নশস্তা চ মহী নিরীতিকা ভবিশ্বতি॥ শক্তবন্তি চ ধাকানি রসবন্তি ফলানি চ। গন্ধবন্তি চ মাল্যানি শুভশস্বা চ ভারতী। বায়্শ্চ স্থবসংস্পর্শো নিপ্রতীপঞ্চ দর্শনম্। ভয়ং নাভ্যবিশেতত্ত বত রাজা যুধিষ্ঠির:। গাবশ্চ বহুলাতত ন কশা ন চ হুর্বলা:। প্রাংসি দধিদর্পীংষি রসবন্তি হিতানি চ॥ গুণবন্তি চ পানানি ভোজ্যানি রসবন্তি চ তত্র দেশে ভবিয়ন্তি যত্র রাজা বৃধিষ্ঠির:॥ রসাঃ স্পর্শান্ত গর্নান্ত শব্দান্তাপি গুণাবিতা:। দুখানি চ প্রসন্নানি বতা রাজা যুধিষ্টির:॥ ধর্মাশ্চ ততা দুখাস্থে সেবিতাশ্চ বিজাতিভি:। সৈঃ সৈও গৈ: সম্প্রযুক্তান্তিশ্বন্ বর্ষে এরোদশে ॥ দেশে তন্মিন ভবিষান্তি তাত পাগুবদংশ্রিতে। সংপ্রীতিমাঞ্জনন্তত্ত সম্ভুষ্টঃ শুচিরব্যথ:।। দেবতাতিথিপুঞ্জাস্থ সর্বভাবামুরাগবান্। ইষ্টদানে। মহোৎ-সাহ: শবদ্ধপ্রায়ণ: ॥ অভভদিট্ ভভপ্রেস নিত্যব**ঞ: ভভব্রত:**। ভবিষ্যতি জনন্তত্র বত্র রাজা যুধিষ্ঠির: ॥ ত্যক্তবাক্যানৃতন্তাত শুভকল্যাণ্মদল:। শুভলিপা: শুভরতির্যত্ম রাজা ঘূধিষ্টির:। ( সর্বভূতহিতে যুক্ত: সদা নির্মণমানস:।) ভবিষ্যতি জনন্তত্ত্ব নিত্যঞেষ্টপ্ৰিয়বতঃ ৷ ধৰ্মাত্মা শক্ততে জ্ঞাতুং নাপি তাত দিলাতিভি:। কিং পুন: প্রাকৃতি: পার্থ: শক্যো বিজ্ঞাতুমন্তত:॥ ষশ্মিন সত্যং ধৃতিদানং পরা শান্তির্ফাবা ক্ষমা। খ্রী: শ্রী: কীর্ত্তি: পরং তেজশ্চানৃশংস্তমথার্জ্জবম্। তন্মান্তত্ত নিবাসন্ত ছবং যত্নেন ধীমত:। গতিঞ পরমাং তত্ত্ব নোৎসহে বক্তৃমস্ত্রণা॥ এবমেতত্ত্ব সঞ্চি**ত্ত**া ম**ং কৃত্যং** মস্ত্রসে হিতম। তৎ ক্ষিপ্রং কুরু কৌরব্য যথেবং শ্রদ্ধানি মে ॥ ১-৩৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বাণ চারপ্রত্যাচারে তীমবাক্যে অধাবিংশতিতমোহধ্যার: ।

#### উন্ত্ৰি:শত্তমোহপ্ৰায়ঃ

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততঃ শার্ঘতো বাক্যমিত্যুবাচ কপঝদা। যুক্তং স্বা(প্রা)প্তঞ্চ বৃদ্ধেন পাওবান প্রতি ভাষিতম্॥ ধর্মার্থসহিতং শ্লক্ষং তত্ততক সহেতুকম্। তত্রাহ্বরপং ভীমেণ মমাপ্যত্র গিরং শৃণু॥ তেষাঞ্চৈব গতিত্বর্ক্যা বাসন্ধৈষাং প্রচিন্ত্যভাম্। নীতির্বিধীয়তাং চাপি সাম্প্রতং বা হিতা ভবেৎ॥ নাবজ্ঞেরো রিপুন্তাভ প্রাক্ততোহপি বুভুষতা। কিং পুন: পাওবান্তাত সর্বাস্ত্র-কুশলা রণে।। তত্মাৎ সত্রং প্রবিষ্টেষ্ পাওবের মহাত্মন্ত্। গুঢ়ভাবেষু চ্ছন্নেষ্ কালে চোদয়মাগতে॥ স্বরাষ্ট্রে পররাষ্ট্রেচ জ্ঞাতব্যং বলমাত্মন:। উদয়: পাওবানাঞ্চ প্রাপ্তে কালে ন সংশয়:॥ নিবৃত্তসময়া: পার্থা মহাত্মানো মহাবলা:। মহোৎসাহা ভবিষ্যান্তি পাণ্ডবা হামতৌজন:॥ তত্মাছলঞ কোৰণ্ট নীতিশ্চাপি (শ্বেষাং) বিধীয়তাম। যথা কালোদয়ে প্রাপ্তে (সমাক্ তৈ: ) সম্পৃতিক: সন্ধামহে ॥ তত্ত্ৰ ভাত হুহং মজে বুধাস্ব বল-মাজান:। নিয়তং সর্কমিত্রেষ্ বলবৎস্বলেষ্ চ ॥ উচ্চাবচং বলং জ্ঞাত্বা মধ্যস্থ-ঞাপি ভারত। প্রকৃষ্টমপ্রকৃষ্টঞ্চ সন্দধামন্তথা পরিঃ॥ সামা ভেদেন দণ্ডেন मारनन विकर्भना। क्वारमनाक्रमा ह भन्नान् वरननानमा क्रवनान्॥ मास्विषा তু মিত্রাণি বলঞ্চাভাষ্যতাং সুধম্। সকোষবলসংবৃদ্ধ: সম্যক্ সিদ্ধিমবাপ্যাসি ॥ যোৎস্তাসে চাপি বলিভিররিভিঃ প্রভ্যুপস্থিতিঃ। অক্তৈম্বং পাওবৈর্বাপি হীনৈশ্চ বলবাহনৈ:।। এবং সর্বাং বিনিশ্চিত্য ব্যবসায়ং অধর্মত:। বথাকালং ষ্ঠুয়েব্র চিরং সুখনবাপ্ শুসি ॥১-১৪

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বাণি (গোহরণপর্বাণি) চারপ্রত্যাচারে রূপবাক্যে একোনত্রিংশতমোহংগারঃ।

#### ত্রিংশন্তমোহপ্রায়ঃ

বৈশন্পায়ন উবাচ। অথ রাজা ত্রিগর্জানাং স্থার্শনা রথযুথপা। প্রাপ্তকালমিদং বাক্যমুবাচ ছরিতো বলী [নৃপম্] ॥ অসক্ষরিক্ত ই পূর্বাং মৎশু-শাবেরকৈঃ
প্রভো। স্তেনেব চ মৎশুশু কীচকেন পুনং পুনং ॥ বাধিতো বন্ধুভিঃ সার্দ্ধং
বলাহলবতা বিভো। স কর্ণমভ্যদীক্ষ্যাথ হুর্ব্যোধনমভাবত ॥ অসক্ষরংশুরাজ্ঞা
মে রাষ্ট্রং বাধিতমোজসা। প্রণেতা কীচকত্ত বলবানভবৎ পুরা॥ ক্রার্থেন হুমবী স হুটাত্মা ভূবি বিধ্যাতবিক্রমা। নিহতঃ স তু গন্ধকাঃ পাপকর্মা নৃশংসবান্॥

ত্রমিংশ্চ নিহতে রাজা হীনদর্পো নিরাশ্রয়:। ভবিমৃতি নিরুৎসাহো বিরাট ইতি মে মতি:। তত্র বাত্রামহং মঞ্চে বদি তে রোচতে মতি:। কৌরবাণাঞ্চ সর্বেষাং কর্ণস্ত চ মহাত্মন:॥ এতৎ প্রাপ্তমহং মত্তে কার্য্যমাত্য-রিকং হি ন:। রাষ্ট্রং তক্তাভিযাকামো বহুধারুসমাকুলম্॥ আদিদামোহক রত্বানি বিবিধানি ব**ত্ন**নি চ। গ্রামান্ রাষ্ট্রাণি বা তস্য হরিয়ামো বি<mark>ভাগশ: ॥</mark> অথবা গোসহস্রাণি বহুনি চ শুভানি চ। বিবিধানি ছরিয়াম: প্রতিপীডা পুরং বলাৎ। কৌরবৈ: সহ সম্বত্য ত্রিগর্বৈন্চ বিশাম্পতে। গান্তস্যাপহরামোহত সহ সহৈর্য: স্থান্তা: । সংবিভাগেন (সন্ধিং বা তেন) কুড়া তু নিবন্ধী-মোহস্য পৌরুষম্। হতা চাস্য চমুং রুৎস্নাং বশমেৰ নরামহে॥ তং বশে ক্তায়তঃ কথা অথং বৎস্যানহে বয়ন্। ভবতো বলবৃদ্ধিক ভবিষ্যতি ন সংশ্বঃ॥ তজুত্বা বচনং তদা কৰ্ণো বাজানমত্ৰবীং। স্তক্তং স্থশৰ্মণা বাক্যং প্ৰাপ্তকালং হিতঞ নঃ॥ তত্মাৎ ক্ষিপ্রং বিনিধামো ধো<del>ল</del>য়িতা বর্রণিনীম্। বিভ**জ্**য চাপ্যনীকানি যথা বা মন্তদেহনৰ॥ প্রাক্তো বা কুরুবুদ্ধোহরং সর্বেষাং নঃ পিতামহ:। আচার্য্যন্চ তথা দ্রোণ: কুপ: শার্বতন্তথা॥ মন্তন্তে তে বথা সর্কে তথা বাত্রা বিধীরতাম। সংষয়্য চাত গড়াম: সাধনার্থং মহীপতে। কিঞ্চ ন: পাণ্ডবৈ: কাৰ্য্যং হীনাৰ্ধবলপৌৰুধৈ: । **অ**ত্যন্তং বা প্ৰণষ্টাতে প্ৰাথা বাপি ৰমক্ষরম্। শামো রাজলিক বিগ্লাবিরাটবিষরং বয়ম্। আদাস্যামো হি গান্তক্ত বিবিধানি বহুনি চ ॥

বৈশপায়ন উবাচ। ততো হুর্যোধনো রাজা বাক্সমাদায় তন্ত তথ।
বৈকর্ত্তনন্ত কর্ণত ক্ষিপ্রমাজ্ঞাপরং অয়ম্ ॥ শাসনে নিত্যসংযুক্তং হুঃশাসনমনন্তস্তরম্। সহ বুলৈন্ত সংমন্ত্র ক্ষিপ্রং বোজয় বাহিনীম্ ॥ বর্ণোদ্দশং চ গছামঃ
সহিতান্তর কৌরবৈ:। স্পর্মা ত্ বর্ণোদ্দিটং দেশং বাত্ মহারথ: ॥ কিগতৈঃ
সহিতো রাজা সমগ্রবলবাহন:। প্রাণেব হি স্বসংবীতো মৎক্তক্ত বিষয়ং
প্রতি॥ জবজতো বয়ং তর বাক্তামো দিবসাস্তরে। বিষয়ং মৎক্তরাজক্ত স্বসমুদ্ধং
স্বাংহতা: ॥ তে গল্পা সহসা তর বিরাটনগরং প্রতি। ক্ষিপ্রং গোপান্
সমাসাল্প গৃহত্ত বিপুলং ধনম্ ॥ গবাং শতসহস্রাণি শ্রীমন্তি গুণবন্তি চ।
বয়মপ্যহগৃহীমো বিধা ক্লো বর্গধিনীম্ ॥

বৈশশারন উবাচ। তে শ্ব গতা বথোদিটাং দিশং বহেম হী-পতে:। সর্বা রথিন: সর্বে সপদাতা বলোৎকটা:। প্রতিবৈরং চিকীর্বছো গোষু সংপেতৃক্ততা:। আদাতৃং গাঃ স্থশ্মা তু কৃষ্ণপক্ষ সপ্রমীম্। শপরং দিবসং সর্কে রাজন্ সভূষ কৌরবা:। অষ্ট্রমাং তারগৃহ্ত গোক্-লানি সহস্রশং॥ ১-২৭

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং বিরাটপর্বাণ গোহরণপর্বাণি স্বশর্মবাক্যং নাম ত্রিংশন্তমোহধ্যায়ঃ।

### একতিংশতমোহধ্যায়ঃ

বৈশম্পান্নন উবাচ। ততন্তেষাং মহারাজ তত্ত্বৈবামিততেজ্পাম্। ছন্মলিজ-প্রতিষ্ঠানাং পাওবানাং মহাত্মনাম্ ॥ ব্যতীত: সময়: সম্গর্বস্তাং বৈ পুরো-ন্তবে। কুর্মতাং তদ্য কর্মাণি বিরাটদ্য মহীপতে: ॥ কীচকে তু হতে রাজা বিরাট: পরবীরহা। [আসাঞ্চক্রে সহামাত্য: পাওবৈধ র্মচারিভি:]॥ পরাং লম্ভাবনাং চক্রে কুন্তীপুত্রে যুধিষ্টিরে॥ ততন্ত্রহোদশস্যান্তে তস্য বর্ষস্য ভারত। স্থাৰ্থণ। গৃহীতন্ত গোধনং তরসা বহু।। ততো জবেন মহতা গোপা: পুরম্থা-ব্রজন। অপশ্রন মৎস্যরাজ্ঞ সিংহাসনগতং প্রভুম্। শূরে: পরিবৃতা বোধিঃ কুওলাক্ষদধারিভিঃ। মন্ত্রিভিঃ সংবৃতং সার্দ্ধং পাওবৈশ্চ মহাত্মভিঃ॥ जः म डाब्राः सरावाक्यामौनः बाह्नेवर्कनम्। **८७२**कवन्न, श्रमः श्रमः विवारिः প্রশতাত্তদা॥ অস্মান্ মৃধি বিনির্জিত্য পরিভূম চ বান্ধবান্। গবাং শতসহ-স্রাণি ত্রিগর্তাঃ কালয়ন্তি তে॥ তানু পরীপ্রস্থ রাজেন্দ্র মা নেশুঃ পশবন্তব ॥ जक्क्य। नुभिज्ञः रमनाः मरमानाः ममरगावश्र । तथनाशायकनिनाः भिज्ञश्रकः সমাকুলাম ॥ রাজানো রাজপুত্রাশ্য তহুত্রাণ্যহুভেজিরে। ভাতুমন্তি বিচি-অাণি শুরসেব্যানি ভাগশ: ॥ সবজায়সগর্ভন্ত কবচং তত্ত্ব কাঞ্চনম্। বিরাটস্য ব্রিয়ো দ্রাতা শতানীকোহভ্যহাররও॥ সর্বপারশবং চর্ম ( বর্ম ) কল্যান-भिष्ठनः मृत्य । भाषानीकामवत्रत्वा मिन्त्रात्का ( त्या ) २ छारातप्र ॥ भाषान्यर्गः শতাবর্ত্তং শতবিন্দু শতাক্ষিমৎ। অভেম্বকল্লং মৎস্যস্য রাজা কবচমাহরৎ॥ উৎসেধে যদ্য পদ্মানি শতং সৌগন্ধিকানি চ। স্থবর্ণপৃষ্ঠং স্বর্যাভং স্বর্যাদভো-হভাহারষ্থ ॥ দুঢ়মায়দ গর্ভন্ধ খেতং বর্ম শতাক্ষিমৎ। বিরাটদ্য স্থতো ক্যেচো বীর: শন্ধোহভ্যহারগ্ন। শতশভ তন্ত্রতাণি ষ্ণাস্থানি মহার্থা:। বোৎস্য-পুৰুষাঞ্চনসন্নাহান্ রথেষখানযোজয়ন্॥ সুর্যাচন্দ্রপ্রতীকাশে রথে দিব্যে হির-श्रदत । महाञ्चलाद्या मरुमामा श्रव উচ্ছिलिए जना ॥ अथानान विविधाकातान

क्षकान् रहमभतिष्ठुलान् । वर्षाचः कञ्जिताः भृता त्रत्थेषु नमर्याकरन् ॥ वर्ष मश्राजान रविकाला भाषानीकः लघललम् । कद-वहाय-त्भाशामा नामश्राद्यक वीर्यानान् ॥ যুধ্যেয়ুরিতি মে বুদ্ধির্বর্ত্ততে নাত্র সংশয়ঃ। এতেবামপি দীয়স্তাং রথা ধ্বজ-পতাকিন:॥ ক্বচানি বিচিত্রাণি মৃদ্নি চ দুঢ়ানি চ। প্রতিম্ঞ্ছ গাত্তেষ্ দীরস্তামাযুধানি চ ॥ বীরাঙ্গরূপা: পুরুষা নাগরাজকরোপমা:। নেমে **লাভু** ন যুধ্যেরন্নিতি মে ধীন্নতে মতিঃ । এডছ্কু খা তু নৃপতের্বাক্যং বরিতমানসঃ। শতানীকল্প পার্থেভ্যা রথান রাজন সমাদিশং ॥ সহদেবায় ভীমায় রাজেংখ নকুলায় চ। তান্ প্রস্থইাংস্ততঃ স্থতা রাজভক্তিপুরস্কৃতাঃ ॥ :নির্দিষ্টা নরদেবেন त्रथाशीखमरवाकत्रन्। क्वानि विविज्ञानि मृत्नि व पृत्नि व ॥ वित्राणः शानि-শদ্ যানি তেষামক্লিষ্টকর্মণাম্। তাক্সাম্চ্য শরীরেষ্ দংশিতাতে পরস্তপাঃ। রথান্ হলৈঃ স্থসম্পন্নানাস্থার চ নরোত্তমাঃ। নির্যযুস্ দিতাঃ পার্থাঃ শক্তসত্যাত-মর্দ্ধিন: ॥ তরস্থিনশ্চররপা: দর্বে যুদ্ধবিশারদা:। রথান হেমপরিচ্ছনানা-স্থান্ন চ মহারথা: ॥ বিরাটমন্বন্ন: পার্থা: সহিতা: কুরুপুক্ষবা: । চতারো লাভর: শুরাঃ পাগুবাঃ সত্যবিক্রমাঃ॥ ভীমাশ্চ মত্তমাতকাঃ প্রভিন্নকরটামুধাঃ। ক্ষরস্ত ইব জীমৃতাঃ স্থদস্তাঃ ষষ্টিহায়নাঃ॥ স্বার্চা যুদ্ধকুশলৈঃ শিক্ষিতৈইন্তি-সাদিভি:। রাজানমন্বয়ু: পশ্চাত্তশস্ত ইব পর্বতা:॥ বিশারদানাং মুখ্যানাং হুটানাঞ্চাত্রবায়িনাম। অটো রথসহস্রাণি দশনাগশতানি চ। ৰষ্টিশ্চাখসহ-স্রাণি মৎস্যানামভিতো যয়: ॥ তদনীকং বিরাটস্য ওওভে ভরতর্বভ ॥ সংপ্র-बाखः जना दाव्हविनीवसः (विदीक्षसः) भवाः भनम्। उपनाशः विदारिमा সম্প্রস্থিতমশোভত। দৃঢ়ায়ুধজনাকীর্ণ: গঞ্জাশ্বরথসমূলম্॥ ১-৩৫

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহল্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বণি
গোহরণপর্বণি দেনানির্যাণে এক্তিংশন্তমোহধ্যারঃ।

### দাজিংশভমোশ্যারঃ

**८ म्वाञ्चत्रारमा त्राव्यक्षाजी एक्ट्यार वनम्य । अमाजित्रथना त्राव्य-रत्रार न्याप्य ।** ৰান । অন্তোহস্তমভ্যাপভভাং নিম্নতাঞ্চেতরেতরম্। উদভিঠন্রকো ভৌমং ন প্রাজ্ঞায়ত কিঞ্চন । পক্ষিণকাপতন্ ভূমে সৈজেন রন্ধসার্তাঃ। ইর্ভির্ব্যতি-সংবদ্ভিরাদিত্যোহস্তরধীয়ত। খলোতিরিব সংযুক্তমস্তরীকং क्रम्म १ हो नि हो পানি ব্যতিষ্কানি ধ্যিনাম্। প্রতাং লোক্বীরাণাং সব্যদক্ষিণমশুতাম্। রথা রথৈ: সমাজমু: পাদাতৈশ্চ পদাতয়:॥ সাদিভি: সাদিনদৈব গজৈশ্চাপি মহাগঙ্গাঃ। অসিভিঃ পটিশৈঃ প্রাসৈঃ শক্তিভিত্তোম-বৈরপি। সংরক্ষা সমরে রাজয়িজন্বরিতরেতরম্। নিম্নস্তঃ সমরেৎক্তোৎস্তং শুরাঃ পরিঘবাহবঃ॥ ন শেকুরভিসংরক্ষাঃ শুরান্ কর্ত্তঃ পরাজুথান্। ক্>প্তোতরোষ্ঠং স্থানসং ক্>প্তকেশমলয়তম্॥ অদৃখত শিরশ্ছিরং রব্বোধ্বন্তং সকুওলম্। অদুখন্ত চ গাত্রাণি শরৈশ্ছিলানি ভাগশঃ। শালস্করনিকাশানি ক্ষত্রিরাণাং মহামুধে। নাগভোগনিকাশৈন্চ বাছভিশ্চন্দনোক্ষিতৈ:। আন্তীর্ণা বস্থধা ভাতি শিরোভিশ্চ সকুগুলৈ:। রথিনাং রথিভিশ্চাত্র সংপ্রহারোহভাবর্ত্ত। সাদিনাং সাদিভিশ্চাপি পদাতীনাং পদাতিভি:। উপাশাম্যদ্রজো ভৌমং কৃষিরেণ প্রসূর্পতা। কশ্মলং প্রাবিশদেবারং নির্ম্ময়াদ-উপাক্রোশংস্কদাক্তোক্তং শরৈগাঢ়ং প্রবেজিতা:। অন্তরীক্ষে গতির্বেষাং দর্শনঞ্চাপ্যক্ষধ্যত॥ তে দ্বস্তঃ সমরেহজোহন্তং শুরাঃ পরিঘবাহবঃ। ন শেকুরভিসংরকাঃ শুরান কর্ত্তং পরাজুথান্। শতানীকঃ শতং হতা ৰিশালাক্ষ্ণভূত্ৰণভ্য। প্ৰবিষ্টে মহতীং দেনাং ত্ৰিগৰ্ত্তানাং মহারথৌ ॥ তাং প্রবিষ্টো মহাদেনাং বলবস্তো ষশন্বিনো। আচ্ছেতাং বাছসংরম্ভাৎ কেশা-কেশি নথানখি॥ শক্ষরিত্বা ত্রিগর্তানাং তৌ প্রবিষ্ঠৌ রথবজম্। অগ্রতঃ স্থ্যদত্তক মদিরাক্ষত পৃষ্ঠত:॥ বিরাটভাত সংগ্রামে হতা পঞ্দতান্ র্থান্। হরানাঞ্পতার্ভট হতা পঞ্মহার্থান্। চরন্স বিবিধামার্গান্র্থেষ্ রথমূথপঃ। ত্রিগর্তানাং স্থশর্মাণমাচ্ছ ক্রিকারথং রণে॥ তৌ ব্যবাহরতাং তত্র মহাত্মানৌ মহাবলো। অক্টোহক্তমভিগৰ্জ্জন্তো গোটেযু বুষভাবিব ॥ ততো ত্রিগর্তানাং স্থশ্যা যুদ্ধত্র্মদ: । মৎস্তং সমীয়াদ্রাজানং বৈরথং ৰুদ্ধমাহ্বয়ন্।। ততো রথাভ্যাং রথিনো ব্যতীয়তুরমর্বিণে। শরান্ ব্যস্ত্রতাং শীত্রং তোরধারা ঘনাবিব॥ অক্তোহন্তঞাপি সংরক্ষো বিচেরতুরমর্ষিণৌ কুতান্ত্রৌ নিশিতৈর্কাণেরসি-শক্তি-গদাভূতে।। ততো রাক্তা স্থশর্মাণং বিব্যাধ দশভিঃ শর্বৈঃ। পঞ্চভিঃ পঞ্চভিশ্চাক্ত বিব্যাধ চতুরো হয়ান্। তথৈব

মৎস্তরাজানং স্থশর্মা যুদ্ধর্ম্মদ:। পঞ্চাশদ্ভি: শিতৈর্কাণৈবিব্যাধ পরমান্ত্রবিৎ ॥ ততঃ সৈক্তং সমাহ ত্য মৎস্তরাজ-মুশর্মণ । ন জানীতাং তদাক্ষোহক্তং সৈত্তেন রজসাবৃত্তে ॥ ১-৩০

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং বিরাটপর্বাণ গোহরণপর্বাণি স্থাশ্যবিরাটযুদ্ধে দাজিংশত্তমোহধ্যায়ঃ।

### ত্রয়ত্রিংশতকোহপ্যায়ঃ

বৈশম্পায়ন উবাচ। তমসাভিপ্লতে লোকে রক্তমা চৈব ভারত। ব্যতিষ্ঠন বৈ মুহূর্ত্তন্ত ব্যুঢ়ানীকাঃ প্রহারিণঃ ॥ ততোহন্ধকারং প্রণুদন্ত দতিষ্ঠত চন্দ্রমা:। কুর্বাণো বিমলাং রাজিং নন্দরন্ কল্রিয়ান্ যুধি॥ ততঃ প্রকাশ-মাসাগ্ত পুনর্ব্দমবর্ত্ত। ঘোররূপং ততন্তব্দিন্ নাবৈক্ষ্ত পরস্পর্ম্। ততঃ সুশর্মা ত্রৈগর্ভঃ সহ ভাতা যবীয়দা। অভ্যন্তবন্ধংশুরাজং রথবাতেন সর্বশং॥ ততো রথাভ্যাং প্রস্কল্য ভ্রাতরৌ ক্ষত্রিয়র্বভৌ। গদাপাণী স্থসংরকৌ সমভ্যদ্রবতাং হয়ান্। তথৈব তেষান্ত বলানি তানি, ক্রুদ্ধান্ত-থান্তোহমুমভিদ্রবন্ধি। থজৈার্গদাভিন্চ পরশ্বধৈন্চ, পাশৈন্চ তীক্ষাগ্রস্থতীক্ষ-ধারি:। বলং স মৎশুশু বলেন রাজা, সর্বং ত্রিগর্তাধিপতি: স্থশর্মা। প্রমণ্য জিলা চ প্রসহু মংস্তং, বিরাটমোজস্বিনমত্যধাবং ॥ তৌ নিহত্য পৃথগ্ৰুয়াবুভৌ তৌ পাঞ্চি দার্থী। বিরথং মংশুরাজানং জীবগ্রাহ্ম-গুহুতাম্।। তমুম্মণ্য স্থশ্মা তু যুবতীমিব কামুক:। স্থলনং স্বং সমারোপ্য প্রযুষ্টে শীল্পবাহন:। তুম্মিন গৃহীতে বিরুপে বিরাটে বলবভরে। প্রাদ্রবস্ত ভদ্নামংস্ঠান্ত্রিপর্কিতা ভূশন্। তেমু সন্ত্রাস্থ্যমানের কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠির:। প্রত্যভাষন্মহাবাহুং ভীমদেনমরিন্দমম্ । মৎশুরাব্দঃ পরামুষ্টন্মিগর্তেন স্থশর্মণা। তং মোচর মহাবাহো ন গচ্ছেদ্বিতাং বশম্॥ উবিতাঃ অ স্থাং দর্কে দর্ক-কাম্যৈ স্পুঞ্জিতা:। ভীমসেন ত্বরা কার্য্যা তন্ত্র বাসত্ত নিছতি:॥

ভীম উবাচ। অহমেনং পরিত্রাক্তে শাসনাত্তব পার্থিব। পশু মে স্মহৎ কর্ম যুধ্যতঃ সহ শক্রভিঃ ॥ স্ববাহবলমালিত্য তিঠ বং লাভ্ভিঃ সহ। একান্তমাল্রিতো রাজন্ পশু মেহন্ত পরাক্রমন্ । স্ক্রেকোইরং মহার্কো গদারপ ইব স্থিতঃ। এনমেবং সমালিত্য জাবিষ্যামি শাত্রবান্॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। তং মন্তমিৰ মাতকং বীক্ষমাণং বনস্পতিম 🛭

অত্রবীদ্ প্রাতরং বীরং ধর্মরাজো যুধিটিরং॥ মা ভীম সাহসং কার্মীন্তিঠত্বের বনস্পতিঃ। মা বাং বৃক্ষেণ কর্মাণি কুর্মাণমতিমান্ত্রম্। জনাঃ সমবর্ধ্যেরন্ ভীমোহরমিতি ভারত॥ অক্তদেবায়ুধং কিঞ্চিৎ প্রতিপভ্যস্থ মান্ত্রম্। চাপং বা বদি বা শক্তিং নিস্তিংশং বা পরশ্বধম্॥ যদেব মান্ত্র্যং ভীম ভবেদকৈরক্ষিত্রম্। তদেবায়ুধমাদার মোক্ষরাশু মহীপতিম্॥ যমৌ চ চক্ররক্ষো তে ভবিতারো মহাবলো। ব্যহতঃ সমরে তাত মংস্করাজং পরীপ্রতঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবমুক্তস্ত বেগেন ভীমদেনো মহাবল:। গৃহীত্বা তু ধহুঃ শ্রেষ্ঠ জবেন স্থমহাজবঃ॥ ব্যম্ঞচ্ববর্ষাণি সতোর ইব তোরদঃ। তং ভীমো ভীমকর্মাণং সুশর্মাণমথাদ্রবৎ ॥ বিরাটং সম বীক্ষ্যৈনং তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি চাবদং। স্থশ্মা চিন্তমামাস কালাম্ভক্যমোপমম্। তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ভাৰস্তং পৃষ্ঠতো রথপুদ্ধব:। পশ্যতাং অ্মহৎ কর্ম মহদ যুদ্ধমুপস্থিতম্॥ পরাবৃত্তো ধহুগুৰি সুশৰ্মা ভ্ৰাতৃতি: সহ। নিমেষাস্তরমাত্রেণ ভীমসেনেন তে রথা:॥ র্থানাঞ্ প্রজানাঞ্ বাজিনাঞ্ স্সাদিনাম্। সহস্রশত্সজ্যাতাঃ শ্রাণামু-গ্রধন্বিনাম্॥ পাতিতা ভীমদেনেন বিরাটস্ত সমীপতঃ। পত্তয়ো নিহতা-ভেষাং গদাং গৃহ্ মহাজ্মনা। তদৃষ্টা তাদৃশং ঘূকং স্থশ্মা যুক্তৰ্মদঃ। চিন্তরামাস মনসা কিং শেষং হি বলস্ত মে॥ অপরো দৃহ্যতে কোহন্তো পুরা মধো মহাবলে। আকর্ণপূর্ণেন তদা ধহুষা প্রত্যদৃশ্বত। স্থশ্মা সায়কাংস্তীক্ষান্ ক্ষিপতে চ পুন: পুন: ॥ ততঃ সমন্তাত্তে সর্ব্ধে তুরগানভ্যচোদয়ন্। দিব্য-মন্ত্ৰং ৰিকুৰ্বাণান্ত্ৰিগৰ্ভান্ প্ৰভামৰ্থাঃ ॥ তালিবুভর্থান্ দুই। পাণ্ডবান্ সা মহাচমৃ:। বৈরাটি: পরমক্রুদ্ধো যুষ্ধে পরমাস্কৃতম্ ॥ সহস্রমবধীত্তত্র কুন্তীপুত্রো वृक्षिक्कितः। जीमः मथनह्यानि [मथनजान् त्याक्षान्] वमत्नाकमन्त्रि । नक्नकानि मरेश्वर भाषानि প্রাহিণোচ্ছরৈ:। भाषानि जीनि मुत्रानाः महरनयः প্রতাপবান্॥ বৃধিষ্টিরসমাদিষ্টো নিজন্মে পুরুষর্ব জঃ। ততোহভ্যপতদত্যুগ্রং স্থশ্মাণমুদার্ধম্॥ ভিন্ধা তাং মহতীং সেনাং ত্রিগর্জানাং মহারথং। ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা দ্বরমাণো মহাবল:। অভিজ্ঞত্য স্থশর্মাণং শরৈরভ্যাহনদ্ ভূশন্ ॥ স্থশর্মাপি স্থসংকুদ্বস্তরমাণো যুধিষ্টিরন্। অবিধ্যন্নবভির্বাণৈন্চ-তুর্ভিক্তব্রো হরান্। ততো রাজয়াওকারী কুস্তীপুত্রো বুকোদর:। সমাসাগ্ত স্মাধানসভ ব্যপোথয়ৎ॥ পৃষ্ঠপোপাংশ্চ তদ্যাথ হতা পরম্বায়কৈ:। नात्रिं क्टंबा त्राथाश्यामशाख्यः । ठक्कत्रक्क भूत्वा देव মদিরাক্ষেতি [মদিরাখেতি] বিশ্রন্তঃ। স তদা বিরশং দুটা ত্রিগর্জান

প্রাহরত্তদা॥ ততো বিরাট: প্রস্কন্য রথাদথ সুশর্মণ:। গদামদ্য পরামৃষ্ট ত্ৰেবাভ্যদ্ৰব্ৰলী। স চচার গদাপাণিরু দ্বোহপি তরুণো যথা। প্লায়মানং ত্রৈগর্ভং দৃটা ভীমোহভ্যভাষত॥ রাজপুত্র নিবর্ত্তর ন তে যুক্তং পলায়নন্। অনেন বীর্য্যেণ কথং গান্তং প্রার্থন্নদে বলাৎ ॥ কথঞ্চামূচরাংল্যান্ত্রণ শক্রমধ্যে বিধীদসি॥ ইত্যক্ত: স তু পার্থেন স্থশর্মা রথমূথপ:। তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ভীমং স সহসাভ্যদ্রবলী। ভীমন্ত ভীমসভাগোরধাৎ প্রক্ষন্য পাণ্ডবঃ। প্রাদ্র-বস্তুৰ্পৰ্যত্থো জীবিতেপ্সু: সুশৰ্মণঃ॥ তং জীমদেনো ধাবস্তমভ্যধাৰত বীয্যবান্। ত্রিগর্তরাজমাদাতুং সিংহ: ক্রুমুগং বর্ণা॥ অভিজ্ঞত্য সুশর্মাণং কেশপক্ষে পরামৃষং। সমৃত্যম্য তু বোষাত্তং নিম্পিপের মহীতলে॥ পদা মৃদ্দি মহাবাহ: প্রাহরদিলপিয়ত:। তদ্য জাহ: দদৌ ভীমো জন্মে চৈনমরত্বিনা॥ স মোহমগমদ্রাজা প্রহারবরপীড়িতঃ॥ ভশ্মিন্ গৃহীতে বিরথে ত্রিগর্জানাং মহারথে। অভব্যুত বলং সর্বং ত্রৈগর্ত্তং ভদ্তমাভূরম্। নিবর্ত্ত্য গান্ততঃ সর্বাঃ পাণ্ডুপুত্রা মহারথাঃ। অবজিত্য স্থশর্মাণং ধনঞাদার সর্বশ:॥ স্ববাহবলসম্পন্না হ্রীনিষেবা যতত্রতা:। বিরাটস্য মহাস্মান: পরিক্লেশবিনাশকা:। স্থিতা: সমকং তে সর্বের ত্বথ ভীমোহভ্যভাষত। [বিরাটস্য মহারা**জ** পরিক্রে**টা নরাধমঃ।] নায়ং পাপস**মাচারো মত্তো জীবিতৃমইতি। কিন্নু শক্যং মন্না কর্ত্তুং বদ্রাজা সততং দ্বনী। গলে গৃহীতা রাজানমানীয় বিবশং বশম্॥ তত এনং বিচেটন্তং বদ্ধা পার্থো বুকোদর:। রথমারোপরামাস বিসংজ্ঞং পাংশুগু;ৡতন্ ॥ অবভ্যত্য রণমধ্যস্থমভ্যগচ্ছদ্ যুধিষ্ঠিরম্। দর্শরামাস ভীমস্ত স্থশর্মাণং নরাধিপম্॥ প্রোবাচ পুরুষব্যাদ্রো ভীমমাহব শোভিনম্। তংরাজা প্রাহসদ্ দৃট্। মুচ্যতাং বৈ নরাধিপঃ॥ এবমু**ক্তো**ংব্রবীদ্<mark>তীম: স্থশর্মাণং মহাবল:</mark>॥

ভীম উবাচ। জীবিতৃঞ্চেদে মৃঢ় হেতৃং মে গদতঃ শৃগু। দাসে। হস্মীতি স্বন্ধ বাচ্যঃ সংসংস্ক চ সভাস্থ চ॥ এবং তে জীবিতং দ্যামেষ যুদ্ধজিতো বিধিঃ। তমুবাচ ততো জোগো লাতা সপ্রণয়ং বচঃ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ। মুঞ্চ মুঞ্চাধমাচারং প্রমাণং যদি তে বরম্। দাসভাবং গভো হেষ বিরাটক্ত মহীপতে:। অদাদো গচ্ছ মুজ্জোহসি মৈবং কার্যাঃ পুনঃ কচিং॥ ১-৬১

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণ দক্ষিণ-গোগ্রহে স্থশর্মপরাজরো নাম জনুস্থিংশভ্রমেছিংগারঃ।

### চতুদ্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ

বৈশম্পান্তন উবাচ। এবম্কস্ত সত্রাড়: অশর্মাসীদধোম্থ:। স মৃক্ষো হভোত্য রাজানমভিবাছ প্রতন্থিবান্॥ প্রমৃচ্য চ অশর্মাণং পাওবাজে হতিছিব:। অবাহুবলসম্পন্না হ্রীনিষেবা বতত্রতা:। সংগ্রামশিরসে। মধ্যে তাং রাত্রিং অধিনোহ্বসন্॥ ততো বিরাট: কৌত্তেরান্তিমান্ত্র-বিক্রমান্। অর্চ্রামাস্য বিত্তেন মানেন চ মহার্থান্॥

বিরাট উবাচ। বথৈব মন রত্নানি যুমাকং তানি বৈ তথা। কার্য্যং কুক্ত বৈ সর্ব্বে বথাকামং বথান্তথন্॥ দলান্যলঙ্ক্তাঃ কক্তা বন্থনি বিবিধানি চ। মনসন্চাপ্যভিপ্রেতং যবঃ শত্রুনিবর্হণাঃ॥ যুম্মাকং বিক্রমাদত মুক্তো২হং স্বস্তিমানিহ। তন্মান্তবভো মংস্তানামীধরাঃ সর্ব্ব এব হি॥

বৈশপ্পায়ন উবাচ। তথাভিবাদিনং মৎক্তং কৌরবেদ্ধাং পৃথক্ পৃথক্। উচুঃ প্রাঞ্জলয়ঃ সর্কে যুধিষ্ঠিরপুরোগমা:॥ প্রতিনন্দাম তে বাক্যং সর্ক-ঞৈব বিশাম্পতে। এতেনৈব প্রতীতাঃ স্ম বন্ধং মৃক্তোহণ্য শক্রভিঃ॥ শুরবীৎ প্রীতমনা মৎস্তরাকো যুধিছিরম্। পুনরেব মহাবাছর্কিরাটো রাজসন্তম: ॥ এহি স্বামভিষেক্যামি মংস্করাজোহস্ত নো ভবান। মনসকাপ্যভিপ্রেতং যথেষ্টং ভূবি ছল ভিম্॥ তত্তেহ ছং সংপ্রদাস্তামি সর্বমর্হতি নো ভবান্। রত্বানি গাঃ স্থবর্ণক মণিমুক্তামথাপি চ॥ বৈরাত্রপত বিত্রেক্ত দর্ববৈধব নমোহস্ত তে। বৎকতে হত পখামি রাজ্যমাত্মানমেব চ॥ যতক জাতসংরস্তো ন চ শত্রুবশং গতঃ। ততো যুধিষ্টিরো মৎস্তং পুনরেবাদ্য ভাষত॥ প্রতিনন্দামি তে বাক্যং মনোঞ্জং মংস্ত ভাষদে। আনুশংস্যপরো নিত্তাং স্থমনাঃ সততং ভব। গচ্ছত দূতাত্বরিতং নগরং তব পার্থিব। স্থলাং প্রিয়মাখ্যাতুং লোষ-রক্ত চতে অবসুমূ॥ তস্য তহচনং শ্রুখ। দূতানু রাজা সমাদিশং। আংচকংকং পুরং গতা সংগ্রামে বিজয়ং মম ॥ কুমার্য্য: সমলস্কৃত্য পর্য্যাগচ্ছত্ত মে পুরাৎ। বাদিআদি চ সর্বাণি গণিকাশ্চ খলহৃতাঃ ॥ তে তদাজ্ঞাং ততঃ শ্রুখা রাজা মৎস্যেন চোদিতাম্। তামাজ্ঞাং শির্দা কৃত্বা প্রস্থিতা কৃষ্ট্রান্সাঃ॥ তে গনা কেবলাং রাত্রিমণ কর্য্যোদরং প্রতি। বিরাটদ্য পুরাভ্যাদে দৃতা अव्यव्यविव्यम् ॥ ১-১৯

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্ব্বণি স্থশর্মপরাজয়ো নাম চতুদ্ধিংশত্তমোহধ্যার:।

#### পঞ্চত্রিংশত্তমোইপ্রায়

বৈশম্পায়ন উবাচ। বাতে ত্রিগর্ভান্নৎস্যে তু পশৃংস্কান্ বৈ পরীব্দতি। তুর্ব্যোধনঃ সহামাত্যো বিরাটমূপরাদ্ধ॥ ভীম্মো জোণ্ড কর্ণন্ড কুপন্ড পর-মান্ত্রবিং। দ্রোণিশ্চ সৌবলশ্চৈব তথা ছঃশাসনঃ প্রভূ:॥ বিবিংশভির্ব্বিকর্ণন্চ চিত্রদেনক বীর্য্যবান্। তুর্মুপো তুঃসহ (ল)কৈত বে চাক্তে চ মহারপা: ॥ এতে মৎস্তামূপাগম্য বিরাটস্ত মহীপতে:। বোষান্ বিজাব্য তরসা গোধনং बङ্ग-রঞ্জনা॥ ষ্টিং গ্রাং সহস্রাণি কুরবঃ কালম্বন্তি চ। মহতা রণ্বংশেন পরিবার্য্য সমস্ততঃ । গোপালানাম্ভ ঘোষতা হস্ততাং তৈম হারথৈঃ। আরাবঃ স্বমহানাসীৎ সম্প্রহারে ভয়ক্ষরে । গোপাধ্যকো ভয়ত্রত্তো রথমান্থায় স্বরঃ। क्रशाम नगत्रारिवर পরিক্রোশংস্তদার্ত্তবং ॥ সম্প্রবিশ্র পুরং রাজ্ঞো রাজ্ববেশ্মা-ভ্যরাত্ততঃ। অবতীর্য্য রথাতূর্ণমাখ্যাতৃং প্রবিবেশ হ॥ দৃষ্টা ভূমিঞ্জয়ং নাম পুত্রং মংক্রদ্য মানিনম। তথ্য তৎ সর্কমাচ্ট রাষ্ট্রস্য পশুকর্ষণম্॥ ষ্টিং গবাং সহস্রাণি কুরবঃ কালয়ন্তি তে। তাৰিজেতুং সমৃত্তিষ্ঠ গোধনং রাষ্ট্রবর্দ্ধনম্॥ রাজপুত্র হিতং প্রেপ্সুঃ কিপ্রং নির্বাহি বৈ স্বয়স্। আং হি মৎস্যো মহীপালঃ সৈত্তপালমিহাকরোও॥ তাং বৈ পরিষদো মধ্যে শ্লাঘতে স নরাধিপঃ। পুত্রো মমাত্ররপশ্চ শূরশ্চেতি কুলোছছ:॥ ইম্বন্ধে নিপুণো বোধ: সদা বীরশ্চ মে স্তঃ। তদ্য তৎ সত্যমেবাস্ত মহুদ্যেজ্ব দ্য ভাষিতম্॥ আবর্ত্তর কুরন্ বিজ পশৃন্ পশুমতাম্ব । নির্দিইেষামনীকানি ভীমেন শরতেজ্সা । ধরুশচ্যতৈ ক্র-পুড়োঃ শরৈঃ সন্নতপর্কভিঃ। দ্বিতাং ভিন্ধানীকানি গঞ্জানামিব যুথপঃ॥ পাশোপধানাং জ্যাতন্ত্রীং চাপদত্তাং মহাস্থনাম্। শরবর্ণাং ধরুবীণাং শত্রুমধ্যে প্রবাদর। ধেতা রজতসকাশা রথে যুজ্যন্ত তে হয়া:। ধ্রক্তঞ্চ সিংহং সৌবর্ণ-মুদ্ধরম্ভ চ তে বিভো ॥ রুক্মপুঝা: প্রসন্ধাগ্রা মুক্তা হস্তবতা অয়া। ছাদয়ন্ত শরা: ত্র্যাং রাজ্ঞাং মার্গনিরোধকাঃ। রণে জিহা কুরুন সর্কান ৰজ্পাণি-तिवास्त्रतान्। यत्ना महत्रवाशा चः श्रीवत्नतः भूतः भूतम्। चः हि तांड्वेमा श्रतमा গতিম ৎস্যপতে: সূত:। মথা হি পাণ্ডুপুত্রাণামর্জুনো জয়তাংবর:॥ এবং গতিত্বং মৎস্তানাং ভব বংশবিবর্দ্ধনঃ। গতিমস্তো ভবত্বত সর্বে বিষয়বাসিনঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। স্ত্রীমধ্য উক্তন্তেনাসো তথাক্যমভয়ক্ষরম্। অস্তঃপুরে শ্লাঘমান ইদং বচনমত্রবীৎ॥ ১-২২

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতাগ্রাং বৈশ্বাদিক্যাং বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বাণি পঞ্চজিংশন্তমোহখ্যারঃ।

### ষ্ট্তিংশগুমে হাই

বৈশন্দায়ন উবাচ। (শ্রুষা তদর্জুনবাক্যং রাজ্ঞঃ পুত্রস্য ভাষতঃ। অতীত-সময়ে কালে প্রিয়াং ভার্যামনিনিতাম্। ক্রপদস্য স্থতাং তথীং পাঞ্চানীং পাবকাজ্মান্। সত্যার্ক্তবগুণোপেতাং ভর্তুঃ প্রিয়হিতে রতাম্। উবাচ রহিসি প্রীতঃ কৃষ্ণাং সর্বার্থকোষিদঃ। উত্তরং ক্রহি কল্যাণি ক্ষিপ্রং মন্থচনা-দিদন্। অয়ং বৈ পাগুবস্যাসীৎ সার্থিং সন্মতো দৃঢ়ঃ। মহার্দ্ধের্ সংসিদ্ধঃ স তে যন্তা ভবিষ্যতি ॥ বৈশন্দায়ন উবাচ।) তস্য তন্ধচনং স্ত্রীষ্ ভাষতশ্চ পুনঃ পুনঃ। ন চামর্বত পাঞ্চালী বীভৎসোঃ পরিকীর্ত্তনম্ ॥ অথৈনমুপ্সক্ষয় স্ত্রীমধ্যে সা যশন্দিনী। ব্রীড্মানের শনকৈরিদং বচনমন্ত্রীৎ ॥ বোহসৌ বৃহন্ধারণাভো ব্রা স্থিয়দর্শনঃ। বৃহন্ধলেতি বিখ্যাতং পার্থস্যাসীৎ স সার্থিঃ ॥ ধরুম্বতাং বরশ্চাসীন্তস্য শিস্তো মহাত্মনঃ। দৃষ্টপূর্বো ময়া বীরশ্চরন্ত্যা পাগুবান্ প্রতি॥ যদা তৎ পাবকো দাবমদহৎ খাগুবং বনম্। অর্জুন্স্য তদানেন সংগৃহীতা হয়োন্তমাঃ ॥ তেন সার্থিনা পার্থঃ সর্বজ্বানি সর্বশঃ। অক্ষরৎ থাগুবপ্রস্থে ন হি বস্তান্তি তাদৃশঃ॥

উত্তর উবাচ। সৈরদ্ধি আনাসি তথা যুবানং, নপুংসকো নৈব ভবেদ্ বথাসো। অহং ন শক্রোমি বৃহয়লাং ওভে, বক্তৃং অয়ং বচ্ছ হয়ান্ মমেতি বৈ ॥ জৌপত্যবাচ। বেয়ং কুমারী স্থাপ্রোণী ভগিনীতে ববীয়সী। অস্যাং স বীর বচনং ক্রিয়তি ন সংশয়ঃ॥ বদি বৈ সার্থিঃ স স্যাৎ কুরন্ সর্বান্ন সংশয়ঃ। ৰিখা গাশ্চ সমাদার গ্রুবমাগমনং ভবেৎ॥ এবমুক্ত: স সৈরস্কুটা ভগিনীং প্রত্যভাষত। গছ খ্যুমনব্যাদি তামানর বৃহর্গাম্॥ সা ভারা প্রেষ্টিতা শীঘ্রমগছ্যুর্তনালয়ম্। যুৱান্তে স মহাবাহশ্ছয়: স্ত্রেণ পাশুব:॥ ১-২৪

ইতি মহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বগৃত্তর গোগ্রহে সৈরক্ষীবাক্যং নাম ষট্তিংশত্তমোহধ্যারঃ।

#### সপ্তত্তিংশতমোহপ্রায়ঃ

বৈশশায়ন উবাচ। সা প্রান্তবৎ কাঞ্চনমাল্যধারিণী, জ্যেষ্ঠেন ল্রাজ্র প্রহিতা ধশবিনী। অদক্ষিণা বেদিবিলগ্নমধ্যা, সা পদ্মপত্রাভনিভা শিপণ্ডিনী॥ তথা শুভালী মণিচিত্রমেপলা, মৎক্রন্ত রাজ্ঞন্তনয়া শ্রিয়া বৃতা। তন্নর্তনাগারমরাল-পন্মা, শতহুদা মেঘমিবাভাপভত॥ সা হন্তিহন্তোপমসংহতোররনিন্তিতা চারুদতী সুমধ্যমা। আসাভ তং বৈ বরমাল্যধারিণী, পার্থং শুভা নাগবধ্রিব বিপম্॥ সা রত্ত্বভা মনসং প্রিয়ার্চিতা, [শ্রেয়াবৃতা] স্থতা বিরাটক্ত মথেক্র-ল্মীয়। প্রম্পে বশবিনী, প্রীত্যারবীদর্জ্বনমায়তেকণা॥ স্লসংহত্রেয়ং কনকোজ্জ্লপদ্বচং, পার্থং কুমারীং স তদাভাভাষত। কিমাগমং কাঞ্চনমাল্যধারিণি, মুগাক্ষি কিং তং ত্রিতেব ভামিনি॥ কিং তে মুথং সুন্দরি ন প্রসর্মাচক্ষ্ তত্তং মম শীন্তমন্তন॥

বৈশন্দায়ন উবাচ। স তাং দৃষ্ট্বা বিশালাক্ষীং রাজপুল্লীং সথীং সথা। প্রহন্মরবী দ্রাজন্ কিমাগমনমিত্যত ॥ তমরবী দ্রাজপুল্লী সম্পেত্য নর্বভ্রম্। প্রণয়ং ভাবয়ন্তী সা সধীমধ্য ইদং বচঃ ॥ গাবো রাষ্ট্রস্ত কুক্তিঃ কাল্যন্তে নো বৃহয়লে। তান্ বিজেত্ং মম ল্রাভা প্রয়াস্তি ধয়্র্র্র্র্য়ঃ ॥ নাচিরং নিহতত্ত্বসংগ্রামে রথসারথিঃ। তেন নান্তি সমঃ স্বতো বোহস্ত সারথ্যমাচরেৎ ॥ তিন্দ্র প্রয়তমানায় সারথ্যর্থং বৃহয়লে। আচচক্ষে হয়জ্ঞানে সৈরন্ধী কৌশলং তব ॥ (অর্জুনস্ত কিলালীত্বং সারথির্দিয়িতঃ পুরা। ত্রয়ালয়ৎ সহায়েন পৃথিবীং গাণ্ডবর্ষতঃ ॥) সারথ্যক্ষ মম ল্রাত্বঃ কুরু সাধু বৃহয়লে। দ্রাদ্রতরং গাবো হিয়ত্বে কুরুভির্হি নঃ ॥ অবৈত্বচনং মেহত্ব নিযুক্তা ন করিয়্যাসি প্রবাহাচ্যমানা হং পরিত্যক্ষ্যামি জীবিতম্ ॥ এবমুক্তন্ত স্বশ্রোণ্যা তরা সথ্যা পরস্তপঃ । জগাম রাজপুল্লস্ত সকাশমমিত্যোজ্বনঃ ॥ তং সা ব্রক্তং ত্রিতং প্রতির্দিমিব কুলয়ম্। অবগচ্ছবিশালাক্ষী গজং গজবধুরিব ॥ দ্রাদেব তু তাং

প্রেক্য রাজপুত্রোহভ্যভাষত। ত্বরা সার্থিনা পার্থ: থাওবেহয়িমতর্পরৎ ॥
পৃথিবীমলরং কুংস্নাং কুন্তীপুত্রো ধনজয়:। সৈরন্ধী তাং সমাচটে সা হি জানাতি
পাওবান্॥ সংযক্ত মামকানখাংস্তবিধ তং বৃহর্তো। কুক্তির্যোৎস্থমানস্থ
গোধনানি পরীকাত:॥ অর্জুনস্থ কিলাসীত্বং সার্থিদিয়িত: প্রা। ত্বয়াহলরৎ সহায়েন পৃথিবীং পাওবর্ষভঃ॥ এবমৃক্তা প্রত্যাচ রাজপুত্রং বৃহর্গা।
কা শক্তির্মম সার্থ্যং কর্তুং সংগ্রামমূর্দ্ধনি॥ গীতং বা যদি বা নৃত্যং বাদিত্রং
বা পৃথিথিধন্। তৎ করিয়ামি ভদ্রন্তে সার্থ্যন্ত কুতো মম॥

উত্তর উবাচ। গারনো নর্ত্তনো বাপি বাদনো বা পুনর্ভব। ক্ষিপ্রাং মে রথমাস্থার নিগুহ্লান্ত হয়োত্তমান্ ॥

বৈশশ্পান্ধন উবাচ। স তত্র নর্মসংযুক্তমকরোৎ পাণ্ডবো বহু।
উত্তরারাঃ প্রম্থতঃ সর্বং জানমরিক্ষঃ॥ উর্দ্ধান্ধ্য কবচং শরীরে প্রত্যম্কত। ক্মার্যন্তত্র তং দৃষ্টা প্রাহদন্ পৃথ্লোচনাঃ॥ স তু দৃষ্টা পিনহন্তং সম্মেবোত্তরপ্ততঃ। কবচেন মহার্হেণ সমনহৃদ্ বৃহয়লাম্॥ বভার কব চঞ্চাপ্রাং সম্মাণ্ডমংপ্রভন্। ধ্বজং সিংহং সমৃদ্ধিত্য সার্থ্যং সমকল্লমং॥ ধন্ংবি চ মহার্হাণি বাণাংশ্চ ক্রচিরান্ বহুন্। আদান্ধ প্রথয়ে বীরঃ স্বহয়লসার্থিঃ॥ অথোত্তরা চ কভাশ্চ স্থ্যন্তামক্রবংন্তদা। বৃহয়লে আনরেথা বাসাংসি ক্রিরাণি চ॥ পাঞ্চালিকার্থং চিত্রাণি স্ক্রাণি চ মৃদ্নি চ। বিজ্ঞিত্য সংগ্রামগতান্ ভীমন্তোণম্থান্ ক্রন্॥ এবং তা ক্রবতীঃ কভাঃ সহিতাঃ পাণ্ডুনক্নঃ। প্রত্যবাচ হুদ্ন পার্থে। মেশ্চুক্তিনিস্কনঃ॥

বৃহন্ধলোবাচ। বত্যভারোখনং সংগ্রামে বিজেয়তি মহার্থান্। তদা হরিব্যে বাসাংসি দিব্যানি কচিরাণি চ॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। এবম্জ্বা তৃ বীতৎস্ততঃ প্রাচোদয়দ্যান্।
কুল্লনভিম্থঃ শ্রো নানাধ্যকগতাকিনঃ॥ তম্ভরং বীক্ষ্য রথোভমন্থিতং,
ুর্হল্লায়াঃ সহিতং মহাভূদ্য শ্রিষণ কন্তাণ্ড বিশাদ স্বতাঃ, প্রদক্ষিণং
চক্র্রথোচ্রদনাঃ॥ বদৰ্জ্ন অর্থভত্ন্যগামিনঃ, পুরাভবং থাওবদাহমদলম্।
কুল্ন সমাসাত্ত রবে বৃহল্লে, সহোভবেগাত্ত দত্ত মদলম্॥ ১——৩৪

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাণু-ভরগোগ্রহে সপ্তক্রিংশতমোহধ্যারঃ।

### অষ্টাত্রিংশত্তমোহপ্রায়ঃ

देवनन्नावन छेवाछ। न बाक्यां निर्याव देवबाधिः शृथिवीक्षवः । श्ववादी छाबवीर स्वः यब दठ क्वरवा गंजाः ॥ नमदवजान् क्वन् नर्सान् विकिशिव्न्
विकिछा देव । गांख्याः किश्रमां त्राव्यामायः भूवम् ॥ उठ्छाः त्मान् । दठ हवा नविनः दिन् । उठ्छाः त्मान् । दठ हवा नविनः दिन । उठ्छाः त्मान् । व्यव्यक्ष्यामा निवः ॥ वाि त्व्यक्ष्या । व्यव्यक्ष्यामा व्यव्यक्ष्या । व्यव्यक्ष्यामा क्वन्य । व्यव्यक्ष्यामा क्वन्य । व्यव्यक्ष्य । व्यव्यक्ष्यक्ष्य । व्यव्यव्यक्ष्य । व्यव्यक्ष्य । व्यव्यक्ष्य । व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्

উত্তর উবাচ। নোৎসহে কুক্ ভির্মোদ্ধ্ রোমহর্ষণ পশ্ত মে। বছপ্রবীরমত্যুগ্রং দেবৈরপি ছ্রাসদম্॥ প্রতিযোদ্ধ্ ন শকোমি কুক্ সৈশ্তমনন্তক্ম। নাশংসে ভারতীং সেনাং প্রবেষ্ট্র্ণ ভীমকার্ম্কাম্। রথনাগাখ-:
কলিলাং পত্তিধ্বক্তসমাকুলাম্॥ দুট্টেব হি পরানাক্ষো মনঃ প্রব্যথতীব মে।
মত্র জোণশ্চ ভীশ্বন্দ কুপাং কর্ণো বিবিংশতিং। অখখামা বিকৃপিন্চ সোমদন্তক্ত
বাহ্লিকং। ছর্যোধনন্তথা বীরো রাজা চ রথিনাং বরং॥ ছ্যতিসন্তো
মহেলাসাং সর্ক্রে যুদ্ধবিশারদাং। দুট্টেব হি কুর্ননেতান্ ব্যুঢ়ানীকান্ প্রহারিণং।
স্ব্রিতানি চ রোমাণি কখাল্ঞাগতং মম॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। অবিজ্ঞাতো বিজ্ঞাতন্ত মুর্থো ধৃর্ত্তন্ত পদ্রভঃ। পরিদেবরতে মন্দঃ সকাশে সব্যসাচিনঃ॥

উত্তর উবাচ। ত্রিগর্তান্ মে পিতা যাতঃ শৃক্তেৎস্থিন্ সরিধার নাম্। সর্বাং সেনামুপাদার ন মে সন্তীহ সৈনিকাঃ॥ সেহহমেকো বহুন্ বালঃ কৃতাস্থানকৃতপ্রমঃ। প্রতিবোদ্ধুং ন শক্ষেমি নিবর্ত্তর বৃহর্ষে ॥

বৃহরলোবাচ। ভরেন দীনরপোংসি বিষতাং হর্ষবর্ধনঃ। ন চ ভাবৎ ক্লতং কর্ম পরে: কিঞ্চিদ্রণাজিরে ॥ স্বরমেব চ দামাথ বহ মাং কৌরবান্ প্রতি। সোহহং স্বাং ভত্ত নেব্যামি বলৈতে বহুলা ধ্বকাঃ ॥ মন্ত্রমামিবগৃদ্ধানাং [মধ্যমামিবগৃধানাং] কুরুণামাতভারিনাম্। নেব্যামি স্বাং মহাবাহো

পৃথিব্যামপি যুধ্যতাম্। তথা স্ত্রীয়্ প্রতিশ্রত্য পৌরুষং পুরুষেরু চ।
কথ্যমানোহভিনির্যায় কিমর্থং ন যুত্ৎসদে। ন চেবিজিত্য গান্তাখং গৃহান্
বৈ প্রতিষাশ্রসি। প্রহসিষ্ঠি বীরাখাং নরা নার্যক্ষ সঙ্গতাঃ। অহমপ্যত্র
সৈরন্ধা খ্যাতঃ সার্থ্যকর্মণি। ন চশক্ষ্যাম্যনির্জিত্য গাঃ প্রযাতৃং পূর্থ
প্রতি। স্তোত্রেণ চৈব সৈরন্ধান্তব বাক্যেন তেন চ। কথং ন যুধ্যেয়মহং কুরুন সর্কান স্থিবো ভব॥

উত্তর উবাচ। কামং হরস্ক মৎস্থানাং ভ্রাংস: কুরবো ধনম্। প্রহস্ক চি মাং নার্য্যো নরাশ্চাপি বৃহন্ধলে॥ সংগ্রামে ন চ কার্য্যং মে গাবো গচ্ছস্ক চাপি মে। শৃষ্ঠং মে নগরঞাপি পিতৃঠশ্চব বিভেম্যহম্॥ নিবর্ত্তর রথং ভূবং হ্রদয়ং মে বিদীর্যাতে॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ইত্যুক্ত্বা প্রাদ্রবদ্ভীতো রথাৎ প্রস্কল্য কুণ্ডলী। ত্যুক্ত্বা মানঞ্চ দর্পঞ্চ বিস্কল্য সশরং ধহুঃ॥

বৃহয়লোবাচ। নৈষ শ্রৈঃ স্থতো ধর্মঃ ক্সঞ্জিয়ক্ত পলায়নম্। শ্রেষজ্ঞ মরণং যুদ্ধে ন ভীতক্ত পলায়নম্॥

বৈশপান্তন উবাচ। এবম্জ্বা তু কোন্ডেন্নঃ সোহবপ্লুতা রথোত্তমাৎ।
তমন্বধাবদ্ধাবন্তং রাজপুলং ধনঞ্জনঃ॥ দীর্ঘাং বেণীং বিধ্বানঃ সাধুরক্তে চ
বাসসী। বিধ্ব বেণীং ধাবন্তমজানভোহর্জুনং তদা॥ সৈনিকাঃ প্রাহসন্
কেচিত্তথারূপমবেক্ষ্য তম্ ॥ স্থশীদ্রমভিধাবন্তং সংপ্রেক্ষ্য ক্রবোহক্রবন্। ক
এব বেশসক্লো ভন্মন্তেব হুতাশনঃ। কিঞ্চিদ্য বথা পুংসঃ কিঞ্চিদ্য যথা
শ্বিয়ঃ॥ সারূপ্যমর্জুনস্তেব ক্লীবরূপং বিভর্ত্তি চ। তদেবৈত্তিছ্রোগ্রীবং
তৌ বাহু পরিঘোপমৌ॥ ত্বদেবান্ত বিক্রান্তং নাম্নমন্তো ধনঞ্জরাং।
আমরেদিব দেবেন্দ্রো মাহুষের্ ধনঞ্জয়ঃ॥ একঃ কোহন্মান্থপান্নান্নদন্তো
লোকে ধনঞ্জনাং॥ একঃ পুল্রো বিরাটপ্ত শ্ব্রে সন্ধিহিতঃ পুরে। স এব
কিল নির্যাতো বালভাবান্ন পৌক্ষাং॥ সত্রেণ নৃনং ছল্লং হি চরন্তং পার্থমর্জুন্ন্। উত্তরঃ সার্থিং ক্র্যা নির্যাতো নগরান্বহিঃ॥ স নো মন্তামহে
দুষ্টা ভীত এব পলান্নতে। তং ন্নমের ধাবন্তং জিল্পক্তিত ধনঞ্জয়ঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ইতি আ কুরবঃ সর্বে বিমৃশস্তঃ পৃথক্ পৃথক্।
ন চ ব্যবসিত্থ কিঞ্চিত্তরং শকুবৃদ্ধি তে॥ ছরং তথা তং সত্ত্বেণ পাগুবং
প্রেক্ষ্য ভারত। উত্তরন্ধ প্রধাবস্তমভূক্ত্য ধনশ্বরঃ॥ গত্বা পদশতং তূর্ণং
কেশপক্ষে পরামৃশৎ॥ সোহর্জুনেন পরামৃষ্টঃ পর্যদেবরদার্ভবং। বছলং

কুপণকৈব বিরাটন্ত স্তত্তদা। উত্তর উবাচ। শৃণুয়াখং হি কল্যাণি বৃহরলে স্বধ্যমে। নিবর্ত্তর রুণং ক্ষিপ্রং জীবন্ তত্তাণি পশ্যতি। শাতকুরুত্ত শুদ্ধশু শতনিকান্ দদামি তে। মণীনটো চ বৈদ্ব্যান্ হেমবদ্ধান্মহাপ্রভান্। হেমদগুপ্রতিদ্ধাং রুণং যুক্তঞ্চ স্বত্রতৈঃ। মতাংশ্চ দশমাত্ত্বান্ মুঞ্চ মাং বং বৃহর্ত্তা

देवन श्रीवन উवाह। এवमानीन वाकानि विकाश स्वाद्य स्व अव्याद्य विकाश स्व अविकास स्व अविकास

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং বিরাটপর্বাণ উত্তর ভলে। নাম স্বষ্টাতিংশতমোহধ্যায়ঃ।

#### উমচন্তারিংশত্তমো>ধ্যারগ

বৈশশারন উবাচ। তং দৃষ্টা ক্লীবর্মণেশ চরন্থং পার্থমর্জ্নন্। শনীমভিন্থং বান্ধং রথমারোপ্য চোভরন্ ॥ ভীন্মজোণমূথান্ত কুরবো রথিমন্তমাঃ। বিজ্ঞানন্য সর্বে ধনগরকভাত্তরাং ॥ তানবেক্ষ্য হতোৎসাহাত্তংপাতানপি চাত্তান্। গুরুঃ শস্তভাং প্রেচা ভারবাজ্যোহাত্তাব্ত ॥ চগুল্চ বাতাঃ সংবান্তি রক্ষাঃ শর্ববর্ষিণঃ। ভস্মবর্পপ্রকাশেন তমসা সংবৃত্তং নভঃ॥ নিঃসরন্তি চ কোবেভ্যঃ শস্তানি বিবিধানি চ। শিবান্চ বিনদন্ত্যেতা দীপ্তারাং দিশি দাক্রণাঃ ॥ হয়াশ্যান্দি মুঞ্জি ধ্বজাঃ কল্পন্ত্যকম্পিতাঃ। রক্ষবর্ণান্চ জলদা দৃষ্ঠান্তেংভ্তদর্শনাঃ॥ বতা ভবন্তন্তিন্ত সাধ্বসং সম্পন্থিত্ব ॥ রক্ষবেষপি চাত্মানং ব্যহ্ধবং বাহিনীমপি। বৈশস্ক প্রতীক্ষরং রক্ষবেঞ্চাপি গোধনম্॥ (বাদৃশান্ত রূপাণি দৃশ্বন্তে চ বহুন্তপি)। এব বীরো মহেঘানঃ

সর্কশন্ত্রভূতাং বর:। আগতঃ ক্লীবর্রপেণ পার্থো নাল্যক্ত সংশর:॥ নদীক্ষলক্ষেশবনারিকেত্র পাহ্বরো নাম নগারিক্ছ:। এবোহজনাবেশধরঃ
কিরীটা, জিলা বয়ং নেব্যতি চাল্ল গাব:॥ স এব পার্থো বিজ্ঞান্তঃ
সব্যসাচী পরস্তপ:। নার্জেন নিবর্ত্তে সর্বৈরপি সুরাস্থরৈ:॥ ক্লেশিভশ্বনে শ্রো বাসবেন চ শিক্ষিত:। অমর্বশমাপয়ে বাসবপ্রতিমো যুধি ॥
নেহাল্ল প্রতিবোদ্ধার্মহং পশ্রামি কৌরবা:। মহাদেবোহপি পার্থেন
শ্রেতে যুধি ভোষিত:॥ কিরাতবেশপ্রাক্ষরো গিরো হিমবতি প্রভু:॥

কৰ্ণ উৰাচ। সদা ভবান্ কান্তনক্ত গুণৈরন্মান্ বিক্থতে। ন চাৰ্জ্নঃ কলাপুৰ্ণো মম হুৰ্য্যোধনক্ত চ ॥

ভূৰ্ব্যোধন উবাচ। বজেৰ পাৰ্থে রাধের ক্বতং কার্য্যং ভবেশ্বন। আতাঃ পুনল্ডরিক্ততি ঘাদশাধিকবৎসরান্॥ অথৈব কল্ডিদেবাক্তঃ ক্লীববেশেন মানবঃ। শবৈরেনং স্থানিশিতৈঃ পাত্রিক্তামি ভূত্বে॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তন্মিন্ ব্রুবতি ত্থাক্যং ধার্ত্তরাষ্ট্রে পরস্তপ । ভীম্মে জোণ: রুপো দ্রোণি: পৌরুষং তদপুষ্মন্॥ ১—১৭

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বপৃয়ন্তর-গোগ্রহে শর্জুনপ্রশংসানাধৈকোনচন্দারিংশন্তমোহংগ্যারঃ।

### চন্দ্রারিংশতমোহপ্যায়ঃ

বৈশপারন উবাচ। তাং শমীমৃপদক্ষয় পার্থো বৈরাটিনরবীং। স্কুমারং সমাজ্ঞার সংগ্রামে নাভিকোবিদম্ । সমাদিটো মরা কিপ্রাং তং ধন্ংস্থবভারর। নেমানি হি ত্ণীরানি সোঢ়ং শক্ষান্তি মে বলম্ ॥ ভারং বাপি
গুরুং বোচুং ক্রুরকাপি মর্কি হুন্। মম বা বাছবিকেপং শজনিহ বিজেপ্তঃ ॥
তুমার মিক্ররারোছ শমীমেতাং পলাশিনীম্ । অভাং হি পাণ্ডুপুল্লাণাং ধন্ংবি
নিহিতাহ্যত ॥ ঘ্রিটিরক্ত ভীমক্ত বীভংসোর্যমেরোত্তথা। ধ্রকাঃ শরাক্ষ
শ্রামাং নিব্যানি কবচানি চ ॥ অজ চৈত্রহাবীর্যাং ধহুং পার্পক্ত গাণ্ডিবম্ ।
ক্রং শতসহত্রেপ সন্মিতং রাষ্ট্রের্নম্ ॥ ব্যারামসহমত্যর্থং ভূণরাজ্বসমং মহৎ। সর্বার্থমহামাত্রং শক্রসভাধকারকম্ ॥ স্বর্ণবিকৃতং দিবাং

লক্ষমায়তমত্রণম্। অলং ভারং গুরুং বোচুং দারুণং চারুদর্শনম্। ভাদৃশান্তেব সর্বাণি বলবস্তি দৃঢ়ানি চ। বুধিটিরত ভীমত বমরোশ্চ ভংগান্তর (বীতৎ-লোর্থময়োত্তপা)॥ ১—৮

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বণ্যন্তরগোগ্রহে অল্পদর্শনং নাম চন্দারিংশভ্রমোহধ্যার:।

### একচত্বারিংশত্তমোহধ্যায়%

উত্তর উরাচ। অস্মিন্ বৃক্ষে কিলোঘদ্ধং শরীরমিতি ন: শ্রুষ্। তদ্ধং রাজপুত্র: সন্স্পেরং পাণিনা কথম্॥ নৈবংবিধং মরা যুক্তমালদ্ধং ক্ত্র-বোনিনা। মহতা রাজপুত্রেণ মন্ত্রতবিদাস্তা॥ স্পৃষ্টবন্তং শরীরং মাং শ্ববাংমিবাত্চিম্। কথং বা ব্যবহার্যাং বৈ ক্কৌথান্থং বৃহন্তল ॥

বৃহন্নলোবাচ। ব্যবহার্য্যন্দ লোকেষু শুচিকৈব ভবিষ্যসি। ধন্ংস্থেতানি মা ভৈশ্বং শরীরং নাত্র বিষ্ণতে ॥ দায়াদং মংশুরাজশু কুলে জাতং মনশিনাম্। কথং খাং নিশিতং কর্ম কার্যেয়ং নৃপাত্মজ ॥

বৈশাপায়ন উবাচ। এবমুক্তঃ স পার্থেন রথাৎ প্রস্কল্য কুণ্ডলী। আল্লন্রোহ শমীবৃক্ষং বৈরাটিরবশন্তদা॥ তমন্বশাসজ্জ্রেরোর বে তিন্তন্ ধনঞ্জঃ। অবরোপর বৃক্ষাগ্রাজন্ংস্কেতানি মা চিরম্॥ পরিবেটনমৈতেষাং ক্লিপ্রেইক্ব ব্যপাক্ষণ। সোহপত্ততা মহার্হাণি ধন্ধে পৃথ্বক্ষসাম্॥ পরিবেটনপত্তাণি বিমৃচ্য সম্পানরৎ। ততঃ সন্ধহনাক্তেষাং পরিমৃচ্য সমস্ততঃ॥ অপশালি বিবিদ্যে সম্পানরৎ। ততঃ সন্ধহনাক্তেষাং পরিমৃচ্য সমস্ততঃ॥ অপশালি বিবেক্তে তেল চুর্ভিরপরেঃ সহ॥ তেবাং বিমৃচ্যমানানাং ধহুষামর্কবর্তসাম্। বিনিক্তেকঃ প্রভা দিব্যা গ্রহাণামুদরেছিব॥ স তেবাং রূপমালোক্য ভোগিনামিব জ্প্ততাম্। স্তইরোমা ভরোছিয়ঃ ক্ষণেন সমপত্তত॥ [তত্পম্পুশ্রাক্তরাম্ বিস্কার্যাং সারবে কিমিদং শেতে নাগেক্রো বাপি বাধনম্]॥ সংস্পৃশ্র তানি চাপানি ভাত্মক্তি বৃহন্তি চ। বৈরাটিরর্জ্বং রাজ্বিদং ব্যবনমন্ত্রীৎ॥ ১—১২

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বণাত্তরগোগ্রহে অস্ত্রারোপণে একচন্দারিংশত্তমোহং।

#### কুচিছারিংশ**ভ**মোহধ্যারঃ

উন্তর উবাচ। বিন্দবো জাতরূপক্ত শতং বন্দিরিপাতিতা:। সহস্রকোট্য: সৌবর্ণাঃ কল্পৈতদ্বত্তমন্ ॥ বারণা খন সৌবর্ণাঃ পৃষ্ঠে ভাসস্তি দংশিতাঃ। ৰূপাৰ্য সুগ্ৰহঞ্চৈৰ কলৈডদ্বকৃত্ৰম্ম। তপনীয়ন্ত ওছত পৃষ্ঠে ৰজেজ-পোপকা:। পৃষ্ঠে বিভক্তা: শোভন্তে কল্ডিডদ্বক্তমন্। স্ব্যা ষত্ত চ সৌবর্ণাস্থরো ভাসন্তি দংশিতা:। তেজ্বসা প্রজ্ঞলন্তো বৈ কল্পৈতদমুক্তবস্ম। শলভা যত্ৰ সৌবৰ্ণাশ্বপনীয়বিভৃষিতাঃ। স্থবৰ্ণমণিচিত্ৰঞ্চ কল্পৈতদ্বসুক্তমম্ ॥ ইমে চ ক্স্য নারাচা: সাহস্রা লোমবাহিন:। সমস্তাৎ কলধৌতাগ্রা উপা-সত্তে হিরগ্নরে। বিপাঠা: পূথব: কস্য গার্দ্ধ পত্রা: শিলাশিতা:। হার্নিড-वर्षाः मृज्यः शोजाः मृद्धाव्याः मृद्धाः ॥ कृताव्यमिज्नाशः शक्षमार्षे वनक्यः । বরাহকর্ব্যামিশ্রান শরান ধারয়তে দশ ॥ কস্যেমে পূথবো দীর্ঘাঃ সর্বপারশবাঃ শরা: (চক্রবিম্বার্দ্দর্শনা:)। শতানি সপ্ত তিষ্ঠস্তি নারাচা ক্রধিরাশনা:।। কল্যেমে শুকপত্রাভি: পূর্বৈর্দ্ধি: স্থবাসস:। উত্তরৈরায়লৈ: পীতৈর্হেমপুর্টেখা: শিলাশিতা: ॥ গুরুভারসহো দিব্য: শাত্রবাণাং ভয়কর: । ক্স্যায়ং সায়কো मीर्यः भिनीशृष्ठेः भिनीमृथः ॥ देवश्राच्यकारव निहित्छा दश्मित्वदनस्म शन् । সুফলশ্চিত্রকোষশ্চ কিঙ্কিণীসায়কো মহান ॥ কস্য হেমৎসর্কুদিব্যঃ খড়গঃ পরমনির্বণ:। কস্যায়ং বিমল: থড়েগা গব্যে কোষে সমর্পিত:॥ হেমৎ-मक्त्रनांष्ट्रा निष्रां। ভाরসাধनः। क्या পঞ্চনথে কোষে माम्रत्या হেমবিগ্রহ: ॥ প্রমাণরপদম্পন্ন: পীতশ্চাকাশসন্নিভ:। কস্য হেমমন্নে কোষে স্থৃতথ্যে পাবকপ্রভে । নিদ্ধিংশোহয়ং গুরু: পীত: শৈক্য: পরমনিত্রণ:। ( সায়ক: পরনির্বণ: ) কস্যায়মসিত: খড়েগা হেমবিন্দুভিরাবৃত: ॥ आশী-বিষদমস্পর্ন: পরকারপ্রভেদন:। গুরুভারসহো দিব্য: দপত্মানাং ভরপ্রদ:॥ নির্দ্দিশর বথাতত্তং ময়া পৃষ্টা বৃহন্ধলে। বিক্সয়ো মে পরো জাতো দৃষ্টা সর্বামিদং মহৎ ॥ ১---১৮

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বপুত্তরপোগ্রহে আযুধদর্শনে বাচতারিংশভ্রমো২ধ্যার:।

### **ত্রিচত্বারিংশগুমো**ইপ্যারঃ

বৃহরলোবাচ। বন্মাং পূর্ব্ধমিহাপৃচ্ছ: শক্রসেনানিবর্হণম। গাণ্ডীবমেতৎ পার্থস্থ লোকেয় বিদিতং ধহু:॥ সর্বায়ুধমহামাত্রং শাতকৃত্তপরিষ্কৃতম্।

 थण्डनम्ब्नगानीनगांशीवः शत्रमाय्थम् ॥ वंडाक्छन्रत्यं निष्णः त्रांडेवर्षनम् । এণন্। দেবমান্ত্ৰণদ্ধি: পৃদিতং শাখতী: সমা:॥ এতহুৰ্বসহস্ত বনা পূর্ব্যধারমং। তভোহনন্তরমেবাথ প্রকাপতিরধারমং॥ ত্রীণি পঞ্চলতক্ষৈত্র শক্ৰোহণীতিঞ্প পঞ্চ বৈ। সোম: পঞ্চশতং রাজা তথিব ৰক্ষণ: শতম্॥ পাৰ্থ: পঞ্চ ৰষ্টিঞ্চ বৰ্ষাণি খেতবাহন:। মহাবীৰ্য্যং মহদ্দিব্যমেতদ্বসূত্ৰসম্ 🛭 এতং পার্থমনং প্রাপ্তং বরুণাচ্চারুদর্শনম্। পুঞ্জিতং সুরুমর্ব্যেষ্ বিভর্তি পর্মং বপু:। স্থপার্য ভীমসেনত জাভরপগ্রহং ধরু:। বেন পার্বোহজরৎ কুৎলাং দিশং প্রাচীং পরস্তপঃ। ইক্রপোপকচিত্রঞ্চ বদেভচ্চারুদর্শনম্। রাজ্ঞা व्धिव्रित्रां व्यवादि वक्षक्षम् ॥ पूर्वा विवाद ! त्रीवर्गाः श्रवानत्त्व श्रवान निनः। टिंबना अखना छ। देन नक्नरेमा छना पूर्य । नन्छ। यदा स्मोदर्श छ-পনীয়বিচিত্রিতা:। এতন্মাদ্রীস্তস্যাপি সহদেবস্য কার্প্রন্। বে বিষে স্থুর সন্ধাশা:সহত্রং লোমবাহিন:। এতেহর্জ্জনস্য বৈরাটে পরা: সর্পবিৰো-পৰ্মা:॥ এতে জ্বলম্ব: সংগ্ৰামে তেজসা শীব্ৰগামিন:। তবন্ধি বীর্স্যাক্ষ্মা ব্যহতঃ সমরে রিপূন্। বে জিমে পৃথবো দীর্ঘাশ্চক্রবিম্বার্দ্ধদর্শনাঃ। এতে ভীমদ্য নিশিতা রিপুক্ষরকরা: শরা:॥ হারিদ্রবর্ণা বে ত্বেতে হেমপুঝা: শিতা: শরা:। নকুলস্য কলাপোছয়ং পঞ্চশার্ছ ললকণ:॥ বেনাসে ব্যক্তরং কংলাং প্রতীচীং দিশমাহবে। কলাপো হেষ তৃস্যাসীনাত্রীপুত্রস্য ধীমত: ॥ বে বিষে ভারুরাকারা: সর্ব্বপারসবা: শরা:। এতে চিত্রক্রিরোপেডা: সহ-দেবস্য ধীমত:। বে বিষে নিশিক্তা: পীতা: পুৰবো দীৰ্ঘবাসস:। হেম-পুঝাল্পিপর্কাণো রাজ এতে মহাশরা: ॥ বছরং সারকো দীর্ঘ: শিলীপৃষ্ঠ: শিলী-ম্থ:। অর্জুনস্যৈর সংগ্রামে গুরুভারসংহা দৃঢ়:॥ বৈরাত্তকোর: স্মহান্ ভীমদেনস্য সায়ক:। গুরুভারসহো দিব্য: শাত্রবাণাং ভয়ুকর:॥ শ্চিত্রকোষণ্ট হেমৎসক্ররত্বসঃ । নিস্তিংশঃ কৌরবস্যৈর ধর্মরাজস্য ধীমতঃ । ৰম্ভ পঞ্চনথে কোষে নিহিতশ্চিত্ৰদীবনে। নকুদদ্যৈৰ নিশ্বিংশো গুৰুভাৱসহো हुए: ॥ वस्तरः विश्रृतः थट्फा। भटवा क्लांटर সমর্পিত:। সহদেবসা विद्यानः সর্বভারসহং দৃঢ়ম্॥ ১—২৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্মণ্য ত্তরগোপ্তহে উত্তরস্যাত্মদর্শনে বিচডারিংশতবােহণ্যারঃ।

### চতুশ্চত্মারিংশত্তমোহ্থারঃ

উত্তর উবাচ। সুবর্ণবিকৃতানীমাস্থার্থানি মহাত্মনাম্। কৃচিরাণি প্রকাশন্তে পার্থানামাশুকারিণাম্॥ ক মু ত্মিদর্জ্নঃ পার্থ: কৌরব্যো বা ব্ধিটির:। নকুলঃ সহদেবক্চ ভীমসেনক্চ পাশুবঃ॥ সর্ব্ধ এব মহাত্মানঃ সর্ব্বেহ্মিত্রবিনাশিন:। রাজ্যমকৈঃ পরাকীর্য্য শ্রেরত্তে ন কথঞ্চন॥ দ্রৌপদী ক চ পাঞ্চালী ত্রীরত্বং ভূবি বিশ্রুতা। জিতা চাকৈত্বদা কৃষ্ণা তাংকৈবাৰ্গমহনম্॥

জ বাচ। অহমস্ম জুন: পার্থ: সভান্তারো বৃধিষ্টির:। বলবো

ভীমসেনত পিতৃত্তে রসপাচক:॥ অশ্বন্দোহথ নকুল: সহদেবত পোকৃলে।

সৈরক্ষ্মীং দ্রৌপদীং বিদ্ধি ষস্তার্থে কীচকা হতা:॥

.

উত্তর উবাচ। দশনামানি পার্থস্থ বানি পূর্বং শ্রুতানি মে। প্রক্রয়া-স্থানি বদি মে শ্রুদ্ধ্যাং স্ক্রমেব তে॥

উত্তর উবাচ। কেনাসি বিশ্বরো নাম কেনাসি খেতবাহন:। কিরীস কেন নামাসি সব্যসাচী কথং ভবান্॥ অর্জ্জ্ন: ফাস্ক্রনো জিফু: রুফো বীভং-প্রবেব চ। ধনশ্বস্থাত কেনাসি প্রব্রহি মম তত্তত:॥ শ্রুতা মে তত্ত্ব বীরক্ত কেবলা নামহেতব:। তৎসর্কং বদি মে ব্রয়া: শ্রুদধ্যাং সর্ক্রমেব তে॥

অর্জুন উবাচ। সর্বান্ অনপদান্ জিবা বিত্তমাদার কেবলম্। মধ্যে বনন্ত তিষ্ঠামি তেনাহ্বাং ধনঞ্জরম্ ॥ অভিপ্রয়মি সংগ্রামে বনহং যুদ্ধহর্মদান্। নাজিবা বিনিবর্ত্তামি তেন মাং বিজ্ঞাং বিজঃ ॥ শ্বেতাং কাঞ্চনসন্নাহা রথে বৃজ্ঞান্ত মে হয়ঃ । সংগ্রামে যুধ্যমানক্ত তেনাহং শ্বেতবাহনঃ ॥ উত্তরাভ্যাং কন্তনীভ্যাং নক্তরাভ্যামহং দিবা । জাতো হিমবতং পৃষ্ঠে তেন মাং কালুনং বিছঃ ॥ পূরা শক্রেণ মে দত্তং যুধ্যতো দানবর্বভৈঃ । কিরীটং মৃদ্ধি স্ব্যাভং তেনাহর্মাং কিরীটেনম্ ॥ ন ক্র্যাং কর্ম বীভৎসং যুধ্যমানঃ কথঞ্চন । তেন দেবমন্ত্রের্ বীভৎস্থিতি বিশ্রুতঃ ॥ উভ্জে মে দক্ষিণৌ পাণী গাণ্ডীবক্ত বিক্রণ। তেন দেবমন্ত্রের্ স্ব্যুসাচীতি মাং বিছঃ ॥ পৃথিব্যাঞ্জুরস্তায়াং (চত্ত্রপায়াং) বর্ণো মে ছল্ল'ভো বতঃ । করোমি কর্ম শুরুঞ্চ তেন মামর্জ্বনং বিছঃ ॥ অহং ত্রাপো ত্র্বেগা দমনঃ পাকশাসনিঃ । তেন দেবমন্ত্রের্

জিফুৰ'ায়াহন্দি বিশ্ৰতঃ। কৃষ্ণ ইত্যেব দশমং নাম চক্ৰে পিতা মম। কৃষ্ণাবদাতত সদা প্ৰিয়ন্তাহালকত বৈ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততঃ পার্থং স বৈরাটিরভ্যবাদরদস্তিকাৎ। অহং ভূমিঞ্জরো নাম নায়াহ্যপি চোত্তরঃ॥ দিষ্ট্যা তাং পার্থ পশ্চামি স্বাপতত্তে ধনঞ্জয়। লোহিতাক্ষ মহাবাহে। নাগরাজকরোপম॥ বদজানাদবোচং তাং ক্ষমর্থনি তন্মম॥ বতত্ত্বরা কৃতং পূর্বং বিচিত্রং কর্ম তৃত্বমৃ। ততে। ভরং ব্যতীতং মে প্রতিশ্ব পরমা ছরি॥ ১—২৫

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বপুত্ররগোগ্রহে অর্জুনবিজ্ঞানং নাম চতৃশ্বারিংশত্তমোহধ্যারঃ।

### পঞ্চত্মারিংশত্তমোহধ্যারঃ

উত্তর উবাচ। আভার বিপুলং বীর রধং সার্থিনা ময়া। কভমদ্বাত-সেহনীকমুজো। বাত্যাম্যহং গ্রা॥

অর্জুন উবাচ। প্রীভোষ্মি পুরুষব্যার ন ভরং বিশ্বতে তব। সর্বান্
ফুদামি তে শক্রন্ রণে রণবিশারদ॥ স্বল্যে তব মহাবৃদ্ধে পশু মাং
শক্রভিঃ নহ। যুধ্যমানং বিমর্দ্ধেছনিন্ কুর্বাণং ভৈরবং মহৎ। এতান্
সর্বাহ্পাস্কান্ ক্রিপ্রমাহর মে রণে। একং চাহর নিস্থিংশং জাতরূপপরিষ্কৃতম্॥

বৈশম্পারন উবাচ। অর্জুনত বচঃ শ্রুষা ধ্রাবাহ্তরতদা। অর্জু-নতাযুধান্ গৃহ শীঘেণাবাতরততঃ॥

অর্জুন উবাচ। অহং বৈ কৃক্ভির্যোৎস্থাম্যবজেয়ামি তে পশ্ন।
সংকরপক্ষ-বিক্ষেপং বাছপ্রাকারতোরণম্। ত্রিদগুভ্ণসংবাধমনে কথকেসংক্রম্। জ্যাক্ষেপণং ক্রোধকৃতং নেমীনিনদল্কুভিঃ। নগরত্তে ময়া গুপ্তং
রথোপস্থং ভবিশ্বতি॥ অধিষ্ঠিতো ময়া সভ্যো রথো গাঙীবধ্বনা॥ আক্রেয় শক্রসৈস্থানাং বৈরাটে ব্যেভু তে ভরম্॥

উত্তর উবাচ। বিভেমি নাহমেতেবাং শানামি ছাং হিরং যুধি। কেশ-বেনাপি সংগ্রামে সাক্ষাদিক্রেশ বা সমস্য ইদত্ত চিত্তরত্বেবং পরিমূহামি কেবলস্। নিভরং চাপি ভূর্মেধান পঞ্চামি কথকন। এবং যুক্তাক্তরপক্ত লক্ষণৈঃ স্চিতত চ। কেন কর্মবিপাকেন ক্লীবন্তমিদমাগতম্। মতে বাং ক্লীৰবেশেন চরতঃ খুলপাণিনম্। গন্ধর্কারাজপ্রতিমং দেবং বাপি শতক্রতুম্।

আর্জুন উবাচ। প্রাতৃর্নিরোগাজ্যেষ্ঠপ্ত সংবৎসর্মিদং ব্রতম্। চরামি ব্রশ্নচর্য্যঞ্চ সত্যমেভদ্রবীমি তে॥ নাম্মি ক্লীবো মহাবাহো পরবান্ ধর্ম-সংষ্তঃ। সমাপ্তব্রতমৃতীর্ণং বিদ্ধি মাং তং নৃপাত্মজ্ঞ॥

উত্তর উবাচ। পরমোহত্বগ্রেহা মেহত বতত্তকো ন মে বুখা। ন
হীদৃশাঃ ক্লীবরূপা ভবন্তি তু নরোত্তম॥ সহারবানন্দিরণে যুধ্যেরমমরৈরপি।
সাধ্বসং হি প্রণইং মে কিন্ধরোমি ব্রবীহি মে॥ অহন্তে সংগ্রহীয়ামি
হরাপক্ররথাক্ত্রান্। শিক্ষিতো অন্মি সার্থ্যং তীর্থতঃ পুরুষর্বত॥ দারুকো
বাহ্মদেবত্ত ৰখা শক্রত মাতলিঃ। তথা মাং বিদ্ধি সার্থ্যে শিক্ষিতং নরপূখব ॥ বত্ত বাতে ন পত্তন্তি ভূমৌ কিপ্তং পদং পদম্। দকিণাং যে। ধুরং
যুক্তঃ স্থ্রীবসদৃশো হয়ঃ॥ যোহয়ং ধুরং ধুর্য্যবরো বামাং বহতি শোভনঃ।
তং মত্তে মেঘপুলাক্ত কবেন সদৃশং হয়ম্॥ যোহয়ং কাঞ্চনসন্নাহং পাঞ্চিং
বহতি শোভনম্। সমং শৈব্যক্ত মত্তেহহং কবেন বলবত্তরম্॥ হোহয়ং
বহতি তে পাঞ্চিং দক্ষিণার্কিতোত্ততঃ। বলাহকাদিপি মতঃ স কবে বীর্য্যবক্তরঃ। স্বামেবারং রথো বোঢ়ুং সংগ্রামেঘতিধহিনম্। স্বঞ্চেমং রথমান্থার
যোদ্ধুমহোঁ মতো মম॥

বৈশন্দান্তন উবাচ। ততো বিশ্চা বাছভাগ বলনানি স বীর্যবান্।
চিত্রে তুল্ভিসনাদে প্রভান্কভলে ওভে । কুফান্ ভলিমভঃ কেশাংগুত
উদ্প্রথা বাসসা। অথাসো প্রাভম্থো ভূষা ওচিঃ প্রয়তমানসঃ । অভিদ্রো মহাবাহঃ সর্বান্তানি রথোন্তমে। উচুন্চ পার্থং সর্বাণি প্রাঞ্জলীনি
নৃণাত্মজন্ । ইমে স্ম পরমোদারাঃ কিন্তরাঃ পাণ্ড্নকন । প্রণিপত্য ততঃ
পার্থং সমালভ্য চ পাণিনা ॥ সর্বাণি মানসানীহ ভবতেত্যভাভাষত ।
প্রতিগৃহ ততোহস্তাণি প্রস্তুইবদনোহভবৎ ॥ অধিজ্যং তরসা কৃষা গাণ্ডীবং
ব্যাক্ষিপদ্দঃ ॥ তত্ম চাক্ষিপ্যমানত্ম ধহুবোহভূমহাম্বনঃ । যথা শৈলত্ম
মহতঃ শৈলেনবাভিজন্বঃ ॥ সনির্ঘাতাহভবভূমির্দিক্ বাযুর্ববে ভূশন্।
পপাত মহতী চোলা দিশোন প্রচকাশিরে ॥ ভাত্তধ্বনং খং ভদাসীৎ
প্রকন্দিত্মহাক্রমন্। তং শক্ষং কুরবো রাজন্ বিক্ষোটমশনেরিব ॥
বদক্ষ্বনা বহুংভাঠং বাহভ্যামাক্ষিপত্তথে ॥

উত্তর উবাচ। এক ষং পাওবল্রের্চ বহুনেতান মহারথান্। কথং জেব্যসি

সংগ্রামে সর্বশন্তাল্পারগান্॥ অসহায়োহসি কৌত্তের সসহারাশ্চ কৌরবা:।
অভএব মহাবাহো ভীতত্তিচামি ভেহগ্রত:॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। উবাচ পার্থো মা ভৈষী: প্রহল্ত খনবস্তালা। যুখ্যমানক্ত মে বীর গন্ধব্বৈ: অ্মহাবলৈ:। সহায়ো ঘোষঘাত্রায়াং কন্তালানীৎ সথা মম। তথা প্রতিভরে ভন্মিন্ দেবদানব-সংক্লে। থাওবে যুখ্যমানক্ত কন্তালানীৎ সথা মম। নিবাভকবহৈ: সার্জং পৌলোমৈন্চ মহাবলৈ:। যুখ্যতো দেব-রাজার্থে ক: সহায়ন্তালাভবৎ। খয়ম্বরে তু পাঞ্চাল্যা রাজভি: সহ সকরে। যুখ্যতো বছভিন্তাত ক: সহায়ন্তদাভবৎ। উপজীব্য গুরুং জোণং শত্রুং বৈশ্রবণং যমম্। বরুণং পাবক্ষেব রুপং রুক্ষঞ্চ মাধ্বম্। পিনাকপাণিনিক্ষেব কর্ণমেতাল্ল ষোধ্যে॥ রুথং বাহয় মে শীত্রং ব্যেত্ ভে মানসোজর:॥ ১—৪১

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং দংহিতায়াং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বাণ্যত্তরগোগ্রহে উত্তরদারণ্যং নাম পঞ্চন্ধারিংশত্তমোহধ্যায়:।

### ষ্ট্ চত্মারিংশগুমোইধ্যারঃ।

दिनम्लावन উराठ। উত্তরং সার্থিং ক্র मাইং ক্র প্রদ্ধিণন্।

আব্বং সর্বমালার প্রবেশ পাশুবর্বতঃ ॥ ধ্বজং সিংহং রথান্তরাদপনীর

মহারথঃ। প্রণিধার শনীমূলে প্রারাত্তরসার্থিঃ ॥ দৈবীং মারাং রথে

ফ্রাং বিহিতাং বিশ্বকর্মণা। কাঞ্চনং সিংহলান্ত্রণ ধ্বজং বানরলক্ষণন্॥

মনসা চিন্তরামান প্রসাদং পাবকস্ত চ। স চ তচ্চিন্তিতং জ্ঞান্তা ধ্বজে

ভূতান্তচোলরং ॥ সপতাকং বিচিত্রালং সোপাসলং মহা [বলং] রবম্।

খাৎ পপাত রথং তুর্ণং দিব্যরপং মনোরমন্ ॥ রথং তমাগতং দৃষ্টা দক্ষিণং
প্রাকরোজনা। রথমান্তার বীভৎস্ম কৌন্তেরঃ খেতবাহনঃ ॥ বদ্ধগোধান্ত্রি
আণং প্রগৃহীতশ্রাসনঃ। ভতঃ প্রারাহনীচীং স কপিপ্রবর্ষেতনঃ ॥ খনবন্তং

মহাশধ্যং বলবানরিমর্দনঃ। প্রাধমন্ত্রমান্তার দ্বিতাং লোমহর্বণন্ ॥ ততন্তে

ক্রনা ধ্র্য্যা ভাত্তগ্রামগমন্ত্রীন্। উত্তরশ্চাপি সন্তত্যে রথোপত্র উপাবিশং ॥

সংস্থাপ্য চাশান্ কৌন্তরঃ সম্ভূম্য চ রশ্বিভিঃ। উত্তরঞ্চ পরিজ্ঞা সমা
[প্রত্যা-] শাসরকর্ম্বনঃ ॥

আর্জুন উবাচ। মাতিবং রাজপুত্রাগ্র্য ক্ষত্রিরোংসি পরস্তপ। কথং পুরুষণার্দ্ধি শক্রমধ্যে বিষীদসি॥ শতাতে শত্তাশবাক্ত ভেরীশবাক্ত পুদ্ধা:। কুল্পরাণাঞ্চ নদতাং ব্যালাকৈবু তির্গুতান্॥ স বং কথমিহানেন শত্তাব্দেন ভীষিতঃ। বিষয় বিশ্ব কিলাবিত্রতঃ পুরুষঃ প্রাক্তো বথা॥

উত্তর উবাচ। শ্রুতা মে শন্ধশবাদ ভেরীশবাদ প্রগাঃ। ক্ষরাণাঞ্চলতাং ব্যুঢ়ানাকৈর তিছতাম্॥ নৈবংবিধং শন্ধশবং প্রা জাতু মরা শ্রুতঃ। ধ্রজন্ত চাপি রূপং মে দৃষ্টপূর্বং ন হীদৃশন্॥ ধন্থযানিবেনি চালতপুর্বো ন মে কচিং। অতা শন্ধতা শব্দেন ধন্থযো নিংখনেন চাল আমান্থবেণ শব্দেন ভূতানাং ধ্রক্রবাদিনাম্। রথতাচ নিনাদেন মনো মৃত্তি মে ভূশন্। ব্যাক্লাশ্চ দিশং সর্বা হৃদয়ং ব্যথতীব মে। ধ্রক্রেম পিহিতাঃ সর্বা দিশো ন প্রতিভান্তি মে ॥ গাণ্ডীবতা হি শব্দেন কর্ণো মে বধিরীকৃতৌ। তিমবং প্রতিভারত্তরং যুদ্ধর্পেদঃ ] স মৃত্র্তং প্রবাত্ত পার্বো বৈরাটিমব্রবীৎ॥

অৰ্জুন উবাচ। একান্তে রথমাস্থার পদ্ভ্যাং স্বমবপীড়র। দৃঢ়ঞ্চ রশ্মীন্। সংবচ্ছ শব্ধং থাব্দাম্যহং পুনঃ॥

বৈশম্পানন উবাচ। ততঃ শশ্বমুপাশ্বাসীদারয়ন্ত্রিব পর্বতান্। বিনতাং ছঃধন্ধনকং স্কুদাং হর্বর্জনম্। গুছা গিরীপাঞ্চ তদা দিশঃ শৈলাংঅধৈব চ। উত্তরশ্চাপি সংলানে। রবোপস্থ উপাবিশং। তত্ত্ব শশ্বত শব্বেন র্পনেমিশ্বনেন চ। গাণ্ডীবত্ত চ বোষেণ পৃথিবী সমকম্পত ॥ উত্তর্জ রবেণ দৃষ্টা শশ্বশব্দেন মোহিত্ম। তং সমাখাসয়ামাস পুনরেব ধনঞ্জঃ ॥

জোণ উবাচ। বথা রথক্ত নির্ঘোষো বথা মেল উদীর্যাতে। প্রকশতে বথা ভূমিনৈ বৈছিলঃ স্বাসাচিনঃ॥ শল্পাণি ন প্রকাশন্তে ন
প্রহান্তি বাজিনঃ। অল্পান্ত ন ভাসত্তে সমিদ্ধান্তর শোভনম্॥ প্রত্যাদিত্যক
নঃ সর্ব্বে মুগা বোরনিনাদিনঃ॥ ধ্বজেষ্ চ নিলীয়ত্তে বার্ষসান্তর শোভনম্॥
শক্নাশ্চাপসব্যা নো বেদরন্তি মহত্তরম্॥ গোমায়ুরেষ সেনালা কবন্মধ্যে
প্রধাবতি। জনাহতক্ত নিক্রান্তো মহবেদয়তে ভরম্॥ ভবতাং, রোমকৃপানি
প্রহান্ত্যপলক্ষে। জবং বিনাশো মুদ্ধের ক্রিলাণাং প্রদৃত্ততে॥ জ্যোতীংবি
ন প্রকাশন্তে দারুলা মুগপকিণঃ। উৎপাতা বিবিধা বোরা দৃত্যত্তে ক্র্রুন্নাশনাঃ॥ বিশেষত ইহাস্থাকং নিমিন্তানি বিনাশনে। উল্লোভিক প্রদীপ্তান্
ভির্বাধ্যতে প্রনা তব॥ বাহনালপ্রহানি ক্রন্তীব বিশাশনতে। উপাসত্তে চ

সৈতানি গ্ঞান্তব সমন্তত:॥ তব্দাসে বাহিনীং দৃষ্টা পাৰ্থবাণপ্ৰপী-ডিতাম্। পরাভ্তা চন: সেনা ন কশ্চিদ্ বোদ্ধ মিছেতি॥ বিবৰ্ণমুখভূমিষ্ঠাঃ সর্ব্বে বোধা বিচেতস:। গাঃ সংপ্রস্থাণ্য তিষ্ঠামো ব্যুঢ়ানীকাঃ প্রহারিণ:॥ ১—৩৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্ব্বপূত্তর-গোগ্রহে উৎপাতদর্শনে বট্চছারিংশত্তমোহধ্যায়ঃ।

## সপ্তচক্রারিংশভ্রমা>থ্যায়ঃ

বৈশম্পান্তন উবাচ। অথ হুর্যোধনো রাজা সমরে ভীমমত্রবীৎ। জোনঞ রথশান্দ্ লং রূপঞ্চ সুমহাবলম্।

তুর্ব্যোধন উবাচ। উক্তোহরমর্থ আচার্ব্যো মরা কর্বেন চাসকুৎ। পুন-রেব চ বক্ষ্যামি ন হি ভূপ্যামি তং ক্রবন্॥ পরাজিতৈটি ২ অংব্যং ভৈশ্চ बामनवरमत्रान्। वटन अपनभटमस्ब्बाटेज्दत्रकः हि म भटना हि नः॥ ट्ज्याः ন তাবলির্ভং বর্ততে চ ত্রেয়োদশম্। গঞাতবাসো বীভংস্রগাসাভিঃ সমা-গতঃ॥ অনিবৃত্তেৎপি নিৰ্কাদে যদি বীভৎস্কাগতঃ। পুনৰ্বাদশবৰ্ষাণি বনে বৎস্তম্ভি পাণ্ডবা:॥ লোভাদা তে ন কানীয়ুরস্মান্ বা মোহ আবিনৎ। হীনাতিরিক্তমেতেবাং ভীমে। বেদিতুমইতি॥ অর্থানাম্ভ পুনধৈ ধে নিত্যং ভবতি সংশয়:। অন্তথা চিস্তিতো হর্থ: পুনর্ভবতি চাক্তথা । স্বার্থে সর্কেৎপি मृक्षि त्वरित धर्मितित्वा बनाः। উত্তরং মার্গমাণানাং মৎভানাঞ মৃষুৎস্তাম্ ॥ ৰদি বীভৎসুরাগাতভদ। কন্তাপরাধুম: । ত্রিগর্ভানাং বন্ধং হেতোম ৎস্তান্ (वाक् मिशंगजाः। मश्मानाः विश्वकाताः उद्यन्यावकीर्ववन्। एउताः ভরাভিভূতানাং তদ্যাভিঃ প্রতিশ্তম্। প্রথমং তৈগ্রহীতব্যং মংভানাং গোধনং মহৎ ॥ সপ্তম্যামপরাছে বৈ তথা নতৈঃ সমাহিতম্ ॥ অট্ট্যাং পুনর-স্মাভিরাদিত্যস্তোদয়ং প্রতি। ইমা গাবো গ্রহীতব্যা গতে মৎস্তে প্রবাং পদস্ম তেবা গাবো নধিয়ন্তি বদি বা তে পরাজিতা: ম অস্থান্বা ত্যুপ-नकात्र क्र्रार्भश्त्यान नक्ष्ठम् ॥ अथवा जानभाहात्र मश्तमा अन्नभटेनः नह । দর্ববা দেনরা দার্ছং সংবৃতো ভীমরপরা। আরাতা [বা] কেবলাং রাত্তি-মন্দান্ ৰোজুমিহা [ মৃপা ] গতঃ॥ তেবামেৰ মহাৰীৰ্য্যঃ কন্চিদেৰ পুরঃসরঃ। ষশান্ ৰেত্ৰিহারাতো মংস্যো বাপি শ্বয়ং ভবেং।। ৰভেৰ রাজা মংস্যানাং

ষদি বীভৎস্থরাগতঃ। সর্বৈর্ঘোদ্ধব্যমন্মাভিরিতি নঃ সময়ঃ কুতঃ॥ অধ কশাৎ স্থিতা হেতে রথে পুরুষসন্ত্রমা:। ভীমো দ্রোণ: রূপন্তৈব বিকর্ণো জৌপিরেব চ।। সম্রান্তমনসঃ সর্বেক কালে হৃদ্দিন্মহার্থাঃ। নাম্ভত্ত যুদ্ধা-ছেরোহন্তি তথাত্মা প্রণিধীয়তাম্। আছিলে গোধনেহত্মাকমণি দেবেন বিজ্ঞপা। বমেন বাপি সংগ্রামে কো হাত্তিনপুরং ত্রজেৎ॥ শরৈরেভিঃ প্রপূ-वांनाः जन्नानाः शहरन वरन । तका हि खीरवर भवाजीनाः जरववर्षायु मःभन्नः ॥ ছর্ব্যোধনবচ: শ্রন্থা রাধেরম্বরবীষ্টঃ। আচার্য্যং পৃষ্ঠতঃ রুম্বা তথা নীতির্বি-জানাতি হি মতং তেষামতন্ত্রাসয়তীব নঃ। অর্জুনে চাস্য সম্প্রীতিমধিকামৃপলক্ষরে॥ তথাছি দৃষ্ট্রা বীভৎস্থমুপায়ান্তং প্রশংসতি। যথা সেনা ন ভজ্যেত তথা নীতিবি ধীয়তাম ॥ হেবিতং ত্যুপশুধানে জোণে সর্বং বিঘটিতম। আদেশিকা মহারণো গ্রীয়ে শক্তবশং গ্রাঃ। ন বিভ্ৰমেৎ সেনা তথা নীভির্বিধীয়তামূ । ইষ্টা হি পাণ্ডবা নিত্যমাচার্য্যস্য বিশেষতঃ। আসম্বন্ধপরার্থান্চ কথ্যতে শ্ব স্বয়ং তথা। অধানাং হ্রেষিতং শ্ৰা ক: প্রশংসাপরো ভবেং ! স্থানে বাপি ব্রজম্ভো বা সদা হেবস্তি বাজিন: ॥ সদা চ বায়বো বান্তি নিত্যং বর্ষতি বাসবং। অনুষ্কিত্রাশ্চ নির্ঘোষঃ শ্রুয়তে বছশন্তথা। কিমত্র কার্য্য: পার্থস্য কথং বা স প্রশস্তে। অস্তত্ত কামাদ্-বেৰাৰা রোবাৰাস্থাত্ত কেবলাও॥ আচাৰ্য্যা বৈ কারুণিকাঃ প্রাঞ্জান্চাপাপ-দর্শিনঃ। নৈতে মহাভয়ে প্রাপ্তে সংপ্রষ্টব্যাঃ কদাচন । প্রাসাদের বিচি-ত্রেষ্ গোষ্ট্রমূপবনেষ্ চ। কথা বিচিত্রা: কুর্ব্বাণাঃ পণ্ডিতান্তর শোভনা:॥ वर्षान्ध्याक्रशानि क्कार्या **बनमः**मि। हेब्यार्य [हेब्द्य ] टार्भमकारन পণ্ডিতান্তত্ত শোভনা: ॥ পরেষাং বিবরজ্ঞানে মহুস্বচরিতেযু চ। হন্ত্যশ্বর্থ-চর্ঘান্ত থরোষ্ট্রাজাবিকর্মণি॥ গোধনেষ্ প্রতোলীষ্ বরদারমূথেষ্ চ। অন্ত্র-সংস্কারদোবেষু পণ্ডিভাত্তত্ত শোভনা:॥ পণ্ডিভান পৃষ্ঠত: ক্বা পরেষাং গুণ-বাদিন:। বিধীয়তাং তথা নীতির্যথা বধ্যেত বৈ পর:॥ গাবনৈত্ব প্রজিষ্ঠাপ্য দেনাং বৃাহ্য সমস্ততঃ। আরক্ষাশ্চ বিধীরস্তাং বত্র বোৎস্যামতে পরান্ ॥১--৩৪

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বপুত্ররগোগ্রহে তুর্ব্যোধনবাক্যং নাম সপ্তচন্তারিংশগুমোহধ্যারঃ।

## অষ্টচত্মারিংশগুমোহগ্রারঃ

কর্ণ উবাচ। সর্কানায়্মতো ভীতান্ সম্ভানিব লক্ষয়ে। অযুদ্ধননস-লৈব সর্বাংলৈবানবন্থিতান ॥ যথেষ রাজা মৎস্যানাং যদি বীভৎস্থরাগত:। অহমাবার্ষিয়ামি বেলেৰ মক্রালয়ম্। মম চাপপ্রযু(মু) জ্ঞানাং শরাণাং নতপর্বাণাম। নাবৃত্তির্গচ্ছতামন্তি সর্পাণাং সর্পতামিব । ক্ষুপুঝাঃ স্থতীক্ষাগ্রা মুক্তা হত্তবতা ময়া। ছাদয়ত্ত শরাঃ পার্থং শলভা ইব পাদপম্॥ শরাণাং পুঝ্যকানাং মৌর্ব্যাভিহতর। দৃচ্য। শ্রন্নতাং তলরো: শব্দো ভের্য্যেরাহ-সমাহিতো হি বীভৎস্ক্ৰ্বাণ্যটো চ পঞ্চ। জাতল্পেহন্চ যুদ্ধেহস্মিন মন্ধ্রি সম্প্রহরিয়তি॥ পাত্রীভূতক কৌন্তেরো ব্রাহ্মণো গুণবানিব। শরোঘান প্রতিগৃহাতু ময়া মৃজান সহস্রশ:॥ এব চৈৰ মহেমাসল্লিয় লোকেয় বিশ্রতঃ। অহঞাপি নরশ্রেষ্ঠাদর্জুনায়াবরঃ কচিৎ॥ ইতন্টেড নির্দ্দুকৈঃ কাঞ্চনৈর্গাদ্ধ বা [রা] জিতৈ:। দৃশ্যতাম্য বৈ ব্যোম থডোতৈরিব সংবৃত্ন ॥ অভাহমূণমক্ষ্যং পুরা াচা প্রতিশৃতম্। ধার্ত্তরাষ্ট্রায় দাস্যামি নিহত্য সম-রেহর্জুনম্॥ মৎকার্মৃকবিমৃক্তানাং শরাণাং নতপর্বণাম্। ক: সহেতাগ্রত: স্থাতুমপি সর্কৈ: স্বরাস্থ্রৈ:। অস্তরাচ্ছিন্তমানানাং পুঞানাং ব্যতিশীগ্যতাম্। শলভানামিবাকাশে প্রচারঃ সংপ্রদুখতাম্॥ ইক্রাশনিসমস্পর্শং মহেক্রসমতেজ-সম। অদিরিয়াম্যহং পার্থমূকাভিরিব কুঞ্জরম্। রথাদত্রিবং শূরং সর্বশিস্ত-ভূতাং বরম। বিবশং পার্থমাদান্যে গরুত্মানিব পল্লগম্॥ তমগ্রিমিব ত্রদ্ধব-मिन किनेट बस्तम्। পां खराधिमहर मीक्षः व्यान स्वामिन स्वाम् व्याप्त अन्य देश न्यान বাতো রথৌণ-শুনয়িজুমান্। শরধারো মহামেখঃ শমরিফামি পাশুবম্॥ মৎ-কার্ম্ কবিনিম্ ক্তাঃ পার্থমাশীবিবোপমাঃ। শরাঃ সমভিসর্পন্তাং বল্মীকমিব পরগা:॥ স্বতেজিতৈ করপুথৈ: স্বপীতৈন তপর্বভি:। আচিতং কৌন্তেরং কর্ণিকারৈরিবাচলম্ ॥ স্থামদগ্র্যারারা হস্তং বং [ সং ] প্রাপ্তমৃষি-সন্তমাৎ। ততুপাশ্রিত্য বীর্যঞ [সমরে] যুধ্যেয়মপি বাসবম্। ধ্বজাগ্রে বানরত্তিষ্ঠন্ ভল্লেন নিহতো ময়া। অতিতব পততাং ভূমৌ বিনদন্ ভৈরবান্ রবান ॥ শক্রোর্ময়া বিপন্নানাং ভূতানাং ধ্বৰবাসিনাম্। দিশঃ প্রতিষ্ঠিমানা-নামস্ত শব্দো দিবলম: ॥ অন্ত তুর্য্যোধনস্তাহং শল্যং হৃদি চিরস্থিতম। মুদ্ধরিস্থামি বীভৎমুং পাতরন রথাৎ। হতার্যং বিরথং পার্থং পৌরুষে পর্য্যবন্ধিতম। নিঃশ্বসন্তং বথা নাগমন্ত পশুদ্ধ কৌরবাঃ।

পদ্ভ কুরবো ধনমাদার কেবলম্। রথেযু বাপি তিঠন্তো যুদ্ধং পঞ্জ মামক্ষ্য ১-২৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বণুত্তর-গোগ্রহে কর্ণবিক্থনো নাম অষ্টচ্ছারিংশন্তমেহধ্যায়ঃ।

### একোনপঞ্চাশতমোহগ্যায়ঃ

कुल উবাচ। সদৈব তব রাধের যুদ্ধে ক্রেতরা মতি:। নার্ধানাং প্রকৃতিং বেৎসি নামুবন্ধমবেক্ষদে।। নরা হি বছব: সন্তি শাল্পমাঞ্জিত্য চিস্তিতাঃ। তেষাং বৃদ্ধন্ত পাপিষ্ঠং বেদয়ন্তি পুরাবিদঃ॥ 'দেশকালেন मःबुक्तः युक्तः विकासः ভবেए। शीनकानः उत्पादकः कनानः न ভবত্যত। দেশে কালে চ বিক্রান্তং কল্যাণার বিধীয়তে॥ স্বাস্কৃল্যেন কার্য্যাণামস্করং সংবিধীয়তে। ভারং হি রথকারস্ত ন ব্যবস্থান্ত পণ্ডিতা:॥ পরিচিন্তা তুপার্থেন সন্নিপাতোননঃ কমঃ। একঃ কুরনভাগছে [রক্ষ] দেকশ্চাগ্নিমতর্পরং॥ একশ্চ পঞ্চবর্ধানি বন্ধচর্য্যমধাররং। একঃ স্থভদ্রামা-বোপ্য হৈরথে ক্লফমাহনরং॥ একঃ কিরাতরূপেণ স্থিতং শর্কামবোধরং। অন্মিন্নেব .বনে পার্থো হৃতাং কৃষ্ণামবাজয়ৎ ( কুষ্ণো হৃতাং ভার্য্যা-ম্বাজ্য ।। এক প্ৰকাৰি শকাল্যাণ্যশিক্ত। এক: সোহয়মরীন্ বিশ্বিস্যে ভরসা সংখ্যে সেনাঞ্চাস্ত স্মহর্জ্জরাম্। তথা নিবাতক্বচাঃ কালকঞ্জান্দ দানবাঃ। দৈবতৈরপ্যবধ্যান্তে একেন যুধি পাতিতাঃ॥ একেন হি দ্বরা কর্ণ কিরামেই কৃতং পুরা। একৈকেন যথা তেন ভূমিপালা বন্দী-কুতাঃ॥ ইদ্রোহপি ন হি পার্থেন সংযুগে ধোদ,ুমইতি। যন্তেনাশংসতে যুদ্ধং কর্ত্তুমুত্তমতেজ্বা। আশীবিষস্ত কুদ্ধস্ত পাণিম্ভান্য দক্ষিণম্। অবম্চ্য [ मृष्ठ ] প্রদেশিষ্ঠা দংখ্রামাদাতুমিচ্ছসি॥ অথবা কুঞ্জরং মন্তমেক এব চরন্ বনে। অনকুশ: সমারু হু নগরং গন্তমিচ্ছসি । সমিদ্ধং পাবকঞাপি স্বভষেদো-বসাহতম্। স্বভাক্তশ্চীরবাসাক্ষং মধ্যেনোৎসর্ভুমিছসি । আত্মানং সমুখ্য [ দ্বধ্য ] কঠে বছা মহাশিলাম। সমুদ্রং প্রতরেন্দোর্ড্যাং তত্ত্ব কিলাম পৌরুষম্ ॥ অরুতার: রুতার: বৈ বলবস্ত: সুতুর্বল:। তাদৃশ: কর্ণ ব: পার্থং বোদ মিচ্ছেৎ স মুর্মতিঃ । অস্মাভিত্যের নিক্তো বর্বাণীহ ত্ররোদশ। সিংহঃ

পাশবিনিমূ জে ন নঃ শেষং করিয়তি॥ একান্তে পার্থমাসীনং কুপেইরিমিব সংবৃতম্। অজ্ঞানাদভাবস্বন্দা প্রাপ্তাঃ ম্মে ভরম্ভমম্॥ সহ যুধ্যামহে পার্থ-মাগতং বৃদ্ধপুদ্দন্। সৈক্তান্তিষ্ঠন্ধ সরদা বৃঢ়ানীকাঃ প্রহারিণঃ॥ জোণো চুর্যোধনো ভীম্মো ভবান্ জৌণিতথা বয়ম্। সর্বে যুধ্যামহে পার্থং কর্ণ মা সাহসং কৃথাঃ॥ বয়ং ব্যবসিতাঃ পার্থং বক্সপাণিমিবোছতম্। যুদ্ধাঃ প্রতিষ্ঠিম বদি সংহতাঃ॥ বৃঢ়ানীকানি সৈক্তানি ব্রাতিষ্ঠিম্ব ধহিনঃ। বৃধ্যামহেহ জুনং সভ্যো দানবা বাসবং যথা॥ ১—১৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্ব্ব-গুয়ন্তরগোগ্রহে রূপবাক্যং নামেকানপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ।

#### পঞাশত্তমোহপ্রায়

অশ্বখানোবাচ। ন চ তাৰজ্জিতা গাবো ন চ সীমাস্তরং প্রতা:। ন হাত্তিনপুরং প্রাপ্তান্থন্ত কর্ণ বিক্থাসে। সংগ্রামান্ স্বহুন্ জিছা লক্ষা চ বিপুলং ধনম্। বিঞ্চিত্য চ পরাং ভূমিং [সেনাং] নাহঃ কিঞ্ন পৌক্ষম্ [পুক্ষা: ।। দহ পিচ ] তাগিরবাক্যস্ত ভূফীং ভাতি দিবাকর:। তৃঞ্জীং ধারয়তে লোকান্ বস্থা সচরাচরান্। চাতুর্বর্ণ ভ কর্মাণি विहिजानि चन्नकृता [मनौविजिः]। धनः देवत्रधिगळताः [ बर्टर्गिक्ट কৰ্দ্তব্যং] ৰচ্চ কুৰ্বন্ন ছয়তি॥ অধীত্য আমৰণো বেদান্ ৰাজন্তেত ৰজেত বা। ক্ষত্রিয়ো ধনুরাপ্রিত্য যজেচেত্র ন যাজয়েৎ। বৈখ্যোহধিগম্য विखानि बन्नकर्पानि कांत्ररहर। भूजः अध्ववनाः कूर्यगानिषु वर्तयु निष्णभः। वन्तनारवागविधि ज्दिक् जुनै । वृद्धि वाश्विष्ठ ।। वर्ष्ट्याना यथा माञ्चः व्याना हानि মহীমিমাম্। সংকুৰ্বস্তি মহাভাগা গুরুন্ স্থবিগুণানপি। প্রাপ্য দ্যুতেন কো রাজ্যং ক্ষত্রিয়স্তুটিমর্হতি। তথা নৃশংসরপোহয়ং ধার্ত্তরাষ্ট্রন্ড নিম্মুণঃ্রপেণ ৰণান্তঃ প্ৰাক্ততো জনঃ]॥ তথাভিগম্য বিত্তানি কো বিক্থেদিচক্ষণঃ। নিক্বত্যা বঞ্চনাবোটগশ্চরন্ বৈতংগিকো বথা। কভনলৈুর্বং যুদ্ধং ৰজাকৈৰাইনঞ্চম্। নকুলং সহদেবং বা ধনং বেৰাং কলা হৃতম্ ॥ মৃধিষ্ঠিলো জিতঃ কন্মিন্ ভীমো বা বলিনাং বরঃ। ইন্দ্রপ্রস্থং দলা কন্মিন্ সংগ্রামে বিজিতং পুরা। তবৈব কতমদ্যুদ্ধং যশ্মিন্ রুঞ। বিতা পুরা। একবশ্বা সভাং নীতা फ्डेक्चन् त्रवचना । मृनस्मताः महर कुछः नात्राची क्लनः वर्षा। कर्च

কারম্বথাঃ শুর [ স্ত ] তত্ত্ব কিং বিহুরোহত্তবীং ম বর্থাশক্তি মহুস্থাণাং কামমালকরামতে। অস্তেষাঞ্চৈব সন্থানামপি কীট্পিপীলিকৈ:। দ্বৌপদ্বাদ্ধং পরিক্রেশং ন কন্তং পাগুবোহইতি ॥ ক্ষায় ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং প্রাত্ত্তা ধনঞ্জয়:। তং পুনঃ পণ্ডিতো ভূতা বাচং বক্তৃমিছেচ্ছিদ। বৈরাস্ত:করণো बिक्कृत नः শেষং করিয়তি।। নৈষ দেবার গন্ধবারাস্তরার চ রাক্ষসান। ভরাদিহ ন যুংগত কৃষ্টীপুত্রো ধনঞ্জয়: ॥ বং ষমেবাংভিসংক্রেয়: সংগ্রামে নিপভিষ্যতি। বুক্ষং গরুড়বেগো বা বিনিহত্য তমেষ্যতি॥ অভো বিশিষ্টং বীর্য্যেণ ধনুষ্য-মররাট্সমন্। বাস্থদেবসমং যুদ্ধে তং পার্থং কোন পুরুষেং॥ দৈবেন দৈবং (দেবং দেবেন ) যুধ্যেত মাহুষেণ তু মাহুষম্। অল্পেণান্তং সমাহক্তাৎ कार्र्ज्ञातन नमः श्रमान्॥ श्रृङ्जामनछत्रः निषा टेलि धर्मविता विष्ठः। এতেনাপি নিমিত্তেন প্রিয়ো জোণক্ত পাওব:॥ যথা অমকরোর্ তি-মিল্রপ্রস্থং মথাহর:। মথা-নৈষী: সভাং ,ক্লফাং তথা যুধ্যস্ব পাণ্ডবম্॥ আরং তে মাতৃলঃ প্রাক্তঃ কাত্রধর্মস্ত কোবিদঃ। তুর্গতদেবী গান্ধারঃ শকুনিযুধ্য-তামিহ। নাক্ষান ক্ষিপতি গাণ্ডীবং ন কৃতং দ্বাপরং ন চ। জলতো নিশি-তান বাণাংখ্যাংখান্ ক্ষিপতি গাঙীব্দ্। ন হি গাঙীব্নিৰ্মৃকা গাৰ্দ্ধ প্ৰাঃ স্থতেজনাঃ। অন্তরেষবৃতিষ্ঠন্তে গিরীণামপি দারণাঃ॥ অন্তকঃ প্রনো মৃত্যুক্তথাগ্নির্বাস্থা। কৃষ্ ্রিরতে কচিচ্ছেষং ন তু ক্রেছা ধনঞ্জাঃ। ষথা সভায়াং দ্যুতং বং মাতুলেন সহাকরো:। তথা যুধ্যস্ব সংগ্রামে সৌবলেন সুরক্ষিত:॥ যুধ্যস্তাং কামতো ধোধা নাহং ধোৎস্তে ধনঞ্জম। মৎস্তো क्यां जित्रारवारधा। यद्यां शतक्ष्म् शतक्ष्म ॥ ১--- २৮

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বব্যুত্তরগোগ্রহেহশ্বখামভর্ৎসনবাক্যং নাম পঞ্চাশত্তমোহধ্যারঃ।

#### একপঞ্চ**শ**ত্তমোহপ্রায়ঃ

ভীম উবাচ। সাধু পশুতি বৈ জৌণিং ক্বপশ্চ সাধু পশুতি। কৰ্ণস্ক ক্ষমধর্মেণ বৰাবদ্বোদ্ধ্ মিচ্ছতি ॥ আচাৰ্য্যো নাভিবো [ ব ] ক্তব্যঃ পুরুৰেণ বিজ্ঞানতা। দেশকালো তু সংপ্রেক্য বোদ্ধব্যমিতি মে মতিঃ ॥ বস্তু স্ব্যাসমাঃ পঞ্চ সপত্নাঃ স্থাঃ প্রহারিণঃ। কথমভ্যুদ্ধে ভল্ত ন প্রমৃত্তে পশুতঃ ॥ ভার্থে সর্ব্বে বিমৃত্তি বেছপি ধর্মবিদো জনাঃ। তম্মাজাজন্ ব্রবীম্যেতদ্

বাক্যন্তে বদি রোচতে॥ কর্ণো হি বদবোচন্থাং ভেলঃসঞ্জননায় তং।
আচার্ব্যপ্তঃ: ক্ষমতাং মহৎ কার্য্যমুপন্থিত্য॥ নারং কালো বিরোধত
কৌন্তেরে সম্পন্থিতে। ক্ষতব্যং ভবতা সর্বমাচার্ব্যেণ কুপেণ চ ॥ ভবতাং
হি কুভান্থতাদ্ বথাদিত্যে প্রভা তথা। বথা চক্রমসো লন্ধীঃ সর্বথা নাগ্রন্থতে॥ এবং ভবৎত্র প্রান্ধণাং প্রমান্ধণ প্রভিত্তিত্য। চন্ধার একতাে বেদাঃ
ক্ষাপ্রমেকত্র দৃত্ততে॥ নৈতৎ সমন্তম্ভরং কন্মিংশিচদন্তক্রমঃ। অক্সত্র ভারতাচার্যাৎ সপ্রাদিতি মে মতিঃ॥ (প্রন্ধান্ধং চৈব বেদাশ্চ নৈতদক্তর দৃত্ততে।
আক্সত্র ভারতাচার্যাদ্ জোণাৎ প্রম্বসন্তমাৎ)॥ বেদান্থাশ্য প্রাণানি ইতি
হাসং প্রাতনম্। জামদগ্যমুতে রাজন্ কো জোণাদ্ধিকো ভবেৎ॥ আচার্য্যপ্রঃ ক্ষমতাং নারং কালঃ স্বভেদনে। সর্ব্বে সংহত্য বুধ্যামঃ পাকশাসনিমাপ্রঃ ক্ষমতাং নারং কালঃ বভেদনে। স্ব্রে সংহ্ত্য বুধ্যামঃ পাকশাসনিমাপ্রাতন্য বিত্রাং মতঃ॥

অথখানোবাচ। নৈব স্থায়মিদং বাচ্যমন্ত্রাকং পুরুষর্বভ। কিন্তু রোষ-পরীতেন গুরুণা ভাষিতা গুণা:॥ শত্রোরপি গুণা বাচ্যা দোষ। বাচ্যা গুরোরপি। সর্বাথা সর্বায়ত্রন পুত্রে শিয়ে হিতং বদেৎ॥

তুর্ব্যোধন উবাচ। আচার্ব্য এষ ক্ষমতাং শান্তিরত বিধীরতাম্। অভিত্ত-মানে (আক্ষিপ্যমাণে).তু গুরৌ তদ্বৃত্তং শেব (রোষ) কারিতম্॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততো ছর্ব্যোধনো জোণং ক্ষমস্মাস ভারত। সহ কর্ণেন ভীমেণ কুপেণ চ মহাত্মনা॥

জোণ উবাচ। বদেতৎ প্রথমং বাক্যং ভাঁমঃ শান্তনবোহত্র বিং। তেনৈবাহং প্রসলোহন্দি নীতিরক্ত বিধীয়তান্ ॥ বথা ত্র্যোধনং পার্থে। নোপসর্পতি সকরে। সাহসাদ্ বদি বা মোহাত্তথা নীতির্বিধীয়তান্ ॥ বনবাসে হানির্ভিত্ত দর্শয়ের ধনকরঃ। ধনং বা লভমানোহক্ত নাভ নঃ ক্ষন্তমহ্তি ॥ বথা নায়ং সমামুক্তাছার্ভিরাষ্ট্রান্ কথকন। ন চ সেনা [ বথা চ ন ] পরাজ্যাত্তথা নীতির্বিধীয়তান্ ॥ উক্তং ত্র্যোধনেনাপি প্রভাষাক্যমীদৃশম্। তদহুস্বত্য গালের বথাব্যক্ত মুহ্সি ॥ ১-২২

ইতে শ্রীমহাভারতে শতসাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বপৃত্তরপোঞ্জহে জোণবাক্যে একপঞ্চাশতবোহধ্যারঃ।

### বিপ্ৰাশত্তমাহ্যায়ঃ

'ভীম উবাচ। কলাকাষ্ঠান্ড (কালতন্তাত) যুলাত্তে মুহুর্জান্ড দিনানি চ। অর্জনাসাক মাসাক নকজাণি গ্রহাতথা।। ঝতবকাপি বৃজ্ঞান্তে তথা সংবংসহাণ্যপি। এবং কালবিভাগেন কালচক্রং প্রবর্ত্তভে। তেবাং कानाजित्तरकन क्यांजियांक वाजिकमार। शकरम शकरम वर्ष वो मानात्राहेष्ठः॥ (खर्वामनाधिका मानाः शक ह चानम क्रशाः। खर्वान-শানাং বর্বাণামিতি মে বর্ত্ততে মতি: । সর্বাং যথাবচ্চরিতং বদ যদেতি: প্রতি-🚁 তম্। এবমেতদ্ ধ্রবং আবা ততো বীভৎসুরাগতঃ॥ সর্কে চৈব बहाजानः मृद्यं धर्षार्थं काविनाः। त्यवाः यूधिष्ठेत्वा त्राका कत्राकृत्य-হপরাধুষুঃ॥ অক্রা [ অলুরা ] কৈব কৌস্তেয়াঃ ক্তবস্তুশ্চ চ্ছরম্। ন চাপি কেবলং রাজ্যমিচেছ্যুত্তংছপায়ত:॥ ভবৈৰ তে ছি বিক্রান্তমীয়ু: কৌরব-নন্দনাঃ। ধর্মপাশনিবদ্ধাতে ন চেলু: ক্সন্তিয়ত্তাৎ॥ তচ্চান্তমিতি ধ্যায়াদ্ ৰ: স গচ্ছেৎ পরাভবম্। বৃণুয়ুর্ম রণং পার্বা নানৃতন্ত কথঞ্চন॥ প্রাপ্তে কালে তু প্রাপ্তব্যং নোৎস্থলেয়ুন রবভা:। অপি বন্ধভ্তা গুপ্তং তথাবীর্ঘা হি পাওবা:॥ প্রতিষ্ধ্যেম সমরে সর্বশন্তভূতাং বরম্। তন্মাদ্ ধদত কল্যাণং লোকে সম্ভিরম্প্রিভিদ্। তথা বিধীয়তাং শীঘ্রং মা নো ফর্পোহভাগাৎ পরম্॥ ন হি পশ্রামি সংগ্রামে কর্নাচিদপি কৌরব। একান্তসিদ্ধিং রাজেন্দ্র সংগ্রাপ্তো ছি ধনপ্লয়: ॥ সংপ্রবৃত্তে তু সংগ্রামে ভাবাভাবে বরাব্রার। অবশ্রমকং স্পূৰতো দৃষ্টমেতদসংশয়ম্। তমাদ্ যুদ্ধাবচরিতং কর্ম বা ধর্মসংহিতম্। ক্রিয়তামাত রাবেন্দ্র সম্প্রাপ্তো হি ধনঞ্জয়: ॥

তুর্ব্যোধন উবাচ। নাহং রাজ্যং প্রদান্তামি পাওবানাং পিতামহ। যুদ্ধাবচরিতং যতু ভচ্চীত্রং সংবিধীয়তাম্॥

ভীন্ন উবাচ। অত্ত যা মামিকা বৃদ্ধিঃ শ্রন্নভাং বদি রোচতে। সর্বাথা হি ময়। শ্রেরো বক্তব্যং কুকুনন্দন । ক্ষিপ্রং বল-চতুর্জাগং গৃহ্থ গছে পুরং প্রতি। ততোহপরক্তৃত্তাগো গাঃ সমাদার গছতু । বয়ন্বদ্ধেন সৈক্তপ্র প্রতিবোধ-শাম পাগুবন্। অহং জোণশ্চ কর্ণশ্চ অর্থামা ক্লপন্থা । প্রতিবোধ-শাম বীভৎস্মাগর্জং ক্লতনিশ্চরম্। মৎশুং বা পুনরারাতমাগতং বা শতক্রতুম্। অহ্মাবার্থিয়ামি বেলেৰ মকরালয়ম্॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তথাক্যং ককচে ডেবাং তীমেণোক্তং মহাত্মনা।

তথাহি কৃতবান্ রাজা কৌরবাণামনস্তরম্। ভীমঃ প্রস্থাপ্য রাজানং গোধনং ভদনস্তরম্। সেনামুখ্যান্ ব্যবস্থাপ্য ব্যহিতুং সংপ্রচক্রমে।

ভীম উবাচ। আচার্য্যো মধ্যতন্তিঠন্বৰখামা তু সব্যক্তঃ। রূপঃ শার্বতো ধীমান্ পার্বং রক্ষতু দক্ষিণম্॥ অগ্রতঃ স্তপুত্রন্ত কর্ণন্তিঠতু দংশিতঃ। অহং সর্ব্বস্তু সৈক্ষত্র পশ্চাৎ স্থাস্থামি পালয়ন্॥ ১-২৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বাণ্যত্তরগোগ্রহে ভীম্মসৈক্তব্যুহে বিপঞ্চাশন্তমোহধ্যারঃ।

### ত্রিপঞ্চাশন্তমো>ধ্যারঃ

বৈশম্পায়ন উবাচ। তথা (এবং) ব্যুচ্ছেন নিকের কৌরবেরেষ্ ভারভ (কৌরবের্য়ম হার্থেঃ)। উপায়াদর্জুনন্ত, বিং রথঘোবেশ নাদয়ন্॥ দদ্ভতে ধ্বজাগ্রং বৈ শুশুবৃশ্চ রথম্বন্য। দোধ্যমানক্ত ভূশং গাঙীবক্ত চ নিম্বন্য। ততন্তৎ সর্বমালোক্য জোণো বচনম ব্রাৎ। মহারথম ফুপ্রাপ্তং দৃষ্টা গাঙীক্ষ্ ধ্বিন্য॥

দ্রেণ উবাচ। এতদ্ ধ্রজাগ্রং পার্থস্য দ্রতঃ সম্প্রকাশতে। এর খোষঃ সজলদা রোরবীতি চ বানরঃ ॥ এব তিষ্ঠন্ রথশ্রেষ্ঠে রথী রথবরপ্রপূৎ। উৎকর্ষতি ধৃষ্ণ: শ্রেষ্ঠং গাঙীবমশনিস্থনম্ ॥ ইমৌ হি বাণৌ সহিতৌ পানরোমে ব্যবস্থিতৌ। অপরৌ চ ব্যতিক্রাস্থে কণৌ সংস্পৃষ্ঠ মে শরৌ ॥ নির্বান্ত্য চ বনে বাসং কৃষা কর্মাতিমান্থম্। অভিবাদরতে পার্থ: শ্রোত্তে চ পরিপৃক্তি ॥ চিরদৃষ্টোংয়মস্মাভিঃ প্রজ্ঞাবান্ বান্ধবিপ্রিয়ং। অতীব জ্ঞানতো লক্ষ্যা পাঞ্পুল্রো ধনজ্ঞঃ ॥ রথী শরী চাক্তলা নিষ্কা, শন্ধী পতাকী কবচী কিরীটা। থড়গী চ ধন্ধী চ বিভাতি পার্থ: শিথী ঘৃতক্রগ্ভিরিবান্তাসক্তঃ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততোহৰ্জুন: কুরুন্ দৃটা সংগ্রামে সমবস্থিতান্। তৎকালসদৃশং বাক্যং মৎস্যপুদ্রমভাষত॥

অর্জুন উবাচ। ইষ্পাতে চ সেনারাং হরান্ সংযক্ত সারথে। বাবন্ধিরীকে সৈঞ্ছেংশিন্ কাসৌ কুরুকুলাধমঃ॥ সর্বানেতাননাদৃত্য দৃষ্টা তমতিমানিনম্। তস্য মূর্দ্ধিন পতিব্যামি তত এতে পরাজিতাঃ॥ এব ব্যবস্থিতো জোণো জৌণিক তদনস্তরম্। ভীমঃ কুপক কর্ণক মহেমাসা ব্যবস্থিতাঃ॥ রাজানং নাত্র পশ্যামি গাঃ সমাদার গছতে। দক্ষিণং মার্গমান্থার শবে জীব্পরারণম্ উৎস্টের্জেডরপানীকং গছ বত্র স্ববোধনঃ। ভত্তিব বোৎস্যে বৈরাটে নান্ডি যুদ্ধং নিরামিবস্। ভং হ (জি) স্থা বিনিবর্তিষ্যে গাঃ সমাদার বৈ প্নঃ॥ (পশ্চাদেতে প্ররাভব্যা ইভি মে বর্ত্তে মভিঃ)॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবমূক্তঃ স বৈরাটির্রান্ সংষ্মা ব্লুতঃ। নিষ্মা চ ভভো রশ্মীন্ বল ভে ক্রবো গভাঃ॥ অচোদয় ভভো বাহান্ বভো হুর্য্যো-ধনো গতঃ।। উৎস্থা রথবংশস্ক প্রয়াতে খেতবাহনে। অভিপ্রায়ং বিদি-স্বাস্য জোণো বচনমত্রবীৎ। নৈষোহস্তরেণ রাজানং বীভৎস্থ: স্থাতুমিচ্ছতি। ভদ্য পাঞ্চিং গ্ৰহীয়ামো ৰবেনাভিপ্ৰবাদ্যত:॥ ন হেনমডিসংক্ৰুদ্ধমেকো ুৰুধ্যেত সংযুগে। অন্তো দেবাৎ সহস্ৰাক্ষাৎ ক্লফাৰা দেবকীস্থতাৎ। আচাৰ্য্যাচ্চ সপুত্রাঘা ভারঘাজান্মহারথাৎ। কিং নো গাবঃ করিষ্যন্তি ধনং বা বিপুলং ভথা। তুর্ব্যোধনঃ পার্বজ্ঞলে পুরা নৌরিব মজ্জভি॥ ভথৈৰ গড়া ৰীভৎস্থৰ বিশ্ৰাব্য চাত্মনঃ। শ্ৰুতিভৱিৰ তাং সেনাং শৱৈঃ শীভ্ৰমবাকিরং॥ ৰীৰ্যমাণাঃ শরোবৈস্ত যোধান্তে পার্থচোদিভৈঃ। নাপশুলাবৃতাং ভূমিমন্ত-রীক্ষণ পত্রিভি:।। তেখামাপত্তাং যুদ্ধে নাপধানেংভবন্মতি:। শীদ্রস্মেব পাৰ্থস্য পুৰুষন্তি স্ম চেতসা (তে তদা)।। ততঃ শঙ্খং প্ৰদৰ্গ্বো স বিবতাং লোমহর্ষণম। বিক্ষার্য্য চ ধুমু: শ্রেষ্ঠিং ধ্বজে ভূতাক্তচোদরং॥ তদ্য শৃত্যাক্ র্থনেমিম্বনেন চ। গাণ্ডীবৃদ্য চ শব্দেন পুথিবী সম্কম্পত। चमाञ्चां नार्याः [ मर्या ] जृजानाः श्वक्रवां निर्मा । जेकः शृष्टान् বিধুয়ানা রেভমাণা: সমস্তত:। গাব: প্রতিক্তবর্ত্ত দিশমাস্থার দক্ষিণাম্॥ ১-২৫

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট পর্বংগগ্রেহে গোনিবর্ত্তনং নাম ত্রিপঞ্চাশতমোহধ্যারঃ।

### ৪ছাছেরাম্বর্জাশক্ষার

বৈশম্পান্ন উবাচ। স শক্রসেনাং তরসা প্রণ্ম, গান্তা বিজিত্যাথ ধন্ধরাগ্রাঃ। ত্র্যোধনানাভিম্থং প্রনাতো, মৎস্যস্য রাজঃ প্রিমা-চিকীব্:। গোর্ প্রনাতের্ জবেন বংস্থান্, কিরীটিনং কার্যকৃতঞ্চ মন্ত্রা ত্র্যোধনানাভিম্থং প্রনাতং, ক্রপ্রবীরাঃ সহসাংভিশেতুঃ। ভেরামনাকানি বহুনি গাড়ং, ব্য়েটানি দৃষ্ট্য বহুলধ্বজানি। মংস্কু পুরং

বিষভাং নিহন্তা, বৈরাটিনামন্ত্র তভোহভূত্বাচ ॥ এতেন তুর্ণং প্রভিপাদরৈতান, त्यं जान् रवान् काकनविष्यां ज्ञान्। बरदन मर्द्यं कृक अवक्रमानामरवदः রথসিংহরন্দম্॥ পজো গজেনেব ষয়া ত্রাজা, বোদ্ধুং সমাকাজক্তি স্তপুত্র:। তমেব মাং প্রাপন রাজপুত্র, ত্রোধনাপাঞ্জনজাতদর্পম্ । ততো হরৈবাত-करेबर्द् रहिः, शूट्या वित्राष्टेश सूर्वर्वकर्षकः । वाध्वरमञ्जूषिकामनीकः, जटजा-२ तहर भाक्षतमां क्षिप्रधा ॥ जः विज्ञादना विनिर्देशियोर्देशः, मःश्रामिकक्रक्रमाहा ব্দস্ত। প্রভ্যাদ্যযুর্ভারতমাপ্তন্তং, মহারথা: কর্ণমন্ত্রীপ্রমানা:॥ তত: স তেষাং পুরুষপ্রবীরঃ, শরাসনার্চিঃ শরবেগতা গঃ। बाতং রথানামদহৎ সমস্থা-ৰ্বনং ষথায়িঃ কুরুপুদ্ধানাম্ ( বাগ্নিঃ )॥ ভিন্মিংশ্ব মুদ্ধে তুমুলে প্রবৃত্তে, পার্থং বিকর্ণোহতিরথং রথেন। বিপাঠবর্ষেণ কুরুপ্রবীরো, ভামেন ভামাত্রক্ষাদ্দাদ ॥ ততো বিকর্ণি ধছর্মিকৃষ, জাধুনদাগ্র্যোপচিতং দৃঢ়জ্যম্। অপাতরতং ধ্বজ-यक यथा, व्हिन्नश्रव **हः त्रार्था भाषा का**द्यन ॥ ७० मोळवांनाः श्रवां विकातः, क्षीनि क्ष्रियाक्षीनि। भक्छनः (कान्यमुख्यानः, नम्बर्धः क्ष्यन्त्यन পাर्थम्॥ म एजन बाखाजिबरयन विष्का, विशाहमारना श्विमनीः क्कामम्। শক্রন্তপং পঞ্চতিরাও বিদ্ধা, তত্তোহস্ত স্থতং দশভির্জ্বান ॥ ততঃ স বিদ্ধো ভরতর্বভেণ, বাণেন গাত্রাবরণাতিগেন: গতামুরাকৌ নিপপাত ভূমৌ, नरमा नमाश्रामित बाजक्यः ॥ नदर्बजारक कु नदर्ब जन, वीदा दर्श वीद्रकरतन ভগ্নঃ। চকম্পিরে বাতৰশেন কালে, প্রকম্পিতানীয<sup>ু</sup>মহাবনানি। হতান্ত পার্থেন নরপ্রবীর।, গভাসবোর্ব্যাং (ভূমে) যুবানঃ ) স্বর্পু: স্ববেশা:। প্ৰদা বাসবত্ল্যবীৰ্ঘাঃ, পৱাজিতা বাসবজেন সংখ্যে ॥ স্বৰ্ণকাঞ্চায়সবৰ্ষন্ত্ৰা, नांशा यथा टेर्मरेखाः श्रद्धाः। ज्या न नजान् नमद्र विनिधन्, शांखीवस्या भूक्वथारीतः॥ চচার সংখ্যে বিদিশো দিশক, দহলিবাগির্কনমাতপাত্তে। প্রকীর্ণপানি বথা বসভে, বিশাভিয়িছা প্রনোহমূলাংক ॥ স তান্ সপদান্ বিকিরন্ কিরীটা, চচার সংখ্যেহতিরবো রবেন। শোণাখবাহস্য হয়ারিহত্য, বৈকর্ত্তনভাতুরদীনসন্তঃ। একেন সংগ্রামন্তিতঃ শরেণ, শিরো বহারাও कित्रीहेमांनी ॥ जिल्लन इटल लांजति ऋजभूट्या, देवकर्तना वीर्यप्रमणानाः। প্রগৃহ দম্ভাবিব নাগরাকো, নরর্বভং ব্যাদ্র ইবাভ্যধাবং ॥ স পাওবং বাদশভিঃ शृष्ट्रेक्टॅब्क्खनः श्रेष्ठमथावचान। विवाध शाटखब् स्वाःक मर्सान, विवाध-পুত্রঞ্চ করে নিজত্বে ॥ তমাপতত্তং সহসা কিরীটা, বৈকর্ত্তনং বৈ তরসাৎজ্য-পেতা। প্রগৃহ বেগং ক্লপতজ্জবেন, নাগং গরুদ্ধানিব চিত্রপক্ষ:॥ ভারুদ্ধনী

नर्संश्रष्टकत्रांगाः, बहावत्को नर्समभन्नमार्शः। कर्नमा भार्षमा निममा युक्तः, निम्कः 🖫 ষাণাঃ কুরবোহভিতমু:। স পাগুবন্তুর্নমূদীর্ণকোপঃ, কুতাগদং কর্ণমূদীক্ষা कर्णन माथः मत्रथः मरक्ष्रमञ्जन्दि द्वात्रमद्र्योचत्रुष्टे।।। স্থবিদ্ধা: সরথা: সনাপা, বোধা বিনেত্র্তরতর্বভাণাম্। অন্তর্হিতা ভীমম্থা: नरायाः कित्रीिंग कीर्पत्रथाः भुष्टिकः॥ न চाणि ভानर्क्क्नवाह्यकुष्टवांश-রৌবৈঃ প্রতিহন্ত্য কর্ণ:। তত্ত্বে মহাত্মা সধস্থ: স্বাণঃ, স্বিক্লুলিকোহয়িরি-বান্ত কর্ণ:।। তত্ত্ব ক্ষত্তে তলতালশবঃ, দলঋভেরীপণবপ্রণাদঃ। প্রক্ষেড়ি-তজ্যাতলনিশ্বনং তং বৈকর্ত্তনং পূজ্যতাং কুরণাম্॥ উদ্ভলাক্লমহাপতাক-**ধ্বজো**ত্তমাং**দাকুলভীবন্নন্ত**ম্। গা**ণ্ডীবনির্ঘোষকুতপ্রণাদং, কিরীটিনং** ননাদ কর্ণ:॥ স চাপি বৈকর্ত্তনমন্দিয়িবা, সাখং সম্ভং সরথং পৃষৎকৈ:। তমাৰবৰ্ষ প্ৰদক্তং কিরীটা, পিতামহং জোনক্লেণা চ দৃষ্ট্য। স চাপি পার্থং वहिं शुक्टेक्टेव कर्खरना स्मच हैवां छावर्षर । छटेथव कर्बक कित्री हैमानी. সহাদয়ামাস নিজ: পৃষৎকৈ: ॥ তয়ো: স্তীক্লান্ স্জতো: শ্রেবিন্, মহা-भरतीयाञ्चविवर्कतन त्रत्व। त्रत्थं विनक्षाविव हज्ज्यूर्रको. चनास्टरत्नासूपमर्भ লোক: ॥ অথাওকারী চতুরো হয়াংশ্চ, বিব্যাধ কর্ণো নিশিতৈ: কিরীটিন: **ত্রিভিত্ত বস্তারমম্যুদাণো,** বিব্যাধ তুর্ণ ত্রিভিরস্য কেতৃ্ম্॥ ততোহভিবিদ্ধ: সমরাবমন্দী, প্রবোধিতঃ সিংহ ইব প্রস্থপ্তঃ। গাণ্ডীবধন্বা প্রবরঃ কুরুণামজিন্ধগৈঃ কর্ণমিবার জিফু:। শরাস্ত্রব্ট্যাভিহতো মহাত্মা, প্রাতৃশ্চকারাতিমমুমুকর্ম। প্রাচ্ছাদয়ৎ কর্ণরথং পৃষৎকৈলে কানিমান্ স্থ্য ইবাংওজালৈ:॥ (স পাওবং बानमं िः नृदर्देकर्देक् कर्खनः नीष्ठम् भाक्यवान । विवाध शाद्वव् इम्रांश्क मर्स्वान्, বিরাটপুত্রঞ্ করে বিজয়ে। ) স হতিনেবাভিহতো গজেন্দ্র:, প্রগৃহ ভল্লাদ্রি-শিতারিকাৎ। আকর্ণপূর্ণঞ্ধ ধহুর্বিক্লয় বিব্যাধ গাত্তের [বালের ] ও স্ত-পুত্রম্। অথাস্য বাহুফ্শিরোললাটং, গ্রীবাং রথালানি পরাব্যক্ষী। স্তিভুসা বালৈযুধি নির্বিভেদ, গাণ্ডীবমুক্তৈরশনিপ্রকালেঃ ॥ স পার্থমুক্তৈর্বিশিথৈঃ व्यनुद्रा, गटका गटकटनव किञ्चत्रयो । विश्वत्र मःशामनितः व्यत्राटला, देवकर्छनः পা/প্ৰবাণতথ্য: ॥ ১-৩৬

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বাণ্যন্তরগোগ্রহে কর্ণাপ্যানে চতু:পঞ্চাশন্তমোহধ্যায়:।

#### পঞ্চপঞাশতমোইপ্রায়ঃ

বৈশস্পান্তন উবাচ। অপবাতে তু রাধেনে তুর্ব্যোধনপুরোগমা:। অনী-टकन यथा टचन मटेनब्रार्व्छ(कि) छ পांखरम्॥ वहशा जन्न देनजना वृाह्मराभज्ञः मरेतः। अधातव्र तरान तरान कु मरहानत्यः॥ जलः श्रह्मा वीज्यसः কৌন্তেয়ঃ শ্বেতবাহনঃ। দিব্যমন্ত্রং বিকুর্ব্বাণঃ প্রত্যন্ত্রাক্রথসন্তমঃ॥ রশিভিরাদিত্য: প্রজ্ঞাদৃষ্ঠি মেদিনীম। তথা গাণ্ডীবনির্ম ক্রৈ: শরৈ: পার্থো मिटमा मन ॥ न त्रथानाः न ठाशानाः न शकानाः न वर्षभाम्। **अ**निविद्यः শিতৈব তিবাসীক্ষাৰূলমন্তরম্ ॥ কিবাৰোগাচ্চ পার্থস্য হয়ানামূত্রস্য চ। শিক্ষাশিল্লোপপরবাদস্তাণাঞ্চ পরিক্রমাৎ ॥ বীর্য্যবন্ধ ক্রতঞ্চাগ্রাং দৃষ্ট্। জিফোর-পুজয়ন। কালাগ্নিমিব বীভৎস্থং নির্দ্ধহন্তমিব প্রকাঃ॥ নারয়ঃ প্রেক্ষিতৃং শেকুজ লন্তমিব পাবকম্॥ তানি গ্রন্থান্তনীকানি রেজুরজ্জুনমার্গণৈ:। শৈশং প্রতি নবাত্রাণি ব্যাপ্তানীবার্করশিভি: ॥ অশোকানাং বনানীব ফুরানি ' কুমুমৈ: চিছুলানি বছৰ: বৈতি:। বেজু: পার্থনিবৈভ্তৰতদা সৈক্তানি ভারত। ব্রবোহজুনশরে: শীর্ণ ওয়াৎপুষ্পং হিরগারম্। ছত্রাণি চ পতাকাশ্চ থে দধার সদাগতি:। স্বল্ঞাসনাত্রতা: পরিপেতুর্দিশো দশ। রথাক্দেশানা-দার পার্থচ্ছিরযুগা হরা: । কর্ণকক্ষবিষাণেযু অন্তরে। চেব হ। মর্শবেশেরু চাহত্যাপাতরৎ সমরে গঙ্গান্। কৌরবাগ্র্যগঞ্জানাস্ক শরীরৈর্গতচেত্সাম্। कर्णन मः बृङ। ভृभिरम पित्र न ज्यानम् ॥ यूगी सम्मरतः मर्द्यः स्था स्राप्त सम्म-মম্। কালক্ষমশেষেণ দহত্যগ্রশিথ শিখী॥ তদ্ৎ পার্থো মহারাক দদাহ সমরে রিপুন। ততঃ সর্বাল্পতেকোভির্মনুবো নিঃখনেন চ। শক্ষেনামানু-ষাণাঞ্চ ভৃতানাং ধ্রজ্বাসিনাম্। ভৈরবং শব্দমত্যুগ্রং বানরস্য চ কুর্বতঃ ॥ देनवाजिलाक बी ज्व्याचिन देनोद्याधित वदन । ज्वमूर्वानमात्र वन-বানরিমর্দন: । রথশক্তিমমিত্রাণাং প্রাণের নিপতদ্ভূবি। সোহপয়াৎ সহস৷ পশ্চাৎ সাহসাচ্চাভাবেষিবান ॥ শরবারিঃ স্থতীক্ষারিঃ সমাদিটিঃ: থগৈরিব। অর্জুনম্ভ ধমাবত্রে লোহিতপ্রাশনৈঃ থগৈঃ॥ অত মধ্যে বথাকস্ত রশারবিগাতে জনঃ। দিশাস্থ চ তৃথা রাজারদংখ্যাতাঃ শরাস্তদা॥ স্কুদেবানতং শেকু রথমভ্যসিতৃং পরে। অলভ্যঃ পুনরবৈত্ত রথাৎ সোহতিপ্রপাদরেৎ। তে नता विष्नतीरतम् वरेथव न नमञ्ज्जितः। विष्नीरकम् वीखरानान नमञ्ज রথন্তন।। স তবিকোভয়ামাস হারাতিবলমঞ্জা। অনন্তভোগো ভূকগঃ ক্রীড়রিব মহার্ণবে॥ অস্যতো নিভামতার্থং সর্বমেবাভিগতথা।

কারতে ভূতিব র্বোধঃ কিরীটিন:। সম্ভরাত্তর মাতক। বাবৈররাভরাত্তর। সংবৃতাত্তেন দৃশ্যন্তে মেদা ইব গভবিভি:।। দিলোহ সূত্রম চ: সর্বা: স্ব্যদক্ষিণ-মৃদ্যত:। সূত্ত দুখতে যুদ্ধে সাম্কাসনমগুলম্। পত্তারপেষু ষ্থা চকুংৰিন কলাচন। নালক্ষেত্ৰ শরঃ পেতৃন্তথা গাণ্ডীবধন্বনঃ॥ মার্কো গৰসহব্ৰস্য বুগপদ্ গহ্নতো বনে। ধথা ভবেৎ তথা জ্বজ্ঞে রথমার্গ: কিরীটিন:॥ ন্ৰং পাৰ্থকবৈষিতা ভ্ৰুত্ত সৰ্কামবৈঃ সহ। হস্তাআনিত্যমন্তব্ত পাৰ্থেন নিহতাঃ পরে॥ স্বন্তম তার্থমহিতান বিজয়ং তত্র মেনিরে। কালমর্জ্বনরূপেণ সংহরস্ত-মিব প্রকা: । কুরুদেন। শরীরাণি পার্থেনৈবাহতাক্তপি। দেছ: পার্থহতানীব পার্কক্ষান্ত্রশাসনাৎ ॥ ওষবীনাং বিরাংসীব বিষক্ষীর্যাণি সোহস্বরাৎ ৷ অবনেতঃ কুরণাং হি বীর্যাক্তজুনজাদ ভন্নাৎ ॥ অর্জুনানিলভিন্নানি বনান্ত अपूनविश्वाम्। চকুলে হিতথারাভিধ রণীং লোহিতান্তরাম্॥ লোহি-**टिंग नमार्थ छः भारत्राक्ष**, अरत्नाक्ष, देखः । वज्रूत्न विशेखक ज्नामिका-त्रभक्षः । नार्कः थः **७०कः एन**नानीए नक्तानाभिव लाहिङम्। व्यशखाः श्रीश স্বর্যোছপি নিবর্ত্তে ন পাওব: ॥ তান্ দর্মান্ সমরে শ্র: পৌরুষে সমবন্ধি-जान । मिटेबाबटेखबिक खा मर्कानाक करू दान्॥ म जू ट्यानः विमर्थजा ক্ষরপ্রাণাং সমার্পরং। তঃসহং দশভির্বাণৈটোণিমন্তাভিরেব চ ॥ তঃশাসনং बाह्म জি: ক্লপং শার্বতং ত্রিভি:। ভীম্মং শান্তনবং ষষ্ট্যা রাঞ্চানঞ্চ শতেন হ। कर्बक कर्निना कर्द विद्याध शत्रवीत्रहा॥ जिल्लान् विदक्त मरहशाद्म कर्द সর্বাস্ত্রকোবিদে। হতাশভূতে বিরথে ততোহনীক্ষভদ্যত॥ তৎ প্রভগ্নং वनः দৃষ্টা পার্থমাজিন্থিতঃ পুনঃ। অভিজ্ঞানায় কৌন্তেয়ং বৈরাটিরিদমত্রবীৎ॥ আস্থার ক্রিরং ভিজে। রথং সার্থিনা ময়া। ক্তমদ্বাস্ত্রেশক্র ৰাস্যাহং ত্রা ॥

অর্জুন উবাচ। লোহিতাধ্বরিটং বং বৈরাল্রমন্থপগুলি। নীলাং
পতাকানাজিত্য রথে তিষ্ঠস্ত্র ॥ কুপল্যৈতদনীকাগ্রাং প্রাপরবৈতদেব
মান্। এতস্য দর্শরিব্যামি শীল্লান্তং দৃচ্ধবিদা:। ধ্বজে কমগুর্গ্ব্য শাতকৌস্তমন্ন: শুল:। আচার্ব্য এব হি জোণঃ সর্বশন্তভূতাং বরঃ॥ সদা মনেব মাক্তণ
সর্বশন্তভূতামপি। স্থাসন্ধং মহাবীরং কুক্বৈনং প্রদক্ষিণন্॥ অত্তব
চাবরোহৈন্দেব ধর্মঃ সনাতনঃ। বদি নে প্রথমঃ জোণঃ শ্রীরে প্রহরিষ্যতি।
তত্তোহস্য প্রহরিব্যামি নাস্য কোপো ভবেদিতি॥ অস্যাতিদ্রে চ ধর্মধন্তাগ্রে বস্য দৃষ্ঠতে। আচার্যাক্রের প্রে বি অর্থামা মহার্থঃ ॥ সদা

মমৈষ মাক্তক সর্বশেক্ষভূতামপি। এতন্ত ত্বং রথং প্রাপ্য নিবর্ত্তেথাঃ প্নঃ পুনঃ॥ য এষ তু রথানীকে স্থবর্ণকবচারতঃ। দেনাগ্র্যোণ তৃতীয়েণ वाबहार्यान जिन्नेजि॥ यक्त नार्या स्वकारशहरती रहमरकजनमःवृजः। धृज-রাষ্ট্রাক্সলঃ শ্রীমানের রাজা স্থযোধনঃ ॥ এতস্যাতিমূথং বীর রথং পররথারুজম্। প্রাপয়বৈষ রাজা হি প্রমাথী যুদ্ধভূর্মদঃ॥ এব দ্রোণস্য শিষ্যাণাং শীদ্রান্তে প্রথমো মতঃ। এতদ্য দর্শয়িষ্যামি শীদ্রান্তং প্রথমং (বিপূলং) রণে॥ নাগককা তু ক্রচিরা ধ্বজাথে যদ্য ভিষ্ঠতি। এষ বৈকর্ত্তন: কর্ণো বিদিতঃ পূর্ব্বমেব তে॥ এতদ্য রথমাস্থায় রাধেয়দ্য ছরাত্মন:। বভো ভবেপা: সংগ্রামে স্পর্ধতে হি সদা মধা। যন্ত নীলাত্মারেণ পঞ্চারেণ কেতুনা। रखावानी दृश्कव। द्राथ जिब्रेजि वौधावान्॥ यमा जादाकिरित्वार्रमो ध्वरका রথবরে স্থিতঃ। যগৈয়তৎ পাপুরং ছত্রং বিমলং মূর্দ্ধি তিষ্ঠতি॥ মহতো রথবংশস্য নানাধ্বন্ধপতাকিনঃ। বলাহকাত্রে সুর্য্যোবা য এষ প্রমূথে স্থিতঃ॥ হৈমং চন্দ্রার্কসঙ্কাশং কবচং যদ্য দৃশ্যতে। জাতরপশিরস্থাণং মনস্থাসয়তীব মে॥ এষ শান্তনবো ভাষা সর্কেষাং না পিতামহা। রাজ্ঞীয়া প্রবৃদ্ধক তুর্য্যোধনবশান্ত্রণ: ॥ পশ্চাদেষ প্রশ্নাতব্যো ন মে বিশ্বকরো ভবেৎ। এতেন ষুধ্যমানস্য যন্তঃ সংৰক্ষ মে হন্নান্॥ ততোখভ্যবহদব্যগ্রো বৈরাটিঃ সব্য-সাচিনম্। ধতাতিষ্ঠৎ ক্লেগা রাজন্ যোৎস্যমানে। ধনঞ্জম্ ॥১-৬०

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতান্নাং বৈন্ধাদিক্যাং বিরাট-পর্বাণ্যুত্তরগোগ্রহে অর্জুনক্বপদংগ্রামে পঞ্চপঞ্চাশন্তমোহধ্যান্ন:।

## ষ্ট্পঞাশত্তমোঽথ্যায়ঃ

বৈশন্পারন উবাচ। তাজনীকাজনৃত্যন্ত কুরুণাম্গ্রধন্থিনাম্। সংসপজে বথা মেবা বর্ণাজ্যে মন্দ্রমারতাঃ ॥ অভ্যাসে বাজিনন্তর্যুঃ সমারতাঃ প্রহারিভিঃ। ভীমরপাশ্চ মাতলাভোমরাকুশনোদিতাঃ। মহামাত্রৈঃ সমারতা বিচিত্রকবচোজ্জনাঃ ॥ ততঃ শক্রঃ স্বরগণৈঃ সমারতা বুদর্শনম্। সর্বান্দেবান্ সমারোপ্য বৈদ্ধ্যকলকালিতম্। সহোপারান্তনা রাজন্ বিধারিমকতা-কণৈঃ ॥ তদ্ধেবক্ষণন্ধ্বিমহোরগসমাক্লম্। শুভভেহত্রবিনিক্তিং গ্রহাণামিব মন্তলম্ ॥ অস্ত্রাণাঞ্চ বলং তেবাং মহব্যেষ্ প্রযুক্তাম্। তচ্চ ব্যারং মহদ্বৃদ্ধং কৃপাজ্জনসমাগমে। তাই মত্যাগতা দেবা বিমানেঃ বৈং পৃথক্ পৃথক্ ॥ শতং

শতসহস্রাণাং বত্র সুণা হিরগায়ী। মণিরত্বময়ী চাষ্টা প্রসাদং তদধারয়ৎ ॥ ততঃ কামগমং দিব্যং সর্বরত্ববিভূষিতম্। বিমানং দেবরাব্দ্যা ওওভে থেচরং তদা॥ তত্র দেবাস্ত্ররন্ত্রিংশন্তিষ্ঠন্তি সহবাসবাঃ। গন্ধর্কা রাক্ষসাঃ সর্পাঃ পিতরক মহর্বিভি:।। তথা রাজা বস্থমনা বলাক্ষঃ স্থপ্রতর্দনঃ। অষ্টকণ্চ শিবিশৈত্ব বৰাতিন হিবো গর:॥ মহু: পুরুরঘুর্তানু: রুঞ্চাক্ষ: সগরো নল:। বিমানে দেবরাজন্য সমদৃখ্যস্ত সুপ্রভা:॥ অংগেরীশন্য সোমস্য বঙ্গণন্য প্রজাপতে:। তথা ধাতৃর্বিধাতৃশ্চ কুবেরস্য বমস্য চ। অলম্বোগ্রসেনানাং গন্ধবিস্য চ जुबूद्वाः। यथामानः यट्योटक्ननः विमानानि চकानिद्व ॥ नर्वदनविकात्राकः সিদ্ধাশ্চ পরমর্বর:। অর্জুনস্য কুরুণাঞ্চ যুদ্ধং দ্রষ্টু মুপাগতা: । দিব্যানাং তত্ত मानगानाः गन्नः भूरागारेथ मर्खनः। श्वनमात वेमखार्मो तृक्षांगामिव ভाরত ( পুশিপাম্ )॥ স্বাতপত্তাণি বাসাংসি প্রজশ্চ [ ধ্বজাশ্চ ] ব্যজনানি চ। তত্ত্ব রত্বানি দেবানাং সমদৃশ্রস্ত তিষ্ঠতাম্। উপাশাস্যদ্রস্তো ভৌমং সর্বং ব্যাপ্তং ৰরীচিভিঃ। দিব্যান গলামুপাদায় বায়ুর্বোধানসেবত॥ প্রভাসিতমিবাকাশং চিত্রব্ধবনত্বতম্। সম্পত্তিঃ স্থিতৈকাপি নানারত্বাবভাসিতৈঃ॥ বিমানৈ-বিবিবৈধশ্চিত্রৈরুপনীতৈঃ স্থরোন্তমৈ:। বজ্রভৃষ্কুশুভে তত্ত্র বিমানস্থৈ: স্থরৈর্ভ:। বিজন্ মালাং মহাতেজাঃ পল্লোৎপলসমাযুতাম্ ৷ বিজেকমাণো বলভ্রাতৃপ্যৎ স্বভমাহবে ॥ ১-১৯

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং বিরাট- ।
পর্কণি দেবাগমনে ষ্ট্পঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ।

#### সপ্তপঞাশতমোহগ্যার

বৈশম্পায়ন উবাচ। দৃষ্টা ব্যুঢ়ান্তনীকানি কুন্নণাং পাঞ্চুনন্দনঃ। তত্ত্র বৈরাটিমামন্ত্র পার্থো বচনমত্রবীৎ॥

আৰ্জুন উবাচ। স্বাস্থ্নদময়ী বেদী ধ্বন্ধে বস্তু প্ৰকাশতে। তস্যু দক্ষিণতো ৰাহি ৰূপ: শারন্বতো বতঃ ॥

বৈশশ্পায়ন উবাচ। ধনপ্রয়বচঃ শ্রুখা বৈরাটিশ্বরিতন্তদা। হরান্
রঞ্জসকাশান্ হেমভাগুানচোদরং ॥ আহুপূর্ব্যা তু তৎসর্বনাস্থার রথমূত্তমন্।
প্রাহিণোচ্চপ্রসকাশান্ কুপিতানিব তান্ হরান্॥ স প্রা কুরুসেনারাঃ
সমীপং হরকোবিদঃ। পুনরাবর্ত্তগামাস তান্ হরান্ বাতরংহসঃ॥ প্রদক্ষিণ-

মুপাবৃত্য মণ্ডলং সব্যমেব চ। কুরুন্ সম্মোহয়ামাস মৎস্যো বানেন ভত্তবিৎ ॥ ক্লপন্য রথমাস্থায় বৈরাটিরকুতোভয়:। প্রদক্ষিণমূপাবৃত্য তত্থে তদ্যাগ্রতো वनी ॥ ততোर अर्जूनः मध्यवदः तनवन्तवः महाचनम् । श्रामा वनमासात्र नाम বিশ্রাব্য চাত্মন: ॥ তস্য শক্ষো মহানাসীদ গ্রম্যমানস্য (গ্রায়মানস্য) জিঞুনা। তথা বীৰ্য্যৰতা সম্খ্যে পৰ্ব্বতদ্যেব দীৰ্য্যত:॥ পৃজ্বাঞ্চক্ৰিরে শৃঙ্খং কুরবঃ সহ-দৈনিকা:। অৰ্জুনেন সমাগাত: শতধা বন্ন দীৰ্ঘতে ॥ দিবমাবৃত্য শবস্তু নিবৃত্ত: ভশবে পুন:। স্টো মঘবতা বজ্ঞ: প্রপত্তরিব পর্বতে ॥ এতস্মিরস্তরে বীরো বলদর্পসমন্বিত: । অমুশ্বমাণন্ত: শব্দং কুপ: শার্ঘতন্তথা ॥ অর্জুনং প্রতি সংর্কো युक्तार्थी न महारतः। मटहानधिकमानात्र नटक्षी ८वटशन वीर्यावान्॥ न जू मटकन লোকাংস্ত্রীনাবুঠ্য রথিনাং বর:। ধহুরাদায় স্থমহজ্জ্যাশব্দমকরোভদা॥ ভৌ त्रा प्रशासकारमी (वारमामानी महावरमी। मात्रमाविव स्रीमृत्की वारत्रा-চেতাং ব্যবস্থিতৌ॥ ততঃ শার্ঘতন্তুর্ণং পার্থং দশভিরা<mark>ভ</mark>গৈ:। বিব্যাধ পরবীরন্থং নিশিতৈর্দ্ধভেদিভিঃ॥ পার্থো২পি বিশ্রুতং লোকে গাণ্ডীবং পরমাযুধন্। বিকৃষ চিকেপ বহুয়ারাচান্দরভেদিন:॥ তানপ্রাপ্তাঞ্তির্কা-বৈনৰ্বিবাচান্ রক্তভোজনান্। কপশ্চিচ্ছেদ পাৰ্থস্য শতশোহ<mark>ও সহস্ৰশ</mark>ঃ॥ ততঃ পার্থ-চ সংক্রেদ-চিতান্ মার্গান্ প্রদর্শয়ন্। দিশঃ প্রচল্লয়ামাস বালৌটেখা প্রদিশন্তথা (দিশা সংছাদয়নু বালে: প্রদিশন্ত মহারথা)। একচ্ছায়মিবাকাশমকরোৎ সর্বতঃ প্রভু:॥ প্রাচ্ছাদয়দমেয়াত্মা পার্থ: শরশতৈঃ রূপম্। স শতৈরদিজঃ ক্রুদ্ধঃ শিতেরগ্নিশিথোপটমঃ॥ ভূর্ণং শতসহত্রেণ পার্থমপ্রতিমৌজসম্। অর্দন্নিতা মহাত্মানং ননর্দ্দ সমরে রুপ:। ততঃ কনকপর্কাগ্রৈবীরঃ সম্বতপর্কভি:। ধহুরাদাম বিব্যাধ পার্থং দশভিরা-শুগৈঃ। স্বরন্ গাঙীৰনির্শ্নকৈরর্জ্বস্তুস্য বাজিনঃ॥ চতুর্ভিশ্চতুরন্তীক্লৈরবিধ্যৎ পরমেষ্ভি:। তে হয়া নিশিতৈর্কাণে (বিশিথৈর্বিদ্ধা) জ'লভিরিব পাবকৈ:। উৎপেতু: সহসা সর্ব্ধে ক্বপ: স্থানাদথাচ্যবৎ॥ চ্যুতক্ষেতিমমালোক্য স্থানাৎ কৃষ্টীস্তত্তদা। নাবিধ্যৎ পরবীরত্বো রক্ষমাণোহস্য গৌরবম্। স তু লক্ষ্য পুন: স্থান: গৌতম: দব্যসাচিনম্। বিব্যাধ দশভিব্যাণৈছবিত: কম্পত্তিভি: ॥ ততঃ পার্পো ধরুত্বস্য ভরেন নিশিতেন হ। চিচ্ছেদৈকেন ভূরত হত্তাবাপ-মথাহরং ॥ অথাস্য কবচং বাগৈনি শিতৈর্ম্মভেদিভি:। ব্যধ্মর চ পার্থো-২ন্য শরীরমবপীড়রৎ ॥ ভদ্য নির্শ্ব,চ্যধানদ্য কবচাৎ কার্মাবভৌ। সমঙ্গে ষ্চ্যমানস্য সর্পস্যেব ভন্তর্থা ॥ ছিলে বছবি পার্থেন সোহস্তদাদার কার্ক্রন্।

চকার গোতমঃ সঞ্জাং তদভুতমিবাভবং॥ স তদপ্যস্য কৌত্তের শ্চিচ্ছেদানত-পর্কণা। এবমক্তানি চাপানি বছুনি কৃতহন্তবং। শার্বতক্ত চিচ্ছেদ পাণ্ডবঃ প্রবীরহা। স চ্ছিমধ্মরাদাম রথাচ্ছক্তিং প্রতাপবান। প্রাহিণোৎ পাঞ্-পুদ্রায় প্রদীপ্তামশনীমিব॥ তামর্জ্জনন্তদায়ান্তীং শক্তিং হেমবিভূষিতাম্। বিয়দগতাং মহোকাভাং চিচ্ছেদ দশভিঃ শরৈ:॥ সাপতদশধা ছিলা ভূমৌ কুপঃ। তমাত ধীমতা॥ যুগপচৈচব ভল্লৈন্ত ততঃ সঞ্জাধমু: निर्मिटें भार्यः विराजन मम्जिः मटेतः ॥ उठः भार्यः महाराजन विभिधानित्र-ভেল্প:। চিক্ষেপ সমরে ক্রুদ্ধস্তাদোদশ শিলাশিভান্ ॥ অথাস্য যুগমেকেন চতুর্ভিশ্চতুরে। হয়ান্। ষষ্ঠেন চ শিরঃ কায়াচ্ছরেণ রথসারথে: ॥ ত্তিভিস্তিবেণুং সমরে ঘাভ্যামক্ষং মহারথঃ। ঘাদশেন চ ভল্লেন চকর্ত্তাস্য ধ্বজাত্তমম্॥ ততে! বঞ্জনিকাশেন ফাল্কন: প্রহসন্ত্রিব। ত্রেরোদশেনেক্রসম: রূপং বক্ষস্যবিধ্যত। স ছিল্লধন্বা বির্থো হতানো হতসার্থি:। গদাপাণিরবপ্পুত্য তূর্ণং চিক্ষেপ তাং গদাম্। সাচ মৃক্তাগদা গুকী কুপেণ স্থপরিষ্কৃতা। অর্জুনেন শরৈষ্ সা প্রতিমার্গমধাগমং॥ তদ্ধ বোধাঃ পরীপ্সস্তঃ শার্বতমমর্বণম্। সর্বতঃ সমরে পার্থং শরবর্ধেরবাকিরন ॥ ততো বিরাটস্য স্থতঃ সব্যমাবৃত্য বাজিনঃ। ব্যক্ মণ্ডলং কৃষা তান্ ষোধান্ প্রত্যবারষৎ।। ততঃ কুপমূপাদার বিরথং তে নর-ৰ্বভঃ:। অপজ্ঞ বুৰ্মহাবেগা: কুন্তীপুক্ৰান্ধনঞ্জয়াৎ॥ ১-৪৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বাদি রূপাপ্যানে সপ্তপঞ্চাশত্তমোহধ্যারঃ।

### অষ্টপ্ৰধাশক্তমোহ্ধ্যারঃ

বৈশম্পায়ন উবাচ। ক্রপেংপনীতে জোণস্ত প্রগৃহ সশরং ধহ:। অভ্যধান বদধাধুব্য: [ধাবদনাধুব্য: ] শোণাখ: খেতবাহনম্॥ স তু রুক্সরথং দৃষ্টা গুরু-মায়াস্তমস্তিকাৎ। অর্জুনো অয়তাং শ্রেষ্ঠ উত্তরং বাক্যমত্রবীৎ॥

অর্জুন উবাচ। বতৈবা কাঞ্চনী বেদী ধ্বজে বস্য প্রকাশতে। উদ্ধিতা প্রবরে দণ্ডে প্রাকাভিরলক্কতা। তত্র মাং বহ ভদ্রং তে জোণানীকার সারথে ॥ অখা: শোণা: প্রকাশতে বৃহস্তশ্চারুবাহিন:। সিশ্ববিক্রমসভাশাভাষ্রাস্যাঃ প্রিয়দর্শনা:। যুক্তা রথবরে বস্য সর্ক্রশিকাবিশারদাঃ ॥ দীর্ঘবাহর্শহাতেজা বল-রূপসমন্তিঃ। সর্ক্রোকেয়ু বিক্রান্তো ভারখাজঃ প্রতাপবান্॥ বৃদ্ধ্যা ভূল্যো হাশনসা বৃহম্পতিসমো নয়ে। বেদান্তথৈৰ চহারো ব্রহ্মচর্যাং তথৈব চ॥
সসংহারাণি সর্বাণি দিব্যাক্সন্তাণি মারিষ। ধহুর্বেদশ্চ কার্থন্মেন বন্দিরিত্যং
প্রতিষ্ঠিতঃ ॥ ক্ষমা দমশ্চ সত্যঞ্চ আনুশংস্যমথার্জ্জবম্। এতে চাক্তে চ বহবো
ৰিম্মিরত্যং বিজে গুণাঃ ॥ তেনাহং বোদ্ধ্মিচ্ছামি মহাভাগেন সংযুগে।
তন্মান্তং প্রাপরাচার্যাং কিপ্রমৃত্র বাহর॥

বৈশপায়ন উবাচ। অৰ্জুনেনৈৰম্কস্ত বৈবাটিহে মভ্ৰণান্। চোদরামাস ভানধান্ ভারবাজরথং প্রতি॥ তমাপতত্তং বেগেন পাওবং রথিনাং বরম্। দ্যোণ: প্রত্যুদ্ধটো পার্থং মত্তো মত্তমিব দ্বিপম্।। ততঃ প্রাধ্যাপয়চ্ছঋং ভেরী-শতনিনাদিতম্। প্রচুক্তে বলং সর্বমৃক্ত ইব সাগর:॥ অব শোণান্ সদ-খাংস্তান্ হংস্বৃত্তি বিলেজিবেঃ। মিজিতান্ সমরে দৃষ্টা ব্যাময়স্ত রণে নরাঃ॥ তৌ রথৌ বীর্য্যসম্পন্নো দৃষ্টা সংগ্রামমূর্দ্ধনি। আচার্য্যশিষ্যাবজিতৌ কুতবিছো মনস্বিনৌ ॥ সমালিটো তদাকোন্তং জোণপার্থে মহাবলো । দৃষ্টা প্রাকম্পত মৃত্তরতানাং মহদ্বলম্॥ হর্বসূক্ততঃ পার্থঃ প্রহসন্নিব বীর্যাবান্। রথং রথেন - জোণস্য সমাসাভ মহারথ:॥ অভিবাভ মহাবাহ: সামপুর্কমিদং বচ:। উবাচ শ্বন্ধরা বাচা কৌন্তেয়: পরবারহা ॥ উবিতাঃ স্ম বনে বাসং প্রতিকর্ম চিকীর্বনঃ। কোপং নাহ সি ন: কর্ত্তুং সদা সমর্ত্ত্রয় ॥ অহন্ত প্রহতে পূর্বং প্রহরিষ্যামি তেহনব। ইতি মে বর্ততে বৃদ্ধিন্তরবান্ কর্তুমর্ছি ॥ ততোহনৈ প্রাহিণোদ্ দ্রোণ: শরান্ধিকবিংশতিম্। অপ্রাপ্তাংশৈচৰ তান্পার্ণিচ্চেছদ কৃতহন্তবং ॥ ভতঃ শরুসহত্রেণ রুথং পার্থস্য বীর্য্যবান্। অবাকির্ত্ততো দ্রোণঃ শীল্তমস্ত্রং নিদর্শবন্ ॥ হরাংশ্য রঞ্জপ্রধান্ ক্লপত্তেরঞ্জিতী । অবাকিরদমেরাত্মা পার্থং সংকোপয়লিৰ ॥ এবং প্ৰবরুতে যুদ্ধং ভারদাব্দকিরীটিনোঃ। সমং বিমুঞ্জোঃ সংখ্যে বিশিধান্ দীপ্ততে অস: । তাবুভৌ খ্যাতক শাণাবুভৌ বায়ুসমৌ অবে। উভে) দিব্যান্থবিদাংসাব্ভাব্ভমতেজসে। কিপভৌ শরজালানি মোহয়া-মাসতুর্পান্। ব্যশারভ ততো যোধা বে তত্রাসন্ সমাগতাঃ। বিস্কতোত্ত্ণ দাধু দাধিবতাপ্কয়ন্ ॥ ডোণং হি সমরে কোখনো বোদ্-মহতি ফাল্কনাং। রৌদ্রঃ ক্ষত্রিষধর্মোহয়ঃ গুরুণা বদ্যুধ্যত॥ ইত্যক্রবন্ জনান্তত্ত সংগ্রামশিরসি স্থিতা:। বীরৌ তাবভিসংরজৌ সন্নিরুটো মহাভূজৌ। ছাদরেতাং শরবাতৈরজোহক্তমপরাব্বিতৌ॥ বিক্ষার্য্য স্থমহচ্চাপং হেমপৃষ্ঠং ত্রাসদম্। ভার**ধালোহও সংক্র্**ক: ফাস্তনং প্রত্যবিধ্যত ॥ স সায়কম**ং**রজনিল-রর্জ্বনত রথং প্রতি। ভাত্মভিঃ নিলাধৌতৈর্ভানোঃ প্রাচ্ছদরৎ প্রভাম্॥ পার্থঞ

स्मश्वाचाहम शांविरार्भशावधः। विवाध निर्मिटे अर्कारेन स्मार्था वृत्हेत्रव अर्क्व अस् ॥ ভাৰেব দিব্যং গাণ্ডীবং ধহুরাদার পাণ্ডবঃ। শক্রমং বেগবান ক্লফো ভারসাধন-মৃত্তমন্ ॥ বিসমর্জ শরাংশ্চিতান্ স্বর্ণবিক্ষতান্ বহুন্। শমরন্ শরবর্ষাণি ভারঘান জন্ত বীৰ্য্যবান ! তৃৰ্ণাপ্ৰিমৃক্তানি তদ্ভত্মিবাভবং ॥ স রংখন চরন্ পার্থঃ প্রেক্ষণীয়ো ধনম্বয়:। যুগপদিক সর্বাস্থ সর্বাশ্যাণ্যদর্শরং॥ একছারমিবাকাশং वरिनेक्टरक ममञ्जूष्टः। नाम्चेष्ठ छमा द्वारिना नीहाद्वरित मध्युष्टः॥ जन्त्राख्य-ত্তদা রূপং সংবৃতক্ত শরোত্তমৈ:। জাজনামানত তদা পর্বতদােব সর্বত:॥ দুটা তু পার্থস্য রবে শরৈ: স্বর্থমাবৃত্য্। স বিস্ফার্য্য ধন্থ: শ্রেষ্ঠং মেষস্কনিত-নিম্বনম্॥ অগ্নিবর্ণময়ং ঘোরং ব্যক্ষৎ প্রমায়ুধম্। ব্যপাত্যুচ্ছরাংভীক্লান্ জোণং সমিতিশোভনঃ ॥ মহানভৃত্ততঃ শক্ষো বংশানামিব দহাতাম্। ভায়ু-নদমব্য়: পুডে শ্ভিত্তাপবিনির্গতি:। প্রাচ্ছাদরদমেরাত্মা দিশ: ত্র্াস্য চ প্রভাম্। ততঃ কনকপুঞানাং শরাণাং নতপর্বণাম্। বিয়চ্চরাণাং বিয়তি দৃশুন্তে বহবো ব্রকাঃ। দ্রোণশু পুঝ্রসক্তাশ্চ প্রপতন্তঃ শরাসনাৎ। একো দীর্ঘ ইবাদৃশ্রদাকাশে সংহতঃ শরঃ॥ এবস্তৌ স্বর্ণিরিক্তান্ বিমৃঞ্স্তৌ মহাশরান্।. আকাশং সংবৃতং বীরাবুঝাভিরিব চক্রতুঃ॥ শরান্তরোস্ত বিবভূঃ কর্মবর্হিণ-বাসস:। পঙ্ক্তি: শরদি ধন্থানাং হংসানাঞ্রতামিব ॥ যুদ্ধং সমভবত্তত্ত্ব স্থসং-রদ্ধং মহাত্মনো:। দ্রোণপাগুবদ্ধোরং বুত্রবাসবদ্ধোরিব ॥ তৌ গঙ্গাবিব সংক্রেদ্ধে বিষাণাগ্রে: পরস্পরম্। শরে: পূর্ণায়তোৎস্টেরক্তোহস্তম্ভিক্সতু: ॥ ভাগশ:॥ অথ ত্বাচার্য্যমুখ্যেন শরান ক্ষিপ্তান শিলাশিতান্। ফুবারম্চ্ছিতৈ-বিলিরজ্নো জয়তাং বর:॥ দর্শয়ন্ বীক্ষাণানামস্তম্গ্রপরাক্রমম্। ইযুভি-ন্তুৰ্নাকাশং বহুভিশ্চ সমার্ণোৎ ॥ विचाःসন্তঃ নরব্যান্ত্রমর্জুনং তিগাতেজসম্। ष्मोर्চार्यामुशाः नमत्त्र ८एपांगः मञ्जकृताः वदः। षाञ्चतन नशक्तीकृष्करेतः नवक-পর্বভ:॥ निवानाञ्चानि মুঞ্চ ভারদাকো মহারণে। অত্মরত্রানি সংবার্যা ফাল্কনং সমঘোধয়ৎ 🛊 তলোরাসীৎ সংপ্রহার: ক্রুদ্ধয়োন রিসিংহয়ো:। অমর্ধি-ণোন্তদাক্তোহক্তং দেবদানবলোরিব ॥ ঐক্তং বারব্যমাগ্রেরমক্তমন্ত্রেণ পাওবং । দ্রোণেন মৃক্তমাত্তন্ত প্রসতি অ পুন: পুন: ॥ এবং শৃরো মহেলাসো বিক্তবন্তী শিতাধরান। একছারং চক্রতৃত্তাবাকাশং শরবৃষ্টিভি:॥ তত্তার্জ্নেন মৃক্তানাং পততাং বৈ শরীরিষ্। পর্বতেধিব বজ্ঞাণাং শরাণাং শ্ররতে খনঃ॥ ততো ৰাগা রথাদৈত্ব বাজিনশ্চ বিশাম্পতে। শোণিভাক্তা ব্যদৃশ্রন্থ পুলিতা ইব

कि: कि: । ( अत्माकानाः वनानीव ऋषानि कृत्ररेमन देवः । दब्रक्ः भार्यमदेव-खबखना रेमकानि ভाরত।) वाह् जिन्ह मदक्यूदि विविद्यन महात्रेथः। खुवर्य-কবলৈ কিট্রের্গলৈক বিনিপাতিতৈঃ ॥ বোটেক নিহতৈন্তর পার্থবাণপ্রপীডিতৈঃ । বলমাদীৎ সমুদ্দ্রান্তং দ্রোণার্জ্বন্মাগনে ॥ বিধুঘানো তু ভৌ তত্ত ধহুষী ভার-সাধনে। আছোদরেতামত্যোহজং ততক্ষ তুর্থেষ্ডি: [ সংতক্ষন্তৌ মহেষ্ডি: ] ॥ তরো: সমভবদ যুদ্ধং তুমুলং ভরতর্ষভ। ডোণকৌজেররোত্তক বলিবাসবরোরিব॥ चय भूनीयरजार रहेशः गरेतः ममजनर्विष्यः। वामायरम्जारकारकारकार आनम्मरज প্রবর্ত্তিতে ॥ অধান্তরীক্ষে নাদোহভূদ্ দ্রোণং তত্ত প্রশংসতাম্। ত্তরং ক্তবান্ দ্রোণো ষদর্জ্জনমযোধরং॥ প্রমাথিনং মহাবীর্ঘ্যং দৃচ্মৃষ্টিং ছরাসদম্। কেতারং দেবদৈত্যানাং দর্বেষাঞ্চ মহারথম্॥ অবিভ্রমঞ্চ শিক্ষাঞ্চ লাঘবং দূরপাত্তিতাম। পার্থন্য সমরে দৃষ্টা দ্রোণন্যাভূচ্চ বিশ্বয়: ॥ অথ গাণ্ডীবমৃদ্ধম্য দিব্যং ধন্তুরমর্থন:। বিচক্ষ রণে পার্থো বাছভাগে ভরতর্বভ ॥ ততো বাণ্ময়ং বর্ষং শলভানামিবায়-তিম্। দৃষ্টা তে বিস্মিতাঃ দর্কে দাধু দাধ্বিত্যপূব্দয়ন্॥ ন চ বাণাস্তবেহপ্যদ্য বায়ু: শক্ষোতি সর্পিতৃম্। অনিশং সন্দধানস্য শরাহৃৎস্কৃতন্ত্রণা ॥ দদর্শ নাস্তরং कन्टि९ পার্থन্যাদদতোহপি চ ॥ তথাস্ত্রযুদ্ধে ঘোরে তু বর্ত্তমানে স্থলারুলে। শীব্রাক্টীব্রতরঃ পার্থ: শরানকার্ট্রেরছং ॥ ততঃ শতসহস্রাণি শরাণাং নতপর্ব্ব-ণাম্। যুগপৎ প্রাপতংক্তত্র দ্রোণস্য রথমন্তিকাৎ ॥ স্বাকীর্য্যমাণে দ্রোণে তু শবৈর্গাণ্ডীবধ্বনা। হাহাকারো মহানাসীৎ সৈন্তানাং ভ্রতর্ভ ॥ পাণ্ডবস্য তু শীদ্রান্ত্রং মববা প্রত্যপ্রস্থাৎ। গন্ধর্কাপ্সরসনৈত্র যে চ ভত্র সমাগভাঃ॥ ততো বুন্দেন মহতা রথানাং রথযুথপ:। আচার্য্যপুত্র: সহসা পাওবং প্রত্য-বারমং॥ অখখামাতু তৎকর্ম হৃদয়েন মহাজ্মনঃ। প্রমামাস পার্থস্ত কোপ-ঞাদ্যাকরোদ্ ভূশম্ ॥ স মহ্যবশমাপন্ন: পার্থমভ্যদ্রবদ্রণে। কিরন্ শরসহস্রাণি পর্জন্ত ইব বৃষ্টিমান ॥ আবৃত্য তু মহাবাছর্বতো দ্রৌণিষ্টতো হয়ান। অস্তব্য व्यम्ति भार्त्वा त्यांगमा राभमिन्यू। म जू नक्षांखदः जूरी वाभावाक्कवरेनर्रदेवः। ছিন্নবর্শধ্বজঃ শূরো নিক্নতঃ পরমেষ্তিঃ ॥ ১-৭৬

> ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বাণ্যুম্ভরগোগ্রহে জোণাপ্যানে অউপঞাশন্তমোহধ্যার:।

## উপষ্ঠিতমোহগ্যায়ঃ

বৈশপায়ন উবাচ। ততো দ্রোণির্মহাবীর্ঘ্যঃ (ম'হারাস) প্রবধাবর্জ্জুনং রণে । তং পার্থ: প্রতিজ্ঞাহ তাক্ষ্যো নাগমিবোদ্ধতম। শরজালেন মহতা বর্ধমাণ ইবা-মুদ:॥ তথ্যোদে বাস্থ্রসম: সন্নিপাতো মহানভূৎ। কিরতোঃ শরকালানি বুত্রবাসবয়োরিব ॥ ন স্ম স্থান্তদা ভাতি ন চ বাতি সমীরণ:। শরজালাবুতে ব্যোমি চ্ছারাভূতে সমস্তত:॥ মহান্ চটচটাশব্দো বোধয়োহ স্থমানয়ো:। দফ্তামিব বেণুনামাসীৎ পরপুরঞ্জ ॥ হয়ানস্যার্জ্বনঃ সর্বান্ কৃতবানল্লজীবি-তান। তে রাজন প্রজানন্ত দিশং কাঞ্চন মোহিতা: ॥ ততে। দৌণিম হাবীর্ঘ্য: পার্থস্য বিচরিয়ত:। বিবরং স্ক্রমালোক্য জাং চিচ্ছেদ ক্রেণ হ। তদস্যা-পুৰুষন দেবা: কর্ম দৃষ্টাতিমাত্রষম্॥ ড্যোণো ভীমণ্ড কর্ণন্ড কুপল্ডিব মহারথ:। সাধু সাধ্বিতি ভাষস্ভোহপুজন্বন কর্ম তদ্য তৎ ॥ ততো দ্রৌণির্যক্রম্য ( র্ধনংশ্বটো বিভ্রমা ) ভরতর্বভম্। পুনরেবাহনৎ পার্থং হাদরে কম্প্রিভি:।। ততঃ পার্থো মহাবাহঃ প্রহৃদ্য স্বন্যত্তদা। বোজন্বামাদ নবন্না মৌর্ব্যা গাঙী-বমোজসা॥ ততোহদ্ধিচন্দ্রমাবৃত্য তেন পার্থঃ সমাগমং। বারণেনের মজেন মত্তো বারণঘূণপ:॥ ততঃ প্রবর্তে যুদ্ধং পৃথিবলামেক্বীরয়ো:। রণমধ্যে ছরোরেবং স্থাহলোমহর্ষণম্ ॥ তৌ বারী দদৃশুঃ সর্বের কুরবো বিশ্বরান্বিতাঃ। ब्धामात्नो महावीर्यो। यूथे भाविव मक्टिंग । ८०। ममाक्ब कुर्वी वांतरका ५ छः পুরুষর্যভৌ। শরৈরাশীবিধাকারৈজ্লভিরিব পাবকে: ॥ অক্ষয়াবিষুধী দিব্যৌ পাওবস্য মহাত্মন:। তেন পার্থো রণে শুরস্তক্ষে গিরিরিবাচন:॥ অখ-খান্ত: পুনর্কাণা: ক্ষিপ্রমভ্যস্যতো রণে। জ্বগ্রু: পরিক্ষরং শীদ্রমভ্তেনাধিকো-হর্জুন:॥ ততঃ কর্ণো মহাচাপং বিক্লয়া ভ্যধিকং ক্রম। অবাক্ষিপত্ত ড: শব্দো ্হাহাকারে। মহানভুৎ॥ ততশ্চকুদিধে পার্থো যত্র বিক্ষার্য্যতে ধরু:। দদর্শ তত্ত্ব কাধেয়ং তদ্য কোপো ব্যবদ্ধত ॥ স কোষবশমাস্থায় কর্ণমেব জিঘাংসরা। সংগ্রৈ-ক্ষত বিবৃত্তাভ্যাং নেত্ৰাভ্যাং কুৰুপুৰুব॥ তথা তু বিমূৰ্ণে পাৰ্থে দ্ৰোণপুত্ৰস্য সায়-কান্। বরিতা: পুরুষা রাজগুপজরু: সহস্রশ:॥ উৎস্কা চ মহাবাহজে পি-পুলং ধনঞ্জয়:। অভিহুদ্রাব সহসা কর্ণমেব সপত্মজিং। তমভিক্ষত্য কৌতেয়: क्लाधमःतक्लांकनः। कामन्नन् रेषत्रथः ८ जन युक्तः वहनमञ्जी ॥ >-२>

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাটপর্বগ্র-তুরগোগ্রহে অর্জুনাথখামযুদ্ধং নাম একোনষ্টিতমোহধ্যারঃ।

### ষষ্টিতমোহপ্যারঃ

অর্জুন উবাচ। কর্ণ বত্তে সভামধ্যে বহু বাচা বিক্থিতম্। ন মে বৃধি
সমোহতীতি তদিদং সম্পত্তিন্য সোহত কর্ণ মরা সার্জং ব্যবহাত্ত মহামুধে।
জ্ঞাস্যসে বলমাত্মীয়ং ন চাক্তানবমক্তমে ॥ অবোচঃ পদ্ধা বাচো ধর্মমুৎস্ক্র্যু
কেবলম্। ইদন্ত ত্তরং মক্তে বদিদন্তে চিকীর্বিতম্ ॥ বত্তরা ক্থিতং পূর্বং
মামনাসাত্ত কিঞ্চন। তদত্ত কুকু রাধের কুকুমধ্যে ময়া সহ ॥ বং সভায়াঞ্চ
পাঞ্চালীং ক্লিন্তমানাং তুরাত্মভিঃ। দৃষ্টবানসি তল্ভাত্ত ফ্লমাপুহি কেবলম্ ॥
ধর্মপাশনিবদ্ধন বন্ময়া মর্বিতং পূরা। তস্য রাধের কোপস্য বিজয়ং পশ্ত মে
মুধ্যে বনে বাদশবর্বাণি বানি সোঢ়ানি ত্র্মতে। তস্যাত্ত প্রতিকোপস্য
ফলং প্রাপুহি কেবলম্ ॥ এহি কর্ণ ময়া সার্জং প্রতিপভত্ব সক্রম্। প্রেক্ষকাঃ
কুরবঃ সর্ব্যে ভবত্ত তব সৈনিকাঃ ॥

কর্ণ উবাচ। ব্রবীষি বাচা বং পার্থ কর্মণা তং সমাচর। অভিলেতে হি তে বাক্যং কর্মৈতং প্রথিতং ভ্বি॥ যত্ত্বা মর্বিতং পূর্বাং তদশক্তেন মর্বিতম্। ইতো গৃহীমহে পার্থ তব দৃষ্ট্বা পরাক্রমন্॥ ধর্মপাশনিবদ্ধেন যত্ত্বা মর্বিতং পূরা। তথৈব বদ্ধমাত্মানমবদ্ধমিব মন্ত্রমে বিদ্ধি তাবদ্ধনে বাসো বথোক্ত-শ্বরত্ত্বা। তত্ত্বং ধর্মার্থবিৎ ক্লিষ্টঃ স ময়া বোদ্ধ্ মিচ্ছসি॥ বদি শক্তঃ স্বরং পার্থ ব্যুগতে তব কারণাং। তথাপি ন ব্যথা কাচিন্ম স্যাধিক্রমিয়তঃ ॥ অয়ং কৌন্তের কামত্ত্বে ন চিরাৎ সম্পন্থিতঃ । বোৎস্যসে হি ম্রা সার্ধমন্ত দ্বন্সাসি মে বলন্॥

অর্জুন উবাচ। (প্রাক্তান্ প্রধান্ জিমা বুথা তে কর্ণ গজিতিম্)। ইদানীমেব তাবজুমপ্যাতো রণায়ম। তেন জীবসি রাধের নিহত্তমুজ্জত ॥ লাতরং ঘাতয়িমা কন্তাজ্বা রণশিরশ্চ ক:। মুদ্ধ: প্রধ: সংস্থ ক্রয়াদেবং ব্যবস্থিত:॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। ইতি কর্ণং বদরেব বীভংমরপরাজিতঃ। অভ্যয়াবিস্তলন্ বাণান্ কায়াবরণভেদিনঃ ॥ প্রতিজগ্রাহ তান্ কর্ণঃ শরানগ্রিনিথোপমান্। মহতা শরবর্ষেণ বর্ষমাণ ইবাস্থাঃ ॥ উৎপেতুঃ শরজালানি ঘোররূপাণি
সর্বলঃ। অবিধ্যদশান্ বাহ্বোশ্চ হন্তাবাপং পৃথক্ পৃথক্ ॥ সোহমুস্থমাণঃ কর্ণস্যানিষ্কস্যাবল্যন্ম। চিচ্ছেদ নিশিতাগ্রেণ শরেণানতপর্বণা ॥ উপাসভাত্পাদার
কর্ণো বাণমথাপরম্। বিব্যাধ পাশুবং হল্তে তস্য মৃষ্টিরশীর্ষ্যত ॥ ততঃ পার্থো
মহাবাহঃ কর্ণস্য ধন্মরুছিনং। দ শক্তিং প্রাহিণোত্তকৈ তাং পার্থো ব্যধমছেরৈঃ ॥
ততীয়—২১

ততো নিপেতৃর্বহবো রাধেরস্য পদাস্থপা:। তান্ গাণ্ডীববিনিকৃতি: প্রাহি-ণোদ্ ব্যসাদন্ । ততোহস্যাখাইরেন্ডীকৈবীভংম্ভারসাথনৈ:। আকর্ণমৃতৈন্ত্রহনং তে হতাঃ প্রাপতন্ ভ্বি॥ অথাপরেণ বাণেন জনিতেন মহৌজসা। বিব্যাধ কর্ণং কৌন্তেরন্ডীকেনোরসি বীর্যাবান্॥ তস্য ভিত্না তম্ত্রানং কার-মত্যাগমছের:। ততঃ স তমসাবিটো ন ক্ষিকিং প্রজ্ঞজ্ঞবান্॥ স গাঢ়বেদনো হিছা রশং প্রারাহ্দম্পং। ততোহর্জুন উদক্রোশহন্তর্গ মহারথ:॥ ১-২৭

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বপুত্তরগোগ্রহে কর্ণপরাক্ষ্যো নাম ব্যষ্টিতমোহধ্যার:।

### একয়ণ্ডিভমো১ধ্যায়ঃ

देवभाषांत्रन देवाह । उट्डा देवकर्सनः किया शादर्श देवताहिमजनीर । এডন্মাং প্রাপন্নানীকং বত্ত ভালে। হিরগ্নরঃ॥ অত্ত শাস্তনবো ভীল্লো রথে-হলাকং পিতামহ:। কাজকমাণো মরা বৃদ্ধং তিঠতামরদর্শন:॥ অথ সৈতং মহদদ্ধা রথনাগহরাকুলম্। অত্রবীত্তরঃ পার্থনপবিদ্ধা শরৈভূশিম্ ॥ নাহং শক্যামি (শক্ষ্যামি) বীরেছ নিয়ন্তং তে হয়োত্তমান্। বিবীদন্তি মম প্রাণা মনো বিহবল্ডীৰ মে॥ সন্ত্ৰাণামিত দিব্যানাং প্ৰভাবাৎ সংপ্ৰযুক্তাভাম। তথা চ कृक्र जिटेन्छव जवसीव मिटना मन ॥ शटक्षन मृद्धिक काहर वनाक धित्र समनाम। देवरीकुछः यत्ना स्वरुष्ठ व्यानतेन्त्रत व्यानक्षणः॥ व्यानृहेन्द्रसः मुतानाः मन्ना नःत्या ৰমাগম:। গোধাবাতেন মহতা শঝানাং নিখনেন চ॥ সিংহনানৈক শ্রাণাং প্রজানাং বুংহিতৈত্বথা। গাঙীবশব্দেন ভূশমশনিপ্রতিমেন চ। শ্রুতি: শ্বতিক মে বীর প্রণষ্টা মৃচ্চেডসঃ॥ অলাডচক্রপ্রতিমং মণ্ডলং সভতং দ্বরা। ব্যাক্ষি-পামাণং সমরে গাণ্ডীবঞ্চ প্রপশ্রতঃ। দৃষ্টিবিচলিতা বীর হৃদরং দীর্যাতীব যে। বপুশ্চোগ্রং তব রণে ক্রুক্তেব পিনাকিন:। ব্যাৰক্ততঃ শরান্ হোরান্ দৃই। खीर्य खरणार्थि॥ नानमानः न मक्तानः न म्कबः नरताखमान्। जामहः সংপ্রপশ্রামি পশুরপি বিচেতন: । অবসীদন্তি মে প্রাণা ভূরিয়ঞ্চল্ডীব চ। ন প্রতোদং ন চাভীযুন্ সংবন্ধং শক্তিরতি মে।

আর্ন উবাচ। মা ভৈনীঃ অন্তরাস্থানং স্বাপি নরপুদ্ধ। অত্যভুতানি কর্মাণি কৃতানি রণম্মনি॥ রাজপুত্রোহসি ভক্ততে কুলে মংক্তক বিশ্রুতে। জাতত্তং শত্রুদমনে ন বিবীদিতৃমর্হসি॥ ধৃতিং কৃতা স্থবিপূলাং রাজপুত্র রথে (মম) পুনঃ। ষ্ধ্যমানস্ত সমরে হরান্ সংবচ্ছ শত্রুহন্॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। এবমুক্তা মহাবাছর্কৈরাটিং নরসন্তম:। অর্জুনো র্থিনাং শ্রেষ্ঠ: পুনরেবেদমত্রবীৎ । সেনাগ্রমান্ত ভীম্বন্ত প্রাপর্যেক্তদের মাম। আছেৎস্তাম্যহমেত্ত ধহুর্জ্যামপি চাহবে। অক্তরং দিব্যমন্ত্রং মাং চিত্রমত্ত নিশাময়। শতহুদামিবায়াস্তীং শুনরিম্বোরিবাখরে॥ স্থর্বপৃষ্ঠং গাণ্ডীবং দ্রুক্যন্তি কুরবো মম। দক্ষিণেনাথ বামেন কতরেণ স্বিদশুভি॥ ইভি মাং সঙ্গতাঃ সর্ব্বে তর্করিয়ন্তি শত্রবঃ: শোণিতোদাং রখাবর্ত্তাং নাগনকাং তুরতারাম। নদীং প্রস্কুদরিয়ামি পরলোকপ্রবাহিণীম্। পাণিপাৰশির:-পূর্চবাছশাখানির সুরম্। বলং কুরুণাং ছেৎস্তামি শরৈ: সমতপর্কভি: ॥ স্বয়ত: কৌরবীং সেনামেকল্স মম ধরিন:। শতং মার্গা ভবিয়ন্তি পাবকল্পের কাননে। ময়া চক্রমিবাবিদ্ধং সৈন্তঃ দ্রক্ষাসি কেবলম। ইষক্তে শিক্ষিতং চিত্রমহং দর্শবিভাষি তে ॥ অসংল্রান্ডো রথে তিষ্ঠ সমেষু বিষমেষু চ। দিবমারতা তিষ্ঠন্তং গিরিং ভিন্যাং অপত্রিভি:। অহমিল্রক্ত বচনাৎ সংগ্রামে২ভ্যহনং পুরা। পৌলোমান কালকঞ্জাংশ্চ সহস্রাণি শতানি চ ॥ অহমিক্রাদ্ দৃঢ়াং মৃষ্টিং ব্রহ্মণঃ ক্লুভহন্ততাম্ । প্রগাঢ়ং তুমুলং চিত্রমন্ত শিক্ষাং (চিত্রমিতি বিদ্ধি) প্রস্থাপতে:। স্বহং পারে সমুক্ত হিরণ্যপুরবাসিনাম্। **জি**তা ষ্টিসহলাণি র্থিনামুগ্রভেজ্পাম ॥ শীর্ঘামাণানি তুলানি প্রবুদ্ধেনেব বায়ুনা। ময়া কুরূণাং বুন্দানি পাত্যমানানি প্রভাবে ॥ ধ্রজবৃক্ষং পত্তিশাথং রথসিংহগণায়ত্ম। বনমানীপরিস্থানি কুরণামস্ত্রতেজ্বসা। তানহং রথনীড়েভ্যঃ শরৈঃ সরতপর্বভি:। পঞ্জীন সর্কানতিবলান যোৎশুমানানবস্থিতান। একঃ সংকালিরস্থামি বঙ্গপাণিরি-বামুরান্। রৌজং রুজানহং হক্তঃ বারুণং বরুণাদপি। অস্ত্রমারেরমারেন্চ वात्रवाः माठतिचनः। वङ्गागीनि ठथाञ्चानि मञ्जामहमवाश्ववान्। धार्खनाह्न-বলং বোরং নরসিংহাভিরক্ষিতম্। অহম্ৎসাদরিয়ামি বৈরাটে ব্যেতৃ তে ভরম্॥

বৈশম্পান্তন উবাচ। এবমাশাসিতত্ত্বন বৈরাটি: স্ব্যুসাচিনা। ব্যুগাহন্ত্রধানীকং ভীমং ভীমাভিরক্ষিত্ম॥ তমান্তান্তং মহাবাহং বিদীষক্তং রপে কুরন্। অভ্যুবারন্তব্যক্রকর্মা নদীম্বতঃ॥ তত্ত্ব জিফুরুপানৃত্য ধ্বক্ষং ম্লাদপাতরং। বিরুগ্ধ কলধোভাগ্রমিখন্তং প্রাপর্তথম্ (স্বিদ্ধঃ প্রাপতদ্ভ্বি)॥ ভঞ্জিন্তমাল্যাভরণাঃ কৃতবিদ্ধা মনস্বিনঃ। আগচ্চন্ ভীমধ্বানং চন্ত্রিরঃ স্মহাবলাঃ॥ ত্ঃশাসনো বিকর্ণক ত্ঃসহোহথ বিবিংশতিঃ। আগত্য

ভীমধনানং বীভৎসং প্রভাবারয়ন্॥ ছঃশাসনস্থ ভল্লেন বিদ্বা বৈরাটিম্ভরম্। বিভীয়েনার্জ্নং বীরং প্রভাবিধাৎ অনাস্তরে॥ তত্ত জিফুকপারতা শিতধারেণ কার্ল্ক্ন্। চকর্ত্ত গার্দ্ধ্রপত্রেণ কাতরূপপরিষ্কৃত্তম্। অথৈনং পঞ্চভিঃ পশ্চাৎ প্রভাবিধাৎ স্থনাস্তরে। সোৎপন্নাতো রণং হিছা পার্থনাণপ্রপীড়িতঃ॥ তং বিকর্ণঃ শরৈত্তীক্ত্রগার্দ্ধ পরেরজিম্বানিং। বিব্যাধ পরবীরয়মর্জ্নং ধৃতরাষ্ট্রজঃ॥ তত্তত্তমপি কৌস্তেরঃ শরেণানতপর্বণা। ললাটে২ভাহনত্ত্র্বং স বিদ্ধঃ প্রাপত্ত্রভাবি। ততঃ পার্থমভিক্রতা ছঃসহঃ সবিবিংশতিঃ। অবাক্রিয়ছরেরত্তীক্ত্রেং পরীক্ষন্ লাতরং রণে॥ তাবুভৌ গার্দ্ধ প্রভাবাং নিশিতাভ্যাং ধনপ্রয়ঃ। বিদ্বাক্ষ্পার্থততো বাহানস্থারৎ॥ তৌ হতাখো বিবিদ্ধান্ধী ধৃতরাষ্ট্রাত্মজাবুভৌ। অভিপ্রতা রথৈরকৈরপনীতৌ পদাস্থিতঃ॥ সর্বা দিশশ্চাভ্যপতদীভৎ-স্বরপরাজিতঃ। কিরীটমালী কৌস্তেয়ো লকলক্ষ্যো মহাবলঃ॥১-৪৬

ইতি শ্রীমহাভারতে শভদাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বগু-ত্তরগোগ্রহে অর্জুনত্বংশাসনাদিষ্কো নাম একষ্টিতমোহধ্যারঃ।

## দূষ্টি তমোহধ্যায়ঃ

বৈশন্দায়ন উবাচ। অথ সক্ষয় সর্বেতে কৌরবাণাং মহারথাঃ।
অর্জুনং সহিতা যত্তাঃ প্রত্যবুধস্ত ভারত॥ স সায়কমরৈর্জালৈঃ সর্বতন্তায়হারথান্। প্রাচ্ছাদয়দমেয়াঝা নীহারেণের পর্বতান্॥ নদজিক মহানাগৈর্থে দালৈক বাজিতিঃ। ভেরীশন্ধনিনাদৈক স শক্তমুলোহভবৎ॥ নাগাখকায়ায়ির্ভিত্য লৌহানি কবচানি চ। পার্থক্ত শরকালানি বিনিন্দেত্য সহক্রশঃ॥ ক্রমাণঃ শরানক্তন্ পাতবং প্রবভৌ রণে। মধ্যন্দিনগতোহচিন্মান্ শরদীর দিবাকরঃ॥ উপপ্রবন্তি বিজ্ঞা রপেভ্যো রথিনত্তথা। সাদিনকাখপ্ঠেভ্যো ভূমৌ চাপি পদাতয়ঃ॥ শরেয় সন্তাভ্যমানানাং কবচানাং মহাত্মনাম্। তামরাজভলীহানাং প্রাত্রনাদীয়হাখনঃ॥ ছয়মারোধনং সর্বং শরীরের্গতচেত্রনাম্। গজাখসাদিভিত্তত্ত শিতবাণাভলীবিতৈঃ (পার্থবাণপ্রপীড়িতঃ)॥ রপোপন্থাভিপতিতৈয়াভ্তা মানবৈম হী। প্রন্ত্যতীব (অন্ত্যদিব) সংগ্রামে চাপ্টভো ধনক্রমঃ॥ শ্রুমা গাণ্ডাবনির্ঘেষং বিক্তিভিতিমবাশনেঃ। ত্রতানি সর্বাভ্তানি ব্যাগচ্ছাহ্রহাৎ॥ কুপ্রলোঞ্চীয়ধারীণি কাতরপ্রশ্রভানি চ।

পতিতানি চ দৃখন্তে শিরাংসি রণমুর্জনি ৷ বিশিথোর্যথিতৈর্গতির্বাছভিক সকার্থ কৈ:। সহস্তাভরণৈশ্চাক্ত: প্রজ্বা ভাতি মেদিনী । শিরসাং পাত্যমানানামন্তরাণি শিতৈঃ শরৈঃ। অশ্বর্টিরিবাকাশাদভবন্তরভবভ॥ मर्नितिषा उथाच्यानः (त्रीजः क्रज्ञभत्राज्ञमः। **चथ** क्रटकांश्ठतः (त्रीज्ञकत्रन) পার্থো বর্বাণি ত্রি-দশানি চ। ক্রোধায়িমুৎস্কন তীব্রং ধার্ত্তরাষ্ট্রেয় পাণ্ডবঃ॥ তত্ত তদহত: দৈত্রং দুধী চৈব পরাক্রমন্। সর্বে শান্তিপরা ভূতা ধার্ত্তরাষ্ট্রত পশ্ৰত: । বিজ্ঞানয়িতা তৎসৈক্তং জাবমিতা মহার্থান। অৰ্জুনো করতাং শ্রেষ্ঠঃ পর্যাবর্ত্তত ভারত॥ প্রাবর্ত্তরন্নদীং বোরাং শোণিতোদাং তরদিণীম্। কেশলৈবাল্সমাধাং যুগান্তে কালনিশিতাম 🛭 .শরচাপপ্লবাং ঘোরাং মাংসশোণিতকর্দনাম্। তহুত্রোফীষসম্বাধাং নাপকৃশাং রথোডুপাম্। মেদোবদাস্ক্প্রবহাং মহাভয়বিবর্দ্ধিনীম। রৌত্ররূপাং মহাভীমাং শ্বাপদৈর-ভিনাদিতাম্। তীক্ষপত্তমহাগ্রাহাং ক্রব্যাদগণদেবিতাম্। মুক্তাহারোর্শি-ক্লিলাং চিত্রাল্কারভূষিতাম্॥ শিরঃসভ্বমহাবর্ত্তাং নাগনক্রাং ছুরতায়াম্। মহারথমহাদ্বীপাং শৃঞ্চু কুভিনিম্বনাম । চকার চ হলা পার্থো নদীমূত্তরশোণি-তাম্॥ আদদানভ হি শরান্ সন্ধায় চ বিম্ঞতঃ ! বি**কর্বতদ্ গাঙী**বং ন किकिक्किप्रथार्थिय ( बनः )॥ ১-२२

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বপুত্রবগোগ্রহে অর্জুনসঙ্কুলযুদ্ধো নাম বিষষ্টিতমোহধ্যারঃ।

## **ত্রিষষ্টিভমো**২ধ্যারঃ

বৈশন্দায়ন উবাচ। ততো ছুর্য্যোধনঃ কর্ণো ছঃশাসনবিবিংশতী। দ্রোণন্চ সহ পুরেণ কুপশ্চাপি মহারথঃ॥ পুনর্যুক্ত সংরক্ষা ধনময়জিঘাংসরঃ। বিক্ষারয়জ্ঞশ্চাপানি বলবন্তি দৃঢ়ানি চ॥ তান্ বিকীর্ণপতাকেন রথেনাদিত্যবর্চসা। প্রত্যুদ্ববৌ মহারাজ সমস্তাদ্বানরধ্বজ্ঞঃ॥ ততঃ কুপশ্চ কর্ণচ্চ রেগিশ্চ রথিনাং বরঃ। তং মহারৈজ্ঞহাবীর্ব্যাঃ পরিবার্য্য ধনজয়য়্॥ শরৌঘান্ সম্যুগল্ভতো জীমৃতা ইব বার্ষিকাঃ। ববর্ষ্য শরবর্বাণি পাতরভঃ কিরীটিন্দ্। ইষ্তির্ক্তিভিন্তু বিং সমরে ব্যোমবাহিভিঃ। অদ্রাৎ পর্ব্যবস্থার প্রশ্বামাক্রমাদ্তাঃ॥ তথা তৈরবকীর্ণক্ত দিব্যৈরক্ষঃ সমস্ভতঃ। ন তন্য ব্যক্তন্দিপ

বিবৃত্তং সম্প্রদৃশ্যতে ॥ ততঃ প্রহস্ত বীতৎস্থানিব্যবৈদ্যং মহারথং । অস্ত্রমাণিত্য-সঙ্কাশং গাণ্ডীবে সমবোজরং ॥ শররশিরিবাণিত্যঃ প্রতত্ত্বে সমরে বলী । কিরীটমালী কৌন্তেরঃ সর্বান্ প্রাক্রাণরং কুরুন্ ॥ বথা বলাহকে বিহাৎ পাবকে! বা শিলোক্রেরে ৷ তথা গাণ্ডীবমন্তবিদ্যায়ুখনিবাত্তম্ ॥ বথা বর্ষতি পর্জন্তে বিহারিভাজতে ণিবি ৷ জোতরন্তী দিশং সর্বাঃ পৃথিবীঞ্চ সমন্ততঃ ॥ তথা দশ দিশঃ সর্বাঃ পতলাণ্ডীবনারণেং ৷ নাগাশরথিনঃ সর্ব্বে মৃমূহত্ত্বে ভারত ॥ সর্বে শান্তিপরা বোধাঃ স্বচিত্তানি ন লেভিরে ৷ সংগ্রামে বিম্থাঃ সর্বে বোধাত্তে হত্ততেসঃ ॥ এবং সর্বাণি সৈক্রানি ভগ্নানি ভরতর্বত ৷ বাদ্রবন্ত দিশঃ সর্ব্বা নিরাশানি স্ব্ব্যে)জীবিতে ॥ ১-১৪

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং দংহিতাবাং বৈয়াসিক্যাং বিরাট-পর্ব্যান্তরগোগ্রহে অর্জুনসন্তুলযুদ্ধো নাম ত্রিষষ্টিতমোহধ্যারঃ।

# চতুঃষষ্টিভমোহথ্যায়ঃ

বৈশব্দায়ন উবাচ। ভতঃ শান্তনবো ভীমঃ সুত্র্ধ্বঃ প্রতাপবান্। বধ্যমানেযু যোধেষু ধনঞ্জয়মূপাত্রবং ॥ প্রগৃহ কামু কলের্ছং জাতরূপপরিষ্কৃতম্ । শরানা-দার তীক্ষা গ্রামার্শ্বভেদান প্রমাথিন:। পাণ্ডুরেণাতপত্তেণ থিরমাণেন মুর্দ্ধনি। ভততে স নরব্যান্তো গিরিঃ কর্ব্যোদরে বথা।। প্রথাপ্য শঙ্খং গালেরো ধার্ত্ত-রাষ্ট্রান প্রহর্ষরন। প্রদক্ষিণমূপাবৃত্য বীভংফং সমবারয়ৎ। তমুদ্বীক্ষ্য নমারান্তং কৌল্ডের: পরবীরহা। প্রত্যগুরুৎ প্রহুষ্টাত্ম। ধারাধরমিবাচল: ॥ ভত্তো ভोषः भतानद्धी श्वरक পार्थमा वीद्यावान । সমর্পর্মহাবেগান খসমান।-নিবোরগান্। তে ধ্বন্ধং পাণ্ডুপুত্রন্য সমাসাত পতত্রিণ:। জ্বনম্ভং কপি-মাৰদ্ধ ৰাগ্ৰনিলয়াংশ তান্ (নিলয়ান্ ৰনান্)॥ ততো ভল্লেন মহতা পৃথ্ধারেণ পাওব:। ছত্রং চিচ্ছেদ ভীম্মদ্য তূর্ণং তদপতত্ত্বি॥ ধ্বঞ্জ চৈবাক্ত কৌত্তেরঃ শরৈরভ্যহনত্পুন্। শীত্তকুদুথবাহাংশ্চ তথোভৌ পাঞ্চি-সার্থী। অমুন্তমাণভট্টীমো জানরপি স পাওবম্। দিব্যেনাম্মেণ মহতা धनश्वत्रमयांकित्रस्य छोषयं भाष्ट्रया जीवाः वियामञ्जूमुमीत्रत्रम् । व्याजाजूनावरमः রাজ্মা মহামেৰমিবাচল: ॥ তরোক্তদভবদ্ যুদ্ধং তুমুলং লোমহর্বণম্। ভীলেন ভলৈতলাঃ স্মাগম্য ভীম্বপাওবরোর্ধ। অন্তরীকে ব্যরাজন্ত থভোতাঃ

প্রার্থীব হি॥ পরিচক্রমিবাবিদ্ধং সব্যদক্ষিণমন্ততঃ । গাণ্ডীবমন্তব্যালন পার্থত স্কত: শরান্। ততঃ সংছাদরামাস ভীম্মং শর্মতে: শিতৈ:। পর্কতং বারিধারাভি ছাদয়নিব তোয়দ:॥ তাং স বেলামিবোদ্ধ তাং শরবৃষ্টিং সমুখি-তাম। ব্যধমৎ সায়কৈভীম: পাণ্ডবং সমবারয়ৎ॥ ততন্তানি নিক্নভানি শর-জালানি ভাগশ:। সমরে চ ব্যশীর্যান্ত ফাল্কনশু রথং প্রতি॥ ভতঃ কনক-পুঝানাং শঃবৃষ্টিং সমৃথিতাম্। পাওবক্ত রথাভূবং শলভানামিবাছতিম্। ব্যধমরাং পুনত্তপ্ত ভীত্ম: শরশতৈঃ শিতৈঃ॥ ততত্তে কুরবঃ সর্কে সাধু সাধ্বিতি চাক্রবন। গুরুরং কুতবান ভীলে। यদর্জুন্মবোধরং॥ বলবাংক্তরণো দক্ষঃ কিপ্রকারী ধনঞ্জঃ। কোহন্তঃ সমর্থঃ পার্থক্ত বেগং ধার্মিতৃং রণে॥ ঋতে শান্তনবাদ্ ভীমাৎ কৃষ্ণাধা দেবকীস্তাৎ। আচাৰ্য্যপ্ৰবরাধাপি ভারখালাম-হাবলাং॥ অস্ত্রৈরস্ত্রাণি সংবাধ্য ক্রীড়স্তো ভরতর্বভৌ। চকুংবি সর্বভূতানাং त्माश्यत्को मशावत्को ॥ প्राक्वाभागः उटेबटेवल्यमाध्ययक स्वाक्रनम् । कोत्वत्रः বারুণকৈব যাস্যং বাষ্ব্যমেব চ ॥ প্রযুঞ্জানৌ মহাত্মানৌ সমরে ভৌ বিচেরতুঃ ॥ বিস্মিতারথ ভূতানি তৌ দুই। সংযুগে তদা। সাধু পার্থ মহাবাহে। সাধু ভীলেতি চাক্রবন্। নামং মুক্তো মহুষোষ্ যোহমং সংদৃশুতে মহান্। মহা-चार्गः मच्चाद्यांगः ममद्र जीवार्गार्थद्याः ॥

বৈশন্দারন উবাচ। এবং সর্বান্তবিছ্বোরন্ত্রযুদ্ধনবর্ত্ত। অন্তর্যুদ্ধনবর্ত্ত। অব্যুদ্ধে ভূ
নির্কৃত্তে শর্যুদ্ধনবর্ত্ত।। অথ জিঞ্কুলগার্ত্য ক্রধারেন কার্দ্ধুক্ন। চকর্ত্ত
ভীন্নক তদা জাতরূপপরিষ্ণতম্ । নিমেবান্তরমাত্তেশ ভীমোহন্তৎ কার্দ্ধুক্ণ
রণে। সমাদার মহাবাহ্য সজ্যং চক্রে মহারথঃ ॥ শরাংশ্চ স্থবহুন কুছো
মুমোচান্ত ধনঞ্জরে। অর্জুনোহিণি শরাংগ্রীক্লান্ ভীমার নিশিতান্ বহুন্।
চিক্ষেপ স্মহাতেজান্তথা ভীমন্চ পাশুবে ॥ তরোর্দ্ধিয়ান্তবিজ্বোরস্যতোর্দিশিতাহুরান্। ন বিশেবন্তদা রাজন্ লক্ষ্যতে স্মহান্তনোঃ ॥ অথারুণোদ্দশদিশঃ শরৈরতিরপন্তদা। কিরীটমালী কোন্তেরঃ শূরঃ শান্তনবন্তথা ॥ অতীব
পাশুবে ভীমন্টাতীৰ পাশুব্র। বভ্ব তন্মিন্ সংগ্রামে রাজন্ লোকে
তদক্তম্ ॥ পাশুবেন হতাঃ শ্রা ভীমস্য রথরক্ষিণঃ । শেরতে স্ম্ তদা রাজন্
কৌন্তেরস্যাভিতাে রথম্ ॥ ততাে গাশুবিনিম্কা নির্মিত্তঃ চিকীর্বঃ।
অগজন্ পৃথ্যসংগ্রিষ্টাঃ বেভবাহনপত্রিণঃ ॥ নিম্পাতন্তা রথান্তস্য হৌতা হৈরণ্যবাসনঃ। আকাশে সমন্তন্ত হংসানানিব পঞ্জয়ঃ ॥ ততা ভদিব্যমন্ত্রং
হি বিগাঢ়ং চিত্রমস্যতঃ । প্রেক্তন্তে স্মান্তরীক্ষ্যাঃ সর্বে দেবাঃ গ্রন্থানার। ভদ্ দৃষ্টা পরমঞ্জীতো গন্ধর্কি ভ্রমন্ত্রম্। শশংল দেবরালার চিত্রসেনঃ প্রতাপবান্॥ পশ্রেমান্ পার্থনির্ম্ জান্ সংসক্তানিব গদ্ধতঃ। চিত্রন্ধপমিদঞ্জিফোর্নিব্যমন্ত্রমূলীর্যাতঃ॥ নেদং মহাব্যাঃ শ্রেদগুর হীদং তের্ বিভাতে। পৌরাণানাং মহান্ত্রাণাং
বিচিত্রোহয়ঃ সমাগয়ঃ॥ আদদানস্য হি শরান্ সন্ধার চ বিম্পতঃ॥ বিকর্ষতশ্য
গাঙীবং নাস্তরং সম্প্রেত (সমদৃশ্রত)॥ মধ্যন্দিনগতং প্র্যাং প্রতপন্তমিবায়রে॥ ন শকুবন্তি (নাশকুবন্ত) গৈলানি পাগুবং প্রসমীক্ষিত্ম॥ তথৈব
ভীমং গালেরং জটুং নোৎসহতে জনঃ॥ উভৌ বিশ্রতকর্মাণাবৃত্রী তীরপরাক্রমো। উভৌ সদৃশকর্মাণাবৃত্রী মুধি স্বর্জন্মে॥ ইত্যুক্তো দেবরালন্ত্র পার্থভীম্মন্মাগমন্। প্রস্থামাস দিব্যেন পূর্ণবর্ষেণ ভারত॥ ততঃ শান্তনবো ভীম্মো
বামং পার্যবিভাত্রং। পশ্রতঃ প্রতিসন্ধার বিধাতঃ সব্যুদাচিনঃ॥ ততঃ প্রহুশ্র
বীতৎমঃ পৃথ্ধারেণ কার্ম্ কৃম্। চিচ্ছেদ গান্ধ্রপত্রেণ ভীম্ম্যামিততেজ্বঃ॥
অথনং দশভর্ষাণৈঃ প্রত্যবিধ্যৎ স্থনান্তরে। যতমানং পরাক্রান্তং কুন্তীপুত্রো
ধনস্কঃ॥ স পীড়িতো মহাবান্ত্র্গিতা রথক্বরুম্। গান্সেরো যুদ্ধর্মন্তর্মেণা দীর্ঘমিবাতুরঃ॥ভং বিসংজ্ঞ্যপোবাহ সংযন্তা রথবাজিনাম্। উপদেশমন্ত্র্যার রক্ষ্মণেনা
মহার্থম্॥ ১-৪৯

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বান্তরগোগ্রহে ভীমাপবানো নাম চতু:বঙ্টিতমোহধ্যারঃ।

## পঞ্চৰষ্টিভমোহগ্ৰ্যাৰঃ

বৈশন্দায়ন উবাচ। ভীয়ে তু সংগ্রামশিরো বিহায়, পলায়মানে ধৃতরাষ্ট্রপুত্রঃ। উৎস্কা কেতৃং বিনদমহাত্মা, ধছর্মিগৃহার্জ্নমাসসাদ॥ স
ভীমধ্বানম্দগ্রবীর্যাং, ধনঞ্জয়ং শক্রগণে চরস্তম্। আকর্ণপূর্ণায়ভচোদিতেন,
ভল্লেন বিব্যাধ ললাটমধ্যে॥ স তেন বাণেন সমর্পিতেন, জায়ূনদাগ্রেণ সুসংহিতেন। রয়াজ রাজন্ মহনীয়কর্মা, য়বৈধকপর্মা ফচিবৈকশৃকঃ॥ অথাত্ম
বাণেন বিদারিভত্ত, প্রাত্র্মভ্বাস্গজ্মমুক্ষম্। স ভত্ত জায়ূনদপ্রভাচিত্রো,
ভিত্তা ললাটং স্থবিরাজতে স্ম॥ স ভেন বাণাভিহতভর্মী, ছর্ব্যোধনেনোজতমহ্যাবেগাং। শরাম্পাদায় বিধায়িকয়ান, বিব্যাধ রাজানমদীনসত্তঃ॥ তুর্ব্যোধনক্রালা। অভ্যাহক্রমান্তে পুক্রবপ্রবিরৌ, সমৌ সমাজয়তুরাজমীটো॥ ভতঃ প্রভিল্পেন মহাগ্রেলন, মহীধরাতেণ

পুনর্বিকর্ণঃ। রথৈশ্চত্র্ভির্গলপাদরকৈঃ, কুন্তীস্থতঃ জিক্ষুমণাভ্যধাবং ॥
তমাপতন্তং অরিতঃ গল্পেন্ডং, ধনঞ্জঃ কুন্তবিভাগমধ্যে। আকর্ণপূর্ণেন মহারবেনন, বাণেন বিব্যাধ মহাজবেন ॥ পার্থেন স্টঃ স তু গাদ্ধ্রপত্ত, আপুন্ধদেশাৎ
প্রবিবেশ নাগম্। বিদার্য্য শৈলপ্রবরপ্রকাশং, যথাশনিঃ পর্বতমিদ্রস্টঃ ॥
শরপ্রতথ্যঃ স তু নাগরাজঃ, প্রবেপিভালো ব্যথিভান্তরাত্ম। সংসীদমানো
নিপপাত মহাং, বজ্লাহতঃ শৃক্ষমিবাচলক্ত ॥ নিপাতিতে দন্তিবরে পৃথিব্যাং,
আসাধিকর্ণঃ সহসাবতীর্য্য। তূর্ণং পদান্তইশভানি গত্তা, বিবিংশতেঃ ক্তন্দনমাক্ষরোহ ॥ নিহত্য নাগন্ত শরেণ তেন, বজ্লোপমেনান্তিমিবামুদাভম্।
তথাবিধেনৈর শরেণ পার্থো, ত্র্যোধনং বক্ষসি নির্বিভেদ ॥ হতে গল্পে রাজনি
টেব ভিল্লে, ভল্লে বিকর্ণে চ সপাদরক্ষে। গাঙীব্যুক্তর্বিশিথৈঃ প্রণ্নাক্তে
যোধমুখ্যাঃ সহসাপজন্মঃ ॥ দৃষ্টেব পার্থেন হতঞ্চ নাগং, যোধাংশ্চ সর্বান্
দ্রবতো নিশম্য। রথং সমার্ত্য কুক্ষপ্রবীরো, রণাৎ প্রভুল্লাব বতো ন পার্থঃ ॥
তং ভীমরূপং অরিতং দ্রবন্ধং ক্রেয়াধনং শক্রসহোহভিষ্কাৎ। প্রাক্ষেট্যদ্

অর্জুন উবাচ। বিহার কীর্জিং বিপুলং বশন্ত, মুদ্ধাৎ পরাবৃত্য পলারসে কিন্। ন তেৎছা ত্র্যাণি সমাহতানি, তথৈব রাজ্যাদবরোপিততা॥ ব্রিষ্টিরত্যান্মি নিদেশকারী, পার্থস্থতীয়ো বুধি সংশ্বিভোহন্মি। তদর্থমাবৃত্য মুখং
প্রক্ষ, নরেন্দ্র বৃত্তং শ্বর ধার্তরাষ্ট্র ॥ মোঘং তবেদং ভূবি নামধেরং, ত্র্যোধনেতীছ
কৃতং প্রক্তাৎ। নহীহ ত্র্যোধনতা তবান্তি, পলারমানতা রণং বিহায় ॥ ন
তে প্রক্তাদথ পৃষ্ঠতো বা, পশ্যামি ত্র্যোধন রক্ষিতারম্। অগৈহি মুদ্ধাৎ পুরুষপ্রবীর, প্রাণান্ প্রিরান পাশুবতোহ্য রক্ষ ॥ ১-১৮

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতালাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বংগ্-তরগোগ্রহে তুর্য্যোধনপলারনো নাম পঞ্চাষ্টতমোহধ্যারঃ।

# যট্**ষষ্টিতমো**হপ্যায়ঃ

বৈশম্পায়ন .উবাচ। আহ্মমানশ্চ স তেন সম্বো, মহাআনা বৈ ধৃতরাষ্ট্রশুদ্রঃ। নিবর্ণিতত্তত গিরস্থশেন, মহাগজো মত ইবাস্থশেন। সোহমুম্মাণো
বচসাভিমুটো, মহারথেনাভিরথত্তরত্বী। পর্য্যাববর্ত্তাথ রথেন বীরো, ভোগী
ন্বথা পাদতলাভিমুটা। তং প্রেক্স্য কর্ণঃ পরিবৃত্তমানং, নিবর্ত্তা সংভাত্য চ

विक्रशाबम्। पूर्वगायनत्काखन्नत्वारकारकारकारका भावः नृतीदना यूपि दिनमानी ॥ ভীমন্ততঃ শান্তনবো বিবৃত্য, হিরণ্যকক্ষররাহভিস্থী। তুর্ব্যোধনং পশ্চিম-তোহ ভ্যবক্ষৎ, পার্থান্মহাবাহরধিজ্ঞধন্ধা॥ ডোণঃ কুপল্টেব বিবিংশতিক্ষ, ফুঃশাস-নকৈব বিবৃত্য শীল্প। সর্বে পুরস্তাবিততোক্ষণাপা, তুর্য্যোধনার্থং পরিতাভ্য পেয়: । স ভাক্তনীক:নি নিবর্ত্তমানা ক্যালোক্য পূণৌ বনিভানি পার্থ: ৷ হংসো যথা মেদমিবাপতস্তং, ধনঞ্জয়ঃ প্রত্যপতত্তরত্বী ॥ তে সর্ববিভঃ সংপরিবার্য্য পার্থ-মন্ত্রাণি সর্বাণি ( দিব্যানি ) সমাদদানা:। ববরুরভ্যেত্য শরৈ: সমস্তাত্মেণা যথা ভূধরমভূজালৈ:। ততোহশ্বমন্ত্রেণ বিদার্য্য তেষাং, গাণ্ডীবধৰা কুরুপুত্ব-বানাম। সম্মোহনং শত্রুসহোহত্তদক্ষং, প্রাতুশ্চকারিরন্রমবারণীয়স্॥ ততো দিশকাছদিশো বিবৃত্য, শরে: স্থাবৈর্মিশিতে: স্থপুটেখা:। গাঙীবদোবেণ মনাংনি তেষাং, মহাবলঃ প্রব্যথয়াঞ্জার ॥ ততঃ পুনর্ভীমরবং প্রগৃহ্ন, দোর্ভ্যাং মহাশঝ্মদার্ঘোষম্। ব্যনাদরৎ স প্রদিশো দিশ: খং, ভূবঞ্চ পার্থো বিষ্তাং নিহস্তা। তে শব্দনাদেন কুরুপ্রবীরা:, সম্মোহিতা: পার্থসমীরিতেন। উৎস্ক্র চাপানি ত্রাসদানি, সর্বে তদা শান্তিপরা বভূবু: । তথা বিসংজ্ঞেরু পরেষু পার্থ:, স্বন্ধা চ বাক্যানি তথোত্তরায়া:। নির্বাহি মধ্যাদিতি মংস্তপুত্রমুবাচ ষাবং কুরবো বিসংজ্ঞা:। আচার্য্যশার্ঘতয়োস্ত শুক্লে, কর্ণস্থ পীতং ক্লচিরঞ্চ বস্ত্রম। জ্রোণক্ত রাজ্ঞত তথৈব নীলে, বত্ত্বে সমাদংখ নরপ্রবীর। ভীমান্ত मध्याद **उरेश्य मरक, कानां**कि मार्श्वशक्तिकां उरम्हः। 'अञ्च योशन कूक সব্যতন্ত্রেমবং হি বাতব্যমগুরুসংক্রৈঃ ॥ রশ্মীন সমুৎক্ষ্য ততো মহাত্মা, র্থাদ-বগ্ন ভ্য বিরাটপুত্র:। আরুষ্ট বাসাংসি (বস্ত্রাণ্যুপাদার) মহার্থানাং, তুর্ণং পুনন্তজ্ঞথমারুরোহ ৷ ততোংখশাসচ্চতুর: সদখান্, পুলো বিরাটস্ত হিরণ্য-ककान। एक जबाजीयुक्ष जिनामनीकः, त्यका वहत्स्वारुक्कनमाजिमशार॥ তথাসুষান্তং পুরুষপ্রবীরং, ভীম: শরৈরত্যহনন্তরম্বী। স চাপি ভীমস্ত হয়ামিহত্য, বিব্যাধ পার্থো দশভিঃ পৃষংকৈ: ॥ ততোহর্জ্কনো ভীন্মপাশু যুদ্ধে, বিদ্ধাশু बखांत्रमधिकाथवा। जल्हो विमृत्का तथवृंक्षमधाात्त्रवः विनार्त्याव महस्रद्रियः॥ नका जू मः आः म कूम धरीतः, भार्थः मशीकार्थ स्टात खकत्रम्। त्रना विम्उनः विख्यानमात्को, ७: शार्खनाड्रेचनिजः वजारत ॥ भन्नः कथः विद्वतका विमुख-खवा धमवीहि (छ) ववा न मृत्कर। उम्बरीक्शंखनवः श्रहक, रू उठ गठा বৃদ্ধিরভূৎ क বীর্ব্যন । শান্তিং পরাং প্রাপ্য বদান্থিতোহভূকৎকল্য বাণাংক বছর্মিচিত্রস্থা ন ছেব বীভংকুরলং নৃশংসং, কর্ত্ত ন পাপেছস্য মনো

বিশিষ্টম্। জৈলোক্যহেতোন লংহৎ স্বধর্মং, তন্মান্ধ সর্কে নিহতা রণেৎন্মিন্। ক্ষিপ্রং কুরুন্ যাহি কুরুপ্রবীর, বিশিত্য গাঃ সংপ্রতিযাতৃ পার্থঃ। মা তেৎস্থ কার্য্যং নিপতেচ্চ মোহাত্তৎ সংবিধাতব্যমরিষ্টবন্ধম্॥

देवल्लावन खेवां । क्रियां धनख्मा क् विविध्य क्षिण । क्षिण विश्व क्षिण । क्षिण विश्व क्षिण । विश्व क्षिण । व्याप क्षिण विश्व क्षिण । विश्व क्षिण विश्व क्षिण । विश्व क्षिण विश्व विश्व क्षिण विश्व विश्व विश्व क्षिण विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विश्व

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বণ্যুত্তর-গোগ্রহে সমন্তকৌরবপলারনো নাম বট্বস্থিতমোহধ্যারঃ।

# সপ্তথ্যষ্টিভমোহপ্র্যায়ঃ

বৈশপারন উবাচন। নির্জিত্য হৈব সংগ্রামে কুরন্ গোর্বজেকণা।
সমানরামাস তদা বিরাটস্য ধনং মহৎ॥ গতেরু চ প্রভারেষ্ ধার্ত্ররাষ্ট্রেষ্
সর্কাশা। বনারিক্রম্য গহ্নাছহবং কুফুসৈনিকাং॥ ভরাৎ সম্রভ্যমনসং সমাজগ্রুস্ততন্তত্তত্তা। মৃক্তকেশাস্তদৃশ্রন্ত স্থিতাঃ প্রাঞ্জলরত্তথা॥ কুৎপিপাসাপরিপ্রান্তা
বিদেশস্থা বিচেত্রনঃ। উচুঃ প্রশম্য সংলান্তাঃ পার্থ কিং করবামহে॥

ষর্জুন উবাচ। স্বস্তি ব্রহত ভদ্রং বো ন ভেতব্যং কথঞ্চন। নাহমার্জান্ জিলাংসামি ভূশমার্খাসরামি বঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তস্য তামভরাং বাচং শ্রন্থা বোধা: স্বাপ্তা:।

আয়ংকীর্ত্তিবশোলভিত্তমানীভিরনন্দরন্ ॥ ততোহর্জুনং নাগমিব প্রভিন্ন শুক্ত শক্তন্ বিনিবর্ত্তমানান্ । বিরাটরাষ্ট্রাভিন্ন প্রান্তং, নাশুকু বংল্ডে কুরবোহিভিন্তুন্ ॥ ততো মহাবাত ইবাব্ এবুন্দং, বিদ্রাব্য পার্থঃ কুরুবৈশুবুন্দ্ ।
মৎস্যস্য পুরুং বিষভাং নিহন্তা, বচোহত্তবীৎ সংপরিগৃহ্ছ ভূয়ঃ ॥ পিতৃঃ সকাশে
তব ভাত সর্বের, বসন্তি পার্থা বিদিতান্তবৈব । তালা প্রশংসেন গরং প্রবিশ্ত,
ভীতঃ প্রণশ্জেদ স মৎস্যরাজঃ ॥ ময়া জিতা সা ধ্বজিনী কুরণাং, ময়া চ গাবে।
বিজিতা বিষদ্তাঃ । প্রীভন্ত কামং নগরং প্রবিশ্ত, ত্বমা আনঃ কর্ম কৃতং এবীহি ॥

উত্তর উবাচ। যতে ক্বতং কর্ম ন পারণীয়ং, তৎ কর্ম কর্ত্ত্রং মম নান্তি শক্তিঃ। ন ডাং প্রবক্যামি পিতৃঃ সকাশে, বাবর মাং বক্যাসি স্ব্যুসাচিন্॥

বৈশন্দায়ন উবাচ। স শক্রনেনামবজিতা জিঞ্রাচ্ছিত্য সর্বঞ্চ ধনং কুকভা:। শাশানমাগত্য পুন: শমীস্তামভ্যেত্য তক্ষে শরবিক্ষতাল:॥ ততঃ স বছিপ্রতিযো মহাকপি:, সহৈব ভৃতৈর্দিবমূৎপপাত। তবৈব মারাস্তরিতা বভ্ব, ধ্বজঞ্চ সৈংহং যুযুক্তে রথে পুন:॥ নিধার তচ্চাযুধমাজিবর্দ্ধনং, কুরন্তমানা-মিষ্ধী: শরাংক্তথা। প্রায়াৎ স নৎশ্যে। নগরং প্রস্তঃ, কিরীটিনা সার্থিনা মহাত্মনা॥ পার্থক ক্রন্ত। প্রমার্যকর্ম, নিহত্য শক্রন্ বিষতাং নিহস্তা। চকার বেণীঞ্চ তথৈব ভ্রো, জগ্রাহ রশ্মীন্ পুনকত্তরক্ত। বিবেশ হটো নগরং মহাত্মা, বৃহল্পারপমূপেত্য সার্থি:॥

বৈশপায়ন উবাচ। ততো নির্ভা: ক্রব: প্রভগ্ন। বশমান্থিতা:। হন্তিনাপ্রমৃদিশু সর্বের দীনা বর্ত্তদা ॥ পন্থানমৃপসংগম্য কান্তনো বাক্যমব্বীং।
রাজপুত্র প্রভাবেক্ সমানীতানি সর্বাণ: । গোকুলানি মহাবাহো বীর গোপালকৈ: সহ ॥ ততোহপরাত্রে যাশ্রামো বিরাটনগরং প্রতি। গাশ্চাপি পায়্রিঘাপ: পরিপ্লাব্য চ বাজিন: ॥ গল্ভ ছবিভাবৈত্ব গোপালা: প্রেষিতাম্বরা।
নগরে প্রিয়মাধ্যাত্রং ঘাষয়ন্ত চ তে জয়ম্ ॥

বৈশম্পারন উবাচ। অথোত্তরন্তরমাণঃ স দ্তানাজ্ঞাপরন্চনাদর্জ্নস্ত।
আচক্ষবং বিজয়ং পার্থিবস্ত, তয়াঃ পরে বিজিতাশ্চাপি গাবঃ॥ ইত্যেবং তৌ
ভারতমৎস্তবীরো, সংমন্ত্র সক্ষয় পুনঃ শনীং তাম্। অভ্যেক্ত ভ্রো বিজরেন
তৃপ্তাবৃৎস্টমারোপরতাঞ্চ ভাগুন্॥ স শক্রসেনামভিভূর সর্কামাহ্ছিত সর্বঞ্ধ ধনং কুক্ডাঃ। বৈরাটিরালালগরং প্রভীতো, বৃহল্লাসার্থিরেক্বীরঃ॥ ১-২৩

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বাণি বৃহল্লভানগরপ্রবেশো নাম সপ্তবস্তিতমোহধ্যারঃ।

### অষ্টমন্তিভমোহগ্রায়ঃ

বৈশশায়ন উবাচ। (প্রস্থান্তেংথ গোপালাঃ প্রবিশ্য নগরং ততঃ। উচ্লুল্বং বিরাটন্য দৃষ্টা গোধনমান্ত্যন্য। ) ধনঞ্চাপি বিজিত্যাকো বিরাটো বাহিনীপতিঃ। প্রাবিশন্নগরং ক্রষ্টশুর্ভিঃ সহ পার্তবৈঃ॥ জিবা ত্রিগর্তান্ সংগ্রামে গাল্টেবাদার সর্বনাঃ। অশোভত মহারাজ সহ পার্থিঃ প্রিয়াবৃতঃ॥ জমাসনগতং বীরং স্কুদাং প্রীতিবর্দ্ধনন্। উপাসাঞ্চক্রিরে সর্বের্ধ সহ পার্থিঃ পরস্তপাঃ॥ উপতন্মঃ প্রকৃতয়ঃ সমগ্রা বান্ধণৈঃ সহ। সভাজিতঃ সনৈক্তম্ব প্রতিনন্দ্যাথ মৎক্রাট্॥ বিসর্জ্জানাস তদা বিনাংশ প্রকৃতীত্তথা॥ ততঃ স রাজা মৎক্রানাং বিরাটো বাহিনীপতিঃ। উত্তরং পরিপপ্রছে রু বাত ইতি চাব্রবীং। আচকুত্তক সংক্রীঃ স্বিরা কক্রান্ট বেখানি॥ অন্তঃপুরচরান্টেব কুক্ভির্গোধনং স্বতম্। বিজেতুম্ভিসংরদ্ধ এক এবাভিসাহ্সাং॥ বৃহত্মলাসহারশ্চ নির্বাতঃ পৃথিবীজয়॥ উপারাতানতির্থান্ জোণং শান্তনবং রূপম্।. কর্ণং ত্র্গোধনকৈব জ্রোণপুরুঞ্ বড় রুথান্॥

বৈশশায়ন উবাচ। রাজা বিরাটোহণ ভূশাভিতপ্তঃ, শ্রুতা স্থতং হেকরথেন বাতম্। বৃহল্পাসারথিমাজিবর্দ্ধনং, প্রোবাচ সর্বানথ মন্ত্রিম্থ্যান্ । সর্বথা
ক্রবত্তে হি বে চাল্ডে বস্থাধিপাঃ। ত্রিগর্তানির্জ্ঞিতান্ শ্রুতা ন স্থাভান্তি কদাচন ॥ তত্মালাছেভ মে বোধা বলেন মহতা বৃতাঃ। উত্তরশু পরীপার্থং বে
ত্রিগর্তেরবিক্ষতাঃ॥ হ্রাংশ্চ নাগাংশ্চ রথাংশ্চ শীত্রং, পদ্ভিসভ্যান্ প্রকপ্রবীরান্। প্রস্থাপায়ামাস স্কেশ্ত হেতোবি চিত্রশন্তাভরণোপপারান্॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবং স রাজা মংস্থানাং বিরাটো বাহিনীপতি: ব্যাদিদেশাথ তাং ক্ষিপ্রং বাহিনীং চতুর্দিণীম্। কুমারমাও জানীত বদি জীবতি বান বা। যন্ত যন্তা গতঃ যন্তো মন্তেহহংন স্কীবতি॥

বৈশম্পারন উবাচ। তমত্রবীদ্ধরাকো বিহস্ত, বিরাটরাক্ত ভূশাভিতপ্তর । বৃহত্বলা সার্থিশ্চেররেন্দ্র, পরে ন নেয়ন্তি তবাছা পান্তাঃ ॥ সর্বান্ মহীপান্ সহিতান্ কুরংশ্চ, তথৈব দেবাস্থ্রবক্ষনাগান্। অলং বিজেতুং সমরে স্তত্তে, অহাইতঃ সার্থিনা হি তেন ॥

বৈশম্পান্তন উবাচ। অথোজনেণ দ্তান্তে প্রেষিতা: শীঘ্রগামিন:। বিরাটনগরং প্রাপ্য জন্নাবেদন্নগুড: (বিজন্ধ: সমবেদন্) । রাজ্ঞতংসর্কমাচখ্যে মন্ত্রী
বিজন্মভ্রমন্। পরাজন্ধং কুরুণাঞ্চাপ্যপান্তাভং ( স্তং ) তথোজনন্। সর্কা
বিনির্জ্জিতা গাব: কুরুবন্চ বিনিজ্জিতা:। উত্তর: সহ স্তেন কুশ্লী চপরস্তপ:।

কন্ধ উবাচ। দিটা বিনির্জিত। গাবং কুরবশ্চ পলামিতা:। দিটা ভে জীবিত: পুত্র: শ্রমতে পার্থিবর্ধত॥ নাড্তং থেব মজেৎহং বতে পুত্রোৎক্ষরৎ কুরন্। শ্রুব এব জয়তাতা বস্তা বৃত্যালা॥

বৈশশারন উবাচ। ততো বিরাটো নৃপতিঃ সংপ্রস্কৃতিন্কহঃ॥ শ্রুজা তু বিজ্ঞান্তত কুমারতামিতৌজনঃ॥ আজাদরিঝা দৃতাংগুলামানিং সোহতাচাদরৎ। রাজমার্গাঃ ক্রিয়ন্তাং নে পতাকাভিরলয়তাঃ। প্শোপহারৈরচ্চ্যনাং দেবতা-শ্চাপি সর্বাশঃ॥ কুমারা বোধম্থ্যাশ্চ গণিকাশ্চ খলয়তাঃ। বাদিত্রাণি চ সর্বাণি প্রত্যুদ্যান্ত ফ্রুজং মন॥ খণ্টাবামানবং শীজং মন্তমারুক্ত বারণম্। শৃলাট-কেষ্ সর্বেষ্ আখ্যায়ন্ত জ্বাং মন॥ উত্তরা চ কুমারীভির্বহনীভিরভিসংবৃতা। শুলারবেশাভরণা প্রত্যুদ্যাত্ স্তুজং মন॥

বৈশন্দান্তন উবাচ। শ্রা তদেত্বচনং নৃপক্ত, সর্বাং পুরং স্বন্তিক-পাণিভূতন্। ভের্যান্ড ভূর্যাণি চ বারিজান্চ, বেশৈ: পরার্টের: প্রমদাঃ শুভান্চ ম ভবৈব স্থতৈ: সহ মাগবৈন্চ, নান্দীবাজাঃ পণবান্ত্র্যবাজাঃ (ক্সাবিঘোরে-রুণভূর্যবাবৈয়ঃ)। পুরাৎ বিরাটস্য মহাবলস্য, প্রভুদ্বযুঃ পুত্রমনন্ত্রীর্যান্॥

বৈশশায়ন উবাচ। প্রস্থাপ্য সেনাং কল্পান্চ গণিকান্চ স্বন্ধতা:।
মংস্যারাজা মহাপ্রাজঃ প্রকৃষ্ট ইদমন্ত্রীং॥ অক্ষানাহর সৈর্জি কর দ্যতং
প্রবর্ত্তবাম্। তং তথাবাদিনং দৃষ্টা (হুটং) পাগুবঃ প্রত্যভাষত॥ ন দেবিতব্যং
স্কৃষ্টেন কিতবেনেতি নঃ শুতম্॥ স অমন্ত মুদা মুজো নাহং দেবিতুমুৎসহে।
প্রিয়ন্ত তে চিকীর্বামি বর্ত্তবাং (বর্ণ্ডবাং) বদি মন্ত্রসে॥

ি বিরাট উবাচ। স্থিরো গাবে। হিরণ্যঞ্চ বচ্চাগুদ্ম কিঞ্চন। ন মে কিঞ্চিন্দ্র রক্ষ্যমন্ত্রেণাপি দেবিতুম্॥

কছ উবাচ। কিন্তে দ্যতেন রাজেন্দ্র বহুদোষেণ মানদ। দেবনে বহুবো দোষান্তশান্তৎ পরিবৰ্জ রেং॥ শতুতে যদি বা দৃষ্টঃ পাওবেয়ো যুধিষ্টিরঃ। সরাষ্ট্রং স্থাহৎ ক্ষীতং লাত ৄংশ্চ ত্রিদশোপমান্॥ দ্যতে (রাজ্যং) হারিতবান্ সর্বাং তশাদ্দ্যতং ন রোচয়ে। অথবা মন্তদে রাজন্দীব্যাবো বদি রোচতে॥

বৈশাপায়ন উবাচ। প্রবর্ত্তমানে দ্যুক্তে তু মৎস্যঃ পাওবমত্রবীৎ। পঞ্চ পুত্রেণ মে যুদ্ধে তাদৃশাঃ কুরবো জিতাঃ॥ ততোহত্রবীশ্বংশুরাজ্য ধর্মপুত্রো বুধিচিরঃ॥ বুর্রণা বন্ধ যন্তা কথা স ন বিজেছতি॥ ইত্যুক্তঃ কুপিতো রাজা মৎস্যঃ পাওবমত্রবীৎ। সমং পুত্রেণ মে বন্ধা ক্রমবন্ধো প্রশাসসি॥ বাচ্যাবাচ্যং ন জানীবে নৃনং মামবমন্তসে। ভীমজোণমুধান্ সর্কান্ কর্মান্ন স বিজেছাতি॥ বন্ধস্যত্তান্ত বন্ধনপরাধ্যমিং ক্ষমে। নেদৃশ্ভ পুনর্বাচ্যং যদি জীবিতু-মিচ্ছসি॥

যুধিন্তির উবাচ। বত্ত জোণতথা ভীমো জৌণিবৈকর্তনঃ কপঃ। ছুর্ব্যোধনশ্চ রাজেক্রতথৈবাতে মহারথাঃ॥ মকদ্গণৈঃ পরিবৃতঃ সাক্ষাদিপি শতক্রত্য়। কোহকো বৃহর্গায়াতান্ প্রতিষ্ধোত সক্ষতান্॥ বস্ত বাহবলে ভুল্যোন ভূতোন ভবিয়তি। অতীব সমরং দৃষ্ট্য হর্ষো বস্তোপজায়তে॥ বোহজ্বং সহিতান্ সর্বান্ স্বরান্সরমহোরগান্। তাদ্শেন সহায়েন ক্সার স বিজ্যেতি॥

বিরাট উবাচ। বছশ: প্রতিষিদ্ধোহিদ ন চ বাচং নিযক্ষি। নিয়স্তা চেল্ল বিজ্ঞেত্ন কশ্চিদ্ধান্তবেৎ॥

বৈশন্পারন উবাচ। ততঃ প্রকৃপিতো রাজা তমকেণাহনদ্ ভ্রশন্। মৃথে
মৃথিষ্টিরং কোপান্মৈবমিত্যেব ভংগরন্॥ বলবং প্রতিবিদ্ধন্ত লণ্ড: শোণিতমাবহং। তদপ্রাপ্তং মহীং পার্থ: পাণিভ্যামগ্রহীরদা। অবৈক্ষত স ধর্মাত্মা
জোপদীং পার্যতঃ স্থিতান্। সা জ্ঞাত্মা তমভিপ্রারং ভর্জ্ কিন্তবশাস্থপা॥
পারং গৃহীত্মা সৌবর্গং জলপূর্ণমনিন্দিতা। তচ্ছোণিতং প্রভাগরাদ্ধ বং
প্রস্ক্রাব নন্ততঃ॥ (বিরাটোহধারবীর্ কিম্তেৎ ক্রির্তামিতি। সৈর্দ্ধি:
জ্বহি তত্ত্বন মম প্রশ্নমশেষতঃ॥

সৈরন্ধ্রী উবাচ। যদীদং শোণিতং রাজন্ ককস্ত পতিতং ক্ষিতৌ। ইদং রাষ্ট্রঞ্চতে ক্ষিপ্রং বিনস্তোত ন সংশয়: ॥ ন চ বাদশবর্ধাণি বর্ষয়েও পুরন্দর:। ইতর্ষচ প্রবৃত্তির ন শস্তং জারতে কচিৎ॥ অন্তভং স্থাচচ রাজ্ঞেন্ত নৃপস্ত চ পুরস্ত চ ॥)

বৈশশ্পায়ন উবাচ। অথোত্তরঃ শুভৈগকৈম বিলাক বিবিধৈতথা।
আকীর্যমাণঃ সংহাটো নগরং বৈরমাগতঃ॥ সভাজ্যমাণঃ পৌরৈক শ্রীভিজানপদৈতথা। আসাত্ম ভবনদারং পিত্রে সংপ্রত্যাবেদয়ৎ॥ ততো দাহঃ
প্রবিশ্রেব বিরাটমিদমরবীৎ। বৃহয়লাসহায়তে পুল্রো দার্যভারঃ স্থিতঃ॥
ততো হাটো মৎস্তরাজঃ কভারমিদমরবীৎ। প্রবেশ্রতাম্ভৌ তৃবং দর্শনেপ্রুরহং তরোঃ॥ কভারং কৃকরাজ্য শনৈঃ কর্ণমুপাজপৎ। উত্তরঃ প্রবিশত্বেকো ন প্রবেশ্যা বৃহয়লা॥ এতশ্র হি মহাবাহোর ত্যেতৎ সমাহিতম্।
বো মমাকে রণং ক্র্যাভেল্বিতং বাপি দর্শয়ে। অক্তর সংগ্রামগতায় স
জীবেৎ কর্পক্ষন॥ ন মুলাভ্রশসংক্রেরা মাং দৃষ্ট্য তু সন্দোণিতম্। বিরাট
মিহ সামাত্যং দহেৎ স্বল্বাহনম॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। ততো রাজ্ঞ: স্বতো জ্যেষ্ঠ: প্রাবিশৎ পৃথিবীক্ষয়। সোহভিবাছ পিতৃঃ পাদে ধর্মরাজমপত্ত ॥ তথা ক্ষার্মসংসিজমনেকাগ্রমনাগসম্। ভ্যাবাসীনমেকান্তে সৈরন্ধ্যা প্রভ্যুপস্থিতম্ ॥ ততঃ পপ্রছে পিতরং অরমাণ ইবোররঃ। কেনায়স্তাভিতো রাজন্ কেন পাপমিদং কৃতম্ ॥

বিরাট উবাচ। মরারস্তাড়িতো জিন্ধো ন চাপ্যেজাবদর্হতি। প্রশস্ত-মানে বং শূরে ত্বরি বন্যং প্রশংসতি ॥

উত্তর উবাচ। অকার্যান্তে কুতং রাজ্বন্ ক্লিপ্রমেব প্রসায়তাম্। মা তাং ব্রহাবিষং বোরং সম্বমপি নির্দহেৎ॥

বৈশাশায়ন উবাচ। স পুদ্রাশ্র বচঃ শ্রুষা বিরাটো রাষ্ট্রবর্জনঃ। ক্ষময়ান্মাস কৌরবাং ভাষাছয়মিবানলন্ ॥ ক্ষময়ন্ত রাজানং পাওবঃ প্রত্যভাষত।
চিরং ক্ষান্তমিদং রাজন্ন মহাবিশ্বতে মম ॥ যদি হেতৎ পতেদ ভূমৌ ক্ষিরং
মম নন্ততঃ। সরাষ্ট্রবং মহারাজ বিনভোগা ন সংশয়ঃ॥ ন দ্বয়মি তে রাজন্
যাত হতাদদ্যকম্। বলবন্তং মহারাজ কিপ্রং দারণমাপুয়াৎ ॥

বিশাল্পারন উবাচ। শোণিতে তু ব্যক্তিকান্তে প্রবিবেশ বৃহর্ষণা। অভিবাস্থ বিরাটঞ্চ ক্ষঞ্চাপ্যপতিষ্ঠত॥ ক্ষমন্ত্রি তু কৌরব্যং রণাত্তর্মাগতম্। প্রশাশংস ততো মৎস্তঃ শৃষ্তঃ সব্যসাচিনঃ॥ ত্বরা দারাদ্বানন্দ্র কৈকেরীনন্দ-বর্জন। ত্বরা মে সদৃশঃ পুজো ন ভূতো ন ভবিষ্যতি ॥ পদং পদসহত্রেণ বশ্বরমাণরাধুরাৎ। তেন কর্নেন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ মহুষ্যলোকে সকলে বস্তু তুল্যো ন বিহুতে। বং সমৃত্র ইবাক্ষোভ্যঃ কালাগ্নিরিব হুঃসহঃ॥ ভীম্মেণ তেন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ আচার্য্যো বৃঞ্জিবীরাণাং কৌরবাণাঞ্চ বো বিক্ষঃ। সর্বক্ষপ্রস্তু চাচার্য্যঃ সর্বশন্ত্রভাং বরঃ॥ তেন জ্রোণেন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ আচার্য্যপুত্রো বং শৃরঃ সর্বশন্ত্রভাং বরঃ। অশ্বণা-মেতি বিখ্যাতঃ কথং তেন সমাগমঃ॥ রণে বং প্রেক্ষ্য সীদস্তি হৃত্ত্বা বণিজ্যো বণা। ক্রপেণ তেন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ পর্বতং বোহভিবিধ্যেত রাজপুত্রো মহেষ্ডিঃ। হুর্য্যোধনেন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ অবগাঢ়া বিষক্ষো মে স্থণো বাতোহভিবাতি মাম্। বৃত্তং মে ধনমাজৈবীঃ কৃক্ষভিগ্রন্তঃ মাহবে॥ তেবাং ভরাভিভ্তানাং সর্বেষাং বলশালিনাম্। নৃনং প্রকাল্য তান্ স্বর্ধাংগুরা যুধি নর্বভ॥ আজিঃং গোধনং সর্বং শার্দ্ধলানামিবামিষম্॥ ১-৭৬

ইতি শ্রীমহাভারতে শতশাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং বিরাট-পর্বাদি বিরাটোত্তরসংবাদো নাম অটবটিতমোহধ্যার:।

### একোনসপ্ততিত্তমা১থারঃ

উত্তর উবাচ। 🙀 भन्ना বিশিতা গাবো ন মন্না বিশিতা: পরে। कृष्ण कर्य ७९ मर्कर ८मनभूटबन रक्निहिर । म हि छोष्ड सनसः मार ८मनभूटब ক্সবারম্বৎ (ক্সবর্ত্তমুৎ)। স চাতিষ্ঠদ্রখোপত্তে বক্সসংহননে। তেন তানিৰ্জ্জিতা গাবন্তেন তে কুরবো বিভা:। তদ্য তৎ কর্ম বীরদ্য ন ময়া তাত তৎ কৃতম্ । স হি শারণতং জোণং জোণপুত্রক বীর্যাবান্। স্ত-পুদ্রক ভীমক চকার বিমুখান শবৈ: । তুর্ব্যোধনং চ সমরে (বিকর্ণক) স নাগমিব ঘূণপম্। প্রভাগমত্রবীদ্ভীতং দেবপুত্রে। মহাবলঃ॥ ন হান্তিনপুরে ত্রাণং তব পশ্রামি কিঞ্চন। ব্যায়ামেন পরীপ্সস্থ জীবিতং কৌরবাত্মক। ন মোক্যানে প্ৰায়ংখং রাজন্ যুদ্ধে মনঃ কুরু ॥ পৃথিবীং ভোক্ষানে বিভা হতো বা অর্গমাঞ্চাদি । স নির্ত্তো নরব্যান্তো মুঞ্চন্ বছ্লনিভাপুরান্। সচিবৈঃ সংবৃতো রাজা রথে নাগ ইব খদন্॥ তত্ত্ব মে (তং দৃষ্টা) রোমহর্বো-২ভূদুরুগুন্ত (কম্প) শ্চ জারতে (মারিষ)। তদভ্রঘন (স ভতা সিণ্ছ) मक्षामभनीकः राधमष्ट्रदेशः॥ ७९ अर्थुण द्रथानीकः मिःहमःहनत्न। यूरा। কুরংস্তান্ প্রহসন্ রাজন্ বাসাংস্থপাহর্বলী ( সংস্থিতান্ কৃতবাসসঃ ) । একেন তেন বীরেণ বড়্রথাঃ পরিনির্জিতাঃ। শাদ্দ্রেলনের মত্তেন স্বপাস্থণচরা বনে ( ৰথা বনচরা মুগাঃ ) ॥

বিরাট উবাচ। ক স বারো মহাবাহদেরপুদ্রো মহাবশাঃ। বো মে গোধনমাজৈবীৎ কুফভিগ্রস্তমাহবে॥ ইচ্ছামি তমহং দ্রষ্ট্রমার্চিতৃঞ্চ মহাবলম্। বেন মে স্বঞ্চ গাবশ্চ রক্ষিতা দেবস্ত্যুনা॥

উত্তর উবাচ। অন্তর্জানং গতন্তকা দেবপুক্তো মহাবলঃ। স তু ধাে বা পরখাে বা মত্তে প্রাহর্ডবিয়তি ॥

বৈশম্পান্নন উবাচ। এবমাধ্যান্তমানত ছেন্নং সত্ত্রেণ পাণ্ডবম্। বসতং তত্র নাজ্ঞাসীদিরাটো বাহিনীপতিঃ। ততঃ পার্ণোহত্যস্ক্রাতো বিরাটেন মহাত্মনা। প্রদদৌ তানি বাসাংসি বিরাটছহিত্য স্বন্ন। উত্তরা তু মহাহাণি বিবিধানি তন্নি চ। প্রতিগৃহাভবৎ প্রীতা তানি বাসাংসি ভাবিনী। মন্ত্রিস্থা তু কৌন্তের উত্তরেণ রহন্তদা। ইতিকর্ত্রব্যতাং স্ক্রাং রাজস্তথ মুধিষ্টিরে। ততত্ত্বধা ত্যাদধদ্ ব্বাবৎ প্রস্বর্ত্ত। সহ পুত্রেণ মৎস্যস্য সংপ্রস্তৃটো নর্বতঃ। ১-১৯

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্কণি বিরাটোত্তরসংবাদে উনসপ্ততিত্বোৎধ্যারঃ। তৃতীর—২২

### সপ্ততিভবেমা ১ থ্যায়ার

বৈশন্দায়ন উবাচ। ততত্ত্তীয়ে দিৰসে প্ৰাতরঃ পঞ্চ পাওবাঃ। স্বাতাঃ গুরুষরধরাঃ সমনে চরিত্রতাঃ ॥ বৃথিটিরং পূর্ত্বতা সর্বাতরণভূষিতাঃ। প্রতিপদ্ধা বাগা প্রাক্ষানা মহারথাঃ ॥ বিরাটস্য সভাং গছা ভূমিপালাসনেছথ। নিষেত্ঃ পাবকপ্রথাঃ সর্বে থিক্যেছিবায়য়ঃ ॥ তেষ্ ভ্রোপবিষ্টের্ বিরাটঃ পৃথিবীপতিঃ। আজগাম সভাং কর্ত্ঃ রাককার্যাণি সর্বাশঃ ॥ শ্রীমভঃ পাওবান্ দৃটা জলতঃ পাবকানিব। (রাক্ষবেশম্পাদার নৃপতিবিস্মিতোহভবৎ ॥ কিমিদং কো বিধির্হোব ভরার্ত ইব পার্থিবঃ।) মৃত্র্রেমিব চ ধ্যাত্মা সরোষঃ পৃথিবীপতিঃ ॥ অথ মৎস্তোহরবীৎ করং দেবরূপমবৃদ্ধিত্ব। মরুদ্গবিরূপানীনং ত্রিদশানামিবেশ্বরম্ ॥ স কিলাক্ষাভিবাপত্বং (ক্ষব্যাপকৃত্বং ) সভাত্মারো ময়া বৃতঃ। অথ রাজাসনে ক্সাত্পবিইত্বন্ততঃ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। পরিহাদেপায়া বাক্যং বিরাটক্ত নিশম্য তৎ। শ্রয়মানোহর্জ্জনো রাজলিদং বচনমত্রবীৎ 🏿

पार्क्न छेवाह। हेल्लानामनः त्राकत्रत्रमाद्राष्ट्र गईछि। उपनाः अष्ठ-এষ বন্ধাধিকো লোকে তপসাঞ্চ পরাষ্ণ:।। এষোহন্ত: বিবিধং বেডি खिटनाटका महत्राहदत । न हिराकः भूमान् विखि न विश्विष्ठ क्राहिन ॥ ন দেবা নামুরা: কেচির মনুষ্যা ন রাক্ষ্যাঃ। গন্ধবিক্পপ্রবরা: দক্ষির-मटकात्रशाः॥ मीर्यमनी महाराज्ञाः (श्रीत्रकानशमित्राः। शाख्यानामंजित्राया বজা ধর্মপরো বনী॥ মহর্ষিকল্পো রাজ্বিপ্তিয়ু লোকেয় বিশ্রতঃ। বলবান্ পুতিমান সৌম্যা সত্যবাদী বিতেন্দ্রিয়া। ধনৈশ্চ সঞ্চয়ৈশ্চৈব শক্রবৈশ্রবণো-পম: ॥ যথা মহুম হাতেজা লোকানাং পরিরক্ষিতা। এবমের মহাতেজাঃ প্রজামুগ্রহকারক:। অরং কুরণামুষভ: কুন্তীপুরো যুধিন্তির:। অত লোকে স্থিরা কীর্ত্তি: কুর্যান্তের দিবি প্রভা। সংসরস্তি দিশ: সর্বা বশসে। কু ইবাংশবঃ। উদিতভেব কুর্যান্ত তেজুদোহমুগভন্তরঃ॥ এনং দশসহস্রাণি কুলবাণাং তরখিনাম্। অধমুং পূর্চতো রাজন বাবদধ্যাবসং কুরন্। জিংশ-(मदः महत्यांनि त्रथाः काश्रनमानिनः। मन्देशक्रभमण्याः शृष्ठेर्छार् सूर्वः সদা । এনমট্রশতাঃ স্তাঃ সুমৃত্ত্মণিকুগুলাঃ। অক্রবন্ মাগবৈঃ সার্দ্ধং পুরা শক্রমিবর্বর:। ইমং নিত্যমূপাসন্তঃ কুরবঃ কিন্তরা বণা। সর্কে চ রাজন वाकारना धरनचविभिवासवाः॥ अव नर्सान महीशानान कवनान नमकावबर।

বৈশ্বানিব মহাভাগো বিৰশান্ খবশানপি॥ অটাশীভিসহআণি মাডকানাং মহাজ্মনাম্। উপলীবন্ধি রাজানমেনং অচরিত্রতম্য এব বৃদ্ধাননাথাকে পঙ্গুনন্ধাংশ্চ মানবান্। পূদ্ধবং পালয়ামাস প্রজাধর্মেণ (বীর্য্যান্) বৈ বিজ্ঞঃ এব ধর্মে দমে চৈব ক্রোধে চাপি জিতঃ সদা। মহাপ্রসাদো রন্ধণ্যঃ সভ্যবাদী চ পার্থিবঃ । শীজং (প্রীপ্র) ভাপেন চৈতক্ত ভপ্যতে স অবোধনঃ। সগণঃ সহ কর্ণেন সৌবলেনাপি বা বিভ্ঃ॥ ন শক্যন্তে হক্ত গুণাঃ সংপ্রধান্তং নরেশর। এব ধর্মপরো নিত্যমানৃশংক্ত পাণ্ডবঃ॥ এবমুক্তো মহারাজঃ পাণ্ডবঃ পুকুষর্বভঃ। কথং নাইতি রাজার্হমাসনং পৃথিবীপতে॥ ১ – ২৮

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বাণ্টকাতবাসপরিত্যাগে পাগুবপ্রকাশে সপ্ততিতমেহধ্যারঃ।

### একসপ্ততিভ্যোহপ্যায়ঃ

বিরাট উবাচ। বভেষ রাজা কৌরবাঃ কুন্তীপুত্রো যুধিষ্টিরঃ। কতমো-হক্তাৰ্জ্বনো ভ্রাত। ভীমশ্চ কতমো বলী॥ নকুলঃ সহলেবো বা জৌপদী বা বশ্বিনী। বলা দ্যুতজিতাঃ পার্থা ন প্রাঞ্জায়ন্ত তে কচিৎ॥

प्रक्रित छेना । य अव नद्याता जात् राष्ट्र नद्राधिन। अव जीता महानाह की सत्ता जिस । अव क्षित्र क्षित्र निर्मान क्ष्यां अव क्ष्र क्ष्यां निर्मान क्ष्यां विद्यान विद्यान क्ष्यां विद्यान विद्यान विद्यान क्ष्यां विद्यान विद्यान क्ष्यां विद्यान विद्यान विद्यान क्ष्यां विद्यान विद्यान

বৈশম্পারন উবাচ। যদার্জুনেন তে বীরা: কথিতা: পঞ্চ পাওবা:। তদার্জুনক্ত বৈরাটি: কথয়ানাস বিক্রমন্॥ পুনরেব চ তান্ পার্থান্ দর্শরামাস চোডার:॥

উত্তর উবাচ। य এয় জাখুনদশুদ্ধগোর-ভত্তর হান্ সিংহ ইব ≪ার্ছঃ।

প্রচণ্ডবোগঃ পৃথ্দীর্ঘনেত্রভাষায়তান্তঃ কুরুরাজ এবঃ । আরং পুনর্মন্তগজ্জেন্দ্রন্ধী, প্রভপ্তচামীকরভদ্ধগোরঃ । পৃথ্যায়তাংসো ঘৃগদীর্ঘনান্ত্রিদারঃ পশুত পশুতিনন্। যন্তের পার্যেই মহাধহমান্, শামো র্বা বারণমূর্বপোপমঃ । সিংহোলতাংসো গল্পরাজ্গামী, পদ্মায়তাক্ষোইর্জুন এব বীরঃ । রাজঃ সমীপে পুরুষেত্রেমী বৌ, বমাবিমৌ বিফুষ্তেক্তরে । মহুস্তলোকে সকলে সমোহন্তি, বরোন রূপে ন বলে ন শীলে । আভ্যান্ধ পার্যে কনকোত্তমালী, বৈষা প্রভাষ্ঠিমতীব সৌরী । নীলোৎপলাভা স্বন্ধেবতেব, রুঞা স্থিতা মূর্ত্তিমতীব লন্ধীঃ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবং নিবেন্ধ তান্ পার্থান্ পাঞ্চবান্ পঞ্চ ভূপতে:।
ততোহ জুনক্ত বৈরাটি: কথয়ামাস বিক্রমম্। মহেন্দ্রক্ত তদা সংপ্রহ্ট-তন্কহ:॥

देवतां है कर्ता । चित्र म चित्र का च्या च्या चित्र क्या चित्र चित्र

বৈশপায়ন উবাচ। তক্ত তথচনং শ্রুষা মংক্তরান্ধঃ প্রতাপবান্। উত্তরং প্রত্যুবাচেদমভিপন্নে যুখিষ্টিরে। প্রসাদনং পাওবক্ত প্রাপ্তকালং হি রোচন্নে। উত্তরাঞ্চ প্রবহামি পার্বায় বদি তে মতম্ (মন্ত্রে)॥

উত্তর উবাচ। আর্যাঃ পৃ**দ্যান্চ মান্তান্চ প্রাপ্তকালঞ্চ মে ম**তম্। পুজাস্তাং পূজনার্হান্ত মহাভাগান্ত পাশুবাঃ ॥

বিরাট উবাচ। অহং থবপি সংগ্রামে শক্রণাং বশমাগতঃ। রক্ষিতো ভীমনেনেন গাবকাপি জিতান্তথা॥ এতেবাং বাহবীর্যারদ্ বদসাকং জয়ো মুধে। বরং সর্কে সহামাত্যাঃ কুন্তীপুত্রং মুধিটিরম্। প্রসাদরামো ভত্ততে সাহকং পাণ্ডবর্ষভন্॥ যদসাভিরজানিত্তিঃ কিঞ্চিত্তো নরাধিপ। ক্ষন্তমইতি তৎ সর্কং ধর্মাত্মা হেষ পাণ্ডবঃ॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। ততো বিরাট: প্রথমং প্রস্তুট্ট, সমেত্য রাজা সময়ঞ্জার। রাজ্যঞ্চ সর্বাং বিসসর্জ্জ তদ্মৈ, সদগুকোবং সপুরং মহাজ্মা॥ পাওবাংশ্চ ভতঃ স্বান্মংশুরাজ্য প্রতাপবান্। ধনগ্রহং পুরস্কৃত্য দিট্যা দিট্যেতি চারবীৎ॥ সমুপান্তার মূর্জালং সংগ্রিয় চ পুনঃ পুনঃ। বুধিন্তির্ঞ্জ ভীমঞ্চ মান্তীপুত্রৌ

ৰহাবলো । নাড্পাদর্শনে তেবাং বিরাটো বাহিনীপতিঃ। স প্রীরমাণো রাজানং বৃধিন্তিরমধান্তনীং । দিট্যা ভবলঃ সংপ্রাপ্তাঃ সর্ব্বে কুশলিনো বনাং । দিট্যা সম্পালিভং কল্পমজাভং বৈ ছ্রাছাভিঃ । ইদং রাজ্যঞ্চ বঃ পার্থা হচান্তদপি কিঞ্চন। বচ্চ বক্ষ্যামি তৎ কার্য্যমর্জ্বনেনাবিশবরা ॥ উত্তরাং প্রতিগৃহাতু সব্যসাচী ধনপ্রয়ঃ। ভবং কৌপরিকো ভর্তা ভক্তাঃ পুক্ষসভমঃ ॥ এবমুক্তো ধর্মরাজঃ পার্থমৈকজনপ্ররম্। জীকিভশার্জ্বনো প্রাত্তা মৎস্যং বচন-মন্ত্রবীং ॥ প্রতিগৃহ্বাম্যহং হেড়ভাং স্বাং ছহিভরং তব । যুক্ত (এবাবরোরের সম্বন্ধঃ কুক্রমৎশুরোঃ । ) শচাবাং হি সম্বন্ধা মৎস্যভারতসন্তর্মো ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাট-পর্বাণি উত্তরাবিবাহপ্রস্তাবে একসপ্ততিতমোহধ্যারঃ।

### দ্বিসপ্ততিভ্ৰমোহধ্যায়ঃ

বিরাট উবাচ। কিমর্থং পাশুবশ্রেষ্ঠ ভার্ঘ্যাং তৃহিতরং মম। প্রতিগ্রহীতৃং নেমাং স্বং ময়া দ্বামিহেচ্ছসি॥

অর্জুন উবাচ। অন্তঃপুরেংহম্বিতঃ সদা পশুন্ স্থতাং তব। রহস্যক্ষ্
প্রকাশঞ্চ বিশ্বন্তা পিতৃবন্দরি॥ প্রিয়ো বহুমতশ্চাসং নর্জনে গীতকোবিদঃ।
আচার্য্যক্ত মাং নিত্যং মন্ততে তৃহিতা তব॥ বয়য়য়া তয়ায়াজন্ সহ সংবংসরোবিতঃ। অতি (ভি) শবা ভবেৎ স্থানে তব লোকস্য বা বিভো॥
তন্মারিমন্তরেংহতে তৃহিতাং পৃথিবীপতে। ওদো জিতেজিরো দান্তন্ত্যাঃ ওদিঃ
কতা ময়া॥ সুবায়া তৃহিতৃর্বাপি পুত্রে চাম্মনি বা পুনঃ। অভিশন্ধাং ন পশ্চামি
ভেন ওদির্ভবিশ্বতি॥ অভিশব্দাদহং (অভিশাপাদহং) ভীতো মিথ্যাচারাৎ
পরস্তপ। সুবার্থম্বরাং রাজন্ প্রতিগৃহামি তে স্থতাম্॥ স্থ্রীয়ো বাস্থদেবস্য
সাক্ষাদেবশিশুর্থা। দ্যিতশ্চক্রন্ত্রস্য বাল এবাল্পকোবিদঃ॥ অভিমন্ত্যম্হাবাহঃ
পুরো মম বিশাম্পতে। জামাতা তব যুক্তোহ্গো ভর্তা তু তৃহিতৃত্বব॥

ৰিরাট উবাচ। উপপন্নং কুক্লেটে কুন্তীপুত্রে ধনগ্রে। ব এব ধর্ম-নিঠণ্ট আতজানশ্চ পাওবং॥ বং কুত্যং মন্ত্রে পার্থ ক্রিয়তাং তদনন্তরম্। সর্বেক কামাং সমুদ্ধাশ্চ সম্বন্ধী যদ্য মেহজুনঃ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। এবং ক্রবতি রাজেক্তে ক্তীপুরো বৃধিটিরঃ। আৰ-(শাসং স সংবোগং) জানত সমন্ধং সমরে মংস্যাগর্তিরাঃ। ততে। বিজেমু

নৰ্মের বাহুদেবে চ পার্বিব। প্রেবরানান কৌতেরো বিরাটক নহীপতিঃ 🛭 ভভন্নাদৰে বৰ্বে নিযুত্তে পঞ্চ পাগুৰা:। উপপ্লবং বিল্লাট্ট্যা সম্পত্তত দর্মন:॥ অভিনত্যঞ বীভংমুরানিনার অনার্থনন্। আনর্ত্তেভাছপি नामाश्रीमानदामान शाखवः॥ कामादाक्क देनवाक श्रीदमादनी वृषिष्ठिद्य। আকৌহিণীভ্যাং সহিতাবাপতো পৃথিবীপতে॥ অক্ষোহিণ্যা চ ভেৰম্বী বাজ-সেনো মহাবল:। দ্রৌপভাশ্চ স্থতা বীরা: শিথপ্তী চাপরাবিত:। ধৃইছামশ্চ ছর্মবঃ সর্মশন্ত্রভূতাং বরঃ। সমন্তাকৌহিনীপালা বজানো ভূরিদক্ষিণাঃ॥ বেদাধ্যয়নসম্পন্নাঃ দৰ্কে শুরাঅনুত্যকঃ॥ তানাগতানভিপ্রেক্স মৎস্যে। ধর্ম-ভূতাং বর:। পুৰুষামাস বিধিবৎ সভূত্যবলবাহনান্। প্রীতোহভব-দৃহিতরং দল্পা ভাষভিষ্করে। ততঃ প্রত্যুপ্যাতেষু পার্বিবেষু ততততঃ॥ <u>क्वाशयक्षायक्षायः वनमानी इनायुः। इक्वर्य। ह शक्तिका युग्नानक</u> সাত্যকি:॥ অনাধৃষ্টিতথাকুর: শাসো নিশঠ এব চ। অভিমন্ত্যমূপাদায় সহ ৰাত্রা পরস্তপা:॥ ইন্দ্রদেনাদরকৈত রথৈতে: অসমাহিতে:। আবষ্: সহিতা: সর্কে পরিসংবৎসরোষিতা: ॥ দশনাগদহস্রাণি হয়ানাঞ্চ দশাযুত্ত্ব। রধানামর্ক্যুদং পূর্বং নিথকক পদাভিনাম্॥ বৃষ্ণ্যক্ষকাক শতশে।ভোজাক পরমৌজস:॥ অধ্যুর্ফিশার্দ্ লং বাস্থদেবং মহামতিম্॥ পারিবর্হং দদৌ কৃষ্ণ: পাগুবানাং মহাজ্মনাম্। জিয়োরত্বানি বাসাংগি পৃথক্ পৃথগনেকশঃ। ততো বিবাহে বিবৃতে বিধিবন্ধংস্তপার্থনোঃ॥ ততঃ শঙাশ্চ ভের্যান্চ প্ণবানক-গোম্থাঃ! পার্থিঃ সংপ্রামানস্ত নেত্র্থৎক্তস্ত বেশ্মনি ॥ উচ্চাবচান্ মৃগান্ ৰমুৰ্শেধ্যাংশ্চ শতশং পশ্ন। স্বাধৈরেরপানানি প্রভৃতাহ্যপহারয়ন্। श्रीव्रनाथा।नभागां नहेर्देवजानिकाख्या। खरहराञ्चाहिकेन् एजांक मह ৰাগধৈ:। হুদেঞাঞ্চ পুরস্কৃত্য মৎস্থানাঞ্চ বরস্তির:। আঞ্জগ্মুশ্চারুদর্কাক্ষ্য অষ্ট্ৰণিকুগুলা:। বৰ্ণোপপন্নান্ত। নাৰ্য্যো রূপবত্যঃ স্বলঙ্ক হাঃ। সর্বাশ্চাভ্য-ভবন্ রুঞা রূপেণ যশসা শ্রিয়া॥ পরিবার্য্যেতরাং ভাস্ত রাজপুত্রীমলছতাম্। স্বতামিব মহেন্দ্রন্ত পুরস্কত্যোপভদ্বিরে। তাং প্রত্যগৃহাৎ কৌন্তের: স্বতন্তার্বে ধনঞ্জঃ। দৌভদ্রস্তানবভাদীং বিরাটতনন্নাং তদা॥ তত্রাতির্চমহারাশে। ক্লপমিজত ধাররন্। অুবাং তাং প্রতিক্গাহ কুরীপুরো ব্ধিটির:। প্রতি-পৃষ্চ তাং পার্থ: পুরস্কৃত্য অনাদিনম্। বিবাহং কারয়ামাদ সৌভদ্রস্য ৰহাত্মন: ॥ তথ্য সপ্তদহস্ৰাণি হয়ানাং বাতরংহসাম্। বেচ নাগশতে মুখ্যে आंगोबहरमः छम्।। इक् नमाक् नमिकाधिमक्रिकिया विकश्ननः। वांकाः वनक

द्भावक नर्सवाद्यानस्य क्ष चर्चनद्रश्य भाखस्य । विवाहः वी जिवारणना ॥ इस्त विवाहः ज्ञान विवाहः ज्ञान विवाहः विवाहः

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং বিরাটপর্বাধি
(বৈবাহিকপর্বাধি) উত্তরাবিবাহে বিসপ্ততিতমোহধ্যারঃ।

७ उर मर।

# **প্রীপ্রী**সম্ভগবন্দ্যীতা

## অথ শ্রীমদভগবদ্গীতাপাঠক্রমঃ

গীতা-ধ্বাদি ভাস:—ওঁ অস্ত শ্রীমন্তগ্বনগীতা-মালামন্ত্র শ্রীভগবান্ বেদব্যাস-ধ্বিরস্ট,প্ছন্ম: শ্রীকৃষ্ণ: প্রমান্ত্রা দেবতা "অশোচ্যানবশোচ্বং প্রজাবাদাংশ্চ ভাষদে" ইতি বীজম্ "সর্বধর্মান্ পরিত্যভ্য মামেকং শরণং ব্রজ" ইতি শক্তি: "অহং ত্বাং সর্বপাপেভ্যো মোক্ষিভামি মা ভাচঃ" ইতি কীলকৃষ্ শ্রীকৃষ্ণপ্রীত্যর্বং শ্রীমন্ভগবন্গীতাপাঠে বিনিরোগঃ।

দীতা-করাজভাসে বথা—"নৈনং ছিন্দন্তি শস্ত্রাণি নৈনং দহতি পাবকং" ইত্যুকুঠাভ্যাং নমঃ : "ন চৈনং ক্লেদমন্ত্যাপো ন শোষমতি মাকতং" ইতি তর্জনীভ্যাং বাহা। "অচ্ছেভোহমুমদাহোহমুমকেভোহশোয় এব চ" ইতি মধ্যমাভ্যাং বৃষ্ট। "নিতাঃ সর্ব্ধগতঃ স্থাণুরচলোহয়ং সনাতনঃ" ইত্যুনা-িম্বাভ্যাং হুং। "পশ্ত যে পার্থ রূপাণি শতশোহধ সহস্রশঃ" ইতি কনিঠাভ্যাং বৌষ্টু। "নানাবিধানি দিব্যানি নানাবর্ণাকৃতীনি চ" ইতি কর্তুলপূঠাভ্যামন্ত্রায় ফটু। ইতি কর্তুলস্ঠা-

"নৈনং ছিন্দন্তি শন্তাণি নৈনং দহতি পাবকং" ইতি হাদরার নমঃ।
"ন চৈনং ক্লেদরস্ত্যাপো ন শোষরতি মারুতঃ" ইতি শিরসে স্বাহা।
"অছেন্ডোহরমদাহোহরমক্রেডোহশোষ্য এব চ" ইতি শিবারৈ বষ্ট। "নিত্যঃ
সর্ব্যগতঃ স্থাপ্রচলোহরং সনাতনং" ইতি কবচার হং। "পশু মে পার্থ রূপাণি
শতশোহথ সহস্রশং" ইতি নেত্রত্তরায় বৌষ্ট। "নানাবিধানি দিব্যানি নানাবর্ণার্কতীনি চ" ইতি করতলপুঠাত্যামন্ত্রার ফট্। ইতি অকস্তাসঃ।

**जञ्च मुर्जर हको शांठा निवद विजी मथरण जहेराम्।** 

### অথ গীতা-থ্যানম্

ও পার্থায় প্রতিবোধিতাং ভগবতা নারায়ণেন স্বয়ং, ব্যাসেন গ্রথিতাং পুরাণমূনিনা মধ্যেমহাভারতম্। অবৈতামৃতবর্ষিণীং ভগবতীমণাদশাব্যায়িনী-মহ তামহুসক্ষামি ভগবদগীতে ভববেষিণীম্॥

### অথ গ**েশশাদ্দি-প্র**ণামা

ওঁ বারীশালা: সুমনদ: দর্কার্থানামুপক্রমে। যং নতা রুতরুত্যা: ত্মান্তং নমামি গজাননম্॥ ১॥ বা কুলেন্দুত্বারহারধবলা বা খেত-পদাসনা, ধা বীণাবরদগুমপ্তিভভূজা ধা শুল্রবন্তারতা। ধা বন্ধাচ্যুত-শঙ্করপ্রভৃতিভির্দেবে: সদা বন্দিতা, সামাং পাতু সরস্বতী ভগবভী নিংশেষ-জাভ্যাপহা ।। । নমেহস্ত তে ব্যাস বিশালবুদ্ধে, ফুলারবিন্দায়ত-পত্রনেত্র। যেন ত্বয়া ভারততিলপূর্ণ:, প্রজালিতো জ্ঞানময়: প্রদীপ:॥ ৩॥ প্রপল্পারিঞ্চাতার তোত্রংবৈত্রকপাণয়ে। জ্ঞানমূলার কৃষ্ণার গীতামৃতহতে नमः ॥ १ ॥ . मर्ट्यानिवरमा नार्या त्माका त्नानाननमनः । नार्या वरमः ञ्चशीर्खाका एकः गीकामृकः महर ॥ ६ ॥ वञ्चरमवञ्चलः रमवः कःमहानृत्रमर्फनम् ! **टा** प्रकोशत्रभानमः कृषः वटन स्रशम्खक्षम्॥ ७॥ **छोत्र**टलांग्छ**ा स्रत्रस्थल**ा शासावनीरला९भना, मनाशाहरको क्राप्तन वहनी कर्तन दिनाकूना। अपशोम-विकर्गावामकता पूर्याधनाविकी, त्राखीर्ग थम् शाखरेव द्रवनमी किवर्खकः কেশব:॥ १॥ পারাশর্য্যবচ: সরোজমমলং গীতার্থগদ্ধোৎকটং, নানাধ্যানক-কেশরং হরিকথাসম্বোধনাবোধিতম। লোকে সজ্জনষট্পদৈরহরহঃ পেপীরমানং মুদা, ভ্রাদ্ ভারতপক্তজং কলিমলপ্রধ্বংসি নঃ ভারতে । ৮॥ মুকং করোতি বাচালং পঙ্গুং লজ্বন্ধতে গিরিম। মৎকুপা **তমহং** বল্পে পরমানন্দমাধবম ॥ ৯॥ यः একা বরুণেক্রকুত্রমকুভস্তর্সন্তি শুবৈর্বেল: সাজপদক্রযোপনিষ্টদর্গায়ন্তি যং সামগা:। ধ্যানাবস্থিততদ্-গতেন মনসা পশুন্তি যং যোগিনো, যন্তান্তং ন বিতঃ সুরাস্তরগণা দেবার তলৈ নম:॥ ১০॥ নমো ধর্মায় মহতে নম: কৃষ্ণায় বেধলে। বান্ধণেভ্যো নমস্কৃত্য ধর্মান বক্ষ্যে সনাতনান্॥ ১১॥ নারায়ণং নমস্কৃত্য নরকৈব नरत्रांखमम्। दनवीः मतत्रखीरिकद खटा अन्नमृतीन्नरम् ॥

ওঁ তৎ সৎ

#### **এরতে** প্রাক্তি

ওঁ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ। ধর্মক্ষেত্রে কৃক্ষেত্রে সমবেতা বৃষ্ৎসবঃ। মামকাঃ পাওবালৈত কিমকুর্বত সঞ্জয়॥ > ॥

সঞ্জ উবাচ। দৃষ্টা তু পাঞ্চবানীকং বুঢ়েং হুৰ্ব্যোধনন্তদা। আচাৰ্য্যমূপ-সক্ষ্য রাজা বচনমত্রবীৎ॥২॥ পঞ্জিতাং পাঞ্পুক্রাণামাচার্য্য মহতীং চমুম্। ব্ঢ়াং জ্ৰপদপুত্ৰেণ তব শিব্যেণ ধীমতা।। ৩।। অত্ত শ্বা মহেৰাসা ভীমাৰ্জ্ব-সমা বৃধি। বৃষ্ধানো বিরাটশ্চ জ্ঞাপদশ্চ মহারথ: ॥ ৪॥ ধুষ্টকেভূশ্চেকিতান: কাৰী (শি) রাজণ্চ বীর্য্যবান্। পুরুজিৎ কুস্তিভোজণ্চ শৈ (সৈ)ব্যশ্চ নরপুষব: । ৫ ॥ বুধামছাল বিক্রান্ত উত্তমৌলাল বীর্ঘ্যবান । সৌভলো জৌপদে-রাশ্চ সর্ব্ব এব মহারথা:॥৬॥ অস্মাকস্ত বিশিষ্টা যে ভারিবোধ বিজোভম। নায়কা মম দৈছত সংজ্ঞাৰ্থ তানু ব্ৰবীমি তে॥ १॥ ভবানু ভীম্বত কৰ্ণক ক্লপশ্চ সমিতিঞ্জয়:। আৰখামা বিকর্ণন্চ সৌমদন্তির্জ্জয়দ্রথ:॥৮॥ অক্তে চ বহবঃ শুরা মদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ। নানাশস্ত্রপ্রহরণাঃ সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ ॥>॥ অপর্য্যাপ্তং তদস্মাকং বলং ভীমাভিরকিতম্। পর্য্যাপ্তং বিদমেতেবাং বলং ভীমাভিরক্ষিতম্॥ ১ • ॥ অরনেযু চ সর্কেযু বথাভাগমবস্থিতা:। ভীম্মেরা-ভিরক্ত ভবস্তঃ সর্ব্ব এব হি॥ ১১॥ ত স্ত সংজ্ঞনরন্ হর্বং কুরুবৃদ্ধঃ পিতামহ:। সিংহনাদং বিনয়োকৈ: শব্দং দৰ্য্যো প্ৰভাপবান ॥ ১২ ॥ ততঃ শহ্মান্চ ভেৰ্য্যন্চ পণবানকগোমুধা:। সহসৈবাভ্যহন্তম স শক্তমুলোহভবৎ॥১৩॥ ততঃ (योज्डरेंबर्राक महिंज जनत्न ब्रिट्ज)। माधवः পाखवरेन्डव निर्वा मत्यो প্রদশ্মতু:॥ >৪॥ পাঞ্চলত: জ্বীকেশে। দেবদত্তং ধনঞ্জয়:। পৌঞ্: দশ্মৌ মহাশব্দং ভীমকর্মা বুকোদর: ॥ ১৫ ॥ অনন্তবিজয়ং রাজা কৃত্তীপুল্রো যুধিষ্ঠির: । নকুলঃ সহদেবত স্থাবেমণিপুষ্পকে।। ১৬॥ কাশ্রত পরমেধাসঃ শিথপ্তী চ মহারথ:। ধুষ্টক্যন্ত্রো বিরাটন্চ সাত্যকিন্চাপরাজিত:॥১৭॥ জ্রোপদেয়াশ্চ সর্ববঃ পৃথিবীপতে। সৌভূদ্রণ্ড মহাবাহঃ শঝান্ দামুঃ পৃথক্ পৃথক্ ॥ ১৮॥ স বোষো ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং জনমানি ব্যদাররং। নভক পৃথিবী-किर जुम्रलार छाञ्चना नग्नन् ॥১৯॥ अथ रावश्चिनान् नृष्टी धार्खना होन् किरिसकः। প্রবৃত্তে শত্মস্পাতে ধহুরুদ্যম্য পাওব:। क्वीटक्नः जम वाकामिममार মহীপতে ॥২•॥ দেনরোক্তরোর্মধ্যে রথং স্থাপর মেৎচ্যুত ॥ ২১ ॥ ৰাবদেভারিরীক্ষেৎহং বোদ্ধানানবস্থিতান্! কৈৰ্মনা সহ ৰোদ্ধব্যশ্বিন্

রণসম্ভবে ॥ ২২ ॥ বৌৎশুদানানবেকেংহং ব এতেংজ সমাগভাঃ। ধার্তরাইশু ছর্ম্বুদ্ধের্বুদ্ধে প্রিরচিকীর্বিঃ॥ ২৩ ॥

সঞ্চর উবাচ। এবমুক্তো স্থবীকেশো গুড়াকেশেন ভারত। সেনয়োর্র্ন-ভরোর্ছবেয় স্থাপরিছা রথোন্তমন্ ॥২৪॥ ভীন্মজোপপ্রমূপক্তঃ সর্ক্রেবাঞ্চনহীক্ষিতান্ ॥ উবাচ পার্থ পত্যৈতান্ সমবেতান্ ক্রনিতি ॥২৫॥ তত্তাপশুৎ স্থিতান্ পার্থঃ পিতৃনথ পিতামহান্। আচার্যান্মাতৃলান্ লাতৃন্ পুলান্ পৌলান্ স্থীংতথা ॥২৬॥ খণ্ডরান্ ক্রনকৈত সেনঝোরভরোরপি। তান্ সমীক্ষ্য স কৌব্রন্ন ব্রুনবস্থিতান্। কুপরা পরয়াবিটো বিবীদ্রিদ্মন্ত্রীৎ ॥২৭॥

चर्क्न छेवां । मृद्धेमान चलनान कृष्ण युग्रस्त नमविष्ठान । नीमस्ति यम शांखार्नि मूर्थक পत्रिच्छाजि ॥२৮॥ त्वर्थक नतीत्व तम त्वामहर्यक स्वाहरण। পাতীবং অংসতে হত্তাৎ ছক্ চৈব পরিদহতে॥ ২৯॥ ন চ শক্রোম্যবস্থাতুং ভ্ৰমতীৰ চমে মনঃ। নিমিত্ৰানি চপ্ৰামি বিপ্রীতানি কেশৰ ॥৩০॥ ন চ **ट्यार्श्यामि इचा अक्रमाह्दा न कार्यक विकार कृष्य न ह ताकार** क्यांनि ह ॥ ७ ३॥ किः त्ना ब्रांब्यान त्यांविक किः त्छारंशकीवित्छन वा । বেষামর্থে কাজ্জিতং নো রাজ্যং ভোগা: স্থানি চ ॥ ০২॥ ত ইনেছবস্থিত। যুদ্ধে প্রাণাংস্ত্যকা ধনানি চ। আচার্য্যাঃ পিতরঃ পুত্রাস্তবৈব চ পিতা-মহা: ॥০ া মাতুলা: খণ্ডরা: গোলা: ভালা: সম্বিদ্ধপা। এতান্ ন হন্তমিচ্ছামি মতোহপি মধুক্ষন ॥ ৩৪॥ অপি ত্রৈলোক্যরাজ্যন্ত হেতোঃ কিনু মহীক্ততে। নিহত্য ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ নঃ কা প্রীতিঃ স্তাজ্জনার্দ্ধন ॥ ৩৫॥ পাপমেবা-আবেদখান হবৈতানাততায়িন:। তখালাহী বলং হলং ধার্তরাষ্ট্রান স্বান্ধ-বান। স্বন্ধনং হি কথং হতা সুথিন: স্তাম মাধব॥ ৩৬॥ বল্পোতে ন পশান্তি লোভোপহতচেতস:। কুলকয়কুতং দোষং মিত্রফ্রোহে চ পাতকম্। ৩৭। কথং ন জ্যেমস্মাভিঃ পাপাদস্মান্তিবর্তিতুম্। কুলক্ষয়কৃতং দোষং প্রপশ্যম্ভি-ৰ্জনাৰ্জন ॥ ৩৮॥ কুলক্ষে প্ৰণণ্যস্তি কুলংখা: সনাতনা:। ধৰ্মে নষ্টে কুলং কংল্লমধর্ম্মোহভিভবত্যুত॥ ৩৯॥ অধর্মাভিভবাৎ কৃষ্ণ প্রত্যান্তি কুলল্লির:। স্ত্রীযু ত্রীত্ম বাফের লায়তে বর্ণকর:॥ ৪০॥ সকরে। নরকার্যের কুল্ছানাং কুলক্ত চ। পতন্তি পিতরো ছেষাং নৃপ্তপিজোদকক্রিয়া:॥ ৪১॥ দোবৈরেইত: কুলম্নাং বর্ণকরকারকৈ:। উৎসাভতে জাতিধর্মাঃ কুলধর্মান্ড শাবতা:॥৪२॥ উৎসন্নকুলধৰ্মাণাং মহন্তাণাং জনাৰ্দ্ধন। নৱকে নিয়তং বাসো ভবতীভান্থ-ওখাষ ॥৪০॥ অহে। বত মহৎ পাপং কর্ত্তুং,ব্যব্দিত। ব্রুম্। বল্লাজ্যস্থলোভেন

হ**তং অজনমূ**ভতাঃ ॥৪৪॥ বনি মাম**প্রতী**কারমশস্তং শত্মপাণরঃ । ধার্ত্তরাষ্ট্রা রণে হয়স্তথ্যে ক্ষেমতরং ভবেৎ ॥ ৪৫ ॥

সঞ্জর উবাচ। এবমুক্তার্জ্ক্রঃ সংখ্যে রুপোপস্থ উপাবিশৎ। বিস্ফা সশরং চাপং শোকসংবিগ্রমানসঃ॥ ৪৩॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীত্মপর্মণ শ্রীমন্তগবদ্গীতাস্পনিবৎস্থ ব্রহ্মবিদ্যারাং বোগশাল্পে শ্রীকৃষ্ণার্জ্মন-সংবাদে অর্জ্নবিষাদযোগো নাম প্রথমোহধ্যারঃ।

### দ্বিভীয়োহপ্যায়ঃ

সঞ্জ উবাচ। তং তথা কুপরাবিষ্টমশ্রপূর্ণাকুলেক্ষণম্। বিশীদভ্ষিদং বাক্যমুবাচ মধুক্দনঃ ॥ ১ ॥

শীভগৰাত্মবাচ। কৃত্যা কশালমিদং বিষমে সমুপস্থিতম্। অনাৰ্য্যভূষ্ট-মন্থৰ্গ্যমকীৰ্ত্তিকরমৰ্জ্জ্ন ॥ ২॥ ক্লৈব্যং মা স্ম গমঃ পাৰ্থ নৈতন্ত্ৰ্যুপপন্থতে। কৃদ্ৰং কুদ্ৰদৌৰ্ব্যাং ত্যক্ষোত্তিষ্ঠ পরস্তপ ॥ ৩॥

অর্জুন উবাচ। কথং ভীমনহং সংখ্যে জোনঞ্চ মধুস্দন। ইন্ভি: প্রতিবোহেনামি প্লাহাবিরিস্থন। এজনহন্তা হি মহাস্ভাবান্, প্রেরো ভোজে ইক্সমপীহ লোকে। হত্তার্থিকামাংস্ত গুরুনিহৈব, ভূজীয় ভোগান্ কধির প্রদিয়ান্॥ ৫॥ ন চৈত্তিদাং কতর্ত্তাে গরীলো, বহা করেম যদি বা নো কয়েয়ৄ:। বানেব হত্তা ন জিলীবিয়ামতেহ্বস্থিতাঃ প্রমূপে ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ॥ ৬॥ কার্পাগেদোযোপহত্তভাবঃ, পৃহামি তাং ধর্মসংমৃচ্চেতাঃ। যতেহ্ রঃ ভালিশিত জেহি ত্রে, শিষ্পতেহহং শাধি মাং তাং প্রপরম্॥ ৭॥ ন হিপ্রপর্তাম মমাপস্ভাদ্, যতেহারপ্রিক্রিরাপাম্। অবাপ্য ভূমাবস্পর্মন্ধং, রাজ্যং স্বরাণামপি চাধিপত্যম্॥ ৮॥

সঞ্জয় উবাচ। এবম্জ্বা হ্রবীকেশং গুড়াকেশঃ পরস্তপঃ। ন বোৎস্ত-ইতি গোবিন্দম্জ্বা তৃষ্ণীং বভূব হ ॥ ১॥ তম্বাচ হ্রবীকেশঃ প্রহসন্তিব ভারত। সেনয়োকভয়োশ্ধেয়ে বিবীদন্তমিদং বচঃ॥ ১০ ॥

শ্রীভগবাত্ত্বাচ। অশোচ্যানন্ধশোচন্তং প্রজ্ঞাবাদাংক ভাষসে। গতাত্ত্ব-গতাত্ত্ংক নাছশোচন্তি পণ্ডিতাঃ॥ ১১॥ ন জ্বোহং জাতু নাসং ন জং নেমে জনাধিপাঃ। ন চৈব ন ভবিষ্যামঃ সর্বের ব্যুমতঃপরম্॥১২॥ দেহিনোহন্দিন্ ব্পা দেহে কৌমারং যৌবনং জর।। তথা দেহান্তরপ্রাপ্তির্ধীরন্তক্ত ন মুক্তি॥১০॥ মাত্রাম্পর্নান্ত কৌন্তের শীতোঞ্জুখতু:খলা:। আগমাপারিনোহনিত্যান্তাং-ভিতিক্স ভারত॥ ১৪॥ বং হি ন ব্যথরস্তোতে পুরুষং পুরুষর্বভ। সমহঃধন্থধং ধীরং সোহমুতবায় কল্পতে ॥১৫॥ নাসতো বিশ্বতে ভাবো নাভাবে। বিশ্বতে সতঃ। উভয়োরপি দৃষ্টোহন্তত্ত্বনয়োক্তত্ত্বদর্শিভিঃ॥১৬॥ অবিনাশি তু ভিদিদ্ধি বেন সর্কমিদং ভভদ্। বিনাশমব্যয়ক্তাক্ত ন কশ্চিৎ কর্ত্ত্র্মইতি॥ ১৭॥ অস্তবন্ত ইমে দেহা নিত্যক্রোক্তা: শরীরিণ:। অনাশিনোংপ্রমেয়স্ত তত্মাদ্-ৰুধ্যম্ব ভারত ॥ ১৮॥ ৰ এনং বেভি হস্তারং বশ্চৈনং মন্ততে হতম । উভৌ তৌ ন বিশ্বানীতো নায়ং হস্তি ন হক্ততে । ১৯॥ ন জায়তে বিয়তে বা কণাচিন্নায়ং ভূষা ভবিতা বা ন ভূয়:। অঞ্চো নিত্য: শাখতোহয়ং পুরাণো, ন হক্ততে হক্তমানে শরীরে॥ ২০॥ বেদাবিনাশিনং নিত্যং ব এনমজমব্যয়ন। কথং স भूक्यः भार्थ कः घाजप्रिक रुखि कम् ॥२১॥ वांत्राःशि श्रीनीनि यथा विरात्र, नवानि গুহুাতি নরোহপরাণি। তথা শরীরাণি বিহার জীণাক্তকানি সংযাতি নবানি प्रशि । २२ ॥ देननः ছিলভি শস্ত্রাণি নৈনং দহতি পাবক:। ন চৈনং ক্রেনয়ন্ত্রাপোন শোষয়তি মাক্তঃ । ২০ ॥ অচ্ছেত্যোহয়মদাহোহয়মক্রেছো-হশোস্ত এব চ। নিত্য: সর্ব্ধগতঃ স্থাণুরচ্লোহয়ং সনাতন:॥ ২৪॥ অব্যক্তো-২রম্চিস্ত্যোহরম্বিকার্য্যোহরমূচ্যতে। তন্মাদেবং বিদিবৈশ্বনং নামুশোচিত-অথ চৈনং নিত্যকাতং নিত্যং বা মন্ত্ৰদে মৃতম্। তথাপি স্বং মহাবাহো নৈনং শোচিতুমৰ্হসি॥২৬॥ জাতক্ত হি প্ৰবো মৃত্যুঞ্বিং জন্ম মৃতক্ত চ। তন্মাদপরিহার্ব্যেহর্ষেন বং শোচিত্মর্হনি॥ ২৭॥ অব্যক্তাদীনি ভূতানি ব্যক্তমধ্যানি ভারত। অব্যক্তনিধনান্তেৰ তত্ত্ব কা পরিদেবনা॥ ২৮॥ আশ্চর্য্যবং পশ্রতি কশ্চিদেনমাশ্চর্য্যবদ্ বদতি তথৈব চাল্তঃ। আশ্চর্য্যবচ্চৈন-मन्नः मृत्नांकि, अन्वांत्रानः त्वत न देवव कन्दि ॥ २३ ॥ तनशै निकामवत्थाां रहः দেহে সর্বান্ত ভারত। তন্মাৎ সর্বাণি ভূতানি ন মং শোচিতৃমর্হসি॥ ৩ ॥ স্বধর্মনিপ চাবেক্ষ্য ন বিকম্পিতৃমর্হদি। ধর্ম্মাদ্ধি যুদ্ধাচ্ছেদ্রোহন্যৎ ক্ষত্রিয়ন্ত ন বিভাতে ॥ ৩১ ॥ বদুচ্ছরা চোপপন্নং স্বর্গবারমপাবৃত্য। স্থাধিনঃ ক্ষান্তিরাঃ পাर्थ लखरस्य युक्तमीतृगम् ॥ ७२ ॥ व्यथ ८५स्विमशः धर्माः अःश्रीमः न कत्रिम्ननि । ততঃ খধর্মং কীর্ত্তিঞ্চ হিত্তা পাপমবাপ্যাসি॥ ৩০॥ অকীর্ত্তিঞাপি ভূতানি তেৎব্যরাম্। সম্ভাবিতত চাকীর্ত্তির্মরণাদভিরিচ্যতে ॥ ৩৪ ॥ ভন্নাত্রণাত্রপরতং মংস্তত্তে বাং মহারণাঃ। বেবাঞ্চ বং বহুমতো ভূতা যান্ত্রসি नाचवम् ॥ ७८ ॥ व्यवाह्यवानाः क बहुन् विषष्ठि छवाहिलाः । निन्तस्रख्य नामर्थाः

ভতো হঃখভরং হু কিম্॥ ৩৬॥ হজো বা প্রান্সাসি বর্গং দিয়া বা ভোক্সাসে মহীম্। তত্মাছত্তিষ্ঠ কৌত্তের যুদ্ধার কুতনিশ্চর:॥৩१॥ সুথত্বংখে সমে কুদ্ধা লাভালাভৌ জয়াজনো। ততো বৃদ্ধার বৃদ্ধার বৈবং পাপমবাল্যাসি 🛭 🤒 🛭 এবা তেহভিহিতা সাংখ্যে বুদ্ধির্যোগে ঘিমাং দুণু। বৃদ্ধ্যা বৃদ্ধো বন্ধা পার্ব কর্মবন্ধং প্রহান্তসি ॥ ৩৯ ॥ নেহাভিক্রমনাশোহন্তি প্রত্যবাল্পো ন বিছতে। স্বয়মপ্যস্ত ধর্মস্ত আয়তে মহতো ভরাৎ॥ ৪•॥ ব্যবদায়ান্মিকা বৃদ্ধিরেকেহ বহুশাথা হুনস্তাশ্চ বুদ্ধয়োহব্যবসায়িনামু॥ ৪১ ॥ যামিমাং পুশিতাং বাচং প্রবদন্ত্যবিপশ্চিতঃ। বেদবাদরতাঃ পার্থ নাক্তদন্তীভিবাদিনঃ ॥৪২॥ কামান্মানঃ স্বৰ্গপরা জন্মকর্মফলপ্রদাম। ক্রিয়াবিশেষবহুলাং ভোগৈষর্য্যগতিং প্রতি ॥ ৪৩ ॥ ভোগৈখর্য্যপ্রসক্তানাং তন্নাপত্নতচেতসাম্। ব্যবসান্নাত্মিকা वृद्धिः समार्थो न विधीवरण ॥ ८८ ॥ देवश्रेणाविष्या द्वा निर्देश्वश्रेणा खरार्ज्यन । निष्टि निजामचट्या निर्दाशक्य याजान्॥ ८०॥ यावानर्थ छेम्भारन সর্বভ: সংগ্রভাদকে। ভাবান্ সর্বেষ্ বেদেষ্ বান্ধণক্ষ বিকানত:॥ ৪৬॥ কর্মণ্যেবাধিকারতে মা ফলেষু কদাচন। মা কর্মকলহেতুভূর্মা তে দলো-১ ব্ৰহ্ম বি।। ৪৭ । বোগছ: কুক কৰ্মাণি সকং ত্যক্তা ধনঞ্জ। সিদ্ধাসিক্ষো: সমো ভূজা সমস্বং বোগ উচ্যতে ॥ ৪৮ ॥ দূরেণ হ্বরং কর্ম বৃদ্ধিবোগাদ্ধনঞ্জ। বুদ্ধৌ শরণমধিছ কুপণা: ফলহেতব:॥ ৪৯॥ বৃদ্ধিমুক্তো অহাতীহ উত্তে সুকৃত-চুত্বতে। তত্থাদ বোগার যুক্তাত্ব বোগঃ কর্মস্ব কৌশলম্॥ ৫০॥ কর্মজঃ वृद्धियुक्ता हि कनः छाक्ता मनोविनः। अन्त्रवस्विनिम् काः भनः भष्ट्सा-নাময়ম ॥ ৫১ ॥ যদা তে মোহকলিলং বুদ্ধিব্যতিতরিম্বতি। তদা গস্তাসি নির্বেদং শ্রোতব্যক্ত শুকুক চ। ৫২। শ্রুতিবিপ্রতিপরা তে স্থান্ততি নিশ্চলা। সমাধাবচলা বুদ্ধিন্তদা যোগমবাপ্সাসি । ৫০॥ অৰ্জুন উবাচ। স্থিতপ্ৰজন্ত কা ভাষা সমাধিস্বস্ত কেশব। স্থিতধীঃ কিং প্রভাষেত কিমানীত ব্রব্বেত কিম্॥ ৫৪

শ্রীভগৰাত্বাচ। প্রজহাতি বদা কামান্ সর্বান্ পার্থ মনোগতান্।
শাব্দেরবান্ধনা ভূটঃ হিতপ্রজন্তদোচ্যতে ॥ ৫৫॥ ত্ঃবেষত্বিগ্ননাঃ স্ববেষ্
বিগতস্পৃহঃ। বীতরাগভরকোধঃ হিতধীর্মনিকচ্যতে ॥ ৫৬॥ বঃ সর্ববানভিস্মেহন্তবং প্রাপ্য শুভাশুভ্রম্। নাভিনক্তি ন বেটি তক্ত প্রজ্ঞা প্রতিটিতা ॥ ৫৭॥
বদা সংহরতে চারং ক্র্মোহন্দানীর সর্বশং। ইন্দ্রিরাণীন্দ্রিরার্থেভ্যন্তক্ত প্রজ্ঞা
প্রতিটিতা ॥ ৫৮॥ বিষরা বিনির্বন্তি নিরাহারক্ত দেহিনঃ। রস্বর্জং রসোহপাক্ত

পরং দৃষ্টা নিবর্ত্তে ॥ ৫৯ ॥ বততো হৃপি কৌত্তের পুরুষত্র বিপশ্চিত:। हेक्सियानि अमाथीनि हबस्य अप्रजः मनः ॥ ७०॥ जानि नक्सानि नःयमा युक আসীত মংপরঃ। বলে হি যন্তে ক্রিরাণি তক্ত প্রক্রা প্রতিষ্ঠিতা। ৬১॥ খ্যারতো বিষয়ান পুংস: সক্তেমুপজায়তে। সকাৎ সংজারতে কাম: কামাৎ ক্রোধোহভিকারতে ॥ ৬২ ॥ ক্রোধান্তবতি সমোহঃ সমোহাৎ স্বভিবিত্রম:। শ্বভিত্রংশাদ বৃদ্ধিনাশে। বৃদ্ধিনাশাৎ প্রণশ্বতি ॥ ৬০॥ বাগছেববিমৃকৈন্ত বিষয়:-নিজিবৈশ্চরন্। আত্মবলৈধিবিধেরাত্মা প্রদাদমধিগছতি ॥ ৬৪॥ প্রদাদে সর্ব্ধ-তু:থানাং হানিরক্রোপজায়তে। প্রসন্নচেত্রে। হাত বৃদ্ধি: পর্যাবতিষ্ঠতে । ৬৫॥ নান্তি বৃদ্ধিরযুক্ততা ন চাযুক্ততা ভাবনা। ন চাভাবরতঃ শান্তিরশান্তত কুতঃ স্থাম ॥ ৬৬॥ ' ইন্দ্রিদাণাং হি চরতাং ধন্মনোহত্বিধীরতে। তদক্ত হরতি প্রজ্ঞাং वाद्यन विभिनास्त्रिम ॥ ७१॥ उत्तान यस भशावादश निगृशीकानि नर्सनः। ইন্দ্রিশানীব্রিশার্থেন্সস্ত প্রকা প্রতিষ্ঠিত। । ৬৮॥ যা নিশা সর্বভূতানাং তন্তাং ব্দাপর্তি দংঘ্যা। যন্তাং জাগ্রতি ভূতানি সা নিশা পশ্রতো মুনে:॥ আপুর্যামাণ্মচলপ্রতিষ্ঠং, সমুদ্রমাপঃ প্রবিশক্তি বরৎ। তরং কামা বং প্রবিশক্তি সর্বের, স শান্তিমাপ্রোতি ন কামকামী ॥ १०॥ বিহার কামান্ ব: সর্বান্ পুমাংশ্চ-রতি নিঃস্পৃহ:॥ নির্মমো নিরহঙ্কার: দ শান্তিমধিগচ্ছতি॥ ৭১॥ এষা ত্রান্ধী श्विष्ठिः भार्व देननाः श्वाभा विष्वृञ्जि । विषाजामस्कारमध्या अञ्चानिर्वानः यक्षि॥ १२॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং
শ্রীমদ্ভগবদদীতাস্পনিবৎস্থ বন্ধবিভারাং ধোগশান্তে শ্রীকৃঞার্জ্বসংবাদে সাংখ্যবোগো নাম বিভীরো২ধ্যারঃ।

### ভূতীয়োহপ্যায়ঃ

আৰ্জুন উবাচ। জ্যায়সী চেৎ কর্মণতে মতা বৃদ্ধিজনার্দন। তৎ কিং কর্মণি ঘোরে মাং নিয়োজয়সি কেশব॥ ১॥ ব্যামিশ্রেণের বাক্যেন বৃদ্ধিং মোহয়সীর মে। তদেকং বদ নিশ্চিত্য বেন শ্রেয়েংহমাপুরাম্॥ ২॥

. এতগ্ৰাস্থাচ। লোকেংমিন্ খিবিধা নিষ্ঠা পুরা প্রোক্তা মন্ত্রান্ত। জ্ঞান-খোগেন সাখ্যানাং কর্মধোগেন যোগিনাম্॥ ৩॥ ন কর্মণামনারভালৈকর্মাং

পুক্ৰোহনুতে। ন চ সন্ন্যসনাদেব সিন্ধিং সমধিগছতি॥৪॥ ন হি কশ্চিৎ কণমপি জাতু ভিষ্ঠত্যকর্মকুৎ। কার্য্যতে হুবশ: কর্ম সর্কঃ প্রকৃতিকৈও গৈ: het কর্শেক্সিয়াণি সংৰম্য ব আত্তে মনদা শ্বরন্। ইব্সিয়ার্থান্ বিমূঢ়াত্মা মিৎ্যাচারঃ স উচ্যতে। 🖦 বিশ্বক্রিয়াণি মনসা নিরম্যারভতে হর্জুন। কর্মেজিরৈঃ কর্মবোগ-মস্ক্তঃ স বিশিব্যতে ॥ ৭॥ নিয়তং কুত্র কর্ম তং কর্ম জ্যায়ে। স্কর্মণ: । শরীর-ষাত্রাপি চ তে ন প্রসিধ্যেদকর্মণ: ॥ ৮॥ যজার্থাৎ কর্মণোহস্থত্ত লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ। তদর্থং কর্ম কৌন্তের মৃক্তসকঃ সমাচর ॥ ১॥ সহযক্ষাঃ প্রজাঃ স্বষ্টা পুরোবাচ প্রজাপতি:। অনেন প্রসবিষ্কধনেষ বোহজিইকামধুক্॥ >• । দেবান্ ভাবয়তানেন তে দেবা ভাবয়ত্ত বং। পরস্পরং ভাবয়ত্তঃ শ্রেয় পরমবাপ্তর ॥ ১১॥ ইটান্ভোগান্হি বো দেবা দাততে যঞ্জাবিতাঃ। তৈৰ্দ্ধভানপ্ৰদায়ৈভো়ো যো ভূঙ্ভে তেন এব সঃ॥১২॥ যজ্ঞশিষ্টাশিনঃ সস্তো মূচ্যন্তে সর্বাকিৰিবৈ:। ভূঞ্জতে তে ত্বং পাপ। যে পচন্ত্যাত্মকারণাৎ ॥১৩॥ অরাত্তবন্তি ভূতানি পর্জ্জভাদরস্ভব:। বজ্জাত্তবতি পর্জন্যো বজ্ঞ: কর্ম-সমৃত্বঃ 🛮 ১৪॥ কর্ম ব্রক্ষোভ্বং বিদ্ধি ব্রন্ধাক্ষরসমূত্ত্বম্ । তত্মাৎ সর্কাগতং ব্রন্ধ নিত্যং যজে প্রতিষ্ঠিতম্। ১৫॥ এবং প্রবর্ত্তিতং চক্রং নাম্বর্ত্তরতীহ বং। অংঘায়ুরিক্রিয়ারামো মোঘং পার্থ স জীবতি ॥১৬॥ বস্তাত্মরতিরেব স্তাদাঅতৃপ্তশ্চ মানবঃ। আব্যান্তেব চ সম্ভুটন্তক কাৰ্য্যংন বিশ্বতে॥১৭॥ নৈব তম্ম ক্রতেনার্থে। নাক্নতেনেহ কশ্চন। ন চাম্ম সর্বভূতেষু কশ্চিদর্থ-ব্যপাঞ্জঃ॥ ১৮॥ তত্মাদদক্তঃ দততং কার্য্যং কর্ম সমাচর। অদক্তো হাচরন্ কর্ম পরমাপ্নোতি প্রুষ: ॥ ১৯॥ কর্মণেব হি সংসিদ্ধিমান্থিত। জনকাদয়:। লোকসংগ্রহমেবাপি সম্পশ্যন্ কর্ত্ত্রমহ্ সি॥ ২০॥ ষদ্ধদাচরতি শ্রেষ্ঠন্তত্ত-দেবেতরো জন:। স বৎ প্রমাণং কুফতে লোকত্তদম্বর্ততে ॥২১॥ ন মে পার্থান্তি वित शहर न तर्राव्यः कां कू कर्मागु क क्रिकाः। सम तक्मी सूर्व विरक्ष सस्याः भार्ष সর্বশঃ॥২৩॥ উৎসাদেয়্রিমে লোকা ন কুর্যাং কর্ম চেদহন্। সহরক্ত চ কর্ত্ত। স্থামৃপহস্তামিনাঃ প্রকাঃ॥ ২৪॥ সক্তাঃ কর্মণ্যবিধাংসে। ধবা কুর্মন্তি ভারত। কুৰ্যাধিৰাংত্তথাস্ক্র-কিকার্তেশাকসংগ্রহম্॥ ২৫॥ ন বুদ্ধিভেদং क्रमद्भिष्कानाः कर्भमिनाम्। द्भावत्त्रः मर्क्षकर्भानि विवान् युकः স্মাচরন্॥২৬। প্রকৃতে: ক্রিয়মাণানি প্রবৈ: কর্মাণি সর্কাশ:। অহতার-বিষ্ঢ়াত্মা কণ্ডাহমিতি মস্ততে ॥২৭॥ ভত্তবিভ, মহাবাহে। গুণকর্মবিভাগরোঃ। खना खरनय वर्जन हेि सदा न मञ्जल ॥२৮॥ প্রকৃতে खन्मस्तृः मञ्जल खन्मस्य। जानक श्वाविता समान् क श्वावित्र वितान त्य । २२॥ स्रोत्र मर्सानि क मानि महाणाधा चात्र ज्ञा । निवामी निर्मारमा ख्वा व्याप विभाग खा । ज्ञा महारख विभाग खा । व्याप विभाग स्वावित्र । १००॥ त्य विश्व महारख महारख महारख ज्ञान विद्या । १००॥ त्य व्याप विश्व महारख महारख व्याप विश्व महारख व्याप विद्या । भ्रावित्र व्याप विद्या । भ्रावित्र व्याप विद्या । भ्रावित्र व्याप विद्या विद्या । भ्रावित्र व्याप विद्या विद्या । १००॥ हिस्स विद्या । १००॥ विद्या विद्या । १००॥ विद्या विद्या । १००॥ विद्या विश्व । १००॥ विद्या विद्या । १००॥ विद्या । १००॥

অৰ্জুন উবাচ। অথ কেন প্ৰযুক্তোহয়ং পাপঞ্চরতি পুরুষঃ। অনিচ্ছরপি বাফের বলাদিব নিয়োজিতঃ॥ ৩৬

প্রী ভগবানু বাচ। কাম এব জোধ এব রক্ষোগুণ সমূত্তব:। মহাশনো
মহাপাপা। বিদ্যোদাহ বৈরিণম্ ॥ ৩৭ ॥ ধ্যেনাবিষতে বহির্বণাদর্শে। মনেন
চ। যথোবেনাবুতো গর্ভথথা তেনেদমার্তম্ ॥ ৩৮ ॥ আবৃতং জ্ঞানমেতেন
জ্ঞানিনো নিত্যবৈরিণা। কাম রূপেণ কৌস্তের ফুল্লুরেণানলেন চ ॥ ৩৯ ॥
ইক্রিয়াণি মনোবৃদ্ধির জ্ঞাধিষ্ঠান মূচ্যতে। এতৈবিমোহ মতেয়ব জ্ঞান মাবৃত্ত্য
দেহিনম্ ॥ ৪০ ॥ তক্ষান্তমিন্তি মাণাদে নিষম্য ভরতর্বভ । পাপানং প্রশৃহত্তি হেলং জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনম্ ॥ ৪১ ॥ ইক্রিয়াণি পরাণ্যাহরিন্তিরেভাঃ পরং
মনার পরা বৃদ্ধির্যে। বৃদ্ধঃ পরতন্ত্র সং ॥ ৪২ ॥ এবং বৃদ্ধঃ পরং
বৃদ্ধা সংস্কৃত্যান্থান মাত্যনা। কহি শক্রং মহাবাহো কাম রূপং ত্রাসদম্ ॥ ৪৩ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীমপর্কবি
শ্রীমন্তগবদ্দীতাস্পনিষৎস্ত ব্রহ্মবিদ্যারাং বোপশাস্থে শ্রীকৃষণাব্দুনসংবাদে কর্মবোগো নাম ততীয়োহধ্যারঃ।

### চভুৰোহ্ব্যায়ঃ

প্রীভগবালুবাচ। ইমং বিবস্থতে বোগং প্রোক্তবানহনব্যরম্। বিবস্থান্ মনবে প্রাহ মন্ত্রিক্ষ্বাকবেহরবার। ১ এবং পরস্পরাপ্রাপ্তিনিমং রাজ্যব্যো তৃতীয়—২৩ বিছ:। স কালেনেহ মহতা বোগো নট: পরস্তপ ॥২॥ স এবারং মরা তেহদ্য যোগ: প্রোক্ত: প্রাতন:। ভক্তোহসি মে সধা চেতি রহস্ত: হেতত্ত্রম্ ॥ এ। অর্জুন উবাচ। অপরং ভবতো জন্ম পরং জন্ম বিবস্থত:। কথমেত-বিজ্ঞানীয়াং ম্যাদে) প্রোক্তবানিতি ॥ ৪ ॥

🕮 ভগবামুবাচ। বহুনি মে ব্যতীতানি জন্মানি তব চার্চ্ছন। তাক্তহং (यह नर्कािन न पः दिथ भवस्वभ ॥ ६॥ प्रद्याशिन नवतावाचा जुडानावी-বরোহপি সন্। প্রকৃতিং স্বামধিষ্ঠার সম্ভবাষ্যাত্মধাররা॥৬॥ হি ধর্মন্ত গানির্ভবতি ভারত। অভ্যুখানমধর্মন্ত তদাত্মানং স্ঞা-ম্যুহ্ম ॥ १ ॥ পরিজাণায় সাধুনাং বিনাশার চ ছৃষ্ণতাম্। ধর্মসংস্থাপ-নার্থায় সম্ভবামি যুগে যুগে । ৮ । জন্ম কর্ম চ মে দিব্যমেবং বে। বেন্তি তত্তঃ। ত্যক্তা দেহং পুনর্জন্ম নৈতি মামেতি সোহর্জুন॥ ১॥ বীতরাগভয়ক্রোধা মন্ময়া মামুপাশ্রিতা:। বহবো জ্ঞানতপদা পূতা মন্তাব-মাগতাঃ॥ ১০॥ বে বথা মাং প্রপন্তকে তাংস্তথৈব ভকাম্যহন্। মন বত্মছি-বর্ত্তভে মহুয়াঃ পার্থ সর্বশঃ ॥ ১১॥ কাব্দেন্তঃ কর্মণাং সিদ্ধিং বন্ধন্ত ইহ দেবতাঃ। किथाः हि माञ्चरव लाटक निषिक्षंत्रिक कर्षका॥ ३२॥ हाकुर्वर्गाः महा स्रहेः গুণকর্মবিভাগশঃ। তম্ভ কর্তারমপি মাং বিদ্যাকর্তারমব্যরম্। ১৩॥ ন মাং क्षांनि निम्मेखि न त्म क्ष्मकृत्न म्मुरा। हेिज माः यार्डिकानािज क्षांखिन স বংগতে ॥ ১৪ ॥ এবং জাতা কৃতং কর্ম পূর্বৈরপি মৃমুকুভি:। কৃক কর্মেব তত্মাত্তং পূর্বৈঃ পূর্বভরং কৃতম্॥ ১৫॥ কিং কর্ম কিমকর্মেভি কবরোহপাত্র মোহিতা:। তত্তে কর্ম প্রবক্যামি যক্তাম্বা মোক্যসেহতভাৎ॥১৬॥ কৰ্মণো হুপি বোদ্ধৰ্যঃ বোদ্ধব্যঞ্চ বিকৰ্মণঃ। অকৰ্মণশ্চ বোদ্ধৰ্যুঃ গ্ৰহনা কৰ্মণো গতিঃ । ১৭॥ কর্মণাকর্ম যং পভোদকর্মণি চ কর্ম যং। স বুদ্ধিমান মহয়ের স যক্তঃ কুৎত্মকর্মাকুৎ ॥ ১৮ ॥ যক্ত সর্বে সমারম্ভাঃ কামসকল্পবর্জিতাঃ। আনাগ্রি-দম্ভক্মাণং ভমাতঃ পশ্তিভং বুধা: ॥ ১৯ ॥ ত্যক্তা কৰ্মফলাসকং নিভ্যত্থো নিরাভায়:। কর্মণ্যভিপ্রব্রভাহিপ নৈব কিঞ্চিৎ করোতি স:॥ २०॥ নিরাশী-র্যত্তিরাত্মা ত্যক্তসর্মপরিগ্রহ:। শারীরং কেবলং কর্ম কুর্মন্নাপ্লোতি किविवम् ॥ २> ॥ वनुव्हानाज्यस्ति वन्याजीत्जा विमन्त्रतः । त्रमः निकावनित्को চ কুত্বাপি ন নিবধ্যতে । ২২ ॥ গভসম্ব সুক্তব্য জানাবস্থিতচেতস:। বজায়া-চরতঃ কর্ম সমগ্রং প্রবিণীয়তে॥ ২০॥ ব্রহ্মার্পণং ব্রহ্ম হবিব্রহ্মারো इन्जा। এইশ্বর তেন গস্তব্যং এক্ষকর্মসমাধিনা ॥ ২৪ ॥ দৈবমেবাপরে বঞ্জং

বোগিন: পর্গাদতে। একায়াবপরে বজাং বজেনৈবোপজ্হতি । ২৫ ॥ त्यांजारीनी लिवांगात्ना मःवयांविव क्रिक्ति । भवांरीन विववांनना है लिवांविव জুহ্বতি ॥২৬॥ সর্বাণী দ্রিন্নকর্মাণি প্রাণকর্মাণি চাপরে। আত্মসংবদ-বোগাগ্নে कांनमीभिट्छ॥ २१॥ ज्यावकांच्यभावका वागवकांच्यभावतः। স্বাধ্যায়জ্ঞানবজ্ঞাশ্চ যতমঃ সংশিতব্ৰতাঃ॥ ২৮॥ অপানে জুহ্বতি প্ৰাণং প্রাবেহপানং তথাপরে। প্রাণাপানগতী রুদ্ধা প্রাণাদামপ্রারণা:। অপরে নিমতাহারা: প্রাণান প্রাণেষু জুহ্বতি॥ ২৯॥ সর্কেংপ্যেতে বজ্ঞবিদে বজ্ঞ-ক্ষরিতকল্মবা:। যজ্ঞশিষ্টামৃতভূজো যাস্তি ব্ৰহ্ম সনাতনম্॥ ৩০ ॥ নায়ং লোকো-হন্তাৰজ্ঞত কুতোহন্য: কুরুসন্তম ॥ ৩১ ॥ এবং বছবিধা ৰজ্ঞা বিভন্তা বন্ধণো भूरथ। कंपकान विकि जान नर्सारनवः खाचा विस्मान्तरम ॥ ०२ ॥ ट्यान সমাপ্যতে ॥ ৩০ ॥ তি ছিল্লি প্রশিপাতেন পরিপ্রশ্নেন সেবয়া । উপদেক্ষ্যন্তি एक कानः छानिनछञ्जलिनः ॥ ७८ ॥ यक् छात्रा न श्रनामाहस्यदः याचिनः পাওব। যেন ভূতান্যশেষেণ দ্রক্ষ্যস্থাত্মন্যথো ময়ি॥ ৩৫॥ অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সর্ব্বেভ্যঃ পাপক্বত্তমঃ। সর্ব্বং জ্ঞানপ্লবেনৈব বুজিনং সম্বরিয়সি ॥ 🤒 ॥ যথৈধাংদি সমিদ্ধোহগ্নিভিন্মদাৎ কুরুতেহজ্জুন। জ্ঞানাগ্নি: সর্বকর্মাণি ভন্মসাৎ কুকতে তথা॥৩৭॥ ন হি জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্রমিহ বিশ্বতে। তৎ শ্বয়ং যোগদংসিদ্ধ: কালেনাত্মনি বিন্দতি ॥ ৩৮ ॥ আদ্ধাবান্ প্রভতে জ্ঞানং তৎপরঃ সংযতে জ্রিয়:। জ্ঞানং লক্ষা পরাং শান্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি। ৩৯। অঞ্চা-শ্রদ্ধানক সংশয়াত্মা বিন্যুতি। নায়ং **লো**কোহত্তি ন পরো ন স্থ্য मः भवाषानः ॥ ८० ॥ दर्गागमन्ना खर्क्यानः । छानमञ्ज्यानः ॥ ४० ॥ दर्गागमन्त्र । छानमञ्जूषानः ॥ ४० ॥ दर्गागमन्त्र । কর্মাণি নিবপ্ততি ধনঞ্জন ৪১॥ তত্মাদক্ষানসম্ভতং হৃৎস্থ জ্ঞানাসিনাত্মন:। ছিবৈনং সংশবং যোগমাতিষ্ঠোত্তির্গ ভারত ॥ ৪২ ॥

ইতি মহাভারতে শতদাহস্রাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং ভীম্মপর্কাণ শ্রীমদ্ভগবদ্গীভাস্পনিষৎস্থ ব্রহ্মবিছায়াং যোগশাস্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জ্জ ন-সংবাদে জ্ঞানবিভাগ্যোগো নাম চতুর্বোহণ্যায়ঃ॥ ৪।

### পঞ্চমাহপ্রায়

অর্জুন উবাচ। সন্ন্যাসং কর্মণাং ক্লফ পুনর্যোগঞ্চ শংসসি। যদ্ভের এতরোরেকং তম্মে ক্রহি স্থনিশ্চিতম্ ॥ ১॥

🕮ভগৰাত্বাচ। সন্ন্যাস: কর্মবোগন্ড নিংশ্রেমকরাবুভৌ। তয়েছি কর্মদল্লাদাৎ কর্মধোগো বিশিষ্যতে॥২॥ ভেষ্ণ দ নিতাদল্লাদী যো ন ৰেষ্ট ন কাজকতি। নিৰ্মলো হি মহাবাহো স্থাং বন্ধাৎ প্ৰমূচ্যতে॥৩॥ नाच्यारवार्यो পृथेयानाः প্রবদন্তি न পণ্ডিতাः। একমপ্যান্থিতঃ সম্যগু-ভরোবিন্দতে ফলমু॥ ও॥ বং দাভিন্তঃ প্রাপ্যতে স্থানং তদ্ বোগৈরপি প্ৰমাতে। একং সাঙ্খাঞ্চ বোগঞ্চ যঃ পশুতি স পশুতি ॥ ৫॥ সন্মাসস্ত মহা-ৰাহো ত্রংখনাপ্ত মহোগতঃ। যোগষুক্তো মূনিব স্থান চিরেণাধিগছতে ॥ ৬ ॥ ষোগবুক্তো বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিভেন্দ্রিঃ। সর্বভৃতাত্ম-ভৃতাত্মা কুর্বরপি ন লিপ্যতে ॥ १॥ নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি যুক্তো মক্তেত তত্ত্ববিং। পশুন শুখন স্পৃশন্ জিললখন পজন্ স্পন্ খদন্॥৮॥ প্রলপন্ বিস্জন্ গৃহুল, ঝিষলিমিবছপি। ইক্সিগাণীক্রিবার্থেগু বর্ত্তন্ত ইতি ধার্যন্ ॥ ৯॥ ব্রহ্মণাধায় কর্মাণি সকং ত্যক্তা করোতি য:। লিপ্যতে ন স পাপেন পদ্মপত্রমিবান্তসা ॥১০॥ কারেন মনসা বুদ্ধা কেবলৈরি ক্রিরিপের পি। বোগিন: কর্ম কুর্মন্তি সকং ত্যক্তাত্মভদ্ধরে ॥১:॥ बुक्कः कर्यात्नः ठाकः। भाखिमात्यां ठि तेनिष्ठं नीम्। अवुकः कामकाद्वि करन সজে নিবণ্যতে ॥ ১২ ॥ সর্বা কর্মাণি মনসা সন্মস্তান্তে সুথং বৃদী। नवबारत भूरत रमहो रेनव कूर्वत कात्रप्रन्॥ ১०॥ न कर्जुषः म क्यांनि লোকস্ত স্তৃত্তি প্রভূ:। ন কর্মফলসংযোগং স্বভাবন্ত প্রবর্ত্ততে ॥ ১৪ ॥ নাদত্তে কন্সচিৎ পাপং ন চৈব স্কৃতং বিভূ:। অজ্ঞানেনাবৃতং জ্ঞানং তেন মুক্তি জন্তব: ॥ ১৫ ॥ জানেন তু তদজানং বেবাং নাশিতমাত্মন:। তেবা মাদিত্যবজ্ঞানং প্রকাশরতি তৎ পরম্॥ ১৬॥ তদ্বুদ্ধরতদাত্মানত রিঠাতৎ-পরায়ণা:। গছস্ত্যপুনরাবৃত্তিং জ্ঞাননিধৃতিকল্মধা:॥১৭॥ বিভাবিনয়সম্পন্নে ব্ৰাহ্মণে গৰি হক্তিনি। শুনি চৈৰ খপাকে চপণ্ডিতাঃ সমদৰ্শিনঃ॥১৮॥ हैटेश्व टेडिंबिड: मटर्गा दिवार माट्या श्विष्ठर मनः। निट्छांदर हि ममर उक्त তস্বাদ বন্ধণি তে হিতা: । ১৯। ন প্রহয়েৎ প্রিরং প্রাণ্য নোধিকেৎ প্রাণ্য চাপ্রিরম্। স্থিরবৃদ্ধিরসংমূঢ়ো বন্ধবিশ্ বন্ধণি স্থিতঃ ॥ ২০ ॥ বাহস্পর্শেষসক্ষাত্ম বিৰুক্তাবনি য**ুক্**ণ্।স ভ্ৰন্নবোগযুক্তাবা সুধ্য লব্দন্তে ॥ ২১ ॥ যে হি সংস্পৰ্শকা ভোগা হঃধবোনর এব তে। আছন্তবন্তঃ কোন্তের ন তেবু রমতে

वृधः॥ २२॥ भटकाठोटेह्य यः त्नांकृः श्वाक् भत्नोत्रविदमाक्षणाः। काम-क्रांतिष्ठदार त्वारं म युक्तः म सूथौ नतः॥२०॥ त्वार्यःस्वार्यःश्वर्यात्रामस्वयात्व-क्रिंतिष्ठां स्वार्यः क्षीनकत्रयाः। हिन्नदेषधा यठां स्वानः मस्व्वृठ्डिट्ड तृञाः॥२०॥ कामत्काधितयुक्तामाः यञ्जेनाः यठत्विमाः। व्यञ्जिताः मस्ववृठ्डिट्ड तृञाः॥२०॥ कामत्काधितयुक्तामाः यञ्जेनाः यठत्विमाः। व्यञ्जित्वां अक्तिकां क्रिंतिष्ठां स्वान्यः। व्यञ्जेनाः यञ्चित्रः क्रिंतिः।। याद्यञ्जित्वाद्विन्यः। स्वान्यः। विश्वत्वञ्चाद्वाद्याः। याद्यञ्चित्रः। विश्वत्वञ्चाद्याद्याः। याद्यञ्चित्रः व्यञ्च्याः। विश्वत्वञ्चाद्याद्याद्यः। स्वानः मस्व व्यञ्च्याः। विश्वत्वञ्चाद्याद्याद्याद्याः। स्वानः व्यञ्च्यानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्ययानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्ययानाः व्यञ्ययानाः व्यञ्ययानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्यययानाः व्यञ्ञयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानः व्यञ्चयानाः व्यञ्चयानाः व्यञ्ययः व्यञ्चयानः व्यञ्ञयः व्यञ्ययः व्यञ्ययः व्यञ्चयः व्यञ्चयः व्यञ्ययः व्यञ

ইতি শ্রীমহা ভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীমপর্বাণ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাস্পনিষৎস্থ বন্ধবিতারাং বোগশাস্ত্রে শ্রীক্ষণাজ্ব-সংবাদে কর্মসন্ত্রাসবোগো নাম পঞ্চমোহধ্যারঃ।

#### ষট্টোইধ্যায়ঃ

শ্রীভগবাস্থাচ। অনাশ্রিতঃ কর্মফলং কার্য্য কর্ম্ম করোতি য়:। স্ব সন্থাসী চ বোগী চ ন নির্মান নিজিয়:॥১॥ ষং সন্থাসমিতি প্রাহ্র্যোগ তথৰ বিদ্ধি পাণ্ডব। ন অসন্থান্ত সকলে। বোগী ভবতি কশ্চন॥২॥ আক্রুক্তমাম্নের্যাগং কর্ম কারণমূচ্যতে। বোগারুচ্নত তিন্তব শন্ধ কারণমূচ্যতে॥৩॥ বলা হি নেক্রিয়ার্থের ন কর্মবর্ত্তেও। সর্ব্যক্তরে শালিম্ব আ্থানো বন্ধ্যাত্তিও ॥৪॥ উন্বেলাখনাখ্যানং নাস্থানমবসাদয়েও। আব্রের আ্থানো বন্ধ্যাত্তিও ॥৪॥ উন্বেলাখনাখ্যানং নাস্থানমবসাদয়েও। আব্রের আ্থানো বন্ধ্যাত্তিও ॥৪॥ বন্ধ্যাত্ত্বালা বন্ধ্যাত্ত্বালা বিশ্বালান্ত পর্মাত্তা সনাস্থিত। শীতেভিক্তম্বত্তবের্ তথা মানাপমানয়োঃ॥৭॥ জ্ঞানবিজ্ঞানভ্যাত্তাত্তা বিশিতেজিয়ঃ। যুক্ত ইত্যুচ্যতে বোগী সমলোট্রাশ্রন্থান্ত। শাল্ স্থাত্তাত্তা বিশিত্তিভিল্প। ব্যাণী মুঞ্জীত সভতনান্তানং রহসি হিতঃ। একাকী বভচিত্তায়া নিরাণীরপরিগ্রহঃ॥১০॥ ভাতেনীচং চেলাজিনকুশোত্তবম্॥১১॥ ভাত্তিকাঞ্রং

ষনঃ কুদা ষ্ডচিভেজিরজিরঃ। উপবিশ্রাসনে যুগ্যাদ্ বোগমান্দ্রবিভর্মে ॥ ১২ ॥ नवः कात्रनिद्वाञीवः थात्रव्रव्राचनः व्हितः। नटव्यकः नानिकाशः पः निमन्तान-বলোকয়ন ॥ ১৩ ॥ প্রশান্তাত্মা বিগভভীত্র শ্বচারিত্রতে স্থিতঃ । মনঃ সংবম্য ৰচ্চিত্তো যুক্ত আসীত মৎপর:॥ ১৪॥ যুঞ্জেবং সদাস্থানং যোগী নিয়তমানস:। শান্তিং নির্বাণপর্যাং মৎসংস্থামধিগ্রুতি ॥ ১৫ ॥ নাত্যশ্রতন্ত যোগেছিতি ন চৈকান্তমনশ্ৰত:। ন চাতিস্বপ্নশীলস্ত জাগ্ৰতো নৈব ठांक्न ॥ ३७॥ যুক্তাহারবিহারত যুক্তচেষ্টত কর্মস্থ। যুক্তস্বপ্লাববোধত বোগো ভবতি তৃঃখহা ॥ ১৭ ॥ ষদা বিনিয়তং চিন্তমান্মক্রেবাবভিষ্ঠতে । সর্বকামেভ্যো যুক্ত ইত্যুচ্যতে তদা ॥ ১৮॥ যথা দীপো নিবাতস্থো নেকতে সোপমা স্বভা। যোগিনো ষতচিত্তস্ত যুঞ্জতো বোগমার্থন:॥১৯॥ **ठिखः निक्रकः योशस्यवद्या**। ষত্ৰ **চৈবাত্মনাত্মানং** পভারাত্মনি তুম্বতি ॥ ২০॥ সুথমাত্যস্তিকং বত্তদ্ বুদ্ধিগ্রাহ্মতীক্রিয়ন্। বেভি যতা ন চৈবায়ং স্থিত-চলতি তত্ত্বতঃ ॥ ২১ ॥ মং লক্ষা চাপরং লাভং মন্ততে নাধিকং ততঃ। ধন্মিন্ স্থিতো ন ঘুংখেন গুরুণাণি বিচাল্যতে ॥ ২২ ॥ তং विष्णाम् पःथमःरयागविरत्रानः स्वानमः खिठम्। म निकटत्रन स्वांकर्त्या ষোগোহনির্বিপ্রচেত্রসা॥ ২৩ ॥ সংকল্পপ্রতবান্ কামাংস্তাক্তা সর্বানশেষতঃ। মনলৈবেন্দ্রিয়ামং বিনিরমা সমস্ততঃ ॥ ২৪ ॥ শনৈঃ শনৈরুপরমেদ্ বুদ্ধা আত্মসংস্থ মন: কুহা ন কিঞ্চিদ্পি চিন্তয়েৎ ॥ ২৫ ॥ ধৃতিগৃহী তয়। । ৰতো ৰতো নিশ্চলতি মনশ্চঞ্লমন্থিরম্। ততন্ততো নির্মায়তদান্মন্যের বশং নয়েৎ॥ ২৬॥ প্রশান্তমনসং হেলং যোগিনং স্থথমূত্তমম্। উপৈতি শাস্ত-রজদং ব্রহ্মভূতমকল্মধম্॥ ২৭॥ যুঞ্জেবং দলাআনং যোগী বিগতকল্ময়:। স্বংশন বন্ধদংম্পাশমত্যন্তং স্থমশুতে ॥ ২৮ ॥ সর্বভৃতস্থাত্মানং সর্বভৃতানি চাম্মনি। ঈক্ষতে বোগযুক্তামা সর্বত সমদর্শনঃ । ২৯ ॥ যো মাং পশুতি সর্বত্তি সর্বাঞ্চ বিষ্ণাতি। তত্তাহং ন প্রণ্যামি স্চ মেন প্রণ্যাতি॥ ৩ ।। সর্বভৃতস্থিতং বো মাং ভলত্যেকত্বমাস্থিত:। সর্বাধা বর্ত্তমানোহপি স বোগী মির বর্ততে ॥ ৩১ ॥ আংখ্যোপম্যেন সর্বত্ত সমং পশুতি বোহর্জুন। সুথং বা ৰদি বা তৃঃখং স যোগী পরমো মতঃ । ৩২ ॥

জর্ম উবাচ। বোহরং বোগন্ধরা প্রোক্তঃ দাম্যেন মধুস্দন। একস্তাহং

ন পশ্রামি চঞ্চন্দ্রাং স্থিতিং স্থিরাম্। ৩০। চঞ্চনং হি মনঃ কৃষ্ণ প্রমাধি

বলবদ্দৃদৃম্। তস্তাহং নিগ্রন্থ বারোরিব স্তুক্রম্। ৩৪।

প্রীতগৰাত্বাচ। অসংশয়ং মহাবাহো মনো তুর্নিগ্রহং চলম্। অভ্যাদেন তৃ কৌন্তেয় বৈরাগ্যেণ চ গৃহতে॥ ৩৫॥ অসংবতান্থনা বোগো ত্তাপ-ইতি মে মতিঃ। বঙ্গাত্মনা তৃ বততা শক্যোহবাধ্য মুপায়তঃ॥ ৩৬॥

অর্জুন উবাচ। অবতিঃ প্রদ্ধানোপেতো বোগাচ্চলিতমানদঃ। অপ্রাণ্য বোগসংসিদ্ধিং কাং গভিং কৃষ্ণ গছভি॥৩৭॥ কচিলোভরবিত্রইন্ছিরাত্রমিব নগুভি। অপ্রভিটো মহাবাহো বিমৃঢ়ো ব্রহ্মণঃ পথি॥৩৮॥ এত্রে সংশবং কৃষ্ণ ছেভ,মহঁলুশেবভঃ। ত্বালঃ সংশব্দ্যান্ত ছেভা ন হ্যপপ্রভে॥৩৯॥

প্রীভগবাহ্বাচ। পার্ধ নৈবেই নামুত্র বিনাশস্তক্ত বিছতে। ন হি কল্যাণরুৎ কল্ডিক্ পৃথিং তাত গছতি ॥ ৪০ ॥ প্রাণ্য পৃথ্যরুতাং লোকাছবিছা শাষতীং সনাং। শুচীনাং শ্রীনতাং গেহে যোগত্রটোইভিন্ধারতে ॥ ৪১ ॥ অথবা বোগিনামেব কুলে ভবতি ধীনতাম্। এভদ্ধি তুর্গভতরং লোকে ক্রম যদীদৃশম্ ॥ ৪২ ॥ তত্র তং বৃদ্ধিনংবাগং লভতে পৌর্বদেহিকম্। যততে চততো ভ্রঃ সংসিদ্ধে কুলনন্দন ॥ ৪০ ॥ প্র্রাভ্যাদেন তেনৈব হ্রিরতে হ্ববশোহপি সং। ক্রিজাসুরপি বোগশু শক্রমাতিবর্ত্ততে ॥ ৪৪ ॥ প্রস্থাদ্ বতনানন্দ্র বোগী সংশুদ্ধকিরিয়ঃ। অনেকক্রমসংসিদ্ধততে। বাভি পরাং গতিম্ ॥ ৪৫ ॥ তপন্বিভ্যোহপিকো বোগী ভবার্জ্ব ॥ ৪৬ ॥ বোগিনামপি সর্ব্বেরাং নদ্গতেনান্তরাত্বনা। প্রদাব্য ভবার্জ্ব ॥ ৪৬ ॥ বোগিনামপি সর্ব্বেরাং নদ্গতেনান্তরাত্বনা। প্রদাব্য ভবার্ক্ত বো মাং স মে শৃক্ততমো মতঃ ॥ ৪৭ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্রাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং ভীমপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাম্পনিষ্থ ব্রশ্ববিভায়াং বোগশাল্পে শ্রীকৃষ্ণার্জ্বন-সংবাদে অধ্যাত্মবোগো নাম ষ্ঠোইধ্যায়ঃ।

#### সপ্তমোহপ্যারঃ

প্রীভগবাস্থাচ। মধ্যাসক্তমনা: পার্থ বোগং যুক্তমদাপ্রয়:। অসংশবং
সমগ্রং মাং বধা জ্ঞান্ত তি তক্ত্রু ॥ ১ ॥ জ্ঞানং তেহহং সবিজ্ঞানমিদং বক্ষাম্যশেষত:। বস্ক্রারা নেহ ভূরোহন্তক্সাতব্যমবশিয়তে ॥ ২ ॥ মহুয়াণাং
সহস্রের্ কশ্চিদ্ বততি দিররে । বততামিদি দিরানাং কশ্চিমাং বেভি
তত্তত:॥ ৩ ॥ ভূমিরাপোহনলো বায়ুং ধং মনো বৃদ্ধিরেব চ । অহকার
ইতীরং মে ভিন্না প্রকৃতিরইধা ॥ ৪ ॥ অপ্রেরমিত্ত্তাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে

ভূতানি সর্বাণীত্যুপধারয়। অহং কুৎকল্ড ভগতঃ প্রভবঃ প্রলয়ন্তথা 🏾 ৮॥ মত্তঃ পরতরং নাক্তৎ কিঞ্চিদন্তি ধনঞ্জর। মরি সর্কমিদং প্রোতং ক্ততে মণিগলা ইব॥ १॥ রসোহহমণ্স কৌত্তের প্রভান্দি শশিক্র্যারোঃ। প্রণবঃ সর্ক্ বেদেৰু শব্দ থে পৌক্ষং ন্ৰু॥৮॥ পুণ্যো গন্ধঃ পৃথিব্যাঞ্চ ভেক্ষণাত্ৰি বিভাবসৌ। জীবনং সর্বভৃতেষু তপশ্চান্দি তপন্বিষু॥ ৯॥ বীজং মাং সর্ব-ভূতানাং বিদ্ধি পার্থ স্নাতন্ম। বৃদ্ধিবৃদ্ধিমতামশ্বি তেজভেদ্বিনা-মহম্॥ ১ • ॥ বলং বলবতামশ্বি কামরাগবিবৰ্জিতম্। ধর্মাবিরুদ্ধো ভূতেরু কামোহন্দি ভরতর্বভ ॥ ১১ ॥ বে চৈব সাত্ত্বিকা ভাবা রাজসান্তামুসান্চ বে। মন্ত এবেতি তান বিদ্ধি ন ছহং তেষু তে মরি॥ ১২॥ বিভিগু পদরৈ ভাবৈ-ব্ৰেভি: সর্ব্বমিদং ব্রগৎ। মোহিতং নাভিজানাতি মামেভ্য: পরমব্যরম্॥ ১৩॥ দৈবী হেলা গুণমন্ত্ৰী মম মান্ত্ৰা ছুৱত্যন্ত্ৰা। মামেব যে প্ৰপ্ৰছন্ত মান্ত্ৰামেতাং ভরত্তি তে॥ ১৪॥ ন মাং হৃত্বতিনো মূঢ়াং প্রপত্তত্তে নরাধমাঃ। মারয়া-প্রতভানা আত্মরং ভাবমাপ্রিতা: ॥ ১৫ ৪ চতুর্বিধা ভক্তরে মাং কনা: সুকৃতিনোহৰ্জুন। আর্ডো বিক্সাস্থ্রপথিী জানী চ ভরতর্বভ ॥১৬॥ তেবাং জানী নিতাযুক্ত একভজিবিশিয়তে। প্রিয়ো হি জানিনোংতার্থমহং স চমষ প্রির: ॥ ১৭ ॥ উদারা: দর্ব এবৈতে জ্ঞানী তাত্ত্বৈব মে মতম্। আস্থিতঃ স হি যুক্তাত্মা মামেবাস্থ্রমাং গতিম্॥ ১৮॥ বহুনাং জন্মনামন্তে জ্ঞানবান মাং প্রপদ্মতে। বাস্থদেবঃ সর্কমিতি স মহাত্মা সুত্র্র ভ:॥১৯॥ कारियदेखक् उक्कानाः अभग्रदेशस्यकाः। उर उर निष्ठममाश्रीत्र अङ्गा নিরতা: স্বরা॥ ২০ ॥ বো বো বাং বাং তনুং ভক্ত: প্রেরার্চিতৃমিছতি। তত্ত তত্তাচলাং প্রকাং তামেব বিদ্ধান্যহম্ ॥ ২১ ॥ স তরা প্রকল্প তা-वागनशैर्टि । न जट ह जडः कामान्यदेवर विहिजान् हि जान्॥ २२॥ অন্তবভু ফলং তেষাং ভত্তৰতাল্লমেধসাম্। দেবান্ দেবৰলো ৰাভি মন্তকা ৰান্তি মামপি॥২৩॥ অব্যক্তং ব্যক্তিমাপন্নং মন্তব্তে মামবৃদ্ধরঃ। পরং ভাবমুলানভো মুমাব্যুলমুভুলমু ॥ ২৪ ॥ নাহং প্রকাশ: সর্বস্ত বোগমালা-স্মাবৃতঃ। মূঢ়েছিয়ং নাভিজানাতি লোকো মামজমব্যরম্॥ ১৫॥ বেলাহং সমতীতানি বর্ত্তমানানি চার্জ্জ্ন। ভবিয়াণি চ ভূতানি মান্ত বেদ ন नत्याहर नर्त गांखि **পর্ম্ভপ ॥ २**९ ॥ द्यवार चस्त्रभंकर भांभर क्यांनार

পূণ্যকর্মণান্। তে বন্দমোহনির্জা ভজত্তে মাং দৃঢ়ব্রতা:॥ ২৮॥ জরা-মরণমোক্ষার মামাপ্রিত্য বততি বে। তে বন্ধ তবিচ্: রুৎসমধ্যাত্মং কর্ম চাধিলম্॥ ২৯॥ সাধিভূতাধিলৈবং মাং সাধিষ্যঞ্জক বে বিচ্:। প্রাধান-কালেহপি চ মাং তে বিত্রুজিচেতসং॥ ৩০॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্রাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীম্মপর্মণ শ্রীমন্তগবন্দীতাস্পনিষৎস্থ ব্রহ্মবিদ্যারাং বোগশান্ত্রে শ্রীকৃষ্ণ:র্জুনসংবাদে জ্ঞানযোগো নাম সপ্তমোধ্যারঃ।

### অষ্ট্রসোহপ্র্যায়ঃ

অর্জুন উবাচ। किন্তদ্ ব্রহ্ম কিমধ্যাত্মং কিং কর্ম পুরুষোত্তম। অধি-ভূতঞ্ কিং প্রোক্তমধিলৈবং কিম্চাতে ॥১॥ অধিষজ্ঞঃ কথং কোহত্ত দেহেংস্মিমধুস্থলন। প্রস্নাণকালে চ কথং জ্ঞেকোখসি নিয়ভাত্মভিঃ॥২॥ ্বভগবাসুবাচ। অক্ষরং প্রমং ব্রশ্ব স্বভাবেহিধ্যাত্মমূচ্যতে। ভূত-ভাবোদ্ভবকরো বিদর্গ: কর্মদংজ্ঞিত: । ৩॥ অধিভূতং করে। ভাব: পুরু-वक्ति थिटेनवज्ञमः। अधिवरळा २ इटबवां ज ८ नट्ट एन इज्जारवन ॥ ८ ॥ কালে চ মামেব শ্বরন্ মৃক্তৃ। কলেবরম্। যঃ প্রয়াতি স মন্তাবং বাতি নান্ত্যত্র সংশয়:॥ ৫॥ যং যং বাপি স্মরন্ ভাবং ত্যুক্কতান্তে কলেবরম্। তং তমেবৈতি কৌস্তের দলা তদ্ভাবভাবিত:। ৬॥ তন্মাৎ সর্কেষ্ কালেব্ মামকুষর যুধ্য চ। মধ্যপিতিমনোবুদ্ধির্মামেবৈয়ক্তসংশয়: ॥ १ ॥ অভ্যাস-বোগযুক্তেন চেত্রগা নাজগামিনা। পরমং পুরুষং দিব্যং যাতি পার্থামু-চিন্তরন ॥ ৮ ॥ কবিং পুরাণমুখাসিতারমণোরণীরাংসমুস্থরেদ্বঃ ॥ সর্বস্থ ধাতারমচিন্তারপমাণিতাবর্ণং তমসঃ পরস্তাৎ ॥ ১॥ প্রশ্নাণকালে মনসা-२हरनन, छक्का। यूटका यांगवरनन देहव। ऋरवार्ष्यका श्रांगमारवर्ष ममाक्, न जः श्रदः श्रूकवब्रेशिक निराम्॥ >०॥ यनकादः त्वनित्ना वनस्ति, विमस्ति वम् वज्रत्वा वौज्ञांगाः। विष्ठ्रत्वा उम्मत्र्याः त्रत्वि, ज्रत्व भमः मः श्रद्धन व्यवत्का ॥ ३३ ॥ मर्खात्रांनि मः बमा मत्ना कृषि निक्रश ह। मूर्क ग्रांशायानः প্রাণমান্তিতো বোগধারণামূ॥ ১২॥ ওমিত্যেকাক্ষরং ত্রন্ধ ব্যাহরন্মামত্র-বরন্। ব: প্রয়াভি ত্যজুন্দেহং স বাতি প্রমাং গতিম্॥১০॥ জনজ-চেতা: দততং বো মাং স্বরতি নিত্যশ:। তস্তাহং মূদভ: পার্থ নিত্যযুক্তস্ত

ৰোগিন:॥ ১৪॥ সামুপেতা পুনৰ্জন্ম তৃ:থালয়মশাৰতম্। নাপু বন্ধি মহাত্মান: गःनिक्तिः भव्रशः भ्राः॥ > ६॥ व्यावस्त्रज्ञानाः भूनवावर्खित्ना-হিজ্ন। মামুপেত্য তুঁকোন্তের পুনৰ্জন্ম ন বিশ্বতে ॥ ১৬ ॥ সহস্রযুগপর্যান্ত-মহর্ষদ্ বন্ধাণো বিহু:। রাত্রিং যুগসহস্রান্তাং তে২হোরাত্রবিদো জনা:॥ ১৭॥ ব্দব্যক্তাদ্যক্তর: সর্বা: প্রভবস্তাহরাগমে। রাজ্যাগমে প্রদীয়ন্তে ভবৈবা-ব্যক্তসংক্ষকে 🛮 ১৮॥ ভৃতগ্রাম: দ এবারং ভূত্বা ভূত্বা প্রলীরতে। রাত্যা-গমেংবশঃ পার্থ প্রভবত্যহরাগমে ॥ ১৯ ॥ পরস্তমান্ত্র ভাবোংন্যোংব্যক্তো-হব্যক্তাৎ সনাতন:। যা সার্কেষু ভূতেষু নখ্যৎস্থ ন বিনখডি॥ ২০॥ ব্দব্যক্তোহক্ষর ইত্যুক্তশ্বমাহ: পরমাং গতিম্। বং প্রাপ্য ন নিবর্ত্তন্তে তদ্ধাম পরমং মম ॥ ২১ ॥ পুরুষ: স পর: পার্থ ভক্ত্যা লভ্যন্থনক্তরা। ষস্তান্ত:স্থানি ভূতানি বেন সর্বমিদং তত্তম্ ॥ ২২ ॥ বত্ত কালে অনাবৃত্তিমাবৃত্তিঞ্চৈব বোগিন:। প্রবাতা বান্তি তং কালং বক্ষ্যামি ভরতর্বভ ॥২৩॥ অগ্নির্জ্যোতিরহ: উক্ল: ৰগাসা উত্তরারণম্। তত্ত্ব প্রশ্নতা গচ্ছত্তি ব্রহ্ম ব্রহ্মবিদো জনা:।। ২৪ ॥ ধুমো রাত্রিত্তথা কৃষ্ণ: ব্যাসা দক্ষিণায়নম্। তত্ত্র চাক্রমসং জ্যোতির্বোগী প্রাপ্য নিবর্ত্ততে ।। ২৫ ।। শুক্লকুফে গতী ছেতে জগতঃ শাখতে মতে। একরা ষাভ্যনার্ভিমন্তন্নাবর্ত্ততে পুন:।। ২৬।। নৈতে স্তী পার্থ জানন্ বোগী মুহুতি কশ্চন। তন্মাৎ সর্কেষু কালেষু বোগযুক্তো ভবাৰ্জুন।। ২ গ।। বেদেয়ু ষজ্ঞেয়ু তপঃস্থ চৈব, দানেয়ু বং পুণ্যফলং প্রদিষ্টম। অভ্যেতি তৎ সর্কমিদং বিদিস্বা, যোগী পরং স্থানমুপৈতি চাম্বম্ ।। ২৮॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং ভীম্মপর্কণি শ্রীমন্ভগবদ্গীতাস্পনিষৎস্থ ত্রন্ধবিছারাং বোগশাস্ত্রে শ্রীরুফার্জ্ন-সংবাদে ত্রন্ধবোগো নাম অষ্টমোহধ্যারঃ।

#### নবসোহপ্যায়ঃ

প্রীতগবাস্থবাচ। ইদস্ক তে গুহুতমং প্রবক্ষ্যাম্যনস্মবে। জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং বজ্ঞাতা বোক্যদেহগুভাৎ॥ ১॥ রাজবিদ্ধা রাজগুহুং পবিত্রমিদমুন্তমন্। প্রভাকাবগমং ধর্ম্যং ক্ষুথং কর্ত্ত্মব্যয়ন্॥ ২॥ অপ্রক্ষণ ধানাঃ পুক্রা ধর্মস্ভাক্ত পরস্তপ। অপ্রাপ্য মাং নিবর্ত্তন্তে মৃত্যুসংসারবত্ম নি॥ ৩॥ মহা ভ্রুমিদং সর্বাং জগদব্যক্তমৃতিনা। মৎস্থানি সর্বভূতানি ন চাহং

ভেষবস্থিত:।। ৪ ॥ ন চ মংস্থানি ভূতানি পশু মে যোগমৈধরম্। ভূত-ভূম চ ভূতস্থে। মহাত্মা জুভভাবন:।। ৫।। বথাকাশস্থিতো নিত্যং বারু: नर्सब्देशा महान्। उथा नर्सानि क्लानि मश्हानीकुर्भगातता। ७॥ ভূতানি কৌন্তের প্রকৃতিং বান্তি দামিকাম। কলকরে পুনন্তানি কলাদৌ বিস্কাম্যহম্।। ৭।। প্রকৃতিং স্বামবইভা বিস্কামি পুন: পুন: । ভৃতগ্রাম-মিমং ক্রংল্লমবশং প্রকৃতের্জ্বশাৎ॥৮।। ন চ মাং তানি কর্মাণি নিবয়ন্তি ধনঞ্জ। উদাসীনবদাসীনমসক্তং তেযু কর্মস্থা >।। মরাধ্যক্ষেণ প্রকৃতিঃ স্মতে সচরাচরম। হেতুনানেন কোস্কের অগদিপরিবর্ত্ততে ॥ ১০ ॥ অব-জানন্তি মাং মূঢ়া মাহুৰীং তহুমাপ্ৰিতম্। পরং ভাৰমজানন্তো মম ভৃতমহে-খরম্॥ ১১॥ মোদাশা মোদকর্মাণো মোদজ্ঞানা বিচেতসঃ। রাক্ষসীমান্তরী-ঞৈব প্রকৃতিং মোহিনীং প্রিতা:॥১২॥ মহাত্মানম্ভ মাং পার্থ দৈবীং প্রকৃতিমালিতা:। ভল্লন্তানন্যেন্দ্রা জাত্বা ভূতাদিমব্যয়ম্ ॥ ১৩ ॥ সভতং কীর্ত্তরা মাং যতন্ত্রণ দৃঢ়ব্রতা:। নমস্তন্ত্রণ মাং ভক্ত্যা নিত্যযুক্তা উপাদতে ॥ ১৪ ॥ জ্ঞানষজ্ঞেন চাপ্যক্তে *ৰজন্ত*া মামুপাসতে। একত্বেন পুথক্বেন বছধা বিশ্বতোমুখম্।। ১৫॥ অহং क्कुत्रदः रुखः चर्षार्द्यस्योष्यम्। स्टबार्ट्यट्याकामस्यवित्रः इष्टम्॥ ১७॥ পিতাংহমক্ত জগতো মাতা ধাতা পিতামহ:। বেছং পবিত্রমোদ্ধার ঋক্ সাম যজুরেব চ।। ১৭।। গতির্ভর্তা প্রভু: সাক্ষী নিবাস: শরণং স্বহৎ। প্রভব: প্রলয়: স্থানং নিধানং বীজমব্যয়ম্ ॥ ১৮॥ তপাম্যহ্মহং বর্ষং নিগৃহাম্যুৎস্কামি চ। অমৃতক্ষৈব মৃত্যুন্চ সদসচ্চাহমৰ্জ্জুন।। ১৯।। ত্ৰৈবিষ্ঠা মাং দোমপা: পুতপাপা, যজৈরিয়া স্বর্গতিং প্রার্থয়ন্তে। তে পুণ্যমাদাভ স্বেল্রলেকমন্নস্তি দিব্যান দিবি দেবভোগান্।। ২০।। তে তং ভূকা স্বৰ্গলোকং বিশালং, ক্ষীৰে পুণ্যে মৰ্ত্তালোকং বিশস্তি। এবং ত্ৰয়ীধৰ্মমত্ন-প্ৰপন্না, গভাগতং কামকামা লভত্তে।। ২১।। অনুসাশ্চিম্বয়স্তো মাং যে জনাঃ পর্বপাদতে। তেবাং নিত্যাভিষ্কানাং বোগক্ষেমং বহাম্যহম্।। ২২।। বেংপাল্ডদেবতাভক্তা বছত্তে শ্রদ্ধান্বিতা:। তেংপি নামেব কৌন্তের ৰজস্তাবিধিপূর্ব্বকম্।। ২৩।। অহং হি সর্ব্যজ্ঞানাং ভোক্তা চ প্রভূরেব চ। ন তু মামভিজানস্কি তত্ত্বনাতশ্যবস্থি তে।। ২৪।। বান্ধি দেবত্রতা দেবান্ পিতৃন্ বাস্তি পিতৃত্ৰতা:। ভূতানি বাস্তি ভূতেজ্যা বাস্তি মদ্বাজিনোৎপি মাম্ ॥২৫॥ পত্রং পূব্দং ফলং তোরং ধো মে ভজ্ঞ্যা প্রবছতি। তদহং ভক্ত্যুপর্ভমন্নামি প্রবভায়ন: ।। ২৬ ।। বৎ করোবি বদরাসি বজুহোবি দদাসি বং।
বত্তপশ্রসি কৌজের তৎ কুরুষ মদর্শন্য ।৷ ২৭ ।। শুভাশুভকলৈরেবং
নোক্ষাসে কর্মবন্ধন: । সন্ত্যাসবোগযুক্তাল্পা বিমৃক্তো মামুগৈয়সি ।৷ ২৮ ।।
সমোহহং সর্মভৃত্যের নমে বেব্যোহন্তি ন প্রিয়: । বে ভজন্তি তু মাং ভক্তা
মরি তে তেরু চাপ্যহম্ ॥ ২৯ ॥ অপি চেৎ স্ত্রাচারো ভজতে মামনতভাক্ ।
সাধুরেব স মন্তব্য: সমাধ্যবসিতো হি স: ॥ ৩০ ॥ ক্রিপ্রং ভবতি ধর্মাল্পা
শব্দে জিং নিগক্তি । কৌজের প্রতিজানীহি ন মে ভক্তঃ প্রণশ্রতি ॥ ০১ ॥ মাং
হি পার্থ ব্যপাপ্রিত্য বেহপি স্মাঃ পাপ্যোনয়: । স্থিয়ো বৈশ্রাভ্রথা শুলাত্তেহপি
যান্তি পরাং গভিম্॥ ০১ ॥ কিং পুনর্রান্ধণাঃ পুণ্যা ভক্তা রাজর্মস্বর্থা ।
অনিত্যমন্ত্রথং লোকমিমং প্রাপ্য ভজন্ব মাম্॥ ৩০ ॥ মন্মনা ভব মন্তক্তো
মন্বাজী মাং নমন্ত্র । মামেবৈয়েসি যুক্তে বমাল্যানং মৎপরামণঃ ॥ ৩৪ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাদিক্যাং ভীমপর্বণি শ্রীমন্তগ্রদ্দী গ্রাস্থানিষ্পত্ম বন্ধবিভারাং বোগশান্তে শ্রীকৃষ্ণার্জ্বন-সংবাদে রাজবিভারাজগুহুবোগো নাম নব্যোহধ্যায়ঃ।

#### দেশবেশাইল্যাইা

প্রীতিপূর্বকম্। দদামি বৃদ্ধিবোগং তং থেন মামূপযান্তি তে ॥>•॥ তেবামেবাছ-কম্পার্থমন্তানজং তম:। নাশরাম্যাত্মভাবত্যে জ্ঞানদীপেন ভাষতা॥>>॥

জর্ক উবাচ। পরং ব্রহ্ম পরং ধাম পবিত্রং পরমং ভবান্। পুরুষং শাখতং
দিব্যমাদিদেবমঞ্জং বিভূম্॥ ১২॥ আছ্স্থায়বয়ঃ সর্কে দেবর্ধিন রিদন্তথা।
ভাসিতো দেবলো ব্যাসঃ স্থাকৈব ব্রবীধি মে॥ ১০॥ সর্ক্ষেত্রভূতং মস্তে
ক্রমাং বদসি কেশব। ন হি তে ভগবন্ ব্যক্তিং বিভূদ্দেবা ন দানবাঃ॥ ১৪॥
স্বাম্যবাস্থানাকং বেশ স্থং পুরুষোত্তম। ভূতভাবন ভূতেশ দেবদেব
ভাগৎপতে॥ ১৫॥ বক্তুম্ই প্রশেবেণ দিব্যা হাস্মবিভূত্রঃ। বাভির্বিভূতি
ভিলোকানিমাংস্কং ব্যাপ্য তিষ্ঠিস॥ ১৬॥ কথং বিভামহং বোগিংস্কাং
সদা পরিচিভয়ন্। কেযু কেযু চ ভাবেষ্ চিস্ত্যোহসি ভগবন্মা॥ ১৭॥
বিভরেণাস্থানো বোগং বিভৃতিক জনাদিন। ভূমঃ কথম ভৃত্তিহি শৃথতো
নাজি মেহমুতম্॥ ১৮॥

প্রীভগবারুবাচ। হস্ত তে কথমিয়ামি দিব্যা হাত্মবিভূতয়:। প্রাধান্ততঃ কুরুপ্রেষ্ঠ নাল্যান্তো বিশুরুত্ত মে॥১৯॥ অহমাত্মা গুড়াকেশ সর্বাভূতা-শয়স্থিত:। অহ্মাদিশ্চ মধ্যঞ্ ভূতানামস্ত এব চ॥২০১ আদিত্যা-বিষ্ণুক্রে গাতিষাং রবিরংশুমান। মরীচিশক্রতামশ্মি নক্ষত্রাণামহং भेगी ॥ २> ॥ विकानाः । नामविक्तांशिक विकासिक वामवः। মনশ্চান্দ্র ভূতানামন্দ্র চেতনা॥ ২২ ॥ ক্রডাগাং শক্তরশ্চান্দ্র বিত্তেশো যক্ষ-রক্ষসাম্। বস্থাং পাবকশ্চান্তি মেরু: শিথরিণামহম্॥ ২০॥ পুরোধসাঞ মুধ্যং নাং বিদ্ধি পার্থ বৃহস্পতিম্। সেনানীনামহং ৃশ্বনঃ সরসামন্দ্রি সাগরঃ॥ ২৪॥ মহবীণাং ভৃগুরহং গিরামন্ম্যেকমক্ষরম্। বজানাং জ্প-ৰজোহস্মি স্থাবরাণাং হিমালয়: । ২৫ : অৰথ: मर्खव्यानाः स्टब्सीनाक গন্ধর্মাণাং চিত্ররথঃ সিদ্ধানাং কপিলো মুনিঃ ॥ ২৬ ॥ উচ্চৈঃ প্রবস-विकि माममुट्डांडवम्। जेत्राव्छः शब्बद्धांभाः नत्रांभाध নবাধিপম্ । ২৭ । আবুধানামহং বজ্রং ধেনুনামশ্বি কামধুক্। প্রজনকাশ্বি কল্প: দর্পাণামন্দ্রি বাস্ত্রকি:॥ ২৮॥ অনন্তশ্চান্দ্রি নাগানাং বক্রণো যাদসা-পিতৃণাম্য্যমা চাস্মি যমঃ সংযমতামহম্॥২৯॥ প্রহলাদশ্চাস্মি দৈত্যানাং কাল: কলঃভামহন্। মুগাণাঞ্চ মুগেন্দ্রোহহং বৈনভেরক পকিণাম্। ৩০। প্ৰনঃ প্ৰভাষ্থি রাম: শস্ত্ভামহম্। ঝ্যাণাং মকর-कांचि त्याञ्जामचि बाक्वी॥ э>॥ ज्ञांनामानित्रहरू मधाः टिवारमर्क्न। खशां चिष्ठा विष्ठां नाः वाषः श्रीवण्डां स्था । अस्तर्याणां स्वार्था विष्ठा । विष्ठा

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈয়াসিক্যাং ভীম্মপর্কণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাস্পনিষৎস্থ ব্রহ্মবিভারাং বোগশাস্থে শ্রীকৃষ্ণার্জ্ঞ্ন
সংবাদে বিভৃতিবোগো নাম দশমেহধ্যারঃ।

### একাদশোহপ্রায়

অর্জুন উবাচ। মদমুগ্রহার পরমং গুহামধ্যাত্মদংজিতম্। বত্তরোজং বচন্তেন মোহোহরং বিগতো মন।। ১।। ভবাপারে হি ভূতানাং শতৌ বিস্তরশো নয়। অবঃ কমলপত্রাক্ষ মাহাত্মমপি চাব্যয়ন্।।২।। এবমেতদ্বথাথ অমাত্মানং পরমেশর। জটুমিচ্ছামিতে রূপমৈশরং পুরুষোত্তম।। ৩।। মক্তসে বদি তচ্ছক্যং ময়া জটুমিতি প্রভো। যোগেশর ততো মে অং দর্শরাত্মানমব্যরম্॥।।।

শ্রীভগবাস্থবাচ। পশ্র মে পার্থ রূপাণি শতশোহধ সহস্রশং। নানা-বিধানি দিব্যানি নানাবর্ণাকৃতীনি চ॥৫॥ পশ্রাদিত্যান্ বহুন্ কুলানখিনো মক্তত্তথা। বহুন্তনৃষ্টপূর্কাণি পশ্রাশ্র্যাণি ভারত॥৬॥ ইতৈকস্থং জগৎ কুংসং পশ্রাভ সচরাচরম্। মন দেহে গুড়াকেশ ৰচ্চান্তনু ই নিজ্সি॥१॥ न তু মাং শক্তাদে দ্রষ্টুমনেনৈব অচক্ষা। দিব্যং দদামি তে চক্ষ্ণ পশু মে
যোগমৈশ্রম্॥ ৮॥

সঞ্জ উবাচ। এবমূকা ততো রাজন্ মহাযোগেশরো হরি:। দর্শরামাস পার্থার পরমং রূপনৈশরম্॥ ৯॥ অনেকবজনুনরনমনেকাভূতদর্শনম্।
অনেকদিব্যাভরণং দিব্যানেকোন্ধতাযুধম্॥ ১০॥ দিব্যমাল্যান্ধরং দিব্যগন্ধান্ধলেপনম্। সর্প্রান্ধগ্যনং দেবমনন্তং বিশ্বভোমূথম্॥ ১১॥ দিবি ক্র্যাসহস্রেক্ত ভবেদ্ যুগপছ্থিতা। যদি ভাঃ সদৃশী সা ক্রাভাসন্তক্ত মহাত্মনা ॥ ১২॥
তবৈকক্ষং জগৎ ক্রংমং প্রবিভক্তমনেক্রা। অপক্রদেবক্ষ শরীরে
পাপ্রবন্ধা॥ ১০॥ ততঃ স বিশ্বরাবিষ্টো হাইরোমা ধনঞ্জরঃ। প্রণম্য শিরসা
দেবং ক্রাঞ্লিরভাষত॥ ১৪॥

অর্জুন উবাচ। পশামি দেবাংশ্তব দেব দেহে, সর্বাংশ্তথা ভূতবিশেষ-সজ্বান্। অক্ষাণ্মীশং কমলাসনভ্যুবীংশচ স্কান্ত্রপাংশচ দিব্যান্॥১৫॥ অনেকবাহদরবক্ত নেত্রং, প্রামি বাং সর্বতোহনস্তরপৃষ্। নাস্তং ন মধ্যং ন পুনন্তবাদিং, পশামি বিশেষর বিশারপ॥ ১৬॥ কিরীটিনং গদিনং চক্রিণঞ্চ, তেলোরাশিং সর্বতো দীপ্তিমন্তম্। পশামি বাং হর্নিরীক্ষ্যং সমস্তাদীপ্তা-নলার্কত্যতিমপ্রমেরম্ ॥১৭॥ অমক্ষরং পরমং বেদিতব্যং, অমস্ত বিশ্বস্ত পরং নিধা-নম্। অমব্যয়: শাখতধর্মগোপ্তা, সনাতনন্তঃ পুক্ষো মতো মে ॥১৮॥ অনাদি-মধ্যান্তমনন্তবীৰ্য্যমনন্তবাহং শশিক্ষ্যনেত্ৰম্। পভামি বাং দীপ্তহতাশবক্তং,স্বতে-क्षता विश्वमितः তপন্তम् ॥>>॥ छावानृधिवाद्यादितमञ्जदः हि, वााश्वः परिवरकन দিশশ্চ সর্কা:। দৃষ্টাভূতং রূপমূগ্রং তবেদং, লোকত্রন্ধং প্রব্যথিতং মহাস্মন্॥২০॥ অমী হি আং সুরসজ্ঞ। বিশস্তি, কেচিডীতাঃ প্রাঞ্জলয়ো গুণস্তি। স্বন্ধীত্যুক্তা মহর্ষিসিদ্ধসভ্যাঃ, স্ববন্ধি আং স্বতিভিঃ পুছলাভিঃ॥ ২১॥ কল্তাদিত্যা বসবো ষে চ সাধ্যা, বিশেহখিনো মকতভেচাম্মপাশ্চ। গন্ধৰ্ববক্ষাত্মরসিদ্ধসভ্যা, বীক্ষত্তে चाং বিশ্বিতাশৈত্ব সর্কো। ২২। রূপং মহত্তে বছবজ্বনেত্রং, মহাবাহো वहवाह्क्भानम्। वह्नद्रः वहनःद्वाकदानः, नृष्टा लाकाः अवाधिछा-च्छथोरुम् ॥ २०॥ म छः म्णृंगः मीक्षमत्नकदर्गः, ब्राखाननः मीक्षविमानत्नवम् । দৃষ্টা হি খাং প্রব্যথিতান্তরাত্মা, ধৃতিং ন বিন্দামি শমক বিফো॥ ২৪॥ দংষ্ট্রাকরালানি চ তে মুখানি, দৃট্টেব কালানলসন্নিভানি। দিশো ন জানে ন লভে চ শর্ম, প্রসীদ দেবেশ জগরিবাস ॥ ২৫॥ অমী চ ডাংধৃতরাষ্ট্রস্থ পুত্রাঃ, সর্বে সহৈবাবনিপালসঙ্বৈঃ। ভীন্মো জোণঃ স্তপ্তত্তথাসৌ,

সহান্দলীদৈরপি বোধমুবৈরঃ ॥ ২৬ ॥ বক্তাণি তে বরমাণা বিশন্তি, দংষ্ট্রা-করালানি ভরানকানি। কেচিবিলয়। দশনান্তরের, সংদৃশুত্তে চ্ণিতৈকত্ত-মালৈঃ ॥ ২৭ ॥ বথা নদীনাং বহবোহস্বেগাঃ, সম্প্রমেবাভিম্থা দ্রবন্তি । তথা তবামী নরলোকবীরা, বিশন্তি বক্তাণ্যভিত্যে জ্বান্তি ॥ ২৮ ॥ বথা প্রদীপ্তং জ্বানং পত্তা, বিশন্তি নাশার সম্ব্রবেগাঃ । তথৈব নাশার বিশন্তি লোকান্তবাপি বক্তাণি সম্ব্রবেগাঃ ॥ ২৯॥ লোকান্তবে প্রসমানঃ সমন্তা-লোকান্ সমগ্রান্ বদনৈর্জনিতিঃ । তেজোভিরাপ্র্যা ক্রগৎ সমগ্রুং, ভাসন্ত-বোগ্রাঃ প্রতপত্তি বিক্ষো ॥ ৩০ ॥ আখ্যাহি মে কো ভবান্থ গ্রন্তেশা, নমোহস্ত তে দেববর প্রসাদ । বিজ্ঞাক্ষিক্তামি ভবস্তমান্তং, ন হি প্রজানামি তব প্রবৃত্তিম্ ॥ ৩০ ॥

শ্রীভগবারুবাচ। কালোহশি লোকক্ষরত প্রবুজো, লোকান্ সমাহর্ত্রিছ প্রবুজঃ। ঝতেহলি আংন ভবিশ্বন্তি সর্বের, বেহবন্তিতাঃ প্রত্যনীকেষ্ বোধাঃ ॥ ৩ । তত্মাজমূরিষ্ঠি বশো লভক, জিবা শত্রন্ত্ত্ক, রাজ্যং সম্বর্ষা মহৈবৈতে নিহতাঃ পূর্বনেব, নিমিন্তমাত্রং ভব সব্যসাচিন্॥ ৩০ ॥ জোপঞ্চ ভীম্বন্ধ জন্তব্যক, কর্ণং তথাসানলি যোধবীরান্। মন্না হতাংস্থং জহি মা ব্যথিষ্ঠা, মুধ্যম্ব জেতাসি রণে সপত্মান্॥ ৩৪ ॥

সঞ্জয় উবাচ। এতছে ুখা বচনং কেশবস্তু, ক্বতাঞ্জলির্কেপথানঃ কিরীটা। নমস্কুত্য কুম এবাহ কৃষ্ণং, সগলগনং ভাতভীতঃ প্রণম্য।। ৩৫।।

অর্জুন উনাচ। স্থানে ষ্বনীকেশ তব প্রকীর্ত্তা, জগৎ প্রস্থাত্য ধ্রজাতে চ।
রক্ষাংলি জীতানি দিশো এবস্তি, সর্বের নমস্তব্জি চ সিদ্ধসঙ্গাঃ ॥ ৩৬ ॥ কশাচচ
তে ন নমের মহারান, গরীরলে রক্ষণোহপ্যাদিকত্রে। অনস্ত দেবেশ জগিনি
বাস, অমক্ষরং সদসভংগরং বং ॥ ৩৭ ॥ অমাদিদেবঃ প্রুমঃ প্রাণস্থক প্রিক্ত পরং নিধানম্। বেতালি বেতাক পর্যুক্ত ধাম, অয়া ততং বিশ্বমনস্তরুপ ॥ ৩৮ ॥ বায়ুর্যমোহ গ্রির্ক্ত শং শশারঃ, প্রজাপতিত্বং প্রপিতামহন্ত ।
নমো নমত্বেহস্ত সহক্রক্তরং, প্রশ্য ভ্রোহিণি দ্রো নমন্তে ॥৩৯॥ নমঃ প্রস্তাদ্র পৃষ্ঠতন্তে, নমোহস্ত তে সর্বত এব সর্ম। অনস্তবীর্যামিতবিক্রমন্ত্রং, সর্বাং
সমাপ্রোমি তে তাহিলি সর্বাঃ ॥৪০॥ স্বেতি মতা প্রারুৎ, বহুক্তং, হে কৃষ্ণ হে
বাদির হে স্বেতি। অন্তানতা মহিমানং তবেদং, ময়া প্রমাদাৎ প্রণরের
বাপি ॥৪১॥ যুক্তাবহাসার্থিনসংক্তোহিলি, বিহারশ্ব্যাসনভোক্তনের।
একোহণবাপাচ্যুত তৎ সমক্ষং, তৎ ক্লামরে আনহ্যপ্রমন্ত্র ৪২॥ পিতালি

লোকত চরাচরত, ব্যক্ত প্রত্যক গুরুগনি । ব বংস্যোহতাতাথিকঃ কৃতোহত্তো, লোকঅরেহপ্যপ্রতিষপ্রভাবঃ ॥ ৪০ ॥ তত্যাং প্রথম প্রথমির কারং, প্রসাদরে বামহনীশনীভাম্। পিতেব প্রত্য সংখব সখ্যঃ, প্রিরঃ প্রিরারার্চিন দেব সোচুম্।। ৪৪ ।। অদৃষ্টপূর্বাং ক্রবিভোহত্তি দৃষ্টা, ভরের চপ্রবাধিতং মনো মে। তদেব মে দর্শর দেব রূপং, প্রসীদ দেবেশ বগরিবাস।। ৪৫ ॥ কিরীটিনং গদিনং চক্রহন্তমিক্ষামি বাং জ্রষ্ট্রমহং তথেব। তেনের রূপেন চতুর্ভ্রেন, সহস্রবাহো তব বিষম্ত্রে।। ৪৬ ।।

শীভগবাছবাচ। মরা প্রসমেন তবার্জ্নেদং, রূপং পরং দর্শিতমাত্মবোগাৎ। তেলোমরং বিশ্বমনস্তমাত্যং, বন্ধে তদন্তেন ন দৃষ্টপূর্ব্বমৃ॥ ৪९॥ ন বেদ্বজ্ঞাধ্যরনৈর্ন দানৈর্ন চ ক্রিয়াভিন তপোভিক্র গ্রা। এবংরূপং শক্য অহং নূলোকে, তেইং তদন্তেন ক্রপ্রবীর।। ৪৮॥ মা তে ব্যথা মা চ বিমৃচ্চতাবো, দৃষ্টা রূপং ঘোরমী দৃঙ্মমেদম্। ব্যপেতভীঃ প্রীভমনাঃ পুনস্থং, তদেব মে রূপমিদং প্রপশ্র ॥ ৪৯॥

সঞ্জর উবাচ। ইত্যর্জ্নং বাস্তদেবত্তথোত্বা, অবং রূপং দর্শরামাস ভূয়:।
আবাসরামাস চ ভীতমেনং, ভূতা পুন: সৌম্যবপূর্মহাত্মা।। ৫০।।

আৰ্জুন উবাচ। দৃট্টেদং মাছ্যং রূপং তব সৌষ্যং জনার্দ্ধন । ইদানীয়ন্দ্রি সংবৃত্তঃ সচেতাঃ প্রকৃতিং গতঃ ॥ ৫১ ॥

শীভগবাছবাচ। সুত্রদর্শমিদং রূপং দৃষ্টবানসি বন্নম। ুদেবা অপ্যান্ত রূপক্ত নিত্যং দর্শনকাজিকণঃ।। ৩২ ।। নাহং বেদৈন তপসা ন দানেন ন চেক্যরা। শক্য এবছিধো দ্রষ্ট্রং দৃষ্টবানসি মাং বথা।। ৩৩ ডা ছনমুরা। শক্য অহমেবস্বিধোহর্জুন। জ্ঞাতুং দ্রষ্টুঞ্ তত্ত্বেল প্রবেষ্টুঞ্চ পরস্তপ।। ৩৪।। মংকর্মকুন্মংপরমো মন্তক্তঃ সক্ষবর্জিতঃ। নিবৈরিঃ সর্বাভূতেযু বং স মামেডি পাওব।। ৫৫ ॥

ইতি শ্রীনহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীম্বপর্বাণ শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে বিশ্বরূপদর্শনং নাম একাদশোহধ্যারঃ।

### দুশিক্তশাহপ্রায়ঃ

ষৰ্জুন উবাচ। এবং সততযুক্তা যে ভক্তান্বাং পয়্যপাসতে। যে চাপ্য-ক্ষরমব্যক্তং তেবাং কে বোপবিত্তমাঃ ॥ ১।।

এভগ্ৰামূৰাচ। মন্যাবেড মনো বে মাং নিভাযুক্তা উপাসভে। প্ৰভন্ন পররোপেভাতে বে যুক্তভনা মতা:।। ২।। বে বক্ষরমনির্কেভমব্যক্তং পর্যু-পাসতে। সৰ্বজ্ঞগৰ্টিভাঞ কৃটস্থৰচলং জ্বৰ্॥ ৩॥ সংনিয়ম্যেজিরগ্রামং সর্কল সমব্দর:। তে প্রাপুবস্তি মামেব সর্কভৃতহিতে রডা:।। ৪।। ক্লেশিংধিকভরত্তেবামব্যক্তাসক্তচেত্সাম্। **অব্যক্তা হি গতিহ':**খং দেহবভিরবাপ্যতে।। ৫।। বে তু সর্বাণি কর্মাণি মরি সর্বান্ত মৎপরাঃ। অনভেনৈৰ বোগেন মাং খ্যায়ন্ত উপাদতে।। ৩।। তেবামহং সমুদ্ধতী মৃত্যু-সংসারসাগরাৎ। ভবামি ন চিরাৎ পার্থ মব্যাবেশিতচেতসাম্।।৭।। মব্যের মন আধংখ মন্ত্রি বৃদ্ধিং নিবেশর। নিবৃদিব্যসি মধ্যের অত উদ্ধং ন সংশর: ॥ ৮। অধ চিত্তং স্মাধাতুং ন শক্লোবি মরি স্থিরম্। অভ্যাসবোদেন ততে। मामिष्काश्चः धनअव ॥ २ ॥ अक्यारमध्यामस्याधिन सदक्षीयत्वा छव । মদর্থমিপি কর্মাণি কুর্মন্ সিদ্ধিমবাক্ষাসি॥ ১০॥ অধৈতদপ্যশক্তোহসি কর্ত্ত মন্ত্রোগনাখিত: সর্বাকর্মকনভ্যাগং ভত: কুক বভান্মবান্ ॥ ১১ ॥ খোরো হি জ্ঞানমভ্যাসাজ্ জ্ঞানাদ্যানং বিশিব্যতে। ধ্যানাৎ কর্মফল-ত্যাগন্ত্যাগাচ্ছান্তিরনন্তরম্ ॥ ১২ ॥ অবেটা সর্বাভৃতানাং নৈতঃ করুণ এব চ। নির্বাদো নিরহ্কার: সমহ:থমুথ: ক্মী । ১০। সম্ভঃ সভতং বোগী বতাত্ম। पृष्टिकाः। यदार्थिकारनावृद्धिर्या यम् छकः म स्य श्रितः॥ >॥ वन्त्राद्धा-ৰিলতে লোকে। লোকালোৰিলতে চ বঃ। হ্ৰামৰ্ডলোৰেগৈমুক্তোবঃ স ह त्य श्रिकः ॥ > ८ ॥ चनर्थकः छित्रकं छेत्रांगीत्नः अख्वायः । मर्सावछः পরিত্যাগী যো মন্তক্ত: স মে প্রির:॥ ১৬॥ যে। ন হুয়তি ন বেটি ন শোচতি ন কাজ্ৰতি। ওভাওভপরিত্যাগী ভক্তিমানু বং স মে প্রির:॥১৭॥ সমঃ শত্রী চ মিত্রে চ তথা মানাপমানয়োঃ। শীতোঞ্জুথত্ঃখেষু সমঃ সভবিব-জিত: । ১৮ । তুল্যনিন্দান্তভিযৌনী সম্ভটো বেন কেনচিং। স্থানিকেতঃ স্থিরমতিউজিমান্মে প্রিয়ো নর: ॥ ১৯ ॥ বে তু ধর্মামৃতমিদং বণোক্তং পর্যু-পাসতে। প্রদর্ধানা মৎপর্মা ভক্তান্তেহতীব যে প্রিরা: ॥ ২০ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শভদাহজ্ঞাং সংগ্রিতায়াং বৈয়াদিক্যাং ভীম্মপর্বাণ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাস্পনিবৎস্থ বন্ধবিতায়াং বোগশাল্পে শ্রীকৃষ্ণার্জ্ন-সংবাদে ভক্তিবোগো নাম বাদশোহধ্যায়ঃ ।

#### **जटकाल्ट्यांक्यांक्र**

( আর্জুন উবাচ। প্রকৃতিং পূর্ববৈশ্চব ক্ষেত্রং ক্ষেত্রজ্ঞমেব চ। এতদ্-বেলিতুমিচ্চামি জানং জ্ঞের্ক কেশব )॥ ১॥

এভিগবাসুবাচ। ইদং শরীরঃ কৌন্তের কেত্রবিষ্ঠাভিধীরতে। এড়েছ বো বেত্তি তং প্রাত্তঃ ক্ষেত্রক ইতি তবিদঃ ॥ ২ ॥ ক্ষেত্রকশাপি মাং বিদ্ধি সর্বা-কেত্রের ভারত। কেত্রকেত্রজ্ঞানং বত্তক্তানং মতং মম॥৩॥ ওৎ **टक्क्बः वक्क वामुक् 5 वम्**विकान्नि वज्र वर । म 5 दा वरश्राचान जर मनारमन মে শৃণু ॥ ৪॥ অধিভিব হুধা গীতং ছলোভিবিবিধৈ: পৃথক্ ৷ ব্ৰহ্মক্ত পদৈশৈতৰ হেতৃমন্তিবিনিশ্চিতৈ: ॥ «॥ মহাভূতাভহকারে। বৃদ্ধিরব্যক্তমেব চ। ইল্রিয়াণি দৰ্শৈকঞ্চ পঞ্চ চেক্সিয়গোচরা:॥ ৬॥ ইচ্ছা ছেব: সূথং ছঃথং সজ্বাতশেভনা ্যুতিঃ। এতৎ ক্ষেত্রং সমাদেন স্বিকারমুদান্তত্স্॥ १ । অবানিস্বদ্ভিত্ব-মহিংসা কান্তিরার্ক্রম। আচার্য্যোপাসনং শৌচং ছৈর্য্যমাত্মবিনিগ্রহ:॥৮॥ ইব্রিয়ার্থের বৈরাগ্যমনহন্ধার এব চ। **জন্মসূত্যজরাব্যাধিত: ধনোবারুদর্শন**মূ॥ » ॥ অসক্তিরনভিষত্বঃ পুত্রদারগৃহাদিয়। নিত্যঞ্চ সম্চিত্তত্বমিষ্টানিষ্টোপপভিষ্ ॥১•॥ ময়ি চানল্যবোগেন ভজ্জিরব্যভিচারিণী। বিবিজ্ঞানেশনেবিশ্বমরতির্জ্জনসংসদি॥১১॥ অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্ত্বজানাৰ্থদৰ্শনম্। এতজ্ঞানমিতি প্ৰোক্তমজানং ৰদতোহন্তবা॥ ১২॥ ভেনাং ষত্ত প্ৰবক্ষামি বৰ্জাতামৃতমন্তে। অনাদিষৎ পরং এন্ধ ন সভ্তমাসভূচ্যতে ॥ ১৩॥ সর্বভঃ পাণিপাদং তৎ সর্বতোৎকিশিরো-মুখস। সর্বতঃ ঐতিমলোকে সর্বমাবৃত্য তিষ্ঠতি ॥ ১৪ ॥ সর্বেন্দ্রিরগুণাভাসং সর্বেক্তিশ্বিবৰ্জ্জিতম্। অসক্তং সর্বভূচৈত্ব নিগুণিং গুণভোক্ত চা>৫॥ বহিরন্তশ্চ ভূতানামচরং চরমেব চ॥ স্বান্তাতদবিজ্ঞোং দূরত্বং চান্তিকে চ তং॥ ১৬ ॥ অবিভক্তঞ্জুতে যুবিভক্তমিব চ স্থিতম্। ভৃতভর্ষ্চ তক্তেরং গ্রসিষ্ণ প্রভবিষ্ণু চ । ১৭॥ জ্যোতিবামপি তঙ্জ্যোতিত্বমশঃ পরমূচ্যতে। কানং জেয়ং জ্ঞানগম্যং হৃদি সর্বান্ত ধিষ্টিতম্ (বিষ্ঠিতম)। ১৮॥ ইতি ক্ষেত্রং তথা জ্ঞানং জেরঞােজং সমাসত: । মন্তক্ত এতবিজ্ঞার মন্তাবারোপপছতে ॥ ১৯ ॥ প্রকৃতিং পুরুষকৈ বিদ্যানাদী উভাবপি। বিকারাংক গুণাংকৈ বিদ্ধি প্রকৃতিসম্ভ-বান্ ॥২০॥ কার্যাকারণকর্ত্তে হেতৃঃ প্রকৃতিক্চ্যতে। পুরুষঃ স্থ্বভঃধানাং ভোকৃত্বে হেতৃকচ্যতে॥২১॥ পুরুষ: প্রকৃতিষ্বোহি ভূঙ্কে প্রকৃতিজান গুণান্। কারণং গুণ্দদোহস্ত সদসদ্বোনিজন্মস্থ ॥ ২২ ॥ উপজ্ঞান্থ চ ভর্ত্তা ভোক্তা মহেশ্বর:। পরমান্মেতি চাপ্যক্তো দেহেছিদ্ব পুরুষ: পর:॥ ২৩॥

ৰ এবং বেন্তি পুক্ৰং প্রকৃতিক গুণৈঃ সহ। সর্কাথা বর্ত্তবানোহিদ ন স ভ্রোহিভিলারতে॥ ২৪ ॥ খ্যানেনাজনি পশুন্তি কেচিদাজানমাজনা। অস্তে সাথ্যেন বোগেন কর্মবোগেন চাপরে॥ ২৫ ॥ অস্তে ত্বেব্যকানতঃ শ্রুখান্যেত্য উপানতে। তেহিদি চাতিতরস্ত্যেব মৃত্যুং শ্রুতিগরারণাঃ॥ ২৬ ॥ বাবং সঞ্চারতে কিঞ্চিৎ সন্তঃ স্থাবরক্ষমন্। কেত্রক্রেজনংবাগান্তবিদ্ধি ভরতর্বত॥ ২৭ ॥ সমং সর্ক্রেম্ব ভূতেম্ তিঠন্তঃ পরমেশ্রম্। বিনশুংস্বিনশুন্তঃ বঃ পশুতি সপশুতি॥ ২৮ ॥ সমং পশুন্ হি সর্ক্রে সমবন্ধিতমীশ্রম্। ন হিনন্ত্যাজ্মনাজানং ততো বাভি পরাং গতিম্ ॥২৯ ॥ প্রকৃত্যেব চ কর্মাণি ক্রিম্মাণানি সর্কাশঃ। বঃ পশুতি তথাজানমকর্ত্তারং স পশুতি॥ ৩০ ॥ বদা ভৃতপৃথগ্ভাব্যেকস্থমন্পশুতি। তত এব চ বিস্তারং বহম সম্পন্ততে তদা ॥ ৩১॥ জনাদিদ্বারিগুণ্বাৎ পর্মাজারমব্যয়ঃ। শরীরস্থোহিদি কৌন্তেম্ব ন করোভি ন লিপ্যতে॥ ৩২ ॥ বথা সর্ক্রাতং সৌন্ধ্যাদাকাশং নোপলিপ্যতে। সর্ক্রাবন্থিতো দেহে তথাজা নোপলিপ্যতে॥ ৩০॥ বথা প্রকাশরত ভারত। কর্মাং লোকমিমং রবিঃ। ক্রেত্রে তথা তথা কুৎস্থং প্রকাশরতি ভারত॥ ৩৪॥ ক্রেক্রেজ্বরোরেব্যন্তরং জ্ঞানচক্র্যা। ভৃতপ্রকৃতিযোক্ষণ্ণ বে বিত্র্যান্তি তে পরম্॥ ৩৫ ॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্রাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং ভীমপর্বণি
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতান্থপনিষৎস্থ ব্রন্ধবিভায়াং বোগশাল্পে শ্রীকৃষ্ণার্জ্ঞ্নসংবাদে ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞবিভাগবোগো নাম অয়োদশোহধ্যায়ঃ।

## চতু<del>দ্দি</del>শোঽধ্যায়

প্রীভগবাহবাচ। পরং ভূরং প্রবক্ষ্যামি জ্ঞানানাং জ্ঞানমূত্রমন্। বজ্ঞাত্ম মূনরং সর্বে পরাং সিদ্ধিমিতো গ্রতাঃ॥ ১॥ ইদং জ্ঞানমূপাশ্রিত্য মম সাধর্ম্যমাগ্রতাঃ। সর্বেহিপি নোপজারত্তে প্রশরে ন ব্যথন্তি চ ॥ ২॥ মম বোনি-র্মহন্ত্রন্ধ তন্মিন্ গর্ভং দধাম্যহন্। সন্তবং সর্বভ্রতানাং ততো ভবতি ভারত ॥ ০॥ সর্ববানির্ কৌত্তের মূর্ভরং সম্ভবন্তি বাঃ। তাসাং ব্রন্ধ মহন্বোনিরহং বীজ-প্রদঃ পিতা॥ ৪॥ সত্তং রক্তর্ম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসন্তবাঃ। নিবন্ধন্তি মহাবাহো লেহে দেহিনমব্যরম্॥ ৫॥ তত্ত্ব সন্তং নির্মল্ভাহ প্রকাশক্ষমনাময়ন্। স্থসজ্ঞেন বন্ধাতি জ্ঞানসক্ষেন্ চানঘ॥ ৬॥ রজো রাগাত্মকং বিদ্ধি তৃঞ্গাসক্ষমূত্রম্।

ভারবগ্রাতি কৌল্ডের কর্মসন্তেন হেহিন্দ্ ॥ १ ॥ তমস্বজ্ঞানজং বিদ্ধি মোহনং সর্বাদেহিনাম। প্রমাণালক্তনিজাভিতন্তিরাভি ভারত॥৮॥ সবং হথে সঞ্জতি রক্তঃ কর্মণি ভারত। জ্ঞানমাবৃত্য তু ত্বয়ঃ প্রমাদে সঞ্জর্ত্যুত ॥ ৯.॥ রজঅসশ্চাতিভূম সন্ত্য ভবতি ভারত। রক্ত: সন্ত্য তমশ্চৈব তম: সন্ত্য রজন্তথা ॥ ১০ ॥ সর্কবারেরু দেহেংমিন প্রকাশ উপজারতে । জ্ঞানং বদা তদা বিল্লাবিব্রন্ধ সন্ত্রমিত্যুত ॥ ১১ ॥ লোভ: প্রবৃত্তিরারন্ত: কর্মণামশর: স্পৃহা। রক্ত স্তেতানি লারত্তে বিরুদ্ধে ভরতর্বত ॥ ১২ ॥ স্বপ্রকাশোহপ্রবৃত্তিশ্চ প্রমাদো: মোহ এব চ। ভ্ৰক্তেতানি জায়ত্তে বিবৃদ্ধে কুফনন্দন॥১০॥ বদা সন্ধে প্রবুদ্ধে তু প্রবয়ং বাতি দেহভূৎ। তদোভ্রমবিদাং লোকানমলান প্রতি-পছতে॥১৪॥ রজসি প্রলয়ং গড়া কর্মসন্ধিয়ু জায়তে। তথা প্রলীনন্তমসি মৃঢ়বোনিযু জায়তে॥ ১৫॥ কর্মণ: স্ফুরুতস্তাহ: সাল্লিকং নির্মাণ: ▼লম্। तक्रमञ्ज कवः दृःथमञ्जानः जममः क्रमम् ॥ ১७ ॥ मञ्जार मञ्जादर्ण ज्ञानः तकरमा লোভ এব চ। প্রমাদমোহো তমলো ভবতোহজ্ঞানমেব চ॥ ১৭॥ উ গছন্তি সত্ত্বা মধ্যে তিষ্ঠন্তি রাজনাঃ। জবন্তগুণবৃত্তিস্থা ( বৃত্তস্থা ) অধোগছন্তি তাষসা: ॥ ১৮ ॥ নাক্তং গুণেভ্য: কর্ত্তারং বদা দ্রষ্টামুপক্সতি। গুণেভ্যক্ত পরং বেভি মন্তাবং সোহধিগচ্ছতি ॥ ১৯ ॥ গুণানেতানতীত্য জীন দেহী দেহসমূত্ত-বান্। অবামৃত্যুজরাত:থৈবিমৃক্তোৎমৃতমশ্রুতে॥ ২০॥

স্বৰ্জুন উবাচ। কৈণিকৈন্ত্ৰীন্ গুণানেতানতীতো ভবজি প্ৰভো। কিমা-চাব্ৰঃ কথকৈতাংশ্বীন্ গুণানতিবৰ্ত্ততে ॥ ২১ ॥

শীভগবান্নবাচ। প্রকাশঞ্চ প্রবৃত্তিঞ্চ মোহমেন চ পাণ্ডব। ন বেটি সম্প্রবৃত্তানি ন নির্ত্তানি কাজ্ফতি॥ ২২॥ উদাসীনবদাসীনো গুণৈর্বোন বিচাল্যতে। গুণা বর্ত্তম্ভ ইত্যেবং বোহবতিষ্ঠতি নেকতে॥ ২০॥ সমত্বংধস্থা স্বস্থা সমলোট্রাশ্মকাঞ্চনঃ। তৃল্যপ্রিরাপ্রিয়ো ধীরম্বল্য-নিকাম্মগান্ততিঃ॥ ২৪॥ মানাপমানরোম্বল্যভাল্যো মিলারিপক্ষোঃ। সর্বারম্ভ-পরিত্যাগী গুণাজীতঃ স উচ্যতে॥ ২৫॥ মাঞ্চ বোহব্যভিচারেণ ভক্তিবোগেন সেবতে। স গুণান্ সমতীতৈয়তান্ ব্রম্ভ্রার ক্রতে॥ ২৬॥ ব্রমণো হিপ্রতিষ্ঠাহমমৃতভাব্যরভাচ। শাখতভাচ ধর্মভান্ত স্থতিকান্তিকভাচ॥ ২৭॥

ইতি জীবহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং জীম্বপর্কণি শ্রীমন্তবদ্গীতাস্থপনিবৎস্থ ব্রন্ধবিভারাং বোগশা**নে জীক্ষার্জ্**ন-সংবাদে গুণত্তরবিভাগবোদগা নাক চতুর্দ্ধশেহিধ্যারঃ।

#### <u> अध्यक्तरम् अर्थाक्ष</u>

अञ्चलकार । উद्द्रवनशः नायक्षयः आहत्रवात्रम् । इन्ताःति रच नर्गाति नषः (तम न (तमवि९ ॥ > ॥ अवध्यार्काः क्षण्ठाच्छ नावा, खनकाका विवत-अंशनाः। चश्च मृनाब्रक्त्रस्रकानि, कर्पाष्ट्रसीनि मञ्जातारक ॥२॥ न ज्ञल-ৰক্ষেত্ তথোপদভাতে, নান্তে। ন চাদিন' চ সম্প্রভিষ্ঠা। অবধ্যেনং স্থবিষ্কৃত-বৃলমনক্ষান্ত্রেণ দুঢ়েন ছিত্বা। ৩॥ ততঃ পদং তৎ পরিমার্গিতব্যং, বন্দ্রিন্ পতা ন নিবর্ত্তত্তি ভূর:। তমেব চাছং পুরুষং প্রপঞ্চে, বভঃ প্রবৃত্তিঃ প্রস্থতা পুরাণী ॥৪৪ নির্মাণমোহা জিতসদদোবা, অধ্যাত্মনিত্যা বিনিবৃত্তকামা:। বলৈ-सिंगुकाः खुबब्ध्यमः कार्यक्रिकाम् । अप्रमान कर शहा न छडामग्रा चर्या। न ननाटका न भारकः। यह शंका न निवर्खटल छक्ताम भन्नमः मम ॥ भटेमवाः स्ना बोयलाक बोवज्ञः সনাতনঃ। মনঃষ্ঠানীক্রিয়াণি প্রকৃতিস্থানি কর্বতি ॥१॥ नतीतः यनवाद्यां वि बळाश्राश्कामजीवतः। शृहीदेखानि मःयां वि वायुर्गकाः নিবাশরাৎ 🕪। শ্রোত্তং চক্ষ: স্পর্শনঞ্চ রসনং ত্রাণমের চ। অধিষ্ঠার মনস্চারং বিষয়ামূপসেবতে । ১। উৎক্রামন্তঃ স্থিতঃ বাপি ভূঞানং বা গুণাছিতম । বিমৃচা নাত্মপত্তত্তি পত্তত্তি জানচকুৰ: ॥>•॥ বডভো বোগিনদৈনং পত্তত্তা ব্যক্তবন্ধিতম্। ৰতন্তোহপ্যক্ৰতাত্মানো নৈনং পশ্ৰস্ত্যচেত্ৰ: ১১৯ বদাদিত্যগতং তেলো ৰগ-डानवर्ज्यभिनम्। वक्तव्यमिन वक्तार्या जल्लाका विकि मामकम्॥५२॥ शामाविक ष्ठ प्रकानि शांत्रवाग्रश्र्याक्षमा । भूकामि ८ठोवशीः नर्काः स्मारमाः कृषा রসাত্মক: ॥১ आ অহং বৈশানরো ভূষা প্রাণিনাং দেহমাপ্রিত:। প্রাণাপান-সমাযুক্ত: পঠাম্যারং চতুর্বিধ্য ॥১৪॥ সর্বশু চাহং হুদি সরিবিটো, মতঃ স্থতি-व्यानमरशाहनकः । विदेशकः मर्द्सवृह्दमव विद्या, विमासकृद्यमविद्यन गहिम् ॥>e॥ ৰাবিষৌ পুৰুৰো লোকে করশ্চাকর এব চ। করঃ সর্বাণি ভূডানি, কুটস্থো-২কর উচাতে ॥১৬॥ উত্তম: পুরুষন্তম: প্রমান্দ্রেত্যদাহত:। বো লোকত্রমাবিত বিভর্তাব্যর ঈশবঃ ॥১৭॥ শুলাৎ করমতীতোহত্মকরাদ্পি চোত্তমঃ। অভোহস্মি लार्क ८वर ह धिथिछ: शृक्रवांखम: ॥>৮॥· दा मारमवममःमृत्। स्नानांखि পুকবোত্তমন। স স্প্রবিভ্রনতি মাং স্প্রভাবেন ভারত ॥১৯॥ ইতি গুরুতমং শ্বাম্মিদম্ভং মরানব। এডদ্ বৃদ্ধা বৃদ্ধিনান ভাৎ কৃতকৃত্যক ভারত। ২০।

ইতি শ্রীবহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীত্মপর্কণি শ্রীবন্তগবদ্দীভাত্মপনিবংক্ষ ত্রত্মবিভারাং বোগশাত্তে শ্রীকৃষার্জ্নসংবাদে পুরুষোভ্যবোগো নাম পঞ্চদোহধ্যারঃ।

#### <u>ষোড়পোইগ্রায়</u>

শ্রীভগবাস্থাচ। অভয়ং সন্ত্যংওদ্ধিক্র নিবোগব্যবস্থিতি:। দানং দমক वक्रक याधाविष्य चार्क्कतम्॥।॥ चहिःमा मञाबद्धांपद्धांमः नास्त्रिवरेभस्यमः॥ দয়া ভৃতেখলোৰুপ্তং মার্দ্ধিং হ্রীরচাপলম্॥২॥ তে**জ: কমা গুডি: শৌ**চ-মজোহো নাতিমানিতা। ভবন্ধি সম্পদং দৈবীমভিন্ধাতক ভারত ॥ ।। দক্ষো দর্পোহভিমানক ক্রোধঃ পাক্ষমের চ। অজ্ঞানং চাভিজ্ঞাতক্ত পার্থ সম্পদ মান্দ্রীম্ ॥৪॥ देवरी সম্পবিমোক্ষায় নিবন্ধারান্দ্রী মতা। মা ওচঃ সম্পদং বৈবীমভিজ্ঞাতোহদি পাণ্ডব 💵 ছে। ছেচসর্কো লোকেহন্মিন্ দৈব আন্তর এব চ। দৈৰো বিভাৱশঃ প্ৰোক্ত আমুৱং পাৰ্থ মে শৃণ্ 🌬 প্ৰবৃত্তিঞ্চ নিবৃ-ভিঞ্জন। ন বিহুরাস্করাঃ। ন শৌচং নাপি চাচারো ন সভ্যং তেয় বিশ্বতে ৪৭॥ অসত্যমপ্রতিষ্ঠং তে জগদাত্ত্রনীশ্বন্। অপরস্পরসম্ভূতং কিম-ক্তৎ কাষহৈতৃকম্ ॥৮॥ এতাং দৃষ্টিমৰটভা নটাত্মানোহয়বৃদ্ধঃ:। প্রভবস্তাগ্র-কর্মাণ: করার কগতোহহিতা: ॥১॥ কামমালিত্য তৃশারং দস্তমানমদা-বিভা:। মোহাদ গুহীত্বাৎসদ্গ্রাহান প্রবর্তত্তেহভচিত্রভা:।।১০।। চিন্তাম-পরিমেরাঞ্চ প্রলরান্তামুপাঞ্জিতা:। কামোপভোগপরমা এতাবদিতি निक्ठिः ॥>>॥ ज्ञानानाननेटिज्यकाः कामत्काधनतामनाः। प्रेट्ट काम-एकार्गार्थमकारमनार्थमकमान्।। >२॥ देवमक मन्ना वक्तिमनः खान् एक मरनात्रथम्। ইদমন্ত্রীদমপি মে ভবিশ্বতি পুনধ নম্ ॥১ ।। অসে মরা হতঃ শক্ত বিল্ডে চাপ-রানপি। ঈশবোহ্মহং ভোগী সিদ্ধোহহং বলবান সুধী॥১৪॥ আড়ো-২ভিজনবানন্দ্ৰ কোহভোহতি সদৃশো মরা। বক্ষ্যেলান্ডামি মোদির ইত্যজ্ঞান-বিমোহিতা:।।১৫॥ খনেকচিত্তবিভ্রাস্তা মোহকালসমাবৃতা:। প্রস্কাঃ কামভোগের পতত্তি নরকেহওচে ।।১৬।। আত্মসম্ভাবিতাঃ গুৱা ধনমান-ষদাবিতা:। য**লভে নামবজৈতে দভেনাবিধিপূ**ৰ্বকম্ ॥১৭।। অহবারং বলং দর্পং কামং ক্রোধঞ্চ সংশ্রিতাঃ। মামাত্মপরদেহেরু প্রবিবস্তোহভ্যস্থরকাঃ।।১৮।। जानशः विवजः कृतान् नःनारत्रय् नताथमान्। किशामा व्यमण्डानाञ्चतीरवव ৰোনিয় ॥১৯॥ আহরীং বোনিমাপরা মৃঢ়া কমনি কমনি। মামপ্রাপ্যৈক कोरखब ज्ञान वान्त्रधमाः शिक्षम् ॥ १०॥ विविधः नवकरत्रकः वावः नानन-কাম: ক্রোধন্তথা লোভক্তমাদেভভ্রমং ত্যবেৎ ॥২১॥ কৌন্তের তবোবারৈশ্বিভিন্র:। আচরত্যাত্মন: শ্বেরততো বাতি পরাং গতিম ॥২২॥ বঃ শান্তবিধিমুৎক্লা বর্ত্ততে কামচারতঃ। ন স:সিদ্ধিনবাপ্লোতি

ন স্থং ন পরাং গতিষ্ ॥২৩॥ ভন্মাছান্তং প্রমাণত্তে কার্য্যাকার্য্যবহিতো। আদা শান্তবিধানোক্তং কর্ম কর্জুমিহার্হসি ॥২৪॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতারাং বৈরাসিক্যাং ভীম্বপর্বণি শ্রীমদ্ভগবদ্দীতাস্থপনিবৎস্থ ব্রশ্ববিভারাং বোগশাস্থে শ্রীকৃষার্জ্ন-সংবাদে দৈবাস্থ্রসম্পবিভাগবোগো নাম বোড়শোহধ্যারঃ।

#### সপ্তালেশাহপ্রায়ঃ

আৰ্জুন উবাচ। বে শাস্ত্ৰবিধিম্ৎক্জ্য বজন্তে প্ৰদ্ধাৰিতা:। তেবাং নিষ্ঠা তুকা কৃষ্ণ সন্ত্ৰাহে। রজন্তম:।।১॥

🕮 ভগবাসুবাচ। ত্রিবিধা ভবতি শ্রদ্ধা দেহিনাং সা স্বভাবনা। সান্ত্রিকী রাজনী চৈব তামনী চেতি তাং শুণু ॥২॥ সত্তামূরপা সর্বাস্থ প্রদা তবতি ভারত। अक्षामद्रार्द्रः शुक्रदा दा बहुकः म এव मः।।।। वक्रत्स मास्कि। দেবান্ বক্ষকাংসি রাজসা:। প্রেভান ভৃতগণাংক্তাক্তে বজত্তে তামসা জনা: #৪।। অশাস্থবিহিতং বোরং তপ্যস্তে বে তপো জনা:। দন্তাংকার-সংৰুক্তাঃ কামরাগবলাদ্বিতাঃ ॥ ।।।। কর্শন্নন্তঃ শরীরস্থং ভূতগ্রামনচেতসঃ। ষাকৈবাত্তঃশরীরত্বং তান্ বিদ্যান্তরনিশ্রনান্।।৬।। আহারত্বপি সর্বান্ত ত্রিবিধো ভবতি প্রিয়:। যক্তত্বপত্তবা দানং তেষাং ভেদমিমং শুণু ।।৭।। আয়ু:সত্ত্বলা-রোগ্যমুখপ্রীতিবির্দ্ধনা:। রক্তা: মিগ্ধা: স্থিরা হড়া আহারা: সান্তিক-প্রিয়া: ৷ ৮॥ কটু মূলবণা ভ্যুফতী কুরক্বিদাহিন: ৷ আহারা রাজসভেটা ছ:খশোকামরপ্রদা:।।৯।। বাতবামং গতরসং পৃতি পর্যুবিতঞ্চ বং। উচ্ছিট-মপি চামেধ্যং ভোজনং তামসপ্রিয়ম্ ॥১০॥ স্কলাকাজ্জিভির্জে। বিধি-দিটোৰ ইকাতে। বট্টব্যমেবেতি মনঃ সমাধার স সাজিক: ॥১১॥ অভি-সন্ধার তু ফলং দম্ভার্থমপি চৈব বং। ইকাতে ভরতশ্রেষ্ঠ তং ৰঞ্জং বিদ্ধি রাজ-मम्।।>२॥ विधिरौनमञ्होत्रः मञ्जरौनमनक्षिणम् । अक्षाविद्रहिष्ठः वक्षः जाममः পরিচক্ষতে ॥১৩॥ বেবৰিলগুরুপ্রাজপুর্বনং শৌচমার্জ্জবম্। ব্রন্মচর্য্যবহিংসা চ শারীরং ভপ উচ্যতে।।১৪॥ অহুৰেগকরং বাক্যং ৃসভ্যং প্রিরহিভঞ্ খাধারাভ্যসনকৈব বাঙ্মরং তপ উচ্যতে।। ১৫।। মন:প্রসাদ: সৌম্যাখং মৌন্যাখ্যবিনিগ্রহ:। ভাবসংওদিরিভ্যেতভ্তপো মান্সমূচ্যতে ।।১৬॥

**धक्का निवास एकः ७१७९ जिनिधः नरेतः। जक्नाकां क्रि**णिय् रिकः ্সান্ত্রিকং পরিচক্ষতে॥ ১৭॥ সংকারমানপূর্বার্থং তপো দল্ভেন চৈব বং। ক্রিয়তে তদিহ প্রোক্তং রাজসং চলমঞ্বম্।।১৮॥ মৃঢ্গ্রাহেণাত্মনো ৰৎ পীডরা ক্রিরতে তপঃ। পরভোৎসাদনার্থং বা তন্তামসমূদাহতম্।।১৯।। দাতব্যমিতি বন্দানং দীরতে২মূপকারিণে। দেশে কালে চ পাত্রে চ তদানং সাত্তিকং স্বতম্॥२०।। বতু প্রভ্যুপকারার্থং ফলম্দিখ বা প্ন:। मीव्रटक **ठ পরিক্লিষ্টং জদানং রাজ্ঞসং স্বতম্।।**२১॥ অদেশকালে यक्तांन-म्भारत्वष्ठाक मीत्ररत । व्यमश्रक्षकाव्य ज्ञाममभूमाञ्चम् ॥ २२ ॥ ७ ७९म-দিতি নিৰ্দেশো ত্ৰন্ধণন্তিবিধঃ স্বতঃ। ত্ৰান্ধণান্তেন বেদান্চ ৰজ্ঞান্চ বিহিতা: পুরা ।।২০॥ তত্মাদোমিত্যুদাত্মত্য বজ্ঞদানতপ:ক্রিয়া:। প্রবর্ত্তমে বিধানোক্তাঃ সততং ব্ৰহ্মবাদিনাম্।। ২৪।। তদিত্যৰভিসন্ধায় বজ্ঞতপঃক্রিবাঃ। দানক্রিবাশ্চ বিবিধাং ক্রিবন্তে মোক্ষকাব্রিভঃ॥২৫।। সম্ভাবে সাধুভাবে চ সদিত্যেতৎ প্রযুক্তাতে। প্রশস্তে কর্মণি তথা সক্তৰঃ পাৰ্থ যুজাতে।। ২৬।। যজে তপদি দানে চ স্থিতিঃ সদিতি চোচ্যতে। কর্ম চৈব তদর্থীরং সদিত্যেবাভিধীরতে ॥২৭।। অপ্রদরা হতং দত্তং তপন্তপ্তং কৃতঞ্চ য়ং। অসদিভাচ্যতে পার্থ ন চ তং প্রেভ্য নো ইহ ॥২৮॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতদাহস্র্যাং দংহিতারাং বৈরাদিক্যাং ভীম্নপর্বণি শ্রীমন্তগবন্দীতাস্পনিষংস্থ ব্রন্ধবিভারাং বোগশাল্পে শ্রীকৃষ্ণার্জ্বন-সংবাদে শ্রন্ধাব্রবিভাগবোগো নাম দপ্তদশোহধ্যারঃ।

#### অন্তাদ্দশোহপ্রায়ঃ

আৰ্জুন উবাচ। সন্ত্যাসক্ত মহাবাহো তত্ত্বমিছামি বেদিতুম্। ত্যাগক্ত চ ক্ৰীকেশ পুথক্ কেশিনিস্দন ॥ ১ ॥

শ্রীভগবাছবাচ। কাম্যানাং কর্মণাং ক্যাসং করাসং কররো বিছঃ।
সর্মকর্মফলত্যাগং প্রাহত্যাগং বিচক্ষণাঃ ॥ ২ ॥ ত্যাব্যাং দোষবদিত্যেকে
কর্ম প্রাহর্মনীবিণঃ। বজ্ঞদানতপং কর্ম ন ত্যাব্যামিতি চাপরে ॥ ৩ ॥ নিক্রমং
শৃণ্ মে তত্ত্ব ত্যাগে ভরতসন্তম। ত্যাগো হি পুরুষব্যাম ত্রিবিধঃ সম্প্রান্তিতঃ ॥ ৪ ॥ বজ্ঞদানতপংকর্ম ন ত্যাব্যাং কার্য্যায়ের তং । বজ্ঞো দানং

ভপদৈৰ পাৰনানি মনীঘিণাম্॥ ৫॥ এতাভপি তু কৰ্মাণি দকং তাকু। ফলানি চ। কর্ত্তব্যানীতি যে পার্থ নিশ্চিতং মতমূত্রমন্॥ ७॥ নিয়তত তৃ সম্যাসঃ কর্মণো নোপসভতে। মোহাতত পরিত্যাগভাষসঃ পরিকীর্ষিতঃ॥ १॥ তু:খমিত্যের বং কর্ম কারক্লেশভরা<mark>ন্ত্যক্রেং। স রুতা রাজসং ত্যাগং নৈ</mark>ব ভ্যাগফলং শভেৎ॥৮॥ কাৰ্যামিভ্যেব ৰৎ কৰ্ম নিয়ন্তং ক্ৰিয়তেহৰ্জুন। সৃদং ত্যক্তা ফলঞ্চৈব স ত্যাগঃ সান্ধিকো মতঃ॥ > ॥ ন ৰেষ্ট্যকুশলং কৰ্ম কুশলে নাধ্ৰজ্জতে। ত্যাগী সন্তুসমাবিষ্টো মেধাৰী ছিল্লসংশয়:॥ ১০॥ ন হি দেহভূতা শক্যং ভ্যক্তবুং কর্মাণ্যশেষতঃ। বস্তু কর্মফলত্যাগী স ত্যাগীত্যভিধীয়তে॥ ১১॥ শনিষ্টমিষ্টং মিল্লঞ্চ জিবিধং কর্মণ: ফলম্। ভবত্যত্যাগিনাং প্রেত্য ন তু मद्यामिनाः किरिया प्रदेश अटक्यानि महावादश कावशानि निर्वाध रय। সাম্ব্যে কুতান্তে প্রোক্তানি সিদ্ধরে সর্বাকর্মণাম্ । ১৩॥ স্বিষ্ঠানং তথা কর্ত্তা क्रवण्क शृथियम्। विविधान्त शृथक् क्रिहा देनवर्दकवाळ शक्षमम्॥ ১৪ ॥ अजीत-বান্মনোভির্বৎ কর্ম প্রারন্ধতে নর:। স্থাব্যং বা বিপরীতং বা পঞ্চৈতে ডক্ত হেতব: । ১৫॥ তত্ত্বৈং সতি কর্ত্তারমাত্মানং কেবলম্ভ য:। পশুত্যকৃত-বুদ্ধিশার স প্রভাতি হর্মতি:॥১৬॥ বন্ত নাহহুতো ভাবো বৃদ্ধিবন ন লিপ্যতে। হন্দাপি স ইমালে কাল হন্তি ন নিবধ্যতে ॥ ১৭ ॥ আনং জেরং পরিক্ষাতা ত্রিবিধা কর্মচোদনা। করণং কর্ম্ম কর্ত্তেতি ত্রিবিধঃ কর্মসংগ্রহ: ॥১৮॥ कानः कर्य ह कर्छ। ह ब्रिटेश्व खन्एक्क छः। दशहार् खन्मस्यादन व्यावक्रु श् তাম্বপি ॥ ১৯॥ সর্বাভূতের বেনৈকং ভাবমব্যরমীকতে। অবিভক্তং বিভক্তেষু তজ্ঞানং বিদ্ধি সাধিকম্॥ ২০॥ পৃথক্তেন তু বজ্ঞানং নানা-ভাবান পৃথিধান। বেত্তি সর্কোয় ভূতের তক্তানং বিদ্ধি রাজসম্॥২১॥ ৰভ ুকংলবদেক নিন্কার্যো সক্তমহৈতৃকম্। অতত্বার্থবদরক তত্তামসমূদ।-হৃতম্। ২২ । নিরভং সঙ্গরহিতমরাগবেষতঃ কৃতম্। অফলপ্রেপ্র্ন। কর্থ ৰভৎ সাত্তিকম্চ্যতে ॥ ২০॥ বভু কামেপসুনা কর্ম সাহকারেণ বা পুন:। कित्रटं वहनात्रामः छजाकममूनाक्ष्ठम् ॥ २८ ॥ **चन्नवद्यः कत्रः हिः**मामनटनका চ পৌক্ষন্। মোহাদারভ্যতে কর্ম বত্তভামণমূচ্যতে ॥ ২৫॥ মৃক্তনজো-২নহংবাদী ধুত্যুৎসাহসম্বিতঃ। সিদ্ধাসিদ্ধোর্নিবিকারঃ কর্তা সাবিক উচ্যতে । ২৬ । রাগী কর্মফলপ্রেপ সূর্বে। হিংসান্মকো২ওচি:। হর্মশোকা-बिष्ठः कर्छ। त्राव्यमः পরिकोखिष्ठः॥ २१॥ व्यवृक्तः श्वाङ्गः खदः मर्द्धाः देनकृषि-কোংলসঃ। বিবাদী দীৰ্ঘস্ত্ৰী চ কঠা ভাষস উচ্যতে॥ ২৮॥ বুছের্ভেন্

बुट्डटेम्प्रेन अन्डिशिविशः मृष्। द्योग्रज्ञानमरमासन नृथक्रमा समझह ॥ २० ॥ প্রবৃত্তিক নিবৃত্তিক কার্য্যাকার্ব্যে ভরাভকে। বন্ধং নোকক বা বেভি বৃদ্ধি: সা পার্থ সাজিকী॥৩•॥ বরা ধর্মমধর্মক কার্য্যঞাকার্য্যবের চ। অবধারৎ প্রকানাতি বৃদ্ধি: সা পার্থ রাজসী ॥ ৩১ ॥ অধর্মং ধর্মমিতি বা মলতে তমসা-বুতা। সর্বাধান বিপরীতাংক বুদ্ধি: সা পার্থ তামসী॥ ৩২॥ ধারয়তে মনঃপ্রাণেক্রিয়ক্তিয়া:। বোগেনাব্যভিচারিণ্যা ধৃতি: সা পার্ব দান্তিকী॥৩০॥ বরাভূ ধর্মকামার্থান্ রুড়্যা ধাররতেহর্জুন। প্রদক্ষেন कनाकांख्यी पृष्ठिः ना भार्थ बाक्यमी॥ ७८॥ यदा पश्रः उद्यः त्यांकः विवापः মদমেব চ। ন বিষুঞ্জি ছুৰ্শ্বেধা ধুজি: সা পাৰ্থ ভাষসী ॥ ৩৫ ॥ সুথবিদানীং ত্রিবিধং শুণু মে ভরতর্বভ। অভ্যাসাত্রমতে যত্র ছঃখান্তঞ্চ নিগছভি॥ 🤏॥ ৰভদত্যে বিষমিব পরিণামে২মুতোপমম্। তৎ স্থং সান্ত্বিং প্রোক্তমাত্ম-वृक्तिश्रामिक्य्॥ ७१॥ विषद्विश्वनश्रवात्रीम् बढम्दश्रभुर्द्धार्थमम्। श्रविनारम বিৰমিব তৎ সুথং রাজসং স্বভম্॥ ৩৮॥ স্বদগ্রে চাত্রবন্ধে চ সুথং মোছন-মাজন:। निजानज्ञश्रमारमाथः उदायमगूमाज्ञञ् ॥ ०० ॥ न उपछि পृथिवााः বা দিবি দেবেষু বা পুনঃ। সন্ত্য প্রকৃতিকৈষু ক্তং বদেভিঃ ভালিভিও লৈঃ ॥৪০॥ ব্রাহ্মণক্রিয়বিশাং শূলাণাঞ্চ পরস্তপ। কর্মাণি প্রবিভক্তানি স্বভাবপ্রভবৈ-গুলি: ॥ ৪১ ॥ খামো দমশুপঃ শৌচং কান্তিরার্জ্জবমের চ। আনং বিজ্ঞান-ষান্তিক্যং ব্ৰশ্বকৰ্ষ অভাবজন্॥ ৪২॥ শৌৰ্য্যং তেজো ধৃতিক্ৰাক্ষ্যং বৃদ্ধে চাপ্য-পলারনষ। দানমীখরভাবত কাত্রং কর্ম অভাবত্রম্ ॥ ৪৩ ॥ কৃষিগোরকা-বাণিজ্যং বৈশ্রকর্ম স্বভাবজম্। পরিচর্য্যাত্মকং কর্ম শূদ্রস্থাপি স্বভাবজম্ ॥ ৪৪ ॥ খে খে কর্ম্মণ্যভিরত: সংসিদ্ধিং লভতে নর:। স্বকর্মনিরত: সিদ্ধিং বর্ণা বিক্ষতি তচ্চুণু॥ ৪৫॥ যতঃ প্রবৃদ্ধিত্বানাং বেন সর্বমিদং ততম্। স্বকর্মণা তমভ্যক্তা সিদ্ধিং বিন্দতি মানব:॥ ৪৬॥ শ্রেমান অধর্মো বিগুণ: পরধর্মাৎ ৰম্প্ৰিতাং। বভাবনিয়তং কৰ্ম কুৰ্মনাপ্ৰোতি কিৰিবম্॥৪१॥ সহলং কৰ্ম कोटकत मरमायमि न छारबर। मर्कात्रका हि सारवर शुरमनावितिया-বৃতা: । ৪৮ ॥ অসক্তবৃদ্ধি: সর্বত জিভাত্মা বিগতস্গৃহ:। বৈদর্শ্যসিদিং পরমাং সন্ন্যাসেনাধিগচ্চতি ॥ ৪৯ ॥ সিদ্ধিং প্রাপ্তো বর্ণা বন্ধ তথাপ্লোতি नयारमदेनव दकोरखन निर्मा जानच वा भन्ना ॥ १०॥ वक्ता বিভদ্ধনা যুক্তো ধৃত্যান্দানং নিম্নস্য চ। শবাদীন্ বিষয়াংখ্যঞ্। রাগবেনৌ . स्रुप्त ह ॥ ८२ ॥ विद्विकत्मवी नव् नि वर्डविकामान्यः। शानत्वामनता

निछार देवताश्रार नवृशिक्षिष्ठः ॥ ८२॥ । चहकात्रः वनर मर्गर कांगर ক্রোবং পরিগ্রহন্। বিষ্চ্য নির্দান শাস্তো বন্ধভূয়ার করতে। ৫০। বৰ্ষ্তঃ প্ৰসন্নাত্মা ন শোচতি ন কাজতি। সমঃ সর্কেষ্ ভূতেষ্ মন্তজিং গভতে পরাম্ ॥ ৫৪ ॥ ভক্ত্যা মামভিজানাতি বাবান বন্চান্মি ভত্তঃ। ততো মাং ভত্ততো ভাতা বিশতে তদনন্তরম্ । ৫৫ । সর্বকর্মাণ্যপি সদা কুর্বাণো মহাপাশ্রয়:। মংপ্রসাদাদবাপ্রোতি শার্থতং পদ্মব্যর্ম্ ॥ ৫৬ ॥ চেতসা সর্ক-কর্মাণি মরি সম্বান্ত মৎপর:। বুদিবোপমূপালিত্য মচ্চিত্ত: সভতং ভব ॥ ৫৭ ॥ मिक्काः मृक्ककृतीनि मश्यानाखित्रश्चिता अप तिस्महकातात्र त्याश्चित বিনজ্জানি॥ ৫৮॥ বদ্হশ্বারমাপ্রিত্য ন বোৎস্ত ইতি মন্তবে। মিথ্যৈ ব্যবসায়তে প্রকৃতিত্বাং নিবোক্সতি॥ ৫৯॥ স্বভাবজেন কৌন্তের নিবদ্ধ: ব্যেন কর্মণা। কর্ত্তঃ নেচ্ছসি বন্ধোহাৎ করিয়ন্তবশোহপি তৎ॥ ৬০ ॥ ঈশরঃ সর্বভূতানাং হদেশেহর্জুন তিঠতি। ত্রাময়ন্ সর্বভূতানি বছার্চানি মায়য়। ॥৬১॥ তমেব শরণং গচ্ছ সর্বভাবেন ভারত। তৎপ্রসাদাৎ পরাং শান্তিং স্থানং প্রাক্সাসি শাখতম্ ॥ ৬২ ॥ ইতি তে জ্ঞানমাখ্যাতং গুহাদ গুহুতরং ময়। বিষ্ঠৈতদশেষে বৰেচ্ছিদি তথা কুকু ॥ ৬০ ॥ সর্ব্বগুহুতমং ভূমঃ শৃণু মে পরমং বচঃ। ইষ্টোহসি মে দুচ্মিতি ভতো বক্ষ্যামি তে হিতম্॥ ৩৪॥ মন্মনা ভব মন্তজ্যে মদ্যানী মাং নমস্কুর । মামেবৈয়সি সত্যং তে প্রতিকানে প্রিয়োৎসি मि ॥ ७६ ॥ नर्वधर्मीन शतिष्ठाका मारमकः भत्रभः बक् । कहः द्वाः नर्वः পাপেভ্যো মোক্ষরিয়ামি মা ওচ:॥ ৬৬॥ ইদন্তে নাতপন্থার নাভক্তার কদা-চন। ন চাওখ্ৰবে বাচ্যং ন চ মাং বোহত্যস্ত্ৰতি॥ ৩৭॥ ব ইদং প্রমং গুহুং মন্তক্তেদভিধাশুতি। ভক্তিং মন্ত্রি পরাং ক্রন্তা মার্মেবৈয়ত্যসংশয়ঃ ॥ ৬৮ ॥ ন চ তত্মামহয়ের কন্টিমে প্রিয়ক্তম:। ভবিতা ন চ মে তত্মাদরুঃ প্রিয়তরো जूदि॥७৯॥ व्यासम्बद्ध हम हेमः धर्माः मःवानमावटबाः। তেনাহমিট: ভামিতি মে মতি:॥ ৭০॥ প্রশ্নাবাননস্থ শৃণুরাদপি বে। নর:। সোহপি মৃক্তঃ ওভারে কান প্রাপুরাৎ পুণ্যকর্মণাম্। ৭১॥ কচ্চি-দেতৎ শ্রতং পার্থ ছবৈকাগ্রেণ চেত্রসা। কচিনকানসম্মোহ: প্রণষ্টত্তে धनअव ॥ १२ ॥ 🕆

আৰ্জুন উবাচ। নষ্টো মোহ: শ্বভিদ রা স্বংপ্রসাদাররাচ্যত। স্থিতো-২শি গভসন্দেহ: করিছে বচনং ভব॥ ৭৩॥

্ সঞ্জউৰাচ। ইত্যহং বাস্থদেবক্ত পাৰ্থক চমহাত্মনঃ। স্কুবাদমিননপ্ৰৌৰমভূতঃ

লোমহর্বণম্॥ १৪॥ ব্যাসপ্রসাদাৎ শ্রুতবানিমং গুরুমহং পরম্। বোগং বোগেশরাৎ ক্লঞাৎ সাক্ষাৎ কথরত: অরম্ ॥৭৫॥ রাজন্ সংখ্তা সংখ্তা সংবাদমিমমভূতম্। কেশবার্জ্নরো: পূণ্যং স্থামি চ মূহ্মূহ:॥ १७॥ ভচ্চ সংখ্তা সংখ্তা রূপমতাভূতং হরে:। বিশ্বরো মে মহান্ রাজন্ ক্যামি চ পূন: পূন:॥ ११॥ যত্ত বোগেশর: ক্ষো যত্ত পার্থো ধহর্জর:। তত্ত প্রবিজ্বরো ভূতিঞ্বা নীতিম্তিম্ম॥ ওঁ॥ १৮॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাং সংহিতায়াং বৈরাসিক্যাং ভীশ্বপর্বাণ শ্রীমন্ভগবন্দীতাস্পনিষৎস্থ বন্ধবিভারাং বোগশান্ত্রে শ্রীকৃষ্ণার্জ্ন-. সংবাদে মোক্ষবোগো নাম অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ।

সমাপ্তং গীতাপর্ব

# গীতা-**মাহা** স্থ্যম্।

ক্ষিক্ৰাচ। গীভারাকৈৰ নাহান্ত্যং ৰথাবৎ হুত মে বদ। পুরা নারারণ-ক্ষেত্রে ব্যাসেন মুনিনোদিতম্ ॥ ১॥

স্ত উবাচ। ভদ্রং ভগবভা পৃষ্টং ৰদ্ধি ওপ্ততনং পরন্। শক্যতে কেন তৰ্জ; গীতামাহাত্মমৃত্যমৃ ॥ ২ ॥ ক্ষেণ জানাতি বৈ সম্যক্ কিঞ্চিৎ কুতীস্থতঃ ফলম্। ব্যাসো বা ব্যাসপুত্রো বা বাজবহ্যোহধ चार धंदनकः अचा तनः मश्नेश्वत्र ह। মৈথিক: ॥ ৩ ॥ কিঞ্চিলাম্যত্র ব্যাসভাভাগর। শৃতম্ ॥ ৪ ॥ সর্কোপনিবলো গাবে। লো**রা** গোপালনন্দন:। পার্থে বৎস: সুধীর্ভোক্তা হৃত্তং গীতামৃতং মহৎ ॥ e ॥ সার-थामर्क्नणाति वृक्तन् श्रीवामृवः नत्तो । तामवत्त्राभकातात्र व्टेन इकाश्वत নম:॥ ७॥ সংসারসাগরং বোরং তর্জু মিচ্ছতি বো নর:। গীতানাবং সমা-সাছ পারং ৰাতি স্থবেন স:॥ १॥ গীতাঞ্চানং শ্রুতং নৈব সদৈবাভ্যাসবোগত:। নোক্ষমিছতি মূঢ়াআ বাতি বালকহাত্তাম্যাদ্যা বে শৃথতি পঠত্তাব গীভা-শাস্ত্রমন্নিশ্ন। ন তে বৈ মাত্রা জেরা দেবরপা ন সংশরঃ ॥ ১॥ कार्त्वन मरशांशः कृषः श्राहार्क्वनात्र दे । एक्टिंग्सः भतः एव मस्ताः ताथ নির্ভাগমৃতি বৈ ॥ ১০ ॥ সোপানাষ্টাদলৈরেবং ভক্তিমৃত্তিসমৃতি তৈ: । ক্রমশক্তিতভি তাৎ প্রেমভক্ত্যাদিকর্মস্থ ॥ ১১ ॥ সাধোর্গীতান্তসি স্নানং সংসারমলনাশনম। প্রদাহীনন্ত তৎ কার্য্য: হস্তিস্নানং বুথৈব তৎ॥ ১২॥ গীভায়াক ন জানাভি **পঠनः निव পঠिनम्। म এव माश्र्य लाक्क स्थापक पंकरता छत्वर ॥ ১० ॥** ৰশাদ্যীতাং ন জানাতি নাধ্যভংপরো জন:। ধিক্ ভক্ত মামুখং দেহং বিঞানং কুলনীলতাম্॥ ১৪॥ গীতার্থং ন বিজ্ঞানাতি নাধমন্তৎপরে। জন:। ধিক্ শরীরং ওভং শীলং বিভবস্তদ্গৃহাশ্ৰমম্॥ ১৫॥। গীতাশাস্ত্রং ন জানাতি নাধমন্তৎপরে। জন:। ধিক্ প্রারক্কং প্রতিষ্ঠাঞ্ পূকাং দানং মহস্তমম্॥ ১৬॥ গীতাশাত্রে মতিন'ান্তি সর্বাং তরিফলং ব্রগুঃ। ধিক্ তক্ত জানদাতারং ব্রতং নিষ্ঠাং তপো ৰশ:॥ ১৭॥ গীতাৰ্থপঠনং নান্তি নাধ্যত্তৎপরো জন:। গীতাগীতং ন বজ-ূজানং তৰিদ্ধাস্থ্রসম্বতম্॥ তমোদং ধর্মরহিতং বেদবেদাস্তর্গহিতম্॥ ১৮॥ ভত্মাদ্রশ্মরী গীতা সর্বজ্ঞানপ্রযোজিকা। সর্বশাল্পদারভূতা বিভদ্ধা সা বিশিষ্যতে।। ১৯॥ বোহধীতে বিষ্ণুপর্কাহে গীতাং শ্রীহরিবাসরে। স্বপন্ জাগ্রচ্চলংখিষ্ঠন শক্রভিন স হীয়তে ॥२०॥ শালগ্রামে শিলায়াং বা দেবাগারে

শিবালয়ে। তীর্বে নভাং পঠেন গীতাং সৌভাগ্যং লভতে গ্রুবন ॥ ২১ ॥ रहवकीनन्त्रनः इरका शैषांगार्कन पूराणि। यथा न व्यक्तिगतन रक्किन-ব্ৰভাৰিভি: । ২২ । গীতাধীতা চ বেনাপি ভক্তিভাবেৰ চেত্ৰা। পুরাণানি তেনাধীতানি সর্ব্বশ:॥ ২০॥ ধোগস্থানে সিদ্ধপীঠে শিলাঞ্জে সং-সভাস্ক চ। বজে চ বিষ্ণুভজ্ঞাগ্রে পঠন সিদ্ধিং পরাং লভেৎ ॥ ২৪ ॥ भाक्रेक धारनः व: करवां जि मित्न मित्न । क्रजर्ता वां किरमधानाः क्रजारचन সদক্ষিণা: য় ২৫ ॥ ব: শূণোতি চ গীতার্থং কীর্ত্তরত্যের বং পরস্ ৷ প্রাবরেচ্চ পরার্থং বৈ স প্ররাতি পরং পদ্ম। ২৬॥ সীভারা: পুত্তকং শুদ্ধং বোহর্পরত্যেব সাদরম। বিধিনা ভক্তিভাবেন তক্ত ভার্যা প্রিরা ভবেৎ । ২৭॥ বশঃ দৌভাগ্যমারোগ্যং বভতে নাত্র সংশয়:। দ্বিতানাং প্রিয়ো ভূষা পর্যং স্থধ-মধুতে ॥ ২৮ ॥ অভিচারো ছবং ছঃখং বরশাপাগতঞ বং। নোপসপ্তি তত্ত্বৈব ষত্ত্ব সীভার্চ্চনং গৃহে॥ ২৯॥ তাপত্রনোম্ভবা পীড়া নৈব ব্যাধির্ভবেৎ कितिर। न भोरिशा निव शांशक प्रशिक्त विकास न ह ॥ ৩० ।। विस्कारिका करवा **८** एटर न वांथरस कनाठन। नएड९ इस्रथरम माजः छक्तिकाविन ণীম।। ৩১।। স্বায়তে সভতং স্থাং সর্বাজীবগণৈ: সহ। প্রারক্ষং ভূজতো বাপি গীভাভ্যাসরতন্ত চ। সমৃক্ত: স কুখী লোকে কর্মণা নোপলিপ্যতে ॥ ৩২॥ মহাপাপাতিপাপানি গীতাধ্যায়ী করোতি চেৎ। ন কিঞ্চিৎ স্পুঞ্তে তত্ত নিবিনীদ্দমন্ত্রসা ।। ৩৩ । অনাচারোম্ভবং পাপমবাচ্যাদিকতঞ্চ বং । অভক্ষা-**छक्कः (हारमण्डेर्णकः छथा।। ७३।। खानाकानङ्** निर्धामिक्किरेहर्किन-एक वर । जरमर्बर नामबाद्यां जिलाशास्त्रिन जरक्यार ॥ ०६ ॥ मर्खेब श्रावि-ভোক্তা চ প্রতিগ্রন্থ চ সর্বাশঃ। গীতাপাঠং প্রকুর্বাণো ন নিপ্যেত কলা-চন।। ৩৬॥ রত্বপূর্ণাং মহীং সর্বাং প্রতিগৃহাবিধানত:। সীতাপাঠেন চৈকেন ওদ্ধক্ষটিকবৎ সদা।। ৩৭।। বস্তান্তঃকরণং নিজ্যং গীতায়াং রমতে সদা। সাগ্লিক: সদা জাপী ক্রিয়াবানু স চ পণ্ডিত: ॥ ৩৮ ॥ দর্শনীয়: স ধনবান স যোগী জ্ঞানবানপি। দ এব যাজিকো বাজী সর্কবেদার্থদর্শকঃ ॥ ৩৯/॥ গীতায়াঃ পুত্তকং বত্ত নিত্যপাঠক বৰ্ততে। তত্ত্ব সৰ্বাণি তীৰ্থানি প্ৰয়াগানীনি कुछत्न।। 80 ।। नियमिक मना त्मरह तम्हत्मत्वरूपि मर्का। मर्द्ध तमराक পাৰ্ধনৈ:। সহাৰে: জায়তে শীভাং বত্ৰ গীতা প্ৰবৰ্ত্ততে।। ৪২ ।। বত্ৰ গীভাবিচাৰুদ্ৰ পঠনং পাঠনং তথা। মোদতে তত্ত্ব শ্রীক্ষেষ্ট ভগবান রাধরা সহ ॥ ৪৩॥

এভিগবাহবাচ। স্বীভা মে হৃদয়ং পার্থ স্বীভা মে সারমূত্রদন্। স্বীভা মে জ্ঞানমত্যগ্ৰং গীতা মে জ্ঞানমব্যৱস্থা ৪৪।। গীতা মে চোড্ৰমং স্থানং গীতা মে পরমং পদম্। সীতা মে পরমং গুহুং সীতা মে পরমো গুরু:।। ৪৫ ॥ গীতাখ্রমেংহং তিঠামি গীতা মে পরমং গৃহম্। গীতাজ্ঞানং সমাধ্রিত্য ত্রিলোকীং পালয়াম্যহম্॥ ৪৬॥ গীতা মে পরমা বিভা ব্রহ্মরূপা ন সংশয়:। আর্ছ-মাত্রাহরা নিত্যমনির্বাচ্যপদান্ত্রিকা॥ ৪৭॥ গীতানামানি বক্যামি গুঞ্জানি मुन भाखन। कीर्जनार मर्सभाभानि विनयः वास्ति जरकनार ॥ १৮॥ भना গীতা চ দাবিত্রী সীতা সত্যা পতিবতা। ব্রহ্মাবলির মবিষ্টা ত্রিসন্ধ্যং মৃক্তি-পেহিনী॥৪৯॥ অর্দ্ধমাত্রা চিতা নন্দা ভবন্নী প্রান্তিনাশিনী। বেদত্ত্রী পরা-নন্ধ তত্ত্বাৰ্থজ্ঞানমঞ্জরী। ৫০॥ ইত্যেতানি কপেন্নিত্যং নরো নিশ্চলমানসঃ। कानिमिक्तः नटकन्निजाः ज्याटिक भत्रमः भनम्॥ ८১॥ भार्टिक्ममर्यः मण्णूर्व जमकः शिव्याष्ट्रदर्। जमा श्रीमानकः भूगः गखरु नाज मःनवः॥ e२॥ ত্রিভাগং পঠমানস্ত সোমযাগফলং লভেৎ। বড়ংশং জপমানস্ত গলামানফলং नएस्। ८०॥ ७थोशाप्रदेशः निष्ठाः পঠमान्। नित्रस्वत्रम्। हेखरमाकम्या-প্লোতি কল্পমেকং বসেদ্ গ্রুবম্ ॥ ৫৪ ॥ একমধ্যারকং নিত্যং পঠতে ভক্তি-সংযুতঃ। কুলুলোকমবাপ্লোতি গণো ভূতা বসেচ্চির্ম॥ ৫০॥ অধ্যায়ার্ক পাদং বা নিড্যং যঃ পঠতে জনঃ। প্রাপ্নোতি রবিলোকং স মন্বন্তরসমাঃ শতম্॥ ৫৬॥ গীতায়াঃ স্নোকদশকং সপ্ত পঞ্চ চতুইয়ম্। ত্রিব্যেক্মেকমর্কং বা শ্লোকানাং যা পঠেরব:। চক্রলোকমবাপ্রোভি বর্ধাণামযুভস্কণা॥ ৫৭॥ গীতার্থমেকপাদঞ লোকমধ্যায়মেব চ। শারংত্যকা জনো দেহং প্রশাতি পরমং পদম্॥ ৫৮॥ গীতার্থমিপি পাঠং বা শৃণুয়াদস্তকালতঃ। মহাপাতক-যুক্তোহপি মুক্তিভাগী ভবেজনঃ ॥ ৫৯ ॥ গীতাপুত্তকগংযুক্তঃপ্রাণাংস্কাঞ্চা প্রন্নতি য:। স বৈকুণ্ঠমবাপ্নোতি বিষ্ণুনা সহ মোদতে॥ ৬০॥ স্বীতাধ্যান্ত্র-সমাযুক্তো মৃতো মানুষভাং ব্রন্তেং। গীতাভ্যাদং পুন: কৃতা লভতে মুক্তিমুন্তমান্॥ ৬১॥ গীতে হ্যুচ্চারসংবৃক্তে বিরমাণে। পতিং লভেৎ। বদ্বৎ কর্ম চ সর্বাত্ত গীতাপাঠপ্রকীর্তিমং। তত্তৎ কর্ম চ নির্দ্ধোষং ভূতা পূর্বত্ত-মাপুরাং॥ 🛶 ॥ পিতৃহ্দিত যা লাকে গীতাপাঠং করোতি হি। সভ্টা: পিতরস্তত্ত নিরমান বান্তি অর্গতিন্। ৬০ । গীতাপাঠেন সন্তুরাঃ পিতরঃ আছ-তর্গিতা:। পিতৃলোকং প্রয়াস্কোব পুলানীর্বাদতৎপরা:॥ ৬৪ ॥ গীতাপুত্তক-দানঞ্চ ধেমুপুদ্ধসমন্বিতম। কৃষা চ তদিনে সমাক্ কৃতাৰ্থো আহতে

ৰন:॥ ৬৫॥ পুত্তকং হেমদংযুক্তং গীতারা: প্রকরোতি ব:। দত্তা বিপ্রান্ত বিছবে জায়তে ন পুনর্ভবম্॥ ৬৬॥ শতপুত্তকদানঞ্চ গীতায়াঃ প্রকরোভি ব:। স যাতি ব্ৰহ্মসদনং প্ৰরাবৃতিত্বভিন্। ৬৭॥ গীতাদানপ্রভাবেণ সপ্তকল্প-ষিতাঃ সমা:। বিষ্ণুলোকমবাপ্যান্তে বিষ্ণুনা সহ মোদতে॥ ৬৮॥ সমাক্ 🖛 বা চ গীতার্থং পুত্তকং যঃ প্রদাপয়েং। তদ্মৈ প্রীতঃ শ্রীভগবান দদাতি মানসেপ্সিতম্ ॥ ৬৯।। দেহং মামুৰমাম্রিত্য চাতুর্বর্ণ্যের ভারত। ন শুণোতি ন পঠতি গীতামমৃতরূপিণীম্। হস্তাভ্যস্থামৃতং প্রাপ্তং স নরে। বিষমন্তে।। ৭০।। জন: সংসারত্ঃধার্ত্তো গীভাজ্ঞানং সমালভেৎ। পীতা গীতামৃতং লোকে লব্ধা ভক্তিং সুখী ভবেৎ।। ৭১।। গীতামাভিত্য বহবে। ভূভূজো জনকাদর:। নিধৃতিকলাবা লোকে গভাল্তে পরমং পদম্॥ १২॥ গীতাস্থ ন বিশেষোহ**তি জ**নেষ্চারকেষ্চ। জ্ঞানে**ত্বে সমগ্রেদ সমা এন্দ**-স্বরূপিণী॥ ৭৩॥ বোহভিমানেন গর্ব্বেণ গীতানিক্ষাং করোভি চ। স বাভি নরকং ঘোরং বাবদাভূতসংপ্রবম্॥ ৭৪ ॥ অহঙ্কারেণ মূঢ়ান্দা গীতার্থং নৈব মক্ততে। কুন্তীপাকেষু পচ্যেত যাবৎ কল্লকরো ভবেৎ। ৭৫॥ গীতার্থং वाह्यमानः (य। न भृत्वां जि म्योभण्डः। म भृकत्रख्वाः त्यानिमत्नकामधि-গচ্ছতি। ৭৬। চৌৰ্য্য: কুলা চ গীতারা: পুস্তকং ব: সমানয়েৎ। ন তম্ভ সকলং কিঞ্চিৎ পঠনঞ্চ বুথা ভবেৎ॥ १९॥ यः শ্রুতা নৈব গীতার্থং মোদতে পরমার্বতঃ। নৈব তক্ত ফলং লোকে প্রমন্তক্ত মধা এম:॥ ৭৮॥ গীতাং শ্রত্বা হিরণ্যঞ্চ ভোজ্যং পট্টাম্বরং তথা। নিবেদরেৎ প্রদানার্থং প্রীতয়ে পরমাত্মন: ॥ १৯ ॥ বাচকং পৃক্তরেভজ্ঞা দ্রব্যবন্ত্রাত্যুপস্করে:। অনেকৈব্রধা প্রীত্যা তুম্বতাং ভগবান্ হরি:॥৮०॥

স্ত উবাচ। মাহাত্মানেতদনীতারা: রক্ষপ্রোক্তং পুরাতনম্। সীতান্তে গঠতে বস্ত বথোক্তফলভাগ্ ভবেৎ॥৮১॥ সীতারা: পঠনং রুখা মাহাত্ম্যং নৈব বং পঠেৎ। বুথা পাঠফলস্কুত্ম শ্রম এব উদাহতঃ॥৮২॥ একমাহাত্মা-সংষ্ক্রং সীতাপাঠং করোতি বং। শ্রমরা বং শৃণোত্যেব পরমাং গতিমাপুরাৎ॥৮৩॥ শ্রম্বা গীতামর্ব্যুক্তাং মাহাত্ম্যং বং শৃণোতি চ। তত্ত পুণাঞ্চলং লোকে ভবেৎ সর্বস্থাবহম্॥৮৪॥

ইডি ঐবৈক্ষবীরভন্তসারে শ্রীমন্তগবদগীতাসাহাত্ম্যং সমাপ্তম্। ওঁ তৎসং ॥ শিবমন্ত ॥ ওঁ তৎসং ॥+॥



# চণ্ডীপাঠ-সঙ্কল্লাদয়ঃ

পুণ্যাহবাচনাদি—ও কর্তব্যহিন্দি । সকং ( ত্রিঃপঞ্চাবৃত্তি ইত্যাদি ) দেবীমাহাস্মাপাঠকর্মণি ও পুণাহং ভবস্তো ক্রবন্ধ ( বারত্ত্রেরং পাঠ্যম্ ) এবং স্বন্ধি
ভবস্তো ক্রবন্ধ, ঝিছা ভবস্তো ক্রবন্ধ। ততো বথাবেদং স্বন্ধিস্ক্তং স্থ্যঃ
সেম ইত্যাদি চ পঠিছা কুশ-তিল-পুশ্বন্ধপূর্ণং তাত্রপাত্ত্রমাদার উদ্বৃধ্যঃ
সকল্পের্ণ, বথা—

বিষ্ণুরোম্ তৎসৎ ওঁ অন্ধ অমৃকে মাসি (অমৃকরাশিন্থে ভাররে)
অমৃকে পকে অমৃকতিপৌ অমৃকগোত্র: প্রীঅমৃকদেবশর্মা অমৃককলকামঃ
অথবা প্রীচন্ত্রীপ্রীতিকামঃ প্রীক্ষকবৈপারনাভিধানমহর্ষি-বেদব্যাস প্রোক্ত-জরাখ্যমার্কণ্ডের-পুরাণান্তর্গত-সাবর্ণিক-মন্বন্ধরীর-ওঁ "মার্কণ্ডের উবাচ, সাবর্ণিঃ পূর্ব্যতনরো যো মহুঃ কথ্যতে২ন্টম" ইত্যাদি "স্ব্যাজ্জর সমাসান্ত সাবর্ণিভবিতা
মহু"রোমিত্যন্তদেবী-মাহাত্ম্য-প্রকাশকগ্রহক্ত একার্ত্তি (ব্যাবৃত্তি ত্রাবৃত্তি
পঞ্চাবৃত্তি বা বিঃ তিঃ পঞ্চরুষ ইত্যাদি) পাঠমহং করিছে। (পরার্ণে অমৃকপোত্রক্ত অমৃকক্ত করিয়ামি ইতি বিশেষঃ। দক্ষিণাবাক্যঞ্চাপি অনেনৈব
প্রকারেণ রচন্নিতব্যম্)।

# অথ চ**্ছীপাইক্রম**ঃ চ**ণ্ডীপূলা**বিধি**র্বিতীয়থতে ত্রইব্যঃ।**

[ চণ্ডীপাঠনিয়মে মার্কণ্ডেয়ং প্রতি ব্রহ্মবাকাম্]---

অর্গলং কীলকঞ্চাদৌ পঠিতা কবচং পর্টেও। জপেৎ সপ্তশতীং পশ্চাৎ ক্রম এব শিবোদিতঃ ॥

ষ্ঠালান্তেংপি।—ইদং স্তোত্তং পঠিস্বা তু মহাস্তোত্তং পঠেরর:। সপ্তশতীং সমারাধ্য বরমাপ্রোতি তুর্গভম্॥

क्वहम्(यार्ति।-ब्राट्स नथमंग्रीः हश्वीः कृषा क्वहमानिष्ठः॥

মার্কণ্ডের উবাচ। ব্রহ্মন্ কেন প্রকারেণ ছর্গামাহাস্থ্যমূত্রমন্। শীব্রং সিধ্যতি তৎ সর্বাং কথরস্ব মহামতে। অর্গলং কীদৃশং প্রোক্তং বিশ্বরেণ বদস্ব তৎ। প্রসল্নো যদি মে ব্রহ্মন্ শ্রোভূং কৌতূহলং মহৎ ॥

ব্রন্ধোবাচ। বিধার পূজনং দেব্যা বর্থাশক্তি বর্থাবিধি। সমাহিতমনা ভূতা প্রপঠেদর্গলং ভতঃ॥ জর্গলং পাপজাতন্ত দারিদ্রাক্ত তথাপরম্। ইদ-মাদৌ পঠিতা তু পশ্চাৎ জ্রীচপ্তিকাং জপেৎ॥ অর্গলং কীলকঞ্চাদৌ পঠিতা কবচং পঠেৎ। জপেৎ সপ্তশতীং পশ্চাৎ ক্রম এব শিবোদিতঃ॥

# অথ চণ্ডীপাটনিয়মঃ

আধারে স্থাপয়িতা চ পৃস্তকং বাচরেৎ ক্টম্। হল্তে সংস্থাপনাদেব হরভ্যদ্ধফলং ৰতঃ॥ বাবল প্র্তিতেহধ্যালভাবল বিরমেৎ পঠন্। অকুক্রমং পঠেদেবি শিরঃকম্পাদিকং ত্যকেৎ॥ বদি প্রমাদাদধ্যারমধ্যে চ বিরমেৎ প্রিরে। পুনরধ্যারমারভ্য পঠেৎ সর্বস্তবে বিধিঃ॥ আদৌ চ প্রণবং অপু। ভোত্তং বা সংহিতাং পঠেং। অভে চ প্রণবং দভাদিত্যবাচাদিপুরুষ:। ওদ্ধেনানস্থচিত্তেন পঠিতব্যং প্রবহুতঃ। ন কার্য্যাসক্তমনসা কার্য্যং ভোত্তস্ত বাচনম্॥ স্বয়ঞ্ লিখিতং বভ ুকৃতিনা লিখিতং ন বং। স্বাহ্মণেন লিখিতং ভচ্চাপি বিফলং ভবেৎ। সঙ্গলিতে ভোত্রপাঠে সংখ্যাং ক্লবা পঠেৎ সুধীঃ। ব্ৰাহ্মণং বাচকং বিভাষাভ্ৰৰ্থকমাদ্বাৎ। শ্ৰুত্তভৰ্প্ৰাদ্ৰাক্ৰন্ বাচকাৰ্ত্তক্ ব্ৰক্তেং॥ দেব্যৰ্কামগ্ৰতঃ কত্বা ব্ৰাহ্মণানাং বিশেষতঃ। গ্ৰন্থিক শিণিকং কুর্যাঘাচকঃ কুরুনন্দন॥ পুনর্বাতি তৎস্তাং ন মৃজ্যু ধাররেৎ কচিৎ। বিস্পট্নক্রতং শাস্তং স্পষ্টাক্ষরপদস্তথা। কলম্বর-সমাযুক্তং রসভাবসমন্বিভম্। প্রদর্বসান্ সর্কান্ বাচয়েদ্ বাচকো নৃপ ৷ নাতঃ পরভরং ভোত্রং কিঞ্চিদন্তি বরাননে। । ভৃক্তিমৃক্তিপ্রদং পুণ্যং পাবনানাঞ্চ পাবনম্। অর্গলং তুরিতং হস্তি কীলকং ফলদং তথা। কবচং রক্ষতে নিত্যং চণ্ডিকা ত্রিতয়ং দিশেৎ॥ অর্গলং হৃদয়ে যক্ত স চার্গলময়ঃ সদা। ভবিশ্বতীতি নিশ্চিত্য শিবেন রচিতং পুরা॥ কীলকং হৃদয়ে যস্ত স কীলিতমনোরথং। ভবিস্ততি ন সন্দেহে। নাম্ভণা শিবভাষিতম্। কবচং হৃদয়ে ষশু স ত্রশ্বকৰচঃ ধলু। ত্রশ্বণা নির্শিতং পূৰ্ব্বমিতি নিশ্চিত্য চেত্ৰসা॥ (বদ্বৎ ফলবিশেবোদ্দেশেন বাৰদাবৃত্তি পাঠ্যং छख< मर्काः विकीयथ<br/>
ख खंडेवाम ॥)

#### চঙীপ্র্যানম্

বিহ্যদাসসমপ্রভাং মৃগপতিস্বন্ধস্থিতাং ভীষণাং, কক্সাভিঃ করবালখেটবিল-সন্ধন্তাভিরাসেবিভাম্। হত্তৈশ্চক্রবরাসিথেটবিশিখাংশ্চাপং গুণং তর্জনীং, বিদ্রাণামনলাগ্মিকাং শশিধরাং তুর্গাং ত্রিনেত্রাং ভত্তে॥

অথবা—বর্ককুসুমাভাসাং পঞ্মুগুধিবাসিনীম্। ফুরচ্চক্রকলারত্বমুক্টাং মুগুমালিনীম্। ত্রিনেত্রাং রক্তবসনাং পীনোরত্বটত্বনীম্। পুস্তকং চাক্ষ-বালাঞ্চ বরদঞ্চাভরং ক্রমাৎ। দধতীং সংশ্বরেরিভাযুত্তরায়ারমানিতাম্॥

অথবা— যা চণ্ডী মধুকৈটভাদিদৈত্যদলনী যা মাহিষোমূলনী, যা ধ্যেক্ষণ-চঞ্চমুগুমথনী যা রক্তবীজাশনী। শক্তিঃ শুন্তনিশুন্তদৈতাদলনী যা সিদ্ধিলন্ত্রীঃ পরা ( লন্ত্রীশ্রা ), সা দেবী নবকোটিমূর্ণ্ডিসহিতা মাম্পাতু বিষেশ্বী ॥

অথবা—মধ্যে স্থানি-মণিমগুপ-রত্মবেদী-সিংহাসনোপরিগতাং পরিপীত-বর্ণাম। পীতাত্মরাং কনকভূষণমাল্যশোভাং,দেবীং ভজামি ধৃতমূল্যরবৈরিজিহ্বাম্॥

অথবা — সিংহয় শশিশেথরা মরকতপ্রথ্যা চতুর্ভিত্ কৈঃ, শব্দং চক্র-ধয়ঃশরাংক্ষ দধতী নেত্রৈপ্রিভিঃ শোভিতা। আমৃক্তাকদহার-কঙ্কণ-রণৎকাঞীকণর পুরা, তুর্গা তুর্গতিহারিণী ভবতু নো রত্মেলসংক্তালা।

## প্রী**অ**র্গলান্তোত

আন্ত শ্ৰীভাগনান্তোত্ত্ত-মন্ত্ৰতা বিষ্ণুখ বিরম্প্ত, প্ছলঃ শ্ৰীমহানন্দ্ৰিতা, নবাৰ্ণে। মন্ত্ৰ: শক্তিম দ্ৰোদিতা দেব্যো বীৰুং সপ্তশতীমন্ত্ৰত্বং শ্ৰীজগদখাপ্ৰীতমে সপ্তশতীপাঠাকজপে বিনিয়োগঃ।

ওঁ নমশ্চণ্ডিকাহৈ— [ ওঁ নারদ উবাচ। বা কাচিৎ ত্রিবিধা থ্যাতা সপ্তধা চৈব কীর্ষ্টিতা। তক্ষা ভেদা হুনস্তাশ্চ তন্মাহাত্ম্যং ওডং বদ ॥ ১ ॥

ব্রন্ধোবাচ। যা দেবী ভূরতে নিভ্যং বিবিধৈর্বেদপারগৈঃ। সা মে ভব্তু জিহ্বাগ্রে ব্রহ্মরপা সরস্বতী॥ ২॥

मार्क एक प्रवाह । ] बन्न पर तिवि हामू एक बन्न प्रवाहिति । बन्न मर्सन पर्वाहित क्षेत्र प्रवाहित । बन्न मर्सन पर्वाहित क्षेत्र क्षेत्र

त्मिर विरया व्यवि ॥ १ ॥ त्रक्कवीव्यवस्य स्मृति इक्कमृत्य-विनामिनि । क्रशः त्मिर बन्नः त्नि वाला त्नि विर्या विश्व ।। । विश्व श्व विविध ।। **७७८** नमः। ऋशर प्रति बन्नः प्रति वत्या प्रति विद्या वरि ॥>॥ विन्तिजीब्य -यूर्ण दिन नर्करनोक्षां भागिति। क्रांत्र दिन क्रांत्र दिन वर्षा दिन विद्या कि ॥ ১ · ॥ जिल्लाक्र भारति अर्थ मर्का कि । क्रा श्री कि स्वार सिक् ষশো দেহি দিবো অহি॥ ১১॥ নতেভ্যঃ সর্বাদা ভক্ত্যা চাপর্ণে ছরিভাপহে। क्रभः तिर वारः तिर याना तिर वित्या वित्य । अवत्या छक्तिभूकीः वार **চি । क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक** চপ্তিকে সভতং বে স্বামর্চমন্তীহ ভক্তিতঃ। রূপং দেহি করং দেহি বলো দেহি बिर्या वह ॥ ३८॥ त्महि त्रोखां श्रामार्त्रागाः त्महि तम् त श्राम् । क्रशः त्महि अप्रः प्रश्चि वरमा प्रस्टि विरवा अवि ॥>e॥ विरयंहि प्रावि कन्तांनः विरयंहि विश्रूनाः श्रितम । ज्ञाभः (पिर्व बद्दः (पिर्व वर्षा (पिर्व विद्या वर्षि ) ७॥ विर्विह विवजाः नामः वित्यदि वनमुक्ततेकः। ज्ञानः त्मिष्ट व्यवः तमि वत्मा तमि वित्या জহি॥ ১৭॥ সুরাসুরশিরোরত্ব-নিল্পুট্চরণামূজে। রূপং দেহি জ্বয়ং দেহি बत्ना दिन विद्या अवि ॥ ३৮॥ विश्वावस्तः वनवस्तः नचीवस्त्रः माः क्रा क्रशः तिह अवः तिह बत्ना तिह बित्वा अहि॥ >> ॥ तिवि श्रीक्रश्रतार्किश्व-रेमञामर्थनियमिन। ऋभः मिहि स्रयः मिहि यटना मिहि बिरवा स्वहि॥ २०॥ প্রচণ্ডে দৈত্যদর্পত্মে চণ্ডিকে প্রণতাম মে। রূপং দৈহি ক্সং দেহি বশো দেহি विरव। वहि ॥ २১ ॥ । हजूक् व हजूर्य छ - नः खर्ड भत्रस्यति । क्रभः दिह **बद्धः प्रा**हि याना प्राहि विद्या सहि॥ २२॥ कृत्यन नः खटा प्राहि ने चंडका नमाबिटक। ज्ञाभः दाहि बागः दाहि बटमा दाहि बिटा कहि । २०॥ हिमाहल-ञ्चानाथ मः खट्ड शत्र स्वर्धति । क्रशः दिश क्रतः दिश्व यदमा दिश्व विद्या कि ॥ २३॥ हेन्द्रांनी शक्ति महाव-शृक्तिक शत्रामंत्रि । क्रशः त्मि क्रिः त्मि · याना त्वि विरवा विष्या । २०॥ त्वि छक्कानामाय-विषानामारवर्शिक । क्रभः तिह बदः तिह रामा तिह विदया विह ॥२७॥ । छार्यगाः मत्नाद्रवाः तिह बत्नावृद्धाक्ष्माविनीम्। ऋभः तिह अवः तिह वत्ना तिह वित्यां अहि॥ २१॥ তারিণি ছর্গদংসার-সাগরভাচলোভবে। রূপং দেহি জয়ং দেহি ধশো দেহি বিবো অহি । ২৮॥ ইনং ভোতাং পঠিছা তু মহাভোতাং পঠেররঃ। সপ্তশতীং সমারাধ্য বরমাপ্লোতি তুর্ল ভম ॥ ২৯ ॥

# অথ কীলকম্

অস্ত শ্ৰীকীলকমন্ত্ৰত শিব-ঋষিরহুষ্ট পূ ছন্দঃ শ্ৰীমহাসরস্বতী দেবতা শ্ৰীব্ৰগদৰা-প্ৰীত্যৰ্থং সংগ্ৰশতীপাঠাকজ্পে বিনিয়োগঃ।

**७ नम्फिकारेयः। मार्करश्चेत्र छेवां। विश्वककानरम्बाय जिर्दिमीमियाः ष्ट्रिंग । ८ अवः श्राशिनिमिखात्र नमः (मार्मार्क्स**पतिर्व ॥ ३॥ বিলানীয়ান্মন্ত্রাণামপি কীলকম্। সোহপি ক্ষেমবাপ্লোতি সভতং জপ্যতং-স্তোত্তমাত্তেণ সিধ্যতি।। ৩।। ন মন্ত্রো নৌষধং তক্ত ন কিঞ্চিদপি বিশ্বতে। বিনা জপ্যেন দিধ্যেত সর্ব্বমূচ্চাটনাদিকম্ ॥ ৪ ॥ সমগ্রাণ্যপি সেৎস্তম্ভি লোকে শকামিমাং হর:। কুড়া নিমন্ত্রমামাস সর্কমেব্যিদং শুভুম্।। ৫।। শুডাত্রং বৈ চপ্তিকায়ান্ত ভচ্চ গুহুং চকার স:। সমাপ্লোতি স্থপুণ্যেন তাং বধাবন্ধি-মন্ত্রিণাম ॥ ৬ । সোহপি ক্ষেমবাপ্লোতি সর্ব্বমেব ন সংশয়:। রুঞ্চায়াং বা চতুর্দ্মপ্রামষ্টম্যাং বা সমাহিতঃ॥ १॥ দদাতি প্রতিগৃহাতি নারুথৈষা প্রসীদতি। रेश कर्मन कीरनम महारमर्यम कीनिएम ॥ ৮॥ या निकोनाः रिवारियनाः চণ্ডীং ৰূপতি নিতাশ:। স সিদ্ধ: স গণ: সোহথ গন্ধৰ্কো জায়তে গ্ৰুবম ॥ ১॥ ন চৈৰাপাটবং ভক্ত ভয়ং কাপি ন জায়তে। নাপমৃত্যুবশং বাতি মৃতে চ মোক্ষমাপুরাং।। ১০।। জ্ঞাত্বা প্রারভ্য কুর্বীত ন কুর্বাণো বিনম্ভতি। ততো ক্লাত্বৈব সম্পূৰ্ণমিদং প্ৰান্নভাতে বুধৈ:॥ ১১॥ সৌভাগ্যাদি চ বং কিঞ্চি-मुख्य न महाकरेनः। ७९ मर्काः ७९ श्रमातम् । ७२ ॥ भरेनस स्थापनारमध्यात (स्थार्क मण्यक्रिक्टिकः। स्वराज्य ममधायि उन्हः প্রারভ্যমেব তং॥ ১৩।। ঐশ্বর্যাং তংপ্রসাদেন সৌভাগ্যারোগ্যমেব চ॥ শত্রু-হানিঃ পরো মোক: ভুষতে সান কিং জনৈ: ॥ ১৪ ॥ চণ্ডিকাং স্থানরোপি বঃ चरत्र मञ्जः नतः। ज्ञाः काममवाक्षां जि ज्ञानि त्वती मना वरम् ॥ ১৫॥ অগ্রতোহমুং মহাদেবকুতং কীলকবাম্বণম্। নিকীলঞ্চ তদা কুতা পঠিতব্যং नमाहिरेडः ॥ ১৬॥

ইতি কীলকন্তবঃ।

#### অথ চঞ্চীকবচম্

অস্ত শ্রীদেবী ক্বচন্ত ব্রহ্মা ঋষিরস্থ ই প্ছলো মহিষমর্দিন্তাদরো দেবতা অস্ত্রাসোক্তমাতরো বীজং দিগ্রন্ধদেবতান্তরং শ্রীদেবীপ্রীত্যর্থং সপ্তশতীপাঠান-জ্ঞানে বিনিয়োগঃ।

ওঁ নমশ্চণ্ডিকারৈ। মার্কণ্ডের উবাচ। যদ্ গুহুং পরমং লোকে সর্বরক্ষাকরং নৃপাম্। যর কক্ষচিদাখ্যাতং তরে ত্রেছি পিতামহ ॥ ১ ॥

ব্রন্ধোবাচ। অভি ওয়তমং বিপ্র। স্বভূতোপকার কৃষ্ । দেব্যাস্থ কবচং পুণ্যং ভচ্ছ<sub>ে</sub>ণুখ মহামুনে॥২॥ প্রথমং শৈ**পপু**ত্রীভি দিতীয়ং: ব্রহ্মচারিণী। তৃঙীয়ং চণ্ডঘন্টেতি (চক্রঘন্টেতি) কুমাণ্ডেতি চতুর্বকম্॥ ৩। भक्षमः सन्त्रेमाराज्ञि वर्षः काजामनी ज्या । मथमः कानवाबीजि महारशेवीजि চাইমম ॥ ৪ ॥ নবমং সিদ্ধিদাত্তীতি নবছর্গাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ। উক্তাক্তেতানি নামানি ব্ৰহ্মণৈৰ মহাত্মনা। ৫॥ অগ্নিনা দহুমানাত্ম শক্ৰমধ্যগতা রণে। বিৰমে হুৰ্গমে চৈব ভরার্ত্তাঃ শরণং গতাঃ॥৬॥ ন ভেৰাং জায়তে কিঞ্চিদশুভং রণসঙ্কটে। নাপদং তক্ত পশ্রামি শোকছঃথভয়ংন হি॥ १॥ বৈশ্ব ভক্ত্যা স্থতা নিত্যং তেবামৃদ্ধি: প্রকারতে। ॥৮॥ প্রেতসংস্থা চ চামুগু৷ বারাহী মহিবাসনা। এতা গ্রুসমার্চ৷ বৈষ্ণ্বী গরুড়াসনা॥ ১ ॥ नात्रिनःशै महावीधा निवन्छी महावना। माट्यत्री द्वात्र्वा ट्वायात्री শিথিবাহনা । ১০ । আন্দ্রী হংসসমারত। সর্বাভরণভূষিতা। দেবী পদাহতা হরিপ্রিয়া। খেতরূপধরা দেবী <del>ঈ</del>ধরী বুষবাহনা॥ >> ॥ ইত্যেতা মাতরঃ সর্বাঃ সর্ববোগসমন্বিতাঃ ॥ ১২ ॥ নানাজরণশোভাঢ্যা নানারত্বোপশোভিতাঃ। শ্রেটেন্ড মৌজিকৈঃ সর্কা क्तिकार्यमधिकः॥ ১० ॥ रेखनीरेमर्यानीरेनः अन्नवार्रमः सूरमाख्येनः। मुक्रास्य त्रथमात्रका (मर्याः क्लाधममाकूनाः॥ ১৪॥ मन्धः ठकः नागः भिक्तः হলঞ মুসলামুধম্। থেটকং ভোমরঞৈব পরতং পাশমেব চ ॥১৫॥ কুন্তামুধং ত্রিশূলক শাক্ষাযুধমুত্তমন্। দৈত্যানাং দেহনাশার ভক্তানামভরার চ॥ ১৬॥ ধাররন্ত্যার্থানীথং দেবানাঞ হিভার বৈ। নমত্তেহত্ত মহারোক্তে মহা-(वात्रशताक्रांत्र ॥ ३१ ॥ महावान बाहारनाट्य महाख्यविनानिन। खाङि মাং দেবি ছল্পেক্যে শত্ৰণাং ভরবর্জিনি॥১৮॥ প্রাচ্যাং রক্ষ্তৃ মানৈজী चारधवामिश्वरमवर्षा। मकिर्वरुव् वातारी निश्वर्षाः वक्नवातिने॥ >> ॥ প্রতীচ্যাং বারুণী রক্ষেদ্ বারব্যাং বারুদেবতা। উদীচ্যাং পাতৃ কৌবেরী

 अभाकाः भृगशंतिमे ॥ २० ॥ छक्षः बचामे त्व त्रत्मनथन्ताम् देवस्वी ज्था । जवः দশ দিশো রক্ষেচামৃতা শববাহনা॥২১॥ অবা মে চাগ্রতঃ পাতৃ বি<del>অ</del>বা পাতৃ পৃষ্ঠতঃ। অবিতা বামপার্যে তু দক্ষিণে চাপরাবিতা ॥ ২২ ॥ বিথাং যে ष्टां छिनी त्रत्कक्षा मृद्धि वावश्विषा। मानाधती ननाटि ह व्हटी त्रत्कम् वनचिनी॥ २०॥ त्नव्यत्वान्त्रव्यत्नवा ह यमवन्त्रा ह भार्चत्व । व्यत्नवा ह विभूत्वन करवर्षित्य ह हिंदिका ॥ २८॥ अस्थिनी हक्तार्थार्थाः श्रीबाद्यार्थाः न वानिनी ॥ क्लार्लो कानिका ब्रत्कः कर्वमृत्न जू नाइत्रो ॥ २१ ॥ नानिकाशः जुनक्षा ह উत्तरदार्ष्ठ ह हर्किका ! अथरत हामुछा वाना विस्तात्राक मत्रवर्छी ॥२७॥ म्**सान बक्क को मात्री कर्श्वत्य कु** विका। पणिकाः विवयणे। व गरामात्रा **ह छानुत्क ॥** २१ ॥ कामाशा हित्कः ब्रत्कम् वाहः त्म नर्समनना । ं श्रीवादाः **फलकानी** ह शृंधेदःदन सङ्क्री॥ २৮॥ मोनशीया दश्क्रिक्षं ननिकांबन-क्वती। थ्रुणधातिशास्त्री कस्त्री वांदू स्य वक्षधातिनी ॥२३॥ व्छत्तार्भ शिनी রক্ষেদ্ধিকা চান্তুলীয় চ। নথানু সুরেখরী রক্ষেৎ কুক্ষে রক্ষেরবেখরী 🕬 ॥ छानो अल्बन्धहारमधी मनः त्यांकविनांनिनो। अन्दत्र ननिका रमवी छेनदत्र भूगशांतिगी॥ ७> । नाष्ट्री ह कामिनी ब्रह्मप् अव्हः अव्ययत्रो छवा। सिहः রক্ষত তুর্গন্ধা পায়ং মে গুজ্বাসিনী॥৩২॥ কট্যাং ভগবতী রকেদুর যে **(मचवार्ना। जस्क महाबना इस्कब्बान् माधवनाद्रिका॥ ७०॥ अन्सर्धा**-नीत्रिंगरी ह शास्त्रहं छू दर्शनिकी। शासकृतीयू 🖨 त्रत्कलनः शालान-वांत्रिनी ॥ ७८ ॥ नथान् मरह्रोकत्रांनी ह दक्नार्टकटवाईदक्निनी । द्वाम-কূপেযু কৌষারী ছচং বোগেশ্বরী তথা। ৩৫। রক্তমজ্ঞাবদামাংদান্তত্বি-মেদাংসি পাৰ্বভী। অভ্ৰাণি কালবাত্ৰী চ পিত্তঞ্চ মুকুটেশ্বরী॥ ৩৬॥ পদ্মাবভী **भग्नत्कारक करक कृष्णामनिख्या। ज्ञानाम्यी नयज्ञानामरख्या मर्समित्रम् ॥०१॥** ভক্রং বন্ধাণী মে রক্ষেছারাং ছত্তেখরী তথা। অহলারং মনোবৃদ্ধিং রক্ষেদ্রে ধিৰীধাৰিণী।। ৩৮ । প্ৰাণাপানৌ তথা ব্যানমুদ্যনঞ্চ সমানকম্। বজুহন্তাচ य त्रक्र श्रांनान् कनान्तान्ता । ७३ । त्राप्त क्राप्त ह नक्-क्नार्न ठ द्यांत्रिनी। नदः त्रव्याद्यारेक्टव त्रत्कतात्रांत्रेनी नता॥ 8०॥ चात्र् त्रक्र्यु বারাহী ধর্মং রক্ষতু পার্বভী। বশঃ কীর্ত্তিক লন্দ্রীঞ্চ সদা রক্ষতু বৈফ্বী ॥ ৪১ ॥ গোত্রশিক্তাণী মে রক্ষেৎ পশুন রক্ষেত্র চণ্ডিকা। পুদ্রান রক্ষেত্রহালন্দ্রীর্ভার্য্যাং तक्क जित्रवी ॥६२॥ शतचती थनः तक्कर कोमाती कम्मकाः छवा। भन्नानः स्थावा त्रत्क्यार्गः (क्यक्त्री ७४। ॥ ४०॥ त्राक्याद्य 'यहानचीर्विक्या नर्वछः दिछ।।

রকাহীনত বং স্থানং বর্জিতং কবচেন তু 🛮 ৪৪ 🕽 তৎ সর্বং রক্ষ মে দেবি कृत्रक्षी भाभनामिनी। नर्कत्रकाकतः भूगः कराः नर्कता करा ॥ ४६॥ हेमः ब्रह्मः विश्वर्द छका छव मर्त्तामिष्ठम्। शामरमकः न शरक्छ य**नीচ্ছেচ্ছ্ ভ্ৰমাত্মন: ॥ ৪৬ ॥ ক্ৰচেনা**বৃতো নিত্যং বত্ৰ যবৈৰ পচ্ছতি। ভত্ৰ তত্রার্থলাভন্ত বিজয়: দার্থকালিক:॥ ৪৭॥ বং বং চিন্তরতে কামং তং তং প্রাপ্রোতি নিশ্চিতম্। পর্মেখর্য্যমতুলং প্রাক্ষাতে ভূতলে পুমান্॥ ৪৮॥ निर्कत्त्रा कात्ररा पर्वा: मःश्राद्यवनत्राकितः। द्वित्नात्का कृ कित्रर शृकाः क्वटानावृष्ठः भूमान्॥ १२॥ हेन्द्र (एवा: क्वाः एकानामिन इन छम्। যঃ পঠেৎ প্রয়তো নিত্যং ত্রিসন্ধ্যং শ্রদ্ধদান্বিতঃ ॥ ৫০ ॥ দেবী বস্থা ভবেতক জৈলোক্যে চাপবাজিতঃ। জীবেদ বর্ষশতং সাগ্রমপমৃত্যুবিবর্জিতঃ॥ ৫১॥ নশুন্তি ব্যাধয়: সর্ব্বে ল্ভাবিস্ফোটকাদয়:। স্থাবরং **জলম**ং বাপি কুত্রিমং বাপি যদ বিষম্ । ৫২ ॥ আভিচারাণি সর্বাণি মন্ত্রনাণি ভূতলে। ভূচরাঃ থেচরা-কৈব কুলজাকোপদেশলা: ॥ ৫০ ॥ সহজা: কুলিকা নাগা ডাকিনী শাকিনী তথা। অন্তরীক্ষরা বোরা ডাকিক্স্চ মহারবা:॥ ৫৪॥ গ্রহভূতপিশাচাশ্চ বক্ষগন্ধরাক্ষ্যাঃ। ব্রহ্মরাক্ষ্যবেতালাঃ কুমাঞা ভৈরবাদ্যঃ॥ ৫১॥ নশুস্তি দর্শনান্তক্ত কবচেনাবুতো হি য:। মানোগ্নতির্ভবেক্তাজ্ঞাং তেক্তোবুদ্ধিः পরা ভবেং॥ ৫৬॥ যশোবৃদ্ধির্ভবেং পৃংসাং কীর্ত্তিবৃদ্ধিত জারতে। তত্মা-জ্ঞপেৎ সদা ভক্ত: কবচং কামদং মূনে॥ ৫৭॥ অপেৎ সপ্তশৃতীং চঙীং কৃত্বা তু কবচং পুরা। নির্বিল্পেন ভবেৎ সিদ্ধিশ্চতীব্দপসমূত্তবা ॥ ৫৮॥ বাবদ্-ভূমওলং ধত্তে সৰ্বৈলবনকাননম। তাৰ্ডিষ্ঠতি মেদিকাং সন্ততিঃ পুত্ৰ-পৌত্রিকী॥ 🖚 ॥ দেহাত্তে পরমং স্থানং স্থারেরপি স্ফুর্লভিম্। প্রাপ্নোতি পুক্ৰো নিত্যং মহামাল্লপ্ৰদাদতঃ ॥ ৩০ ॥ তত্ৰ গছতি গৰাসৌ পুনশ্চাগ্ৰনং ন হি। পভতে পরমং স্থানং শিবেন সমতাং ব্রঞ্জে ॥ ৬১॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে হরিহরত্রন্ধবিরচিতং দেব্যা: কবচং সমাপ্তম্। ওঁ তৎ সং।

## অথ দেবীস্থক্তপাইঃ

ওঁ নমশ্চ প্রকারে। ওঁ মধ্যে স্থানি-মণিমগুপ-রম্ববেদী-সিংহাসনোপরিগতাং পরিপীতবর্ণাম্। পীতামরাং কনকভ্বণমাল্যশোভাং, দেবীং ভজামি ধৃতম্লার-বৈরিজিজ্লাম্॥ অহং ক্লডেভিরিত্যন্ত বন্ধাদ্যা ঋবরো গায়প্র্যাদানি চ্ছন্দাংসি আভাদেবী দেবতা দেবীস্ক্রকণে বিনিয়োগঃ।

# অথ দেবীসৃক্তম্

उँ करः कट्यि जिर्मा श्री मार्गा विश्व क्षेत्र विश्व कर्मा विश्व कर्मा क

#### ইতি দেবীস্ক্তম্।

## ত্রিচরিত্যা ঋষিচ্ছদোলৈবতানি

প্রথমচরিতক্ত বন্ধধিন হাকালী দেবত। গার্ত্রী চ্ছন্দো নন্দা শক্তী রক্তদক্তিকা বীজমন্নিত্ত্বং (ঝগ্বেদস্বরূপ) মহাকালীপ্রীত্যর্থং জপে বিনিয়োগ: । ওঁ
থড়াং চক্রগদেব্-চাপপরিঘান্ শূলং ভূতঙাং শিরঃ, শঝং সন্ধতীং করৈ দ্বিনরানাং
স্ক্রাকভ্বাবৃত্যান্। বামজ্যেৎ স্বপিতে হরে) কমলজো হন্তং মধুং কৈটভং,
নীলাস্বত্যতিমাক্রপাদদশকাং সেবে মহাকালিকান্॥ (ব্যানান্তরং বিতীর্ধতে
ক্রের্যুন্।)

মধ্যমচরিতত্ত বিষ্ণুধ বিশ্বহালন্দ্রীদেবতা উঞ্চিক্ ছলঃ শাকস্তরী শক্তিতুর্গাঃ

ৰীকং বার্তত্বং (বজুর্কেদখরপ) মহালন্ধীপ্রীত্যর্থং ক্রপে বিনিরোগঃ। ওঁ অক্সত্রক্-পরতং গলেষু-কুলিশং পদাং ধয়ং কুণ্ডিকাং, দণ্ডং শক্তিমসিঞ্চ চর্ম ক্লেকং বন্টাং স্বরাভাক্তন ম্। শৃলং পাশস্বদর্শনঞ্চ দধতীং হত্তৈঃ প্রবালপ্রভাং, সেবে সৈরিভ-দর্দিনীমিহ মহালন্ধীং সরোক্তিভাম্॥ (ধ্যানান্তরং বিতীর্থণ্ডে অসুসর্বেরম্।)

উত্তরচরিতশ্র রুদ্রখবির্মহাসরশ্বতী দেবতা অরুষ্ট্রপ্ ছন্দো ভীমা শক্তির্নামরী বীব্দং স্বান্তব্ধং (সামবেদশ্বরূপ) মহাসরশ্বতীপ্রীত্যর্থং ব্বংপ বিনিরোগং। ওঁ সিংহস্থা শশিশেখরা মরকতপ্রখ্যা চতুর্ভিত্ বৈদ্ধং, শব্ধং চক্রধয়ংশরাংশ্চ দথতী নেবৈদ্রিভিঃ শোভিতা। আমুক্তাক্স-হার-কন্ধণ-রণৎ-কাঞ্চীকণয় পুরা, তুর্গা তুর্গভিহারিণী ভবতু নো রত্বোল্লসৎক্তবা॥ (ধ্যানাস্তরং বিতীম্বত্তে দ্রষ্টব্যম্।) ততো ব্যাবিধি মায়াবীক্ষেন প্রাণায়ামং রুদ্ধা করাক্সাসেনী বিধান্ধ—

ওঁ নারায়ণং নমস্কৃত্য নর্থেণ্য নরোভ্রম্। দেবীং সরস্বতীঞ্চৈব ততো জয়মূদীরয়েৎ॥

ওঁ নারায়ণায় নম:। ওঁ নরায় নম:। ওঁ নরোত্তমায় নম:। ওঁ দেবৈয় সরস্থতৈয় নম:। ওঁ বেদব্যাদায় নম:। ওঁ ব্রন্ধণে নম:। ওঁ ব্রান্ধণেভ্যো নম:। ওঁ তৎসং। ইতি নতা পঠেং।

#### দেৰীমাহাত্ম্যাপরনামা



#### প্রথম-চব্লিভম্

ওঁ নম্ভিকারৈ নম:। ওঁ মার্কণ্ডের উবাচ । ১॥ সাবর্ণি: সূর্য্যতনরো বো ৰহু: কথ্যতেহট্টম:। নিশাময় তত্ত্তিং বিশুরাদসদতো ধন महामात्रारक्ष्णादन वथा मब्खदाधिनः। म रज्द महाजानः मावर्गिन्छन्द्रा রবে: । ৩॥ খারোচিষেংস্করে পূর্বং চৈত্রবংশসমূত্রবং। স্বর্থো নাম রাজাংভূৎ সমতে কিতিমগুলে ॥ ৪ ॥ তক্ত পালয়ত: সম্যক্ প্রকা: পুরানিবৌরসান্। বভূব্ঃ শত্রবো ভূপাঃ কোলাবিধবংসিনন্তথা ॥ ৫ ॥ তশ্র তৈরভবদ্ বুদ্ধমতি-প্রবলদণ্ডিন:। ন্যুনৈরপি স তৈর্ছে কোলাবিধ্বংসিভির্জিত: ॥ ৬ ॥ তত: বপুরমায়াভো নিজদেশাধিপোহভবং। আক্রান্ত: স মহাভাগতৈত্বদা প্রবলারিভি:॥ १॥ অমাত্যৈর্কালিভিত্ ষ্টৈতু র্কালম্ভ ত্রাত্মভি:। বলঞ্চাপত্বতং তত্তাপি স্বপুরে ততঃ ॥ ৮॥ তত্তো মৃগন্নাব্যাক্ষেন ত্রভন্নাম্য: স ভূপতি:। একাকী হয়মাক্ষ্ জগাম গহনং বনম্। ১। স তত্তাপ্ৰমন্তাকীদ্ বিষ্ক্ৰবৰ্য্যন্ত মেধস:। প্ৰশান্তশাপদাকীৰ্ণ মুনিশিস্থোপশোভিতম্॥১০॥ তত্ত্বৌ কঞ্চিৎ স কালঞ্চ মূনিনা ভেন সংক্ষতঃ। ইতক্ষেত্ৰণ্ড বিচরংস্তব্দিন্ ম্নিবরাশ্রমে ॥ ১১ ॥ সোহচিত্তরন্তলা তত্ত্ব মমস্বারুষ্টচেতন: । মৎপুর্বৈ: পালিতং পূর্বং ময়া হীনং পূরং হি তৎ॥১২॥ মদ্ভূতৈচাল্ডেরসদ্রুতৈর্ধর্মত: পাनार्ट न वा। न कारन म ध्येशारना स्व भृत्रक्षी महामहः॥ ১৩॥ सम বাতঃ কান ভোগাহুপলন্স্যতে। বে মমাহুগতা নিত্যং अनामधन (ভाक्टन: II ) । अङ्गृतिः क्ष्यः (७२७ कृर्वस्तु अपरोज्**छ।** অসম্যগ্রায়নীলৈছৈ: কুর্বন্তি: সভতং ব্যরম্॥ ১৫॥ সঞ্চিত: সোহতিহু:থেন ক্ষয়ং কোষো গমিশ্বতি। এতচাৰচ সততং চিন্তবামাস পার্থিব: ॥ ১৬ ॥ তত্ত্ব विश्रीखेंबाङ्यारम देवज्ञरबकः ममर्भ मः। म शृहेरखन **रिकृष्ठां गमरन**२ व कः ॥ ১१ ॥ मर्गाक हेव कन्नावः कुर्मना हेव नन्नारम ।

ইত্যাকর্ণ্য বচন্তক্ত ভূপতে: প্রণরোদিতম্॥ ১৮॥ প্রভূযোচ স তং বৈখ্য: প্রশ্লেষাবনতো নুপম্॥ ১৯॥

বৈশ্ব উবাচ ॥ ২০ ॥ সমাধিন মি বৈশ্বোহত্মুৎপলো ধনিনাং কুলে ॥ ২১ ॥
প্রদারৈনির ক্তণ্ট ধনলোভাদসাধৃভি: । বিহীনশ্চ ধনৈদিরিঃ পুর্বৈরাদার
মে ধনম্ ॥ ২২ ॥ বনমভ্যাগতো ছঃখী নিরস্তশ্চাপ্তবন্ধৃভি: । সোহহং ন
বেদ্মি প্রাণাং কুশলাকুশলাত্মিকাম্ ॥ ২০ ॥ প্রবৃত্তিং অফনানাঞ্চ দারাণাঞ্চাত্র
সংস্থিত: । কিন্তু তেবাং গৃহে কেমমকেমং কিন্তু সাম্প্রতম্ ॥ ২৪ ॥ কথক্তে
কিন্তু সদ্বৃত্তাঃ কিন্তু মে স্বতাঃ ॥ ২৫ ॥

রাজোবাচ ॥ ২৬ ॥ বৈনিরতো ভবালুকৈ: পুশ্রদারাণিভির্কনৈ: ॥ ২৭ ॥ তেযু কিং ভবভ: জেহ্মসূবগাভি মানসম্ ॥ ২৮ ॥

বৈশ্য উবাচ ॥ ২৯ ॥ এবমেতদ্ যথা প্রাহ ভবানস্থাপতং বচঃ ॥ ৩০ ॥
কিং করোমি ন বগাতি মম নিচ্রতাং মনঃ । বৈঃ সস্তাজ্য পিতৃত্বেহং
ধনলুকৈর্নিরাকুতঃ ॥ ৩১ ॥ পতিস্থলনহার্দ্ধ হার্দ্ধি তেখেব মে মনঃ । কিমেভন্নাভিজ্ঞানামি জানরপি মহামতে ॥ ৩২ ॥ বং প্রেমপ্রবণং চিত্তং বিশুণেষপি
বন্ধু । তেখাং ক্তে মে নিঃখাসা দৌর্মনস্তঞ্জারতে ॥ ৩০ ॥ করোমি কিং
বন্ধ মনজ্যেপ্রীতিষ্ নিচ্রম্ ॥ ৩৪ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ ॥৩৫॥ ততত্তো সহিতো বিপ্র তং মুনিং সম্পস্থিতো ॥ ৩৬॥ সমাধিন মি বৈখ্যেহসো .স চ পার্থিবসন্তমঃ। কৃষা তু তো ষ্ণান্তারং ব্থাইং তেন সংবিদ্য ॥ ৩৭॥ উপবিষ্ঠো ক্থাঃ কাশ্চিচ্চক্রতুর্কৈশ্রপার্থিবো ॥ ৩৮॥

রাজোবাচ॥ ৩৯॥ ভগবংশামহং প্রাট্ট্রিচ্ছাম্যেকং বদশ তৎ॥ ৪০॥ হংখার বন্ধে মনসং স্বচিত্তারত্তাং বিনা। মমস্বং মম রাজ্যক্ত রাজ্যাদেশ্বিবেশ্বপি॥ ৪১॥ জানতোহপি বথাজক্ত কিমেত্রমূনিসভম। অরঞ্চ নিকৃত: পুরুদ্ধিরৈর্ভ্তৈত্তথোজ্বিত:॥ ৪২॥ স্বজনেন চ সন্তাজত্ত্বরূ হার্দ্ধী তথাপ্যতি। এবমের তথাহঞ্চ লাবপ্যত্যস্তত্বংথিতৌ॥৪০॥ দৃইদোবেহপি বিষয়ে মমস্বাকৃষ্টমানসে। তৎ কেনৈত্রহাভাগ বন্ধোহো জ্ঞানিনোরপি॥ ৪৪॥ মমাক্ত ভবত্যেরা বিবেকাক্ষক্ত মূঢ়তা॥ ৪৫॥

ঋষিক্ষবাচ ॥৪৬॥ জ্ঞানমন্তি সমন্তক্ত ক্তে ক্ষিত্র গোচরে ॥ ৪৭।। বিষয়শ্চ মহা ভাগ ৰাতি চৈবং পৃথক্ পৃথক্। দিবাদ্ধাঃ প্রাণিনঃ কেচিন্তাত্তাবদ্ধান্তথা-পরে ॥ ৪৮॥ কেচিদ্দিবা তথা রাত্রো প্রাণিনন্তব্যাদৃষ্টয়ঃ। জ্ঞানিনো মন্থকাঃ সভাং কিন্তু তে ন হি কেব্লম ॥৪৯॥ বতো হি জ্ঞানিনঃ সর্ক্ষে পশুপক্ষিমুগাদয়ঃ। জ্ঞানক তল্পছ্যাণাং বতেবাং মুগপক্ষিণাম্॥ ৫০ ॥ মছ্যাণাক বতেবাং তুল্যমন্ততেথাভনোঃ। জ্ঞানেহপি সতি পশ্যৈতান্ পতগাস্থাবচকুষ্॥ ৫১॥ কণমোক্ষাদৃতান্ মোহাৎ পীড়ামানানপি কুধা। মাহ্যা মছজব্যাত্র সাভিলাবাঃ স্থতান্ প্রতি ॥৫২॥ লোভাৎ প্রত্যুপকারার নবেতে কিং ন পশ্যসি। তথাপি মমতাবর্ত্তে মোহগর্তে নিপাতিতাঃ॥ ৫০ ॥ মহামারাপ্রভাবেণ সংসারস্থিতিকারিণঃ। তরাত্র বিশ্বরঃ কার্য্যো যোগনিতা জগৎপতেঃ ॥ ৫৪ ॥ মহামারা হরেকৈতত্তরা সংমোহতে জগৎ। জ্ঞানিনামপি চেতাংসি দেখা ভগবতী হি সা॥ ৫৫ ॥ বলাদাক্ষয় মোহার মহামারা প্রবছ্তি। তরা বিস্ক্রেতে বিশ্বং জগদেতচ্বরাচরম্॥ ৩৬॥ দৈবা প্রস্কা বরদা মূণাং ভবতি মৃক্তরে॥ ৫৬ ॥ সা বিল্লা পরমা মৃক্তের্হেভূভূতা সনাতনী ॥ ৫৭ ॥ সংসারবন্ধতে ভণ্ঠ সৈব সর্বেশ্বেশ্বী ॥ ৫৮ ॥

রাজোবাচ। ১৯॥ ভগবন্কা হি সা দেবী মহামারেতি যাং ভবান্॥ ৬০॥ ববীতি কথমূৎপদ্ধা সা কর্মাহস্তান্ত কিং বিজ। বংবভাবা চ সা দেবী বংবজ্ঞপা বত্তবা॥ ৬১॥ তৎ সর্বাং শ্রোভূমিক্সামি ব্যব্তা ব্রহ্মবিদাংবর॥ ৬২॥

सिक्निना ॥ ७०॥ निरंज्य ना कन्नमृष्ठिस्ता नर्सिमः उठम् ॥ ७३॥ उवानि छৎनमृश्निष्ठिस्त्वा अवानः सम। त्मरानाः कार्यानिकार्यमार्विवरिक ना सम। ७६॥ छेरन्दािक जना त्मार्टक ना निज्ञानाः जिल्लेन्द्र । त्यानिकाः यम। विक्रूब्बन्द्र विकार विकार । जना वावस्त्र । त्यानिकाः विकार । उना वावस्त्र । त्यानिकाः विकार । स्ट्रेकिट्डो ॥ ७०॥ विक्रूक्निर्माह्र । जना वावस्त्र । त्यानिकाः विकार वित्याः विर्वाद । विकार विकार वित्याः विर्वाद । विकार विकार वित्याः विर्वर । विकार विकार वित्याः विर्वर । विकार विकार वित्याः वित्यान । विद्यान वित्याः वित्यान । प्रतिकार वित्यान । प्रतिकार वित्यान । वित्यान वित्यान । वित्यान विद्यान । वित्यान । वित्यान विद्यान । वित्यान । विद्यान । वि

ব্রক্ষোবাচ॥ ৭২ ॥ বং খাহা খং খধা বং হি বষ্ট্কারখরা স্থিকা। ॥ ৭০॥ সুধা অসক্ষরে নিত্যে ত্রিধা মাত্রা স্থিকা স্থিতা। অর্ধমাত্রাস্থিতা নিত্যা বাফ্চার্য্যা বিশেষতঃ॥ ৭৪॥ অমেব সা বং সাবিত্রী বং দেবি অননী পরা। অর্মেব ধার্যতে সর্বং ব্রৈতং স্কাতে জগং॥ ৭৫॥ ব্রেতং পাল্যতে দেবি অমংশুস্তে চ সর্বদা। বিস্তৌ স্টির্নপা বং স্থিতিরূপা চ পালনে॥ ৭৬॥ তথা সংশ্বৃতিরূপাত্তে জগতে হত কালারে। মহাবিদ্যা মহামারা মহামেধা

মহাম্বতি: ॥११॥ মহামোহা চ ভবতী মহাদেবী মহামুরী। প্রকৃতিত্বক সর্বস্য গুণত্ররবিভাবিনী ॥१৮॥ কালরাত্রির্মহারাত্রির্মোহরাত্রিশ্চ দারুণা। তং প্রীত্মমীধরীত্বং

হীত্বং ব্রির্কোধলকণা ॥ ৭৯ ॥ লজ্জা পৃষ্টিত্বপা তৃষ্টিত্বং শান্তি: কান্তিরেব চ ।
থজিগনী শূলিনী বোরা গদিনী চক্রিণী তথা ॥৮০॥ শন্তিনী চাপিনী বাণ-ভূততীপরিঘার্থা। সৌম্যা সৌম্যতরাশেবসৌম্যেভ্যন্ততিমুন্দরী ॥ ৮১ ॥ পরা পরাণাং
পরমা অমেব পরমেশ্রী। বচ্চ কিঞ্চিৎ কচিদ্ বস্তু সদসদ্ বাথিলান্ত্রিকে । ॥৮২॥
তত্ত সর্বাত্র বা শক্তি: সা ত্বং কিং ভূরসে তদা। যয়া অয়া কাগংমারা কাগংপাতান্তি বো কাগং ॥ ৮০ ॥ সোহপি নিজাবশং নীতঃ কত্তাং তোভূমিহেশর: ।
বিফু: শরীরগ্রহণমহনীশান এব চ ॥৮৪॥ কারিতান্তে বতোহতন্তাং ক: ত্যোভূং
শক্তিমান্ ভবেং । সা অমিথং প্রভাবৈ: কৈরদারৈর্কেবি সংস্কৃতা ॥ ৮৫ ॥
মোহরৈতৌ ত্রাধ্বাব্যুরে মধুকৈটতৌ। প্রবোধক্ষ কাগংশামী নীয়তামচ্যুতো
লঘু ॥ ৮৬ ॥ বোধশ্চ ক্রিয়তামশ্র হন্তমেতৌ মহাস্বরৌ ॥ ৮৭ ॥

শ্বিক্রবাচ ॥ ৮৮ ॥ এবং স্কু চা তলা দেবী তামদী তত্ত্ব বেধনা ॥ ৮৯ ॥ বিক্রো: প্রবোধনার্থার নিহন্তং মধুকৈটভৌ। নেআজনাসিকাবাহ-জনরে-ভ্যন্তবোরসং ॥ ৯০ ॥ নির্গম্য দর্শনে তত্ত্বো ব্রন্ধণোহব্যক্তব্রনং । উত্তত্ত্বী চ জগলাথন্তরা মুক্তো জনার্দ্ধনং ॥৯১ ॥ একার্ণবেহহি-শ্রনান্ততঃ স দদৃশে চ তৌ। মধুকৈটভৌ ত্রান্তানাবভিবীর্য্যপরাক্রমো ॥৯২ ॥ ক্রোধরক্তেক্রণাবন্তুং ব্রন্ধাণং জনিভোজনো। সমুখার ভতন্তাভ্যাং যুর্ধে ভগবান্ হ্রি: ॥৯০॥ পঞ্চবর্ব-সহস্রাণি বাত্প্রহ্রণো বিভূ:। তাবপ্যভিবলোরতৌ মহামান্তবিমোহিভৌ ॥৯৪॥ উক্তবন্তো বরোহত্মভো ব্রন্থভামিতি কেশবম্॥৯৫॥

জীভগবাসুবাচ ॥ ৯৬॥ ভবেতামত মে তুটো মম বধ্যাবুভাবিদি ॥ ৯৭ ॥ কিমজেন বরেণাত্র এতাবদ্ধি বৃতং মম ॥ ৯৮ ॥

শ্বিক্রবাচ ॥ ৯৯ ॥ বঞ্চিতাভ্যামিতি তদা দর্শ্বমাপোমরং লগং ॥ ১০০ ॥ বিলোক্য তাভ্যাং গদিতো ভগবান্ কমলেক্ষণঃ। (প্রীডৌ স্বন্ধব বুদ্ধেন প্লাব্যন্থং মৃত্যুবাবরোঃ।) ভাবাং জহি ন বত্রোবর্ষী দলিলেন পরিপ্লৃতা ॥ ১০১ ॥

ঋষিক্ষবাচ ॥ ১০২।। তথেত্যুক্ত্বা ভগৰতা শশুচক্ৰগদাভূতা। কৃষা চক্ৰেণ বৈ চিহেন্ন শ্বনে শিৱসী তন্নো: ॥ ১০৩।। এবমেষা সম্পেন্না ব্ৰহ্মণা সংস্কৃতা শ্বম্। প্ৰভাবসন্তা দেব্যান্ত ভূৱ: শৃগু বৃদামি তে ॥ ১০৪।।

> ইতি শ্ৰীমাৰ্কণ্ডের-পুরাণে সাৰ্ণিকে মন্বন্তরে দেবী-মাহান্ম্যে মধুকৈটভবধ:। (১ জ:)

#### মধ্যমন্ডৱিভম্

अधिक्रवां ।। ১ ॥ দেবাস্থ্রমভূদ্ ধূদং পূর্বমস্বশতং পূরা । মহিবেৎসুরাণা-मिश्रि (प्रवानांक भूतन्तरत ॥ २ ॥ ज्वास्तर्दत्रभ्रशवीर्देशरप्रितरम् श्रामिज्य । ৰিতা চ সকলান দেবানিক্রোংভুঝহিষামুর: ৷আ ততঃ পরাজিতা দেবাঃ পদ্মধোনিং প্রস্কাপতিম । পুরস্কৃত্য গতান্তত্ত্ব বত্তেশগরুড়ধ্বকৌ ॥৪॥ বর্থাবৃত্তং তমে:-ন্তবন্ধহিষাস্থরচেষ্টিতম্। ত্রিদশাঃ কথয়ামাস্থর্দেবাভিভববিষ্ণরম্॥৽॥ গ্রানিলেন্দাং ষমশু বরুণশু চ। অত্যেষাঞাধিকারান্ স অন্নমেবাধিতিষ্ঠতি ॥৬॥ স্বৰ্গালিরাকৃতাঃ সর্বে তেন দেবগণা ভূবি। বিচরন্তি বথা মর্ত্ত্যা মহিবেণ ত্রাত্মনা । १॥ এতদ্ বঃ কথিতং সর্বনমরারিবিচেষ্টিতম্। শরণঞ্চ প্রপন্নাঃ স্মো বধন্তক্ত বিচিন্ত্যভাম্॥৮॥ ইখং নিশম্য দেবানাং বচাংসি মধুস্থানঃ। চকার কোপং শম্ভুক্ত ক্রকুটী-কুটিলাননো ॥১॥ ততোহতিকোপপূর্ণস্থ চক্রিণে। বদনাত্তঃ। নিশ্চক্রাম মহত্তেজো ব্রহ্মণঃ শঙ্করক্ত চ 🌬 । **(मवानाः भक्तानौनाः भदीद्रावः। निर्शवः स्वमहत्वबन्धरेक्रकाः म**म-গচ্ছত ॥১১॥ অতীব তেজসঃ কৃটং জলস্তমিব পর্বাতম্ । দদৃশুতে সুরাত্তক জালা-ব্যাপ্তদিগন্তরম্ ॥১২॥ অতুশং তত্ত্র তন্তেজঃ সর্বাদেবশরীর দম্। একত্বং তদভূ-মারী ব্যাপ্তলোকত্রমন্থিয় ॥১৩॥ যদভূচ্ছান্তবং ভেলতেনালায়ত তনুথম্। ষাম্যেন চাভবনু কেশা বাহবো বিফুতেজ্সা॥১৪॥ সৌম্যেন গুনম্বোৰুগ্যং মধ্যকৈত্রেণ চাভবং। বারুণেন চ কজ্যোর নিতমতেক্সা ভূব: ॥১৫॥ এক্সণ-**एक्सा** शामि जम्बूरमा १ क्रिका । वस्ताक क्राकृताः कोरवरत ह নাসিকা ॥১৬॥ তক্সান্ত দন্তা: প্রাঞ্চাণ প্রোন তেজ্ঞসা। নয়নবিভিয়ং क्टक उथा भावकटक्या ॥>१॥ क्टियो ह मझादशांखकः व्यवगायिकण ह। चारक्रवारेक्षव दिवानाः मञ्जवत्वक्रमाः निवा ॥>৮॥ । ७७: ममखदिवानाः एउटका-त्रां निम्मू इवाम् । जाः विरनाका मृतः श्वां भूत्रमत्रा महिवार्किणाः ॥>>॥ मृनः मृनात् বিনিত্নন্ত দলে তক্তৈ পিনাকগুক্। চক্ৰঞ্চ দত্তবান কৃষ্ণঃ সমূৎপান্ত স্বচক্ৰতঃ ॥২০॥ শৰ্প বৰুণ: শক্তিং দদৌ তহৈত্ব হতাশন:। ,মাৰুতো দ ত্তবাংশ্চাপং বাৰপূৰ্বে তথেষ্ধী ॥२১॥ বছ্সমিল্রঃ সমূৎপাত কুলিশাদমরাধিপঃ। দদৌ তক্তৈ সহস্রাক্ষো ৰণ্টামৈরাবতালবজাৎ ॥২২॥ কালদণ্ডাদ্ যমো দণ্ডং পাশঞামূপতিৰ্দ্দেদী। প্রজাপতিকাক্ষালাং দদৌ একা ক্ষওলুম্ ॥২৩॥ সম্ভরোমকৃপেযু নিজরশীন্ দিবাকর:। কালত দন্তবান ধড়াং তন্তাতর্ম চ নির্মালম ॥২৪॥ কীরোদভা-মলং হারমলরে চ তথাবরে । চূড়ামণিং তথা দিব্যং কুওলে কটকানি চ ॥২৫॥

व्यक्तित्यः ७था ७ मः (कत्र्तान् गर्यताहत्। नृशूद्रते विमरणे छवत् देशद्वरत्रकम-কুন্তমন্।॥२७॥ অকুলীরকরত্নানি সমন্তাখকুলীযুচ। বিশ্বকর্মা দলৌ তক্তি পরওঞাতিনির্মালম্ ॥২৭॥ অন্ত্রাণ্যনেকরপাণি তথাহতেত্তঞ্চ দংশনম্। অন্তান-পরজাং মালাং শিরস্থারসি চাপরাম্ ॥ ২৮॥ অদদজ্জলণিতত্ত পরজঞাতি-শোভনম্। হিমবান্ বাছনং সিংহং রড়ানি বিবিধানি চ ॥২॥ দদাবশৃস্তং স্থরয়া পানপাত্রং ধনাধিপঃ। শেষশ্চ সর্ব্ধনাগেশো মহামণিবিভৃষিতম্ ॥৩०॥ নাগ-हांतः मरमी छटेच थएख यः शृथिवीभिमाम्। चटेखत्रिश चटेतरकियी ज्यटेनता-ब्रेथखबा ॥०১॥ मचानिका ननारमारेकः मांछेशमः स्ट्र्य्टः। जचा नारमन त्यारतन রুৎস্বমাপুরিতং নভ:। অমায়তাতিমহতা প্রতিশব্দো মহানভূৎ ॥০২॥ চুক্ভু: সৰুলা লোকা: সমুদ্রাশ্চ চকম্পিরে ১৩০১ চচাল ৰমুধা চেলু: সৰুলাশ্চ মহী-ধরা:। জয়েতি দেবাশ্চ মূদা তামূচুঃ সিংহ্বাহিনীম্ ॥০৪॥ তুই বুর্ম্ব নয়শৈচনাং ভক্তিন্ত্রাত্মমূর্ত্তরঃ। দুধা সমন্তং সংক্ষ্কং তৈলোক্যমমরারয়ঃ॥৩৫॥ সম্বদ্ধা-থিলসৈক্তান্তে সমৃত্তস্থুরুদায়্ধা:। আ: কিমেডদিতি ক্রোধাদাভান্ত মহিবা-অভ্যধাৰত তং শব্দমশেষৈরস্থরৈর তঃ। স দদর্শ ততো দেবীং ব্যাপ্তলোক্ত্রমান্থিয়া ॥৩৭॥ পাদাক্রাস্ত্যা নতভূবং কিরীটোল্লিখিভামরাম্। কোভিতাশেষপাতালাং ধ্রুজ্যানি:ম্বনেন তাম্ ॥৩৮॥ দিশো ভূজসহত্ত্বেণ সম-স্তাদ ব্যাপ্য সংস্থিতাম্। তত: প্রববৃতে বৃদ্ধং তরা দেব্যা স্থরবিষাম্ ॥৩৯।। শন্তা-मूरेख्यां मी शिष्ठ निशंखन्त्र । महिशास्त्र राजना नी किस्तार्था। महा-ক্ষঃ ॥৪∙॥ যুষুধে চামরশচাকৈশচভূরকবলাবিতঃ। রবানামষ্তৈঃ বড়্ভিজদ-গ্রাখ্যো মহাস্থর: ॥৪>॥ অযুধ্যভাহ্বুভানাঞ্চ সহত্রেণ মহাহন্ত:। পঞ্চাশদ্ভিক নিষ্তৈরসিলোমা মহাস্থর: ॥৪২॥ অষ্তানাং শতৈঃ ষড় ভির্বান্ধলো যুষ্ধে রণে। গৰ্মবাজিসহস্রৌধৈরনেকৈ: পরিবারিত: 🕬 বুতো রথানাং কোট্যা চ युद्ध जिल्लाम् विज्ञानारिक्षार्ये विकासिक विका সংযুগে তত্ত্ পরিবারিতঃ। অন্তে তত্তাংৰুতশো **রথানাং** যুযুধু: সংষুগে দেব্যা সহ তত্ত রথনাগহদৈর্তা: 18৫॥ কোটিকোটিসহবৈস্ত রথানাং দক্তিনান্ত্থা॥ ৪৬॥ হয়ানাঞ্চ বুতো যুদ্ধে তত্রাভূমহিষাস্থর:। তোমরৈভিন্দিপালৈক শক্তিভিম্বলৈতথা॥৪৭॥ ব্যুধু: সংযুগে দেব্যা থড়ৈগঃ পরশুপট্টিশৈ:। কেচিচ্চ চিক্ষিপঃ শক্তীঃ কেচিৎ পাশাংতথাপরে ॥৪৮॥ দেবীং খড়াপ্রহারৈস্ত তে তাং হস্তং প্রচক্রমু:। সাপি দেবী ততভানি শন্তাগ্যন্তাণি চণ্ডিকা॥৪৯॥ লীলয়ৈব প্রচিচ্ছেদ তৃতীয়—২৬

নিজশক্তান্ত্ৰবৰ্ষিণী। অনায়ন্তাননা দেবী ভ্রমানা স্বর্ষিভি: ॥৫•॥ সুমোচাসুর-দেহেযু শন্ত্ৰাণ্যন্ত্ৰাণি চেশরী। সোধপি জুদ্ধো ধুডসটো দেব্যা বাহনকেসরী॥৫১॥ চচারাস্থরলৈক্তেযু বনেষিব হতাশনঃ। নিঃখাসান মুমুচে বাংশ্চ যুধ্যমানা রবেহ মিকা ॥ ৫২ ॥ ত এব সভঃ সভুতা গণা: শতসহত্রশ:। যুব্ধুন্তে পরভতিতিন্দিপালাছদিপটিশৈ:। ৫০॥ নালরজোছ মুরগণান্ দেবী শক্ত্যপ-वृश्हिजाः। **खरा**नवृष्ठ পটहान् ग्रनाः मधारत्वशानदत्र॥ ८८॥ ভশ্বিন যুদ্ধমহোৎসবে। ততো দেবী ত্রিশূলেন গদয়। শক্তিবৃষ্টিভি:॥ ৫৫ ॥ থড়গাণিভিশ্চ শতশো নিৰ্বান পাতয়ামাস চৈবাক্তান ঘণ্টাখনবিমোহিতান্ ॥ ৫৬॥ অনুরান্ ভূবি পালেন চাক্তানকর্যত। কে চিন্দিধাক তাত্তীকৈ: থজাপা**তৈত্ত**থাপরে ॥ ৫৭ ॥ বিপোথিতা নিপাতেন গদয়া ভূবি শেরতে। বেমুশ্চ কেচিফ্রধিরং মুবেলন ভূশং হতা:॥ ৫৮ ॥ কেচিলিপাতিতা ভূমে ভিলা: শূলেন বক্সি। নিরস্তরা: শরৌবেণ কৃতাঃ কেচিদ্রণাব্দিরে ॥ ৫৯ ॥ সেনাত্রকারিণঃ প্রাণান মুষ্চু স্থিদশাৰ্দনাঃ। কেষাঞ্চিদ্ বাহ্বস্থিদাক্ষীতি ছগীপারে॥ ৩০॥ শিরাংসি পেতুরক্তেবামতে মধ্যে বিদারিতা:। বিচ্ছিরক্ত্যাস্থপরে পেতুরুর্ক্যাং মহামুরা: ॥ ৬১ ॥ একবাহ্নকিচরণা: কেচিকেব্যা বিধা কুতা:। ছিলেহপি চাক্তে শির্দি পতিতা: পুনরুখিতা: । ৬২।। ক্রনা মুবুধুর্দ্ব্যা গৃহীত-পরমাযুধা:। ন্রুড়াপরে তত্ত যুদ্ধে তুর্যালয়াখিতা:।।৩০॥ কবলাভিন্নবিরস: খড়াশক্তাষ্টিপাণর:। তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ভাষত্তো দেবীমক্তে মহামুরা: أاهه॥ পাতিতৈ রথনাগাথৈরস্থরৈশ্চ বস্থুন্ধরা। অপম্যা সাহভবতত যতাভূৎ স মহারণ:।।৬৫।। শোণিভৌঘা মহানতঃ সম্বত্ত বিস্ফুক্র,। মধ্যে চাসুরুসৈক্তত বারণান্তরবাঞ্চিনাম। ৬৬।। ক্রণেন তলহাসৈক্তমস্থরাণাং निटक क्या विक्कुननाक्रमहाठम् ॥ ७१॥ न ह निःदश महानानमूरक्यन ধৃতকেসরঃ। শরীরেভ্যোহ্মরারীণামস্থনিব বিচিৰ্ভি।। ৬৮।। দেব্যা গগৈক তৈন্তত্র কৃতং যুদ্ধং ভশাস্থরৈ:। ধথৈধাং ভুতুষ্দেনা: পুশবৃষ্টিম্চো দিবি ॥ ৬৯।।

> ইতি জ্ঞীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে ময়ন্তরে দেবীমাহান্ত্যো মহিবান্তরসৈত্তবধঃ। (২র জঃ)

#### মধ্যমচরিতম্—মহিষাপুরবধঃ :

ঝবিফবাচ॥ ১॥ নিহন্তমানং তৎ সৈত্তমবলোক্য रिनानी किक्तः काशान् गर्यो योक मशोधिकाम् । २॥ त एवीः **अत्रत्व** ববর্ষ সমরেছস্থর:। ষথা মেরুগিরে: শৃকং তোরবর্ষেশ ভোরদ:। ৩। ভক্ত-চ্ছিত্তা ততে। দেবী শীলবৈৰ শরোৎকরান্। জ্বান ভূরগান্ বাণৈৰ্যভারকৈব বাজিনাম্॥॥। চিচ্ছেদ চ ধহু: সভো ধ্বঞ্চাতিসমৃদ্ধিতম্। বিব্যাধ চৈৰ পাত্রেযু চিছুরধ্যানমাত্রিগ:॥१॥ স চিছুরধ্যা বির্থো হতাখো হতসার্থি:। অভ্যধাবত তাং দেবীং থড়গচর্মধরোহস্কর:॥ ৬॥ সিংহমাহত্য থড়োন তীক্ষধারেণ,মূর্দ্ধনি। আজ্বান ভূজে সব্যে দেবীমপ্যতিবেগৰান্। ৭॥ ডক্তাঃ থজাে। ভূজং প্রাপ্য পফাল নূপনন্দন। তত্তা জ্ঞাহ শূলং স কোপাদকণ-লোচন:॥৮॥ চিকেপ চ ততত্ত্ত্ ভদ্রকাল্যাং মহাস্তর:। ভাজন্যমানং তেজোজী রবিবিশ্বমিবাশ্বরাৎ ॥ ১॥ দৃষ্টা তদাপভচ্ছ লং দেবী শ্লমমৃঞ্ত। তচ্চ্লং শতধা তেন নীতং স চ মহাস্ব:॥ ১০॥ হতে তদ্মিন্ মহাবীর্ষ্যে মহিবক্ত চমূপতো। আজগাম গজারতৃশ্চামরল্লিদশার্দ্দন:॥ ১১॥ সোহপি শক্তিং মুমোচাথ দেব্যান্তামন্বিকা ক্রতম্। হরারাভিহতাং ভূমৌ পাতরামাস নিপ্রভাম্ ॥১২॥ ভগ্নাং শক্তিং নিপতিতাং দৃষ্টা ক্রোধনমন্বিত:। চিক্লেপ চামর: শূলং বাবৈত্তদপি সাচ্ছিনং ॥ ১৩॥ ততঃ সিংহঃ সমুৎপত্য গৰুকুন্তান্তরস্থিতঃ। বাহুযুদ্ধেন যুষুধে তেনোচৈছালিশারিণা॥ ১৪ ॥ যুধ্যমানী ভতত্তা তু ভন্মায়াগান্মহীং গতৌ। যুষ্ধাতেহতিসংরকৌ প্রহারৈরতিদার্কণে:॥ ১৫॥ ততো বেগাৎ ধম্ৎপত্য নিপত্য চ মৃগারিণা। করপ্রহারেণ শিরভামরক্ত পূথক্ ক্লন্। ১৬। উদগ্রক রণে দেব্যা শিলাবৃক্ষাদিভিহ্'ত:। দস্তম্ষ্টিতলৈকৈব করালক নিপাভিত:॥ ১৭॥ দেবী ক্র্দা গদাপাত্তৈক্র্রামাস চোদ্ধতম্। বাস্কলং ভিন্দিপালেন বাণৈন্তামং তথাহন্ধকম্ ॥১৮॥ উত্তাস্থ্যবীগ্যঞ্ তথৈব **ह महाहरूम्। जित्नजा ह जिम्तन क्यांन श्रदम्यती ॥ >>॥ विफालकांनिना** কারাৎ পাতরামাস বৈ শির: i তৃদ্ধরং তুমু থঞোভো শরৈনিতে বনকরন্॥ ২•॥ এবং সংক্ষীয়মাণে তু খলৈক্তে মহিবাস্তর:। মাহিবেণ স্বরূপেণ আসরামান ভান্ গণান্॥ ২১॥ কাংন্ডিভু গঞহারেণ খুরক্ষেপৈতথাছপরান্। লাঙ্গ্ভাভিতাং-काञान् मृत्रांखांक विषातिखान्॥ २२॥ व्यट्गन कांश्किष्मत्रान् नात्पन ভ্রমণেন চ । নিঃখাদপ্রনেনাম্ভান্ পাতয়ামাদ ভূতলে॥ ২৩॥ নিপাভ্য প্রমর্থানীকমভ্যধাবত সোহস্বর:। সিংহং হত্তং মহাদেব্যা: কোপঞ্জে

ভতোহিদ্বা ॥২৪॥ সোহপি কোপান্ত্বাব্যঃ খুরক্র্র-নহীতলঃ। শৃদাভ্যাং পর্বতাহচচাংশিক্ষেপ চ ননাদ চ ॥ ২৫॥ বেগল্রমণবিক্র্রা মহী ভল্প বাদীর্যত। লাল্লেনাহভন্টারিঃ প্রাবরামাস সর্বতঃ॥ ২৬॥ ধৃতশৃদ্বিভিন্নান্দ পঞ্চপ্তং ব্যূর্থনাঃ। খাসানিলান্তাঃ শতশো নিপেত্র্র ভসোহচলাঃ ॥২৭॥ ইতি ক্রোধসমান্যাতমাপভন্তং মহাস্থরম্। দৃষ্টা সা চণ্ডিকা কোপং তদ্বধান্ন তদাকরোৎ ॥২৮॥ সা কিপ্তা ভল্প বৈ পাশং তং ববন্ধ মহাস্থরম্। ভত্যান্ধ মাহিষং রূপং সোহপি বদ্ধো মহামুরে ॥ ২৯॥ ভতঃ সিংহোহভবৎ সন্তো বাবন্তলান্থিকা শিরঃ। ছিনভি তাবৎ পুরুষং ধড়াপাণিরদৃশ্বত॥ ১০॥ ভত এবান্ত পুরুষং দেবী চিছেদ্র সান্ধকৈঃ। তং ধড়াচর্মণা সার্ধাং ভতঃ সোহভূমহাগন্তঃ॥ ০১॥ করেণ চ মহাসিংহং ভঞ্চকর্ম জগর্জ চ। কর্যভন্ত ন বং বির্বান্তিতঃ। তথৈব ক্রোভন্তামাস আলোক্যং সচরাচরম্॥ ৩০॥ ভতঃ ক্রুরা জগন্যাতা চণ্ডিকা পানমুন্তমম্। পপৌ পুরঃ পুনন্তিব জহাসার্যলগোচনা ॥০৪॥ ননর্দ্ধ চামুরঃ সোহপি বলবীর্য্যদোদ্ধতঃ। বিরাণাভ্যাঞ্চ চিক্রেপ চণ্ডিকাং প্রতি ভ্রম্বান্॥০৫॥ সা চ তান্ প্রহিতাংজ্বেন চুর্বর্মী শরোৎকরৈঃ। উবাচ ভং মদোদ্ধ ভ্রম্বরাপাকুলাক্ষরম্॥ ৩৬॥

দেব্যবাচ॥ ৩৭॥ গৰ্জ গৰ্জ ক্ষণং মৃত্ মধু ধাবৎ পিবাম্যহম্। ময়া ছয়ি হতেৎত্তৈৰ গৰ্জিয়স্ত্যাশু দেবতা:॥৬৮॥

শ্বিক্রবাচ ॥ ৩৯॥ এবমূজ্ব সমূৎপত্য সার্চা তং মহাস্থ্রম্। পাদেনাক্রম্য কঠে চ শ্লেননমতাড্রং ॥ ৪০॥ ততঃ সোহপি পদাক্রান্তত্ত্বরা
নিজম্থান্ততঃ। অর্ধনিক্রান্ত এবাতি দেব্যা বীর্য্যেণ সংবৃতঃ ॥ ৪১॥ অর্ধনিজ্ঞান্ত এবাসৌ যুধ্যমানো মহাস্থরঃ। তরা মহাসিনা দেব্যা শিরশ্ভিত্তা
নিপাতিতঃ ॥৪২॥ ততো হাহাক্বতং সর্বং দৈত্যসৈন্তং ননাশ তৎ। প্রহর্ষণ
পরং জগ্মঃ সকলা দেবতাগণাঃ ॥ ৪৩॥ তুই বৃত্তাং স্থরা দেবীং সহ দিব্যৈশ্বহ্বিভিঃ। জন্তর্গর্ম্বর্পত্রো নন্তুশ্চাপ্ররোগণাঃ ॥ ৪৪॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মন্বস্তুরে দেবীমাহান্ত্য্য মহিষাস্থরবধঃ। (৩য় অঃ)

## মধ্যমচারতম্—শক্রাদিস্ততিঃ।

ঋষিক্ষবাচ ॥ ১॥ শক্রাদয়: সূত্রগণা নিহতেহতিবীর্য্যে, তত্মিন্ হরাত্মনি সুত্রাত্মিবলে চ দেব্যা। তাং ভূষ্টুবুং প্রণতিনম্ভশিরোধরাংসা, বাগ্ভিঃ

व्यर्वभूगटकां का महाकरणहा: ॥ २॥ त्वा वता जलमिनः वना जलमायां का निः त्मर-( एवराप-मिक्क मृश्मृद्धा। छामधिकामधिन एक वस्ति भूकाः, छक्ता नर्छाः শ্ব বিদ্যাত শুভানি সা নঃ ॥७॥ বস্তাঃ প্রভাবমতুলং ভগবাননস্তো, इत्रक्त न हि वक्त्रमनः वनक। ना हिक्काथिनवागर-পরিপালনার, নাশার চা<del>ও</del>ভভয়ত্ত মতিং করোতু॥ ৪॥ বা ত্রী: স্বয়ং স্কুর্ডনাং ভবনেশ্**ণদীঃ,** পাপাত্মনাং কৃতধিয়াং কৃদয়েৰু বৃদ্ধি:। খাদ্ধা সজাং কুলজনপ্ৰভবত লজা, তাং चाः नजाः च পরিপালয় দেবি বিশ্বম ॥ ৫ ॥ किः वर्षश्चाम छर् ज्ञानमिष्ठारमञ्द, কিঞ্চাতিবীর্যামস্থরক্ষকারি ভূরি। কিঞ্চাহবেষু চরিতানি তবাতি বানি, সর্বেষ্ দেব্যস্থরদেবগণাদিকেষ্ । ও॥ হেতৃ: সমন্তজগতাং ত্রিগুণাপি (मारेय-म अप्राप्त इतिइतामिण्डित्रभाभाता। मर्काखेत्राथिनमिनः खनमःभ-পরমা প্র**কৃতিত্বমান্তা ৷৷ ৭**৷৷ ৰস্থা: হি সমূদীরণেন, তৃপ্তিং প্রস্নাতি সকলেষু মথেষু দেবি। স্বাহাৎসি বৈ পিতৃগণস্ত চ তৃপ্তিহেতুকচাৰ্য্যদে স্বমত এব বলৈ: স্বধা চ ॥ । । মৃক্তিহেতু-রবিচিস্তামহারতা চ, অভ্যস্তদে স্থনিয়তেঞ্জিয়তত্ত্বসারিঃ। মোকার্বিভি-भू निভित्रखनमञ्जलादेर-विकासि मा ভগবতী পরমাহি দেবি ॥»॥ শকাব্দিকা স্থ্ৰিমলৰ্গ্ৰজুষাং নিধান-মূদগীওরম্যপদপাঠবতাঞ্চ সামাম। দেবী ত্তনী ভগৰতী ভবভাবনায়, বার্ত্তা চ সর্ববন্ধগতাং পরমার্ত্তিহন্ত্রী ॥১০॥ মেধাসি দেবি তাथिवभाषाता, कृर्गानि कृर्गज्यनागत्रत्नोत्रन्या । बैः देकृष्णेविकृत्रेत्रकृष्ण-धिवाना, त्रोती खरमव निम्पानिक्छ खिछि।।।>>॥ केवे ९ नहां नवमनः পরি-পূর্ণচন্দ্র-বিশানুকারি কনকোত্তমকান্তি কান্তম্। অত্যভূতং প্রস্ততমাপ্তক্রবা ख्थानि, वक्तः वित्नाका **महमा महिमान्यत्त्रन ॥** ।। एष्ट्री जू त्वि कूनिजः क्क्रिकतान-म्छाक्भादमम्भक्वि यत्र मणः। थानामूरमाठ महिवल्रभणीय हित्यः, কৈৰ্জীব্যতে হি কুপিতান্তকদৰ্শনেন।।১৩॥ দেবি প্ৰসীদ প্ৰমা ভবতী ভবার, সঙ্গো বিনাশয়সি কোপবতী কুলানি। বিজ্ঞাত্ত্যেতদগুনৈব বদন্ত্যেত-দ্বীতং বলং স্থবিপুলং মহিষাস্থ্রক্ত ॥১৪॥ তে সম্মতা জনপদেৰু ধনানি তেষাং, তেবাং যশাংসি ন চ সীদভি ধর্মবর্গ:। ধন্তান্ত এব নিভৃতাত্মশভ্ভ্যদারা, বেষাং महाजानवा ज्वजी क्षमबा ॥>४॥ धर्मानि द्वित मक्नानि मदेवव कर्मानाजा-দৃত: প্রতিদিনং স্থকতী করোতি। স্বর্গং প্রয়াতি চ ততো ভবতীপ্রসাদালোক-व्यवस्थि कनमा नष्ट एपवि एजन ॥ ३७॥ इटर्ग चुछा दत्रिन छीछिमत्य-करसाः, चर्रयः यूजा मिक्रिकोर एकाः मनानि । मात्रिसादः अध्यक्षातिनि

বদন্তা, সর্ব্বোপকারকরণার সদার্দ্রচিতা॥ ১৭॥ এতিইতৈর্দ্র গছপৈতি স্বধং ভবৈতে, কুৰ্বন্ধ নাম নৱকার চিরার পাপম্। সংগ্রামমৃত্যুমধিগম্য দিবং প্রয়াভ, সম্বেতি নূনমহিতান্ বিনিহংসি দেবি ॥ ১৮ ॥ দুট্টেব কিল্ল ভবতী প্রকরোতি ভন্ম, সর্বাস্থ্যানরিযু ৰৎ প্রহিণোধি শন্ত্রন্। লোকান্ প্রয়ান্ত রিপবোহপি হি শত্রপূতা, ইখং মতির্ভবতি তেমপি তেখতিদাধ্বী ৷৷১৯৷ প্রজাপ্রভানিকরবিক্দৃ-त्ररेगखरशर्रेशः, भृनाश्रकाश्विनिवरङ्न मृत्माश्यत्रागाम्। यज्ञागठा विनव्रमः ७-विन्त्रिक्ष अ- रियोगानिनः তব বিলোক प्रकाः তদে ७९।। २०॥ पृर्व् छवु खम्मनः उव मौनः, ऋभः ভरिषक्रविविद्यामञ्जामरेष्ठः। वौर्याक रख् इंडल्प्यभवा-ক্ষাণাং, বৈরিদ্বপি প্রকটিতৈর দয়া অয়েখন্।।২১॥ কেনোপমা ভবতৃ তেহস্ত পরাক্রমন্ত্র,রূপঞ্চ শক্রভন্নকার্য্যভিহারি কুল ৷ চিত্তে রূপা সমরনিষ্ঠ্রতা চ দৃষ্টা, ত্রোব দেবি বরদে ভূবনত্তমেছপি।।২২॥ ত্রৈলোক্যমেতদ্থিলং রিপুনাশনেন, আতং দ্বরা সমরমূর্দ্ধনি তেহপি হতা। নীতা দিবং রিপুগণা ভয়মণ্যপাল্ড-মন্মাক-ম্মাদস্বারিজ্ঞবন্নমস্তে॥২৩॥ শৃলেন পাহি নো দেবি পাহি থড়োন চাম্বিকে। ষটাস্বনেন নঃ পাহি চাপজ্যানিঃস্বনেন চ।। ২৪॥ প্রাচ্যাং রক্ষ প্রতীচ্যাঞ্চ চণ্ডিকে রক্ষ দক্ষিণে। ভ্রামণেনাত্মশূলক উত্তরক্তাং তথেধরি।।২৫॥ त्मोगानि यानि क्रभानि देखलाटका विष्ठवस्त्रि एउ। यानि bioार्थरपातानि देख-রক্ষান্মাংশুথা ভুবম্॥২৬॥ খড়গশূলগদাদীনি ধানি চাস্ত্রাণি তেহস্থিকে: কর-পল্লবসন্ধীনি তৈরশান্রক্ষ সর্বতঃ ॥ ২৭॥

ঋষিক্ষবাচ ।।২৮॥ এবং স্বতা সুরৈ র্দিব্যৈঃ কু স্থানের্ন নিলোড বৈঃ। অচিতা ক্ষাতাং ধাত্রী তথা গন্ধান্থলেপনৈঃ।।২৯॥ ভক্ত্যা সমকৈ স্থিদিনিব্যধ্ পৈশু ধ্পিতা। প্রাহ প্রসাদস্ম্থী সমস্তান্ প্রণতান্ স্থরান্।। ৩০॥

দেব্যবাচ ॥ ৩১॥ ব্রিয়তাং ত্রিদশাঃ সর্বেব বদশ্বতোহভিবাঞ্চিতম্ । ( দদা-ম্যাহমতিপ্রীভ্যা স্তবৈরেভিঃ স্থপুঞ্জিতা ) ॥৩২॥

দেবা উচু: !।৩০॥ জগবত্যা ক্বতং সর্বাং ন কিঞ্চিদবশিষ্যতে ॥ ৩৪ ॥ বদ্যং নিহত: শক্রবাকং মহিষাস্থর: । যদি বাপি বরো দেঃ অ্যান্দাকং মহেশরি ॥৩৫॥ সংস্থতা সংস্থতা অরো হিংসেথা: পরমাপদ: । যত মর্ত্তা: তথৈরেভিন্ধাং তোমত্যমলাননে ॥ ৩৬ ॥ তত্ত বিত্তবিধিভবৈধনিদারাদিসম্পদাম্ । বৃদ্ধরেহস্মংগ্রসন্না বং ভবেথা: সর্বাদাবিকে ॥ ৩৭ ॥

ঋষিক্ষৰাচ । ৩৮ । ইতি প্ৰসাদিতা দেবৈৰ্জ্জগতোহৰ্থে তথাত্মনঃ। তথে-ছ্যুক্ষা জন্মকালী বভূবান্তৰ্হিতা নূপ । ৩৯ । ইত্যেতৎ কৰিভং ভূপ সভূতা স। বথা পুরা। দেবা দেবশরীরেভ্যো জগদ্ররহিতৈবিণী ॥ ৪০॥ পুনশ্চ গৌরীদেহা সা সমৃত্তা বথাহতবং। বধার গৃষ্টদৈত্যানাং তথা শুস্ত-নিশুস্তরো:॥ ৪১॥ রক্ষণার চ সোকানাং দেবানাম্পকারিণী। তচ্চ্প্স মরাধ্যাতং বথাবং কথরামি তে॥ ৪২॥

> ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মন্বন্তরে দেবীমাহান্ত্যো মহিনান্তরবধঃ সমাপ্তঃ। ( ৪র্থ অঃ ) .

# উত্তরচরিভম্—দেবীদূভসংবাদঃ।

ঝবিক্রবাচ॥ ১॥ পুরা শুন্তনিশুন্তাভ্যামন্তরাভ্যাং শচীপতে:। তৈলোক্যং
বজ্ঞভাগাশ্চ কৃতা মদবলাঞ্জাৎ॥২॥ তাবেব প্র্যুতাং ত্রদধিকারং তথৈক্রম্।
কৌবেরমথ থাম্যঞ্চ চক্রাতে বক্লপ্ত চ ॥ ০॥ তাবেব পরনর্দ্ধিঞ্চ চক্রত্র্বহিক্ষর্প চ। ততে৷ দেবা বিনির্দ্ধৃতা ভ্রষ্টরাজ্যাং পরাজিতাং॥ ৪॥ কৃতাধিকারাজিদশান্তাভ্যাং দর্বে নিরাক্তাং। মহান্তরাভ্যাং তাং দেবীং সংস্করন্ত্যপরাজিতাম্॥ ৫॥ তয়াস্মাকং বরো দত্তো যথাপৎস্ক স্বতাধিলাং। ভরতাং
নাশরিল্পামি তৎক্রণাৎ পরমাপদং॥ ৩॥ ইতি কৃত্যা মৃতিং দেবা হিমবন্তং
নগেররম্। ক্লগান্তর ভতো দেবীং বিশ্বুমারাং প্রতৃষ্ট বুং॥ ৭॥

দেবা উচু: ॥৮॥ নমো দেবৈর মহাদেবৈর শিবারৈ সভতং নমঃ। নমঃপ্রক্ষত্য ভদ্রারৈ নিম্নতাঃ প্রণতাঃ স্ম তাম্॥৯॥ রৌদ্রারৈ নমো নিত্যারৈ
গৌর্ব্য ধার্ট্রের নমো নমঃ। জ্যোৎসারে চেন্দ্র্রপিণ্য স্থারে সভতং
নমঃ॥১০॥ কল্যাণ্য প্রণতা বুদ্রৈর সিন্ধ্য কুর্মো নমো নমঃ।
নৈথাত্য ভৃত্তাং লক্ষ্য শর্কাণ্য তে নমো নমঃ॥১১॥ ছর্গারে ছর্গপারারৈ
সারারে সর্ক্রারিন্য। খ্যাত্যে তথেব ক্ষারে ধ্যারে সভতং নমঃ॥১২॥
অতিসৌম্যাভিরৌদ্রারে নতান্তক্ত নমো নমঃ। নমো অগৎপ্রতিষ্ঠারে দেবের
ক্তিরে নমো নমঃ॥১০॥ বা দেবী সর্ক্রভ্তের্ বিষ্ণুমারেতি শব্দিতা। নমভক্তের ১৪॥ নমন্তক্তে॥১৫॥ নমন্তক্তে নমো নমঃ॥১৬॥ বা দেবী সর্ক্রভ্তের্ চেতনেত্যভিধীরতে। নমন্তক্তৈ ॥১৭॥ নমন্তক্তৈ। নমন্তক্তৈ
নমো নমঃ॥১৯॥ বা দেবী স্ক্রভ্তের্ বৃদ্ধিরণেপ সংস্থিতা। নমন্তক্তৈ। ২০॥

नमचरेच ॥ २১॥ नमचरेच नामा नमः॥ २२॥ व। त्वी नर्सक्छित् निर्जाबालन সংস্থিতা। নমন্ততিভা ২০॥ নমন্ততিভা ২৪॥ নমন্ততিভ নমো নমঃ।। ২৫॥ बा मिदी नर्सकृत्वयु कृषांक्रतभग मः व्हिना। नमक्तेन ॥ २७॥ नमक्तेन ॥ २१॥ নমন্তব্যৈ নমো নম: ॥ ২৮॥ বা দেবী সর্বভূতেরু চ্ছারারপেণ সংস্থিতা। नमस्रदेख । २२ ॥ नमस्रदेख ॥ ७० ॥ नमस्रदेख नत्मा नमः ॥ ७১ ॥ वा ८ मरी সর্বভূত্তেরু শক্তিরপেণ সংস্থিতা। নমন্তবৈত্য ॥ ৩২ ॥ নমন্তবিত্য ॥ ৩৩ ॥ নমন্তবৈত্য नरमा नमः॥ ७८॥ या रत्तरी मर्सकृत्वर् कृष्णकार्यन मश्चिता। नमखरेख ॥ ७०॥ নমন্তব্যে ॥ ৩৬ ॥ নমন্তব্যৈ নমো নম: ॥ ৩৭ ॥ যা দেবী সর্বভূতেযু ক্ষান্তি-রপেণ সংস্থিতা। নমন্তব্যৈ ॥ ৩৮ ॥ নমন্তব্যৈ ॥৩৯।। নমন্তব্যৈ নমে। নম: ॥৪০॥ वर्ष दिन्ती मर्व्यकृत्वयु काञ्जित्रत्थन मः विकास नमक्रोक ।। वनक्रोक ।। वनक्रोक ।।। নমন্তব্যে নমো নম:।। ৪৩।। যা দেবী সর্বভৃতেষু লজ্জারপেণ সংস্থিতা। नमरुटिन ।। ८८ ।। नमरुटिन ।। ८८ ।। नमरुटिन नरमा नमः ।। ८७ ।। यो एनवी সর্বভূতেরু শান্তিরপেণ সংস্থিতা। নমন্তক্তি।। ৪৭।। নমন্তক্তি।। ৪৮॥ নৰস্তত্তৈ নৰে। নম: ।। ৪৯ ।। বা দেবী সর্বভূতেয় প্রদারপেণ সংস্থিতা। नम्बदेखः ॥ १०॥ नम्बदेखः ॥ १०॥ नम्बदेखः नदम या रनवी नर्क्षकृरखबू काश्विवरभग मश्विका। नमखरेख ॥ eo ॥ नमखरेख ॥es॥ নমতকৈ নমো নম: ॥ ৫৫ ॥ বা দেবী সর্বভূতেষ্ লক্ষীরপেণ সংস্থিতা। नगर्डा १७॥ नगर्डा ११॥ नगर्डा नाम नमः॥ १५॥ या एसवी সর্কভৃতেষু বৃত্তিরূপেণ সংশ্বিতা। নমন্তব্যৈ 🛮 🖘 ॥ নমন্তব্যে ॥ 🍑 ॥ নমন্তকৈ নমো নমঃ॥ ৬১॥ বা দেবী সর্বজ্তের শ্বভিরপেণ সংস্থিতা। नयखरेखा ७२॥ नयखरेखा ७०॥ नमखरेख नत्मा नमः॥ ७८॥ वा तन्ती সর্বভৃতেষু দয়ারপেণ সংস্থিতা। নমন্তব্যৈ ॥ ৩৫।। নমন্তব্যৈ ॥ ७७।। নমতকৈ নমো নম:।। ৬৭।। যা দেবী সর্বভৃতেরু তৃষ্টিরপেণ সংস্থিতা। नमचरेक ॥ ७৮॥ नमचरेक ॥ ७३॥ नमचरेक नत्या नमः ॥ १०॥ वा त्यवै সর্বভূতের্ মাতৃরপেণ সংস্থিতা। নমন্তবৈত্র ।। ৭১ ॥ নমন্তবৈত্র ।। ৭২॥ নমন্তবৈত্র নমোনমঃ।। ৭০।। যা দেবী সর্বভূতেযু ভ্রান্তিরপেণ नमचरेख ॥ १६ ॥ वसचरेख नत्यानमः ॥ १७ । नमच्छे ॥ १८॥ ইব্রিরাণামধিষ্ঠাত্রী ভৃতানাঞ্চাধিলেব্ বা। ভৃতেষু সততং তকৈ ব্যাপ্তিদেবৈত नत्यां नयः।। ११॥ हिजिद्धार्यम वा इर्ष्यस्य जम् वाःमा विका अगरः। नमचरित्र ॥ १৮॥ नमचरित्र ॥ १२॥ भनचरित्र नरम्। नमः ॥ ५०॥ इता

সুরৈ: পূর্ব্বমন্তীষ্ট্রসংশ্ররাৎ, তথা স্বরেন্দ্রেণ দিনের্ সেবিতা। করোতু সান:
তভহেতুরীশ্রী, তভানি ভদ্রাণ্যভিহন্ত চাপদ: ॥ ৮১॥ বা সাম্প্রভং চোদ্ধত-দৈত্যতাপিতৈরশাভিরীশা চ স্থরৈন মস্ততে। যা চ শ্বতা তৎক্ষণমেব হস্তিন:, সর্বাপদো ভক্তিবিনশ্রমূর্তিভিঃ ॥ ৮২ ॥

ঋষিক্ষবাচ।। ৮০।। এবং স্তবাদিযুক্তানাং দেবানাং তত্ত্ব পাৰ্ক্ষতী। স্থাতুমভ্যাববৌ তোৱে জাহ্ব্যা নুপনন্দন॥ ৮৪॥ সাহত্রবীস্তান স্থরান্ স্বৰ্জৰন্তিঃ স্তুৰতেহত্ত কা। শরীরকোষতশাস্তাঃ সমৃত্তাহত্রবীচ্ছিবা॥ ৮৫॥ खांबः गरेमछः क्रिवरा चर्चामछानिवाकरेखः। त्मरेवः गरेमरेखः ममरत निचरस्वन পরান্তিতৈ:।। 🗝 ।। শরীরকোবাদ্ বস্তস্তা: পার্বস্ত্যা নি:স্তাহস্বিকা। কৌষিকীতি সমন্তেষ্ তভো লোকেষ্ গীয়তে।। ৮৭।। তত্যাং বিনির্গতায়ান্ত ক্ষাভৃৎ সাপি পাৰ্কতী। কালিকেতি সমাখ্যাতা হিমাচলকুতাপ্ৰয়।। ৮৮।। তজোহস্থিকাং পরং রূপং বিভ্রাণাং স্থমনোহরম্। দদর্শ চপ্রো মুখ্রন্ড ভূজ্যৌ শুস্তনিশুস্তরো: ॥৮৯॥ তাভ্যাং শুস্তার চাধ্যাতা অতীবস্থমনোহরা। কাপ্যাতে ন্ত্ৰী মহারাজ ভাসরস্তী হিমাচলম্।। ১০।। নৈব তাদৃক্ কচিজ্ৰপং দৃষ্টং কেন-চিত্ত্তমন্। জ্ঞারতাং কাপ্যদেশ দেবী গৃহতাঞ্চাস্মরেশ্বর ॥১১॥ শ্রীরত্মনতিচার্ব্বকী ছোতরত্তী দিশবিবা। সা তু ভিষ্ঠতি দৈত্যেক্স তাং ভবান ক্সষ্ট্রহতি ॥৯২॥ বানি রত্বানি মণবো গজাখাদীনি বৈ প্রভো। বৈলোক্যে তু সমন্তানি সাম্প্রতং ভান্তি তে গৃহে॥ ৯৩॥ ঐরাবতঃ সমানীতো গঞ্চরন্থং পুরুকরাৎ। পারিজাক্ত जनकात्रः **जरेशरवारिकः**श्ववा इषः॥ ১৪॥ विमानः इंत्रमःयुक्तरमजलिक्रेजि তেংকনে। রত্বভূতমিহানীতং বদাসীদ বেধসোহত্ততম ॥১৫ ॥ নিধিরের মহাপদ্মঃ সমানীতো ধনেখরাও। কিঞ্জিনীং দদৌ চারিশালাসমানপরস্বাম্ ॥ ३७॥ ছত্তত্তে বাৰুণং গেহে কাঞ্চনপ্ৰাবি ভিষ্ঠতি। তথায়ং ষঃ পুরাসীৎ প্রজাপতে:॥ ১৭॥ মৃত্যোক্ৎক্রান্তিদা নাম শক্তিরীশ তরা ক্তা। পাশ: দৰিলরাজভ ভাতৃত্ব পরিগ্রহে॥ ১৮। নিওভভাত্তিকাতাক সমতা রত্মলাতর:। বহ্নিরপি দদৌ তুভামরিশৌচে চ বাসদী॥ ১৯॥ এবং দৈত্যেক্ত রত্মানি সমস্তান্তাহতানি তে। স্তীর্ভমেষা কল্যাণী ত্ত্বা কল্মান্ত গৃহতে ॥ ১০০ ॥

ৰ্ষবিক্ষবাচ ॥১০১৪ নিশম্যেতি বচঃ শুল্কঃ স তদা চণ্ডমুখনোঃ। প্ৰেৰনামাস স্থানং দৃতং দেব্যা মহাস্ত্ৰমুখ ১০২॥ ইতি চেভি চ বক্তব্যা সা গছা বচ-নাশ্মম। বধা চাভ্যেতি সংখ্যীত্যা তথা কাৰ্য্য দ্বা স্থা ১০৩॥ স তত্ত্ব গছা ৰজান্তে শৈলোদেশেহতিশোভনে। সাদেবী তাং ততঃ প্ৰাহ শ্লন্থ মধুরয়। গিরা॥ ১০৪॥

দ্ভ উবাচ॥ ১০৫॥ দেবি দৈত্যেশর: ওপ্তক্রৈলোক্যে পরমেশর:।

দ্তোহহং প্রেষিতন্তেন অংসকাশমিহাগত:॥ ১০৬॥ অব্যাহতাক্ত: সর্বাস্থ

যং সদা দেববোনিষ্। নিজ্জিতাথিলদৈত্যারি: স যদাহ শৃণ্র তং ॥ ১০৭॥ মম

কৈলোক্যমথিলং মম দেবা বশাহ্নগা:। বজ্ঞভাগানহং সর্বাহ্নপাশ্বামি পৃথক্
পৃথক্ ॥ ১০৮॥ ত্রিলোক্যে বররজানি মম বশান্তশেষতঃ। তথৈব গন্ধরশ্বানি

হতা দেবেক্রবাহনম্॥ ১০৯॥ কীরোদমথনোজ্তমশ্বতঃ মমাহমরে:।
উচ্চে:শ্রবসসংক্ষাং তং প্রেণিপত্য সমর্পতিম্॥ ১১০॥ বানি চান্থানি দেবের্
পর্বেষ্রগেষ্ চ। রজভ্তানি ভূতানি তানি মব্যেব শোভনে॥ ১১১॥

শ্বীরজভ্তাং তাং দেবি লোকে মন্তামহে বরম্। সা অমন্যাহ্নপাগছে

বতে। রজভ্তাে বরম্॥১১২॥ মাং বা মমাহজং বাপি নিওস্কৃম্কবিক্র
মন্। ভক্ত তং চঞ্চলাপান্ধি রজভ্তানি বৈ বতঃ॥১১০॥ পরমেশ্ব্যা
মত্লং প্রাক্ষ্যসে মৎপরিগ্রহাৎ। এতদ্ বৃদ্যা সমালোচ্য মৎপরিগ্রহতাং

বক্ত ॥ ১১৪॥

ঋষিক্ষবাচ ॥ ১১৫ ॥ ইত্যুক্তা সা তদা দেবী গন্তীরান্তঃমিতা জগো। তুর্গা ভগবতী জন্তা বয়েদং ধার্যতে জগৎ॥ ১১৬॥

দেব্যবাচ।। ১১°।। সত্যমুক্তং ত্বয়া নাত্র মিথ্যা কিঞ্চিত্রয়ে দিতস্।
তৈবোক্যাধিপতিঃ শুন্তো নিশুন্তশ্চাপি তাদৃশঃ॥১১৮॥ কিন্তুত্র বং প্রতিজ্ঞাতং
মিথ্যা তৎ ক্রিয়তে কথম্। শ্রম্নতাময়বৃদ্ধিত্বাৎ প্রতিজ্ঞা বা কতা পুরা॥১১৯॥
যো মাং জয়তি সংগ্রামে বো মে দর্পং ব্যপোহতি। বো মে প্রতিবলো লোকে
স মে ভর্তা ভবিষ্যতি ॥১২০।। তদাগচ্চতু শুন্তোহত্র নিশুন্তো বা মহাম্বরঃ।
মাং জিত্বা কিং চিরেণাত্র পাণিং গৃহ্লাতু মে লঘু॥১২১॥

দৃত উবাচ।। ১২২।। অবলিপ্তাহনি নৈবং বং দেবি জহি মমাগ্রতঃ। জৈলোক্যে কঃ পুমাংন্তিচেদগ্রে শুভনিশুভ্রোঃ। ১২০।। অক্সেমানি দৈত্যানাং সর্ব্ধে দেবা ন বৈ বৃধি। তিঠন্তি সমূধে দেবি কিং পুনঃ স্ত্রী অনেকিকা।।১২৪।। ইন্দ্রান্তাঃ সকলা দেবান্তসুর্বেষাং ন সংযুগে। শুভাদীনাং কথ-ভেষাং স্ত্রী প্রবাশ্রসি সমূধ্য ।। ১২৫।। সা বং গত্রু মধ্যেবোক্তা পার্বং শুভনিশু-ভরোঃ। কেশাকর্বপনিশুভিগোরবা মা গমিষ্যসি।। ১২৬।।

দেব্যবাচ।। ১২৭।। এবনেতদ্ বলী গুম্বো নিগুভ্নতাভিবীৰ্য্যবান।

কিকরোমি প্রতিজ্ঞা মে বদনালোচিতা পুরা।। ১২৮।। স বং গছ মরোক্তং তে বনেতৎ সর্কমাদৃতঃ। তদাচক্রাস্থরেজার স চ বৃক্তং করোতু যং॥ ১২৯॥

> रेजि वीमार्करश्वतारण मावर्गित्क महस्रदत्र रमवी-माहारखाउ .रमवाः मृज्यःवामः। ( स्म षः)

## উত্তরচরিতম্-ধূত্রলোচনবঞ্চ।

শ্বিক্রবাচ॥ ১॥ ইত্যাকর্ণ্য বচো দেব্যা: স দ্তোহমর্বপ্রিত:। সমাচষ্ট সমাগম্য দৈত্যরাজার বিস্তরাৎ॥ ২॥ তক্ত দৃতস্ত তদ্ বাক্যমাকর্ণাহস্বরাট্ তত:। সক্রোথ: প্রাহ দৈত্যানামধিপং ধূমলোচনম্॥ ৩॥ হে ধ্যলোচনাত তং অসৈক্তপরিবারিত:। তামানয় বলাদ্টাং কেশাকর্ষণবিস্ক্লাম্॥ ৪॥ তৎপরিত্রাণদ: কশ্চিদ্ বদি বোর্তিঠতেহপর:। স হস্তব্যোহমরো বাপি বক্ষো গর্ম্ব এব বা॥ ৫॥

শ্বিক্বাচ॥৬॥ তেনাজপ্তত: শীঘ্রং স দৈত্যো ধ্যুলোচনঃ। বৃতঃ
বন্ত্যা সহস্রাণাশস্করাণাং ক্রতং ববৌ॥१॥ স দৃষ্টা তাং ততো দেবীং তৃহিনাচলসংস্থিতাম্। জ্বগালোকৈঃ প্রবাহীতি মূলং শুস্তনিশুস্ত্রোঃ॥৮॥ ন চেৎ
প্রীত্যাংছ ভবতী মন্তর্তারমূপৈয়তি। ততো বলারমান্যের কেশাকর্বপরিহ্বলাম্॥১॥

দেব্যবাচ ॥ > । দৈত্যেখরেণ প্রহিতো বলবান্ বলসংবৃতঃ। বলালমুদি
মামেবং ততঃ কিন্তে করোম্যহম্॥ >> ॥

শ্বিক্বাচ॥ ১২॥ ইত্যুক্তঃ সোহভাগাবভাষক্ষরো গ্রলোচনঃ। হ্লারেবৈব তং ভক্ষ সা চকারাখিকা ততঃ॥ ১০॥ অথ ক্রুদ্ধং মহানৈদ্ধক্ষররাণাং তথাখিকান্। ববর্ব সার্থকৈন্তীক্ষেত্রথা শক্তিপরখধেঃ॥ ১৪॥ ততো
গ্তসটঃ কোপাৎ ক্রুলা নাদং স্থাতরবন্। পপাতাক্ষরসেনারাং সিংহো দেব্যাঃ
স বাহনঃ॥ ১৫॥ কাংশ্চিৎ করপ্রহারেণ দৈত্যানাক্রেন চাপরান্। আক্রোভ্যা।
চাধরেণান্তান্ অ্বান ক্ষরাক্রান্॥ ১৬॥ কেবাঞ্চিৎ পাটরামাস নথৈঃ
কোঠানি কেসরী। তথা তলপ্রহারেণ শিরাংসি ক্রুত্বান্ পৃথক্॥ ১৭॥
বিচ্ছিরবাছশিরসঃ ক্রুতান্তেন তথাহপরে। পপে চ ক্ষরিরং কোঠান্ত্রবাং

ধৃতকেসর:॥ ১৮।। ক্লণেন তদ্ বলং সর্বাং ক্ষয়ং নীতং মহাস্থন।। তেন কেসরিপা দেব্যা বাহনেনাতিকোপিনা॥ ১৯।। শ্রুতা তমসুরং দেব্যা নিহতং ধৃয়লোচনন্। বলঞ্চ ক্ষয়িতং রুৎমং দেবীকেসরিপা ততঃ।॥ ২০।। চুকোপ দৈত্যাধিপতিঃ ওজঃ প্রেফ্রিতাধর:। আক্রাপয়ামাস চ তৌ চওমুঙৌ মহাস্থরে ।। ২১॥ হে চও হে মৃও বলৈর্বহুলৈঃ পরিবারিভৌ। তত্ত্ব গচ্ছত গলা চ সাসমানীয়তাং লঘু॥ ২২॥ কেশেয়ারুয় বদ্ধা বা বদি বঃ সংশয়ো বৃধি। তদাশেয়ায়ুঝঃ সুকৈরেসুরৈর্কিনিহন্ততান্॥ ২০॥ তভ্যাং হতায়াং তৃষ্টায়াং সিংহে চ বিনিপাতিতে। শীল্রমাগম্যতাং বদ্ধা গৃহীলা ভাষথাছিকাম্॥ ২৪॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মন্বস্তুরে দেবীমাহাত্ম্যে শুস্তুনিশুস্তুসেনানী-ধ্যুলোচনবধঃ। (৬৪ জঃ)

# উত্তরচরিভম্-চণ্ডমুগুবধঃ।

ৰ্ষবিক্ৰাচ।। ১।। আঞ্জান্ত ততো দৈত্যাশ্চওমূওপুরোগমা:। চতুর্দ-বলোপেতা বৰ্বভূগভাৰ্ধা: ॥ ২ ॥ দদৃশুত্তে ততো দেবীমীৰদ্ধাসাং ব্যবস্থি-তাম্। সিংহত্যোপরি শৈলেন্দ্র-শৃদ্ধে মহতি কাঞ্চনে॥ ৩॥ তে দৃষ্ট্। তাং সমাদাভূম্ভাযঞ্জুকভতা:। আকুইচাপাদিধরাতথাতে তৎস্মীপগা:॥ ৪ ॥ ভতঃ কোপঞ্কারোটেচরম্বিকা তানরীন্ প্রতি। কোপেন চাস্তা বদনং মগী-বৰ্ণমভূতদা॥ ৫॥ क्रूजिक्षिनाख्या नगांध्यनकाम् क्रुच्या করালবদনা বিনিক্রাস্তাহসিপাশিনী॥ ৬॥ বিচিত্রখট্। ছধরা নরমালা-বিভূষণা। বীপিচর্মপরীধানা ওছমাংসাহতিভৈরবা॥ १॥ অতিবিভারবদনা बिस्तानन-ভীষণা। নিষশ্বারজনমনা নাদাপ্রিতদিব্বধা ॥ ৮॥ সা বেগে-নাভিপতিতা বাতরতী মহাক্রান্। সৈজে তত্ত্ব ক্রারীণামভকরত তদ্বলম্ ॥১॥ পাঞ্জিগ্রাহাকুশগ্রাহি-বোধৰণ্টাসম্বিভান্। সমাদারেকহত্তেন মূথে চিকেপ বারণান্॥ ১০ ॥ তথৈব ৰোধং ভূরগৈ রথং সার্থিনা সহ। নিক্ষিপ্য বক্ষে দশনৈশ্চর্বরত্যতিতৈরবন্ ॥ ১১ ॥ একং জগ্রাহ কেশেরু গ্রীবারামথ চাপরন্। পাদেনাক্রম্য চৈবাভ্রম্বসাভ্রশেধাধরং॥ ১২॥ তেম্কানি চ শল্পাণি মহা-স্থানি ভথাস্থলৈ:। মৃথেন জগ্রাহ কিবা দশনৈশ্বিভাঙ্গি। ১৩। বলিনাং

ভদ্বলং সর্ক্ষমন্ত্রাণামহাত্মনাম্। মদদিভিক্ষচ্চান্তালাভান্তরন্ত্রণ ॥১৪॥

অসিনা নিহতাঃ কেচিং কেচিং ধটাক্তাড়িভাঃ। ক্ষমুর্বিনাশমন্ত্রঃ

দস্তাগ্রাংভিহতাত্তথা ॥ ১৫ ॥ ক্ষণেন ভদ্বলং সর্ক্ষমন্ত্রাণারিপাভিত্রন্

দৃষ্টা চণ্ডোংভিছ্জাব তাং কালীমভিভীষণাম্ ॥ ১৬ ॥ শরবর্ধর্মহাজীমৈ-ভাঁমাকীং ভাং মহাম্বঃ। ছাদয়ামাস চকৈন্ট মৃতঃ ক্ষিপ্তঃ সহপ্রশঃ ॥ ১৭ ॥

ভানি চক্রাণ্যনেকানি বিশমানানি ভন্মুখন্। বভূর্বথাকবিদ্বানি স্ববহুনি ঘনো
দরম্॥ ১৮ ॥ ততাে কহাসাংভিক্ষা ভীমং ভৈরবনাদিনী। কালী করাল
বজ্রান্তর্দ্ধু দ্বিশ্বনাজ্জ্বলা ॥ ১৯ ॥ উথায় চ মহাসিং হং দেবী চত্তমধাবত ।

গৃহীতা চাক্ত কেশেষ্ শিরভেনাসিনাজ্জিনং ॥ ২০ ॥ অথ মৃত্তাংপ্যধাবতাং

দৃষ্ট্রা চতঃ নিপাভিত্রন্। ভমপ্যপাত্রভূমো সা থজ্গাভিহতং ক্ষা॥ ২১ ॥

হতদেবং ততঃ সৈত্রং দৃষ্ট্রা চতঃ নিপাভিত্রন্ । মৃত্তঞ্চ স্মহাবীর্ঘ্যং দিশো

ভেজে ভয়াতুরম্ ॥ ২২ ॥ শিরক্তভ্ত কালী চ গৃহীতা মৃত্তমেব চ। প্রাহ

প্রচণ্ডাট্টহাসমিশ্রমভ্যেত্য চিতিকান্॥ ২০ ॥ ময়া ভবাজ্যোপহতে চত্তমৃত্তে 
মহাপশ্। যুদ্ধবজ্ঞে ত্বরং ভঙ্গং নিশুভ্রঞ্চ হনিষ্যসি॥ ২৪ ।।

শ্বিক্ষাচ ॥ ২৫॥ তাবানীতো ততো দৃষ্টা চণ্ডমূতো মহাস্করে। উবাচ কালীং কল্যাণী ললিভং চণ্ডিকা বচঃ॥ ২৬॥ ৰস্মাচ্চণ্ডঞ্চ মূণ্ডঞ্চ গৃহীত্ব। ত্বমূপাগতা। চামূণ্ডেভি ভতো লোকে খ্যাতা দেবি ভবিস্থাসি।।২৭॥

> ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবণিকে মরস্করে দেবীমাহান্দ্যো চণ্ডমুগুবধঃ । (৭ম খাঃ)

# উত্তরচরিভম্–রক্তবীজবথঃ।

শবিক্বাচ॥ > ॥ চণ্ডে চ নিহতে দৈত্যে মৃণ্ডে চ বিনিপাতিতে। বছ-লেষু চ সৈত্যেবু ক্ষরিতে ব্যবহার । । ততঃ কোপপরাধীন- চৈতাঃ শুল্কঃ প্রতাপবান্। উদ্বোগং সর্কাস্থানাং দৈত্যানামাদিদেশ হ॥ ৩॥ অদ্ধ সর্কবিদৈত্যাঃ বড়নীতিক্লায়ধাঃ। কঘূনাং চতুরনীতির্নির্যান্ত স্ববলৈক্তাঃ ॥॥॥ কোটিবীর্য্যানি পঞ্চাশদস্বাণাং কুলানি বৈ। শতং কুলানি ধৌদ্রাণাং নির্গ-দ্বে ম্যাক্রয়া॥ ৫॥ কালকা দৌর্ফা বৌর্যাঃ কালকেয়াত্তথাস্বরাঃ। যুক্ষার

সজ্জা নির্যান্ত আক্ষরা ব্রিডা মম। ৬ । ইত্যাক্ষাপ্যান্তরপতি: ওল্ডো-ভৈরবশাসনঃ। নিজুপাম মহাদৈলুসহলৈত ভিতুতিঃ। ৭॥ আয়াতং চপ্তিকা দৃষ্ট্য তৎসৈক্তমতিভীষণম্। জ্যাম্বনৈঃ প্রয়ামাস ধরণীগগনান্তরম্॥ ৮॥ ডভঃ সিংহো মহানাদমতীব কুভবান্ নুপ। বন্টাখনেন ভান্ নাদানছিক। চোপরংহর । ৯। ধ্রুক্রাসিংহণ্টানাং শকাপুরিত-দিল্পা। নিনাদৈ-ভীষ্ণৈ: কালী জিগ্যে বিভারিতাননা ॥ ১০ ৷ তরিনাদমূপশ্রুত্য দৈত্যসৈক্তৈ-শ্চতুর্দিশন্। দেবী সিংহত্তথা কালী সরোধেঃ পরিবারিতাঃ॥ ১১॥ এতন্মিন্ন-স্তবে ভূপ বিনাশায় সুর্বিষাম্। ভবারামরসিংহানামতিবীর্য্যবলা-ষিতা: ॥ ১২ ॥ ব্রশ্বেশগুহবিষ্ট্নাং তথেক্স চ শক্তম:। শরীরেভ্যোবিনি-ক্রমা ভজ্রপৈশ্চ গুকাং বরু:॥ ১৩॥ বস্তা দেবস্তা বজ্রপং যথা ভূষণবাহনম্। তখদেব হি ভচ্ছেজিরস্থরান ধোজ, মাধ্যো॥ ১৪॥ হংস্যুক্তবিমানাগ্রে সাক্ষস্ত্রকমণ্ডসূ:। আয়াতা ব্রহ্মণঃ শক্তিব নাণী সাভিধীয়তে॥ ১৫॥ নাহে-কৌমারী শক্তিহতা চ ময়্রবরবাহনা। বোদ্ধমভ্যাবযৌ দৈত্যানম্বিকা গুছ-রূপিণী। ১৭। তথৈব বৈফ্বী শক্তির্গরুড়োপরি সংস্থিতা। শঙাচক্রগদাশাদ-ৰ্জাহন্তাহ্নুপাৰ্যো;॥ ১৮॥ যজ্ঞবারাহ্মতুলং রূপং যা বিভ্রতো হরে:। শক্তি: সাপ্যাযয়ে তত্ত্ব বারাহীং বিভ্রতী তত্ত্বন ॥ ১৯ ॥ নারসিংহী নুসিংহক্ত বিভ্রতী সদৃশং বপৃঃ। প্রাপ্তা তত্ত সটাকেপ-ক্ষিপ্তনক্ষত্রসংহতিঃ। ২০ ॥ বজ্জ-হত্তা তথৈবৈন্দ্রী গলরাকোপরিস্থিতা। প্রাপ্তা সহস্রনয়না যথা শক্রতথৈব সা॥ ২১॥ ততঃ পরিবৃত্তাভিরীশানো দেবশক্তিভিঃ। হস্তামস্থরাঃ শীল্পার মুখ্য প্রায় চণ্ডিকাম্। ২২॥ ততো দেবীশরীরাভূ বিনিজ্ঞাতি-চ**ঙিকাশ**ক্তিরত্যুগ্রা শিবাশতনিনাদিনী॥ ২৩॥ সা চাহ ধ্**ম**-কটিলমীশানমপরাবিতা। দৃতবং গচ্ছ ভগবন্ পার্যং ওস্তনিওস্তরো: ॥২৪॥ ত্রহি তত্তং নিওত্তঞ্চ দানবাবতিগর্বিতো। যে চাতে দানবাত্তত যুদায় সমুপস্থিতা: ॥ ২৫ ॥ ত্রৈলোক্যমিক্রো লভতাং দেবা: সম্ভ হবিভূজ:। বৃদ্ধ প্রয়াত পাতালং यनि कीविजुमिक्ष्य॥ २७॥ वनाश्वरनभान्य क्रम् छवरञ्चा-যুদ্ধকাভিক্ণঃ। ভদাগত্তত তৃপ্যস্ত মহিহ্বাঃ পিশিতেন বং॥ ২৭॥ ৰতো িনিরুক্তো দৌত্যেন তয়া দেব্যা শিবঃ স্বয়ম্ । শিবদূতীভি লোকে২স্মিংস্ততঃ সা খ্যাতিমাগতা॥ ২৮॥ তেহলি শ্রন্থা ৰচো দেব্যা: শর্কাখ্যাতং মহাস্থরা:। অমর্বাপুরিতা জ্গার্যতঃ কাত্যারনী স্থিতা ৷ ২০ ৷ ততঃ প্রথমমেবাথে

শরশক্ত্রেষ্টিভি:। ব্বর্কিজভামর্বান্তাং দেবীমমরারয়:। 🐠 ॥ সাচ তান্ প্রহিতান্ বাণাঞ্লচক্রপরখধান্। চিচ্ছেদ লীলয়াগাতধয়ুসু কৈর্মহেবুভি: ॥৩১॥ ভক্তঃগ্রভন্তথা কালী শূলপাতবিদারিভান্। ধটান্দপোধিভাংকারীন্ কুর্বতী ব্যচরন্তদা॥ ৩২॥ কমওসুক্লাকেপ-হতবীর্যান্ হতৌজন:। চাকরোচ্ছজ্রন্ যেন বেন স্ম ধাবতি॥ ০০॥ মাহেশ্বরী ত্রিশ্লেন তথা চক্রেণ বৈষ্ণবী। দৈত্যান জ্বান কৌমারী তথা শব্দ্যাতিকোপনা॥ ৩৪ ॥ ঐন্ত্রী কুলিশপাতেন শতশো দৈত্যদানবাঃ। পেতুর্ব্বিদারিতাঃ পৃথ্যাং রুধি-রৌঘপ্রবর্ষিণ:॥ ৩৫॥ তুগুপ্রহারবিধ্বতা দংষ্ট্রাগ্রক্ষতবক্ষস:। বরাহমূর্ক্ত্যা ন্যপতংশকেণ চ বিদারিতা: ॥ ৩৬ ॥ নথৈর্বিদারিতাংশান্যান্ ভক্ষন্তী মহাসুরান। নারসিংহী চচারাজে নাদাপুর্ণদিগম্বা॥ ৩৭॥ চণ্ডাট্টহাসৈর-স্করা: শিবদ্ভ্যভিদ্বিভা:। পেতৃ: পৃথিব্যাং পতিভাংস্তাণশ্চধাদাথ সা তদা। ৩৮॥ ইতি মাতৃগণং কুদ্ধং মর্দরন্তং মহাম্রান্। দৃষ্টাংভ্যুপারৈর্বি-বিধৈনে অংশ বারিসৈনিকা: ॥ ৩৯ ॥ পলায়নপরান্ দৃষ্ট্। দৈত্যান্ মাভূপণা-**দিতান্। বোদ্মভ্যাযবো ক্রুদো রক্তবীজো মহাস্তরঃ॥ ৪** ॥ রক্তবিসূর্যদা ভূমে পতত্যক্ত শরীরত:। সমুৎপত্তি মেদিন্যান্তংপ্রমাণন্ডদাস্ব:॥ ৪১ ॥ বৃষ্ধে স গদাপাণিরিজ্ঞশক্ত্যা মহাস্তরঃ: ততকৈজ্ঞী স্ববজ্ঞেণ রক্তবীক্ষমতা-ড়রং॥ ৪২॥ কুলিশেনাহতভাত তভ ফুআব শোণিতম্। সমুভস্কুততো ্ষোধান্তজ্ঞপান্তৎপরাক্রমা: ॥ ৪৩॥ বাবস্থঃ পতিতান্তস্ত শরীরাদ্ রক্তবিন্দব: । তাবন্তঃ পুক্ষা জাতান্তদ্বীৰ্য্যবলবিক্ৰমা: ॥ ৪৪ ॥ তে চাপি যুৰ্ধুন্তক পুক্ষা রক্তসন্তবাঃ। সমং মাতৃভিরভূচএ-শন্তপাতাতিভীষণম্ ॥ ෧৫ ॥ পুন-চ বছপাতেন ক্ষতমশু শিরো বদা। ববাহ রক্তং পুরুষান্ততো সহস্রশ: ॥ ৪৬ ॥ বৈফবী সমরে চৈনং চক্রেণাংভিজ্ঞখান হ। গদয়া তাড়য়া-শাস ঐত্রী তমস্থরেশরম্॥ ৪৭ ॥ বৈফ্বী-চক্রতিরতা রূধিরত্রাবসস্তবৈ:। সহস্রশো জগদ ব্যাপ্তং তৎপ্রমাণৈর্মহাসুরৈ: ॥ ৪৮ ৷ শক্ত্যা জঘান ক্রোমারী বারাহী চ তথাছসিনা। মাহেশরী ত্রিশ্লেন রক্তবীকং মহাত্ররম্॥ ৪৯॥ স চাপি গদয়া দৈত্য: দ্বলা এবা২হনৎ পৃথক্। মাতৃ: কোপসমাবিটো রক্ত-বীকো মহান্তরঃ॥ ৫•॥ তন্তাহতক্ত বহুধা শক্তিশূলাদিভিভূবি। পপাত বো বৈ রক্তৌদক্তেনাদম্ভদোহস্বরাঃ॥ ৫১॥ তৈন্চাস্থরাসক্-সভূতিরস্থরেঃ সকলং অগৎ। ব্যাপ্তমাদীভভো দেবা ভয়মাজগাদুকভমন্। ৫২॥ তান্বিধ-প্লান্ সুরান্ দৃষ্টা চণ্ডিকা প্রাহসম্বরা। উবাচ কালীং চামুতে বিভারং বদনং কুরু॥ ৫০॥ মজ্প্রপাতসভ্তান্ রক্তবিন্দ্ন্ মহামুরান্। রক্তবিশ্বোঃ
প্রতীক্ত তং বজেনানেন বেগিতা॥ ৫৪॥ ভক্ষরত্তী চর রণে তত্ৎপরাশ্বহাস্বরান্। এবমের ক্ষরং দৈত্যঃ ক্ষীণরক্তো গমিস্বতি॥ ৫৫॥ ভক্ষরাশাল্যা
চোগ্রান চোৎপৎস্তুত্তি চাপরে। ইতৃক্তা তাং ততো দেবী শ্লেনাভিজ্ঞান
তম্ ॥ ৫৬॥ মূথেন কালী জগুহে রক্তবীক্ষপ্ত শোণিতম্। ততোহসাবাজ্ঞ্যানাথ গদরা তত্র চিওকাম্॥ ৫৭॥ ন চাম্মা বেদনাঞ্চক্রে গদাপাতোহল্লিকামিণি। তন্তাহতন্ত দেহাতু বহু স্প্রাব শোণিতম্॥ ৫৮॥ বতস্বতন্তবক্তেন্ চাম্থা সম্প্রতীক্তি। মূথে সমূল্যতা বেহ্মা রক্তপাতান্মহাস্বরাঃ॥ ৫৯॥ তাংশ্রখাদাথ চাম্থা পপে তস্য চ শোণিতম্। দেবী
শ্লেন বজ্ঞেন বাণৈরিসভিশ্নিভিশ্নিভো। জ্বান রক্তবীক্ষরং চাম্থা-পীতশোণিতম্। স পণাত মহীপৃষ্ঠে শক্ষসজ্ঞ্যমাহতঃ॥ ৩০।। নীরক্তশ্চ মহীপাল রক্তবীক্ষো মহাস্বরঃ।। ৬২।। তত্তন্তে হর্ষমত্লমবাপুত্রিদশা নৃপ।
তেরাং মাত্গণো জাতো ননর্ভাস্ত্মদোদ্ধতঃ॥ ৬০।।

# ইতি শ্ৰীমাৰ্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মধস্তরে দেবীমাহাজ্যে রক্তবীক্ষবধঃ।

#### উত্তরচরিতম্–নিশুস্তবঞ্চ।

রাজোবাচ।। ১। বিচিত্রমিদমাখ্যাতং তগবন্ তবতা ময়।
দেব্যাশ্চরিত্রমাহাত্ম্যং রজবীজবণা প্রতিত্য । ভূরশ্চেছামাহং প্রোত্থ
রজবীজে নিপাতিতে। চকার উজো যৎ কর্মী নিওভশ্চাতিকোপনঃ॥ ৩॥
ঝিবিকবাচ॥ ৪॥ চকার কোপমতুলং রক্তবীজে নিপাতিতে। ওভামুরো
নিওভশ্চ হতেঘন্যের্ চাহবে।। ৫॥ হন্যমানং মহাসৈক্তং বিলোক্যামর্যমূদ্
বহন্। অভ্যধাবরিভভোহণ ম্থ্যমাংমুরদেনরা।। ৬।। তস্যাগ্রতত্তথা পৃষ্ঠে
পার্যমোশ্চ মহামুরাঃ। সন্দটোর্রপ্রটাঃ ক্রুদা হন্তং দেবীম্পাবয়ঃ॥ ৭॥
আজগাম মহাবীর্যঃ ওভোহপি স্ববলর্তঃ। নিহন্তং চিওকাং কোপাৎ
কৃত্যা বৃদ্ধন্ত মাতৃভিঃ॥ ৮॥ ততো বৃদ্ধমতীবাসীদ্ দেব্যা গুভানিভভ্রোঃ।
শরবর্ষমতীবোগং মেঘরোরিব বর্ষতোঃ॥ ১॥ চিজ্কেদাভার্থরাংভাভ্যাং

চপ্তিকান্ত শরোৎকরি:। তাড়রামাস চালেযু শল্পোলৈরস্থরেখরে।। ১০ ম নিশুন্তো নিশিতং থড়াং চর্ম চাদার স্থপ্তম্। অতাড়রমূর্দ্ধি সিংহং দেব্যা বাহনমুত্তম্ম ॥ ১১ ॥ তাড়িতে বাহনে দেবী ক্রপ্রেণাসিমুত্তম্ম । নিওভস্যাও চিচ্ছেদ চর্ম চাপ্যষ্টচন্দ্রকম্।। ১২।। ছিলে চর্মণি থড়োচ শক্তিং চিক্ষেপ সোহসুর:। তামপ্যস্য বিধা চক্রে চক্রেণাভিমুখাপতাম্ ॥১৩।। কোপাগাডো নিশুজোহৰ শূলং জগ্ৰাহ দানবঃ। আন্নাতং মৃষ্টিপাতেন দেবী ভচ্চাপ্যচূৰ্ণ-রং ॥১৪॥ আবিধ্যাথ গদাং সোহপি চিক্ষেপ চণ্ডিকাং প্রতি। সাপি দেব্যা ত্রিশূলেন ভিন্না ভক্ষমাগতা।।১৫।। ভতঃ পরশুহস্তসমারাস্তং দৈত্যপুদ্ধবম্। আহত্য দেবী বাণোবৈরপাতয়ত ভূতলে।। ১৬।। তশ্বিরিপতিতে ভূমৌ নিওত্তে ভীমবিক্রমে। ত্রাতর্য্যতীব সংক্রেম্ব প্রথবে হত্তমন্থিকাম্। ১৭।। স রথস্থত্বথাত্যুটেচসু হীতপরমায়ুধৈঃ। ভূলৈরটাভিরভূলৈর্ক্যাপ্যাশেষং বভৌ बछ: ॥ ১৮ ॥ তমায়ান্তং সমালোক্য দেবী শব্দমবাদরং। **ब्या**नस्कानि ধমুবশ্চকারাতীবত্ব:সহম্।। ১৯॥ পুরয়ামাস ককুভো নিজবটাখনেন চ। সমস্তদৈত্যদৈন্যানাং তেজোবধৰিধানিনা॥ ২০॥ ভতঃ সিংহো মহা-नारेनछा बिर्ड छमरामरेनः। शृत्रवामान गंगनः गाः छरथा पनिरमा नम्।। २३।। সমুৎপত্য গগনং স্থামতাড়য়ৎ। করাভ্যাং ভন্নিনাদেন প্রাক্তনাত্তে তিরোহিতা:।। ২২।। অট্ট্রহাসমশিবং শিবদৃতী চকার হ। তৈঃ শবৈরসুরাস্থেসুঃ গুভঃ কোপং পরং ববৌ।। ২০॥ ছরাস্থান্ডিঠ ভিষ্ঠেতি ব্যাক্ষারাধিকা বদা। তদা করেত্যভিহিতং দেবৈরাকাশ-সংস্থিতৈঃ। ২৪।। শুভেনাগত্য বা শক্তিমূ্কা আলাভিভীবণা। আয়ান্তী विक्कृष्ठीका ना निवक्षा मटहादशा ।। २६ ।। निःहनाटमन खखना वाराशः লোক এরান্তরম। নির্ঘাতনিঃখনো ঘোরো জিতবানবনীপতে ॥ ২৬।। ওজ-মুক্তাহরান্ দেবী শুভত্তৎপ্রহিতাহরান্। চিচ্ছেদ স্থারৈরুগ্রেঃ শতশোহধ সহস্ৰশ:॥ ২৭॥ ততঃ সাচঙিকা জুদ্ধা শুলেনাভিক্যান তম্। স তদাভি-💃 হতো ভূমৌ মূৰ্চ্ছিতো নিগপাত হ।। ২৮।। ততো নিভন্ত: সংপ্ৰাপ্য চেডনা-মাত্তকার্ম,ক:। আজ্বান শরৈদেবীং কালীং কেসরিণং তথা ॥ ২৯॥ পুনদ্চ ক্বা বাহুনামযুত্য দহুবেধর:। চক্রায়ুবেন দিতিব ছাদরামান চতিকাম ॥৩०॥ ততো ভগৰতী ক্ৰুদ্ধা হুৰ্গা ছুৰ্গাৰ্ভিনাশিনী। চিচ্ছেদ তানি চক্ৰাণি স্বশব্য: সায়কাংশ্চ ভান্।। ৩১।। ততো নিওভো বেগেন গদামাদায় চঙিকাম। चভাগাবত বৈ হস্তঃ দৈভাদেনাসমাবৃতঃ।। ৩২।। তস্যাপতত এবাত গদাং চিচ্ছেদ **हिन्छा। भट**कान निष्ठभारत्न ज ह मृनः नमानरम्॥ २०।। मृनङ्कुः

সমায়ান্তং নিশুভ্যময়ার্দ্ধনন্। স্থাদি বিব্যাধ শ্লেন বেগাবিদ্ধন চঙিকা।। ৩৪।।
ভিন্নস্ত তক্ত শ্লেন ক্রমাঞ্জিংসভোহপরঃ। মহাবলো মহাবীর্যান্তিটেতি পুরুষো
বদন্ ॥৩৫॥ তক্ত নিজ্ঞামতো দেবী প্রহক্ত স্থানবন্তঃ। শিরশ্চিছেদ থজোন
ততোহসাবপভত্বি ॥৩৬॥ ততঃ সিংহশ্চধাদোগ্র-দংট্রাক্র্প্লশিরোধরান্। অস্বরাংভাংত্তথা কালী শিবদৃতী তথাপরান্॥ ৩৭ ॥ কৌমায়ীশজিনিভিন্নাঃ
কেচিদ্ধের হাল্ডরাঃ। বন্ধাণীমন্তপ্তেন তোয়েনাক্তে নিরাক্তাঃ॥ ৩৮ ॥
মাহেশ্বরীত্রিশ্লেন ভিন্নাঃ পেতৃত্তথাহপরে। বারাহীত্ত্তবাতেন কেচিচ্চূর্ণীক্তা
ভূবি ॥৩৯॥ থত্তথত্তঞ্চ চক্রেণ বৈষ্ণব্যা দানবাঃ কৃতাঃ। বজ্রেণ চৈন্দ্রীহন্তাগ্রবিম্জেন তথাহপরে॥ ৪০ ॥ কেচিদ্ বিনেশুরস্করাঃ কেচিন্নটা মহাহবাং।
ভক্ষিতাশ্চাপরে কালীশিবদ্তীমুগাধিপৈঃ॥৪১॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মহস্তরে দেবীমাহাজ্যে নিশুভবধ:।

#### দেশসোহপ্রাশরঃ।

#### উত্তরচরিতম্—শুস্তবধ:।

ঝবিদ্ধবাচ ॥ ১॥ নিশুস্তং নিহতং দৃষ্ট্বা ভ্রাতরং প্রাণসন্মিতম্। হলসানং বলক্ষেব শুস্তঃ ক্রুদোহত্রবীদ্বচঃ ॥ ২ ॥ বলাবলেপত্টে স্বং মা তুর্বে গর্কমাবহ। জন্মাসাং বলমান্ত্রিত্য যুধ্যসে বাহতিমানিনী ॥ ৩ ॥

দেব্যবাচ ॥ ৪ ॥ একৈবাহং জগত্যত্ত বিতীয়া কা মমাপরা। পশ্তৈতা'হুট্ট মব্যেব বিশস্ত্যো মদ্বিভূতয়ঃ ॥ ৫ ॥ (ঋষিক্রবাচ) ততঃ সমস্তান্তা দেব্যো ব্রহ্মাণীপ্রমুখা লয়ম্। ততা দেব্যান্তনৌ জগ্যুরেকৈবাসীভদাধিকা॥ ৬ ॥

দেব্যুবাচ ॥ ৭ ॥ অহং বিভূত্যা বছভিরিহ রূপৈর্যদান্থিতা। তৎ সংহৃতং মরৈকৈব তিষ্ঠাম্যাকৌ স্থিরো ভব ॥ ৮ ॥

ঝবিরুবাচ । ১॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং দেব্যাঃ শুক্তশ্ব চোভরোঃ।
পশ্রতাং সর্কাদেবানামস্থরাণাঞ্চ দারুণম্॥ ১০॥ শরবর্বৈঃ শিতৈঃ
শক্ষেগুথাক্রৈশ্বৈ দারুণঃ। তরোর্দ্দমভূদ ভূরঃ সর্কাদোকভর্বরম্॥ ১১॥
দিব্যান্তর্মাণি শতশো মুমুচে বাস্তথাদিকা। বভন্ত তানি দৈত্যেক্রন্তংপ্রতীবাতকর্ভ্ডিঃ॥ ১২॥ মুক্তানি ভেন চাস্তাণি দিব্যানি পরমেশ্বরী।
বভন্ত লীলবৈবোগ্র-ছরারোচ্চারণাদিভিঃ॥ ১০॥ ততঃ শরশতৈর্দেবীমাছাদরত
ক্রেনাহস্বরঃ। সাপি তৎ, কুপিতা দেবী ধছন্টিছেদ চেবুভিঃ॥ ১৪॥ ছিল্লে

খমুষি দৈত্যেক্সন্তথা শক্তিমথাছদদে। চিচ্ছেদ দেবী চক্ষেণ ভাষণ্যস্ত কর-স্থিতাম্॥ ১৫॥ ততঃ থড়ামুপাদার শতচক্রঞ ভাতুমং। অভ্যধাবত্তদা দেবীং দৈত্যানামধিপেশ্বর:॥ ১৬॥ তত্তাপতত এবাত থড়াং চিচ্ছেদ চতিকা। ধমুমু কৈ: শিতৈর্বাবৈশ্চর্ম চার্ককরামলম ॥ ১৭ ॥ [ অখাংশ্চ পাতরামাস রবং সার্থিনা সহ। ] হতার: স তদা দৈত্য ভিরধনা বিসার্থিঃ। কথাহ মুদ্দার: ঘোরমম্বিকানিধনোক্তভঃ ॥ ১৮ ॥ চিচ্ছেদাপতততত মুদারং নিশিতৈ: শরৈ:। তথাপি সোহভাগাবভাং মৃষ্টিমৃত্তম্য বেগবান ॥ ১৯ ॥ স মৃষ্টিং পাতরামাস জদরে দৈত্যপুক্তः। দেব্যাত্তঞাপি সা দেবী তলেনোরস্ততাভূষৎ॥ ২০॥ তল-প্রহারাভিহতো নিপপাত মহীতলে। স দৈত্যরাজঃ সহসা পুনরেব ভবো-খিত: ॥ २১॥ উৎপত্য চ প্রগ্রেছাকৈদেবীং গগনমান্থিত:। তত্ত্বাপি সা নিরাধারা যুয়ুধে তেন চণ্ডিকা॥ ২২॥ নিযুদ্ধং থে তদা দৈত্যকণ্ডিক। চ পরস্পরম। চক্রতঃ প্রথমং সিদ্ধমূনিবিস্মরকারকম্॥ ২৩॥ ভতে। নিযুদ্ধং স্থচিরং কুড়া তেনাছিকা সহ। উৎপাত্য ভ্রাময়ামাস চিক্ষেপ ধরণীতলে ॥ ২৪॥ স ক্লিপ্তো ধরণীং প্রাপ্য মৃষ্টিমৃত্তম্য বেগিতঃ। অভ্যধাৰত তৃষ্টাত্মা চতিকা-নিধনেছয়া। ২৫॥ তমায়াভং ততো দেবী সর্কদৈত্যজনেশরম্। জগত্যাং পাত্রামাস ভিত্তা শূলেন বক্ষসি ॥ ২৬ ॥ স গতামুঃ পপাতোর্ক্যাং দেবীশূলাগ্র-विक्षा । চাनम् नकनाः शृथीः नाकियोशाः नश्काम् ॥ २१ ॥ প্রসন্নমধিলং হতে তন্মিন্ হুরাত্মনি। ক্রগৎ স্বাস্থ্যমতীবাপ সির্ম্বলঞ্চান্তবন্ধভঃ ॥২৮॥ উৎপাতমেঘা: সোদা বে প্রাগাসংজে শমং বরু:। সরিতো মার্গবাহিকতথাসংজ্জ পাভিতে ॥ ২৯ ॥ ততো দেবগণাঃ সর্ব্বে হর্ষনির্ভরমানসাঃ। ব্যুব্নিহতে जिन्न भक्तकी निन्छः अधः॥ ००॥ अवानवः खटेथवाटक ननुजुकात्मरताभभाः। ৰবুঃ পুণ্যান্তথা বাডাঃ স্থপ্ৰভোহভূদিবাকরঃ॥৩১॥ জজনুশ্চায়য়ঃ শাস্তাঃ শান্তদিগ্জনিতখনাঃ॥ ৩২॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মহস্তরে দেবীমাহাত্ম্যে ভস্কবধ:।

# প্রকাদেশোহপ্র্যাহার। উত্তরচরিতম্—দেব্যা: স্বতি:।

ঝবিফবাচ ॥ ১ ॥ দেব্যা হতে তত্ত্ব মহাহস্ত্রেন্দ্রে, সেন্দ্রাং স্থরা বহ্নিপ্রেন্দ্র গমান্তাম্। কাত্যায়নীং তুই ব্রিষ্টলভাদ্, বিকাসিবজ্ঞান্ত বিকাসিতাশাং ॥ ২॥

দেবি প্রপরার্ভিহরে প্রসীদ, প্রসীদ মাতর্জগডোংখিলক্ত। প্রসীদ বিশ্বেশবি পাহি বিখং, অমীখরী দেবি চরাচরত্ত ॥ আধারভূতা জগতভ্যেকা, মহীম্বরপেণ যতঃ স্থিতাহসি। অপাংম্বরপস্থিতরা **ব্**রৈতদাপ্যায়তে কুংম্ব भगञ्चातीर्या ॥॥॥ दः रेवस्वती मंक्तित्रनस्वतीर्या, विश्वन्त तीकः পরমাহদি মায়া। সম্মোহিতং দেবি সমস্তমেতৎ, चং বৈ প্রদল্লা ভূবি মৃক্তিহেতু:॥ ৫॥ বিছা: সমস্তান্তব দেবি ভেদা:, স্থিয়: সমস্তা: সকলা অগৎস্থ। ব্যৈকয়া পূরিত-मश्रोत्राज्य, का एक श्वाणिः खवाशता शरतां जिः॥ ७॥ मर्काकृषा वना तनवी খর্গমুক্তিপ্রদায়িনী। বং শুভা শুভয়ে কা বা ভবন্ধ পরমোক্তয়:॥ १॥ সর্বান্ত বৃদ্ধিরূপেণ জনতা হাদি সংস্থিতে। অর্গাহপবর্গদে দেবি নারায়ণি নমোহস্ত তে 🕪 কলাকাষ্ঠাদিরপেণ পরিণামপ্রদায়িনি। বিশ্বস্থোপরতৌ শক্তে নারাহনি नस्मिरुख (७ ॥ २। नर्कमक्शमकरमा नित्व गर्कार्थमाधित्व । नत्राम खायरक গৌরি নারায়ণি নমোহস্ত তে॥ ১০॥ স্প্রীস্থিতিবিনাশানাং শক্তিভৃতে সনা-ভনি। গুণাপ্ররে গুণময়ে নারায়ণি নমোহস্ত তে । ১১ । শরণাগতদীনার্জ-পরিত্রাণপরায়ণে। সর্বস্থার্ডিহরে দেবি নারায়ণি নমোহস্ত তে॥১২ ॥ হংস্যুক্তবিমানত্বে অন্ধাণীরূপধারিণি। কৌশান্তঃক্ষরিকে দেবি নারায়ণি নমোহত্ত তে॥ ১৩॥ বিশ্লচন্দ্রাহহিধরে মহাবৃষভবাহিনি। মাহেশরীশক্ত পেণ নারায়ণি নমোহস্ত তে॥ ১৪॥ ময়ুরকুরুটবতে মহাশক্তিধরেহনছে। कोमात्रीक्र शतकार नाताक्षि नरमारख एक । ১৫ । मञ्जूक शतमान निर्मेशक পরমাযুবে। প্রদীদ বৈষ্ণবীরূপে নারায়ণি নুমোহত্ত তে॥ ১৬॥ গৃহী-ভোগ্রমহাচক্রে দংট্রোদ্ভবস্থররে। বরাহরূপিণি শিবে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥১৭॥ নৃসিংহরপেণোগ্রেণ হস্তং দৈভ্যান্ রুতোল্তমে। ত্রৈলোক্য-আণসহিতে নারারণি নমোহস্ত তে॥ ১৮॥ কিরীটিনি মহাবল্পে সহস্র-नबरनाष्ट्रता वृद्धश्रीगरुद देवसि नातावि नत्यारु ए ।। >> ॥ मिन-দৃতীম্বরূপেণ হতদৈত্যমহাবলে। বোররূপে মহারাবে নাবায়ণি নমোহস্ত তে॥ ২ • ॥ দংষ্ট্রাকরালবদনে 'শিরোমালাবিভূবণে। চামুডে মুগুমথনে নারায়ণি নমোহস্ত তে॥ ২১॥ লক্ষি লজ্জে মহাবিস্তে আদে পুষ্টি খণে জবে। মহারাত্রি মহাবিছে নারায়ণি নমোহস্ত তে॥ ২২॥ সরস্বতি বরে ভৃতি বাত্রবি তামসি। নিরতে তং প্রসীদেশে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ ২৩ ॥ সর্বস্থারপে সর্বেশে সর্বশক্তিসমহিতে। প্রাহি নো দেবি ছর্কে দেবি নমোহত তে।। ২৪।। এতত্তে বদনং সৌস্যং

লোচনত্ত্ৰয়ভূবিতম্। পাতু নঃ সর্বভূতেভ্যঃ কাত্যায়নি নমোহন্ত তে ॥২৫॥ জালাকরালমত্যগ্রমশেবাহত্মরকুদনম্। ত্তিশূলং পাতৃ নো ভীতের্ভদ্রকালি নমোহত্ত তে।। ২৬।। হিনতি দৈত্যতেজাংসি অনেনাপুর্ব্য বা জগৎ। সা দ্বন্টা পাতৃ নো দেবি পাপেভ্যোহনঃ স্থভানিব॥২৭।। অসুরাহস্প্-বসাপন্ধ-চর্চিতত্তে করোজ্জন:। শুভার থড়েগা ভবতু চণ্ডিকে ত্বাং নতা वयम् ॥ २৮ ॥ द्वांगानत्नवानशहः ति जुष्टा, ऋष्टा जु कामान् नकनानजीष्टान्। ষামালিতানাং ন বিপন্নরাণাং, স্বামালিতা হালম্বতাং প্ররান্তি।। ২৯॥ এতৎ कुछः वर कमनः चत्रार्थ, धर्मवियाः तमि मनासूत्रागाम्। क्रतेभत्रत्नतेक्क् ধাত্মমূর্ত্তিং, কৃত্বাহম্বিকে তৎ প্রকরোতি কান্তা।। ৩০।। বিভাগ শাত্মেষ্ বিবেকদীপেদাভেষু বাক্যেষু চ কা খদসা। মমবগর্ত্তেংভিমহাল্পারে, বিভাময়ত্যেতদতীৰ বিশ্বমু ॥ ৩১ ৷৷ রক্ষাংসি যজোগ্রবিষাক্ষ নাগা, যজাৎররো দস্ম্যবলানি যত্ত্র। দাবানলো যত্ত্ত তথাহিন্ধিমধ্যে, তত্ত্ব স্থিতা স্থং পরিপাসি विश्वम् ॥ ७२ ॥ वित्यश्वदी दः পরিপাসি বিশ্বং, विश्वाष्ट्रिका श्वद्रश्रीिक विश्वम्। বিখেশবন্যা ভবতী ভবন্ধি, বিখাশ্রয়া যে ছব্নি ভক্তিনদ্রা:।। ৩০ ॥ দেবি প্রসীদ পরিপালয় নোহরিজীতে-নিত্য: ঘণাহস্থরবধাদধুনৈব সন্তঃ। পাপানি नर्सक्र गांक मार नशांक, छेरशांकशांक क्वनिकार के मरहां शर्मा ।। 98 ॥ প্রণতানাং প্রসীদ দ্বং দেবি বিশ্বার্ত্তিহারিণি। ত্রৈলোক্যবাসিনামীজ্যে (माकानाः वद्रमा छव ॥ ७० ॥

দেব্যবাচ ॥ ৩৬ ॥ বরদাহ হং স্বরগণা বরং বং মনসেচছত। তং বৃণ্ধবং প্রবিচ্ছামি জগতামূপকারকম্॥ ৩৭ ॥

দেবা উচু:।। ৩৮।। সর্বাবাধাপ্রশমনং ত্রৈলোক্যস্তাহথিলেশ্বরি। এবমেব ওয়া কার্য্যমন্মদ-বৈরিবিনাশনম। ৩৯।।

দেব্যবাচ ।। ৪০ ।। বৈবস্বতেহন্তরে প্রাপ্তে অষ্টাবিংশতিমে বুগে। শুস্তো নিশুস্ত কৈবালাবৃৎপৎক্ষেতে মহাস্মরে ।। ৪১ ।। নন্দগোপগৃহে জাতা বশোদাগর্জসম্ভবা । তততো নাশিষ্টিয়ামি বিদ্যাচলনিবাসিনী ।। ৪২ ।। পুনরপ্যতিরোদ্রেণ রূপেণ পৃথিবীতলে । অবতীর্য্য হনিয়ামি বৈপ্রচিত্তাংশ্ত দানবান্ । ৪৩ ।। ভক্ষস্তাশ্চ তাল্প্রান্ বৈপ্রচিত্তামহাস্থরান্ । রক্তা দন্তা ভবিয়ন্তি দাড়িমীকুস্মমোপমাঃ ।। ৪৪ ।। ততো মাং দেবতাঃ স্বর্গে মর্ভ্রানেক চ মানবাঃ । স্ববন্ধো ব্যাহরিয়ন্তি সততং রক্তদন্তিকাম্ ।। ৪৫ ॥ ভ্রম্ভ শতবার্ষিক্যামনাবৃট্ট্যামনন্তিস । মুনিভিঃ সংস্কৃতা কুমৌ সন্তবিয়ায়বানিকা ॥৪৬॥

ভতঃ শতেন নেআণাং নিরীক্ষিয়ানি ষমুনীন্। কীর্ত্তরিক্সন্তি মহকাঃ
শভাকীমিতি মাং ততঃ ॥ ৪৭ ।। ভতোহ হমধিলং লোক মান্ত দেহ সমৃত্তরৈ ।
ভরিষ্যামি স্থরাঃ শাকৈরাবৃত্তীঃ প্রাণধারকৈঃ ॥ ৪৮ ॥ শাকজরীতি
বিখ্যাতিঃ তদা ৰাস্থামহং ভূবি । তবৈত্ব চ বধিষ্যামি তুর্গমাখ্যং মহাহস্মমৃ॥ ৪৯ ॥ [ তুর্গাদেবীতি বিখ্যাতং তয়ে. নাম ভবিষ্যতি ] । পুনশ্চাহহং
বদা তীমং রূপং কৃষা হিমাচলে ॥ ৫০ ॥ রক্ষাংসি ক্ষরিষ্যামি মৃনীনাং
আপকারণাৎ । তদা মাং মূনরঃ সর্বে স্তোষ্যন্তান মুর্ত্তরঃ ॥ ৫১ ॥ ভীমাদেবীতি বিখ্যাতং তয়ে নাম ভবিষ্যতি । বদাহ কুণাখ্য স্বৈলোক্যে মহাবাধাং
করিষ্যতি ॥ ৫২ ॥ তদাহং ভ্রামরং রূপং কুষাহুসংখ্যে মইতিপদম্ । তৈলোক্যস্ত
হিতার্থার বিষ্যামি মহাস্থরস্থা ৫০ ॥ ভ্রামরীতি চ মাং লোকান্তদা
ভোষ্যতি সর্ব্যতঃ । ইথং বদা বদা বাধা দানবোখা ভবিষ্যতি ॥ ৫৪ ॥ তদা
তদাবতীর্যাহং করিষ্যাম্যরিসংক্ষম্ ॥ ৫৫ ॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মহস্তরে দেবীমাহাত্য্যে দেব্যা: স্তৃতি: ॥

#### ক্লান্ডপাইন্থ্যায়ঃ

# উত্তরচরিত্র—শুক্তনিশুক্তবধনমাপ্তিঃ

দেব্যবাচ । ১ ॥ এভিঃ অবৈশ্চ মাং নিত্যং শ্রেষ্যতে বং সমাহিতঃ। তশ্বাহং সকলাং বাধাং শমরিষ্যাম্যসংশরম্ ॥ ২ ॥ মধুকৈটভনাশঞ্চ মহিষাম্যরঘাতনম্ । কীর্ত্তরিষ্টিভি বে তঘদ্ বধং শুভনিশুভরোঃ ॥ ৩ ॥ অইম্যাঞ্চ চতুর্দ্দশাং নবম্যাক্ষিকচেতসঃ। শ্রোষ্টিভি চৈব বে ভক্ত্যা মম মাহাত্ম্যুত্তমম্ ॥ ৪ ॥ ন তেবাং ছফ্কভং কিঞ্চিদ্ ছফ্টোখা ন চাপদঃ। ভবিষ্টিভি ন দারিদ্যাং ন চৈবেইবিয়োজনম্ ॥ ৫ ॥ শক্রতো ন ভয়ং তশ্ব দম্যতো বা ন রাজতঃ। ন শশ্বানলতোরৌঘাৎ কদাচিৎ সন্তবিষ্টিভি॥ ভশ্বান্মমৈতন্মাহাত্মাং পঠিতব্যং সমাহিতঃ। শ্রোত্যঞ্জ সদা ভক্ত্যা পরং অন্ত্যরুবং হি তৎ ॥ १ ॥ উপস্থানশোগ্রে মহামারীসমূত্তবান্। তথা ত্রিবিধমুৎপাতং মাহাত্মাং শময়েন্মম ॥ ৮ ॥ বত্রি তৎ পঠ্যতে সম্যন্ত্র নিভ্যমায়ভনে মম। সদা ন তদ্ বিমোক্ষ্যামি সারিধ্যং তত্র মে স্থিতম্ ॥ ১ ॥ বলিপ্রদানে প্রায়মিরিকার্য্যে মহোৎসবে। সর্বাং মমৈতজ্বিভম্নার্য্যং প্রাব্যমের চ ॥ ১০ ॥ জানতাহজানতা বাপি বলিপ্রাং তথা ক্রতান্। প্রতীদ্বিষ্যাম্যহং প্রীজ্যা বিক্রিহামং তথাক্রতম্ ॥ ১১ ॥ শরৎকালে

মহাপু**ৰা ক্রিয়তে** যাচ বার্ষিকী। তন্তাং মনৈতমাহাত্মাং শ্রুতা ভক্তি-সম্বিতঃ ॥ ১২॥ সর্বাবাধাবিনিমু কো ধনধারুমুতাবিতঃ। মহব্যো মৎপ্রসাদেন ভবিষ্যতি ন সংশয়: ॥ ১৩ ॥ প্রত্যা মমৈত্যাহাত্মাং তথা ুচোৎপত্তর: ভভা:। পরাক্রমঞ্যুদ্ধেষ্ জায়তে নির্ভর: পুমান্॥ ১৪॥ রিপব: সংক্ষম যান্তি কল্যাণঞ্চোপপদ্ধতে। ননতে চ কুলং পুংসাং মাহাত্ম্যং মম শৃথতাম ॥ ২৫ ॥ শান্তিকর্মণি সর্বত্তে তথা তঃম্বপ্নদর্শনে। গ্রহপীড়াস্থ চোগ্রাস্থ মাহাত্মং শূৰুরাশ্বম॥ ১৬॥ উপদর্গাঃ শমং বাস্তি গ্রহণীড়াশ্চ मोक्नाः। इःच्रथकः नृष्टिक् हेः युच्रभूभकात्ररः ॥ ১१॥ वानश्रहां छिज्ञानाः বালানাং শান্তিকারকম্। সংঘাতভেদে চ নৃণাং মৈত্রীকরণমূত্রম্। ১৮।। ত্র্বৃত্তানামশেষাণাং বলহানিকরং পরম্। রক্ষোভৃতপিশাচানাং পঠনাদেব নাশনম্॥ ১৯॥ সর্বাং মধৈতনাহাত্ম্যং মম সন্নিধিকারকম্। পশুপুত্পার্ঘ্য-ধূপৈক गक्तमीरेभद्यत्थाखरेमः ॥ २० ॥ विश्वानाः (ভाक्टेनर्ट्शरेमः (श्वाक्रनीरेम्रबर-নিশম্। অক্তেশ্চ বিবিধৈর্ভোগৈঃ প্রদানৈর্বাৎসরেণ যা॥ ২১॥ ক্রিয়তে সাথশ্বিন সক্ত্বৎ স্মচরিতে শ্রুতে। শ্রুতং হরতি পাপানি তথারোগ্যং প্রযক্ত । ২২ । রক্ষাং করোতি ভূতেভ্যো জন্মনাং কীর্ত্তনং মম। বুদ্ধেরু চরিতং বন্মে ছষ্টদৈত্যনিবর্হণম ॥ ২০॥ তিনান শ্রুতে বৈরিক্বতং ভয়ং পুংসাং ন জায়তে। যুদ্মাভি: স্কৃতয়ো যাশ্চ বাশ্চ বন্ধবিভি: কৃতা: ॥ ২৪ ॥ বন্ধণা চ কৃতান্তান্ত প্রযক্তি শুভাং মতিম্। অরণ্যে প্রান্তরে ্বাহপি দাবাগ্নি-পরিবারিত: ॥ ২৫॥ দফাভিবনা বৃতঃ শৃত্তে গৃহীতো বাহপি 'শক্রুভি:। সিংহ-ব্যাদ্রাস্থাতো বা বনে বা ৰনহন্তিভি:॥ ২৬॥ বাজ্ঞা ক্রেনে বাজ্ঞপ্তো বধ্যো বন্ধগতোহপি বা। আঘূর্ণিতো বা বাতেন স্থিতঃ পোতে মহার্ণবে । ২৭। বাছপি শল্পেয় সংগ্রামে ভূশদারুণে। সর্কাবাধাত্ম ছোরাত্ম বেদনাহভার্দিতোহপি বা॥ ২৮॥ শ্বরশ্বমৈতচ্চরিতং নরো মূচ্যেত সঙ্কটাৎ। মম প্রভাবাৎ সিংহাছা দশুবো বৈরিণতথা॥ ২৯॥ দুরাদেব পলারত্তে স্মরত শ্চরিতং মম ॥ ৩০ n

ঋষিক্ষবাচ ॥ ৩১ ॥ ইত্যুক্ষা সা ভগবতী চণ্ডিকা চণ্ডবিক্রমা। পশুতামেব দেবানাং তত্ত্বৈবাহস্তরধীয়ত ॥ ৩২ ॥ তেহপি দেবা নিরাতক্ষাঃ স্বাধিকারান্ বথা পুরা। ষজ্ঞভাগভূকঃ সর্বে চকুর্বিনিহতারয়ঃ ॥ ৩০ ॥ দৈত্যাশ্চ দেব্যা নিহতে শুস্তে দেবরিপৌ বৃধি। জগদ্বিধ্বংসিনি তন্মিমহোগ্রেহতুলবিক্রমে ॥ ৩৪॥ নিশুস্তে চ মহাবীর্য্যে শেবাঃ পাতালমাব্যুঃ। এবং ভগবতী দেবী সা নিভাহিপি পুন: পুন: ॥ ৩৫ ॥ সন্তুর কুরুতে ভূপ জগত: পরিপালনম্। তরৈতন্মোহতে বিখাং দৈব বিখাং প্রস্থাতে ॥ ৩৬ ॥ সা বাচিতা চ বিজ্ঞানং তুটা ঋদ্ধিং প্রযক্তি। ব্যাপ্তাং তরৈতৎ সকলং ব্রহ্মাণ্ডা মহাকালে মহামারী স্বর্গরা। দৈব কালে মহামারী সৈব স্প্রতিবত্যহজা ॥ ৩৮ ॥ মহাকালে মহামারী স্বর্গরা। দৈব কালে মহামারী সৈব স্প্রতিবত্যহজা ॥ ৩৮ ॥ স্থিতিং করোতি ভূতানাং সৈব কালে সনাতনী। ভবকালে নৃগাং সৈব লন্ধীর্ক, দ্বিপ্রাণ গৃহে ॥ ৩৯ ॥ দৈবাহভাবে তথাহলন্ধীর্কিনাশারোপজারতে। ভাতা সম্পৃত্তিতা পুলৈপ্র্পান্ধাদিভিত্তথা ॥ ৪০ ॥ দদাতি বিভাং পুলাংশ্চ মতিং ধর্মে তথা শুভাম্ ॥ ৪১ ॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মন্বস্তুরে দেবীমাহাত্ম্যে শুন্তনিশুন্ত-বধঃ সমাপ্তঃ।

#### ----

#### ক্রেইনাচ্চস্পোপ্রাহার উত্তরচরিতম্—দেব্যা বরপ্রদানম্।

ঋষিক্ষবাচ।। ১।। এতত্তে কথিতং ভূপ দেবীমাহান্ম্যুমূন্ত্যম্ । এৰম্প্ৰভাবা সা দেবী ব্যেদং ধাৰ্যতে জগং॥ ২॥ বিছা তথৈব ক্রিয়তে ভগবদ্-বিস্কুমাররা। তরা জমেষ বৈশুল্চ ভথৈবাজ্ঞে বিবেকিন:॥ ৩॥ মোহস্তে মোহিতাশৈচ্ব মোহমেয়ন্তি চাপরে। তামুপৈহি মহারাজ্ঞ শ্রণং পরমেশ্রীম্॥ ৪॥ জারাধিতা সৈব নৃপাং ভোগস্থগাপবর্গদা॥ ৫॥

মার্কণ্ডের উবাচ ॥ ৬ ॥ ইতি তক্ত বচঃ শ্রুণা সুর্থঃ স নরাধিপঃ ॥ १ ॥ প্রাণিপত্য মহা চাগং তয়্ববিং শংসিতরতম্। নির্কিরোহতিমমন্ত্রের রাজ্যাহপহরণেন চ ॥ ৮ ॥ জগাম সম্বন্ধপেসে স চ বৈক্তো মহামূনে। সন্দর্শনার্থমন্বারা নদীপুলিনসংস্থিতঃ ॥ ৯ ॥ স চ বৈশ্বন্ধপণ্ডেপে দেবীস্ক্তং পরং অপন্। তৌ তন্মিন্ পুলিনে দেব্যাঃ কথা মূর্ত্তিং মহীময়ীম্ ॥ ১ ০ ॥ অর্হণাঞ্চনকত্তক্তাঃ পুলাধুপাহয়িতপ্রি:। নিরাহারৌ বতাহারৌ তন্মনস্কো সমাহিতৌ ॥ ১১ ॥ দদতৃত্তৌ বলিকৈব নিজগাত্রাহস্প্রক্ষিতম্। এবং সমারাধ্রতোত্রিভির্কব্র্বিগ্রাজ্বনোঃ ॥ ১২ ॥ পরিত্তী জগনাত্রী প্রত্যকং প্রাহ্চিত্তকা ॥ ১০ ॥

দেব্যুবাচ॥ ১৪॥ বং. প্রার্থতে ত্বা ভূপ ত্রাচ কুলনন্দন॥ ১৫॥ মন্তত্তং প্রাপ্যতাং সর্কাং পরিভূটা দদামি তং॥ ১৬॥ মার্কণ্ডের উবাচ ॥ ১৭ ॥ ততো বত্রে নূপো রাজ্যমবিভ্রংশ্রন্তজ্ঞরুদানি ॥ ১৮ ॥ অত্র চৈব নিজং রাজ্যং হতশক্রবলং বলাৎ। সোহপি বৈশ্রন্ততো জ্ঞানং বত্রে নির্কিলমানসঃ ॥ ১৯ ॥ মমেত্যহমিতি প্রাক্তঃ সন্ধবিচ্যুতিকারকম্ ॥ ২০ ॥

দেব্যবাচ ॥ ২১ ॥ স্বলৈরহেণভিন্পতে স্বরাজ্যং প্রাপ্সতে ভবান্॥২২॥
হতা রিপ্নশ্বনিতং তব তত্ত্ব ভবিষ্যতি। মৃতশ্চ ভৃন্ন: সংপ্রাপ্য জন্ম
দেবাদ্ বিবস্বতঃ ॥ ২০ ॥ সাবর্ণিকো নাম মন্থ্রতান্ ভ্বি ভবিষ্যতি।
বৈশ্ববর্ষ্য স্বন্না যশ্চ বরোহস্মত্তোহভিবাঞ্চিতঃ ॥ ২৪ ॥ তং প্রবচ্ছামি
সংসিদ্ধা তব জ্ঞানং ভবিষ্যতি ॥ ২৫ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ ॥ ২৬ ॥ ইতি দল্পা তয়োদেবী বথাভিলবিতং বরম্ ॥ ২৭ ॥ বভ্বান্তাহিতা সন্ধো ভজ্ঞা তাভ্যামভিষ্টুতা। এবং দেব্যা বরং লক্ষ্যা সুরথং ক ত্রির্বভঃ ॥ ২৮ ॥ সুর্ব্যাজ্জন সমাসাত্ম সাবর্ণিভবিতা মন্তঃ ॥ ২৯ ॥ ওঁ। ইতি শ্রীমার্কণ্ডেরপুরাণে সাবর্ণিকে মন্বস্তবে দেবীমার্ছান্ত্যাং সমাপ্তম্। (১০শ আং) ওঁ তৎসং।

#### চণী-পাঠাপরাথক্ষমাপন-শ্লোকাঃ

ওঁ বদক্ষরং পরিভ্রন্টং মাত্রাহীনঞ্চ যন্তবেং। পূর্ণং ভবতু তৎসর্বাং দ্বংপ্রসাদান্মহেশরি॥ বদত্র পাঠে অগদন্ধিকে ময়া, বিস্পবিভ্রুকরহীনমীরিতম্। ভদন্ত সম্পূর্ণতমং প্রসাদতঃ, সঙ্কল্লসিদ্ধিন্ত সদৈব আয়তাম্ ল বল্পাত্রাবিন্দ্রবিদ্ধান প্রসাদ ভক্তবংসলে। প্রসাদং কৃষ্ণ মে দেবি ত্রের্গ দেবি নমোহস্ত তে॥ বস্তার্থে পঠিতং তোত্রং ত্রেরণং শঙ্করপ্রিয়ে। তন্ত দেহস্ত গেহস্ত শান্তির্ভবতু সর্বাদা ॥

# অথ সপ্তশতীরহস্তত্তরম্ প্রাধানিকং রহস্কম্।

অভ শ্রীসপ্তশতীরহন্ত নারারণ-ঋষিরহাই পুছলো মহাকালীমহা-লক্ষীসরহত্যা দেবতা যথোক্তফলাবাপ্তার্থং সপ্তশতীপাঠাতে স্কুপে বিনিয়োগঃ। রাজোবাচ। ভগবর্বতারা যে চণ্ডিকারান্তরোদিতা:। এতেবাং প্রকৃতিং বন্ধন্ প্রধানং বক্তুমুর্হসি॥১॥ আরাধ্যং বন্ধরা দেব্যা: অরূপং বেন তদ্ভিজ। বিধিনা ক্রহি সকলং বধাবং প্রণতক্ত মে॥২॥

ঋষিক্ৰাচ। ইদং রহস্তং প্রম্মনাথ্যেরং প্রচক্ষ্যতে। ভক্তোৎসীতি ন মে কিঞ্চিৎ তবাবাচ্যং নরাধিপ ॥ ৩॥ সর্ববিশালা মহালক্ষীন্তিগুণা পরমে-ৰবী। লক্ষ্যাৎলক্ষ্যস্ত্ৰপা সা ব্যাপ্য ক্ৰুমেং ব্যবস্থিতা।। ৪।। মাতুলিকং গদাং থেটং পানপাত্রঞ্চ বিভ্রতী। নাগং লিক্ষ্ণ যোনিঞ্চ বিভ্রতী নূপ মুর্দ্ধনি ॥ ৫ ॥ তপ্তকাঞ্চনবর্ণাভা তপ্তকাঞ্চনভূষণা। শৃক্তং তদখিলং খেন প্রয়ামাস তেজসা।। ৬।। শৃক্তং তদখিলং লোকং বিলোক্য প্রমেশ্রী। বভার রূপমপরং তম্সা কেবলেন হি।। ৭।। সা ভিন্নাঞ্জনসকাশা দংষ্ট্রাঞ্চিত-বরাননা। বিশাললোচনা নারী বভূব তহুমধ্যমা।। ৮॥ খড়গপাত্রশির:-থেটেরলঙ্গতচতুভূ জা। কবন্ধহারং শিরসা বিভাগাংহিশির:অজম্।। ১।। সা প্রোবাচ মহালন্ধীং ভাষসী প্রমদোভষা। নাম কর্ম চ মে মাতর্দেহি তুভাং নমো নম:।। ১০॥ তাং প্রোবাচ মহালক্ষীভাষসীং প্রমদোত্তমান্। দলামি তব নামানি যানি কর্মাণি তানি চ॥ ১১॥ মহামায়া মহাকালী মহামারী ক্ষা ত্যা। নিজা তৃষ্ণ চৈক্বীরা কালরাত্রিত্রিত্রা॥ ১২॥ ইমানি তব নামানি প্রতিপাছানি কর্মডি:। এডি: কর্মাণি তে জ্ঞাত্ম বোহণীতে সোহশ্বতে সুধম্।। ১৩।। তামিত্যুকা মহালক্ষীঃ স্বরূপমপুরং न्ष। मञ्जारथानाजिसका अरगतनमूथासः मरशे ॥ ३८ ॥ सकमानाङ्ग-थता वीर्णाभुष्ठकथात्रिनी : मा वज्नव बता नात्री नामान्नरेख ह मा मर्रामा । > e ॥ মহাবিভা মহাবাণী ভারতী বাক্ সরম্বতী। আধ্যা ব্রান্ধী কামধেমুর্বেদগর্ডা চ ধীশ্বরী।। ১৬।। অবেথাবাচ মহালক্ষীম হাকালীং সরম্বতীম্। মুবাং জনমতাং দেব্যে মিথুনে স্বাহ্মপ্রতা ।। ১৭।। ইত্যুক্তা তে মহালন্দ্রী: সসর্জ্ঞ মিপুনং শ্বয়ম। হিরপাগর্ভো কচিরে প্রী-পুংসো কমলাসনো ॥ ১৮॥ একান্ বিধে বিরঞ্জে ধাতরিত্যাহ তং নরম্। খ্রী: প্রে কমলে লক্ষীত্যাহ মাতা স্ত্রিষ্ণ তাম্।। ১৯।। মহাকালী ভারতী চ মিথুনে স্ক্রভঃ স্ব হ। এতলো-রপি রূপাণি নামানি চ বদামি তে॥ ২০॥ নীলকণ্ঠং রক্তবাছং খেতাকং চক্রশেপরম্। অনেরামাস পুরুষং মহাকালী সিতাং স্থিরম্।। ২১।। স রুজঃ मद्रतः छापुः कशकी ह जिल्लाहनः। जही विश्वा कामरश्यः मा जी छाराकता चता ॥ २२ ॥ गतच्छी चित्रः (शीतीः कृष्ण्यः नृत्रसः नृत्र। वनवानाग

নামানি তরোরপি বদামি তে ।। ২০ ।। বিষ্ণু: রুকো হ্রবীকেশো বাস্থদেবা জনার্দন:। উমা গৌরী সভী চণ্ডী স্থলরী স্থলা শুভা । ২৪ ।। এবং যুবতরঃ সন্থঃ প্রুষথং প্রপেদিরে। চকুমস্তোহস্পশুন্তি নেতরেহতদ্বিদো জনাঃ ।।২০ ।। ব্রহ্মণের চ শ্রেম্বার প এরীম্। রুজার গৌরীং বরদাং বাস্থদেবার চ শ্রেম্বা, ২৬ ।। স্বর্রা সহ সম্ভূর বির্ক্ষোহশুমজীজনং । বিভেদ ভগবানু রুজন্তদেগীর্যা সহ বীর্যবান্ ।। ২৭ ।। অভমধ্যে প্রধানাদি কার্যাজাতমভূর্প। মহাভূতাত্মকং স্ক্রং জগৎ স্থার-জন্মম্ ।। ২৮ ।। প্রোয় পালরামাস তল্পন্না সহ কেশবঃ। সংজহার জগৎ স্ক্রং সহ গৌর্যামহেশ্বরঃ ।। ২৯ ।। মহালন্দ্মশিহারাজ স্ক্রমন্ত্রমন্ত্রী । নিরাকারা চ সাকারা সৈর নানাহভিধানভূৎ ।। ৩০ ।। নামান্তরৈনিক্রপ্যৈয়া নামা নাজেন কেন্ডিং ।। ৩১ ।।

ইতি মার্কণ্ডেরপুরাণে প্রাধানিকং রহস্তম্।

#### বৈক্বতিকং বৃহস্থম

শ্বিক্রবাচ। ত্রিগুণা তামসী দেবী সাজিকী যা ওয়োদিত। সা শর্কাচিত্রকা তুর্গা ভল্রা ভগবতীর্যাতে॥ ১॥ যোগনিলা হরেরুকা মহাকালী তমোগুণা। মধুকৈটভনাশার্থং যাং তুটাবাস্থ্রাসনঃ॥ ই॥ দশবজ্বাদশভ্রা দশভ্রাদশভ্রা রাজমানা ত্রিংশলোচনমালরা॥ ৩॥ ক্রন্ধননদ্রেট্রা সা ভীমরূপাহপি ভূমিপ। রূপসোভাগ্যকান্তীনাং সা প্রতিষ্ঠা মহাম্মিরাম্॥ ৪॥ থড়গবাণগদাশ্ল-শঙ্খচক্রভৃত্তিভ্রুৎ। পরিঘংকাম্মুকং শীর্ষং নিশ্চ্যোতক্রধিরং দধৌ॥ ৫॥ এষা সা বৈষ্ণবী মায়া মহাকালী ত্রত্যরা। আরাধিতা বশীকুর্যাৎ পূজাকর্ত্তুশুরাচরম্॥ ৬॥ সর্বদেব-শরীরেভ্যো বাবিভূতিাহমিতপ্রভা। ত্রিগুণা সা মহাকল্পী: সাক্ষামহিষ-মর্দ্ধিনী।। ৭॥ খেতাননা নীলভ্রা অ্যেতন্তনমণ্ডলা। রক্তমধ্যা রক্তপাদা নীলভ্রারুক্রম্বা।। ৮॥ স্টিক্রেল্বনা চিত্রমাল্যাম্বরিভ্র্বা। চিত্রাম্বলিনী ॥ ১॥ অট্টাদশভ্রা পূজ্যা সা সহপ্রভ্রা সতী। আর্থান্তর বক্যন্তে দক্ষিণাধ্য করক্রমাং॥ ১০॥ অক্সমালা চ কমলং বাণোহসিঃ কৃলিশং গদা। চক্রং ত্রিশূলং পরশুঃ শন্ধো ঘণ্টা চ পাশকঃ॥ ১১॥ শক্তিরণক্র চাপং পানপাত্রং ক্মগুলুঃ। অলক্বভ্রাহেভিরামুধ্যে

कमनामनाम ।। ১२ ।। मर्कालयमत्रीमीनाः बहानचीमियाः नृष । शृक्तन मर्क-লোকানাং দ দেবানাং প্রভূতবেও।। ১৩।। গৌরীদেহাৎ সমুভূতা যা সত্ত্বৈকগুণাখ্রয়। সাক্ষাৎ সরস্ভী প্রোক্তা শুক্তাস্থরনিবর্হিণী।। ১৪।। দধৌ চাইভুজা বাণান্ মূৰলং শূলচক্ৰভূৎ। শহাং ঘণ্টাং লাকলঞ্চ কান্মূ কং বন্থধা-ধিপ ॥ ১৫ ॥ এষা সম্পৃঞ্জিতা ভক্ত্যা সর্বজ্ঞত্বং প্রযক্ষতি। নিওস্তমথিনী দেবী শুক্তামুরনিবর্হিণী। ১৬। ইত্যুক্তানি শ্বরূপাণি মৃর্জীনাং তব পার্থিব। উপাসনাং জগনাতুঃ পৃথগাসাং নিশাময় ॥ ১৭॥ মহালক্ষী-র্মদা পূজ্য। মহাকালী সরম্বতী । দক্ষিণোত্তরয়োঃ পূজ্যে পৃষ্ঠতো মিথ্ন-ত্তরম্ ॥ ১৮॥ বির্ঞি: স্বর্যা মধ্যে রুজো গৌর্যা চ দক্ষিণে। বামে লক্ষা ক্ষীকেশ: পুরতো দেবভাত্তয়ম্॥১৯॥ অষ্টাদশভূতা মধ্যে বামে চাস্তা দশাননা। দক্ষিণেইউভূজা দশ্মীর হতীতি সমর্চ্চয়েৎ ॥ ২০ ॥ পূর্বাদি-দলতঃ পৃষ্যা অসিতাকাদিভৈরবাঃ। অটাদশভূষা সৈষা যদা পৃষ্যা নরাধিপ॥ ২১॥ দশাননা চাইভুজা দক্ষিণোত্তরয়োত্তদা। কালমুভ্যু চ সম্পূজ্যো সর্কারিষ্টপ্রশান্তয়ে ॥ ২২ ॥ স্বদা চাইত্রলা প্রক্যা শুস্তাস্থরনিবহিণী। নবাস্তা: শক্তম: পূজাভাদা ক্রন্তবিনায়কৌ ॥ ২৩ ॥ নমো দেব্যা ইভি रकारिकम हानकीः नमर्फरायः । व्यवजात्रक्यार्कात्राः रक्षावमञ्जाकाश्चराः ॥२८ ॥ **ष्रक्षाम्यञ्का देवरा भृका महिरमर्किनी। महानन्त्रीम हाकानी देनद त्यास्त्रा** সরস্বতী 🛭 ২৫ ॥ ঈশরী পুণাপানাং সর্বলোকমহেশরী। মহিষান্তকরী বেন পৃক্তিতা স অগৎপ্রভঃ ॥ ২৬ ॥ পৃক্তরেজ্জগতাং ধাত্রীং চণ্ডিকাং ভক্ত-বৎসলাম্। অর্ধ্যাদিভিরলঙ্কারৈর্গন্ধপুলৈওবেণাওমৈঃ॥ ২৭॥ ধুপৈদীপৈক নৈবেক্তেন নাভক্ষ্যসমন্বিতঃ। কবিরাক্তেন বলিনা মাংসেন স্বর্গা নৃপ ॥২৮॥ [বলিমাংসাদিপুত্দেরং বিপ্রবর্জ্যা মরেরিতা!] [তেষাং কিল সুরা-भारेमर्त्नाका भूका नृश कित ] ॥ २० ॥ ध्वांमाठमनीरेम्न हक्तनन स्वक्तिना । সকর্প কৈ তামুলৈউজিভাবসমন্বিত: No n বামভাগেৎগ্রতো দেব্যা-শ্ছিরশীর্বং মহাস্করম্। পূজিতো মহিষো বেন প্রাপ্তং সাযুক্ত্যমীশরা॥৩১॥ দক্ষিণে পুরতঃ সিংহং সমগ্রং ধর্মমীখরম্। বাহনং পুরুরেদেব্যা ধৃতং যেন চরাচরম্॥ ৩২॥ বং কুর্য্যাৎ প্রয়তো ধীমাংক্তপ্তা একাগ্রমানদঃ। ততঃ ক্তাঞ্চলিভূপা ভবীত চরিতৈরিমে: ॥ ৩৩॥ একেন বা মধ্যমেন নৈকেনে-তরয়োরিহ। চরিতার্দ্ধন্ত ন অংপৎ অপংশ্ছিদ্রমবাপুরাং ॥ ৩৪ ॥ তোত্তমন্ত্র: खरीएक्सार यनि वा अननिषकाम्। श्रानक्तिनमञ्जातान् कृषा मृद्धि

कुणांश्वितः ॥ ०६ ॥ क्यां श्रां क्षणांश्वीः युक्यूं इत्र छ छिछः । श्रे विद्धां कथः छुन् स्थाः भागः जिनमित्रं ॥ ०५ ॥ जुन् सार द्यां करे छुन् इति । ज्यां नामभित्रं । १ ज्यां नामभित्रं । १ ज्यां नामभित्रं । भूक्याः श्रां । श्रां नामभित्रं । भूक्याः श्रां । १ ज्यां । भूक्याः श्रां । १ ज्यां । भूक्याः भूक्या

ইভি মার্কণ্ডেরপুরাণে বৈক্বভিকং রহস্তম্।

#### মূর্<u>ত্তির</u>হস্তম্

ঋৰিক্লবাচ। নন্দা ভগবতী নাম যা ভবিষ্যতি নন্দকা। স্বতা সম্পৃঞ্চিতা ভক্তা। বশীকুর্য্যাজ্ঞগত্ররম্ ॥ ১ ॥ কনকোত্তমকান্তি: সা স্কান্তিকনকামরা। (एवी कनकवर्गांखा कनत्काखमख्यमा ॥२॥ कमलाङ्ग्रमानादेखवनङ्ग्रहाच्छा । ইন্দিরা কমলা লক্ষী: সা এীরুক্সাযুক্ষাসনা॥ ০॥ বারক্তদন্তিকানাম দেবী প্রোক্তা ময়াখনদ। জভা: অরুপং বক্যামি শৃণু স্কভিয়াপহ্মু॥৪॥ ৰক্ষুত্বা সর্বাপাপেভ্যো মৃচ্যতে নাত্র সংশয়:। রক্তামরা রক্তবর্ণা রক্ত-সর্ব্বাঙ্গভূষণা ॥ ৫ ॥ রক্তায়ুধা রক্তনেত্রা রক্তকেশাহতিভীষণা। রক্ততীক্ষ-নথা রক্তরসজ্ঞা রক্তদন্তিকা॥ ७॥ পতিং নারীবাংহুরক্তা দেবী ভক্তং ভক্তেনম। বস্থাৰে বিশালা সা স্থামক্ষুগলন্তনী ॥ १॥ দীৰ্ঘো লম্বাৰতি-স্থুলে তাবতীৰ মনোহরে। কর্কশাবতিকান্তে তৌ সর্বানন্দপয়োনিধী ॥৮॥ ख्खान् मः शावत्वता मर्ककामण्टको खटनो। थ्र्लाशावनिवः द्विते वक्क চতুর্জা॥ ৯॥ আধ্যাতা রক্তচামূণ্ডা দেবী বোগেশরীতি চ। অনয়া बााश्चमिकः जन् श्वादत्रजनमम्॥ > ।। हेमाः यः भूजदत्रम् छक्ता म ব্যাপ্লোভি চরাচরম্। ভুক্তা ভোগান্ ষ্থাকামং দেবীসাযুক্ত্যমাপ্লাৎ ॥ ১১ ॥ আৰীতে ব ইমং নিভাং রক্তদস্তা-বপুংস্তবম্। ভং সা পরিচরেদেনী পতিং প্রিয়মিবাঙ্গনা ॥ ১২ ॥ भाकश्वती नौगवर्गा नौरनां प्रशासना । পম্ভীরনাতি স্থিবলীবিভূষিততনূদরী ॥ ১০॥ সুকর্ষশসমোত দ্বৃতপীনঘনঅনী

मृष्टिः निनीमृथापूर्वः कमनः कमनानश्च ॥ ১৪॥ भूणभन्नवम्नानि-कनाछः শাকসঞ্চরম্। কাম্যানন্তরদৈষ্কিং কুত্র্তুত্ররাপহম্॥১৫॥ কান্ত্রক ক্রংকান্তি বিভর্তি পরমেশরী। শাক্তরী শতাক্ষী সা সৈব তুর্গা প্রকীর্ত্তিতা ॥ ১৬ ॥ উমা গৌরী সতী চণ্ডী কালিকা সা চ পার্বতী। भाक्छदीर खरन् शावन् जपन् मःशुक्तवन् नगन्॥ २१॥ व्यक्तरामन् एठ শীভ্রমলপানাহমৃতং জলম্। ভীমাপি নীলবর্ণা সা দংট্রাদশনভাস্থরা॥ ১৮॥ विশानत्नाह्ना नाती वृज्यभीनभरशास्त्रा। हज्ज्ञहामक छमकः नितः भाजक বিভ্রতী ॥ ১৯ ॥ একবীরা কালরাত্রি: সৈৰোক্তা কামদা স্বতা। তেজো-মওলত্বর্ধা ভাষরী চিত্রকান্তিভৃৎ । ২০॥ চিত্রভ্রমরসকাশা মহামারীতি গীয়তে। ইত্যেতা মূর্ত্তয়ো দেব্যা ব্যাখ্যাতা বস্থাধিপ । ২১॥ জগমাতৃ-শ্চণ্ডিকারা: কীর্ত্তিতা: কামধেনব:। ইদং রহস্তং পরমং ন বাচ্যং কস্ত-চিত্রা ॥ ২২ ॥ আথ্যানং দিব্যমূতীনামধীদাবহিতঃ স্বয়ম্। এতস্থাতং প্রসাদেন সর্বমান্তো ভবিষাসি॥ ২০ N সর্ব্বরূপমন্ত্রী দেবী সর্ব্বং দেবীমন্ত্রং স্বগৎ। ততোহহং বিশ্বরূপাং তাং নমামি পরমেশ্রীম্॥২৪॥ (তস্মাৎ সর্বপ্রবাদ্ধন দেবীং লপ নিরম্ভরন্। সপ্তল্মার্জ্জিতৈর্ঘারে ক্রম্ভত্যাদিকৈ-রপি॥ পাঠমাত্রেণ মন্ত্রাণাং মূচ্যতে সর্ব্ধকিন্তিবৈ:। দেব্যা ধ্যানং তবাখ্যাতং खश्राम्खञ्जदः मह् । ज्यार मर्क्यराष्ट्रन मर्ककामकन्यम् )॥

#### ইতি মৃত্তিরহক্তম্।

#### চণ্ডীপাই—ফলম্

সংবৎসরপ্রদীপে—মাহাত্মঃ ভগবত্যান্ত পুরাণাদিয়ু কীর্ত্তিম্। পঠেদা শৃগুরাদ্বাপি সর্ককামসমূদ্ধরে ॥

বারাহীতন্তে চ—বাচক: পূজিতো বেন প্রসন্নাপ্তভ দেবতা:। জ্ঞাতা সর্বসমাপ্তিঞ্চ পূজ্বেদ্বাচক: বৃধ:। আত্মানমণি বিক্রীয় য ইচ্ছেৎ সফলং ক্রেডুন্।

#### অথ একারস্ত্যাদি-শাই-ফলম্

চণ্ডীপাঠফলং দেবি খৃণুষ গদতো মম। সম্বল্ল্য পূৰ্বং সংপূজ্য ক্সস্তাব্যেমন্ন সক্ৰ। পাঠাদ্ বলিপ্ৰদানাদ্ধি সিদ্ধিমাপ্লোভি মানবঃ॥ উপদর্গোপশান্ত্যর্থং জিরাবৃত্তং পঠেরর:। গ্রহোপশান্ত্যৈ কর্ত্তব্যং পঞ্চাবৃত্তং वदानरन ॥ महाज्य ममूर्शक मधावुखम्मीत्रसर । नवावुखा जरक्षिः র্বাজপেষফলং লভেং॥ রাজবখার ভৃত্যৈ চ রুদ্রারুত্তমূদীররেং! অর্কা-বুক্তা। কাম্যসিদ্ধির্কৈরিহানিক জারতে। মধাবুক্তা রিপুর্বেখন্তথা স্ত্রী বখতা-মিয়াং। স্থাং পঞ্চদশাবুত্তা ভিয়মাপ্নোতি মানব:॥ কলাবুতাং পুত্র-পৌত্রধনধাস্থাগমং বিহু:। রাজ্ঞো ভীতিবিমোক্ষার বৈরক্ষোচ্চাটনার চ।। कुर्यार मक्षमभावतः ज्योष्टीमभकः श्रिट्य। महाजनित्माकात्र दिःभावतः পঠেল্লরঃ । পঞ্চবিংশাবর্ত্তনাচ্চ ভবেদ্বন্ধবিমোক্ষণম্। সঙ্কটে সমন্ত্রপ্রাপ্তে তৃশ্চিকিৎস্তাময়ে তথা। জাতিধাংসে কুলোচেছদে আয়ুয়ো নাশ আগতে। देवित्रवृत्को वर्गाधिवृत्को धननात्म जथाकत्त्र ॥ जरेथव जिवित्सारभारक जथा চৈবাতিপাতকে। কুৰ্য্যাদ্ **য**ত্নাৎ শতাবৃত্তং ততঃ সম্পদ্মতে <del>ওভ</del>দ্ম নশুস্তি বিপদন্তত্ত অত্তে ৰাতি পরাং গতিম্। শ্রেরোবৃদ্ধি: শতাবৃদ্ধা রূপবৃদ্ধি-অথাপরে॥ মনসা চিন্তিতং দেবি সিধোদষ্টোত্তরাচ্চতাৎ। শতাখনেধযজ্ঞানাং ফলমাপ্রোতি স্বরতে॥ সহস্রাবর্ত্তনালন্দ্রীরারণোতি স্বরং স্থিরা। ভৃক্তু। মনোরথান কামান নরে৷ মোক্ষমবাপুরাৎ ॥ বথাখমেধ: ক্রতুরাট্ দেবানাঞ ষ্ণা হরি:। স্তবানামপি সর্ক্ষেষাং তথা সপ্তশতীন্তব:॥ স্বাথবা বছনোক্তেন কিনেতেন বরাননে । চণ্ডা: শতাবৃত্তিপাঠাৎ সর্বা: দিধান্তি সিদ্ধয়: ॥

ইতি চণ্ডীপাঠফলম্।

# দেবীস্জ্ঞম্ ( প্রকারাস্তরম্ )

ওঁ নমো বিষলবদনারৈ ভৃত্ব:-ত্ব:পরমহ:-কলারৈ কেবল-পরমানন্দসন্দোহরপারে॥ ১॥ লোকএরমীরিতমিবাপসারকপরমজ্যোতীরপারে। অসদভিলাব ভিজ্বসদ্বিত-রসনাদোষাপসারণ পরমায়তরপারে॥ ২॥ মৃর্তিমন্তে
কোটিচন্দ্রবদনারে তে তুর্গে দেবি সর্ববেদোন্তবে। নারায়িণি তৈজসশরীরে পরমাত্মন্ প্রসীদ তে নমো নম:॥ ৩॥ ত্বাররপে প্রণবন্ধরণে
ব্রীং-ত্বরপিণি। অঘিকে ভগবত্যম্ব ত্রিগুণপ্রস্তে নমো নম:॥ ৪॥ ইতি
সিদ্ধিকরে তেন্টি ক্রৌ ব্রৌ আহারপিণি। বিষলম্থি চন্দ্রম্থি কোলাত্লম্থি থর্বে প্রসীদ॥ ৫॥ জানে দেবীমীদৃশং ভবং মাহেশীং ক্রীড়াস্থানে

चांत्रकः ज्वरतश्चिन्। मळ्चः विवक्षणं ठ प्रती प्रतिमा पः वांतिनामळदत्रहिलि॥ ७॥ व्यक्तं रत्नका प्रचक्षणां दिकाता व्यक्तं विकाता व्यक्तं विकाता व्यक्तं विकाता व्यक्तं विकाता व्यक्तं विकाता विकात विक

### চংখাঃ ষ্ট্সংবাদঃ।

মেধান্চ কথরামাস স্থরথার সমাধরে। সা কথা কথিতা পশ্চান্মার্ক-ণ্ডেরেন ভাগুরৌ॥ তামেব কথারামাস্থ: পক্ষিণো কৈমিনিং প্রতি। অনেনৈব বিধানেন কথা: বড়্বিধিকা মতা:।

# প্রী**ঞ্জিবন্ত** করিছি

#### রুদ্রচণ্ডী-সঙ্কল্লাদিঃ

অন্তেত্যাদি অমুকরাশিত্তে ভাস্করে অমুকে পক্ষে অমুকভিথী অমুক-গোত্র: শ্রীষমুক: শ্রীচণ্ডিকাপ্রীতিকাম আগমসন্দর্ভান্তর্গত-ক্রন্তবামলোক্ত-ও শ্ৰীপাৰ্কাত্যবাচ ভগবন ভৃতভবেত্যশ ইত্যাদি উক্তং ফলমবাপু,য়াদিত্যস্কক্র-ইয়ৎসংখ্যকপাঠকর্মা২হং করিয়ে। চণ্ডীগ্ৰন্থস্থ ভ**ভ**ঃ সামান্তার্ঘ্যাসনভদ্যাদিকং বিধায় প্রাণায়াম বড়ক্তাসান কুতা **ৰথা**বিধি ধ্যাত্রেৎ। ষথা—ও রক্তবর্ণাং মহাদেবীং লসচ্চদ্রবিভৃষিতাম্। পট্টবল্পপরী-ধানাং সর্বালয়ারভূষিতাম্। বরাভয়করাং দেবীং মুওমালা-বিভূষিতাম্। কোটিচক্রসমাভাসাং বদনৈঃ শোভিতাং পরাস্। করালবদনাং দেবীং বিঞ্চিজ্জিহনাগ্রলোহিতাম। স্বর্ণবর্ণ-মহাদেব-ক্রদমোপরি সংস্থিতাম্। অক্ষালা-ধরাং দেবীং জপকর্মসমাহিতাম। এবং ধ্যাত্মা জপেনাত্রী রুদ্রচঙ্কীং বরপ্রদাম্। ওঁ ঐত ঐত ব্রীত ব্রীত চামুতে স্বাহা এতৎ পান্তং ওঁ নমক্তিকারৈ নম:। ইতি মন্ত্রেণ তল্পোক্তবিধিনা উপচারানু দত্যাং। ইতি।

#### রুদ্রচঞ্যাও শাপবিমোচনম্।

ওঁ রং ক্রী৺ ক্রী৺ ক্রে৺ শং ষং বং বাং সাং হং হুং ওঁ ওঁ প্রজাপতি ঋষি-ব্ৰহ্মবিষ্ণু দেবতে ক্ষতভৌশাপবিমোচনে বিনিয়োগ:। ঠং ঠং ঠং কং কং কং খং খং খং প্রজাপতির বিবায়ুদেবিতা প্রচণ্ডচণ্ডীশাপবিমোচনে বিনিয়োগঃ। প্রকাপতি अधिगांत्र शिष्ट्रात्मा कृत्या (परका दी: गी: मृ: ७: इ: कृ चारा প্রজাপতিখ'বিগারতীচ্ছলো-কদ্ৰচণ্ডীগু**হুশা**পবিমোচনে विनिद्योगः। দেবতা ক্ষুত্রতীশাপবিমোচনে বিনিয়োগঃ ৷ বিরাটপ্রকৃতিকর্মাণো প্রচণ্ডচণ্ডীশাপবিমোচনে প্রজাপতিখ'বির্গায়ন্ত্রীচন্দ্রঃ সুর্য্যো দেবভা বিনিয়োগ:। প্রজাপতিঋষির্গায়ন্তীজন: কামাধ্যা দেবতা ক্তচণ্ডীশাপ-वित्याहरून विभिन्नातः। कृष्णनाश्रीवरबाहनमञ्ज नात्रमथाः श्रीकृत्या रापवणा তভীয়---২৮

শ্রীক ক্ষণাপবিমাননে বিনিৰোগঃ। ওঁ ব্রী৮ হু৮ হু৮ বোরন্ত না মহান্ত নাকাদ্ বন্ধবন্ধ পিনী। দ্বিতা কৃষণাপেন মৃক্তা বং ভব মুব্রতে। লোকানাঞ্চ হিতার্থার শস্তুনা গদিতা প্রা। কৃষণাপবিম্কা হি বথোক ফলদা ভব। বন্ধনাপবিমোনন মন্ত্র বন্ধবির্দ্ধিয়া। ওঁ—বন্ধনা শাপিতা ব্যতা ন সম্যক্ ফল-দারিনী। শাপম্কা হি দেবি বং বথোক্ত ফলদা ভব। হৌ৮ হু৮ হু৮ হী৮ শ্রী৮ শ্রী৮ ব্রী৮ ব্রা৮ ব্রু৮ বিদ্ধা বাদ প্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ বাদ প্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ বাদ প্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ বাদ প্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ বাদ প্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ বর্ষা হেরা৮ ব্রা৮ ব্রা৮ বর্ষা হাণ হাণ ব্রা৮ বর্ষা হেরা৮ ব্রা৮ বর্ষা হাণ ব্রাদ বর্ষা। তাল ব্রাদ ব্রাদ ব্রাদ বর্ষা। ইতি শাপোদারঃ। ও হ্রা৮ ব্রাদ ব্রাদ ব্রাদ বর্ষা। ইতি ব্রাদানি। সর্বাপাপহরে দেবি সর্বাদা বরদা ভব। ততো গায়গ্রীং পঠেও। ব্রা—ওঁ ক্রাচণ্ডিকারৈ বিদ্ধাহে পৃথিকলপ্রাদারিকৈ ধীমহি তরো দেবি প্রচোদমাৎ।

#### রুদ্রচণ্ডী-কবচম্।

ওঁ বা চণ্ডী মধুকৈটভাদিদৈত্যদলনী বা মাহিবোন্মূলনী, বা ধ্যেকণ-চণ্ডম্ওমথনী বা রক্তবীকাশনী। শক্তিঃ শুন্ত-নিশুন্ত-দৈত্যদলনী বা সিদ্ধিলন্দ্রীখরা, সা দেবী নবকোটি-মূর্ন্তি-সহিতা মাম্পাতৃ বিখেশরী॥ অভ্য শ্রীকল্রচণ্ডিকাকবচন্ত ভৈরবশ্ববিরম্ভুপ্ ছন্দঃ শ্রীচণ্ডিকা দেবতা চতুর্ব্বর্গফল-প্রাপ্তার্থং জপে বিনিরোগঃ।

শ্রীকার্তিকের উবাচ। কবচং চণ্ডিকাদেব্যাঃ শ্রোতৃমিচ্ছামি তে শিব। বদি তেহন্তি রূপা নাথ কথয়ন্ত জগংপ্রভো॥

শ্রীশিব উবাচ। খৃণু বৎস প্রবক্ষ্যামি চতিকাকবচং শুভ্স্। ভৃজি-মৃজি-প্রদাতারমায়্যং সর্বাক্ষমদম্ । ত্ল'ভং সর্বাদেবালাং সর্বাপাপনিবারণম্। মন্ত্রসিদ্ধিকরং প্রাং জানসিদ্ধিকরং পরম্ ॥ চতিকাকবচন্তান্ত ঋষি-দেবাহণ ভৈরবং। চতিকা দেবতা প্রোক্তা ছেন্দোহস্টুপ্ প্রকীর্তিজম্। চতুর্বাক্ষলপ্রাপ্তৌ বিনিয়োগঃ প্রকীর্তিজঃ। চতিকা মেহগ্রভঃ পাতৃ

আরেষ্যাং ভবস্করী। ৰাষ্যাং পাতৃ মহাদেবী নৈশ্বভাং পাতৃ পার্বজী।
বারুণে চণ্ডিকা পাতৃ চাষ্থা পাতৃ বারবে। উত্তরে ভৈরবী পাতৃ
উর্দ্ধে পাতৃ মহেশ্ররী। অধং পাতৃ সদানকা মূলাধারনিবাসিনী। মূর্দ্ধিপাতৃ
মহাদেবী ললাটে চ মহেশ্ররী। কঠে কঠেশ্ররী পাতৃ হদরে নলক্বরী।
নাভৌ কটিপ্রদেশে চ পারারখাদেরী সদা। উর্বোর্জাঝাঃ সদা পারাব্ধচন্দ্রে
মদলালসা। উর্দ্ধে পার্শ্বে সদা পাতৃ ভবানী ভক্তবৎসলা। পাদরোঃ
পাতৃ যামীশা সর্বাঙ্গে বিজয়প্রদা॥ রক্তমাংসে মহামায়া ঘচি মাং পাতৃ
লালসা॥ শুক্ত-মজ্জান্থিসজ্বেষ্ গুহুং মে ভ্বনেশ্বরী। উর্দ্ধেকী সদা
পায়ান্ নাভৌ সর্বাঙ্গসন্ধির। ও ঐল প্রীল রীল চামুণ্ডে স্বাহা মন্ত্রস্করপিনী। আত্মানং মে সদা পায়াৎ সিদ্ধবিদ্ধা দশাক্ষরী। ইত্যেতৎ
কবচং দেব্যাক্টণ্ডিকায়াঃ শুভাবহ্ম্। গোপনীয়ং প্রবত্বন কবচং সর্ব্বসিদ্ধিদ্ম্॥ সর্ব্বেক্সাকরং পূণ্যং ন দেয়ং বস্ত কস্তচিৎ। অজ্ঞাত্মা করচং
দেব্যা যং পঠেৎ শুব্মুন্তমম্। ন ভস্ত জায়তে সিদ্ধির্বহুধা পঠনেন চ।
য়্ববৈত্তৎ কবচং দেব্যা দিব্যদেহধরো ভবেৎ। অধিকারী ভবেদ্ বৎস চণ্ডীপাঠের্ সাধকঃ॥ ওঁ

ইতি কৃদ্রবামলে কৃদ্রচণ্ডিকাকবচং সমাপ্তম্। ওঁ তৎসং। ওঁ গণেশার নম:।ওঁ বালৈ নম:। ওঁ বক্ষণে নম:। ওঁ বিফ্বে ন্ম:। ওঁ শিবার নম:। ওঁ চণ্ডিকারৈ নম:॥

#### রুত্রচণ্ডী।

ওঁ নারায়ণং নমস্কৃত্য নরকৈব নরোত্তমন্। দেবীং সরস্বতীকৈব ততে।
জয়মূদীরয়েৎ॥ ওঁ নমো রুদ্রচণ্ডিকারে।

ওঁ শ্রীপার্কভূর্বাচ। ভগবন্ ভূতভব্যেশ তৈলোক্যাধিপতে হর। বতুপাথ্যানমাশ্চর্য্য সৌরথেয়ং বদস্ব মে॥

রুদ্র উবাচ। পূর্বাং বং স্চিতং কান্তে ন শ্রুতং কাপি তদ্ বথা। শ্রুরতাং শ্রুতং রম্যে দেবি প্রৌচ়ে বরাঙ্গনে । ইত্যুক্ত্বা সব্যহন্তেন চিবৃকং গৃহ্ চুম্বিতম্। বক্ত্রারবিন্দং স্থন্দর্যাঃ রুদ্ধা প্রোবাচ শবরঃ। অধুনৈবাগতভত্র গণেশভ্রমবিদ্ গুরুঃ ॥ প্রণম্য সাম্বিকং রুদ্ধম্বিতো ভৈরবৈঃ সহ। নাম্বিকা
বোগিনীভিঃ সা সাবধানেন শক্ষী। কৈলাসে যোগসংস্থানে মহদ্ গুহুঞ্চ

শ্রহতে। অস প্রীকৃদ্দণীমহামন্ত্র মহাকৃদ্রধ্বিরস্টুপ্ছনশ্চণ্ডিকা দেবতা ে চভুর্বর্গসাধনে শ্রীক্ষড়চণ্ডিকাজ্বপে বিনিয়োগঃ। (ওঁ) সাবর্ণিরিতি বিখ্যাতো মহ-রাসীন্ মহেশরি। বক্ষ্যে ওছি ওছৎপত্তিং শৃণুত্ব তং সমাহিতা॥ মহামাগ্নাফু-(बार्डेम: रूर्ग्रम्ख्यः। देव्जानामधिरशा সুর্থ: সুধী:। পূর্বং খারোচিষে কাত: সকলেহবনিমগুলে। জিত: কালে নুগৈরক্তৈ: দোহভূৎ কোলাধ্যকৈর্প:॥ তথামাত্যৈরেৰ স তৈবঁনং बाला नुशालीः। वित्वत्करेनव बर्जात्स वर्षा। स्मर्थामहाम्निः॥ ভজাতিছৎ কিন্নৎকালং বিচরন্ স ভদাখ্রমে ৷ দৃষ্টবান্ জনমেকঞ্বৈখ্যং বিরহিণিং বলে ॥ তমপৃচ্ছন্ মহারাজঃ কন্মান্য়ানো ভবাংভতঃ ৷ রাজ্ঞা পৃষ্টঃ স উবাচ ছঃখিতোহহং ভবান যথা॥ বিবেকিনৌ ভৌ মিলিতৌ **क्षाश्चादिवास्त्रिकः मृत्यः। शृद्धी नृत्थि विदक्षद्धारिशायः शृद्धिनित्रा**-কৃত: ॥ অহং মমন্ত্রমাপরো রাজ্যে রাজাককেবপি। তথাপ্যেবাবয়োঃ কন্মান্-হাৰ্দী ভবতি তেষু চ। মেধনোক্তং বলবতী মহামালা গদাভূতঃ। তলা সম্মো-হতে বিশ্বং স্বৰত্যৰতি হস্তি চ॥ চেতঃস্থ জ্ঞানিনাং দেবী নিত্যা ভগৰতী হি বরদা মৃক্তবে লোকে বোগনিজাখভিধীরতে ৷ জগন্তির্জাধারা मार्शिकीशांधीतीश्वती। উৎপन्ना পরমোৎপন্না বিষ্ণুনিতা মৃবার্দ্ধিনী॥ नन्नवा বিদ্যাসংস্থানা হৈনী হরিহরপ্রিয়া। স্বতিঃ প্রীতিঃ স্বতপ্রীতা ক্রতিঃ প্রীতিপুরা-ৰহা। বোগনিত্রাসমাপয়ে। যদা বিষ্ণুক'গদ্গুক:। তদা বাবস্থরৌ বোরে মধুকৈটভদংজকৌ॥ হরিকর্ণনলোভূত্তো ব্রন্ধাণং হত্তমৃন্থতৌ। ভরাদ্-বাগ্ভিন্ততো ব্ৰন্না তামসীং ভৌতি তাদৃশীম্। অতুলাং যোগনিদ্ৰাধ্যাং ভক্তা-ভীষ্টাং স্বরাত্মিকাম্। স্বাহা-স্বধা-ব্রভ্রূপাং ওভাং পীযূর্বাদিনীম্। অক্ররাং বীৰত্নপাঞ্চ পালয়িত্রীং বিনাশিনীম। ত্রিধামাত্রাত্মিকাস্থাঞ্চ অন্থচার্য্যাং মতেশরীম্ ॥ মাতেশরীং মহামারাং মাতরং সর্বমাতরম্ ॥ অর্জমাত্রাঞ্চ সাবিত্তীং মহাবিভাং বিনোদিনীম্'৷ ইখং স্ততা ত্যক্তৰতী ষড়কং म टांखरको सगदकुर्ग्रस वाहबुक्छः। वंदनकमहत्रांनि उकरको मानर्वो ততো দেবাস্করং যুদ্ধং শতবর্ষমভূৎ পুরা। পরাজিতোইভূদেবেক্স हैटलार ज्यादिवासूतः ॥ उत्तः ना कामनी त्मवी त्मवटख्यः मम्हवा। ज्यान সপ্তবেনাক্তক্রিবাধ্যম্থাংতথা। উগ্রবীর্ঘাদিকানাঞ্চ সেনাক্ত চত্রজিণী:। **भूत्रदक्षशोषित्कांग्रेखः मात्रिनः महितः त्रत्यः। माहितः देगःहिकः त्रशः शोक्रवः** वाकिकः छन्। देवत्रशाक वर्षा क्या कवान वत्रवर्गिनी । विमानस्य विदेखर्गितः

স্বতা দৈত্যনিপীড়িছৈ:। কালিকা শিবদৃতী চ কৌমারীমৃষ্টিধা পরা। সুগ্রী-काश्यक का विवेशिंगः का नाटक त्रक का नाकम ॥ (थी खः भो शः निक्र निक् ষড়শীতিসহপ্রকম্। কালকেয়াদিনৈয়ঞ সর্কাং নায়কভূষিতম্। পুন: ভঙ্কাং নিশুভঞ দৈত্যরাজং জ্বান সা। দেবানাং স্থানমাদ্তং শেষং পাতাল-সংস্থিতম্। কৃষা রমতি কল্যাণী রণস্থল্যাং রণপ্রিয়া। তদা বৃহস্পতিমূখা মহর্ষি-সুরসিদ্ধকা:। ভোত্রৈন নাবিধৈরলৈ: ভতিঞ্জুরমুভ্যান্। কাত্যারনী गांक्काचा चलारत्रना विलाकिनी ॥ देवक्षवी नांत्रतिरही ह यात्राही ह महस्यती। कोमात्री ह उरवद्यांनी बन्तानी हाशिक्रिनिन। महाकानी महाननीम (हाकन्नी সরস্বতী। একবীরা ভাষরী চ তথিবাইভূজা দিবা। দুদ্ভা সহত্রভূজা नर्समं क्रियत्र निवा । মৃ নেস্ত স্যোপদেশেন মৃদ্মীং মধুমানত:। মৃতিং নিশার তৌ প্জাঞ্জতুর্বৎসরত্রয়ম্। তত আগত্য সা দেবী তাভ্যামিটং বরং দদৌ। ছর্গাবরং সমালভ্য হর্য্যবীর্য্যসমূদ্ধবং। মহস্তরাধিপঃ শ্রীমান্ হুর্থং সম্ভবিম্বতি॥ नमाधिक निमानाच मुरकारक्षरकानकः। देशः हशीः शर्द्धाः वस्त्रा वस्त्रा वा প্রতিবাসরম্। কুজে বা শনিবারে বা পঠন্ সর্বকলং লভেং। একাবৃদ্ধ্যা ভবেৎ দৌথ্যং ত্রিরাবৃত্ত্যোপসর্গতঃ। স্থানুক্তো গ্রহদোবাচ্চ পঞ্চাবৃত্তং পঠেছ-বদি। সপ্তাবৃত্তং মহাভীতৌ নবাবৃত্তঞ্চ শাস্তিত:। বালপের্ফলঞাপি কড়া-वृक्तांचरमधिकम्॥ रशारमध-नत्ररमध्य मळानांचः छथार्कछः । स्वावृक्ताः स्थी **कृषां क्लावृद्धां अटवक्षनी ॥ यथाकांमः मधनत्म अथा ठारानत्म अअम्।** नाती श्रिकारमा ज्ञान् दिः भावुका अनः इत्तर। श्रक्षविः भान् ज्ञत्र স্বর্গী শতাবৃত্ত্যা তব প্রিয়:॥ অটোত্তরশতাবৃত্ত্যা রাজস্মকলং লভেৎ॥ অগ্নিহোত্রী নিতাপাঠান্তাবেদেহং হরের্দ্রবে॥ সহস্রাবৃত্তিপাঠত ফলং কিং স্যাদ্ বরাননে। তৎজ্বং ন হি শকোমি সভ্যং বর্বাযুতৈরপি॥ ইত্যুক্তং मम मर्व्सिन वित्र व्यविषां कम्। मर्व्सविधिक वर्षामाः विद्यानां क वनविनी। ইয়ং যোনিঃ সমাধ্যাতা সর্বতিন্তেযু সর্বদা ॥৪৬॥

ইতি এমদাগমদলতে একডবামলে কজচভিকারাং হরগৌরীসংবাদে চণ্ডীরহন্তং নাম প্রথমাবচ্ছেদঃ।

क्रम डेवां । त्रर्जः विकारमवा विमित्रः ज्वनबरः । कांत्रवाक्विज-**ভদ্ধ: সনু পঠন প্রিরভমো ভবেৎ ॥ ক্রন্তচন্তী মহাপুণ্যা জিগুণাখ্যা বিধাতকা ।** ভারিণী তরণী তরী ভন্নিকা বিশ্বরূপিকা॥ বিরোধিনী বিপ্রচিত্তা বাণী বর্ণাব-(वांधिका। वांत्रिनी विनिष्ठा विष्ठा वजाद्यांका वित्यांकिनी। वश्रमा महती শক্তি: ভভা ক্ষেমন্তরী দয়া ৷ মোহাত্মিকা মনোরপা মিতা মায়া মলাপহা: মাতা ভগৰতী শক্তি: শিবা সাধ্যা হুরেশ্বরী। শর্কাণী সিংহসংবাহা শস্ত্রক্ষ:-স্থলস্থিত। ॥ একাবৃত্তিং সংশূণোতি নন্দিকেশো মহামনা:। বিনায়কস্তিরাবৃত্তিং গ্রহাঃ পঞ্চ চ ভৈরবাঃ ॥ শৃথন্তি কামদাঃ সপ্ত মনবো নবধাবৃতিম্। রুদ্রাবৃত্তিং क्रफ्रांभाः मानदाः स्वमनाख्या । অর্কাবৃত্তিঞ্চ দেবেন্দ্রো দেবৈ: সিদ্ধাদিভিত্তথা । মন্বাবৃত্তিং বক্ষরাজঃ কলাবৃত্তিং তথা শচী। সমুদ্রজা সপ্তদশ ঋষিদারা দশাষ্ট্রধা ॥ বিংশাবৃত্তিঞ্চ শমনঃ পঞ্চবিংশং গদাধরঃ। শতাবৃত্তিং যোগিনীনাং ব্রন্ধা সাষ্ট-শতং হুরৈ:। সহস্রার্দ্ধং নায়িকানাং তদুর্দ্ধং শক্তিভি: সহ। শতাবৃত্তং নবা-বুত্তমটাবুত্তং মহেশ্বরি। ঐত্যাভীটং ফলং দ্বাদকুথা স্বত্বাতিনী। মহামান্না-বরং লক্ষা সাবর্ণিরষ্টমো মহুঃ। অভবৎ প্রমেশানি তুর্গাপাঠিমিদং মহৎ॥ হরিকর্ণমলোভুতে মহাবীর্ঘ্যমদোদ্ধতো। উভয়াসুরসংহন্ত্রী হরিণা পরমে-খরী । জ্বান মহিষং সভ্যো পঞ্চবিং শতি কোটিভিঃ। সেনাভিঃ পরমেশানি ত্বাং নতোহন্দ্রি নতোহন্দ্রি তাম ॥ নিষ্ঠতেরষ্টভিঃ সংথ্যে নিশুভণ্ডনাশিনী। বিন্দুদ্ভবৈদ্বানশভিত্তথাকোহিণীভিঃ ওতে ৷ জ্বান দিতিকং সংখ্যে শত-ৰপ্ততিকোটিভি:। বিষ্ণুপ্ৰীতা ব্যাসরতা গণমাতা সরস্বতী। পর্বস্তুতাইমী-রতা ষ্ট্প্রণামম্বর্নপিণী। নারায়ণশ্লোকরূপা চণ্ডিকাহলাদর্রূপিণী। তৎকুক্ষি-প্রভবা দেবী তদ্গুহুপরিবাদিনী। তদাকারা তদাধারা শতসপ্তপরায়ণা।। মুক্তিরপা নিয়োগাখ্যা ক্তাসরপাধিদেবতা। ত্রিধামুর্ভিঃ শক্তিসারা ত্রিচরিত্রা-ৰ্গণাধুন। ॥ কীলকাপ্স্কুসংভাবা কবচাহলাদিনী মহা। উল্লাসিনী ষড়্গুণাখ্যা ত্রিদশাধ্যামরপিণী। মাহাত্ম্যবাচিনী বালা স্থরধরাজ্যসাধিক।। পুনঃ কৃতং শারদীয়ে শারদীয়ামিবৈরসে। অরণ্যে রঘুনাথোছপি মহাপূজাং করিয়তি॥ काल्यावि वृद्धिकार्थ व्यथवर्शकाविति । निरमवानिवकार्थन नावावित नावान হস্ত তে॥ শরণ্যে নায়িকে ঘোরে শক্তিসিংহসমন্বিতে। রুজে রৌরবরুদ্ধে চ নারামণি নমোহস্ত তে ॥ স্বীসমন্তে সর্ববিজ্ঞে সর্ববৃত্তাশম্বিতে। কাত্যায়নি বিপ্রভাপে নারারণি নমোহত্ত তে । বিক্রাথ্যশ্চামরোদগ্রগণোগ্রাম্বরাক্সা:। তবোগ্রবীব্যভাষাখ্যা: স্বর্হ্মবহ্মুখা: 🛭 মহাহন্মভাভাশ নাশিভাশভিকে

বরা। তত্মাৎ শর্কাণি সর্কেশি নারারণি নমোহস্ত তে॥ করস্তী মললা কালী তদুকালী কপালিনী। তুর্গা শিবা ক্ষমা থাত্রী স্বাহা স্থা নমোহস্ত তে॥ শিবে ত্র্গে মহামারে ভীমে ভরবিনাশিনি। চণ্ডিকে চণ্ডদৈত্যন্নি স্বরাধ্যক্ষে পরে শিবে॥ নারারণি নারসিংহি বারাহি বরদে বরে। শরণ্যে সর্কাদে দেবি ত্র্গেশ্ তুর্গবিনাশিনি॥ কৃতার্থোহিত্মি কৃতার্থোহিত্মি কৃতার্থোহিত্ম কৃতার্থোহিত্ম কৃতার্থোহিত্ম কৃতার্থোহিত্ম কৃতার্থোহিত্ম কৃতার্থোহিত্ম কৃতার্থাহিত্ম কৃতার্থাহিত্ম কৃতার্থাহিত্ম কৃতার্থার নিগমাবহে। নিত্যত্মেরে নিধে তুর্গে সর্কাশ্রভবিনাশিনি॥ ভবানীসন্ধিথা বস্তু চণ্ডীমেতাম্দীররেও। দরিলোহিপি ধনী ভূতা শিবলোকং ব্রন্তেৎ কিল॥ শনি-ভৌম্দিনে দেবি বদি চেল্ক্রেরা ভবেও। তদা দেবমুনীক্রাণাং শরণ্যঃ প্রপঠন্ ভবেও॥ ভৌমবারে কৃষ্ণপক্ষে বদি স্থাদইমীতিথিঃ। বিশ্বপত্রসহক্রেশ্চ সম্পূত্ম্য তত্র পার্বতীম্।। বলিং দল্পা বিধানেন ক্রপেদাগ্রহান্তিকাম্। বদ্বদিইতমং লোকে ভন্তদাপ্রোতি নিশ্চিতম্॥ কৃষ্ণাইমীসমাষ্ক্রা বিশাথা বা শনে ভবেও। তত্র জপ্রেন্দ্লীং কৃত্যা সাধকঃ সাধ্রেৎ শিবাম্॥ অপরাজিভাশতৈঃ প্রত্নাং সম্পূত্ম পরমেশ্বরীম্। অইম্যাঞ্চ চতুর্দ্লভাং নবম্যাং বাপি পার্বতীম্॥ পুক্রিভাহ্ প্র্যামনসা তুর্গাপাঠিমিদং ক্রপন্। লভতে বাঞ্ছিতং স্ক্রিহি লোকে পরত্র চ॥গুলাছ

ইতি শ্রীমদাগমসন্দর্ভে শ্রীক্ষদ্রবামলে ক্ষদ্রচণ্ডিকারাং শিবত্র্গাসংবাদে সাধনরহস্তং নাম মধ্যমাবচ্ছেদঃ।

ক্র উবাচ। চণ্ডিকাং হাদরে ক্রন্ত শ্বরণং বং করোত্যপি। অনস্তমলমানি প্রোতি দেবি চণ্ডীপ্রসাদতঃ॥ ববিবারে বদা চণ্ডীং পঠেদাগমসন্মতাম্। নবাবৃত্তিফলস্তত্ত জারতে নাত্র সংশরঃ॥ সোমবারে যদা চণ্ডীং পঠেদ্ বস্তু সমাহিতঃ। সহস্রাবৃত্তিপাঠত ফলং জানীহি শ্বরতে॥ কৃষ্ণবারে জগদাত্রি পঠেদ্যামলস্মতাম্। শতাবৃত্তিফলস্তত্ত বুবে লক্ষ্ণলং ভবেৎ॥ গুরে বিদি মহামারে লক্ষ্ণ্যফলং গুরম্। শুক্রে দেবি জগদাত্রি চণ্ডীপাঠেন শহরি। জেরং তুলাক্ষলং ভূর্বে পঠেদ্ বদি সমাহিতঃ॥ শনিবারে জগদাত্রি কোট্যাবৃত্তিফলং গুরম্। অতএব জগদাত্রি বশ্চ চণ্ডীং সমভ্যসেৎ। স ধক্তশ্চ কৃত্যার্থশন রাজরাজাধিপো ভবেৎ॥ আরোগ্যং বিজয়ং সোধ্যং বস্ত্র-রত্তপ্রবালকম্। পঠনাৎ প্রবণ্টিতব জারতে নাত্র সংশরঃ॥ ধনং ধান্তং প্রবালঞ্চ বন্ত্রম্ববিভৃষ্তিম্। চণ্ডীপ্রবশ্যাবেণ ক্র্যাৎ সর্ক্ষং মহেশ্রী॥ খোরচণ্ডী

ৰহাচতী চত্তম্তবিধতিনী। চতুৰ জ্বা মহামালা মহাদেববিভ্ৰিতা॥ রজ-क्खा ववाद्याहा महिवाल्य तमर्किनी। छात्रिणी कननी पूर्वा हिंखका हु छिवा हु छिवा हु छात्रिका । अञ्चानी अनकाली हिलका यास्त्राह्या । अनानवानिनी त्नवी त्यात्रहे ' ভরানকা। শিবা খোরা রুদ্রচণ্ডী মহেশগণভূবিতা। ভাক্ষী প্রমা কৃষ্ণা মহাত্রিপুরস্থলরী । বিভা জীপরমাহবিভা চণ্ডী বৈরিবিমর্দ্দিনী ৷ তুর্গা শিবা मरारवाता ठ अरबी अठिका । मर्मी वननारन्यी कित्रवी ठ अविक्रमा। প্রমধৈত্ বিতা রুকা চামূলা মুক্তমর্দিনী। রণচণ্ডা চণ্ডবন্টা রণরামা রণপ্রিয়া। ভবানী ভদ্রকালী চ শিবা বোরা ভন্নানকা। বিফুপ্রিরা মহামারা নলগোপ-शृंदराष्ट्रचा । यक्ता सननी हशी महाक्रुका छत्रकती। विमना देखत्वी निजा मात्रा वृद्धिः चृष्ठिः क्या । जुका कृषा छथाक्कात्रा मिल्लिमीत्रा मरमाहत्रा। ততৈ দেবৈ। নমন্ততে সর্বান্ধপেণ সংস্থিত।। প্রাণপ্রিরা জাতিমারা নিস্তারপা मरहचेती। वा दावी मर्बाकृत्ववृ मर्बाकृत्वव मःवित्व। नमक्ति नमक्ति নমন্তব্যৈ নমো নম:। এতাং চঙীং ছগদাত্তি ব্ৰাহ্মণন্ত সদা পঠেং॥ নাক্তন্ত পাঠকো দেবি পঠনে बच्चहा ভবেৎ। नांत्रमः পাঠकेटेन्डव केनारिन वध-ভ্ৰিতে। বৈকৃঠে অন্ধলাকে চ দেবরালপুরে শিবে। বং শৃণোভি ধরারাঞ মূচ্যতে সর্বপাতকৈ:। ব্রন্ধহ ভাগ্ চ গোহত্যা স্থীবধােদ্রবপাতকম্। তৎ-সর্কং পাতকং তুর্গে মাতুর্গমনপাতকম।। খল্লগমনপাপঞ কলাগমনপাতকম্। ञ्च्योगमनर्क्षिय यम्बर भाभः श्रकाबाज ॥ भवनावकुछः भाभः उरक्रनात्मय নশ্রতি। কমকুমান্তরাৎ পাপাদ গুরুহত্যাদিপাতকাৎ। মৃচ্যতে মৃচ্যতে त्वि अक्रभन्नोयू नक्ष्यार । प्रवता वडना भाभः वर भाभः उन्निहःन्ता ॥ विधानिक्षेत्र यर भाभः ७९ भाभः नकुछि क्रमार । अवनः भठनिक्षेत्र यः करताछि धर्ताज्ञात्म । म धम्म कृषार्थक द्रावदावाधिरा प्रदर्। यः कतिश्रकारकार देव क्ष्मवामनम्बिकाम्॥ शारिशदार्देषः ममायुष्का द्वीत्रवर नव्रकर बदकर ॥ অখদাং বে প্রকৃষ্ঠিত তে চ পাত্রিনো নরা:। রৌরবং রক্তকুওঞ্চ রুমিকুওং মলভ বৈ॥ শুক্রভ কুঞ্চং শ্রীরক্তং যান্তি তেহপ্যচিরেণ বৈ। ততঃ পিতৃগণৈঃ সার্দ্ধং বিষ্ঠারাং কারতে কুমিঃ॥ পুণু দেবি মহাভাগে চণ্ডীপাঠফলং শিবে। श्रवाद्यारिकव यर भूगाः काञ्चाः विरवधवाञ्चछः । खद्यार्शं मुखनरेकव इतिचारत इरत-शृष्ट । जुनाभूगाः ভবেদেবি সভ্যাং ছুর্ণে निবে রুমে। ত্রিগরারাং ত্রিকাঞাং देव बक्त श्र्वाः मध्यिकम् ॥ छक्त श्रृवाः छक्त श्रृवाः छक्त श्रुवाः न मःनवः ॥ छवानी হ ভবানী চ ভবানীভাচাতে বুধৈ:। ভকারত ভকারত ভকার: কেবল:

भिवः । वानी देव अशकाबी वदाद्यादः छकात्रकः । **এ**छवन् दन्ति वित्यभि ভকার: প্রেডবং সদা॥ আরোগ্যঞ্জয়ং তৃঃথনাশনং সূথ্যর্জমম্। ধনং পূত্রং ব্দ্বারোগ্যং কুঠং গলিতনাশক্ষ্ । অদ্ধান্ধরোগান্মুচ্যেত দক্তরোগাচ্চ পার্বতি। সভাং সভাং জগদাত্তি মহামায়ে শিবে রমে॥ চত্তে চত্তে মহাঘোরে চাওকে ব্যাধিনাশিনি। ৰলে দিনে মছেশানি বিশেষফলদারিনী ॥ সর্বাতঃথাৎ প্রামৃ-চ্যেত ভক্তা চঙীং শুণোতি য:। বান্ধণো হিতকারী চ পঠেরিরতমানস:॥ यकनः यकनः (खादः यकनः अवयकनम्। छत्वि भूत्राभीतेवन ककामाना-मिछियु जः ॥ जज्ञानक निधान कारन निर्दापमाश्रहार। महामारनास्तरः পুণাং ভূলাহিরণাকে যথা। চণ্ডীশ্রবণমাত্তেণ পঠনাদ্ ব্রাহ্মণোহপি সং॥ নিৰ্কাণমেতি দেবেশি মহাম্বস্তায়নং হি তং ॥ সৰ্বত বিজয়ং যাতি প্ৰবণাদ্-গ্রহদোষতঃ। মৃচ্যতে চ জগদাত্তি রাজরাজাধিপো ভবেৎ। মহাচণ্ডী শিবা বোরা ভয়ানকবরপ্রদা। কালী চ কমলা বিশ্বা মহারোগবিমর্দ্ধিনী ॥ শুভ-চণ্ডী বোরচণ্ডী চণ্ডী ত্রৈলোক্যতুর্গভা। দেবানাং তুর্গভা চণ্ডী রুদ্রবামল-সমতা। অপ্রকালা মহাদেবপ্রিয়া রাবণমন্দিনী। মংশুপ্রিয়া মাংসরতা মংস্থাংস-বলিপ্রিয়া॥ মধুমত্তা মহানৃত্যা ভৃতপ্রমণসক্তা। মহাভাগা अश्वातामा थाञ्चला धनलात्रिनौ ॥ वच्चला स्वित्राब्ह्यानि-श्राला विषयविद्याला मृक्तिला সর্বাদা চণ্ডী মহাবিপদনাশিনী। ইমাঞ্চ চণ্ডীং পঠতে মহুদ্ধ:, শুণোতি ভক্ত্যা পরমাং শিবক্ত। চত্তীং ধরণ্যামতিপুণ্যযুক্তঃ, পঠেচ্চ; গচ্ছেদ্ধরমন্দিরং 'শুভুম্॥ যো ষ্মানোর্থং তুর্গে করোভি ধরণীতলে। ক্রুচণ্ডীপ্রসাদেন কিং ন সিধাতি ভৃতৰে॥ কল্লখ্যো কল্লকণা কল্লাণী কল্লবল্লভা। কল্লভক্তা ক্তপুৰ্যা ক্তভুষাসমন্বিভা ॥ বিবচঙী মহাচঙী বিবশ্ৰীভিগণান্বিভা। ভৈরবী পরমা বিভা মহাবিভাচ বোড়শী। স্বন্ধরী পরমা পূজ্যা মহাতিপুরস্বন্ধরী। खश्कानी जन्मनानी महाकानविमिक्ती॥ उका कृष्णकर्णा ना जनमत्वाह-কারিণী। অতিভক্রা মহালজ্ঞা সর্বামক্লদারিকা।। খোরবর্ণা ভীমরূপা ভীমা-(मेरी मत्नाहता। धूमावे हे वर्गना निक्रिमा नर्समा निवा। चुिक्रिमा की किं-রূপা বৃদ্ধিরূপা মনোহর। বিষ্ণুপ্রিয়া শত্রুপুর্ব্বা যোগীলৈরপি দেবিতা॥ মহাভয়ানকা দেবী ভবছঃথবিনাশিনী। চণ্ডিকা শক্তিহন্তা চ কৌমারী সর্জ-কামদা ॥ বারাহী চ বরাহত ইক্রাণী শক্রপুলিতা। মাহেশরী মহেশত মহেশগণ-प्रिण ॥ ठाम्का नात्रिःही ह नृतिःहमकनामिनी । नर्समक्क्यममनी नर्सारज्ञाग्र-थानात्रिनी ॥ देनव ष्टःथाच्यः किकिए शर्रमाए खेवनावर्षेत्रः। (अवस्यकः

প্রবক্ষামি নৈব জানন্তি কেচন ॥ স্থৃতিভংশাদ্ বরারোহে ছরৈবাপি ন জারতে।)
ইতি সত্যং মহেশানি সত্যং সত্যং বদান্যহম্॥ নৈব ছঃখং নৈব শোকং
নৈব রোগভরত্তা। আরোগ্যং বিজ্ঞাং নিত্যং করোতি শুভনকলম্॥
মহেশানি বরারোহে ব্রবীমি সত্যমৃত্তমম্। অভক্তার ন দাতব্যং মম প্রাণাধিকং শুভন্। মম ভক্তার শাস্তার শিক্বিশুপ্রিরার চ। দত্তাৎ কদাচিদ্দেবেশি সত্যং সত্যং মহেশরি। অনন্তক্ষনমাপ্রোতি শিবচণ্ডীপ্রসাদতঃ।
অশ্বমেধ বাজপের-রাজপ্রশতেন বৈ॥ ভূষ্টাশ্চ পিভরো দেবাত্তথা চ সর্ব্বদেবতাঃ। ছুর্গারাং মুনুরীজ্ঞানং রুদ্রামলপুত্তকম্। মত্রে চাক্ষরসংজ্ঞানং করোতি হি নরাধ্যঃ॥ অভএব মহামারে কিং বক্ষ্যে তব সরিধৌ। লখোদরাধিকশ্চণ্ডীপর্চনাৎ প্রবণাদ্জনঃ॥ ভত্তমসীতি-বাক্যেন মৃক্তিমাপ্রোতি ছুর্গভাম্। তথাতাঃ পর্চনাদেবি সংস্তিঃ তাৎ সূত্রপ্রভাম সত্যং সত্যং মহেশানি পুনঃ সত্যং মরোদিতম্। কপিলাশতদানার ফলং যৎ প্রতিবাসরম্। তৎ ফলং লভতে নিত্যং রুদ্ধচণ্ডীপ্রসাদতঃ॥ ওঁ

ইতি শ্রীমদাগম-সন্দর্ভে শ্রীক্ষুত্রবামলে হরগৌরীসংবাদে ফলরহস্তঃ নামোত্তমাবচ্ছেদঃ।

কল উবাচ। পুরাসীদ্ দেবি ছর্জবের্ধা প্রলখো নামতোহত্বরঃ। ইক্রং
নির্জিত্য শক্রম্বং নীতবান্ নিজতেজসা॥ ময়া দত্তবরোদ্মতঃ কালকলালপ্রোল্পান্। পুকালং বিকালং কালং নিজালং কালসঞ্জয়ন্॥
প্রতিকালং কার্য্যকালং হর্ষকালং হলাহলন্। সৎকালং কালকুলকং
কালহাট্যং হটাহটন্॥ হটৎকালং বৃহৎকালং কালচক্রং কলাকলন্। মহাকালং কালরপং সৈত্তৈহি কোটিসংজ্ঞাকন্॥ অমাররৎ স্বরপ্রীত্যৈ বিড়োজঃপ্রম্থৈং স্তভা। তুন্দুভীর্বাদয়িদ্বাচ ঘণ্টাছৈর্ঘোররাবণৈঃ॥ বিড়োজাভদ্ভয়াৎ নীজং ব্রন্থাইত্রগমন্ততঃ। কারণাপ্যজ্ঞলানাং বৈ উপব্যাং পরমেবর্গী॥ বর্ত্যান্তে স্থীভিন্তাভিন্মিকাদিভিরের সা। স্তমা বহুবিহৈবর্গি,ভিরপ্তক্র্ত্বাক্যতঃ॥ প্রলম্থ নাশর শুভে নাজ্ঞথা মৃত্যুমেয়ভি।
ইভি স্তমা শিবাদেব্যাঃ কথিতং মাত্রগ্রতঃ॥ ভবং প্রাহ শিবে প্রচ্ছ প্রলম্বনাদনার চ। আজাং লক্ষ্য চ সা দেবী প্রামরপ্রে বরে॥ শতৈক্চ
বোগিনী-সৈক্তের্ব্রেধ প্রহর্ষম্। মহিবপ্রভিমং তঞ্চ জ্বান পরমেশ্রী॥

ততন্তাভিঃ স্থতা তত্ত্ব চণ্ডিকা বিশ্বরূপিণী। বরারোহা খাল্লমাস্থিনী ওভা॥ মধুণা সাধনী মাত্রা মিত্রা মুলা মনখিনী। মনোভবা মধুমন্তা মহিবন্নী সুমন্ত্ৰিণী॥ ইমাঞ্চ চণ্ডিকাৎ নিত্যং বঃ পঠেৎ পাঠয়েরর:। সর্বতীর্থাবগাহস্ত ফলমাপ্লোতি নিশ্চিতম ॥ यः পঠেৎ প্রবতো নিত্যং রুক্তভীমিমাং স্থবী:। গারোখানে গুরোরত্রে গুহারাং গিরিভূমিত:।। গোটে গৌড়ে গোস্থলে বা গোবিন্দাত্তা গল্পেপরি। গঙ্গায়াং গিরিভাষজ্ঞে গিরিজাপ্রতিপূজনে। গ্রহণে গো-কোটিদানে बत् बढीर्थः महोछल् । जन्मा ९ क्लिक्टिश्चनः भूनाः आग्रट आग्रट विति । চণ্ডিকাং কল্পবক্তু ারবিন্দবাক্যবিনির্গতাম্। সত্যং সত্যং পুন: সভ্যং সত্য-মেতন্মরোণিতম্ ॥ কল্রচণ্ডীসমং পুণাং কিঞ্চিরান্তি ক্ষিতেন্তলে। নিতাং ৰস্থাং স্ববৈরে**তে: স্**রতে চসমাহিত:॥ বাধা**জালঞ্ ত**ভাংবাসমন্তাচার-এব হি। মধুকৈটভনৈপাত্যং মহিবান্তরসংহরম্। পঠন্তি পাঠরস্ত্যেব বধং শুন্তনিশুন্তরোঃ। শ্রোয়ন্তি নিত্যং বে ভক্ত্যা মাহাত্ম্যং তব চণ্ডিবে। নবম্যাং ক্লফপক্ষে বা চতুর্দ্ধখ্যাং তথৈব চ॥ শুক্লাষ্টম্যাং পর্বতো বা ভক্তাকৈ-বৈকচেতসঃ। ন চৈষাং ছুকুতং কিঞ্চিল্ল দারিড্যংন চাপদঃ। ন চ শত্রুতরং किकिन देहदरहेविदनाक्षमम्॥ मञ्जादका त्राक्टका देनव न मञ्जानमदानात्रि । ন জলে নোপদর্গে চ মহামারীভয়ং ন চ। যত্তৈতৎ পঠাতে ভজ্ঞা নিত্য-मोत्रज्ञत्न मम । ज् श्रोनः न वित्माक्तामि मात्रिधाः मम मर्द्धाः ॥ महाचखात्रनः পूगाः भाभवागिविनागनम्। ठजुर्वर्भश्चाः मजाः उथाकम्-पिविश्वाम्॥ वर्द्धिः কর্মণি পূজায়াং বলিদানে তথোৎসবে। মমৈতাং চণ্ডিকাং শ্রুতা তৎ সর্ব্ধ-মক্ষমং লভেৎ। যুদ্ধে বীরবরো ভূমান্নির্ভয়ো রিপুসকুলে। কল্যাণং লভতে নিত্যং লভতে কুলবৰ্দ্ধনম্॥ শান্তিকৰ্মণি ছঃস্বপ্নে প্ৰপঠেম্মিত্র-কর্মণি। সজ্যাতভেদনে চৈব রক্ষোভয়বিনাশনে। আরোগ্যে শক্ত-সংহারে রণে যানে বনাগ্নিতঃ। শুক্তে সিংহাদিকস্ত নাং ভয়ে সর্বভয়েহপি চ॥ স্মরত্নেতৎ পরং গুঞ্চ সঙ্কটান্মূচ্যতে নরঃ। একধা দশধা চৈব শতধা চ সহস্রধা ॥ चयुकः नक्तियुकः द्वांष्ठेर्क् ह-महार्क् हम्। পन्नकालि महाभन्नः अर्क्षक नचू थर्ककम्॥ इःत्ररेकव महाइःतः महानद्भक्ष ध्नकम्। महाध्नमत्कोहिनी মহাক্ষৌহিণিকা ক্রমাৎ।। বথাশক্তি যথাবৃত্তি যাবজ্জীবং ভবার্ণবে। তাবদা জমনি দিনে কিরৎকালং কলৌ যুগে॥ **ভবানীভূচচরন্ <del>অস্ত</del>ৰ্ভবান্**যুচ্যেত নাত্রণা। ভবানীভ্যুচ্চরন্ ব্যাজার বোনো জারতে জন:॥ জথাকুজমিকাং

বক্ষ্যে শৃণ্ দেবি শুচিশ্বিতে। ফাসং বিধানং পৃশাঞ্চ নতা সর্বমৃদীররেং॥
আদে ছি-তৃর্য্য-পঞ্চাশৎ চন্ধারিংশদ্বিতীয়কে। অষ্টোতরশতং তিলোহপ্যটোত্তরশতব্বমৃ॥ সংখ্যাত্মেব শ্লোকানাং মরোক্তং থলু পার্কতি।
গৃহেহপি লিখিতং ভিঠনুক্তং কলমবাপুরাং॥৩৫॥ উ।

ইত্যাগমসন্দর্ভে রুদ্রামলে প্রশিকাকরে তুর্যাথতে হুর্গাপ্রীতিবচনে রুদ্রোক্তা চঙী॥ ওঁ তৎ সং।
ইতি রুদ্রচণ্ডী।

# কাপুশাখীয়ু-রুদ্রাধ্যায়ঃ।

ওঁ আপাতালনভন্তলান্তভূবনব্ৰন্ধাণ্ডমাবিঃক্ত্রৎ-ক্যোতিঃ-ক্ষাটকলিন্ধ-মৌলিবিলসং-পূর্ণেন্দ্রাস্তামৃতৈঃ। যঃ ভোকাপুত্রেকমীশমনিশং রুডামু-বাকান্ জপন্, ধ্যায়েদীপিতসিদ্ধরে গুতপদং বিপ্রোহভিবিঞ্চিত্বম্॥ অভ্য ক্রপ্রশ্রন্ত অংখার্থবিঃ সঙ্কর্যনমূর্তিখরপো বোৎসাবাদিত্যঃ পর্ম-পুরুষঃ স এব রুজো দেবতা অত্তুপ্ ছলোহরিচিত্যচরমারামিষ্টকারাং শত-ক্ষতীয়ঙ্গণে বিনিয়োগ:। সকলভ ক্তাখ্যায়ত শ্রীক্ষড়ো দেবতা পরমেটা ঋবি-রেকা গার্থীছকভিঅন্তিই ভতিঅ: পঙ্কর: স্থাহট,ভো বে কগতো শ্রীসদাশিবপ্রীত্যর্থং ক্সপে বিনিয়োগ:। ও নমন্তে রুদ্রমন্তব উতো ত ইববে নম:। নমতে অভ ধৰনে বাহভ্যামৃত তে নম:॥ ১॥ বা ভ ইযু: শিবভমা শিবং বজুৰ তে ধহুং। শিবা শরব্যা বা তব ভরা নো রুদ্র মৃড়র ॥ ২। বা তে রুদ্র শিবা তনুরছোরাহপাপকাশিনী। তরা নত্তপুরা গিরিশস্তাভি চাকশীহি॥৩॥ বামিষুং গিরিশস্ত হত্তে বিভর্ষান্তবে। শিবাং গিরিত্র তাং কৃক মা হিগুংসী: পুরুষঞ্জগৎ 🛮 ৪॥ শিবেন বচসা স্বা গিরিশাহচ্ছা বদামসি। বথা নঃ সর্কমিজ্জগদবন্দগুং স্থমনা অসং॥৫। अशादाहमधिवका क्षथाया देमदाा चिवक्। अही छःक मर्सान कछहन् দৰ্কাশ্চ ৰাজুধান্য: ॥ ৬ ॥ অসে বন্ধায়ো অরুণ উত বক্তা সুমদল:। বে চেমগুং কলা অভিতো দিকু খ্রিতাঃ সহত্রশো বৈষাগুং হেড় কমহে ॥ ৭ ॥ অসৌ বোহবদর্পতি নীলগ্রীবো বিলোহিত:। উতৈনং গোপা অদুপ্রমুদ্র দু-হার্যঃ ৷ উত্তৈনং বিখা ভূতানি স দুটো মৃড়রাতি নং ৷ ৮ ৷ নমোহত্ত নীল-জীবার সহস্রাক্ষার নীচু বে। অথে বে অস্ত সম্বানোংহস্তেভ্যোংকররম:॥ >॥

প্রমুক্ষ ধ্রন্থমূভয়োরাত্বিরার্জ্যান্। বাশ্চ তে হল্ত ইববং পরা তা ভগবো
বপ ॥ ১০ ॥ অবত্তা ধহণ্ডং অগুং সহস্রাক্ষ শতের্ধে। নিশীর্ঘ্য শল্যানাং মুধা
শিবো নং স্মনা ভব ॥ ১১ ॥ বিজ্ঞাং ধহুং কপর্দিনো বিশল্যো বাণবা উত।
অনেশরস্য বা ইবর আভ্রুস্য নিবলধিং ॥ ১২ ॥ বা তে হেতি মাঁচ্টুম হত্তে
বজুব তে ধহুং । তরামান্ বিশতভ্যবস্থা পরিভূল ॥ ১৩ ॥ নমতে অভায়ধারানাতভার ধুক্ষবে । উভাজ্যামূত তে নমো বাহ্জ্যাং ভব ধ্রনে ॥ ১৪ ॥
পরি তে ধ্রনো হেতির্মান্ বৃণজ্ঞু বিশ্বতং । অথো ব ইর্ষিন্তবারে অম্মন্তিধেহি
তম্ ॥১৫॥ নমতে অন্ত ভগবন্ বিশেষরার মহাদেবার ত্যাস্কার ত্রিপুরান্তকার ত্রিকালারিকালার কালারিকলার নীলক্ষ্যার স্বর্ধের্যার স্বাশিবার
শ্রীমহাদেবার চ নমঃ ॥ ওঁ

ইভি প্রথমোহমুবাক:।

ওঁ নমো হিরণ্যবাহবে সেনাস্তে দিশাঞ্চ পতরে নমঃ ॥১॥ নমো বৃক্ষেভ্যো-হরিকেশেভ্যঃ পশ্নাং পতরে নমঃ ॥২॥ নমঃ শম্পিঞ্জরায় বিবীমতে পথীনাং পতরে নমঃ ॥৩। নমো বভ্লুশার বিব্যাধিনেহলানাং পতরে নমঃ ॥৪॥ নমো হরিকেশারোপবীতিনে পৃষ্টানাং পতরে নমঃ । ৫। নমো ভবস্ত হেত্যৈ লগতাং পতরে নমঃ ॥ ৬॥ নমো ক্রুলাভ্তারিনে ক্ষেত্রাণাং পতরে নমঃ ॥ १॥ নমঃ ক্তারাহন্ত্যৈ বনানাং পতরে নমঃ ॥ ৮॥ নমো রোহিভার স্থপতরে বৃক্ষাণাং পতরে নমঃ ॥ ৯॥ নমো মন্ত্রিণ বাণিজার কক্ষাণাং পতরে নমঃ ॥ ১ ॥ নমো ভ্রত্তরে বারিবস্থৃতালোবণীণাং পতরে নমঃ । ১১। নম উলৈগোবালা-ক্রুলাতে পত্তীনাং পতরে নমঃ ॥ ১২ ॥ নমঃ কুৎস্লায়তরা ধাবতে সন্থনাং পতরে নমঃ ॥ ১৩ ॥ ওঁ

## ইতি বিতীয়োহমুবাক:।

ওঁ নমঃ সহমানার নিব্যাধিন আব্যাধিনীনাং প্রজের নমঃ। ১। নমঃ
ক্রুভার নিবঙ্গিণে জেনানাং প্রস্থে নমঃ। ২। নমো নিবঙ্গিণ ইর্ধিষতে ভত্তরাণাং প্রস্থে নমঃ। ৩। নমো বঞ্চতে পরিবঞ্চতে ভার্নাং প্রস্থে নমঃ। ৪।
নমো নিচেরবে পরিচরার।রণ্যানাং প্রস্থে নমঃ। ৫। নমঃ স্কারিভ্যো

# ইতি তৃতীয়োহ**মুবাকঃ**।

ওঁ নম আব্যাধিনীভাো বিবিধ্যন্তীভাশ্চ বো নম:। >। নম উপণাভাল্থগুংহতীভাশ্চ বো নম:। ২। নমো গৃৎদেভ্যো গৃৎসপতিভাশ্চ বো নম:। ৩।
নমো ব্রাভেভ্যো ব্রাভপতিভাশ্চ বো নম:। ৪। নমো গণেভ্যো গণপতিভাশ্চ
বো নম:। ৫। নমো বিরূপেভ্যো বিশ্বরূপেভাশ্চ বো নম:। ৬। নমো মহন্তাঃ
কুলুকেন্ডাশ্চ বো নম:। ৭। নমো রথিভ্যো অরথেভ্যাশ্চ বো নম:। ৮। নমো
রথেভ্যো রথপতিভাশ্চ বো নম:। ১। নমঃ দেনাভাঃ দেনানীভাশ্চ বো
নম:। ১০। নমঃ ক্রভ্যঃ সংগ্রহীভ্ভাশ্চ বো নম:। ১১। নমন্তক্ষভ্যো রথকারেভাশ্চ বো নম:। ১২। নমঃ কুলালেভাঃ কর্মারেভাশ্চ বো নম:। ১০।
নম: প্রিষ্টেভ্যো নিবাদেভাশ্চ বো নম:। ১৪। নম ইযুক্ত্যো ধর্ক্তাশ্চ বো
নম:। ১৫। নমো মুগ্রুভাঃ খনিভাশ্চ বো নম:। ১৬। নমঃ খ্ডাঃ খপতিভাশ্চ
বো নম:। ১৭। ওঁ

## ইতি চতুর্থোহমুবাকঃ !

ওঁ নমো ভবার চ কলোর চ। ১। নমঃ শর্কার চ পশুপ্তরে চ। ২। নমো নীলগ্রীবার চ শিতিকণ্ঠার চ। ৩। নমঃ কপদ্দিনে চ বুংপ্তকেশার চ। ৪। নমঃ সহআকার চ শতধ্রনে চ। ৫। নমো গিরিশরার চ শিপিবিটার চ। ৬। নমো মীচুট্যার চের্মতে চ। ৭। নমো হ্রার চ বামনার চ। ৮। নমো বৃহত্তে চ ব্রীরসে চ। ১। ,নমো বৃদ্ধার চ সম্ধ্বনে চ। ১০। নমো অগ্রিমার চ প্রথমায় চ। ১১। নম আশবে চাজিয়ার চ। ১২। নম: শীবিরার চ শীভ্যার চ। ১৩। নম উম্যার চাবঅস্থায় চ। ১৪। নম: শোভজ্ঞার চ বীপ্যার চ।১৫। ওঁ ইতি পঞ্চমোহত্বাক:।

ওঁ নমো জ্যেষ্ঠার চ কনিষ্ঠার চ। ১। নম: পূর্বজ্ঞার চাপরজ্ঞার চ। ২। নমো মধ্যমার চাপগল্ভার চ। ৩। নমো জ্যার চ বুরিরার চ। ৪। নম: সোভ্যার চ প্রতিস্থ্যার চ। ৫। নমো বাম্যার চ ক্ষেয়ার চ। ৬। নম উর্বহার চ খল্যার চ। ৭। নম: শ্লোক্যার চাবসাক্ষার চ। ৮। নমো বক্সার চ ক্ষ্যার চ। ৯। নম: শ্রার চাবভিন্ততে চ। ১২। নমো বর্ণিণে চ বর্রাথিনে চ। ১৩। নমো বিলিনে চ ক্রেচিনে চ। ১৪। নম: শ্রার চাবভিন্তে চ। ১২। নমো বর্ণিণে চ বর্রাথিনে চ। ১৩। নমো বিলিনে চ ক্রেচিনে চ। ১৪। নম: শ্রার চাবভিন্তে চ। ১৪। নম: শ্রার চাবভিন্তে চ। ১৪। নম: শ্রার চাবভিন্তি বিলিনে চ ক্রেচিনে চ। ১৪। নম: শ্রার চাব্রিনার চাব্রার চাব্রা

ওঁ নমো তুলুভার চাহনকার চ। ১। নমো ধ্রুবে চ প্রমুশার চ। ২।
নমো দৃতার চ প্রহিতার চ। ৩। নমো নিবলিণে চের্ধিমতে চ। ৪। নমজীক্রেববে চার্ধিনে চ। ৫। নমঃ স্বায়্ধার চ স্থ্রনে চ। ৬। নমঃ ক্রভার চ
পথ্যার চ। ৭। নমঃ কাট্যার চ নীপ্যার চ। ৮। নমঃ স্থার চ সরভার
চ। ৯। নমো নাভার চ বৈশস্তার চ। ১০। নমঃ ক্রপ্যার চাবট্যার চ। ১১।
নমো ব্র্যার চাব্র্যার চ। ১২। নমো মেল্যার চ বিত্তার চ। ১৫। নমা
বীপ্রিরার চাতপ্যার চ। ১৪। নমো বাত্যার চ বেমিরার চ। ১৫। নমো
বাজবার চ বাজপার চ। ১৬। ওঁ।

#### ইভি সপ্তমোহমুবাক:।

ওঁনমঃ সোমার চ রুজার চ। ১। নমন্তান্তার চারুণার চ। ২। নমঃ
শঙ্গবে চ পশুপতরে চ। ৩। নম উগ্রার চ তীমার চ। ৪। নমোহগ্রেবধার চ দ্রেবধার চ। ৫। নমো হত্তে চ হনীরসে চ। ৬। নমো
ব্লেড্যো হরিকেশেভাঃ। নমন্তারার। ৭। নমঃ শন্তবে চ মরোভবে

চ। ৮। নম: শক্ষার চ মর্করার চ। ৯। নম: শিবার চ শিব্তরার চ। ১০। নমন্তীর্থার চ ক্ল্যার চ। ১০। নম: পার্থার চাবার্থার চ। ১২। নম: প্রতর্ণার চোত্রণার চ। ১৩। নম আত্র্যার চালান্থার চ। ১৪। নম: শল্যার চ কেন্দ্রার চ। ১৫। নম: সিক্ত্যার চ প্রবাহার চ। ১৬। ওঁ। ইত্যেইমোহত্বাক:।

নম স্বিপ্যার চ প্রপথ্যার চ। ২। নমঃ কিগুংশিলার চ ক্ষরণার চ। ২।
নমঃ কপদিনে চ পুল্ভরে চ। ৩। নমো গোঠ্যার চ গৃহ্যার চ। ৪। নম
ভর্যার চ গেহার চ। ৫। নমঃ কাট্যার চ গহ্বরেঠার চ। ৬। নমো হলয্যার চ নিবেম্প্যার চ। ৭। নমঃ পাগুংসব্যার চ রক্ষরার চ। ৮। নমঃ
ভ্রমার চ হরিভারে চ। ১। নমো লোপ্যার চোলপ্যার চ। ১০। নম
ভ্রমার চ হরিভারে চ। ১০। নমঃ পর্ণার চ পর্ণশার চ। ১২। নমোহবভরমানার চাভিন্নতে চ। ১৩। নম আধিদতে চ প্রথিদতে চ। ১৪।
নমো বং কিরিকেভ্যো দেবানাগুং হলরেভ্যঃ । ১৫। নমো বিক্রিকেভ্যো
দেবানাগুং হলরেভ্যঃ । ১৬। নমো বিচিক্তকেভ্যো দেবানাগুং
হলরেভ্যঃ । ১৭। নম আনির্হতেভ্যো দেবানাগুং হলরেভ্যঃ । ১৮। নম
আনীবংকেভ্যো দেবানাগুং হলরেভ্যঃ । ১৯। ওঁ।

# ইতি নবমোহমুবাক:।

উ। তাপে অন্ধনস্পতে দরিত্র নীললোহিত। এবাং পুরুষাণামেষাম্ পশ্নাং মাজের্মা রোড্মো চ এবাং কিঞ্চনামনং। । বাতে রুদ্র শিবা তন্ং শিবা বিখাহা ভেষজী। শিবা রুজত্ত ভেষজী তরা নো মৃড় জীবসে। ২। ইমাগুং রুদ্রার তবসে কপর্দিনে কর্মীরার প্রভরামহে মতিন্। যথা নং শমসন্দিপদে চতুস্পদে বিশ্বং পৃষ্টং গ্রামে অন্মিমনাতুরম্ ॥ ৩ ॥ মৃড়া নো রুট্রোত নো মরম্বধি কর্মীরার নমসা বিখেম তে যক্ষ্র যো শমস্থ্রাবজে পিতা তদখাম তব রুদ্র প্রণীতৌ ॥ ৪॥ মা নো মহান্তম্ত মা নো অর্জকং মা ন উক্ষন্তম্ । মা নো বধীং পিতরং মোত মাতরং প্রিরা মা নত্তক্ত্বো রুদ্র রীরিবং ॥ ৫ ॥ মানন্তোকে তনরে মা ন আযুষ্বি মা নো গোৰ্ষা নো অব্দেষ্ রীরিবং । বীরান্ মা নো রুদ্র ভাষিনো

ব্বীহবিশ্বন্তো মনসা বিধেম তে॥ ৩॥ আবোতে গোছ উৎপুরুষত্বে কয়বীরার সমুমন্থে তে অন্ত রকা চ নো অধি চ দেব ক্রহণা চ নঃ শর্ম বছাবিবহাঃ। । । ত্বহি প্রভং গর্ভসদং যুবানং মুগং ন ভীমমুপহন্তম্যুগ্র্ম। মুড়া জরিত্রে ক্রম্ভবা নো অন্যন্তে অম্মনিবপদ্ধ সেনাঃ॥ ৮॥ পরি ণো ক্রম্ভে হেতিব্র্ণক্ত পরি থেবত ত্র্মতির্ঘায়ো অবহিরা ম্ববভ্যক্তম্ব মীদ্ধ ভোকায় ভনমায় মুড়॥ ৯॥ মীদুইম্পাবতম শিবোনঃ স্থমনা ভব পরমে বৃক্ষ আয়ুধং নিধায় ক্রন্তিং বসান আচর পিনাকং বিভ্রদাগহি॥ ১০॥ বিকিরিদ্র বিলোহিত নমন্তে অন্ত ভগবঃ। বাতে সহস্রত্বং হেতরাহত্তমম্মনিবপদ্ধ সেনাঃ॥ ১১॥ সহস্রাণি সহস্রধা বাহুবোত্তব হেতরঃ। তাসামীশানো ভগবঃ পরাচীনা মুখা ক্র্মি॥ ১২॥ ওঁ।

#### ইতি দশমোহমুবাক:।

ওঁ সহস্রাণি সহস্রশোবে কলা অধিভূম্যাম্। তেবাঞং সহস্রােলনে-হব ধর্মানি ভন্মসি। ১। অন্মিন মহত্যর্পবে অন্তরিকে ভবা অধি। তেষাগুং সহস্রযোজনে হব ধরানি ত্রাস ॥ ২ ॥ নীলগ্রীবাঃ শিতিকণ্ঠা শর্কা অধঃক্ষমা-চরা:। তেষাগুং সহস্রযোজনে ২ব ধ্যানি তল্পনি ॥ ৩॥ নীলগ্রীবা: শিতি-কণ্ঠা দিবগুং ক্লুড়া উপভিতা:। তেষাগুং সহস্রযোজনে ২ব ধ্যানি তন্মসি।।। ৰে বুক্ষেষ্ শম্পিঞ্জরা নীলগ্রীবা বিলোহিতা:। তেষাগুং সহস্রযোজনে ২ব ধয়ানি তম্মি। ৫। যে ভূতানামধিপতয়ো বিশিখাস: কপর্দ্ধিন:। তেরাগুং সহস্র-বোজনেহব ধরানি তন্মসি। ৬। বেহরেষু বিবিধ্যন্তি পাল্লেষু পিৰতো জনান। তেষাগুং সহস্রযোজন হবধয়ানি তলসি। ।। বে পথাং পথিরক্ষ ঐলবুদা আয়ুর্ব:। তেষাগুং সহস্রযোজনেহবংলানি তন্মসি।৮। যে তীর্থানি প্রচরস্থি স্কাবস্তো নিষ্দিণ:। তেষাগুং সহস্রবোজন্হবধ্যানি তন্মসি।৯। য এতাবস্তুক্ত ভুয়াগুংস্ক দিশো কুদ্রা বিভক্তিরে। তেয়াগুং সহস্রবোজনেহ্ব-ধ্বানি তন্মসি। ১০। নমো কডেভো বে পুথিব্যাং বেষামন্নমিষবন্তেভো দশ প্রাচীদ শ দক্ষিণা দশ প্রতীচীদ শোদীচীদ শোদ্ধাহেভ্যো নমন্তে নো মৃড্যন্ত তে রিক্ষে বেষাং বাত ইষবন্তেভ্যো দশ প্রাচীদ'শ দক্ষিণা দশ প্রতীচীদ'শোদীচী-দ শৈষ্ণিতেভা নমতে নো মুড়রম্ভ তে বং ছিলো যশ্চ নো ছেটি তং বো কতে मधामि। ३२। नत्मा कत्सारका द्य मिवि दिवगार वर्षमिववत्त्वरका मन व्याधीम न দক্ষিণা দশ প্রতীচীদ শোদীচীদ শোদ্ধান্তেভ্যো নমতে নো মুড়য়ন্ত্র তে বং ছিলো ষশ্চ নো ৰেণ্ট তং বো কভেদধামি। ১৩। ওঁ। ইত্যেকাদশোইতুবাকঃ।

# অথ নারায়ণ-সৃক্তম্

ওঁ পূর্বমনঃ পূর্ণমিনং পূর্ণাৎ পূর্বমূদচাতে । পূর্বক্ত পূর্বমাদার পূর্বমেবা-বশিক্ষতে ॥ ওঁ শান্তিঃ ওঁ শান্তিঃ ওঁ শান্তিঃ ॥

उँ भूकरवा र देव नातावरना जनायवज क्षजाः ऋत्वविधि नातावनाम् इका बांबरक, नावाबनामिटका बांबरक, नावाबनाम् बाम्मामिका वमरवा क्रजान्ह, স্কা দেবতা:, সর্কে খাবর: স্কাণি চ ভূতাণি নারারণাদেব সমুৎপদ্মস্কে, नात्रांत्रत्न व्यदक्षस्य नात्रात्रत्न व्यनोत्रत्य । अथ नित्छा त्रन्यः, व्यत्का नात्रात्रत्ना ব্ৰহ্ম চ নারায়ণ: শক্ত্রণ্ড নারায়ণো ক্রন্তে নারায়ণো ঘাদশাদিত্যাশ্চ নারায়ণো वमटबार्श्विको ह नात्रायमः मटर्क अवयन्त नात्रायमः कालक नात्रायमा निमन्ह नाताप्रत्म विषित्रक नाताप्रतार्थक नाताप्रता एकं नाताप्रता पृक्षापृक्षक নারায়ণো অন্তর্বহিন্দ নারায়ণো নারায়ণ এবেদং সর্বাং ষম্ভূতং বচ্চ ভাব্যম্। অথ নিভ্যো নিষ্কলে। নিরাখ্যাতো নির্বিকল্পো নিরঞ্জনঃ শুদ্ধো দেব একো নারায়ণো ন বিতীয়োহন্তি কশ্চিৎ। য এবং বেদ বোধঞ্সুক্রাথিং কৃতা মন:-প্রগ্রহ্বান্ পুমান প্রয়াতি পরমং পাবনং বিষ্ণুখ্যং পদমব্যয়ম্। এতবৈ নারায়ণজ্যোপনিষং। বে। বৈ নারায়ণোপ'ন্যদমধ্যেতি স সর্কেভ্যে। বোরেভ্যো বিমৃক্তো ভব্তি স সর্কান কামানবাপ্নোতি, বন্ধার্থ গুড়া অমৃতত্ত্ব গছেতি। ওমিভাগ্রে ব্যাহরন্ত্রম ইতি পশ্চান্নারারণায়েত্যুচ্চার্য্য উপতিষ্ঠেৎ। ওমিত্যেকাক্ষরং নম ইতি षाक्रतत्र नात्रागारवि शक्षाक्रतारगुरुष्ट्रेय नात्रावण्याक्षेक्रतः शहर त्वा देव নারারণভাষ্টাক্ষরং পদমধ্যেতি, সোহন্তপপ্লব: সর্বমায়ুরেতি রারস্পোবং গোহ-পত্যং বিন্দতে প্রাজাপত্যং ততোহমৃতত্বমন্ত ইতি শ্রুতি:। প্রত্যগানন্দং ব্রন্ধ প্রণবন্ধরপন্। ওঁ-অকার উকার মকার ইত্যনেকধা সমভবৎ। তদেবং শ্রুতীয়ং ওল্ দৃষ্ট। মুচ্যতে বোগী, জন্মশংদারবন্ধনাৎ। ওঁ নমো নারায়∻ ণাষ্টেত শহা-চক্র গণা-পদাধরং জম্মান্ন:স্তাপাদনাদ্ বৈকুঠভূবনলোকং গচ্ছতি। हेनः পৃথ্दीकः विकानवनः एयाउड़िनाड्यांवः निवमूर्थ्यकामम् बन्नत्भा (एवकीभूट्या बन्नारा) मधुरुहनः। मर्ककृष्ण्यायर नाताम्रवक्रपम्मा পরংব্রহ্মস্বরূপ মুত্রস্বম ভবদমুত্ত স্বমভবং। এতদর্থ এবালিবসং হৃথবালিবসং যোহধীতে প্রতিরধীয় নো রাত্রিকতং পাপং নাশয়তি সায়মধীয়ানে। দিবস-কৃতং পালং নাশয়তি। মাধ্যন্দিনমাদিত্যাভিদুখোহ্ধীয়ানঃ কোপপাতকান্ নাশয়তি স সক্ষেদপারায়ণং লভতে নারায়ণাৎ সাযুজ্য-মাপোতি নারাঃশাৎ সাযুদ্যমাপ্নোতি। ও।

|  |   | ٠, |  |
|--|---|----|--|
|  |   |    |  |
|  |   |    |  |
|  |   |    |  |
|  | • |    |  |
|  |   |    |  |
|  |   |    |  |
|  |   |    |  |

# THE ASIATIC SDCIETY CALCUITA-700016